सूचीपत्र।

(५५) सामंत पंग युद्ध नाम प्रस्ताव।

(पृष्ठ १४१७ से १४४७ तक)

---

(५६) समर पंग युद्ध नाम प्रस्ताव।

(पृष्ठ १४४९ से १४६३ तक)

---

(५७) कैमास बध नाम प्रस्ताव ।

(पृष्ठ १४६५ से १५०९ तक)

---

(५८) दुर्गा केदार समय।

(१५११ से १५५१ तक)

---

(५९) दिल्ली वर्णन समय।

(पृष्ठ १५५३ से १५६४ तक)

---

(६०) जंगम कथा प्रस्ताव।

(पृष्ठ १५६५ से १५७५ तक)

---

(६१) कनवज्जं समय।

(पृष्ठ १५७७ से १९५१ तक)

अथ सामंत पंग जुद्ध नाम प्रस्ताव लिष्यते ।

(पचपनवां समय ।)

पृथ्वीराज का प्रताप वर्णन ।

कवित्त ॥ राह रूप चहुआन । मान लग्गौ सु भूमि पल ॥
दान मान उग्रहै । बीर सेवा सेवा छल ॥
बीय भंति उग्रहै न । कोइ न मंडै रन अँगन ॥
सबर सेन सुरतान । बान बंधन षल षंडन ॥
सा धम्म राह धर धरन तन । देव सेव गंध्रब्ब बल ॥
सामंत सूर सेवहि दरह । मंडे आस समुद्र दल ॥ छं० ॥ १ ॥

दूहा ॥ इक्क हथ्थ महि हरष सुष । दुष भज्जै दल द्रब्ब ॥
अरि सेवें आसा अवनि । कोइ न मंडै ग्रब्ब ॥ छं० ॥ २ ॥

जयचन्द का प्रताप वर्णन ।

कवित्त ॥ कनवज्जह जैचंद । दंद दारुन दल दुत्तर ॥
पच्छिम दष्यिन पुब्ब । कोन मंडै दल उत्तर ॥
ढिल्लिय चित्तय कोट । जोट अड्डै दल पंगं ॥
सेव दंड अन मंड । पग्ग मंडन बल अंगं ॥
बहु भूमि द्रव्य घर उग्रहै । इम तप्पै रट्ठौर पहु ॥
सुप इंद्र व्यंद छत्तीस दर । मुकट बंधि विन मान सहु ॥
छं० ॥ ३ ॥

अति उतंग तन बल्ल। बिभंग जग महि सूर जुध ॥
अघ्घत वाह जस दाह। काल संकलप काल क्रुध ॥
कोप पंग को सहै। फुट्टि दल जानिक माइर ॥
बल बलिष्ट जुनु इष्ट। दिष्ट कंपहि बल काइर ॥
निम्मले सूर तन सूर जिम। समर सज्जि गज्जे सुबर ॥
आवाज कंन पंग्गह सुनी। हलकि कंपि दिल्ली सहर ॥ छं० ॥ ४ ॥

दूहा ॥ दिष्टि सु न्रप दिष्षे सकल। दिष्षावत बनि सेन ॥
मनो सकल अग सुंदरी। जग्गावत पिय मेन ॥ छं० ॥ ५ ॥

पृथ्वीराज का शिकार खेलने जाना।

कवित्त ॥ इक्क सबल सित सूर। इक्क बल सहस प्रमानं ॥
इक्क लष्प साधंत। दंति भंजै गज थानं ॥
इक्क विरुध जम करहि। इक्क जम जोर भयंकर ॥
इक्क जपहि दिन अंत। करन कलिकाल षयंकर ॥
सुभ सेव ध्रम्म स्वामित्त मन। तन हित्तन मंडै वियौ ॥
तिन रष्षि घरह प्रथिराज न्रप। अप्पन आषेटक कियौ ॥
छं० ॥ ६ ॥

राजा जयचन्द की वड़वाग्नि से उपमा वर्णन।

अगस्ति रूप पहु पंग। समुद सोषन धर ढिल्लिय ॥
बयर नयर प्रज्जरहि। धूम डंबर नभ हल्लिय ॥
सजि चतुरंगिय पंग। जानि पावस अधिकारिय ॥
रज्जि रज्ज चष घुम्म। सेन संभरि उच्चारिय ॥
अरि त्रिय नयन्न बरिषा जुजल। मोर सोर डंबर कविय ॥
प्राची प्रमान संमुह अनिय। मुष पंगुर विज्जनु मनिय ॥ छं० ॥ ७ ॥

अढर ढुरहि गढ़ ररहि। मेर पर भर सुपरहि भर ॥
कसकि कमठ पर पिठ्ठ। सेस मल मलहि छाड़ि धर ॥
जल्ल साइर उच्छरहि। नैर प्रजरहि जरहि घर ॥
जल्ल थल्ल होत समान। बंक छारंत बंक छल ॥

हिंदवान राह पहुपंग वर। चंपि लगे अरि भान ग्रह ॥
छुट्टै न दान कर दान बिन। षग्ग पंति मंडी सु रह ॥ छं० ॥ ८ ॥

दूहा ॥ दान सूर छुट्टै न महि। विषम राह कमधज्ज ॥
वह जठरागिन राग बिनु। इह जठरागि न सज्ज ॥ छं० ॥ ९ ॥
अभय भयंकर अरि भवन। भ्रमत भूमि षग धार ॥
को कमधज्जह अंग मै। सो न बियौ संसार छं ॥ १० ॥

जयचन्द का राजसी आतंक कथन।

कवित्त ॥ को अंगमै सु जम्म। क्रम्म को करै सँघारन ॥
को सुर्वीं कर धरै। सूर महि कौन उपारन ॥
को दरिया दुस्तरै। नभ्भ ढंको रवि चाहै ॥
को सुन्यह संग्रहै। कौन उत्तर दिसि गाहै ॥
को करै पंग सो जंग जुरि। दनु देवत्तह नाग नर ॥
कलिकाल कलन कंकह कहर। उदधि जानि ऊलटि गहर ॥
छं० ॥ ११ ॥

वेली भुजंगी ॥ चलि पंग सेन अपारयं। अनभंग छचिय धारयं ॥
चहुआन वलनह बंधयं। द्रगपाल क्रम क्रम संधयं ॥ छं० १२ ॥
भव भवन रवनति छंडयं। डर डरपि मुंडति मंडयं ॥
दुअ अठ्ठ दिसि वसि विच्छुरै। जल मीन भंगति उच्छरै ॥
छं० ॥ १३ ॥
भुअ कंप लंक ससंकयं। धर डुल्लत मानहु चक्कयं ॥
पिय पतिय मुक्कति लुप्पती। कहौं दुतिन दिप्पिय दंपती ॥
छं० ॥ १४ ॥
पहुपंग पूनिय ना रहै। सुरलोक संकति आरहै ॥ छं० ॥ १५ ॥

दूहा ॥ सुरगन सरनी तल कुदल। पनि कहैं हूं कंद ॥
पूनी पंग नरिंद कौ। को रप्पै कविचंद ॥ छं० ॥ १६ ॥

कवित्त ॥ अग्गें सिंघ सु सिंघ। सिंघ पप्पर्‍यो भ्रमालह ॥
पंग अम्रत फल चपै। अम्रत लग्गौ जु तमालह ॥
आगेई वर अप्प। नाग नंदन विद्या पढ़ि ॥
आगेई वर करन। भान साहै चिंता चढ़ि ॥

को करै पंग सो जंग जुरि। सु बिधि काल दिष्यै नही ॥
रिनमान काज रजपूत गति। संभरि वै संभरि रही ॥ छं० ॥ १७ ॥

जयचन्द के सोमन्तक नाम मंत्री का वर्णन।

पंग पुच्छि मंत्रीस। मंत्र पुच्छै जु मंत्र बर ॥
सोमंतक परधान। मंत बिग्गऱ्यौ मंड धुर ॥
धवल सुमंत्री मंत्र। तत्त आरिष्य प्रमानिय ॥
तारा क्रत संघरिय। चित्त रावर उनमानिय ॥
विधि मंत्र जंत्र आरत्ति करि। साम दान भेदह सकल ॥
जानो सु बीर सो उच्चरहु। काम क्रोध साधन प्रबल ॥
छं० ॥ १८ ॥

सबद बाद से वरें। इष्ट मंत्री न तत्त गुर ॥
बाल वृद्ध जुवती प्रमान। जानहि स भ्रम्म नर ॥
स्वामि भ्रम्म उच्चरैं। कित्ति जुग्गीरह संधे ॥
उर अधीन सम प्रान। जानि क्रत जानन बंधे
सह नित्त जीव दिष्षै सु पुनि। मुनि मयंक द्रिगपाल हर ॥
कालंक बिनै को तत्त वर। क्रम्म बिना लग्गै सु नर ॥ छं० ॥ १९ ॥

दिल्ली की दशा।

संभरि वै तजि गयौ। छंडि ढिल्ली ढिल्ली धर ॥
जुद्ध करन न्रप पंग। कोइ न दिष्यौ सु सस्त्र नर ॥
ग्राम्म धाम तजि बीर। बहुरि पत्तौ कनवज्जं ॥
तारा क्रत चित्रंग। दियो संदेस सु कज्जं ॥
करि करिनि कंक चित्रंग वस। करौ जग्य आरंभ वर ॥
मंत्री सुमंत्र राजन वली। ते हक्कारे मंत धर ॥ छं० ॥ २० ॥

जयचन्द का यज्ञ के आरम्भ और पृथ्वीराज को अपमानित करने के लिये मंत्री से सलाह करना।

पंग पुच्छि मंत्री सुमंत। पुच्छै सुमंत्र वर ॥
पहु सुमंत विग्गऱ्यो। जग्य मंड्यौ जु पुब्ब धर ॥

सोइ मंची स प्रमान। जग्य धुर वधं सु बंधे ॥
स्वामि ध्रम्म संग्रहै। किति भग्गी रह संधे ॥
सह जीव जंत दिष्षै सहज। मुनि मयंक द्रिग पाल बर ॥
कालंक दग्ग लग्गै कुलह। सो भिट्टावहि मंच नर ॥ छं० ॥ २१ ॥

अति उज्जल न्रप भरथ। भरथ जिहि वंस नाम नर ॥
तिन कलंक लग्गयौ। पुच हत्तयौ अप्प कर ॥
चंद दोष लग्गयौ। कियौ गुर वाम सहिल्लौ ॥
बर कलंक लग्गयौ। राज सुत पंड वुहिल्लौ ॥
चिचंग राव रावर समर। विनक बंक छिची निडर ॥
आहुट्ठ राइ आहुट्ठ पति। सबर बीर साधन सवर ॥ छं० ॥ २२ ॥

सुत्र सु मंच परमान। पंग उच्चरिय राज बर ॥
चाहुआन उद्धरन। जग्य उद्धरन मंत धर ॥
चित्त अग्गि भय अग्गि। जग्गि जग्यौ छल राजं ॥
तारा क्रत साध्रम्म। पंग कीजै ध्रम्म साजं ॥
जा ध्रम्म जोग रष्षौ नहरि। कीन ध्रम्म ध्रम्मन गरुअ ॥
मुक्कलौ मंच जे मंच उर। सुवर बीर बोलन हरुअ ॥ छं० ॥ २३ ॥

मंत्री का सलाह देना कि रावल समरसी जी से सन्धि करलेने में सब काम ठीक होंगे।

तव सुमंच मंचिय प्रधान। उच्चरिय राज बर ॥
चाहुआन बंधन सुमत्त। मंडनह जग्य धर ॥
नर उत्तिम चिचंग। राज उत्तिम चिचंगी ॥
कर अदग्ग दग्गन। जगत्त रष्षन गज अंगी ॥
कालंक अछिय कट्टन सु छिप्र। पर सु चार तिन तिन करय ॥
चिचंग राव रावर समर। मिलि सु जग्य फिरि दिन धरय ॥
छं० ॥ २४ ॥

कुंडलिया ॥ फुनि न स्यंद पहु पंग वर। उभयति वर वर जोग ॥
समर मिले कमधज्ज कौं। जग्य समप्पैं लोग ॥
जग्य समप्पैं लोग। उम्भ सारंग सुनाई ॥

एकल्ले सारंग। तिमिर अप कहूं न जाई॥
वियौ तिमिर भंजियै। अप्प पुल्लि जाइ तमं घन॥
अप्प तिमिर भंजियै। प्रलै होइय सु अप्प फुनि॥ छं०॥ २५॥

सोमंतक का चितौर को जाना।

कवित्त॥ पंग जग्य आरंभ। मंत प्रारंभ समर दिसि॥
सोमंतक परधान। पंग हक्कारि बंधि असि॥
सत तुरंग गति उड्ड। पंग गजराज विशालं॥
मुत्ति अवेध सुरंग। एक दस लालति मालं॥
पंजाब पंच पंचों सु पथ। अड्ड देस अध बंटियै॥
चाहुआन बंधि जग बंधिकर। जग्य अरंभ सु ठट्टियै॥
छं०॥ २६॥

जयचन्द का मंत्री को समझाना।

आहुट्ठां मभ्भांम। समर साहस चित्रंगी॥
निविड बंध बंधे। अबंध सा भ्रम्म सु अंगी॥
चिंतानी कलपत्ति। रूक रत मोह अरत्ता॥
सिद्धानी मोगर सुभैस। सम सद्ध सु गत्ता॥
चहुआन चंपि चवदिसि करिय। जग्य बेलि जिमि उद्धरै॥
चित्रंग राव रावर समर। मिलि जीवन जिहि उव्वरै॥
छं०॥ २७॥

पद्धरी॥ मुक्कलै पंग वर मंच वीर। जानै सु गत्ति राजन सरीर॥
मन पंग होइ सो कलें वत्त। विन वुलत बोल बोलें सुतत्त॥
छं०॥ २८॥

जानै सु चित्त नर नरनि वत्त। अनि रत्त रत्त ते लपहि गत्त॥
कीटी सु भ्रंग ज्यौं मिलहि स्याम। डर ग्रहैं रहैं जामित्त जाम॥
छं०॥ २९॥

तिन मध्य एक सारंग सूर। सह मत्त विद्ध जानत सपूर॥
पापंड दंड रचै न अंग। भारथ्थ कथ्थ भीपम प्रसंग॥
छं०॥ ३०॥

अगुराज पैज जिन करिय देव। संगी सु भृत्यु जिन मृत्य सेव॥
संतन सुमंति स्वामित्त सत्त। रष्यै जु राज राजन सु पत्ति॥
छं०॥ ३१॥

पतौ सुजार चित्रंग थान। चित्रंग राज मिलि दीन मान॥
छं०॥ ३२॥

रावल समरसी जी का सोमंत से मिलना और उसका अपना अभिप्राय कहना।

दूहा॥ समर सपति पति समर की। समर सभेद सपंग॥
जग्य बेद जौ उद्धरौ। भूमि भेद ग्रह जंग॥ छं०॥ ३३॥

पूब कही चलतहिं न्रपति। सुबर बीर कमधज्ज॥
दीन भये दीनत भगै। सुबर बीर बर कज्ज॥ छं०॥ ३४॥

दीन भयें अरि अंग बर। छल छुट्टियै न छच॥
सय मत्तह सो वृत्त है। वै पुज्जै गुन मत्ति॥ छं०॥ ३५॥

रावल जी का सोमंत को धिक्कार करके उत्तर देना।

नाम सु मंची तिन धऱ्यौ। रे असंत परधान॥
दीनत भयें भयौ न जग। जग्यबेर बलिदान॥ छं०॥ ३६॥

अरिल्ल॥ मिलिरु समर उद्धरि चौहानं। जग्य करन पहुपंग निधानं॥
त्रेता द्वापर कऱ्यौ जु देव। कलिजुग पंग जग्य करि सेव॥
छं०॥ ३७॥

कवित्त॥ समर रूप सुनि समर। पंग आरंभ जग्य धूर॥
सत्य पहुर बलिराइ। जग्य पहुरै सु जग्य वर॥
त्रियौ पहुर रघुबीर। जग्य आरंभन जग्यौ॥
तृतीय पहुर जग्गयौ। ध्रम्म सुत ध्रम्म न लग्यौ॥
कलि पहुर जग्गि जग्यन बलिय। सुवर बीर कमधज्ज धुत्र॥
संसार सद्ध निंद्रा छिपिग। जग्गि जग्य विजपाल सुत्र॥
छं०॥ ३८॥

स्वर्ग इच्छ बलिराइ। जग्य किय गयौ पयातल ॥
चंद्र जग्य मिट्टन। कलंक [१]का कुष्ट अंग गल ॥
राजं इच्छ राजसू। राज रा षंड षंड वन ॥
नघुअ राजसू जग्य। कूर कर कुष्ट कूप जन ॥
कलिजुग्गराज राजसु करौ। कह्यौ दान षीडस करन ॥
सित सित्त कोम बर बीर हर। हरि बिचार लग्गौ चरन ॥
छं० ॥ ३९ ॥

अस्वमेद राजसू। लंब गौषंभ मेद बर ॥
अगनि होच बर मेद। मध्य जग मेध अप्प बर ॥
कनिष्ट बंध बड़बंध। चीय आचरन ग्रेह बर ॥
ब्रत संन्यास आचरन। पंच चवकलि न होहि धर ॥
कलि दान जग्य षोड़स करन। बाजपेय बर उड्डरै ॥
नन होइ कोइ इन जग्य बर। हँसे लोइ बहु बिग्गरै ॥छं०॥४०॥

पद्धरी ॥ उच्चऱ्यौ मंच चिचंग राव। कलि मध्य जग्य नहिं भ्रम्म चाव ॥
बल करौ नन्न भेषह प्रमान। जग्यौ न एक भुअ चाहुआन ॥
छं० ॥ ४१ ॥

चहुआन जोग छची अनंझ। अन्यन कोस सित्तए मंझ ॥
वय हीन इष्ट नन बल प्रमान। जग्गहि सजोग नह लच्छि थान ॥
छं० ॥ ४२ ॥

मंची न कोइ बर पंग ग्रेह। [१]नन होइ जग्य मानुष्य देह ॥
चैवार काल चंपै प्रमान। बरजै न तास उर जग्य जान ॥
छं० ॥ ४३ ॥

अपजस विसाहि करि कुमत मत्त। पुच्छौ सु बत्त तौ कही बत्त ॥
सुद्धरै बात सो करौ वीर। आवै न समर बर जग्य तीर ॥छं०॥४४॥

रावल जी का कहना कि होनहार प्रबल है।

कवित्त ॥ फुनि चिचंग नरिंद। चतुर विद्या सचित्त मति ॥
भव भवस्य न्रिम्मान। व्रह्म भूले न्रिमान गति ॥

---

(१) ए.-ना कुष्ट।

इह अजञ्च चिंतयौ । ग्रञ्च प्राहारन सांई ॥
तन मनुच्छ सम देव । बुल्लि बुल्यौ बल्ल तांई ॥
त्रैलोक अप्पि बलिराइ नें । राम जुद्ध त्रैता सु बर ॥
जदुबीर सहाइक पथ्थ बंध । तब कुबेर बरष्यौ सुधर ॥ छं० ॥ ४५ ॥

पंग सुवर परधान । समर सम्हौ उच्चारिय ॥
बलि सु जग्य विग्गऱ्यौ । भ्रम्म छिची न सम्हारिय ॥
चंद जग्य विग्गऱ्यौ । मंत बिन अटन सु पत्तौ ॥
दुज्ज दोष नषु क्रत्त । कित्त अप्पनौ सु हत्यौ ॥
इह भ्रम्म क्रम्म षल षंडि षग । जित्त जगत सब बस कियौ ॥
प्रथिराज समर बिन मंडलह । अवर जग्य नह हर तियौ ॥
छं० ॥ ४६ ॥

रावर समर नरिंद । समर साधन्न समर बर ॥
समर तेज सम जुद्ध । समर आकृत्य समर घर ॥
सम समंति सम कंति । समति सम सूर प्रतापं ॥
समर विधान विधान । सिंघ पुज्जै नन दापं ॥
भव भवसि भूत भव भव कहहि । भवतव्य सु चिंता सङ्करिय ॥
चिचंग राव रावर समर । इह प्रधान सम उच्चरिय ॥ छं० ॥ ४७ ॥

रावल जी का अपने को त्रिकालदर्शी कहना ।

हम नरिंद जोगिंद । भूत सुभ्भ्भैत भवसि गति ॥
हम चिकाल दरसी सु । क्रम्म बंधै न मोह भति ॥
जु कछु पच्छ निरमान । अग्ग मुष मोइ उच्चारै ॥
सुनि सुमंत उच्चरों । जग्ग चढ्ढै नसि रारै ॥
मुनि देव राज दुज विदुष बर । रही जच तचह सु वर ॥
देषियै भलप्पन पच्छि बर । तौ अग्गैंई जाइ धर ॥ छं० ॥ ४८ ॥

रावल जी का ऐतहासिक प्रमाण देकर प्रधान को यज्ञ करने से रोकना ।

बंदीजन रिषि ब्रह्म । जग्य पंडव वष्पानिय ॥

स्वर्ग इच्छ बलिराइ। जग्य किय गयौ पयातल ॥
चंद्र जग्य मिट्टन। कलंक [1]का कुष्ट अंग गल ॥
राजं इच्छ राजस्रू। राज रा पंड पंड वन ॥
नघुअ राजस्रू जग्य। कूर कर कुष्ट कूप जन ॥
कलिजुग्गराज राजसु करौ। कह्यौ दान षोडस करन ॥
सित सित्त कोम बर बीर हर। हरि विचार लग्गौ चरन ॥
छं० ॥ ३९ ॥

अस्वमेद राजस्रू। लंब गोषंभ मेद बर ॥
अगनि होच बर मेद। मध्य जग मेध अप्प बर ॥
कनिष्ट बंध बड़बंध। चीय आचरन ग्रेह बर ॥
ब्रत संन्यास आचरन। पंच चवकलि न होहि धर ॥
कलि दान जग्य षोड़स करन। बाजपेय बर उड्डरै ॥
नन होइ कोइ इन जग्य बर। हँसे लोइ बहु बिग्गरै ॥छं०॥४०॥

पद्धरी ॥ उच्चऱ्यौ मंच चिचंग राव। कलि मध्य जग्य नहिं भ्रम्म चाव ॥
बल करौ नन्न भेषह प्रमान। जग्यौ न एक भुअ चाहुआन ॥
छं० ॥ ४१ ॥

चहुआन जोग छची अनंभ। अन्यन कोस सित्तए मंझ ॥
वय हीन इष्ट नन बल प्रमान। जग्गहि सजोग नह लच्छि थान ॥
छं० ॥ ४२ ॥

मंची न कोइ बर पंग ग्रेह। [1]नन होइ जग्य मानुष्य देह ॥
चँवार काल चंपै प्रमान। बरजै न तास उर जग्य जान ॥
छं० ॥ ४३ ॥

अपजस विसाहि करि कुमत मत्त। पुच्छौ सु बत्त तौ कही बत्त ॥
सुड्डरै बात सो करौ वीर। आवै न समर बर जग्य तीर ॥छं०॥४४॥

रावल जी का कहना कि होनहार प्रबल है।

कवित्त ॥ फुनि चिचंग नरिंद। चतुर विद्या सचित्त मति ॥
भव भवस्य न्निम्मान। ब्रह्म भूलै न्निमान गति ॥

(१) ए.-ना कुष्ट।

इह अजन्न चिंतयौ । अन्न आहारन साँई ॥
तन मनुच्छ सम देव । बुन्न बुल्यौ बन्न ताँई ॥
त्रैलोक अप्पि बलिराइ नें । राम जुड्ड त्रैता सु बर ॥
जदुबीर सहाइक पथ्थ बँध । तब कुबेर बरष्यौ सुधर ॥ छं० ॥ ४५ ॥

पंग सुवर परधान । समर सम्हौ उच्चारिय ॥
बलि सु जग्य विग्गऱ्यौ । ध्रम्म छिन्नी न सम्हारिय ॥
चंद जग्य विग्गऱ्यौ । मंत बिन अटन सु पत्तौ ॥
दुज्ज दोष नघु क्रत्त । क्रित्त अप्पनौ सु हत्यौ ॥
इह ध्रम्म क्रम्म षल षंडि पग । जित्त जगत सब बस कियौ ॥
प्रथिराज समर बिन मंडलह । अवर जग्य नह हर तियौ ॥
छं० ॥ ४६ ॥

रावर समर नरिंद । समर साधन्न समर बर ॥
समर तेज सम जुड्ड । समर आकृत्य समर घर ॥
सम समंति सम कंति । समति मम सूर प्रतापं ॥
समर विधान विधान । सिंघ पुज्जै नन दापं ॥
भव भवसि भूत भव भव कहहि । भवतव्य सु चिंता सङ्करिय ॥
चित्रंग राव रावर समर । इह प्रधान सम उच्चरिय ॥ छं० ॥ ४७ ॥

रावल जी का अपने को त्रिकालदर्शी कहना ।

हम नरिंद जोगिंद । भूत सुझ्झैत भवसि गति ॥
हम त्रिकाल दरसी सु । क्रम्म बंधै न मोह भति ॥
जु कछु पच्छ निरमान । अग्ग मुष मोइ उचारै ॥
सुनि सुमंत उच्चरों । जग्ग चहूँ नसि रारै ॥
सुनि देव राज दुज विदुष बर । रही जच तचह सु बर ॥
देषियै भलप्पन पच्छि बर । तौ अग्गैंई जाइ घर ॥ छं० ॥ ४८ ॥

रावल जी का ऐतहासिक प्रमाण देकर प्रधान को यज्ञ करने से रोकना ।

बंदीजन रिषि ब्रह्म । जग्य पंडव वष्वानिय ॥

अकसमात इक प्रगट। निकुल जंपिय इय वानिय ॥
द्वादस वरस दुकाल। पन्यौ कुरषेत धरन्नं ॥
विप्र उच्छ व्रति न्हान। न्योति रिषि धोय चरन्नं ॥
तिहि पंक माहि लोटंत हौ। अद्ध देह कंचन भयौ ॥
पूरन करन्न तुम जग्य में। आयौ पन दाग न गयौ ॥ छं० ॥ ४९ ॥

दूहा ॥ कहि मोकलि परधान कर। इह सु कथ्थ चिचंग ॥
तौ तुम अब जग अंज से। कहा करहु पहुपंग ॥ छं० ॥ ५० ॥
अश्वमेद जग छसें करि। विश्वमित्र तप जोर ॥
कहा भूरै न्टप मंद मति। अहंकार मन ओर ॥ छं० ॥ ५१ ॥

सोमंत का कुपित होकर जयचन्द की प्रशंसा करना।

कुंडलिया ॥ पंग प्रधान प्रमान उठि। बचन श्रवन सुनि राज ॥
रत्त द्रष्टि अरु रुद्र मुष। चंपि लुहट्टी साज ॥
चंपि लुहट्टी साज। बचन बर बीर कहाई ॥
तर उप्पर चिचंग। करहि जुग्गन पुर नाई ॥
सज्जे पंग नरिंद। तीन पुर कंपि अभंग ॥
असुर ससुर नर नाग। पंग भय भये सु पंग ॥
छं० ॥ ५२ ॥

कवित्त ॥ बचन उच्च दिठ उच्च। समर तप करन उचाइय ॥
पंग लज्ज सिर मंडि। बीर ब्रह्मंड लगाइय ॥
सोइ न्रपत्ति जयचंद। नाम जिन पंग पयानं ॥
इला धरन समरथ्थ। नयन काली जुग जानं ॥
कविचंद देव विजपाल सुअ। सरन जाहि हिंदू तुरक ॥
चिचंगराव रावर समर। रज नष्षै लग्गै अरक ॥
छं० ॥ ५३ ॥

जयचन्द का राजसी आतंक वर्णन।

पद्धरी ॥ वुल्यौ सुमंच मंची प्रमान। कनवज्जनाथ करि जग्य पान ॥
मिसि सेन सज्जि आषेट रूप। चिंता न चिंत्य बंधेत भूप ॥
छं० ॥ ५४ ॥

आरज्ज सेन प्रथिराज राज। बंधेति बलह समरह समाज ॥
बन वहन गहन दुज्जन सभूमि। सर ताल वितल कढ्ढैति तूंमि ॥
छं० ॥ ५५ ॥

वग्गुरि सभेद गोरी उपाइ। बंधि सिंध उभय पच्छिम लगाइ ॥
मंडै समूल सुरतान तीर। करनाट करन षुरसान मीर ॥छं०॥५६॥
गुज्जर सु कोह दक्षिन लगाइ। लग्गै न गहन कहु अरिन पाइ ॥
उतरत्त बंध पुब्बह प्रमान। चढ़ि देषि पंग पावै न जान ॥
छं० ॥ ५७ ॥

तारक सु षेद बंधे प्रसार। चहुवान चपेटक जुद्ध भार ॥
पाताल पंथ नन व्योम पंथ। बन बहन हरन दुरि सोम अंथ ॥
छं० ॥ ५८ ॥

दल सज्जि करहि न्रप सच भेद। पहुपंगराइ राजह्न बेद ॥
॥ छं० ॥ ५९ ॥

यज्ञपुरुष का ऋषि के वेष में नारद के पास आना।

दूहा ॥ आयौ रिषि नारद सद्रिस। धरम मूल प्रतिपार ॥
मनों विदिसि उत्तारनह। जग्य रूप सिरदार ॥ छं० ॥ ६० ॥

नारद का पूछना कि आप दूबरे क्यों हैं।

दीन दिष्षि वर वदन तिन। ता पुच्छै रिषि राज ॥
किन दुष्यह तन किस्सता। किन दुष्षह आकाज ॥ छं० ॥ ६१ ॥

ऋषि का उत्तर देना कि मैं मानहीन होने से दुखी हूं।

तव रिषि बोल्यौ रिष्य प्रति। अस्त्री अस्त्र सरूप ॥
तिन कारन तन जरजर्यौ। अग्गि विभंगन रूप ॥ छं० ॥ ६२ ॥

कवित्त ॥ अंग षंड न्रप राज। मान षंडनति विप्र वर ॥
गुरु षंडन गुरु विदुष। लच्छि षंडन विनक्क घर ॥
निमि षंडन तिय जोग। सु निसि षंडन अभिमानं
क्रत षंडन उरदेव। जग्य षंडन सुरथानं ॥
इत्तने षंड कीने हुते। तदपि दुष्य जर जर तनह ॥
जानैन देव दैवान गति। सुगति विद्धि न्रम्मय घनह ॥छं०॥६३॥

नारद ऋषि का कहना कि आपके शुभ के लिये यथा साध्य उपाय किया जायगा।

दूहा ॥ सोनंतहु तिन बिप्प कहि। नव नव चरित प्रमान ॥
तू आज्ञा जो देइ गौ। सो आज्ञा परमान ॥ छं० ॥ ६४ ॥

लिअष्यरी ॥ अग्गि समान जु अग्गि प्रमानं। विप्र और औरै उच्चानं ॥
जाहि कुचील कुचील करिज्जै। तौ वह बेद भंग नव लिज्जै ॥
छं० ॥ ६५ ॥

जो वह तन अत्यंत प्रकारं। बहुत भ्रम्म आरत उच्चारं ॥
षंड मंड लीने कर धारिय। कांति सराप भई सिल नारिय ॥
छं० ॥ ६६ ॥

तहां आइ बर बाज बिलग्गे। सुनें पंग आतुर मन मग्गे ॥
जौ आग्या इन भंति सु भज्जै। तौ ग्रेह होंहिं ग्रामि गुर सज्जै ॥
छं० ॥ ६७ ॥

हंका कार दुहू न्रप भारी। पंग जाउ जानै न प्रकारी ॥
जिन डहाल क्रन्नं गुन षेद्यौ। तीन बाल भारथ्थह भेद्यौ ॥
छं० ॥ ६८ ॥

उभै बान करि मान प्रकारं। सुवर बीर संचै सिर सारं ॥
छं० ॥ ६९ ॥

सोमंत का राजा की सलाह देना कि चहुआन से पहिले रावल समरसी दोनों की परास्त करना चाहिए।

कवित्त ॥ सुमत समंती स्याम। सुमति संग्रही पंग बर ॥
वंचि राज चहुआन। बंधि चिचंग सम्म घर ॥
सुलप लज्ज पति जीह। बेंन क्रक्कस उच्चारहि ॥
* ... .
मधि भूप रूप दारुन वचन। पंगराइ अम्मर अरस ॥
सज सेन सु वंधौ वंध वल। देव राज देवह परस ॥ छं० ॥ ७० ॥

* छन्द ७० की चतुर्थ पंक्ति चारो प्रतियों में नहीं है।

सोचहि पंग नरिंद। राज जानै इह सत्तिय ॥
ता छत्री कों दोस। भूमि भोगवै न दुत्तिय ॥
पंग काल आरुहै। ताहि गारुरू न कोई ॥
सस्त्र मंच उद्धरै। सार धर धार समोई ॥
मयमंत सेन चतुरंग तजि। बढ़िय दंद हिंदुअ उभय ॥
दैवत्त काला दैवत्त तूं। दै दुवाह दुज्जन डरय ॥ छं० ॥ ७१ ॥

मंत्री के बचन मान कर जैचन्द का फौज सजना।

दूहा ॥ सज्जन सेन सु राज कहि। बज्जिग बज्ज सु लाग ॥
इक्कै विधिना अंगमै। बीय मनुच्छ न भाग ॥ छं० ॥ ७२ ॥

कवित्त ॥ तज्जि कमान जु तीर। छंडि अवाज गोरि चलि ॥
ज्यों गुन मुकि उठि चंग। सीह बर स्रग्ग अंड हलि ॥
त्यों पहुपंग नरिंद। सेन सजि धर पर धाईय ॥
असुर ससुर सर नाग। पंग पहुपंग हलाइय ॥
अच्छरत रेन अरि उच्छरत। कायर मन पछ अग्ग तन ॥
कविचंद सु सोभ विराजई। जानि पताका दंड घन ॥ छं० ॥ ७३ ॥

जयचन्द की सुसज्जित सेना का आतंक वर्णन।

कुंडलिया ॥ चढ़तें पंग सु सेन मिलि। तुछ तुछ कूंच प्रमान ॥
नदी समुद्रह सव मिलै। पंग समुद्रह आनि ॥
पंग समुद्रह आनि। सेन न्टप मंडप साचै ॥
सिंभ गंग उतमंग। रंग पल ती रंग राचै ॥
दइय पंग अनभंग। सक्र सहाय छिति डुल्लै ॥
मुदरि भान संचरी। दिसा दुरि धर पर चल्लै ॥ छं७ ॥ ७४ ॥

चोटक ॥ पहुपंग निसान दिसान हुअं। सुनियं धुनि डुल्लि प्रमान धुअं ॥
विधि वंध विधिं क्रम काल डरै। जयचंद फवज्ज सु बंधि परै ॥
छं० ॥ ७५ ॥

रथ सज्जि हयं गय पाय दलं। तिन मद्धि विराजति चाहि ललं ॥

नव बत्ति निसान न्त्रिघोष सुरं। सुनियै धुनि धीरज तज्जि भरं॥
छं० ॥ ७६ ॥

गजराज स घंटन घंट बजै। अनहद्द सवद्दनि जानि सजै॥
घन नंकहि घुघघर पष्पर के। सु बुलै जलजात किधों जल के॥
छं० ॥ ७७ ॥

पर टोपनि सीस धजाति हलै। तिनकी कवि देषि उपम्म कलें॥
* चय नेचय मंडिय नेच उजास। झर मझि प्रगट्टि मनों कैलास॥
छं० ॥ ७८ ॥

बंधि पंषि उमा ववि सीस सधी। वढ़ि सस्सि कला मनों ईस बंधी॥
चवरंग धजा फहरीति हलं। सु मनों ससि चाह बसीठ हलं॥
छं० ॥ ७९ ॥

गुरु भान ति राह रु भूमि सुधं। सब अप्पि परी गह तात बुधं॥
दमकै बनि कंति कती सरसी। निकसै मनु मानिक मंजर सी॥
छं० ॥ ८० ॥

दिसि अट्ठ दुरी उपमानि जनं। सु मनों तम जीति रह्यौ रविनं॥
ढुरि ढाल ढलं मिल सोभ धरै। चढ़ि देव विमान सु केलि करै॥
छं० ॥ ८१ ॥

सु मनों जनु जुग्गिय जग्गिययं। सु मनों प्रलैकाल प्रथीपुरयं॥
छं० ॥ ८२ ॥

रहस्सहि बीरति सूरति मुष्प। मनों सतपच विकासिय सुष्प॥
मुद्दे मुष काइर झुझ्झिझग मोद। मनों भए संझ सु दिष्पि कमोद॥
छं० ॥ ८३ ॥

---

* यह पंक्ति छन्दोभंग से दूषित है। त्रोटक छन्द चार सगण का होता है किन्तु इस पंक्ति में एक लघु अधिक है। पाठ में कोई ऐसी युक्ति भी नहीं है कि जिस से लिपि दोष माना जाय और न किसी प्रकार शुद्ध करने का अवकाश भी है अस्तु इसे ज्यों का त्यों रहने देकर केवल यह सूचना दे दी है। छन्द ८२ के बाद के दो छन्द न तो त्रोटक है और न समरूप से उनकी मात्रा किसी अन्य छन्द से मिलती है इसका मूल कारण लिपि दोष है। बीच में कुछ छन्द छूटे हुए भी मालूम होते है।

उभै षट फौजति पंम सजै। दिसि अद्ध उभै दुरि थान लजै ॥
चढ्यौ पहुपंग सु हिंदुअ थान। इतें चितरंग उते चहुआन ॥
छं० ॥ ८४ ॥

सेना सजनई का कारण कथन।

दूहा ॥ सधर धार बज्जन बहुल। धर पहार बर गज्जि ॥
पुब्ब बैर चहुआन कौ। बजे तीर कर बज्जि ॥ छं० ॥ ८५ ॥
जग्गि जलनि जैचंद दल। बल मंड्यौ छिति राज ॥
बैर बंध्यौ चहुआन सों। पुव्व बैर प्रति काज ॥ छं० ॥ ८६ ॥

जैचन्द का पृथ्वीराज के पास दूत भेजना।

दूत सु मुक्कि प्रधान बर। दिसि राजन प्रथिराज ॥
*मातुल पष जैचंद धर। अर्द्ध सु मंगै काज ॥ छं० ॥ ८७ ॥

गोयंद राय का जैचन्द के दूत को उत्तर देना।

भुजंगी ॥ न जानं न जानं न जानंत राजं।
तुमं मातुलं वंस ते भूमि काजं ॥
दई राज अनगेस पृथिराज राजं।
लई भारथं वीर भारथ्थ वाजं ॥ छं० ॥ ८८ ॥
जमं ग्रेह पत्तौ किमं पच्छ आवै।
ततं पंग राजं सु भूमिं सु पावै ॥ छं० ॥ ८९ ॥
दूहा ॥ पंगराज सोइ भूमि बर। मतन भूमि सिरताज ॥
कहै गरुअ गोयंद मति। सामंता सिर लाज ॥ छं० ॥ ९० ॥
कवित्त ॥ सुनहु मंत भर पंग। बात जानहु न मंत बर ॥
वीर भोग वसुमती। वीर बंका बंकी धर ॥
वीरा ही अनसंक। रहै वीरा विन बंकी ॥
है षुर पग्गह धार। सोइ भोगवै जु संकी ॥
पावंड डंड रच्चै नहीं। पाषंडह रच्चै न गुन ॥

* इसके बाद का एक दोहा या और कोई छोटा छंद छूट गया मालूम होता है।

क्रम विक्रम चारि चच्चर जिमसि। अट्टत वृत्त जावै न पन ॥
छं० ॥ ९१ ॥

कवित्त ॥ काल ग्रेह को फिरै। मेघ बुट्ठै धारा धर ॥
षह तुट्टै तारिका। जाइ लग्गै न नाक पर ॥
छल छुट्टै [1]मुष सद्द। गरुअ हरुअं सु प्रमानं ॥
बुधि छुट्टै आबुद्धि। होइ पछितावति जानं ॥
संघरिय चीय बर कंत बर। गरुअ भूमि को भोगवै ॥
मातुल कहाय तातुल सु मति। मरन देव गुन जोगवै ॥
छं० ॥ ९२ ॥

दूत का गोयन्दराय के बचन जैचन्द से कहना।

कहिय बत्त यो मंचि। राज यों बत्त न मानिय ॥
अधम बुद्धि बनि तमक पोत। क्रम अक्रम न ठानिय ॥
छल छुट्टै बल बधै। सधै सिद्धंत सु सारं ॥
एक एक आवद्ध। देव देवत्त विचारं ॥
पहुपंग राय राज सु अवर। जाइ कही तामस विधिय ॥
सजि सेंन सबें चतुरंग बर। सुबर बीर बीरह बधिय ॥छं०॥ ९३ ॥

जैचन्द का कुपित होकर चढ़ाई करना।

दूहा ॥ सुतन सु पंग नरिंद सजि। सब छिची छबि छाइ ॥
बर बंसी ससिपाल ज्यों। षग्ग षटक्यौ आइ ॥ छं० ॥ ९४ ॥

जयचन्द के पराक्रमों का वर्णन।

कवित्त ॥ चंदेरी ससिपाल। करन डाहाल पुच बर ॥
तिहि समान संग्राम। बान बेध्यौति बीर उर ॥
तिमिरलिंग षेदयो। षेदि कढ्यौ तत्तारिय ॥
सिंघराव जै सिंघ। सिंघ साध्यौ गुन गारिय ॥
जैचंद पयानौ चंद कहि। ग्रह भग्गी निग्गह भगिय ॥
भीमंत भयानक भीम बर। पुब्ब तरोवर तव रहिय ॥ छं० ॥९५॥

---

(१) कृ.-सुख।

दूहा ॥ सो फुनि जीत्यौ पंग पहु। धरनि वीर सों बीर ॥
उदधि उलट्टिय हिंदु न्रप। वढ़ि कायर उर पीर ॥ छं० ॥ ९६ ॥

भुजंगी ॥ प्रकारे सुचारे चवै इक्क पायं। असी एक मंतेग्र होवंत तायं ॥
सु बंबीस मत्ते न होवंत कंदं। भुजंगी प्रयातं कहै कब्बिचंदं ॥ छं० ॥ ९७ ॥
चढ्यौ पंग रायं प्रकारं प्रकारं। फुरी इंद्र ज्यों जानि बलिराय सारं ॥
घनी अंग अंगं जिती सेन सज्जं। मनो देवता देव साधंत गज्जं ॥
छं० ॥ ९८ ॥
रहै कोन अभ्यंत जंबल प्रकारं। जितै पंग सों कोन कलि आस सारं ॥
फनी फूंक भूली डुली भू प्रमानं। कंपे चारि चारं उभै यं प्रमानं ॥
छं० ॥ ९९ ॥

कवित्त ॥ धर तुट्टै पुरतार। पंग असि बर अस सद्धी ॥
हिंदु लेछ दोउ सेन। दोऊ देवत्तन बंधी ॥
दुहूं तोन जस द्रोन। पथ्थ प्रथिराज गनिज्जै ॥
ए न डुले ए डुले। ए म रंचे ए रज्जै ॥
जैचंद सपूरन कर पवित। परिपूरन उग्यौ अरक ॥
नर नाग देव देवत्त गुन। विधि सुमंत बज्जी धरक ॥ छं० ॥ १०० ॥

चोटक ॥ सु सुनी धुनि बैन प्रमान धरं। चढ़ि संमुष पंग नरिंद षरं ॥
सजि सूर सनाह सुरंग अनी। सु कछू जनु जोग जुगिंद्र धनी ॥
छं० ॥ १०१ ॥
वर वंक चिलक्क करच्च इसी। घन सीस उग्यौ जनु बाल ससी ॥
जल होत थलं थल होत जलं। सु कही कविराज उपंम भलं ॥
छं० ॥ १०२ ॥
जल सुक्किय ग्यानिय मोह जतं। जल वड्ढि जलं जर बीरज तं ॥
सम वंच करूर कुरंग दिसा। पुरहे जनु कायर बीर रसा ॥
छं० ॥ १०३ ॥
स वढ़े वल सूर प्रमान रनं। सु मनो वरसें वर घेरि घनं ॥
अरकादि स धुंधर मंत दुरं। सु मनों विन दानय मान दुरं ॥
छं० ॥ १०४ ॥
छत भंग निसानति वीर बजै। रथ वाज करी करनान लजै ॥

कलहंत करे किहि चिंत बरं। दुरि इंद्र रह्यो पय बंधि नरं॥
छं० ॥ १०५ ॥

कुंडलिया (?) ॥ यों लय लग्गो पंग पय। तो पग सजिग सिंगार॥
*श्रवन बत्त संची सुनै। श्रवन सुनै घरियार॥
श्रवन सुनै घरियार। अंध कारिम तन सोहै॥
मिलें पंग तौ पंग। अंग दुज्जन दल गोहै॥
षट विय षोडस जन्न जै। जो रजै राज राजे सुतौ॥
.... ॥
विधि बंधन बुधि हरन। देव द्रजोध जोध सौ॥
.... ॥
तौ पंष समह जुद्दह करन। .... ॥
.... ॥ छं० ॥ १०६ ॥

दूहा ॥ पंग छच छिति छांह बर। उभै दीन भय दीन॥
पंग सूर उग्गै सजल। भयौ बीर प्रति मीन॥ छं० ॥ १०७ ॥

जैचन्द की सेना का प्रताप वर्णन।

कवित्त ॥ वन घन षग लग्गीय। हल्लिय चतुरंग सेन बर॥
यों हल्लिय धर भार। नाव ज्यौं रीति वाय वर॥
यों हल्ले द्रिगपाल। चंद हल्लै ज्यों धज धर॥
बद्दर पवन प्रकार। ध्याम डुल्लेति अगनि धर॥
इह मंत चिंति चहुआन वर। मातुल धर उर षग्ग षिति॥
मंगै जु पंग पहुमी सपति। सुबर बीर भारथ्थ जिति॥छं०॥ १०८।

जैचन्द का चहुआन को पकड़ने की तैयारी करना और उधर शहाबुद्दीन को भी उसकाना।

दूहा ॥ सु विधि कीन सज्जिय सयन। ग्रहन चाइ चहुआन॥
तो सुरपुर भंजै नहीं। इह आधार विरान॥ छं० ॥ १०९ ॥

---

* यह कुंडलिया नहीं वरन दोहा छन्द है परंतु खण्डित है और इसके बाद के कुछ और छन्द भी लोप हुए ज्ञात होते हैं क्योंकि मजमून का सिलसिला टूटता है।

पहुपंग सु भैभीत गति। बीर डंड महि सूर ॥
ते फिरि सूर समान भय। विधि मति रत्ति करूर ॥ छं० ॥ ११० ॥
नव गति नव मति नव सपति। नव सति नव रति मंद ॥
चाहुआन सुरतान सों। फिरि किय पंग सु दंद ॥ छं० ॥ १११ ॥
सत्त अरुझि संकरह ज्यों। उठी बीर बर वेलि ॥
बढ़न मतैं चहुआन रज। षर भारथ्थ सु केलि ॥ छं० ॥ ११२ ॥
कवित्त ॥ भये अभय भय भवन। रजन स्वामित्त सूर नर ॥
तेजल लगै न पंग। सुरस पाई न पंग धर ॥
अग्ग क्रंम क्रम धरिय। क्रंम पच्छा न उचारै ॥
मय मत्ता तिथि पत्त। गयौ बंचै न सुधारै ॥
बर बन बिहस्सि रह सैन कथ। रथ भंजै भंजन सु अरि ॥
डंमरिय डहकि लग्गिय लहकि। दहकि रिदै कायर उसरि ॥
छं० ॥ ११३ ॥

जैचन्द की सेना का दिल्ली राज्य की सीमा की भूमि दबाना और मुख्य मुख्य स्थानों को घेरना।

दूहा ॥ कूरलती सारस सबद। सुरसरीस परि कान ॥
सूर संधि मन बंधि कें। चले बीर रस पान ॥ छं० ॥ ११४ ॥
पद्धरी ॥ अन वुद्ध जुद्ध आवद्ध सूर। बर भिरत मत्त दीस करूर ॥
बर वुद्धि जान आवुद्ध जुद्ध। सामंत सूर बर भंजि सुद्ध ॥
छं० ॥ ११५ ॥
इक्कंत तमसि तेजं करूर। कड्ढैति दंत गज मंत सूर ॥
वज्री सु वाह वाहंत वज्र। झिल्लैति वज्र सुगं सु रज्ज ॥
छं० ॥ ११६ ॥
सामंत सूर पति तीन वाहु। चंप्यौति पंग दल गिलन राहु ॥
डह डहक वदन फुल्लै प्रकार। सामंत सूर सन पच भार ॥
छं० ॥ ११७ ॥
कंमोद ओद काइर कुरंग। उग्यौ सु भान पहुपंग जंग ॥

छिति मिच छच छची न जान। नर लोइ गत्ति ज्यों अगति वाम॥
छं० ॥ ११८ ॥

नव निजरि निकरि नव विघन सूर। जंपै सु चंद बरदाइ पूर॥
छं० ॥ ११९ ॥

कवित्त ॥ भुज पहार चहुआन। उदधि रुक्कवन पंग वर॥
सु दिसि विदिसि वर बोरि। बीर कमधज्ज पग्ग भर॥
अति अथाह उप्पटिय। सलिल सहमत्त सयन वर॥
भ्रम्म जिहाज तिरंत। मंत बैरष्प बंधि भर॥
धर ढारि पारि गढ़ बंक बहु। दिल्ली वै हल्लिय दिसह॥
धनि सूर न्रप्प सोमेस सुअ। तुच्छ अथाह प्रवेस दल॥छं०॥१२०॥

ऐसेही समय पर पृथ्वीराज का शिकार खेलने को जाना।

गोडंडह षल मिच। राज सेवा चुकि ग्यानं॥
ग्यान दगध जोगिंद। कुलट कैरव भगि पानं॥
वयति मध्य तामध्य। मद्धि मोचन अरि रोचन॥
तहां पंग चढ्ढई। पर्यौ पारथ नह पोचन॥
भय काल काल संभरि धनी। सुनि अवाज ढिल्ली तजिय॥
मयमंत मयक्तत मोह गति। सुवर जुद्ध जम छ्रत लजिय॥
छं० ॥ १२१ ॥

दूहा ॥ तिन तप आषेटक रमै। थिर न रहै चहुआन॥
वर प्रधान जोगिनि पुरह। धर रष्पन परवान॥ छं० ॥ १२२ ॥

कैमास की स्वामिभक्ति।

कवित्त ॥ गय सु रष्षि परधाम। थान कयमास मंच वर॥
अति उतंग सति चंग। नदिय नंदन बंदन बर॥
अति उतंग संचह। अभंग झिल्लै प्रहार कर॥
स्वामि काज स्वामित्त। करन सनमान करन धर॥
दल दृढ्ढि सु रिधि राजन वलिय। अभै भयंकर बल गरुअ॥
सामंत सूर तिन मंच वर। सवर वीर लग्गौ हरुअ॥ छं० ॥ १२३ ॥

दिल्ली के गढ़ में उपस्थित सामंतों के नाम।

रष्षि कन्ह चौहान। अत्तताई रूई भर॥
रषि तोअर पाहार। बीर पज्जून जून भर॥
रषि निड्डुर रठ्ठौर। रष्षि लंगा वावारौ॥
षीची रावप्रसंग। लज्ज सांई सिर भारौ॥
दाहिम्म देव दाहरतनौ। उद्दिग बाह पगार वर॥
जज्जोनराइ कैमास सँग। एकादस रष्षेति भर॥ छं०॥ १२४॥

जमुना पार करके दवपुर को दाहिने देते हुए कन्नौज की फौज का दिल्ली को घेरना।

गौ जंगल जंगली। देस निरवास वास करि॥
जोगिन पुर पहुपंग। दियौ दष्पिना देव फिरि॥
उतरि जमुन परि बीर। देवपुर सुनि पल षद्धी॥
अद्ध रयनि कल अद्ध। चंद उग्यौ कल अद्धी॥
अगिवान कन्ह तोंअर बलिय। हलिय सेन नन पंच करि॥
नद गुफा बंक बंकट विकट। सुबर बैर बर बीर षरि॥ छं०॥ १२५॥
दूहा॥ विकट भूमि बंकट सुभर। अंगमि पंग नरिंद॥
सो प्रथिराज सु अंगमै। धनि जैचंद नरिंद॥ छं०॥ १२६॥

सामंतों की प्रशंसा और उनका शत्रु सेना से लड़ाई ठानना।

कवित्त॥ जमुन विहड वर विकट। हक्क बज्जिय चावद्दिसि॥
पंग सेन संमूह। स्रर कट्ठै संमुह असि॥
तेंही रत्त नरिंद। मुक्कि भग्गों चहुआनं॥
पुंडीरा नीरत्ति। नेह बंध्यौ परिमानं॥
विन स्वामि सब्ब सामंत भर। एक एक बर सहस हुअ॥
अष्षै नरिंद पहुपंग दिसि। धुअ समान सामंत भुअ॥
छं०॥ १२७॥
दूहा॥ अढर ढरहिं अनमन्न महि। ढरहि अठार प्रकार॥
को जयचंदह अंगमै। दोऊ दीन सिर भार॥ छं०॥ १२८॥

जैचन्द की आज्ञानुसार फौज का किले पर गोला उतारना।

कवित्त ॥ आयस पंग नरिंद । गहन उच्चरि संभरि सुर ॥
सबर सूर सामंत । लोह कढ्ढे बढ्ढे बर ॥
बीर डक्क सुनि हक्क । बज्जि चावद्दिस झानं ॥
मुष मुष रुष अवलोकि । बीर मत्ते रस पानं ॥
सद मद्द सिंघ छुट्टे तमकि । झमकि हथ्थ सिप्पर लइय ॥
दुरजन दुवाह भंजन भिरन । दइ दुवाह उभ्भै दइय ॥छं०॥१२९॥

उधर से सामंतों का भी अग्निवर्षा करना।

नराज ॥ इयं उवं उअं इयं दुअंत सेन उत्तरं ।
जमी जु गंज मेत जेत बड्डि सिड्डि सुभ्भरं ॥
कुसंम किंसु किंसु कंक कत्ति मत्ति मंडयं ॥
मनो मनं मनी मनं मनी मनंत षंडयं ॥ छं० ॥ १३० ॥
जयं जयं जमंन काल व्याल पग्ग उभ्भरं ।
मनो मयंक अंक संक काम काल दुभ्भरं ॥
झनं झनं झनं झनं ठनंत घंट बज्जयं ।
मनो कि मद्द सद्द रद्द भद्द गज्ज गज्जयं ॥ छं० ॥ १३१ ॥
मनो कि संक काम जाम लान ताम बद्दयं ।
न्रपत्ति रूप भूप जूप नूप नद्द हद्दयं ॥ छं० ॥ १३२ ॥

घोर युद्ध का आतंक वर्णन।

कवित्त ॥ धक्काई धक्काइ । मग्ग लीना पग मग्गं ॥
षग्गानी झम अग्ग । बीर नीसानति बग्गं ॥
सार झार दिष्यियै । पंग नन दिष्यि नयंनं ॥
भय भयान पिष्यियै । सद्द सुनियै नन कंनं ॥
सुप दुष्प मोह माया न तह । क्रोध कलह रस पिष्यियै ॥
पारथ्थ कथ्थ भारथ विषम । लष्य एक सर लष्यियै ॥छं०॥१३३॥

शस्त्र युद्ध का वाक् दर्शन वर्णन।

चोटक ॥ जु मिले चहुआन सु चाइ अनी । करि देव दुवारन दुंद घनी ॥

रननंकहि वीर नफेरि सुरं। मनो वीर जगावत वीर उरं॥
छं० ॥ १३४ ॥

दुअ स्वामि दुहाइय मुष्प पढ़ै। झलकावति षग्गति हथ्थ कढ़ै॥
तिन मध्यति जोगिनी कूक करै। सुनि सद्द तिलंसिय प्रान डरै॥
छं० ॥ १३५ ॥

नचि कंध कमंधन नंचि शिवा। शिव कै उर लग्गि रही न जिवा॥
दिषि नंदिय चंदति मंद हसी। सिव स्वेद सिवा सुर भंग लसी॥
छं० ॥ १३६ ॥

गज षग्ग सु मग्गन यों रमके। सु बजें जनु झंझन के झमके॥
पय वंधि जला जल दिव्य नचै। .. .. ॥ छं० ॥ १३७॥
परिरंभ अरंभति रंभ वरै। जिनके झर सीस दुझार झरै॥
गज दंतन कढ्ढि सु सस्त्र करै। तिन उप्पर देवन पुष्फ परै॥
छं० ॥ १३८ ॥

उड़ि हंस सु पंजर भग्गि करी। पजरं तिन हंसन फेरि परी॥
अययौ रथ हंस सु हंस लियं। भर पचनि पंच सु सथ्थ लियं॥
छं० ॥ १३९ ॥

परि डेढ़ हजार तुरंग करी। नरयं भर और गनी न परी॥
छं० ॥ १४० ॥

दूहा ॥ उभय सु षट भारथ परिग। हय गय नर भर बीय॥
मरन अवस्था लोक के। जुग ए जीवन जीय॥ छं० ॥ १४१ ॥

कन्ह के खड्गयुद्ध की प्रशंसा।

फिरिय कन्ह जनु कन्ह गिरि। भिरन भूप भर पंग॥
जनु दव लग्गो चिन वनह। भरहर पंगिय जंग॥ छं० ॥ १४२॥

घोर घमसान युद्ध,का वर्णन।

भुजंगी ॥ लरै सूर सामंत पंगं समानं। मनों डक्क वज्जै सु भूतं उभानं॥
सुअं एक एकं प्रमानंत वाहै। मनों चच्चरी डिंभरू डंड साहै॥
छं० ॥ १४३ ॥

तुटै अंग अंगं तरफ्फंत न्यारे। तिनं देषि कव्वी उपम्मा बिचारे॥

जलं मानसं तुच्छ जल में विचारी। मनों पेल होहेलुआ देत तारी॥
छं० ॥ १४४ ॥

तुट्टै कधं बंधं उठैं छिंछ रत्ती। कही चंद कव्वी उपम्मा सु रत्ती॥
तरं वेलिबद्धी सु चद्दीन अग्गी। फिरी जानि पच्छी सु पाताल मग्गी॥
छं० ॥ १४५ ॥

पियै चौसठी रुद्धि गज्जं अहारं। घुटै घुंट लोही करै मृत्यु न्यारं॥
मनों मोर वंध्यौति मोरंत अष्पै। फरस्सी कपूरं मनों मुष्प नंषै॥
छं० ॥ १४६ ॥

तुटै बीरमं बीर बंसी निनारै। दलं मध्य सोहै मनों मुक्ति भारै॥
प्रजा पत्ति दच्छं जचै ईस अग्गै। भजै मुष्ष बैरं फिरै सीस मग्गै॥
छं० ॥ १४७ ॥

उड़ै षग्ग मग्गं तुट्टै सीस सज्जै। जंपै झंषि केकी मनों मीन वज्जै॥
तुटी दंत दंतीन के दंत लग्गी। मनों चंच हंसी म्रनालंति षग्गी॥
छं० ॥ १४८ ॥

फुलै भान दिष्पै अरुन्नं समेतं। मनों तारका राह गुर काल हेतं॥
छं० ॥ १४९ ॥

कुंडलिया॥ सार प्रहारति सार झर। वरन विहसि दछिराज॥
सो दिष्यौ भारथ्थ में। कथ्थ कहिग सिरताज॥
कथ्थ कहिग सिरताज। सार सम्हौ सहि बीरं॥
धार षग्ग उभ्भरी। मुष्प उभ्भरि नह नीरं॥
मवति मत्ति उज्जली। बीर बीरह लगि वारं॥
गजदंती विच्छुरै। सूर 'टुट्टै धर सारं॥ छं० ॥ १५० ॥

दिल्ली की सेना के साथ चित्तौर की कुमक का आ मिलना।

कवित्त॥ सुहत पंग आभंग। रंग रवनी रवनंगन॥
मो हत अंगम काल। अंग अंगमै देव धन॥
सार धार देवत्त। देव दुज्जन दावानल॥
पंग सहायक सूर। वीर मारुत मारुत कल॥

(२) ए..टुंटै।

चहुआन वैर चिचंग दोउ। दुअ सज्जन बंधी अनी ॥
पूजै न कोइ भारथ्य में। नव निसान जुद्धं पनी॥ छं०॥ १५१॥

राजा जैचन्द का जोश में आकर युद्ध करना और उस की फौज का उत्साह।

भुजंगी॥ झुक्यौ पंगराजं प्रकारं प्रकारं। मनो सूर रूप रासि उज्यौति सारं॥
महा तेज सुष रत्त द्रग वीर लज्जै। भयं छंडि भूपाल अलि थान हज्जै॥
छं० ॥ १५२ ॥
मनों जोगमाया जुगं जुड तारं। झुक्यौ पंग पंगं सु लम्भै न पारं॥
न जानं न जानं न जानंत सेनं। तिहूं लोक पंगंति सेनं समेनं॥
छं० ॥ १५३ ॥
तितंची तितंची तितंची प्रकारं। मनों उज्जलं सूर ज्यों पंग धारं॥
दिषै भूमि नाहीं अनी सेन देषै। घनं बद्दलं मद्धि षन्दं विसेषै॥
छं० ॥ १५४ ॥
तजै तारुनी तार अह्कार तारं। इसे सार सों सार बज्जै करारं॥
ततथ्ये ततथ्ये तथुंगं चिनेतं। रहै कोन अभिमंन रावत्त हेतं॥
छं० ॥ १५५ ॥
महावीर बंके भयं ढिग्ग दूरं। तिने उपम्मा चंद ससि सैस सूरं॥
प्रलै ते प्रलैकाल पंकीति मेघे। मनो द्वादसं भान छुट्टै प्रसेघे॥
छं० ॥ १५६ ॥
दुदै तोन बंधे सुरं तीन जोधं। तिनं बालुकी बुद्धि ब्रह्मा विवोधं॥
छं० ॥ १५७ ॥

साटक॥ सासोधं पहुपंग पंगुर गुरं, नागं नरं नर सुरं॥
सब्बं भै विधि भानं मान तजयं, अष्टा दिसा पालयं॥
भूपाले भूपाल पालन अरिं, संसारनं सारियं॥
सोयं सा तिहुकाल अंगमि गुरं, नं काल कालं गुरं॥ छं०॥ १५८॥

जैचन्द का प्रताप वर्णन।

कवित्त॥ हय गय नर थर अरुरि। सरुरि सज्जिय सनाह बर॥
ज्यों द्रप्पन भूडोल। सिंभ विभ्भूत धरा धर॥

मुकर मध्य प्रतिबिंब। अग्नि मझे सु सांत सधि ॥
....
पहुपंग सेन सजि सुक्रित वर। वजि निसान उन मान रिन ॥
अंगमै कोन पहुपंग कौ। धीर छंडि वीरह तरुन ॥ छं० ॥ १५९ ॥

कैमास का राजा पृथ्वीराज के पास समाचार भेजना।

कुंडलिया ॥ सुनि अवाज संभरि सुवर। ग्रह न रहै गुरराज ॥
ज्यौं दैवत्त सु अंगमै। सो पहुपंग विराज ॥
सो पहुपंग विराज। बीर बुल्लै प्रतिभासं ॥
मंची बर संभऱ्यौ। राज पुछ्यौ कैमासं ॥
गह वारुअ गुर घरिय। प्रीत प्रत्तह प्रति प्रतिपनि ॥
हय मुलतान सु जान। राज ऐसी अवाज सुनि ॥ छं० ॥ १६० ॥

कन्नौज की सेना का जमुना किनारे मोरचा बांधना और इधर से सामंतों का सन्नद्ध होना।

कवित्त ॥ जमुन बिहड़ गहि विकट। निकट रोकै पहुपंग ॥
सार धार चहुआन। पान बंधें प्रति जंग ॥
सुनत सिद्धि विधि समति। लोह कढ्यौ प्रति हैवै ॥
मवन मत्त चहुआन। राज बंध्या ढिल्लीवै ॥
रहि सब्ब सूर सामंत बर। गहिग ठौर बंकट करस ॥
नृप राज कमंधज्ज सुनि भए। अंमर कै अंमर अरस ॥ छं० ॥ १६१ ॥

निढ्ढुर और कन्ह का भाईचारा कथन।

दूहा ॥ भैया निढ्डुरराइ वल। तिन वल कन्ह नरिंद ॥
तिन समान जौ देषियै। तोंवर लिषियै कंद ॥ छं० ॥ १६२ ॥

भान के पुत्र का कहना कि राजा भाग गया तो हम क्या प्राण दें? इस पर अन्य सामंतों का कहना कि हम वीर धर्म के लिये लड़ेंगे।

दूहा ॥ हम बंधे वर तेक वर। तूं मुक्के धर राज ॥

जिय अंगमै सु अप्पनौ। भान पुत्त किं काज ॥ छं० ॥ १६३ ॥

कवित्त ॥ कहै सूर सामंत। सुनहि वर पुहमि ईस वर ॥
अप अंगमै सु जीव। पुत्त वंधहति भान वर ॥
जोग जोइ अंगमै। नेह नारी नह रष्षै ॥
वीर राग आनंद। राज तिन वृत्त विसष्षै ॥
लिष्षवै सोइ जीवत्त वर। सुवृत्त वत्त लिष्षै न वर ॥
तिन काज सूर सामंत वर। राज वरजि वरजियति गुर ॥
छं० ॥ १६४ ॥

यह समाचार पाकर जैचन्द का अपने में सलाह करना।

दूहा ॥ गुरु स्नत गुरु जानी न विधि। रिधि रष्पन कमधज्ज ॥
तिहित वीर पहुपंग सुनि। मतौ मत्ति कमधज्ज ॥ छं० ॥ १६५ ॥

सामंतों का एका करके सलाह करना कि किला न छोड़ा जावे।

कवित्त ॥ व्यंजं वरन कवित्त। जंपि कन्हा चहुआनं ॥
वर रट्ठौर नरिंद। राव निड्डर उनमानं ॥
गरुअ गज्ज गहिलोत। मतै कैमासह सूरं ॥
मतै डिढ्ढ कैमास। चंद डिढ़ कलहति सूरं ॥
तिन मझ्झ रिनह नर सिंह बलि। रेनराम रावत्त गुर ॥
सामंत सूर सामंत गति। कौन बीर बंधैति धुर ॥ छं० ॥ १६६ ॥

सामंतों की पुरैन पत्र से उपमा वर्णन।

दूहा ॥ तऊ सुमत इन मत्त किय। भयन तजिय भय राज ॥
पंगानी डर सुजल मधि। भए सतपच विराज ॥ छं० ॥ १६७ ॥
सुवर वीर सतपच छर। पंग नीर प्रति बढ्ढ ॥
सुवर वीर प्रथिराज कौ। अंग अछूत न चढ्ढ ॥ छं० ॥ १६८ ॥

गाथा ॥ जंमुक्का पहुपंगं। तेछचीय सूर वीराई ॥
माहं चवथि प्रमानं। साछिण्णीय लोयं सब्बं ॥ छं० ॥ १६९ ॥

कन्नौज की फौज का किले पर धावा करना।

जंबंघा चढ्ढा चहुआनं। पग्ग सेनाय पंगयं दलयं॥
बालं ससी प्रमानं। सा बंदैस दीन उभयाइं॥ छं०॥ १७०॥

कवित्त॥ स्वामि ध्रम्म रत्ते। सुमंत लग्गौ असमानं॥
अजुत जुद्ध आरुद्ध। बीर मत्ते रस पानं॥
हथ्थ थकत श्रम करहि। मनति श्रम सों उच्चारहिं॥
.... । .... ॥
धरि धार भार हरि हरुअ घट। कर्यौ घट्ट गरुअत्त जुर॥
इन परत सूर सामंत रिन। लर्यौ न को फिरि बहुरि भर॥छं०॥१७१॥

दूहा॥ बंदिय बल जिन निय नृपति। न्रपन क्रजाद उलंघि॥
कपि साधन रघुवंस दल। ज्यौं दैवत्त प्रसंग॥ छं०॥ १७२॥

दिल्ली घेरे जाने की बात सुन कर पृथ्वीराज का दिल्ली आना।

बाधा॥ संभरि बत्त जु पंग अवन्नं। बीर बिरा रस बढ्ढिय कंनं॥
हे गै मै गै मत्त प्रमानं। उग्गिय जान कि बारह भानं॥छं॥१७३॥
लंबिय बाह कपाइत नैनं। गुंज्या सिंह लग्या सिर गैनं॥
है दल पैदल गैदल गड्डं। सूर सनाह सनाह सबड्डं॥ छं०॥१७४॥
यों रच्चै पहुपंगति सारं। कच्छे जोग जु गिंद्र विधारं॥
मत्त निरत्त अमत्त निसानं। गज्जे ज्यौं आषाढ़ प्रमानं॥छं०॥१७५॥
को अभिनंतु रहै रन पग्गं। सो दिष्षं चियलोक न मग्गं॥
धारै कंध वराहति रूपं। रहै अम्म नन उड्डति भूपं॥छं०॥१७६॥
सयल गयल चिहुं दिसान धावहि। कहै राज ढिल्ली गढ़ ढावहि॥
रत्ते नैन कपाइत अंगं। जानि विरच्चिय बीरति जंगं॥
छं०॥ १७७॥
नंचै भैरव रुद्र प्रकारं। जानि नटी नट रंभ प्रकारं॥
अग्गें होइ गिवान मुनारं। बंद्या ज्यों वर कोटनि सारं॥
छं०॥ १७८॥
ढाहै गाहै माहै राजं। मानों सासुद्र बांधे पाजं॥
उट्ठी मुंछ धरा लगि गैनं। वंक ससी सरि राजत मैनं॥ छं०॥ १७९।

भपै दान प्रोहित्त राजं । अप्पै मेर सुमेरति साजं ॥
यों कीनी धर पंगति सावं । जै जै वाय सु वायति नावं ॥
छं० ॥ १८० ॥

धावै दल सलिनं पहुपंगं । बूड़त नाव नीर गुन रंगं ॥
यों धाए पहुपंग सयंनं । मंस काज दीपी उनमंनं ॥
छं० ॥ १८१ ॥

वार धुरा धरयौ भर हल्ली । वाय विषंम पात वहु यल्ली ॥
एहि प्रकार चढ्यौ चित राजं । कहि ढिल्ली ढिल्ली उन काजं ॥
छं० ॥ १८२ ॥

पृथ्वीराज के आने से कन्नौज की सेना का घबड़ाना ।

दूहा ॥ जा ढिल्ली ढिल्ली धनीं । दल हल्लिय पहुपंग ॥
मानो उत्तर वाय ते । चावदिसा विभंग ॥ छं० ॥ १८३ ॥

बाहरी तरफ से पृथ्वीराज का आक्रमण करना ।

कवित्त ॥ संमुह सेन प्रचंड । पंग सज्जी चतुरंगनि ॥
ज्यौं उग्गै दृप सूर । बैर करि तपै कमोदनि ॥
सुवर सोभ कविचंद । हितू चक्रवाक प्रकारं ॥
वरै विरह बिरहनी । हेत उड़गन ससि सारं ॥
सा बैर नैर नारिय निकट । विकट कंत विछुरहि बधुअ ॥
वहुपंग राव राजन बली । सजी सेन सेनह सु भुअ ॥ छं० ॥ १८४ ॥

दो दल के बीच दब कर कन्नौज की फौज का चलचित्त होना ।

कुंडलिया ॥ वंधि कविज्जै वीय वर । दिसि दच्छिन अरु पुब्ब ॥
सुवर वीर सम्हौ भिरिग । करि भारथ्थ अपुब्ब ॥
करि भारथ्थ अपुब्ब । कोन अंगम षल षोलै ॥
मार मार उच्चारि । असिर अवसानति डोलै ॥
सो भग्गा घट सेन । माग आकारति संध्यौ ॥
चीय लच्छि तजि मोह । मरन केवल मग वंध्यौ ॥ छं० ॥ १८५ ॥

दूहा ॥ संभरि जुड अरुड गति। बर विरुड रति राज ॥
चाहुआन चंपी अनी। सब संती सिरताज ॥ छं० ॥ १८६ ॥

युद्ध वर्णन ।

कवित्त ॥ सुबर बीर आरुहिय। बीर हक्कै चावद्दिसि ॥
मत्त सार बरषंत। बीर नचहंत मंत कसि ॥
बंको असि के सुड। केय लंबी उभ्भारैं ॥
घात षंभ निरघात। जानि झल्लरि झल्लारै ॥
बुट्टंत रस न संनाह पर। अवुठि बुट्ठि पच्छें परैं ॥
मानों कि सोम पारथ्थ यों। बर चंनं नन विथ्थुरैं ॥छं०॥१८७॥

इस युद्ध में मारे गए सामंतों के नाम ।

परिग सुभर नारेन। रूप नर रष्षि बंधि बिय ॥
परिग सूर पामार। नाम पूरन्न पूर किय ॥
बघ्घसिंघ बिय पुत्त। परे हरसिंघ सु मोरिय ॥
पऱ्यौ सूर सूरिमा। सेन पंगह ढंढोरिय ॥
बग्गरी बीर बारुड़ हरिय। मुकति मग्ग षोली दरिय ॥
दह परिग भिरिग भंजिग अरिय। ब्रह्मलोक घर फिरि करिय ॥
छं० ॥ १८८ ॥

पऱ्यौ भीम भट्टी भुआल। बंधव नाराइन ॥
पऱ्यौ राव जैतसी। भयौ अजमेर पराइन ॥
परि जंघारौ जोध। कन्ह छोकर अधिकारिय ॥
सरग मग्ग जित्तयौ। ब्रह्म पायौ ब्रह्मचारिय ॥
भौ भंग बंक संके दुते। जुड घात घातं सु रन ॥
आवरत सूर पहुपंग दल। सुबर बीर संभर अरन ॥ १८९ ॥

जैचन्द के चौसठ बीर मुखियाओं की मृत्यु ।

दूहा ॥ घाव परिग सामंत सह। सुवर सूर सिसु सास ॥
इन जीवत चहुआन निज। फिरि मंडी धर आस ॥ छं० ॥ १९० ॥
चौ अग्गानी सट्ठि परि। डोला पंग नरिंद ॥
हलकि जमुन जल उत्तरिग। कहिग कथ्थ कविचंद ॥ छं० ॥ १९१ ॥

केहरि वर कंठेरिया। डोला मध्य नरिंद ॥
दंद गमाए जमुन कह। कहि फिरि मंडे दंद ॥ छं० ॥ १९२ ॥

जैचन्द का घेरा छोड़ कर चले जाना।

आतुर पंग नरिंद घरि। जमुन विहड़ तजि बंक ॥
धर पद्धर ग्रह विकट तजि। जुग्गिनि पुर ग्रह संक ॥ छं० ॥ १९३ ॥

स्वामिभक्त वीरों की वीर मृत्यु की प्रशंसा।

भुजंगी ॥ क्रमं क्रम्म कट्टे क्रमं तंति सत्तं। रनं निर्वसीयं निवासीय तत्तं ॥
छिती छत्त भेदं अभेदंति सारं। तिनं जोग मग्गीय लभ्भै न पारं ॥
छं० ॥ १९४ ॥

कवित्त ॥ जोग मग्ग उथ्थापि। थप्पि मुगती धर धारं ॥
सहस वरस तप करै। मुगति लभ्भै न सु पारं।
छिनक षग्ग मग अंग। जंग सोई क्षत छंडै ॥
धार धार विस्तरै। मुक्ति धामह धर मंडै ॥
धर परै वहुरि संगी न [1]को। तिन तिनुका सब नेह मनि ॥
रजक्रम्म भासयं देह सब। सुनहु सूर कविचंद भनि ॥ छं० ॥ १९५ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके सामंत पंगजुद्ध नाम पचपनवों प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ ५५ ॥

(१) "संगी को" पाठ है।
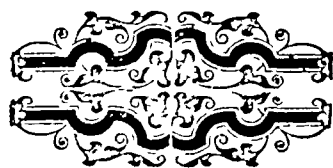
अथ समर पंग जुद्ध नाम प्रस्ताव लिष्यते।

(छप्पनवां समय ।)

जैचन्द का चित्तौर पर चढ़ाई करना ।

दूहा ॥ तरउप्पर धर पंग करि । जुग्गनि पुर सहदेस ॥
चित्रंगी उप्पर तमकि । चढ़ि पंगुरौ नरेस ॥ छं० ॥ १ ॥

पद्धरी ॥ चित चिंति चित्त चित्रंग देस । चढ़ि चल्यौ स गूरि पंगुर नरेस ॥
दिसि संकि दिसा दस कंपि थान । कलमलिय सेस गय संकि पान ॥
छं० ॥ २ ॥

धुम्मलिय विदिसि दिसि परि अँधेर । उरभ्भै कुरंग प्रज्झरह नैर ॥
मिटि भान थान तजि रह्यि तक्कि । अरि घरनि अटनि रहि लटकि थक्कि॥
छं० ॥ ३ ॥

वज्जै निसान सुर मान सद्द । सुत ब्रह्म रीझ कढ्ढेति हद्द ॥
बिप्फुरहि कित्ति कमधज्ज सूर । नन रहत मान सुनतह करूर ॥
छं० ॥ ४ ॥

जैचन्द की चढ़ाई का समाचार पाकर समरसी जी का सन्नद्ध होना ।

कवित्त ॥ श्रवन सुनिग समरेस । पंग आवाज बीर सुर ॥
अति अनंद मति चंद । दंद भंजन सु अरिन धर ॥
वजि निसान घुम्मरिय । चित्त अंकुरिय बीर रस ॥
मोह कोह छिति छांह । मुक्कि मंड्यौ जुअंग जस ॥
श्रुत सील तत्त द्रिग चित अचल । चलें हथ्थ उर बिप्फुरहिं ॥
चित्रंग राव रावर समर । भिरन सुमत मत्तह करहि ॥ छं० ॥ ५ ॥

युद्ध की तय्यारी जान कर दरबारी योद्धाओं का परस्पर वार्तालाप करना ।

अरिल्ल ॥ सकल लोग मत जे बर जानिय। समर समय समरह परिमानिय ॥
अप्प बचन मुष तूल [1]प्रकासिय। सकल लोय गुरु जन परिभासिय ॥
छं० ॥ ६ ॥

सकल लोक मन सोच विचारिय। तत्त बचन मत्तह उच्चारिय ॥
एक कहत भारथ्थ अपुब्बं। एक कहत जीवन सुष सब्बं ॥
छं० ॥ ७ ॥

दूहा ॥ एक कहत सुष मुगति है। एक कहै सुष लाज ॥
एक कहै सुष जियन रस। जस गुर तस मति साज ॥ छं० ॥ ८ ॥

साटक ॥ यस्या जीवन जन्म मुक्ति तरसं। तस्या ननं वै [2]सुषं ॥
नैवं नैव कलानि मुक्ति तरसं। सुष्यंति नरके नरं ॥
धन्यो तस्यय जीव जन्म धनयं। माता पिता सत्गुरं ॥
सो संसार अहत्त कारन मिदं। सुप्राय सुप्रंतरं ॥ छं० ॥ ९ ॥

अरिल्ल ॥ अंतर त्यागिय अंतर बोधिय। बाहिर संगिय लोग प्रमोधिय ॥
एकय एक अनेक प्रकारं। समर राव भारथ्थ उचारं ॥ छं० ॥ १० ॥

रावल जी का वीर और ज्ञानमय व्याख्यान।

दूहा ॥ समर राव भारथ्थ मति। ग्यान गुझ्झ उच्चार ॥
जहति प्रान पवनह रमै। मुगति लभ्भ संसार ॥ छं० ॥ ११ ॥

योग ज्ञान वर्णन।

त्रिभंगी ॥ तन पंच प्रकारं, कहि समरारं, तत उच्चारं, तिद्वारं ॥
मुति ग्यान प्रसंसं, नसयति संसं, वसयति हंसं, जिद्वारं ॥
मन पंच दुआरं, भमय निनारं, रक्कि सवारं, अनहद्दं ॥
सुरकन्न सबद्दं, चिंतय जद्दं, नासिक तद्दं, तन भद्दं ॥ छं० ॥ १२ ॥
गुरु गम्य सु यानं, चिंतियध्यानं, ब्रह्म गियानं, रमि सोयं ॥
मन सून्य रमंतं झिलिमिलि मंतं, नन भुलि जंतं, सो जोयं ॥
तजि कामय क्रोधं, गुर बच सोधं, रंजित बोधं, सद्यानं ॥

(१) ए-प्रकारिय। (२) ए.-सुषे।

अंगुष्ट प्रमानं, भौंह विचानं, निगम न जानं, तिज्ञानं ॥ छं० ॥ १३ ॥
गुर मुष्यय वत्तं, चिंतिय गत्तं, सिद्ध रमंतं, मुनि मोती ॥
षह महयं थानं, पिंड समानं, मंडि सु ध्यानं, दिठ जोती ॥
जत्र लष्यिय रूपं, भजि भ्रम कूपं, दीपक नूपं, सो भूपं ॥
तत्र नंसिय संसं, मुक्ति रमंसं, जोगय जं सं, सो रूपं ॥ छं० ॥ १४ ॥

मनुष्य के मन की वृत्ति वर्णन।

दूहा ॥ कलिय काल कालन कलिय। बल अस्सह बल चित्त ॥
समरसिंह रावर समर। ग्यान बुद्धि गुरु हित्त ॥ छं० ॥ १५ ॥
घरी एक घट सुष्य में। घरी एक दुष थान ॥
घरी एक जोगह सलै। घरि इक मोह समान ॥ छं० ॥ १६ ॥
छिन छिन में मन अप्पनौ। मति विय बीय रमंत ॥
चित्रंगी रावर समर। तिन बेरा चितवंत ॥ छं० ॥ १७ ॥

रावल जी का निज मंत्री प्रति शारीरिक ज्ञान कथन और अमर समाधि का क्रम वर्णन।

पंच तत्व तन मांहि बसहि। कोठा सत्तरि दोइ ॥
तत्त असिय रावर समर। मंत्रनि जंपत होइ ॥ छं० ॥ १८ ॥
उभय सेन संमुह सजे। चित्रंगी पंगान ॥
समर समय रावर समर। मंत्रिन जंपत ग्यान ॥ छं० ॥ १९ ॥

रावल जी की समुद्र से उपमा वर्णन।

सर समुद चित्रंगपति। बुद्धि तरंग अपार ॥
तर्क मीन भेदन भमर। ब्रह्म सु मध्य भंडार ॥ छं० ॥ २० ॥
षग षारौ लज्जा सु जल। विद्या रतन बषान ॥
आनि जीव परमातमा। आतम [1]पालन ग्यान ॥ छं० ॥ २१ ॥

जीवन समय की दिवस और रात्रि से उपमा वर्णन।

(१) कृ. को.-पालत।

अरिल्ल ॥ सकल लोग मत जे बर जानिय। समर समय समरह परिमानिय॥
अप्प बचन मुष तूल [1]प्रकासिय। सकल लोय गुरु जन परिभासिय॥
छं० ॥ ६ ॥

सकल लोक मन सोच विचारिय। तत्त बचन मत्तह उच्चारिय॥
एक कहत भारथ्थ अपुब्बं। एक कहत जीवन सुष सब्बं॥
छं० ॥ ७॥

दूहा ॥ एक कहत सुष मुगति है। एक कहै सुष लाज॥
एक कहै सुष जियग रस। जस गुर तस मति साज॥ छं० ॥ ८॥

साटक ॥ यस्या जीवन जन्म मुक्ति तरसं। तस्या ननं वै [2]सुषं॥
नैवं नैव कलानि मुक्ति तरसं। सुष्यंति नरके नरं॥
धन्यो तस्यय जीव जन्म धनयं। माता पिता सत्गुरं॥
सो संसार अट्टत्त कारन मिदं। सुम्राय सुम्रंतरं॥ छं० ॥ ९॥

अरिल्ल ॥ अंतर त्यागिय अंतर बोधिय। बाहिर संगिय लोग प्रमोधिय॥
एकय एक अनेक प्रकारं। समर राव भारथ्थ उचारं॥ छं० ॥ १०॥

रावल जी का वीर और ज्ञानमय व्याख्यान।

दूहा ॥ समर राव भारथ्थ मति। ग्यान गुभ्भ उच्चार॥
जहति प्रान पवनह रमे। मुगति लभ्भ संसार॥ छं० ॥ ११॥

योग ज्ञान वर्णन।

त्रिभंगी ॥ तन पंच प्रकारं, कहि समरारं, तत उच्चारं, तिह्वारं॥
सुति ग्यान प्रसंसं, नसयति संसं, वसयति हंसं, जिह्वारं॥
मन पंच दुआरं, भमय निनायं, रुक्कि सबारं, अनहद्दं॥
सुरकन्न सबद्दं, चिंतय जद्दं, नासिक तद्दं, तन भद्दं॥ छं० ॥ १२॥
गुरु गम्य सु थानं, चिंतियध्यानं, ब्रह्म गियानं, रमि सोयं॥
मन सून्य रमंतं झिलिमिलि मंतं, नन भुलि जंतं, सो जोयं॥
तजि कामय क्रोधं, गुर वच सोधं, रुंधित वीधं, सब्बानं॥

---

(१) ए-प्रकारिय। (२) ए.-सुपै।

अंगुष्ट प्रमानं, भौंह विचानं, निगम न जानं, तिज्जानं ॥ छं० ॥ १३ ॥
गुर मुष्यय वत्तं, चिंतिय गत्तं, सिद्ध रमंतं, मुनि मोती ॥
षह मद्दयं थानं, पिंड समानं, मंडि सु ध्यानं, दिठ जोती ॥
जत्र लष्यिय रूपं, भजि भ्रम कूपं, दीपक नूपं, सो भूपं ॥
तत्र नंसिय संसं, मुक्ति रमंसं, जोगय जं सं, सो रूपं ॥ छं० ॥ १४ ॥

मनुष्य के मन की वृत्ति वर्णन।

दूहा ॥ कलिय काल कालन कलिय। बल अस्सह बल चित्त ॥
समरसिंह रावर समर। ग्यान बुद्धि गुरु हित्त ॥ छं० ॥ १५ ॥
घरी एक घट सुष्य में। घरी एक दुष थान ॥
घरी एक जोगह सलै। घरि इक मोह समान ॥ छं० ॥ १६ ॥
छिन छिन में मन अप्पनौ। मति त्रिय बीय रमंत ॥
चित्रंगी रावर समर। तिन बेरा चितवंत ॥ छं० ॥ १७ ॥

रावल जी का निज मंत्री प्रति शारीरिक ज्ञान कथन और अमर समाधि का क्रम वर्णन।

पंच तत्व तन मांहि बसहि। कोठा सत्तरि दोइ ॥
तत्त असिय रावर समर। मंचनि जंपत होइ ॥ छं० ॥ १८ ॥
उभय सेन संमुह सजे। चित्रंगी पंगान ॥
समर समय रावर समर। मंत्रिन जंपत ग्यान ॥ छं० ॥ १९ ॥

रावल जी की समुद्र से उपमा वर्णन।

सर समुद चित्रंगपति। बुद्धि तरंग अपार ॥
तर्क मीन भेदन भमर। ब्रह्म सु मध्य भंडार ॥ छं० ॥ २० ॥
षग षारौ लज्जा सु जल। विद्या रतन बषान ॥
आनि जीव परमातमा। आतम [1]पालन ग्यान ॥ छं० ॥ २१ ॥

जीवन समय की दिवस और रात्रि से उपमा वर्णन।

(१) कृ. को.-पालत।

पद्धरी ॥ जोगंग जुगति जे अंग जानि। कहि चंद चंद सम [1]भनत भान ॥
सब देह जीव धर लषि विनान। धर टंकि बस्त राषन परान ॥
छं० ॥ २२ ॥
मध्यान प्रात लषि संझ मान। भ्रमि जाइ काल रष्षै छिपान ॥
पूरन्न ग्यान जब प्रगट आइ। ब्रहमंड देह कर धर बताइ ॥
छं० ॥ २३ ॥
आवंत काल सहजह लिषाइ। तब पूर्न तत्व केवल लगाइ ॥
चिंतंत स्याम तन पट्ट पीत। टरि जाइ काल भय अमर मीत ॥
छं० ॥ २४ ॥
तिहु काल काल टारन उपाय। हरि रूप रिदय इन ध्यान ध्याय ॥
जब ग्रसन समय संझया प्रकार। चिंतियै सेत धुंमर अपार ॥
छं० ॥ २५ ॥
उपदेस गुरह लषि प्रात गात। जिन धरत ध्यान भुल्लहि सनात ॥
चिंतियै जोति सुभ कर्म सिद्ध। झर दीप कूल ठहराइ मद्धि ॥
छं० ॥ २६ ॥
अष्टमी बीय पंचमी थान। कै टहितिकाल मुनि जोर वान ॥
पूरन्न पान ताटंक माल। तन धरै धवल दिष्षिय विसाल ॥ छं० ॥ २७ ॥
तन लषै सुद्धि नह विय प्रकार। जनु भयौ ब्रह्म इच्छा भँडार ॥
रेचक्क कुंभ ताटंक पूर। जो गंग जुगति इह जतन मूर ॥
छं० ॥ २८ ॥
*षग मंग कहै चिचंग राव। मन सुद्ध समर पूरन्न भाव ॥
छं० ॥ २९ ॥

दूहा ॥ अंग समुद दोऊ समर। षग हिल्लोर छिति पान ॥
फिरि पुच्छत आहुट्ठ पति। तत्त मत्त निरवान ॥ छं० ॥ ३० ॥

कनकराय रघुवंसी का मानसिक वृत्ति के विषय में प्रश्न करना।

(१) कृ. को.-मनत।

* यहा के कुछ (दो या तीन) छन्द नष्ट हो गए जान पड़ते है।

कवित्त ॥ फुनि पुच्छै फिरि ग्यान । कनक केवल रघुबंसी ॥
मोहि एक आचिज्ज । तुम सु उत्तर भ्रम नंसी ॥
घरी मध्य आनदं । धरी वैराग प्रमानं ॥
घरिय मध्य मति दान । घरिय सिनगार समानं ॥
वैराग जोग स्रृंगार कब । दइय दरिद्रय विग्रहत ॥
चित्रंग राव रावर चवै । अंतकाल मति उग्रहत ॥ छं० ॥ ३१ ॥

गाथा ॥ केवल मत्ति सउत्तं । चित्तं चित्रंग मत्ति उनमानं ॥
कहि जोगिंद सुराइं । प्रानं वसि गच्छ कंठामं ॥ छं० ॥ ३२ ॥

रावल समरसी जी का, हृदय कुंडली और उस पर मन के परिभ्रमण करने का वर्णन करना ।

चोटक ॥ सु कहै रघुवंसिय रावरयं । सुनि बत्त सु भ्रंम न लावनयं ॥
पुब दष्षिन उत्तर पच्छिमयं । अगनै वरु वाय विसष्पनयं ॥
छं० ॥ ३३ ॥

नयरत्ति इसानय कन्न धरं । इह अष्ट दिसा दिषि तत्त परं ॥
सु तड़ाग तनं सुष दुष्प भरं । तहँ पंकज एक रहै उघरं ॥
छं० ॥ ३४ ॥

दिसि पूरब पंत कमल्ल सुरं । तिन रत्तरि पंषुरि हन्न धरं ॥
तिहि षंम वसै मन आइ नरं । सु कह्यौ तु अचित्त सु चित्त धरं ॥
छं० ॥ ३५ ॥

गुरु बुद्धि कल्यान रु दान मती । बर भोगव बुद्धि सुक्रम्म गती ॥
अगिनेव दिसा दिसि पंषुरियं । तहां नील बरन्नह उग्घरियं ॥
छं० ॥ ३६ ॥

तहां यद्यपि आइ वसै मनयं । तिय दोष बढ़ै मरनं तनयं ॥
दिसि उत्तर पंषुरियं [1]रुररं । तहां पीतह रंग सु हन्न धरं ॥
छं० ॥ ३७ ॥

उघरै प्रति क्रम्मय क्रम्म गती । तजि भोगय जोग गहै सु मती ॥

(१) कृ. को.-सुरर ।

नयरत्ति निरत्तय धुंमरियं । नभ भ्रम्मि रहै तन घुम्मरियं ॥
छं० ॥ ३८ ॥
पच्छिम दिसि नील बरन्न करं । तहाँ प्रात पुरष्प सजै समरं ॥
दिस बायवयं बनि क्रप्ण रंगं । दुरबुद्धि ग्रहै तस अंस अगं ॥
छं० ॥ ३९ ॥
दिसि दष्षिन उज्जल वन्न धरं । सजि सातुक मत्ति ततं अमरं ॥
ईसायन यं रंग सुक्कसयं । उपजै सु उचाट मनं नभयं ॥
छं० ॥ ४० ॥
ब्रह्म मंडय पंढ कहै गुरयं । घर मद्धि अनेक मनं सुरयं ॥
मन हथ्थ करै प्रथमं मनुषं । हुअ निर्भरयं तन बद्धि सुषं ॥
छं० ॥ ४१ ॥
जिम दीपक बात वसं हलयं । इम क्रम्मय चिंत नरं चलयं ॥
मन हथ्थ भयें सब हथ्थ भयौ । प्रगटै तन जोति रु अंध गयौ ॥
छं० ॥ ४२ ॥

रावल जी का मन को वश करने का उपदेश करना।

कवित्त ॥ मुगति कठिन मारग्ग । क्रम्म छुट्टै न पंच बर ॥
मन लिप्पै मन छिपै मन । सु अवतरै घरघ्घर ॥
मन बंधै क्रम राज । मन सु क्रम जमय छुड़ावै ॥
मन साषी सुष दुष्प । मनह जावै मन आवै ॥
मन होइ ग्यान अग्यान तजि । गुर उपदेसह संचरै ॥
मन प्रथम अप्प बसि किज्जियै । समर सिंघ इम उच्चरै ॥छं०॥४३॥

दूहा ॥ समर सिंह भारथ्थ में । जोग इहै गुन जान ॥
सो निकस्यौ भर समर तें । को जिन करौ गुमान ॥ छं० ॥ ४४ ॥

ढुंढाराय का कहना कि राजा का धर्म राज्य की रक्षा करना है।

कवित्त ॥ तब ढुंढारह राइ । मत्त मन बत्त सु कथ्थिय ॥
समर सिंघ रावरह । समर साहस गति पथ्थिय ॥
तुम वीरन गंजागि । भूप साहस रस पाइय ॥
भारथ्था रजपूत । स्वामि आचारा धाइय ॥

आधार धार भरथ्थ मति। तत्त बत्त जानौ जुगति ॥
अग्गै सु पंग अनभंग सजि। राज रष्षि कीजै सुमति ॥छं०॥४५॥

मंत्री का कहना कि सबल से वैर करना बुरा है।

दूहा ॥ कहै मंत्रि भर समर सुनि। स्रभर करि संग्राम ॥
सबला सूं मंडत कलह। धर भर छिज्जै ताम ॥ छं० ॥ ४६ ॥

रावल जी का उत्तर देना।

कहि मंत्री रावर समर। सुनि मंत्री बर बेंन ॥
तमकि तेग तन तोक बंधि। करि रत्ते बर नेंन ॥ छं० ॥ ४७ ॥

चौपाई ॥ ससिर रित्त रित राजह संधि। गम आगम सित उष्ण प्रबंधि ॥
तपति स्रूर रत्ते रन रंगं। दुरिग सीत भगि कायर अंगं ॥
छं० ॥ ४८ ॥

रावल जी का सुमंत प्रमार से मत पूछना।

दूहा ॥ बंधि परिग्गह गुर जनह। मंत्री सजन सु इष्ट ॥
भृत्त सु लोइ पुच्छै न्रपति। सुमति सुमंच अदिष्ट ॥ छं० ॥ ४९ ॥

सुमंत का उत्तर देना कि तेज बड़ा है न कि आकार प्रकार।

कवित्त ॥ सुनि सुमंत पंमार। इक्क गरूडहु रु नगन गन ॥
अगस्ति एक सायर सु। इंद्र इक्क रु कूट घन ॥
निसचर घन काली सु। पंच पंडव रु लष्य अरि ॥
तारक चंद अनेक। राह चंपै सु वसन जुरि ॥
मद करी जुथ्थ पंचाइनह। मत्त एक धक्कह वहै ॥
चित्रंग राव रावर कहै। अतत मंत मंत्री कहै ॥ छं० ॥ ५० ॥

सिंह जू का रात्रि को छापा मारने की सलाह देना।

कवित्त ॥ स्वामि वचन सुनि सिंह। जूह रतिबाह विचारिय ॥
सबला सों संग्राम। भार भारथ्थ उतारिय ॥
जं जानैं सब कोइ। जीभ जंपै जस लोइय ॥

अरि भंजै तन भजै। टरै दीहंतन दोइय॥
आघाय घाय घट निछ्घटै। हय गय हय मंचै रव न॥
भंजै न भ्रम्म जम्मन मरन। तत्त मंत सद्दै रवन॥ छं०॥ ५१॥

रावल समरसिंह जी का कहना कि दिन को युद्ध कर स्वच्छ कीर्ति संपादन करनी चाहिए।

समरसिंह रावर नरिंद। रति उथपि दीह थपि॥
दीह धवल्ल दिसि धवल्ल। धवल्ल उट्ठहि सु मंच जपि॥
धवल्ल दिव्य सुनि कन्न। धवल्ल कढ्ढै धवल्ली असि॥
धवल्ल वृषभ चढ़ि धवल्ल। धवल्ल बंधै सु ब्रह्म बसि॥
धवलही लीह जस विस्तरै। धवल्ल सेद संमुष लरै॥
यों करौं धवल जस उब्बरै। धवल्ल धवल्ल बंधै बरै॥ छं०॥ ५२॥

सुनिय मंच बर मंच। गुझ्झ गामार मंच सुनि॥
जनम लभ्भ सोइ कित्ति। कित्ति भंजियै तनह फुनि॥
जु कछु अंत न्रिमयौ। कहै सब माया मेरी॥
मरत न माया कहै। निमष चलहु न मुष हेरी॥
पहु जग्ग दान अप्पन मुगति। जुगति मोह भंजै भरै॥
भोगवौ दुष्ष जीवत बहुत। जु कछु कहौ जिन उब्बरै॥छं०॥५३॥

चढ़ाई के समय चतुरंगिनी सेना की सजावट वर्णन।

चोटक॥ जु सुनं धनि बैन प्रमान धरं। चढ़ि संमुष पंग नरिंद घरं॥
सजि सूर सनाह सुरंग अनी। सु कछै जनु जोग जुगिंद रनी॥
छं०॥ ५४॥

वर बंक तिलक्क चिलक्क रसी। घन मद्धि उग्यौ जनु बाल ससी॥
सह वीर विराजि सनाह इयं। जनु राहह बंधि सु भान दियं॥
छं०॥ ५५॥

सब सेन सु सिंगियनाद कियं। सुर मोहि सिवापति दंद दियं॥
जुग वद्द निबंधि सनाह कसी। उर नद्द चिपंडिय वद्दर सी॥
छं०॥ ५६॥

बजि बीर अनेक प्रकार सुरं। हर चूर चमंकति गंग बरं।
बजि बीरन नद्द सु सद्द रजं। सु उल्लट्टति सद्दति भद्द गजं॥
छं० ॥ ५७ ॥

सहलाइ नफेरि अनेक सुरं। बर बज्जि छतीस निसान घुरं॥
दुति देव वसिष्ट निसाचरयं। जस तेज सु बंधन निट्ठुरयं॥
छं० ॥ ५८ ॥

चितरंगपती चतुरंग सजी। तिन दिष्पत पंति समुद्द लजी॥
चतुरंग चमू चमकंत दिसं। पहुपंड निसान दिसा कु रसं॥
छं० ॥ ५९ ॥

नल बज्जि हयं बहु सद्द रजे। पटतार मनों कठतार बजे॥
घन घुघ्घर पष्पर बज्जि करी। सुर बंधि सुरप्पति चित्त हरी॥
छं० ॥ ६० ॥

*चान्द्रायन॥ विधि विनान चतुरंग ति, सज्जि रुहल्लि हय।
ससर समर दिसि रज्जि, बाल अरु वृद्ध वय॥
उघौ छच नयजानिय, मानिय पंग न्त्रिय।
कढ्ढि लोह वढ्ढि कोह, समाह्निरु बीर वय॥ छं० ॥ ६१ ॥

युद्ध वर्णन।

रसावला॥ कटै लोह सारं, विहथ्थंति भारं। तुटैं सार भारं, सरोसं प्रहारं॥
छं० ॥ ६२ ॥

करै मार मारं, सह्वरं पचारं। जगी झूक वारं, उड़ें छिंछ सारं॥
छं० ॥ ६३ ॥

सु नंदी हकारं, कटं कंध पारं। कमद्धं निनारं, रुधिं छिंछ सारं॥
छं० ॥ ६४ ॥

---

* मूल प्रतियों में इसे मुरिल्ल करके लिखा है। किन्तु मुरिल्ल से और इस से कोई सम्बन्ध नहीं है। यह छन्द वास्तव में चान्द्रायण ही है। अन्त में जो इस छन्द में रगण के स्थान में नगण का प्रयोग है वह लिपि भेद मात्र है। पढ़ते समय ह+य का उच्चारण है और व य का उच्चारण "वै" होगा। इस प्रकार से सगण का उच्चारण होता है। अस्तु इसीसे हमने इस छन्द को चान्द्रायण नाम से सम्बोधन किया है।

स खुंथे करारं, तुटै गग्ग झारं। अपारंत मारं, वहै दिव्य भारं ॥
छं० ॥ ६५ ॥

रसं बीर सारं, पती देव पारं। सुमंती डकारं, चवट्टी सु भारं ॥
छं० ॥ ६६ ॥

रुधी धार पारं, उछारैति वारं। उमापत्ति लीनं, जपै जंग भीनं ॥
*गहै लुत्ति तथ्यं, उछारें विहथ्थं। .... ॥ छं० ॥ ६७ ॥

पंग के दल का व्याकुल होना।

दूहा ॥ दल अग्गी अग्गी अनी। हलमलियौ दल पंग ॥
यों उभ्भौ लुभ्भै लुथुञ। तिहुंपुर मंडन जंग ॥ छं० ॥ ६८ ॥

पंगराज का हाथी छोड़ कर घोड़े पर सवार होना।

कवित्त ॥ हक्कि संगि गजराज। छंडि गज ढाल सु उत्तर ॥
रत्तें बेल विसाल। तेग बंधी दल दुत्तर ॥
कै हथ्थी जमजाल। काल छुट्टा मय मत्ता ॥
कै अप्पानै अप्प। सेन रावत्त विरत्ता ॥
उत उतंग बहु पंग दल। समर समह भारथ भिरिग ॥
सारथ्थ किथ्थ सम बान बढ़ि। रोकि भीम कंदल करिग ॥छं०॥६९॥

भुजंगी ॥ चढ्यौ पंग जंगं सु मानिक्क बाजी। नियं वर्न सेनं मनं नील साजी ॥
फिरै पष्परं भार कूदै उतंगा। मनों वायपूतं धरै द्रोन अंगा ॥
छं० ॥ ७० ॥

जसं धंग जध्धौ जुलै पंग धारी। घनं सार चोरं न गंगा विचारी ॥
चमक्कंत नालं दिसालंत मोहै। उभै चंद बीयं घटा जानि सोहै ॥
छं० ॥ ७१ ॥

रवी रथ्थ जोरें सु भौरै भ्रमावै। मनंपी न अंपीन पंषी न पावै ॥

---

* ये युद्ध वर्णन के छन्द या तो छन्द ७४ के बाद होने चाहिए थे या इन्हीं छन्दों के ऊपर का कुछ अंश लोप या खडित होगया है। क्योंकि कवि ने सर्वत्र इसी प्रकार से वर्णन किया है कि पहिले सेना की तैयारी फिर दोनो सेनाओं का जुड़ाव और तिसके पीछे युद्ध का होना परन्तु यहा का पाठ इस क्रम से बिल्कुल विरुद्ध पड़ता है।

मनों वाय गंठी गयौ ब्रह्म बंधी। पियै अंगुली नीर उत्तंग संधी ॥
छं० ॥ ७२ ॥
डसं सीस डोलं त्रिभंगीति सोहै। गिरं नंचि केकी कला जानि मोहै॥
छं० ॥ ७३ ॥

रावल जी के वीर योद्धाओं का शत्रु को चारों ओर से दबाना।

कवित्त ॥ समर सिंघ रावर समान। हय नंषि समर हर ॥
कान्ह जैत वर बीर। भान नारेन सिंघ हर ॥
पल्हदेव न्रप सोम। अमर न्रप व्यंटि जालि जम ॥
प्रति प्रताप तन समर। ताप भंजन सांई भ्रम ॥
बंकस्स वीर बलिभद्र बर। भ्कर तरवारनि अधर झर ॥
चतुरंग चंपि चावद्दिसा। धार पहार विभार भ्कर ॥ छं० ॥ ७४ ॥

युद्ध की तिथि और स्थल का वर्णन।

दूहा ॥ वार सोम राका दिवस। पूरन पूरन मास।
सम्मुष सूर संमुह लरै। मुकति सु लूटन रासि ॥ ७५ ॥
नद पारी दुरगा सु पुर। प्रथम जुद्ध बर बीर ॥
दुतिय जुद्ध परि समर सों। पत्ति सु पट्टन धीर ॥ छं० ॥ ७६ ॥

दोनों सेनाओं का परस्पर घमासान युद्ध वर्णन।

त्रोटक ॥ पग पोलि विहथ्थ सु बथ्थ परें। दुहु सीस सु रंग तुक्कार करें ॥
सिरदार सु गाहत पंग अनी ॥ सुमनो जल बारधि पंति घनी ॥
छं० ॥ ७७ ॥
फुटि षग्ग किरच्च जुझार भ्करं। मनु झिंगन मद्दव रेनि परं ॥
उडि छिंछनि रत्त तरत्त भए। विदझाइन धाइल सूर नए ॥
छं० ॥ ७८ ॥
घन घाइ घटं घट अंग रजै। जनु देव प्रह्लय बंधु पुजै ॥
विफरै वहु हथ्थनि पाइ फुरै। वहु सूर उचीरन से उचरें ॥
छं० ॥ ७९ ॥

चित डोलन पिंड को जाइ कहीं। दिषि वीर भरं लपटाइ तहीं॥
दोउ सूर सहाबल के बरकें। सु बजें मद मोषन के सुर कें॥
छं०॥ ८०॥

करि संजि कुंभस्थल षग्ग लसी। कुवलय्यलकें झर में करसी॥
रुधि बिंद द्रवै कठ सोभ जगै। मनु इंदवधू चढ़ि पुट्ठि लगै॥
छं०॥ ८१॥

उपमा पलयं चलयों न कही। सकुचें सरसी जु समुद्द मही॥
गज भंजि कुंभस्थल षग्ग दमैं। सु नचै जनु बिज्जुल बद्दल में॥
छं०॥ ८२॥

गजराज धुकै बहु कंपि करी। तिन सथ्थ महावत झूमि परी॥
इन भेषय गज्जय मान छरं। दस कंधय डुल्लि किलास बरं॥
छं०॥ ८३॥

गज राजति षग्गति मध्ध गसं। मनों तेरसि को ससि अद्धनिसं॥
गजमुत्ति लगै षग यों दमकै। तिन की उपमा दिषि देव जकै॥
छं०॥ ८४॥

मुठि चंपि द्रढं करपान गसी। निचुरैं मनु नीर सु मोतिग सी॥
छं० ८५॥

रावल समर सिंह जी के सरदारों का पराक्रम वर्णन।

कवित्त॥ समरसिंह सिरदार। सेनगाही जुरि भल्लिय॥
आहुट्ठां मज्झाम। परिय द्वादस चमरल्लिय॥
पंग समानन तक्कि। भूमि नंषत षग वग्गिय॥
वीरा रस बलबंड। हथ्थ दच्छिन झर लग्गिय॥
जिम परत पतंग जु दीप कन। तूटि तूटि निक्करि परत॥
षुरतार धरें हय षुटि धरनि। षलन पलक षग्गह झरत॥ छं०॥८६॥

पद्धरी॥ झर करत विदुल भर लोह मार। छुट्टंत नाल उड्डुत पहार॥
उट्ठंत धूम धर आसमान। वुड्डंत सार रुधि गूद मान॥छं०॥८७॥
रुंडंत व्योम अंती अनंत। छुट्टंत नेह घट जीव जंत॥
गुड्डंत गिद्ध धर वंच बोथ। उथ्थलकि थलकि बाराह मोथ॥
छं०॥ ८८॥

कमधज्ज सेन आहुट्ठ सेस। राहु अरु केत रवि सोम जेस ॥
सुज्झै न अंपि नह सब्द कान। भर रैंन दीह रच्छत्त भान ॥
छं० ॥ ८९ ॥

चट्टे जु समर सुप समर राव। पत्ते कि पत्त डंडूर वाव ॥
रन रच्यौ रोपि वाराह रूप। पेषिय सु भयंकर पंग भूप ॥
छं० ॥ ९० ॥

दूहा ॥ भयति भीति दुअ जुद्ध हुअ। अवति वंत सत सूर ॥
दह अग्गै अस्तुति सुवर। न्रप भारथ्थ करूर ॥ छं० ॥ ९१ ॥

कवित्त ॥ कढ्ढि समर विच समर। समर रुक्यौ जु समर भर ॥
अजुत जु अति बुध सस्त्र। सस्त्र बज्जै सुमंत झर ॥
भय अस्भित सय रास। बीर छुट्टे घन छुट्टै ॥
अघट घट्ट घूंटंत। ईस ग्यानह व्रत छुट्टै ॥
संक्रांति जेठ आषाढ़ मधि। नीर दान सम दान नहि ॥
सामंत सूर साईं भिरत। जोग न पुज्जै मंत लहि ॥ छं० ॥ ९२ ॥

सत्त विरत सांईं सु। सत्त लग्गे असमानं ॥
इतत जुद्ध आरुद्ध। बीर मत्ते रस रानं ॥
हय थक्कत श्रम करै। मन न श्रम सों उच्चरैं ॥
गान दगध सों कथ्थ। गुरु न संचह विस्तारैं ॥
घन धार भार हरुअंत घट। कन्यौ घट्ट गरुअंत जुरि ॥
दिन पंच परें पंचो विपत लग्यौ न को रवि चक्कतर ॥
छं० ॥ ९३ ॥

भुजंगी ॥ न जानं न जानं न जानं प्रमानं। न रुद्रं न रुद्रं न रुद्रं न जानं ॥
न सीलं न सीलं न सीलं न गाहं। गुरं जा गुरं जा गुरं जासु चाहं ॥
छं० ॥ ९४ ॥

घनं जा घनं जा घनं जानि लोभी। सुकत्ती सुकत्ती सुकत्तीत सोभी ॥
छिमंते छिमंते छिमंते समानं। भ्रमंते भ्रमंते भ्रमंते भ्रमानं ॥
छं० ॥ ९५ ॥

उरंगं उरंगं उरगंति धारं। ततथ्थे ततथ्थे ततथ्थे सु भारं॥
छं०॥ ९६॥

समर सिंह जी के शत्रु सेना में घिर जाने पर १२ सरदारों का उनको वेदाग बचाना।

दूहा॥ भयति भरवि श्रम सयन भर। गयनति गुर गुर गाज॥
लरन सूर पहुपंग कों। करि आरथ्थ सु काज॥ छं०॥ ९७॥
सार सार सज्जे सु दृत। सु दृत वचन सुनि काज॥
सो सिर मंडिय लीन बर। जित छिति छित्ती आज॥ छं०॥ ९८॥
काल सु मित्त मत्तह सु मित। रषि न्त्रप करन उपाय॥
भर आरथ्थति सुंच तह। रहै सु जीव न चाय॥ छं०॥ ९९॥

कवित्त॥ सबर सूर रजपूत। पत्ति देष्यौ घुमत्त घट॥
समर समर बिच चपत। नीठ [1]कढ्यौ द्वादस्स भट॥
[2]बीच घत्त सो मद्धि। षग्ग षल लक्कि भंजि थट॥
बीर रंग बिष्पहर। समर संमुह सुभम्यौ नट॥
अनभंग पंग दल भंग किय। अठिल थाट ढिल्लिय सुभट॥
प्राक्रम्म पिष्पि अस्सेव सुर। सीस कज्ज श्रमि धर जट॥
छं०॥ १००॥

इस युद्ध में दो हजार सैनिकों का मारा जाना।

दूहा॥ उभय सहस भर लुथ्थि परि। तिन में सत्त सु सूर॥
द्वादस अग रावर परत। न्त्रिप कढि निठ्ठ करूर॥ छं०॥ १०१॥

रावल जी को निकाल कर वीरों के विकट युद्ध का वर्णन।

पद्धरी॥ कढि सेन समर अस मक्कि सेन। रुक्यौ पंग भर भिरि करेन॥
लावार लोह भिरि समर षेल। धावंत तप्पि सब षग्ग देन॥
छं०॥ १०२॥
तन बीर रूप लज्जा प्रहार। कढ़ि अस्सि सूर बर करि दुधार॥

---

(१) ए.-कढ्यौ। (२) ए. कृ. को -वीस घटत।

झल झली तेग वर तड़ित रूप। बाहेबि हथ्थ करि आन भूप॥
छं० ॥ १०३ ॥

ढल सली ढाल गज फिरति लून। नग पंति दंति दीसै सदून॥
तरफरहि लुथ्थि घट घाय धुक्कि। उच्छरें मीन जल जालि सुक्कि॥
छं० ॥ १०४ ॥

आघात घात घट संग कीन। वर मइग सूर तन छीन छीन॥
परि समर सुभर रषि समर रूप। ढुंढयौ खेत सह पंग भूप॥
छं० ॥ १०५ ॥

रावल जी के सोलह सरदारों का मराजाना।

दूहा॥ गरूअत्तन तन हरूअ भय। घाट कुघाट सु कीन॥
समर सूर सोरह परिग। सुगति मग्ग जस लीन॥ छं० ॥ १०६ ॥

सरदारों के नाम।

कवित्त॥ कान्ह जैत जैसिंघ। पंच चंपे पंचाइन॥
सोम सूर सामला। नरन नीरह नारायन॥
रूप राम रन सिंह। देव दुज्जन दावा नल॥
अमर समर सब जित्ति। समर सध्यौ साईं छल॥
वैकुंठ वट्ट जिन सद्दयौ। रषि सांईं जिन सत्त बल॥
साहेस सहनसी महन वर। महन रंभि जित्यौ सकल॥छं०॥१०७॥

रावल जी का विजयी होना और आगे की कथा की सूचना।

दूहा॥ कान्ह भतीज उठाय लिय। हय नंष्यौ वर अग्ग॥
पंग ढूंढि आरथ्थ भर। सह मिथ्यौ जुरि हग्ग॥ छं० ॥ १०८ ॥
समर सु सद्दे समर वर। बाल [1]सुयंवर लोग॥
जिन वर वर उतकंठ भय। पानि भरै संजोग॥ छं० ॥ १०९ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्राथिराज रासके जैचंद राव समरसी जुद्ध नाम छप्पनवों प्रस्ताव संपूर्णम्॥ ५६ ॥

(१) ए. कृ. को.-सयंवर।

अथ कैमासवध नाम प्रस्ताव लिष्यते ।

(सत्तावनवां समय ।)

राजकुमार रेनसी और चामंडराय का परस्पर घनिष्ट प्रेम और चंदपुंडीर का पृथ्वीराज के दिल में संदेह उपजाना ।

कवित्त ॥ दिल्लीवै चहुआन । तपै अति तेज षग्ग बर ॥
चंपि देस सब सीस । गंजि अरि मिलय धनुद्धर ॥
रयन कुमर अति तेज । रीहि हय पिट्ठ विसंमं ॥
साथ राव चामंड । करै कलि किति असंमं ॥
मेवास वास गंजै द्रुगम । नेह नेह बढ्ढै अनत ॥
मातुलह नेह भानेज पर । भागनेय मातुल सुरत ॥ छं० ॥ १ ॥
सयन इक्क संवसहि । इक्क आसन आस्रम्महि ॥
[1]वीरा नह विहार । भार जल राह सुरम्महि ॥
भागनेय मातुलह । जानि अति प्रीति सु उम्भर ॥
चिंति चंदपुंडीर । कही प्रति राज हित्त भर ॥
चावंड रयन सिंघह सु [2]घर । अप्प नेह बंध्यौ असम ॥
जानौ सु कत्य कारनह कलि । कलै अम्म धरनिय बिसम ॥
छं० ॥ २ ॥

दूहा ॥ चिंति वत्त पुंडीर चित । अप्प सु गुन गंभीर ॥
समय काज प्रथिराज न्रप । हिय न प्रगट्टिय हीर ॥ छं० ॥ ३ ॥
दल वद्दल भर भीर भरि । चवत सूर सुर छंद ॥
सामंत सूर [3]सम्मूह सजि । क्रीड़त ईस नरिंद ॥ छं० ॥ ४ ॥

पृथ्वीराज का नगर के बाहर सभा रचकर वर्षा की बहार लेना और सायंकाल के समय महलों को आना ।

---

(१) ए. कृ. को.-वारि । (२) मो.-पर (३) ए. कृ. को.-सनाह, समोह ।

पद्धरी ॥ संवत्त एक पंचास पूर। आषाढ़ मास नवमी सनूर ॥
रचि विमल पष्य उद्योत भान। प्राचीय जमल [1]फट्टिय पयान ॥
छं० ॥ ५ ॥

सत स्हर पूर सम रूढ़ राज। मंड्यौ सु देव देवन समाज ॥
सत रंज राज वर षेल मंडि। मंचीन अप्प आरंभ थंडि ॥
छं० ॥ ६ ॥

पज्जूनराव वर [2]चंद्रसेन। विचरंत राव कर [3]दष्षि नेत ॥
चामंड जैत कर वास तेन। मुष अग्ग कन्ह निद्दुर सु देन ॥
छं० ॥ ७ ॥

अरु सलष लषन विंझल नरिंद। दस निकट रंग सोमेस नंद ॥
कविचंद अग्र [4]विच्चर सु छंद। तिहि प्रति राज उच्चरि प्रबंद ॥
छं० ॥ ८ ॥

इक जाम स्हर कीनौ पयान। उघघरिय धुंध धरनीय थान ॥
मिट्टै सु वाय चर चक्क होत। दष्षिनह वाम अनकूल सोत ॥
छं० ॥ ९ ॥

आएस स्वामि किन्नौ सस्हर। बहुरे सु सकल सब भर सपूर ॥
फट्टेव [5]घूर यट्टे सु ताप। उघघऱ्यौ गेंन रवि धूप धाप ॥
छं० ॥ १० ॥

उक्कसे घोर घन गरुअ गुंज। दिस दिसा उमड़ि बद्दरन पुंज ॥
[6]कलपंत किलकि कल हल्ल राज। क्रीडंत रेनि इंछनि समाज ॥
छं० ॥ ११ ॥

झमकिय सु बूंद बढ्ढिय विसाल। विछुरेय सुब्भगन प्रातकाल ॥
ठट्टो सु आइ दीवान राज। किन्नौ सु हुकम न्रप हदक काज ॥
छं० ॥ १२ ॥

---

(१) मो-कट्टिय। (२) ए. कृ. को.-सेत्र।
(३) ए. कृ. को.-दच्छिनेत्र। (४) मो.-विद्वरे।
(५) मो.-सूर। (६) ए. कृ. को.-"कालात किलकि कल महल राज"।

दूहा ॥ दूत दूत दरबार बहु । सजे सूर भर साज ॥
सजे वीर दुंदुभि बजे । हदफ पेलि प्रथिराज ॥ छं० ॥ १३ ॥

कवित्त ॥ चल्यौ राज प्रथिराज । सज्जि बर यट्ट वाज गज ॥
संग्गि बोलि कयमास । राव पज्जून चंद्र रज ॥
रा चामंड बर जैत । कन्ह निढ्ढुर नर नाहं ॥
सलष लषन बघघेल । नरिंद विंझा पग दाहं ॥
कम्मान कठिन हथ्थ हथ्थ करि । बान विविध वाइंत वर ॥
वाहुरे सूर रवि [1]अथ्यमित । सोर घोर पावस ऊतर ॥ छं० ॥ १४ ॥

हाथी के छूटने से घोर शोर और घबराहट होना।

स्थान साल हथ्थान । जोर घेरे षवास रज ॥
बेढ़ि छूट कंठेर । बग्घ बायात कोरि हर ॥
इक वत्त कहति वहि । बंधि गजराज डारि कर ॥
.... ॥
बहुरेव सूर सुप अथ्थमित । जूथ जितंतित तुंग बर ॥
छुट्टौ सु पाट गजराज सुनि । घोर सोर पावस ऊतर ॥ छं० ॥ १५ ॥

हाथी का थान से छूट कर उत्पात करना और चामंडराय का उसे मार गिराना।

पद्धरी ॥ संवत्त एक पंचास अंग । आषाढ़ मास दसमी सुरंग ॥
डंडूर वात जल जात उट्ठि । घन पूरि सजल थल प्रथम बुट्ठि ॥
छं० ॥ १६ ॥

घहराइ स्याम बद्दल विसाल । विथ्थुरिय सयल सिर मेघ माल ॥
उब्भरिय चसिय चप्पिय सु अप्प । संदेस मेस केकी सु दप्प ॥
छं० ॥ १७ ॥

क्रीलंत केलि चढ़ि अप्प राज । सामंत सूर सब सजे साज ॥
शृंगारहार गजराज पट्ट । मयमंत मत्त मद झरत [2]पट्ट ॥
छं० ॥ १८ ॥

(१) मो.-अथ्यमन।   (२) ए. कृ. को.-उपट्ट।

बंध्यौ सु षंभ संकर गुराइ। मानै न सद्द उनमत्त थाइ॥
गज्जंत मेघ धुनि सुनिय अप्प। धुन्निय सु षंभ संकर सु दप्प॥
छं० ॥ १९ ॥

उप्पयौ अप्प चल्ल्यौ विराइ। मानै न अनिय अंकुस दुबाइ॥
ढाहंत सट्ट मंडप अनूप। प्राकार द्वार देवाल जूप॥ छं० ॥ २० ॥

ढाहंत उंच आवास धक्क। मानै न मार प्राहार हक्क॥
फारंत उंच तरु चौ उपारि। लग्गौ सु लोग सब्बह हॅकार॥
छं० ॥ २१ ॥

पय तेज तुरिय पावै न जानि। मंडै सु [1]दुयस चौपय प्रमान॥
मदगंध अंध सुझ्झै न राह। सनमुष्प मिलिग चामंड ताह॥
छं० ॥ २२ ॥

दाहिम्म षेलि आवंत ग्रेह। संकरे रोहि मिलि गज सु रेह॥
गजराज देषि चामंडराइ। उप्पारि सुंड सनमुष्प धाइ॥
छं० ॥ २३ ॥

चामंड देषि आवंत गज्ज। परछै जु पाइ चिंतिय सु लज्ज॥
उप्पारि संग है संष देस। उक्कसिय कंध अद्दह असेस॥
छं० ॥ २४ ॥

लाघवी दीन वहि षग्ग धार। सम सुंड दंत तुट्टिय सुजार॥
ढहि पर्‍यौ मंत धरनीय सीस। सब लोकदेव दीनौ असीस॥
छं० ॥ २५ ॥

चामंडराव निज ग्रह अपार। भातेज सथ्थ रय...
संभलिय बत्त पुहमी नरेस। कलमलिय चित्त ...

शृंगारहार का मरना सुन कर ... के
चामंडराय को कैद क...

कवित्त ॥ सुनिय बत्त प्रथिराज। हन्यौ ...
चिंति बत्त पुंडीर। अवर गंठी ...

---

(१) ए. कृ को.-दुयय।

अप्प कोप उर धरिय । गल्ह [1]कातिल्ल कलारिय ॥
रामदेव गुर राज । मुष्प अग्गे अभ्भारिय ॥
बेरी सु आनि दीनि न्नपति । जाय पाइ चामँड भरौ ॥
संकोच प्रीति सतसंध सुष । ततरु षंड धरनी करौ ॥ छं० ॥ २७ ॥

पिष्ष्यौ वीर प्रथिराज । राज दरबार रुकाइय ॥
हाहुलिराव हमीर । बोल पज्जून लगाइय ॥
आज राज गज मारि । काल्हि बंधे फिरि तेगा ॥
राजनीति नन होइ । स्वामि अग्या तजि वेगा ॥
तब देन पाइ पच्छे न भय । हांसीपुर दीने तबै ॥
इहि काज कीन अब अग्रमन । स्वामि गज्ज मारन अबै ॥
छं० ॥ २८ ॥

लोहाना का बेड़ी लेकर चामंडराय के पास जाना ।

कहै राज प्रथीराज । मीच चामंड न मारौ ॥
सुनहु सूर सामंत । मरन कहुत अत्तारौ ॥
लोहानौ आजान । हथ्थ बेरी लै चल्लं ॥
साम दान करि भेद । पाइ चामंड सु घल्लं ॥
अनभंग अंग है राम गुर । राज रीति राषन्न तिहि ॥
दाहिम्म राव दाहर तनय । सुनि अवाज चर चित्त रहि ॥छं०॥२९॥

चामंडराय के चित्त का धर्मचिंता से व्यग्र होना ।

दोय सहस दाहिम्म । पहिरि सन्नाह सु रज्जिय ॥
बज्जि साहि वर अग्र । बीर बाहै कर बज्जिय ॥
चिंत राव चामंड । अत्त इहै भ्रम्म न होइय ॥
सामि सनंमुष लोह । सामि दोही घर जोइय ॥
पूछियै सेव जिन देव करि । दुष्ट भाव किम चिंतियै ॥
करतार घरह घर कित्ति की । दुहु धर मरन न जित्तियै ॥
छं० ॥ ३० ॥

(१) ए. कृ. को.-काटिन ।

गुरुराम का चामंडराय को बेड़ी पहनाना।

लै बेरी गुर राम। गए चामंड राव ग्रह॥
कर दीनी दाहिम्म। रीस गजराज पून कह॥
तब लीना दाहिम्म। भ्रम्म स्वमित्त सुद्ध मन॥
सो लीनी करकेलि। प्रेम धारी पय अप्पन॥
धनि धन्नि धन्य सब नयर हुअ। सयल धन्य संचरि सु सद॥
चामंडराय दाहर तनै। नीति रेह रष्षी सु हद॥ छं०॥ ३१॥

चामंडराय का बेड़ी पहिनना स्वीकार कर लेना।

दूहा॥ बंदि लई चामंड ने। बेरी सम्हो हथ्थ॥
साम भ्रम्म जुग रष्पयौ। जीरन जग्ग सु कथ्थ॥ छं०॥ ३२॥
यों घल्ली चामंड पय। ज्यों मद मत्त गयंद॥
लाज [1]राज अंकुसन मिटि। धनि दाहिम्म नरिंद॥ छं०॥ ३३॥
यों अग्या प्रथिराज की। मन्नी दाहिम इंद॥
ज्यों सुनि मंचह गारडी। मानत आन फुनिंद॥ छं०॥ ३४॥

इस घटना से अन्य सामंतों का मन खिन्न होना।

अरिल्ल॥ भर बेरी चामंड राज जब। भए अति विमन सु मन सामंत सब।
भ्रमत राज आषेट पंग भय। ग्रह रष्षौ कैमास मंच रय॥
छं०॥ ३५॥

पृथ्वीराज का शिकार खेलने जाना।

दूहा॥ तिहि तप आषेटक भ्रमै। थिर न रहै चहुआन॥
जोगीनिपुर बर रष्षि कैं। [2]दस सामंत प्रधान॥ छं०॥ ३६॥
चौ अग्गानी बीस बर। संग सुक्कि कैमास॥
आषेटक चहुआन गौ। न्रप दुग्गावन पास॥ छं०॥ ३७॥

राजा की अनुपस्थिति में कैमास का राज्य कार्य्य चलाना।

(१) मो.-काज। (२) ए. कृ. को.-गय।

कवित्त ॥ राज काज दाहिम्म । रहै दरबार अप्प बर ॥
आषेटक दिल्लिय । नरेस खेलै कमंध डर ॥
देस भार मंचीस । राव उद्धार सु धारै ॥
न को सीस चंपवै । हद्द तप्पै सु करारै ॥
लोपै न लीह लज्जा सयल । स्वामि भ्रम रष्पै सुरुष ॥
क्षत नीति रीति बहुै बिसह । [१]बंछै लोक असोक सुष ॥
छं० ॥ ३८ ॥

दिन विशेष की घटना का वर्णन ।

सुर गुर वासर सेष । घटिय दससीय देव दिन ॥
पुब्ब पाट भद्दों सु गाढ़ । घन वट्ट कोक मन ॥
गहकि मोर दद्दुरनि । रोर बद्दर बगपंतिय ॥
बन दिसान गहरान । चाप वासव चित मंतिय ॥
दरबार आय कैमास न्नप । कीय महल सिर रज्ज भर ॥
[२]घन संकुल तुछ सध्ये सयन । चित्त मित्त दुअ [३]पंच बर ॥
दाहिम्म मिल्यौ इमि दासि सम । षीर मद्ध जिम नीर मिलि ॥छं०॥३९॥

कैमास का चलचित्त होना ।

राज चित्त कैमास । चित्त कैमास [४]दासि गय ॥
नीर चित्त वर कमल । कमल चित्त बर भान गय ॥
भंवर चिंत भमरी सु । भँवर रत्तौ सु कुसुम रस ॥
ब्रह्म लोय रत्तयौ । लोय रत्तौ सु अधम रस ॥
उतमंग ईस धरि गंग कों । गंग उलटि फिरि उदधि मिलि ॥
छं० ॥ ४० ॥

करनाटी की प्रशंसा और उसकी कैमास प्रति प्रीति ।

दूहा ॥ नंदी देस वनिंक सुअ । केसव नंजन हत्त ॥
वीन जान रस वनसु घर । राजन रष्पिय हित्त ॥ छं० ॥ ४१ ॥

---

(१) ए. कृ. को. वंधे । (२) ए को.-छन ।
(३) ए. कृ. को.-घन । (४) मो.-दाहिम्म ।

दिव्य दास रष्षिय दिवस । सुग्रह पवारिय द्वार ॥
तिन अवास दासिय सघन । अह निसि रस रषवार ॥ छं० ॥ ४२ ॥

कवित्त ॥ समुष समुष ग्रह राज । [1]महल साला सु रूव रंग ॥
तहं सु रोहि कयमास । [2]सजन आवरिय अप्प अंग ॥
ऊँच महल करनाटि । देषि डंबर घन अंमर ॥
बैठी गवष ससष्पि । सुमन [3]मंती अरु संमर ॥
सम दिट्ठि उट्ठि दाहिम्म दुअ । जग्गि मार उब्भार चित ॥
अंकूरि द्रष्ट अंतर उरिय । प्रीति परट्ठिय [4]कालक्रत ॥ छं० ॥ ४३ ॥

दूहा ॥ नव जोवन शृंगार करि । निकरि गवष्यह पास ॥
देषि उझकि बर सुंदरी । काम द्रष्टि कयमास ॥ छं० ॥ ४४ ॥
करनाटी दासी सुबर । चित चंचल तिय वास ॥
काम रत्त कैमास तन । दिष्ट उरक्खिक्खय तास ॥ छं० ॥ ४५ ॥
करनाटी कैमास मन । राजन नष्यि अवास ॥
भावी गत को मिट्टई । ज्यों जनमेजय व्यास ॥ छं० ॥ ४६ ॥
द्रष्टि द्रष्टि लोकन जरिग । मति राजन ग्रह काज ॥
सहिय करत असहिय समर । असहवान तन साज ॥ छं० ॥ ४९

दोनों का चित्त एक दूसरे के लिये व्याकुल होना, औ करनाटी का अपनी दासी को कैमास के पास प्रेषित करना।

ग्रह बाहुरि सामंत गय । रहि चौकी कैमास ॥
करनाटीं सहचरि उभै । मुक्कि दई तिन पास ॥ छं० ॥ ४८ ॥

गाथा ॥ लग्गी द्रष्टि सु द्रष्टि अपारं । धरकी दुअर धार ना धारं ॥
कलमलि चित्त अभित्त दुआनं । लग्गे मीन केत क्रत बानं ॥
छं० ॥ ४९ ॥

(१) मो. "माहिल साली सु सूव रंग"। (२) ए. कृ. को.-सुजन।
(३) मो.-मतिनि। (४) मो.-काजल।

किय दाहिम्म केलिक्रत काजं। उठ्यौ सूर अस्त मनि साजं ॥
अप्प ग्रेह कैमास सपत्तौ। सेन बाल गुन ग्यान बियत्तौ ॥ छं० ॥५०॥

छिन अंदर भीतर आवासं। नन धीरज्ज हंस रहै तासं ॥
नठी सत्ति रति गत्ति उहासं। अविगत देव काल निसि नासं ॥
छं० ॥ ५१ ॥

घटिय पंच पल बीस सबें कल। वित्तिव निसा उसास सलुक्कल ॥
अति झंपत करनाटिय [1]जरं। काम कटाछ्य सु लग्गि करूरं ॥
छं० ॥ ५२ ॥

कवित्त ॥ क्रन्नाटिय कैमास। म्रिष्ठ देपत मन लग्गो ॥
कलमलि चित्त सुहित्त। मयन पूरन जुरि जग्गो ॥
गयौ ग्रेह दाहिम्म। तलप अलपं मन किन्नौ ॥
बोलि अप्प सो दासि। काम कारन हित दिन्नौ ॥
[2]लै संच राज अप्पं सरिस। जौ हम आनें चित्त हर ॥
सम चली दासि कैमास दिसि। जंपिय भेव सनेह बर ॥छं०॥५३॥

करनाटी के प्रेम की सूचना पाकर कैमास का स्त्री भेष धारण कर दासी के साथ होलेना।

दूहा ॥ सुनि दासी करनाटि बच। निज संचरि सथ सुद्ध ॥
मत्ति घटी अरुझी सुरति। काल निसा क्रत निद्ध ॥ छं० ॥ ५४ ॥

सहचरि बर सोकष्णि कै। तकै बट्ट कैमास ॥
सम समद्वि सज्जें रह्यौ। करि करि हिये विलास ॥ छं० ॥ ५५ ॥

निसि मद्दव कद्दव कहल। आपेटक प्रथिराज ॥
दाहिम्मौ दहि काम रत। काल रैनि कौ काज ॥ छं० ॥ ५६ ॥

दासिय हथ्थ सु हथ्थ दिय। चिय अंबर आछादि ॥
दासिय अंतर अप्प हुअ। [3]दरन स पिष्यौ सादि ॥ छं० ॥ ५७ ॥

(१) मो.-कुंजर।

(२) ए. कृ. को.—" लै अप्प राज मत्री सरिस "। (३) मो.-दरसन।

लंगी लंगररराव। सूर सा अल्ह कुआरं॥
आजानबाहु गुज्जर ¹कलक। सोलंकी सारंग वर॥
सामलौ सूर आरज कमँध। बाम जु दूप्प विसग्ग भर॥
छं०॥ ६५॥

गाथा॥ यों राजंत कमानं। राजन सयनेव सुस्मियं एसं॥
ज्यों स्त्री नल भरति अंगं। श्रम थक्के दंपती उभयं॥ छं०॥ ६६॥

दूहा॥ रष्या करीब देव तुहि। सोवत न्रप अत सब्ब॥
दासी चौकी चक्कित हुअ। कर धरि छित्तिय जब्ब॥ छं०॥ ६७॥
न्रप सूतौ अंतर महल। जाइ संपतिय दासि॥
जुग्गिनिवै चहुआन कौ। गुन किन्नौ अभिलास॥ छं०॥ ६८॥

दासी का राज शिविर में प्रवेश।

²बंध्यो षंभ सु रंभ हय। अप्प चली जहं राज
विसग सथ्य दिव्यौ सकल। उर मन्यौ अविकाज॥ छं०॥ ६९॥

दासी का नूपुर स्वर से राजा को जगाने की चेष्टा कर

गाथा॥ सू अत सु चित्त निद्रा। सिंगी सार रयन्न जग्गियं॥
विद्ध दीपक अरंत मंदं। नूपुर सद्दानि भान अच्छानि॥छं०॥

साटक॥ भूपानं जयचंद राय निकटं, नेहाय जग्गाइने॥
संसाहस्स बलाहु साहि सकलं, इच्छासि जुद्धायने॥
सिद्धं चालुक चाइ मंच गहनो, दूरेस विस्तारने॥
अग्यानं चहुआन जानि रहियं, देवं तु रष्या करे॥ छं०॥

श्लोक॥ पंग जग्यो जितं वैरं। ग्रह मोषं सुरतानयं॥
गुज्जरी ग्रह दाहानि। दैवं तु रष्या करे॥ छं०॥ ७२॥

दूहा॥ सुनिय सु नूपुर सद्द न्रिप। सषी सु चिंतिय चित्त॥
सन्निय कारन सिद्ध मनि। न्रप गति दुक्कित नित्त॥ छं०॥

दासी का राजा को जगाना और इंछिनी का पत्र देन

(१) मो.-कमल। (२) ए. कृ. को.- बंध्यो रंभ सुथंभ।

* चान्द्रायण ॥ छत्तिय हथ्थ धरतं नयंनन चाहुयौ।
दासिय दष्पिन हथ्थ सु बंचि दिषाययौ ॥
जिन बाना बलबान रोस रस दाहयौ।
मानहु नाग पतित्त अप्प जगावयौ ॥ छं० ॥ ७४ ॥

साटक ॥ जग्यौ श्री चहुआन भूपति भरं, सिंघं समं पिष्पियं ॥
दिल्लीनं पुरलोक चुंकति ग्रहं, तेजंबु कायं सुषं ॥
सा संकी वय ग्रास धीरज रनं, वीराधि वीरं अरी ॥
करनाटी वर दासि दाहिम वरं, मंची सरो भिष्टयं ॥ छं० ॥ ७५ ॥

दूहा ॥ बंचि वीर कग्गद चरह। तरकि तोन कर लज्ज ॥
निर तिन [1]कह दीनो न्रपति। सब सामंतन लज्ज ॥ छं० ॥ ७६ ॥

पृथ्वीराज का इंछिनी के महल में आना।

आयौ न्रप इंछिनि महल। राज रीस चित मानि ॥
अगनि दरूक्ष कैमास कै। बीर बरन्निय पानि ॥ छं० ॥ ७७ ॥

राजा प्रति इंछिनी का बचन।

वहनि वच्छ महि अच्छ रस। इहि रस महि रसकंत ॥
दनुकि देव गंध्रव्व जछि। [2]दासी निसि विलसंत ॥ छं० ॥ ७८ ॥

[illegible]न्द्रायण ॥ संग सयंनन सथ्थ न्रपत्ति न जानयौ।
[illegible] दासिय संग समानयौ ॥
[illegible]रिंद फुनिंदर अथ्थि समानयौ।
[illegible]परी दुअ मद्धि ततच्छिन आनयौ ॥ छं० ॥ ७९ ॥

[illegible] ॥ जि[illegible]पति मुच्छि आलुक्खिक्ष तन। घन घुम्यौ चिहु पास ॥
जित[illegible]नन अंपन संचरै। महल कहल कैमास ॥ छं० ॥ ८० ॥

[illegible]नी का राजा को कैमास और करनाटी को दिखाना।

सुंदरि जाइ दिपाइ करि। दासी दुहुं दाहिम्म ॥

[illegible] (१) ए. कृ. को.-किन। (२) ए.-दीसी।

(* इस छन्द को चारो प्रतियो मे रासा करके लिखा है परन्तु यह छन्द चान्द्रायण है। रास (रासा मे २१ मात्रा और तीन जमक होते है। [illegible] रासा।

वर मंत्री प्रथिराज कहि। दइ दुवाह वर क्रम्म ॥ छं० ॥ ८१ ॥
ना दानव ना देवगति। प्रभु मानुष वर चिन्ह ॥
सु रस पवारि गवारि कह। प्रौढ़ सुगध सति किन्ह ॥ छं० ॥ ८२ ॥
रसनि पिष्षि रसनिय विलसि। रजनि भयानक नाह ॥
चित्र दिपात सु चिंत्रनी। मोन विलग्गिय बाह ॥ छं० ॥ ८३ ॥
निमष चित्र देष्यौ दुचित। सलप सलष्पिय नैन ॥
हदै सुयस....सुंदरिय। दुत्र थप थंपिय वैन ॥ छं० ॥ ८४ ॥
नीच बान नीचह जनिय। विलसन कित्ति अभग्ग ॥
सुनहु सरूप सु मुत्ति कर। दासि चरावति कग्ग ॥ छं० ॥ ८५ ॥
करकुँवंड लीनौ तमिक। [1]अरूचि दान विधि जोय॥
चरिय कग्ग तरवर सबै। हंसनि हंसन होइ ॥ छं० ॥ ८६ ॥

बिजली के उजेले में राजा का वाण संधान करना।

निसि अद्धी सुझ्झै नहीं। बर कैमासय काज ॥
तड़ित करिग अंगुलि धरम। बान भरिग प्रथिराज ॥ छं० ॥ ८७॥

कैमास की शंका।

श्लोक ॥ अर्जुनः सायको नास्ति। दशरथो नैव दृश्यते ॥
स्वामिन् अषेटकं हत्ति। न च वानं न चयो नरः ॥ छं० ॥ ८८ ॥

बाण वेधित-हृदय कैमास का मरण।

दूहा ॥ बान लग्ग कैमास उर। सो ओपम कवि पाइ ॥
मनों हृदय कैमास कै। हथ्थ बुझिझय लाइ ॥ छं० ॥ ८९ ॥

कवित्त ॥ भरिग बान चहुआन। जानि दुरदेव नाग नर ॥
दिट्ठ मुट्ठि रस डुल्लिग। चुक्कि निक्करिग्ग इक्क सर ॥
दुत्ति आनि दिय हथ्थ। पुठि पामार पचाऱ्यौ ॥
वानि हत्त तुट्टि कंत। सुनत धर धरनि अपाऱ्यौ ॥
इय कब सब सरसै गुनति। पुनित कह्यौ कविचंद तत ॥

(१) ए. कृ. को.- अरुचि ।

यों पन्यौ कैमास आवास तें । जानि [1]निसानन छिच्चपति ॥
छं० ॥ ९० ॥

गाथा ॥ सुंदरि गहि सारंगो । दुज्जन दुसनोपि पिष्पि सायक्कं ॥
किं किं विलास गहियं । किंकिनी दुष्प दुष्पाई ॥ छं० ॥ ९१ ॥

कविकृत भावी वर्णन ।

श्लोक ॥ भवितव्येवं भवितव्येवं । ललाटपटलाक्षरं ॥
दासिकाहेत कैमासं । मरणं हस्त राजभिः ॥ छं० ॥ ९२ ॥

पद्धरी ॥ नदि चलिय पूर गहराइ अत्ति । शृंगार तरुन मन मिलन पत्ति ॥
सेदनी नील सोभंत रूप । भ्रज रच्चिय सचिय सम दिष्ट भूप ॥
छं० ॥ ९३ ॥

गहकंत दच्छ वद्दर विरूर । पहु लुष्प मंच बहु ढुक्कि क्रूर ॥
झरलंत पुष्टि कोकिल कलच्छि । लें मंत संढ जनु तंब पिच्छ ॥
छं० ॥ ९४ ॥

वर गजिय व्योम रजि इंद्वान । गहि काम चाप जनु द्दिय निसान ॥
नीलभा [2]गहर तरु रज्जि माल । गुन थकित जालि तुट्टे सुआल ॥
छं० ॥ ९५ ॥

सुकल्यौ अप्प भासंत पव्व । मोहियौ रक्कि मनि मुनि सु तव्व ॥
....　　....　　...　　....　　....　　॥ छं० ॥ ९६ ॥

कैमास की प्रशंसा ।

कवित्त ॥ जिन कैमास सुमंचि । पोदि पट्टू धन कढ्यौ ॥
जिन कैमास सुमंचि । राज चहुआन सु चढ्यौ ॥
जिन कैमास सु मंचि । पारि परिहार सुरस्थल ॥
जिन कैमास सु मंचि । मेछ बंध्यौ बल सब्बल ॥
चिहुं ओर जोर चहुआन न्रप । तुरक हिंदु डरपन डरह ॥
वाराह बधघ वाराह बिच । सु वसि बास जंगल धरह ॥ छं० ॥९७॥

(१) ए. कृ. को.-" निसान छित्त पति "

(२) मो.-गरह रत्तर ।

अन्यान्य सामंतों के सम दूषण।

साटक ॥ कन्ह' कायक कांति कंत वहनं, चामंडतिय दावरं ॥
हरसिंघं बिय बाल बालय व्रतं, रामंच सलपं व्रतं ॥
[1]द्वै कंता बड़ गुज्जरं च कनकू, परदारते विरुमुहा ॥
रामो काम जिता सनास विविधं, कैमास दासी रता ॥ छं० ॥ ९८॥

कवित्त ॥ जिन मंची कैमास। ग्रेह जुग्गिनि पुर आनी ॥
जिन मंची कैमास। बंध बंध्यौ पंगानी ॥
जिन मंची कैमास। भीम चालुक्क पहारं॥
जिन मंची कैमास। [2]जिवन बंध्यौ घट वारं ॥
सोमत्त घट्ट कैमास की। दासि काज संदोह हुअ ॥
दुप्पहर चाह दस दिसि फिरै। कोइ छची ग्रब्बहन तुअ ॥ छं० ॥ ९९॥

राजा का कैमास को गाड़ देना।

दूहा ॥ षनि गड्यौ कैमास तहं। दासी सम करि भंग ॥
पंच तत्त सरसे सुषै। प्रात प्रगट्टै रंग ॥ छं० ॥ १०० ॥
जो तक पंगति उप्पज्यौ। बैनन दिषि कविचंद ॥
साम प्रगट बर कंधनह। वर [3]प्रमाद मुष इंद ॥ छं० ॥ १०१ ॥

करनाटी का निकल भागना।

षनि गड्यौ न्रप सम धनह। सो दासी सुर पात ॥
दिब धारनै जलद्धि तें। लीला कहिग सु प्रात ॥ छं० ॥ १०२ ॥
षनि गड्यौ तिहि गबषनह। तजि गौषति गई दासि ॥
षनि गड्यौ कैमास बर। कित दै दासी भासि ॥ छं० ॥ १०३ ॥
कर्नाटी कैमास दुति। दासि गई तन थान ॥
संकर रस संकर न्रपति। वर दंपति चहुआन ॥ छं० ॥ १०४ ॥
क्रित्य कुलच्छिन हीन चित। जीरन जुग जुग हास ॥
निसि निद्रा ग्रसि चिंत वर। पुच्छिय इंछिनि भास ॥ छं० ॥ १०५

---

(१) मो.-द्वै। (२) मो.-" जिनव वंधी वहु वारं "।
(३) ए. कृ. को.-प्रसाद।

उपोद्घात।

मुरिल्ल ॥ उभै दासि कैमास सपत्तौ। दासी प्रनइ अमंत सु रत्तौ ॥
जासनि गई सुक्क आभासी। बिय निसपत्त प्रपत्तय दासी ॥
छं० ॥ १०६ ॥

देवी का कविचंद से स्वप्न में सब हाल जताना।

दूहा ॥ वर चिंता वर राजई। सुपनंतर [1]कविचंद ॥
जुगति संद मौ मंद है। सै वीचं भो विंद ॥ छं० ॥ १०७ ॥
गरै माल न्रप कित्ति भय। सोहंती तन माल ॥
सुपनंतर कविचंद सों। विरचि देषि कहि ताल ॥ छं० ॥ १०८ ॥

गाथा ॥ न्रप हति वीर कैमासं। [2]सुर घट्टी रहि निख्खया ॥
वर गौ पुब्बह धनयं। रैनं निंद्रा गई बानं ॥ छं० ॥ १०९ ॥

दूहा ॥ सुष रत्ती पत्तौ न्रपति। दिसि धवली तमछिन्न ॥
चिंति मग्ग गहि सूर मन। पुरष प्रवानी खिन्न ॥ छं० ॥ ११० ॥

कविचन्द के मन में शंकाएं होना।

मुरिल्ल ॥ बाल सु म्रत द्रिगया मन किन्नी। रवि सुष भरि दिषि वल्लभ भिन्नी ॥
को पुच्छै किन उत्तर दीयौ। तजि आषेट ख्रम्म हत लीयौ ॥
छं० ॥ १११ ॥

दूहा ॥ भ्रम परंत दिल्लिय नयर। चित सुधि संधि कहूर ॥
गौ हरम्म हरि माननी। चित सामंतन सूर ॥ छं० ॥ ११२ ॥
दिन नष्षे हरि पूज विन। निसि नष्षे बिन काम ॥
प्रात भई गत रोस गम। अरधि अग्गि सित ताम ॥ छं० ॥ ११३ ॥
गयौ न्रप्प वन अद्ध निसि। सुंदरि सौंपि [3]सहाय ॥
सुपनंतर कविचंद सों। सरसे वद्दिय आय ॥ छं० ॥ ११४ ॥

देवी का प्रत्यक्ष दर्शन देना।

---

(१) ए. कृ. को.-सुनि।
(२) मो "सुर घटी रहि नीलया"।		(३) ए. कृ. को. ।पसाय

मुरिल्ल ॥ तब परतष्पि भई ब्रह्मानी। बीना पानि हंस चढ़ि ध्यानी ॥
न्निमल चीर हीर विन मंडं। तिहि कल कित्ति कही सु प्रचंडं॥
छं० ॥ ११५ ॥
जिहि निसि लो बर वित्तक वित्ती। ज्यों राजन कैमास सु हत्ती ॥
बर ब्रंनत सर अंबर छाइय। तवहि रूप चंदह कवि ध्याइय ॥
छं० ॥ ११६ ॥
दरसन देवि परस्सिय कब्बी। सुपनंतर कविचंद सु दिब्बी ॥
बद्रिय श्रुत्ति उचार तुंब बर। बरन उचार कियौ आसा उर ॥
छं० ॥ ११७ ॥
भइ परतष्पि सु कब्बि मनाई। उगति जुगति कहि कहि समुझाई ॥
बाहन हंस अंस सुप दाई। तब तिहि रूप ध्यान कवि पाई ॥
छं० ॥ ११८ ॥

सरस्वती के दिव्य स्वरूप की शोभा वर्णन।

नराज ॥ मराल बाल आसनं। अलित्त [१]साय सासनं ॥
सुहंत जास तामरं। सुराग राग धामरं ॥ छं० ॥ ११९ ॥
कलिंद केस मुक्करे। उरग्ग बाल विथ्थुरे ॥
लिलाट रेष चंदनं। प्रभात इंद बंदनं ॥ छं० ॥ १२० ॥
कपोल रेष गातयौ। उवंत इंद्र पाययौ ॥
उछाइ कीर षंजनं। तरुन्न रूप रंजनं ॥ छं० ॥ १२१ ॥
चाटंक झंक झंकई। तिलक्क पान संकई ॥
सुहंत तेज भासई। रुलंत मुत्ति पासई ॥ छं० ॥ १२२ ॥
उपंम चंद जंपयौ। चुनंत कीर सीपयौ ॥
विभूअ जूअ पंचयौ। कलंक राह चंचयौ ॥ छं० ॥ १२३ ॥
त्रिभंग नार आतुरं। चिबुक्क चारु चातुरं ॥
अवन्न चाट पिप्पयौ। अनंग रथ्य चक्कयौ ॥ छं० ॥ १२४ ॥
जु बाल कीर सुभ्भयौ। [२]उपम्म तासु लुभ्भयौ ॥
दिपंत तुच्छ दिट्ठयौ। विचै अनार फुट्टयौ ॥ छं० ॥ १२५ ॥

(१) ए. कृ. को.-छाय। (२) ए. कृ,को.-"तंकत रत्त बिंबयौ"।

सु ग्रीव कंठ सुत्तयौ । सुमेर गंग पत्तयौ ॥
सुमंत कुच्च तुंसरं । [1]सुरच्छि लग्गि अंसरं ॥ छं० ॥ १२६ ॥
नपादि ईस अच्छलं । धरंति मुच्छि लच्छिलं ॥
सुरंग हथ्थ सुंदरी । सो पानि सोभ सुंदरी ॥ छं० ॥ १२७ ॥
सुजीव अम्म बालयं । सुगंध तिष्प तालयं ॥
कनक्क विप्प पब्बया । सुराज सिंभ दिब्बया ॥ छं० ॥ १२८ ॥
विविच्च रोम रंगयं । पपील सुत्तरंगयं ॥
हरंत छब्बि जामिनी । कटिं सुहीन सामिनि ॥ छं० ॥ १२९ ॥
सदैव ब्रह्मचारिनी । अबुद्ध बुद्धि कारिनी ॥
अभाष दोष बंचही । सुहंत देवि संचही ॥ छं० ॥ १३० ॥
अपुट्ठ रंभ नारिनी । सुजुत्त ओप कारनी ॥
नयन्न नास कोसई । वरट्टि कट्टि भेसई ॥ छं० ॥ १३१ ॥
झलक्क तेज कंबुजं । चरन्न चारु अंबुजं ॥
सुरंग रंग ईडुरी । कलौति चंपि पिंडुरी ॥ छं० ॥ १३२ ॥
सबद्द सद्द नूपुरे । चलंत हंस अंकुरे ॥
सु पाइ पाइ रंगजा । जु अद्ध रत्त अंबुजा ॥ छं० ॥ १३३ ॥
दरस्स देवि पाइयं । सु कव्वि कित्ति गाइयं ॥ छं० ॥ १३४ ॥

सरस्वत्योवाच ।

दूहा ॥ मात उचारत चंद सों । भेद दियौ ग्रह काज ॥
दासि काज कैमास कौं । अप्प हन्यौ प्रथिराज ॥ छं० ॥ १३५ ॥

गाथा ॥ अंबुज विकसि विलासं । देवी दरसाइ भट्ट कवि एहं ॥
अद्धं वद्धं परष्पं । चरचरितं चंद कवि एयं ॥ छं० ॥ १३६ ॥

पावस वर्णन ।

अरिल्ल ॥ अंबुज विकसि वास अलियायौ । स्वामि वचन सुंदरि समझायौ ॥
निसि पल पंच घटी [2]दू आयौ । आषेटक जंपिरु न्रप आयौ ॥
छं० ॥ १३७ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-सुरत्ति ।　　　　(२) ए. कृ. को.-अद्ध ।

छन्दपास ॥ घन सुन्भियं चिहुपास। आषेट राजन वास ॥
निर्घोष घन घहरंत। आकास कलि किलकंत ॥ छं० ॥ १३८ ॥
द्रिगपाल पेंडुन सुद्ध। [1]दल जलज बद्दल उद्द ॥
धर पूर वारि विसाल। गिरि अंभ पूरित माल ॥ छं० ॥ १३९ ॥
तिन समय राजन सेन। धर स्याम अम्भनि गेन ॥
निसि अद्ध नवनिलि बिज्जि। चिहु ओर घन घन गज्जि ॥
छं० ॥ १४० ॥
श्रित पंति पंति सु सज्जि। छिन दीप छिन छिन रज्जि ॥
झिमझुम्म सुंम विपष्प। बहु वत्ति जल अति कष्प ॥
छं० ॥ १४१ ॥
दूहा ॥ अच्छौ दिन अच्छै महल। नववति वज्जि विसाल ॥
चव अत ग्रह कैमास मत। भग्गी पीठ रसाल ॥ छं० ॥ १४२ ॥

कैमास और करनाटी का कामातुर होना।

लघु नराज ॥ जुग सत्त घुर पंचासयं। भव भद्द मास अवासयं ॥
अग सन्न पष्प सु बारयं। दिसि दससि दिवस उचारयं ॥ छं० ॥ १४३
तम भूमि तंसि नितं तयं। गत महल गुरु गत संतयं ॥
परजंकयं परसोदयं। जनु चंद रोहिनि कोदयं ॥ छं० ॥ १४४ ॥
दुल मिलिति मिलि जुग मंतयं। जुग जामि जामिनि पत्तयं ॥
सिष सिष्षयं पट रंगिनी। मन सज्ज सज्जित दंगिनी ॥छं०॥१४५॥
[2]दसयं धनं धन अच्छियं। सामानि केलि सु कच्छियं ॥
लिषि भोजयं भरि दासियं। दिय दोर ओर पियासियं ॥छं०॥१४६॥
दुति जाम पल दुति अंतयं। सषि स्वामिनी इह भंतियं ॥
असु हंकयं पल विर्त्तयं। रुषि राज सेन सु इत्तयं ॥ छं० ॥ १४७ ॥
भुअ सचित सेन निसुम्भयं। घन प्रयल रस [3]वस उभ्भयं ॥
तन तेज दीपक अलपयं। रुचि राज राजित तलपयं ॥छं०॥१४८॥
दस दसकि दासिनि दोसयं। झम झमकि बूंद बरीसयं ॥

(१) ए.-जल। (२) ए. कृ. को. सदय। (३) ए. कृ. को. मो-रस।

धुनि नूपुरं छत संदयं । गत जहां सयन नरिंदयं ॥ छं० ॥ १४९ ॥
हिय पानि मंडित जागरं । कर मद्धि निरषत कागरं ॥
छिन वंचियं असु हंकियं । क्रम क्रमत राजन बंकियं ॥
छं० ॥ १५० ॥
रस तिय निमेष अतीतयं । घनघोर रोर क्रतीतयं ॥
द्रिग द्रिगन दिष्षन अंगयं । कलमहल कलह अलंगयं ॥
छं० ॥ १५१ ॥
सम परस पर प्रति दासियं । सुष भिन्न भिन्न प्रकासियं ॥
छं० ॥ १५२ ॥

कैमास का करनाटी के पास जाना ।

कवित्त ॥ नाज रूप कैमास । बाल नन चिपति सुष्ष गुर ॥
मदन बढ्यो जुर जोर । लगी तन ताप तलप उर ॥
नाह नारि छंडयौ । चिष्प लग्गिय श्रोतानं ॥
लाज वैद गयौ छंडि । रोग रोगी न पिछानं ॥
पीडयौ प्रेम मारुत सु तरु । राम नाम मुष ना कहिय ॥
जंभाति प्रकंपति सियल [1]तन । बर प्रजंक पलक न रहिय ॥
छं० ॥ १५३ ॥

इंछिनी रानी का पत्र ।

दूहा ॥ कग्ग अरोह्यौ हंस ग्रह । महल सु राज दुआर ॥
कहती राज न मानते । लिषि पट्ठयौ पावार ॥ छं० ॥ १५४ ॥
श्लोक ॥ न जानं मानवो नागो । न जानं जष्य किन्नरं ॥
श्रै अपूरवं देहं । दासी महल मनुष्ययं ॥ छं० ॥ १५५ ॥

पृथ्वीराज का इंछिनी के महल में जाना । इंछिनी का राजा को सब कथा सुना कर कैमास करनाटी को बतलाना ।

दूहा ॥ सुनि रु वचन चल्ल्यौ न्रपति । जहां इंछिनिय अवास ॥
कह्यौ क्रत्त कैमास कौ । जो दिष्यौ ग्रह दासि ॥ छं० ॥ १५६ ॥

(१) मो.-नन ।

हनूफाल ॥ जल सजल अच्छित सेनं। धर हरत धुम्मर ऐनं ॥
दम दमकि दामिनि दूरि। जलजात नैपद पूरि ॥ छं० ॥ १५७ ॥
करि इच्छिनिय ग्रह पंति। जनु मैंन रति सम पंति ॥
द्रिग दिष्षि कूलन वाज। तिय तरित अच्छित दाज ॥ छं० ॥ १५८ ॥
इक पंच धुन कर चंपि। तर तरकि दुअ विच कंपि ॥
कैमास प्रति सम दीस। तहां वैनं कोन प्रकीस ॥ छं० ॥ १५९ ॥
इक चुक्कि राजन जाम। पच्चारि इंछनि ताम ॥
बिप धर्‍यौ राजन पानि। कर करषि करन सु तानि ॥छं०॥१६०॥
बिय बुद्ध लगि [1]वहि गात-। भर हरिय [2]भूमि निपात ॥
तकि तिष्य धष्पि न सिद्ध। वढि तोमरं तन बिद्ध ॥ छं० ॥ १६१ ॥
कहि क्रन्न बनिता बैन। अरि पर्‍यौ प्रभु [3]असु ऐन ॥
बानावली बर धाइ। चुकि नांहि जुग्गिनि राइ ॥ छं० ॥ १६२ ॥
गहि सुंदरी सारंग। दह नेव दुव्वनि अंग ॥
दिषि राज भवषित भग्ग। मन सोक सोच विलग्ग ॥ छं० ॥ १६३ ॥
[4]गड्यौ सुधन न्रप अप्प। बर उट्ठि राजन तप्प ॥
.... ॥ छं० ॥ १६४ ॥

राजा का कैमास को मार कर गाड़ देना और करनाटी का भाग जाना।

कवित्त ॥ रवन कंपि रव रवन। भवन भूपन धरि हरि परि ॥
आइय दंपति इष्षि। दिष्षि दाहिम उर उब्भरि ॥
चितें राज गति राज। कठिन मन्ने मन अंतरि ॥
पनि गड्यौ कैमास। पाच सम दासि [5]तपं उर ॥
चलि सु दासि बोलन्न जो। सो भग्गी मन मानि भय ॥
समपी सुरिद्धि पांवारि कर। फिर्‍यौ अप्प बन पिथ्थ [6]रय ॥
छं० ॥ १६५ ॥

(१) मो.-वढिय। (२) ए. कृ. को.-भूपन। (३) ए. कृ.-वसु।
(४) ए. कृ. को.-गडयो सु। (५) मो. मयं उर। (६) मो.-रथ।

पृथ्वीराज का अपने शिविर में लौट कर आना।

दूहा ॥ गयौ राज वन जहां सयन। जहं सामंतह सूर ॥
संभ्रम सर सति चंद सों। सब बद्दै सम्मूर ॥ छं० ॥ १६६ ॥

देवी का अन्तरध्यान होना।

गई मात कविचंद कहि। भइय प्रात अनुरत्त ॥
दुचित चित्त अनुप्रात भय। चिंति भट्ट प्रापत्त ॥ छं० ॥ १६७ ॥

प्रभात वर्णन।

कवित्त ॥ बजिग प्रात घरियार। देव दरबार नूर षुल्लि ॥
भ्रम्म सुक्रत अंकुरिय। पाप संकुरिय कुमुद मिलि ॥
सूर किरन विसतरन। मिलन उद्दिम सत पच्ची ॥
[1]कास घरी संकुटिय। उड़न पंषी मन मच्ची ॥
मिलि [2]चक्क सु चक्क चकोर धर। चंद किरन बर मंद हुअ ॥
विड्डुरिग वीर वीरं रहन। सूर [3]कंट मन कंद धुअ ॥ छं० ॥ १६८ ॥

पृथ्वीराज का रोजाना दरबार लगना और कविचन्द का आना।

*कवित्त ॥ अंतर महल नरिंद। महल मंडिय बुलाय भर ॥
तेज तुंग आहत्य। देषि अवधूत धूत नर ॥
विरद भट्ट विरद्दैत। नैंन वीरा रस पिष्पिय ॥
सो ओपम कविचंद। रूप हरनार सद्दिष्पिय ॥
सामंत सूर मंडलि रचिय। कं चित्तें कैमास जिय ॥
भावी विगत्ति जाने न को। कहा विधाता न्निम्मयिय ॥ छं० ॥ १६९ ॥

वार्त्ता ॥ [4]राजन महल आरंभे। नीकी ठौर बैठक प्रारंभे ॥
सूर सामंत बोले। दरीषानै दुलीचै षोलै ॥
छच चमर कार लीने। मूढ़ा गादी सामंतन को दीने ॥ छं० ॥ १७० ॥

---

(१) ए. कृ. को.-काम घटी संकुरी। (२) मो.-चक्क।
(३) ए. कृ. को.-सुर कंद मन कंद हुअ। (४) ए. कृ. को.-राज।

*अरिल्ल ॥ सद्धि पहर पुच्छैं प्रभु पंडिय। कहि कवि विज्जै साहि जिहि मंडिय॥
सकल सूर बेठवि सभ मंडिय। आसिष आनि दीय कवि चंदिय ॥
छं० ॥ १७१ ॥

दरबार का वर्णन।

भुजंगी ॥ ढरै कनक दंडं विराजैत रायं। नगं तेज जोत्यं झलक्कंत कायं ॥
ढरें चौंर सोहै लगै छत्र ढोरै। तहां चंद कब्बी उपम्मानि जोरै ॥
छं० ॥ १७२ ॥

ग्रहं एकठे मंडली अट्ठ षेलैं। लग्यौ राह निद्धंतियं अप्प भेलैं ॥
मिलो मंडली भ्रत्य [1]विच न्त्रप्प भारी। मनों पारसं पावसं साम धारी॥
छं ॥ १७३ ॥

भरं भार कारी करें [2]वित्त सेनं। कसे संकमानं धनुद्धार तेनं ॥
[3]विरद्दाप चंदं बरद्दाय सब्बी। दिषी जोति चौहान संजोति हब्बी ॥
छं० ॥ १७४ ॥

पृथ्वीराज की दीप्ति वर्णन।

दूहा ॥ मूढ़ा धरि गादी धरी। धुर सामंता राज ॥
देषि देव ग्रब्बं गरै। न्त्रप सिंघासन साज ॥ छं० ॥ १७५ ॥

रासा ॥ कनक दंड चामर छत्र विराजत राज पर ॥
रयन सिंघासन आसन सूर सामंत भर ॥
राजस तामस सत्त त्रयं गुन भिन्न पर ॥
मनहुं सभा मॅडि बंभ बिय छिन अप्प कर ॥ छं० ॥ १७६ ॥

उपस्थित सामंतों की विरदावली।

चोटक ॥ सभ हन्नन भट्ट कविंद क्रियं। सब राज दिसा रजपूत बियं ॥
भुज [4]दष्षिन लष्षिन कन्ह हुअं। रन भूमि बिराजत जानि धुअं ॥
छं० ॥ १७७ ॥

---

* छन्द १६९ और छन्द १७१ मो.-प्रति में नहीं है।

(१) मो.-विचित्र भारि। (२) ए. कृ. को.-चित्त, चिंत्त।

(३) मो.-बरदास। (४) ए. कृ. को.-'दच्छिन, लच्छिन।

जिन बीर महंमुद मान हन्यौ। अरि[1] अच्छ अछच पवार धन्यौ॥
हरसिंघ हसिंह सुवास [2]भुजं। उन मद्धि विराजत राज [3]दुजं॥
छं० ॥ १७८ ॥

नरनाह सनाह सुस्वामि हुअं। जब चालुक भीम मयंद भुअं॥
बर बिंझ विराजत राज दलं। जब चालुक चार नछिच हलं॥
छं० ॥ १७९ ॥

परमाल चंदेलति संष धरै। न्रप जाहि बकारत रौरि परै॥
बर वीर सु बाहरराय तनं। अचलेसर भट्टिय जासु रनं॥
छं० ॥ १८० ॥

कर वीर सिंघासन जासु चँपै। नर निद्दुर एक निसंक तपै॥
जिहि कुप्पत गज्जत देस कँपै। धर विग्रह जाहि जिहांन जपै॥
छं० ॥ १८१ ॥

* लरि लष्पन देषन दो ललियं। मुँह मारि मुरस्थल स्वस्थ हियं॥
सनमान सबै दिन चन्द लहै। '[4]पुठिय' जुध वत्त सु आह कहै॥
छं० ॥ १८२ ॥

रिसि पाइ के चावँड लोह जन्यौ। मदगंध गयंदन सों सु लन्यौ॥
गहिलौत गयंद सु राज [5]बरं। भुज ओट सु जंगल देस धरं॥
छं० ॥ १८३ ॥

तप तोंवर सोभि पहार सही। दल दिष्प सु [6]साह सिताब ग्रही॥
मुष मुच्छ सु अल्ह नरिंद मुषं। जुध मंडय साह सहाव रुषं॥
छं० ॥ १८४ ॥

बड़गुज्जर राम कनक्क बली। जिहि सज्जत पंगुर देस हली॥
कुवरंभ पजूनति राज वलं। जिन षग्ग सु जुग्गिनि जूह षलं॥
छं० ॥ १८५ ॥

---

(१) मो.-अनूअ। (२) ए. कृ. को.-भुअ। (३) ए. कृ. को.-दुज।
* यह पंक्ति केवल मो. प्रति में है। (४) ए. कृ. को.-पुच्छियं। "चावंड रिसाइ कै लोह जन्यौ" (५) मो.-वरी, धरी। (६) ए. कृ. को.-ताह।

नअगौर नरेस न्रसिंघ सही। जिन रिद्धि सलंतन माझ लही ॥
परमार सलष्पन लष्प गनै। इक पट्टिय कांगुर देस तनै ॥छं०॥१८६॥
दस [1]पुत्तति मानिकराइ तनै। कहि को [2]तिनही उतपत्ति [3]बनै ॥
जिन बंस जराजित बीर हुअं। सर संभरिजा उतपत्ति सुअं ॥छं०॥१८७॥

नवनिक्करि के नव मग्ग गए। नवदेस अपूरब मारि लए ॥
तिन पट्ट सु प्रथ्थिय राज तपै। कलहौ कलहौ निसि घोस जपै ॥
छं० ॥ १८८ ॥

कर सिंगिनि टंक पचीस गहै। गुन जंग जंजीरनि तीन रहै ॥
सर संधि समंतत तेज लहै। सबदं सर हेत अनंत बहै ॥छं०॥१८९॥
गुन तेज प्रताप जो व्हन्न कहै। दिन पंच प्रजंत न अंत लहै ॥
सम मंडप मंडित चित्त कियं। कवि अप्प सु अग्ग हकारि लियं ॥
छं० ॥ १९० ॥

गाथा ॥ *हक्कारिय चन्द कव्वी। देवी वरदाय वीर भट्टायं ॥
तिहु पुर परागद वानी। अग्गें आव राव आएसं ॥ छं० ॥१९१॥

पद्धरी ॥ वेमग्गराइ दारिद विभाड़। अचगल्ल राइ जाड़ा उपाड़ ॥
अनपुट्ठराय पुट्ठिय पलानि। मुह कंठराय तालू लगान ॥छं०॥१९२॥
असपत्ति राय उथ्थापि हथ्थ। अस कत्ति राय थापन समथ्थ ॥
महाराज राज सोमेस [4]पुत्त। दानवह रूप अवतार धुत्त ॥छं०॥१९३॥

कविचन्द का राजा के पास आसन पाना।

दूहा ॥ †आयस सुनि अग्गे [5]भयौ। दयौ मान कर अप्प ॥
[6]सहि न जास कविचंद पै। निकट न्रपत्ति सु तप्प ॥ छं० ॥१९४॥

कन्ह का कविचन्द से मानिक राय के पुत्रों की पूर्व कथा पूछना।

---

(१) मो.-पुत्रनि। (२) ए. कृ. को.-तिनकी। (३) ए. कृ. को.-गनै।

* यह गाथा मो.प्रति के सिवाय अन्य प्रतियों में नहीं है।

(४) मो.-पूर। (५) मो.-गयौ। (६) ए. कृ. को.-"सही न जाइ"

† इस छन्द के बाद का पाठ मो. प्रति में नही मिलता।

जराजित्त मानिक सुतन। कन्ह पुच्छि कविचंद॥
तिहि बंधव कारन कवन। काढ़ि दिए करि दंद॥ छं०॥ १९५॥

कवि का उत्तर कि "मानिक राय की रानी के गर्भ से एक अंडाकार अस्थि का निकलना"।

अरिल्ल॥ तक्षक पुर चालुक ग्रह पुत्तिय। मानिकराव परिनि गज गत्तिय॥
तिहि रानी पूरब क्रम गत्तिय। इंडज आकृति हड्ड प्रसूतिय॥
छं०॥ १९६॥

मानिक राय का उसे जंगल में फिकवा देना।

कवित्त॥ कह जानै कह होइ। अस्ति गोला रँभ अंदर॥
हुकुम कियौ मानिक्क। जाइ नंषौ गिरि कंदर॥
नह मन्यौ रागिनी। करे अपमान निकासिय॥
संभरि कै उपकंठ। रहिय चालुक पुरवासिय॥
सोवी विगत्ति मन सोचि कै। बहुत भंति घन जतन किय॥
दिन दिन अधिक्क बधतो निरषि। हरषि आस बढ्ढिय सु हिय॥
छं०॥ १९७॥

दूहा॥ सुरधर षंडह काल परि। लैव सही सँग भंड॥
आय कमधती कर रहिय। चालुक पुर गुढ़ मंड॥ छं०॥ १९८॥

मानिक राय का कमधुज्ज कुमारी के साथ व्याह करना।

कवित्त॥ सोलंकिन मन मोच। पठय परधान विचच्छन॥
दै असंष धन धान। लगन थप्पाइ ततच्छन॥
पानिग्रहन कर लियौ। कुअर हड्डा कमधज्जनि॥
दसह्ह दिसि उड़ि वत्त। सुने अचरज पति गज्जनि॥
आरंभ गोल करि फौज को। गोला रँभ उप्पर चलिय॥
नीसान डंक के वज्जते। नव सुलष्प साहन मिलिय॥
छं०॥ १९९॥

गजनी पति का मानिक राय पर आक्रमण करना।

भुजंगी॥ नवं लष्प सेना सजे गज्जनेसं। चल्यौ चढ़ि मग्गं अछिंदं दिनेसं॥
षलक्कंत अंदू गजं मद्द छक्के। कमठ्ठं दिगंपाल नागं कसक्के॥
छं० ॥ २०० ॥

प्रजारंत ग्रासानि धामं मिवासं। प्रजा कोक भज्जी उरं लग्गि चासं॥
दरं कूच कूचं धरा हिंदु लेनं। सुन्यौ संभरीनाथ आवंत सेनं॥
छं० ॥ २०१ ॥

करेचा परे ताम नीसानं घायं। सतं मुष्प क्रम्यौ सु मानिक्क जायं॥
पचीसं हजारं चमू चाहुआनं। मिली जाम मध्ये प्रथंमं मिलानं॥
छं० ॥ २०२ ॥

पुरं चालुकं जाय डेरा सु दीनं। भज्यौ रूस नो रागिनी गोठि कीनं॥
फिरे चढ़ियं देय नीसान बंबं। गरज्जे मनों सापरं सत्त अंबं॥
छं० ॥ २०३ ॥

उस अस्थिअंड का फूटना और उसमें से राजकुमार का उत्पन्न होना।

परज्जंद उठ्ठे अग्राजं सबद्दं। नचै बीरभद्रं जिसे वीर हद्दं॥
वज्यौ सिंधु औ राग सारं करारं। तवे हड्ड फट्यौ प्रगट्यौ कुमारं॥
छं० ॥ २०४ ॥

प्रचंडं भुजा दंड उत्तंग छत्ती। नरं नारसिंघं अवत्तार भत्ती॥
कवच्चं कसे उत्तमंगं सटोपं। धरा बाहरा अश्व आरूढ़ कोपं॥
छं० ॥ २०५ ॥

पहुंच्चे पिता अग्ग दौरे पहिल्लं। अरी फौज में जोर पारे दहल्लं॥
नषं तिघ्य धारा गरग्गं सु धारे। हिरंनंकुसं गोल रंभं विदारे॥
छं० ॥ २०६ ॥

इसे लोह वाहे छछोहे दुदीनं। मनो इंद्र वृत्तासुरं जुद्ध कीनं॥
वहे रत्त धारान के पाल नालं। परे भूमि झूमे भरं विकरालं॥
छं० ॥ २०७ ॥

परी पंषिनी जोगिनी बीर ईसं । नचै नारदं आदि पूरी जगीसं ॥
कहां लग्गि चंदं बरन्नै संग्रामं । भगी साह सेना तजे ग्रब्ब मामं ॥
छं० ॥ २०८ ॥

गजं बाज लूटे असंषित्त मालं । लियौ संग्रहे अस्सपत्ती भुआलं ॥
छं० ॥ २०९ ॥

उक्त राजकुमार का नाम कर्ण और उसका सम्भर का राजा होना ।

कवित्त ॥ गोला रंभ रिन गंजि । भंजि नवलष्य भुजा दंडि ॥
सतरि सहस मयमत्त । करे सिर दंड साह छंडि ॥
पुनि संभरि पुर आय । पूजि आसा वर माइय ॥
उद्ध पाल दिय नाम । विरद हाड़ा बुल्लाइय ॥
असुरान मेटि करि हिंदु हद । पिता राज लद्धिय तबै ॥
अस्तिपाल हुअ संभरि न्टपति । हड्ड मंड फट्टिय जबै ॥
छं० ॥ २१० ॥

संभर की भूमी की पूर्व्व कथा ।

पद्धरी ॥ संभरिह मझ्झ संभरादेव । मानिक्क राव तिन करत सेव ॥
सुप्रसन्न होइ इन दिन बरज्जि । मति लेय दंड करि सिर परज्जि ॥
छं० ॥ २११ ॥

चढ़ि पवंग पहुमि परि है जितक्क । अनषूट रजत ह्वै है तितक्क ॥
करि हुकुम मात संभरि पधारि । चहुआन ताम हय चढ़ि हकारि ॥
छं० ॥ २१२ ॥

द्वादसह कोस ऊतर क्रमंत । भवतव्य कोन मेटै निमंत ॥
मन आनि भ्रंति फिरि देषि पच्छ । ह्वै गयौ लवन गरि सर प्रतच्छ ॥
छं० ॥ २१३ ॥

उपजीय चित्त चिंता निरास । छंडिय सु देह चंदहु प्रकास ॥
अनचिंत म्टत्त हुअ कलह वढ्ढि । वड़ पुत्त जराजित वंध कढ्ढि ॥
छं० ॥ २१४ ॥

परजंन लाज गुरजन्न मुक्कि। गोहड्ड नंपि जल घाट रुक्कि॥
षंधार लार करि सिलह बंधि। उत्तारि आय निज देह रुंधि॥
छं० ॥ २१५ ॥

धर वेध षेध लग्गिय अनादि। रघु भरथ पंड कुरु जुद्ध वादि॥
लिय राज पाट हय गय भँडार। मेटै न चित्त उपिग्ग घार॥
छं० ॥ २१६ ॥

हो तौ सु जानि फिरि कदंब गोत। डेरा उपारि षिय रवि उदोत॥
अनि अन्नि साष थप्पित उतन्न। उगरीय जीय मानिक्क तन्न॥
छं० ॥ २१७ ॥

*इह कथा जाम कहि रहिय चंद। फिरि निकट वोलि लिय तव नरिंद॥
छं० ॥ २१८ ॥

अरिल्ल ॥ मध्य प्रहर पुच्छै न्टप पंडिय। कहि कवि विजै साह जिन मंडिय॥
सकल सूर बैठे विस मंडिय। आसिक तहां दीय कवि चंदिय॥
छं० ॥ २१९ ॥

कविचन्द का आशीर्वाद।

साटक ॥ केके देस नरेस सूर किद्रसं, आचार जोवा न्टपं।
किंकिं देन प्रमान मान सरसा, किंकिं कयं भष्पयं॥
किंकिं भेस कि भूप भूषन गुनं, का सो प्रमानं धरं।
[1]किंनारी नर मान किं नर वरं, जंपे कविंदं तुअं॥
छं० ॥ २२० ॥

कवित्त ॥ नरह नरेस विदेस। भेस जूजू रसया रस॥
कौ मंडे जस रस समूह। काल भ्रमया न केन वस॥
सवे पाइ संसार। किनै संसार न पायौ॥
मोहनि चित्त निहार। जगत सब बंध नचायौ॥

*छन्द १९३ से लेकर छन्द २८० तक की कथा क्षेपक मालूम होती।

(१) ए.कृ.को.-नारी।

नच्चै न मोह जग द्रोह जिम। मुगति भुगति करि ना नच्चै ॥
बसि परै पंच पंचो अग्गनि। मोह छांह सब को पच्चै ॥छं०॥ २२१ ॥

चौपाई ॥ [1]हुंकारि चंद देवि बरदाइय। भट्ट विरह तिहुंपुर ताइय ॥
उमा जिनै जुग जुगति जगाइय। सुगति भुगति अप संगह छाइय ॥
छं० ॥ २२२ ॥

राजोवाच।

दूहा ॥ सबै सूर सामंत [2]जुरि। बिना एक कैमास ॥
[3]तस जानौ बरदाइ पन। संचि जोग नन पास ॥ छं० ॥ २२३ ॥

अरिल्ल ॥ प्रथम सूर पुच्छै चहुआनय। है कयमास कहौ कहुं जानय ॥
तरनि छिपंत संझ सिर नायौ। प्रात देव हम महल न पायौ ॥
छं० ॥ २२४ ॥

राजा का कहना कि यदि तुम सच्चे बरदाई हो तो बतलाओ कैमास कहां है।

दूहा ॥ उदय अस्त तौ नयन दिठि। जल उज्जल ससि कास ॥
मोहि चंद है विजय मन। कहहि कहां कैमास ॥ छं० ॥ २२५ ॥
नन दिट्ठौ कैमास कबि। मो जिय इय [4]संदेह ॥
चामंडा बीरह सुमन। अप्पौ न्रप्प सु छेह ॥ छं० २२६ ॥
नाग पुरह नर सुर पुरह। कथत सुनत सब साज ॥
दाहिम्मौ दुल्लह भयौ। कहि न जाय प्रथिराज ॥ छं० ॥ २२७ ॥
का भुजंग का देव ससि। निकम कवित्त जु षंडि ॥
कै बताउ कैमास मुहि। हर सिद्धी बर छंडि ॥ छं० ॥ २२८ ॥

कवित्त ॥ जौ प्रसन्न बरदाय। देव संचौ बर अप्पौ ॥
कहि अदिष्ट कैमास। देवि बर छंडि न जप्पौ ॥
तीन लोक संचरै। सत्ति तिनकी बरदाई ॥
तूपन अप्पन छंडि। जोग पाषंडह पाई ॥

---

(१) ए. कृ. को- हक्कारि (२) ए. कृ. को- तुरि।
(३) ए. कृ. को- तम (४) ए. कृ. को- अंदेस।

मानहु सु बात अरु बेग बत। कहिग साच कविचंद तत ॥
मन बच्च क्रम्म कैमास धन। जौ दुरगा सच्ची सुभत ॥
छं० ॥ २२९ ॥

कवि का संकोच करना परंतु राजा का हठ करना।

दूहा ॥ जौ छंडे सेसह धरनि। हर छंडै विष कंद ॥
रवि छंडै तप ताप कर। बर छंडै कविचंद ॥ छं० ॥ २३० ॥
हठ लग्गौ चहुआन न्टप। अंगुलि मुष्प फुनिंद ॥
तिहुंपुर तुअ अति संचरैं। कहै बनै कविचंद ॥ छं० ॥ २३१ ॥
जौ पुच्छै कविचंद सों। तौ ढंकी न उघारि ॥
अब कित्ती उषर चंपौ। सिंचन जानि गमारि ॥ छं० ॥ २३२ ॥

चन्द के स्पष्ट वाक्य।

सेस सिरप्पर स्हर तन। जौ पुच्छै न्टप एस ॥
दुहुं बोलन मंडन मरन। कहौ तौ कव्वि कहेस। छं० ॥ २३३ ।
होता नत कविचंद सुनि। तूं साचौ बरदाइ ॥
कहि मंची कैमास सौ। क्यों मार्‍यौ अप धाइ ॥ छं० ॥ २३४ ॥

गाथा ॥ कहना न चंद [1]चित्तं। नर भर सम राज जोइयं नयनं ॥
आचिज्ज मूढ़ [2]वत्तं। प्रगट भवसि अवसि आरिष्टं ॥ छं० ॥ २३५

कवित्त ॥ एक बान पहुमी। नरेस कैमासह मुक्यौ ॥
उर उप्पर [3]थर हर्‍यौ। बीर कष्पं तर चुक्यौ ॥
बियौ बान संधान। हन्यौ सोमेसर नंदन ॥
गाढ़ौ करि निग्रह्यौ। षनिव गड्यौ संभरि धन ॥
थल छोरि न जाइ अभागरौ। गाड्यौ गुन गहि अग्गरौ ॥
इम जंपै चंद बरद्दिया। कहा निघट्टै इय [4]प्रलौ ॥ छं० ॥ २३६ ॥

---

(१) मो.- वित्तं। (२) ए. कृ. को.- मंत्तं, मंत।
(३) ए. कृ. को.-परहर्‍यौ। (४) मो.-प्रले।

राजा का संकुचित होना।

दूहा ॥ सुनि न्रपत्ति कवि के वयन। अनन बीय अवरेष ॥
कविय [1]वचन सम्हौ भयौ। स्त्रर कसोद्नि देष ॥ छं० ॥ २३७ ॥

गाथा ॥ झंझासि झार लग्गी। संझया वंदामि भट्ट बचनानि ॥
बुझझामि हास को इनं। षस दस उर मझझ रष्यियं राजं ॥
छं० ॥ २३८ ॥

सब सामंतों का चित्त संतप्त और व्याकुल होना।

कवित्त ॥ भट्ट वचन सुनि श्रवन। कन्ह धुनि सीस ग्रेह गय ॥
विसस परिग सामंत। सुनिय साचं जु तत्त भय ॥
कोन काज इह षेह। हुश्रौ मंची इह राजन ॥
लिसि अद्दी आपेट। कियौ किं कीरे भाजन ॥
किं भट्ट वीर जान्यौ सु रिन। कह सुझयौ संभरि धनी ॥
अंगुरी दंत चंपी सकल। अप अप ग्रेह उठि भनी ॥ छं० ॥ २३९ ॥

सब सामंतों का खिन्न मन होकर दरबार से उठ जाना।

वाघा ॥ सुनि सुनि श्रवन चंद चहुआनं। कलिमलि चित्त सुभट सब्बानं ॥
के अवलोइ सु सुष्पं चंदं। निरषे नयन के विभूत दंदं ॥छं०॥२४०॥
के भय मूढ़ ऊढ़ वर अप्पं। के भय चित विरस सु दप्पं ॥
समुझि न परे स्त्रर सामंतं। गंठन गुन नन आवै अंतं ॥
छं० ॥ २४१ ॥
निरषे द्रग सुष रत्त करूरं। असही तेज अजेज सनूरं ॥
निरषे अन्यौ अन्य सजरं। भय भय चित्त सुभट्ट सपूरं ॥
छं० ॥ २४२ ॥
गहके वहर गज्जि गुहीरं। भय न्त्रिघात तरित तन भीरं ॥
भय गंभीर सुहीर समीरं। उड्डे कर सर रेन सनीरं॥ छं० ॥ २४३ ॥
घट्टी सद्द पंच पल सेपं। दिन भद्रवै भयानक मेघं ॥

(१) मो.-पेचन।

दिसि नैरत्ति कि गहि गोमायं। दिसि धूमंत सिवा सुर तायं॥
छं० ॥ २४४ ॥

बही देवि चकोरन भासं। गज्जे छोनि ओनि आयासं॥
सन्नं सह आरिष्ट अपारं। उपज्यौ किन कारन कत्यारं॥
छं० ॥ २४५ ॥

भुव अवलोकि कन्ह नर नाहं। उट्ठे आसन हुंत अराहं॥
चले अप्प निज मग्ग सु ग्रेहं। फुनि गोयंदराज उठि तेहं॥
छं० ॥ २४६ ॥

[1]उनसन मन्न उट्ठि सामंतं। कलसलि विकल उकल सा चिंतं॥
कहै चंद बरदाइ सकोहं। [2]हनि कैमास दासि रिस दोहं॥
छं० ॥ २४७ ॥

सुनि सुनि वचन भट्ट न्नप कानं। अप्पअप्प गए ग्रेह परानं॥
जुग्गिनि पुर [3]जग्गत चहुआनं। भइ निसि चार जाम जुग मानं॥
छं० ॥ २४८ ॥

सब के चले जाने पर कविचन्द का भी राजा को धिक्कार कर घर जाना।

कवित्त॥ राजन सभ्भ [4]संपरिय। पट्ट दरबार परट्ठिय॥
बहुरे सब सामंत। मंत भग्गिय सिर लट्ठिय॥
रह्यौ चंद बरदाइ। विभुष पग डगन सरक्क्यौ॥
ग्रभ्भ तेज वर भट्ट। रोस जल पिन पिन सुक्क्यौ॥
रत्तरी कंत जागंत रै। भई घरंघर बत्तरी॥
दाहिम्म दोस लग्यौ षरौ। मिटै न कलि सों उत्तरीं॥छं०॥२४९॥

चौपाई॥ इह कहि ग्रेह चंद संपन्नौ। वर कैमास आसु भलपन्नौ॥
मित्रद्रोह भट उर सपन्नौ। दाहिम वरन वरन संपन्नौ॥
छं० ॥ २५० ॥

---

(१) मो.-"उने मत मन्न उठे सामंत। (२) ए. कृ. को.-हाति।
(३) मो.-जग्गे। (४) ए. कृ. को.-संभारिय।

पृथ्वीराज का शोकग्रस्त होकर शयनागार में चला जाना और नगर में चरचा फैलने पर सब का शोकग्रस्त होना।

पद्धरी॥ निज रहन अंग साला सु एक। आवास रंग रचन विवेक॥
अंदर महल्ल अंतर अवास। अति [1]रचन चित्र आसासि तास॥
छं०॥ २५१॥

पर्यंक उभय आभासि भासि। [2]अति ऊक गंध रसु रस्स वासि॥
आरोहि अप्प सोहै सु राज। बिन तरुनि करुन सुष छादि राज॥
छं०॥ २५२॥

दर रष्षि बोल आयस दीन। रुक्यौ सु अप्प पर बज्ज चिन्ह॥
किय सयन पेस न्रप जंपि अप्प। रष्यौ सु थान निज दप्प रप्प॥
छं०॥ २५३॥

बैठो सु पिट्ठ [3]पट स्वर घट्ट। रष्षे सु जक्खि सब थान थट्ट॥
भय चकित चित्त अंदर बहाज। भयभीत मंन मन्ने अकाज॥
छं०॥ २५४॥

इह कत्य चित्त नयरी निवास। सब लोक दोष उद्दार रास॥
रूंधे सु हट्ट पट्टन सु बान। बिन रूप दिल्लि दिट्ठिय डरान॥
छं०॥ २५५॥

सब पत्त स्वर सामंत ग्रेह। कत्या सु कत्य मन्नेव एह॥
इह कम्यौ दुप्प विते चिजास। भयभीति लिसा मन्नी [4]सहास॥
छं०॥ २५६॥

भइ [5]पिनद जास चव जुग समाल। सब लोक दुष्प वित्ती डरान॥
कैमास ग्रेह चिंत्यौ सु दोस। गज्यौ सु दासि षूलह सरोस॥ छं०॥ २५७॥
चंदेन चिंति निज नाह सत्त। चढ़ि चलिय ग्रेह बरदाइ जत्त॥
छं०॥ २५८॥

---

(१) ए. कृ. को-चरन। (२) ए. कृ. को.-"अति ऊक गंध रव सुर सवास"।
(३) ए. कृ. को.-पट्ट। (४) ए. कृ. को.-महाभ। (५) ए. कृ. को. पिमद।

उग्गियं भान पायाल पूर । वज्जियं देव [1]दर संष तूर ॥
*कलत्र कैमास चढ़ि वरन साल । बरदाइ देवि वर संगि बाल ॥
छं० ॥ २५९ ॥

कवि का मरने को उद्यत होना।

चंद्रायन ॥ चलै चीय वर मंगन भट्ट सु भट्ट वर ।
अप्पावै कैमास मिले जाइ अंग वर ॥
न्टर छुट्टी कवि हित्त घरी पल वरनि वर ।
तौ जन जन सह चिंत सत्ति तुअ देव वर ॥ छं० ॥ २६० ॥

रोला ॥ चंद बद्दनि ये चंद सीष कोमंगि उचारी ।
मरन टरे जो भट्ट राज कैमास विचारी ॥
हम तुम दुहुन मिलंत सुनी अंगन तुम धारी ।
दंपति सम्हौ बचन तब्ब वर बरनि उचारी ॥ छं० ॥ २६१ ॥

गाथा ॥ बाला न अच्छि लग्गी । हुं बरदाइ कढ्ढिया अग्गी ॥
तंबाल विरस लग्गी । लच्छिन पुरसान रष्पिया सग्गे ॥ छं० ॥ २६२ ॥
आदर दीन सु कब्बी । आसन आछादि रोहि तिय तथ्यं ॥
निज प्रारथना राजं । गोमभक्ष्के ग्रेह साजनं साजः ॥ छं० ॥ २६३ ॥

कविचंद की स्त्री का समझाना।

चौपाई ॥ तब ग्रेहनि बरदाइ सु आइय । अंचल गंठि विलग्गिय धाइय ॥
को [2]अति जात अप्प जम आनै । अनि सिर न्रत्य अप्प सिर तानै ॥
छं० ॥ २६४ ॥

जिन कैमास रिद्धि रज रष्पी । जिन कैमास मंच सिर सष्पी ॥
जिन कैमास देस नव आने । सो कैमास हत्यौ निज बाने ॥ छं० ॥ २६५ ॥

---

(१) मो-दरवार नूर ।

* इस छन्द को चारों प्रतियों भुजंगी नाम से सम्बोधन किया गया है । मूल पाठ भी "उगियं भान पायान पूरं, वज्जिय देव दर संख तूर । कलत्र कैमास चढ़ वरन साला । देवी बरदाय नार मंगवाला।" यह है परन्तु यह भुजंगी नहीं है । भुजंगी छन्द में चार यगण होना है। मालूम होता है लेख की भूल से कुछ हेर फेर होगया है अस्तु हमने इस छन्द को पूर्व्वोक्त पद्धरी में मिला कर पाठान्तर दे दिए हैं ।

(२) ए. कृ. को.-अनि ।

तू भूल्यौ बरदाय विचारं। अच्छिर सुद्धिसुद्ध मन द्वारं॥
जे जमग्रेह न अप्प ढुंढाने। सो जग्गवै काय विनसाने॥
छं० ॥ २६६ ॥

कवित्त ॥ जा जीवन कारनह। भस्म पालहि म्रत टारहि॥
जा जीवन कारनह। अथ्थि दै चित्त उबारहि॥
जा जीवन कारनह। द्रुग्ग हय देसति [1]अप्पहि॥
जा जीवन कारनह। होम करि नव ग्रह जप्पहि॥
जा जीवन सांई सुपन। न्रपति बहुत जाचिय अभौ॥
सुक्के सु सरोवर हंस गौ। कलि बुझ्झै अधियार [2]भौ॥छं०॥२६७॥
जो मनुच्छ धर भस्स। मरम जानै न मरम जप॥
सास आस बंधयौ। आस आसना करै अप॥
जग्ग जोग तप दान। सास बंधन जग्गो जुअ॥
मोर वीर अलुकार। सास नन असन बंध धुअ॥
छिन देह भंग विज्जल छटा। सजय विजय [3]बंधय सु जिय॥
गुर गल्ह रहै भल पत सुचौ। दुष्प न करो महंत पिय॥छं०॥२६८॥
मात गरभ वस करी। जम्म वासुर बस लभ्भय॥
षिनन नग्गि षिरदाय। सुदय षिन हंस अलुभ्भय॥
वपु विसष्प बढ्ढ्यौ। अंत रुढ्ढह डर डरयौ॥
कच तुच दंत जरार। धार किम किम उच्चरयौ॥
मन भंग मग्ग मुक्कत सयल। निषत निमेषन चुक्कयौ॥
पर कज्ज अज्ज मंगौ न्रपति। सकै न [4]प्रान षमुक्कयौ॥छं०॥२६९॥
दूहा ॥ समरि जाय कविचंद बर। बर लद्धौ हुंकार॥
राज दरह सम्हौ चलै। मरन सुमंगल भार॥ छं० ॥ २७० ॥

स्त्री के समझाने पर कवि का दरवार में जाना और राजा से कैमास की लाश मांगना।

---

(१) मो.-अप्पह।　　(२) मो. सौ।
(३) मो.-वंधिय।　　(४) ए. कृ. को.-"प्रान पमुक्कयौ।

कवित्त ॥ रष्षि सरनि सह गवनि । मरन संगल्ल अपुब्ब किय ॥
दरनि पिष्षि दरबार । रुक्कि सक्यौ न मग्ग दिय ॥
जग्गि जलनि प्रथिराज । नैंन नैनं जब दिष्यौ ॥
अति करना रस बीर । करी संकर रस लिष्यौ ॥
बुल्ल्यौ न बेन तब दीन हुअ । कनक काम कवि अच्छयौ ॥
तुम देव कित्ति कुहलिय कमल । धरनि धरनि तन मुक्कयौ ॥
छं० ॥ २७१ ॥

दूहा ॥ रहि सु भट्ट अंतर करन । कविन अम्म धर भूर ॥
इह अधम्म लग्गहि उरह । कम्म उरक्कहि ऊर ॥ छं० ॥ २७२ ॥

गाथा ॥ बाला न संगि बरयौ । काउ वासंत भट्ट [१]सियाइं ॥
ना तुअ गति संभरवै । संभरि वै राय राएसं ॥ छं० ॥ २७३ ॥

पृथ्वीराज का नाहीं करना ।

दूहा ॥ पढ़िय कित्ति बुल्लिय बयन । दिल्ली पुरह नरिंद ॥
दाहिम्मौ दाहर जहर । को कट्टै कविचंद ॥ छं० ॥ २७४ ॥

कवि का पुनः राजा को समझाना ।

कवित्त ॥ रावन किन गड्डयौ । क्रोध रघुराय बान दिय ॥
बालि सु कित गड्डयौ । जीय सुग्रीव जीय लिय ॥
चंद किन्न गड्डयौ । कियौ [२]गुरवारस हिल्लह ॥
[३]रविन पंग गड्डयौ । पुच्छि सहदेव पहिल्लह ॥
गड्डयौ न इंद्र गोतम रिषह । सिव सराप छंडन जनी ॥
इन दोस रोस प्रथिराज सुनि । मति गड्डय संभरि धनी ॥
छं० ॥ २७५ ॥

ना राजन कुर नंद । [४]नाक वत्ती [५]क्रन कट्टी ॥
अधम्म बीर विक्कम्म । सक्क बंधी कल [६]मिट्टी ॥
पंजर सद्द सु रारि । दिष्षि गंध्रव न्रप भंजों ॥

(१) ए. कृ. को.-सिरयांई, सिरपांई । (२) कृ.-गुरवास हिल्लह ।
(३) ए.-रवनि ।
(४) ए. कृ. को.-नाक त्रित्ती । (५) मो -कट्ठी । (६) मो.-कट्ठी

तमकि तास अगि मारि। क्किति पुत्त मुक्किय अज्जों ॥
सो सत्ति बात आतम पुरिसि। तामस इह आपुन मिटै ॥
किं जान लोय किं किं [1]जपह। क्किति तोय बहु न्नप नटै ॥
छं० ॥ २७६ ॥

कवि का कैमास की कीर्ति वर्णन करना।

मति कैमास मति सेर। दोस दासी न हनिज्जै ॥
मति कैमास मति सेर। सामि दो हौ न गनिज्जै ॥
मति कैमास मति सेर। दंड कुब्बेर भरिज्जै ॥
मति कैमास मति सेर। दाग बिन धरनि धरिज्जै ॥
बहि गई सरक नगौर की। संच जोर सेवर कहर ॥
चहुआन राव चिंतारि चित। गड्यौ कढ्ढि दै करि न हर ॥
छं० ॥ २७७

दूहा ॥ दासि संग कैमास कढि। जग दिष्षवै नरिंद ॥
बरै बरनि अंगन षरी। बर मंगै कविचंद ॥ छं० ॥ २७८ ॥

कैमास की लाश उसके परिवार को देना।

कवित्त ॥ रीस मेल्ही दासी सु। राज लिन्नौ अध लिष्यौ ॥
सो नट्ठी तिन बेर। कढ्ढि कैमासह दिष्यौ ॥
कविय हथ्थ अप्पयौ। अप्प बरनी बर लिन्नौ ॥
पुत्त बीर दाहिम्म। हथ्थ कविचंद सु दिन्नौ ॥
तिहि तरुनि मिलत तारुनि करिनि। पेम पंसि विधि विधि करै ॥
कविचंद छंद इम उच्चरै। भावी गति को उब्बरै ॥ छं० ॥ २७९ ॥

राजा का कैमास के पुत्र को हाँसीपुर का पट्टा देना।

कविय पुत्त कैमास। राज हांसीपुर दिन्नौ ॥
पुब्ब धनं पन अप्पि। गोद नरसिंह [3]सु किन्नौ ॥
तिहि सु दिनह प्रथिराज। बीर दुरबार सजोइय ॥
बरनि बज्जि नीसान। रोस छिम सात्वक होइय ॥

(१) ए. कृ को. जयियं। (२) मो.-कैवास। (३) ए. कृ. को.-सु दिन्नौ।

सुरतान गहन मोषन न्रपति। पंग बीय पातुर दरसि॥
दिषि बीय सभा मन पंग कौ। छवि संमुह वरि वरि बिरसि॥
छं० ॥ २८० ॥

दूहा ॥ प्राहारी कैमास न्रप। सो अप्पे विह सत्त॥
न्रप पुच्छत कविचंद कौं। अरु गुर राज सहित्त ॥छं०॥२८१॥

पृथ्वीराज का गुरुराम और कविचन्द से पूछना कि किस पाप का कैसे प्रायश्चित्त होता है।

तुम गुर न्रप अरु गुर कवी। तुम जानौ वहु काम॥
किहि परि गह लंछन लगै। [1]को मेटै लगि साम॥ छं० ॥ २८२ ॥

कविचन्द का उत्तर देना। (सामयिक नीति और राज नीति वर्णन)

पद्धरी ॥ उच्चरै चंद गुर राज साज। कल कहै बत्त सो नीत राज॥
संभरहु सूर सोमेस पुत्त। कल धूत धूत [2]जग धूत धुत्त॥
छं० ॥ २८३ ॥

सम वर प्रधान सम तेज राज। सम दान मान सामत्ति साज॥
पलटै कि राज लछन्न लीन। बहु भंति कुलह विग्गरै तीन॥
छं० ॥ २८४ ॥

विग्गरै सूत्र हंकार मभ्भ। वर जाय अप्प रस भ्रम्म रज्ज॥
विग्गरै राज राजन अन्याइ। विग्गरै ग्रेहे चीया अछाय॥
छं० ॥ २८५ ॥

उद्दिम सु हीन न्रप राज राइ। तिन चंद चंद प्रातह दिषाइ॥
विग्गरै इष्टपन कट्ट नेह। विग्गरै सोय निज लोभ ग्रेह॥
छं० ॥ २८६ ॥

विग्गरै मोह भर समर साज। विग्गरै लच्छि बौहरे लाज॥
प्रसट्ठै अध्रम्म विगरै ध्रम्म। संभरि सु राज राजन सु भ्रम्म॥
छं० ॥ २८७ ॥

(१) मो.-"कै मैटन लगी काम"। (२) ए. कृ. को.-गज।

साधम्म सेव गरुअत्त जीव। चिय राज नीति राजह न सीव ॥
बिग्गरै पुन्य धीरह सु हूव। मादक्क ग्रेह बहु दुष्ट हुव ॥
छं० ॥ २८८ ॥

विग्गरै राज परदार [1]पान। लोसिष्ट चित्त चंचल प्रमान ॥
विग्गरै राज सुय बाल हूर। संचरै बहुत सषि अक्क्ष दूर ॥
छं० ॥ २८९ ॥

विग्गरै दुज्ज ग्रह अंत दान। विग्गरै तप्प क्रोधह प्रमान ॥
विग्गरै राज राजन सु जानि। जो सुनै बत्त दुष्टं सु बानि ॥ छं० ॥ २९० ॥

परनारि [2]चित्त आचरन होइ। विग्गरै राज निज संच सोइ ॥
तन सहै राज चिंतन प्रमान। पुच्छहि सु बोल कनवज्ज जान ॥
छं० ॥ २९१ ॥

पुच्छि संच राय संभरि नरेस। तत अहै राज नीतह सुदेस ॥
उच्चऱ्यौ राव जंबू नरेस। संभरिय राज संभरि नरेस ॥ छं० ॥ २९२ ॥

[3]तव वंस भाव जरतित्त मान। संभरी हुत जयत्ति थान ॥
तिहि सेन राजनीतह सु राज। सो नीत राज जित [4]सुरग राज ॥
छं० ॥ २९३ ॥

रिसराज जोर तिन तह प्रमान। बंधयौ सकल तिन राज [5]थान ॥
कसि असक ओर कसि द्रव्य दंड। दिज्जियै ओर जोगिंद डंड ॥
छं० ॥ २९४ ॥

भंजियै बंक कै बंक साल। भजि कठिन कंक कौ कठिन बाल ॥
वल पुच [6]माय सम सुमति जाइ। आनयौ पुच्च सम रहिस धाय ॥
छं० ॥ २९५ ॥

[7]पंडिय सु दोस दुज दान प्रीय। न्त्रप हुरै झूठ कित्ती सु [8]दीय ॥
न्त्रप नीति अस्स समकाल लोय। बंकै कटाछ्य बंके न कोय ॥
छं० ॥ २९६ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-थान। (२) ए. कृ. को.-नित्त। (३) ए. कृ. को.-तम।
(४) ए. कृ. को.-सुग्गि। (५) ए. कृ. को.-थान। (६) ए. कृ. को.-न्याय।
(७) ए. कृ. को.-तीही। दुज दान प्रीति"। (८) ए. कृ. को.-दीत।

संसार नीति किय तत्त पंथ। बिस्भूत नीति सुनि नीति ग्रंथ॥
सह अस्त पुच्छ तत्तं प्रमान। नित साम पास ब्रह्मा सु ध्यान॥
छं० ॥ २९७ ॥

रषिये सु अत्थ रष्पन सु लच्छि। फिरि होत ताहि हित तत्त अच्छि॥
न्त्रिप भजै नीति उमराव होति। न्त्रिप [1]रहै नीति जो हैत प्रीति॥
छं० ॥ २९८ ॥

न्रिप जानि बीर भौ ताहि भेद। दुह भरनि बीर ज्यों पुबह बेद॥
न्रिप भेटि करै समता सरीर। बुझ्झवै अगनि जिम बरसि नीर॥
छं० ॥ २९९ ॥

भोग वै राज परिगह संजुत्त। अति प्रान करै सा अस्त पुत्त॥
रिषियै सु अत्थ इन भांति मान। ते सामि काम असरित्त जान॥
छं० ॥ ३०० ॥

सा अस्त लहै सो मित्त सेव। जानै न सामि उत्तर न देव॥
न्रिप पास बत्त इह भंति जानि। कवि बदि लज्जि गंभीर बानि॥
छं० ॥ ३०१ ॥

न्रिप सुनी बत्त परि कहि न जाइ। ज्यों जल तरंग जल में समाइ॥
हय गय सु मांहि धुअ परी सूअ। सम्माइ जेम जल छांह [2]॥
छं ॥ ३०२ ॥

समसाल अग्गि निधि न्त्रपति जीय। न्त्रप चित्त अंग कीटी [2]सु लीय॥
रष्यो सु अंब जो न्रिपत रूप। वय ससी चित्त लज्जी सरूप॥
छं० ॥ ३०३ ॥

जन हथ्थ आन पंछी सु रंग। तामंस लोह जनि [3]मनित पंग॥
सुरतान चित्त जब होय लोय। उन चित सदा कलपंत होइ॥
छं० ॥ ३०४ ॥

सा अस्त बिना परि गहल काच। रूपं न रत्त दरबार साच॥

---

(१) ए. दहै। (२) मो.-नीय।
(३) ए. कृ. को. मन पतंग। (२) ए. कृ. को.-गज।

दुज सफर अस्म [1]नाही सनाल । संसार रतन नृप परप दान ॥
छं० ॥ ३०५ ॥

दूहा ॥ इह संची नृप काज अरु । सब परिगह इन भीत ॥
राजनीति राजन रहै । जस धन ग्रहन न जीत ॥ छं० ॥ ३०६ ॥

राजा का कहना कि मुझे जैचन्द के दरबार में ले चलो ।

दोय कंठ लग्गिय अगनि । नयन जलग्गि ललान ॥
अंब जीव वंछै अधिक । कहि कवि कोन सयान ॥ छं० ॥ ३०७ ॥
तौ अप्पों कैमास तो । जो मेटै उर अंदेस ॥
दिष्षा वहि पहु पंगुरौ । जै जैचंद नरेस ॥ छं० ॥ ३०८ ॥

कवि का कहना कि यह क्यों कर हो सकता है ।

पिलक न मन धीरज धरहि । अरि दिष्षत तिन काल ॥
अति वर वर बुझै नहीं । सुकिम [2]चलहि भूपाल ॥ छं० ॥ ३०९ ॥

पृथ्वीराज का कहना कि हम तुम्हारे सेवक बन कर चलेंगे ।

अरिल्ल ॥ चलों भट्ट सेवक होइ सथ्थह । जौ बोलूं तो हथ तुम मथ्थह ॥
जबह जालि संमुह हूअ । तब संम्भरु अंग करों दोउ भूअ ॥
छं० ॥ ३१० ॥

कवि का कहना कि हां तब अवश्य हमारे साथ जाओगे ।

अरिल्ल ॥ अब उपाय समभयौ इह संचौ । सुनि कवि मरन मिटै नह रंचौ ॥
समर तिथ्थ गंगाजल पंचौ । अवसर अवसि पंग ग्रह नंचौ ॥
छं० ॥ ३११ ॥

राजा का प्रण करना ।

दूहा ॥ आनंद्यौ कवि के वयन । न्रप किय संच विचार ॥

(१) ए. कृ. को.-नीही । (२) मो. चल्हु ।

सरन राहत्र सिर छत्त्र है। जियन छत्त्र सिर भार ॥छं०॥३१२॥

*घात्तायन ॥ अप्पौ पहु कैमास सती सत्त संचर्‌यौ।
सरन लगन विधि हथ्थ तत्थ कवि उच्चर्‌यौ ॥
धर भर पंग प्रगट्ट रुठट्ट विहंडिहौं।
इन उपहास विलास न प्रानय पंडिहौं ॥ छं० ॥ ३१३ ॥

कैमास की स्त्री का उसका मृतकर्म करना, राज महलों की शुद्धता होनी, सब सामंतों का दरबार होना।

पद्धरी ॥ अप्पौ सु कविय कैमास राज। बरदाय कित्ति मन्यो सु काज ॥
दीनौ सु हथ्थ सह गमनि तथ्थ। लै चली वाहि [१]क्रत न्नि सथ्थ ॥
छं० ॥ ३१४ ॥

बोलयौ सुतन कैमास हंस। दुअ तिय वरष्य अति रूअ रंस ॥
दीनौ जु तथ्थ सिर राज हथ्थ। यप्पौ सु थान परि तुय परथ्थ ॥
छं० ॥ ३१५ ॥

दुअ घटिय पंच पल आदि जाम। किनौ सु महल चहुआन ताम ॥
बोले सु सब्ब सामंत सूर। आदर अदब्ब दिय अत्ति जर ॥
छं० ॥ ३१६ ॥

कयमास घात अपराध दासि। सब कही सुभट सुभ्भा सु भासि ॥
अप्पान क्षत्य मन्यो सु अप्प। जानहु सु रीति राजंग दप्प ॥
छं० ॥ ३१७ ॥

इम कहिय कन्ह नरनाह बोलि। अप्पी सु तेग हमकों सु षोलि ॥
किय सुमन सूर सामंत सव्व। घुअ ग्रेह ग्रेह आनंद तब्ब ॥
छं० ॥ ३१८ ॥

सब नैर वासि आनंद मन्नि। षोले किपाट न्नप जुगति गन्नि ॥
उठ्यौ सु महल सव सुचित कीन। पारनें काज द्वादसी दीन ॥
छं० ॥ ३१९ ॥

*इस छन्द को चारों प्रतियों में मुश्किल करके लिखा है। (१) मो.-क्रम।

कैमास के कारण सबका चित्त दुखी होना।

बहुरेब सूर सामंत ग्रेह। कयमास दोस मन्यो सु देह॥
कीने सुभट्ट सब सुचिंत राज। उर मन्यौ अप्प आनंद काज॥
छं० ॥ ३२० ॥

पालहि सु नीति विधि कित्ति अंग। बिन सच्च रच्च दाहिम्म रंग॥
भंगीर धीर मति बीर अत्ति। [1]सुभ्झै सुमन्न अंतर उरत्ति॥
छं० ॥ ३२१ ॥

राजा का कैमास के पुत्र को कैमास का पद देना।

दूहा॥ उरसल्लौ कैमास नृप। पुत्र परठ्ठिय पट्ट॥
चित चंचल अच्चल करिय। दिय हय गय बर थट्ट॥
छं० ॥ ३२२ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके चावंडराय बेरी भरन कन्नाटी दासी षून कैमास बधनो नाम सत्तावनवों प्रस्ताव संपूरणम्॥ ५७॥

(१) मो.-सुझै।

अथ दुर्गा केदार सम्यौ लिष्यते ।

(अट्ठावनवां समय ।)

पृथ्वीराज का कैमास की मृत्यु से अत्यंत शोकाकुल होना ।

दूहा ॥ नह सच सुष्प गवष्प ग्रह । नह सच अंदर राज ॥
उर अंतर कैमास दुष । सामंता सिरताज ॥ छं० ॥ १ ॥

कवित्त ॥ न्रप क्रीड़त चौगान । सथ्थ सामंत सूर भर ॥
जब रासति रसरंग । तब्ब संभरै संचि बर ॥
जब क्रीड़त जल केलि । चित्त कैमास उहासै ॥
बारावन्नि बिहार । तथ्थ दाड़िम बर भासै ॥
जब जब सु गान कौतिग कला । पुहप सुगंधह [1]बास रस ॥
जब जबह अवर सुष संभवै । तब उर सल्लै सहिय तस ॥ छं० ॥ २ ॥

दूहा ॥ अति उर सालै संचि दुष । करै न प्रगट समुझ्झ ॥
मानो कूआ छांह ज्यौं । रहत रात दिन मझ्झ ॥ छं० ॥ ३ ॥

सामंतों का गोष्ठी करके राजा के शोक निवारण का उपाय विचारना ।

कवित्त ॥ तव सु कन्ह चहुआन । राव जैतह सम बुझ्झिय ॥
षीची राव प्रसंग । जाम जद्दव घन सुझ्झिय ॥
चंद्र सेन पुंडीर । राव गोयंद राज बर ॥
लोहानौ आजान । राम रामह बड़गुज्जर ॥
पुछ्यौ सु मंच सब मंच मिलि । राज दुष्प कैमास मिति ॥
नन कहै [2]कवन सो मन वचन । मिटै सोइ मंडौ सुमति ॥
छं० ॥ ४ ॥

सामंतों का राजा को शिकार खेलने लिवा जाना ।

---

(१) ए. कृ. को.-बीस । (२) ए. कृ. को.-वचन ।

कही जाम जद्दो जुवान। सुनि कन्ह नाह नर ॥
चंद्र सेन पुंडीर। राय गोयंद राज बर ॥
आषेटक प्रथिराज। सह अंतर गति आदै ॥
दै समद्धि संक्रमौ। करौ इन बुद्धि सवादै ॥
मन्नी सु सब्ब सामंत मिलि। थपि सामंतन सत्ति करि ॥
बरनी सु जाम जद्दव न्टपति। तबहि राज म्रगया सुभरि ॥छं०॥५॥

सज्जि सब्ब सामंत। चल्यौ चहुआन पान भर ॥
अटल अवनि आभंग। सज्जि सक कन्ह नाह नर ॥
गरुअ राव गोयंद। अतत्ताईय ईस बर ॥
चढ़िय निडर रट्ठौर। सलष लष्पन बघेल झर ॥
सामंत सूर मिलि इक्क हुअ। चले सथ्थ राजन ररिय ॥
औछंग अंग सन्नाह लै। इम सु राज म्रगया करिय ॥ छं० ॥ ६ ॥

प्रनित सब्ब सामंत। चल्यौ चहुआन अनब्बर ॥
सथ्थ सूर सामंत। विरद अन्नेक बहत सिर ॥
सथ्थ लीन सन्नाह। अवर परकार साथ सजि ॥
बानगीर हय नारि। धारि दिढ़ मुट्ठि [1]हथ्थ रजि ॥
घन लीन सज्जि सथ्थें [2]सयन। करि टामंक सु कूचकिय ॥
क्रीड़न सु राज म्रगया चल्यौ। सब आषेटक साजलिय ॥छं०॥७॥

पृथ्वीराज के शिकारी साज सामान का वर्णन।

पद्धरी ॥ आषेट चल्यौ प्रथिराज राज। सथ लिये सूर सामंत साज ॥
रस अग्ग सून्य सौ तुंग एक। सथ लिये तुंग सो भपन तेक॥
छं० ॥ ८ ॥

पंच सै मद्धि नाहर पछारि। जीव लैं जाव वच्छंतिवार ॥
इक सहस बधन वादाह तेज। जुटि पटकि भुम्मि कढ्ढत करेज ॥
छं० ॥ ९ ॥

(१) मो.-रध्थ। (२) ए. कृ.- को.-सथन।

सारद्ध सहस बल गनै कौन। धावंत भेंसि सुल्लाइ पौन॥
छल छेद भेद जीवल लषंति। जुट्टंति अंत पसु पल भषंति॥
छं० ॥ १० ॥
पय तरह रत्त सुष अग्र नास। रत्ती सु रसन कोमल सु भास॥
नष बीह अग्र कै बीय चार। चोंरार पुंछ तिष्षे सु तार ॥छं०॥११॥
कर पदह थोर जङ्घ सजोर। नष तिष्ष विद्ध गिरि वज्र रोर॥
कटि कसल थूल नित्तंब जानि। उर थूल लंक केहरि समान॥
छं० ॥ १२ ॥
गररत्त गरुत्र विसाल भाल। तिष्षे सु दसन दंपति कराल॥
कप्पोल सरल बल प्रथुल रुच्च। सोभंत गात बैताल रुच्च॥
छं० ॥ १३ ॥
बिन अंग रोम के प्रथुल रोम। अन्नेक जाति दिसि विदिसि भोम॥
द्रिग अनत तेज जोतिष्ष जास। जघनं सु गत्ति क्षगराज ग्रास॥
छं० ॥ १४ ॥
जर हेस पट्ट के डोरि पट्ट। सेवक्क एक प्रति उभय घट्ट॥
धावंत धरनि आजानवाह। बर बेग पवन मन लच्छि गाह॥
छं० ॥ १५ ॥
नर जान रोह के अस्व जान। आरुढ़ सकट के वृषभ थान॥
तुंगह सु पंच तोमर पहार। अन्नेक देस साजोति सार॥
छं० ॥ १६ ॥
सत तुंग भषन लंगीस राव। तुंगह सु पंच जामानि ताव॥
पम्मार जैत चव तुंग सथ्थ। द्वै तुंग भषन लोहान तथ्थ॥
छं० ॥ १७ ॥
चय तुंग चंद पुंडीर धीर। द्वै तुंग राम गुज्जर 'गहीर॥
बलिभद्र एक सारद्ध तुंग। परसंग राव द्वै तुंग जंग॥ छं० ॥ १८ ॥
द्वै तुंग सहन परिहार सार। चय तुंग बरुन बंधव सहार॥
षेलंत सब्ब प्रथिराज संग। गिरवर विहार थल बट्टि रंग॥
छं० ॥ १९ ॥

(१) ए. कृ. को.-महीर।

सारङ्ग हून सें चित्त साज। वर साज बहल के भास भाज॥
हय रोय कीय आरोहि पिट्ठ। सौ गोस केस जन्नाव यट्ठ॥
छं० ॥ २० ॥

फंदैत कुरँग सें हून सार। जर हेम [1]पट्ट डोरी मपार॥
जुर बाज कुही तुर मतिय जुत्त। को गनै अवर पंषी अभुत्त॥
छं० ॥ २१ ॥

[2]षेदा सु सहस सारङ्ग एक। तरिया सु सहस चौ जूवि मेक॥
सें पंच सूल धारी अभूल। द्रिग दिट्ठ अंत आनै समूल॥ छं० ॥ २२ ॥
आवै सु मध्य पावै न जानि। क्रीड़ंन राज सम विषम थान॥
.... । ... . ॥ छं० ॥ २३ ॥

शहाबुद्दीन का दिल्ली की ओर दूत भेजना।

कवित्त ॥ मन चिंतै सुरतान। मान संभरिपति भंजिय॥
पानी पन्न प्रवास। [illegible] तिन दुष तज्जिय॥
तिन सु बैर उर [illegible] विरद। [illegible] ष्षिय सम [3]दूतन॥
तुम दिल्लिय पुर [illegible]। अ[illegible] आन सु धू तन॥
लिषि पच साह [illegible]। न [illegible] मुष वानी इम रट्टियौ॥
कैमास कृत्य सामंतत्थें [illegible] बरि विवरि सब पट्टियौ॥ छं० ॥ २४ ॥
दूहा ॥ दूत सपत्त साहि तब। जहं कायथ ध्रम्मान॥
भेद राज सामंत कौ। लिषि दीजै अब्बान॥ छं० ॥ २५ ॥

धर्म्मायन कायस्थ [illegible] शाह का दिल्ली की सब कैफियत लिखना।

ध्रम्माइन काइथह तब। जो [4]कछु विर[illegible] कवित्त॥
चाहुआन सामंत के। सब लिखि दिये चरित्त॥ छं० ॥ २६ ॥

दूतों का गजनी पहुंच कर शाह को धर्म्मायन का पत्र देना।

---

(१) ए. कृ. को -वट्ट। (२) ए. कृ. को. दोषा।
(३) ए. कृ, को -दूतह, भूतह। (४) ए. कृ. को. चिन्त।

दूत सपत्ते गज्जनै। जहँ गोरी सुरतान ॥
तपै साह साहाब बर। मनों भान मध्यान ॥ छं० ॥ २७ ॥

दिन चढ़तें साहाब दर। आनि कगर कर दीन ॥
मुदित चित्त भए मीर सब। मन उछाह सब कीन ॥ छं० ॥ २८ ॥

दुर्गा भाट का देवी से कविचन्द पर विद्या वाद में विजय पाने का वर मांगना।

कवित्त ॥ निसा एक निज ग्रेह। भट्ट साहाब दुग्ग बर ॥
धरिय देवि उर ध्यान। इष्ट चिंतन सु अप्प करि ॥
निसा अद्ध सुत जानि। देवि आई सुहित्त धरि ॥
कहै चंडि सुनि चंड। मुझ्झ विग्यान इक्क बर ॥
बरदाइ चंद चहुआन कौ। सुनिय अपूरब कथ्थ तस ॥
सम वाद विद्य मंडौ रसन। जौ पाऊं देवी दरस ॥ छं० ॥ २९ ॥

देवी का उत्तर कि तू और सब को परास्त कर सकता है, केवल चन्द को नहीं।

कहै देवि सुनि द्रुग्ग। उभय पुत्तह नह अंतर ॥
दीरघ चंद सु चारु। अनुज केदार कलाधर ॥
वाद विवाद जु कोइ। जाय चंदह सम मंडै ॥
झीन होइ मति हीन। ख्याति तिन वानी षंडै ॥
जित्तनह अवर जग मझ्झ तुम। एक चंद अंतर सुचिर ॥
अनि वस्त विवह अप्पों अनत। पुच सु पुज्जन प्रेम धर ॥ छं० ॥ ३० ॥

हनूफाल ॥ उच्चरिय देविय गाजि। सुनि भट्ट तूं कविराज ॥
कविचंद दीरघ सेव। तुम अनुज अंतर भेव ॥ छं० ॥ ३१ ॥
नन करहु तिन सम वाद। अनि देस जिप्पन स्वाद ॥

दुर्गा का कहना कि मैं पृथ्वीराज से मिलना चहता हूं इस पर देवी का उसे वरदान देना।

केदार अप्पय एम। चहुआन देषन प्रेम ॥ छं० ॥ ३२ ॥

जो हुकम अप्पै सात। सुविहाल पुच्छों बात॥
बोली सु हैवी बेंन। तुम चलो दिल्लिय चेंन॥ छं०॥ ३३॥
साहाब दैहै सीष। चहुआन पेम परीष॥
हय गय सु वाहन हेम। श्रासेक पच परेम॥ छं०॥ ३४॥
सत बाज हथ्यिय तीस। समपै सु दिल्लिय ईस॥
अषेट लब्भय राज। पानीय पंथ समाज॥ छं०॥ ३५॥

प्रातःकाल दुर्गा भाट का दरबार में जाना।

गाथा॥ निसि गत जग्गिय भट्टं। उर आनंद मानि मन अप्पं॥
जहां साहिब सुरतानं। तहां स चलि अप्पयं कव्वी॥ छं०॥ ३६॥
दूहा॥ सुक्कि ग्रहं निय ग्रह दिसा। सयन अप्प तजि बंध॥
ज्यौं कंचन जिय चिंतइय। ज्यौं पंडित गुन अंध॥ छं०॥ ३७॥
गाथ॥ कबि पहुच्यौ दरबारं। करि सलाम साह वर गोरी॥
दिष्टे वासब सेनं। पेंसत दिट्ठाइ गोरियं साहिं॥ छं०॥ ३८॥

दुर्गा भट्ट का शहाबुद्दीन से दिल्ली जाने के लिये छुट्टी मांगना।

कोलाहल कवियानं। सनमानं साहिबं होयं॥
[1]वारिज विपलह मझ्झै। ना सुझ्झंत हरुअ गरुआई॥
छं०॥ ३९॥
भुजंगी॥ दिषे साहि गोरी दरब्बार थानं। करै भट्ट केदार [2]ताके वषानं॥
मनो पावसं अंत आभा सु रंगं। दिषे साहि दरबार बहु भेद रंगं॥
छं०॥ ४०॥
कही बागबानी प्रमानी सु अल्ली। दियौ साह सीषं चलै भट्ट दिल्ली॥
.. .... । .... ॥ छं०॥ ४१॥

तत्तार खां का कहना कि शत्रु के घर मांगने जाना अच्छा नहीं।

---

(१) मो.-ज्यो वाज दिन संझने। (२) ए. कृ. को.-ताकि।

कवित्त ॥ सुनिय बचन सुरतान। दिष्षि बोल्यौ ततार वर ॥
भट्ट चलै मंगना। जहां बंध्यौ सु अप्प कर ॥
अरिसों ना हिय मिलन। मगन तिन ठाउन जाइय ॥
मान भंग जहां होइ। पास तिन मग नन पाइय ॥
अप्पिहै दान अप्पन कुटिल। अप्प क्रित्ति तौ [1]हान सम ॥
बरदाय भट्ट द्रुग्गा सु तुम। इच्छ होइ तौ करहु गम ॥ छं० ॥ ४२ ॥

शाह का कविचन्द की तारीफ करना।

दूहा ॥ सुनि सहाब हसि उच्चरिय। दिष्षहु चंदह सत्त ॥
सुपनेंऊ धर गज्जनें। मंगन नायौ इत्त ॥ छं० ॥ ४३ ॥

इस पर दुर्गा भट्ट का चकित चित्त होना।

सुनिय बयन सुरतान सुष। कवि उत्तर नन आइ ॥
मानों उरग [2]छछोंदरी। डारैं बनै न षाय ॥ छं० ॥ ४४ ॥

शहाबुद्दीन का दुर्गा भट्ट को छुट्टी देना और भिक्षावृत्ति की निन्दा करना।

घरी एक बिसमति भयौ। सुष दिष्षै सुरतान ॥
मोहि भट्ट पुंछहु कहा। जाहु जहां तुम जान ॥ छं० ॥ ४५ ॥
तिन तें तुस तें तूल तें। फेंन फूल तें जानि ॥
हसि जंपै गोरी गरुअ। मंगन है हरुआन ॥ छं० ॥ ४६ ॥

दुर्गा केदार का दरबार से आकर दिल्ली जाने की तैय्यारी करना।

सुनत वचन सुरतान सुष। भट्ट संपतौ धाम ॥
तजि विराम चित्तह चल्यौ। जुग्गिनिवै पुर ठाम ॥ छं० ॥ ४७ ॥
पिता पुत्र सों वत्त कहि। मंगन मन चहुआन ॥
स्वामि वैर दातार घन। साहि कही इह वानि ॥ छं० ॥ ४८ ॥

(१) ए. कृ. को.-दान मम। (२) ए. कृ. को. छछुंदरी।

कवित्त ॥ [1]चलिय भट्ट बर ताम। नाम द्रुग्गा केदार बर ॥
संभरेस अवद्देस। लष्य अप्पै विलष्य गुर ॥
अति उतंग चहुआन। मान मरदन पल पानं ॥
अरब षरब उप्परैं। कोरि अप्पै करि दानं ॥
संभरिय राउ सोमेस सुअ। आसमान अभिलाष पल ॥
भिद्दै न [2]जाहि माया प्रबल। मनों नीर मझ्झैं कमल ॥ छं० ॥ ४९ ॥

दुर्गा केदार का ढाई महीने में पानीपत पहुंचना।

दूहा ॥ [3]पष्ष पंच पंथह गवन। आतुर षरि उत्ताव ॥
सुनिय राज संभर धनी। पानी पंथ प्रभाव ॥ छं० ॥ ५० ॥
गिरिवर झुंगर [4]गहर बन। नद विहार जल थान ॥
क्रीड़त देसह आनि किय। पानी पंथ मिलान ॥ छं० ॥ ५१ ॥

शिकार में मृत पशुओं की गणना।

कवित्त ॥ पानी पंथह राइ। आय षेलत आषेटक ॥
सत्त एक एकल बराह। हत्ते सु गात सक ॥
अवर सत्त षट तथ्थ। घत्त हत्ते करवानह ॥
सौ कुरंग संग्रहै। [5]दून सौ हनै चितानह ॥
को गनै अवर सावज [6]अनंत। हनें [7]पसू अरु पंषि जहां ॥
उत्तंग छाह जल थान पिषि। चित्त उल्हस अनु सरिय तहां ॥
छं० ॥ ५२ ॥

राजकुमार रेणसी का सिंह को तलवार से मारना।

नीसानी ॥ अहो सिंघ न वल्ल इक आया निथ्थारे।
संभल्ल हक्क गहक्क ही उथ्या [8]भूभारे ॥
उत्तरिया असमान थी किनि कस्या भूफारे।
कंध बिबथ्था प्रथु कपोल तिष दंत करारे ॥ छं० ॥ ५३ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-चल्यौ। (२) ए. कृ. को.-नाहि।
(३) ए. कृ. को.-पक्ष। (४) ए. कृ. को.-गहन। (५) मो दूत।
(६) ए. कृ. को. अनंग। (७) ए. कृ. को.-अनतीति। (८) ए. कृ. को.-मारे।

जीह झाक झक झकै मनों बीज पथारे ।
नैन विसोहै जामिनी गुरु सुक्रह तारे ॥
लग्गी भट्ट टगट्टगी मनों [1]मुल्लारे ।
संभरिया पंच मुष्ष थापें देष्या दस बारे ॥ छं० ॥ ५४ ॥
आया कुंअर उप्परे षावास निहारे ।
आडा आया संकडा परवार पचारे ॥
आवत [2]सीस उक्षक्किया सिर सिंगी झारे ।
हथ्थल षग्ग पछट्टिया कोय पिंड पलारे ॥ छं० ॥ ५५ ॥
रैंनि करष्षे कोपिया झुक्या असि झारे ।
बहिया कंध विसंध होय दोय टूक निनारे ॥
मनों सारे स्रत पिंड हो धग्गा कुल्लारे ।
पड़िया सीस धरट्ठ हे परसह पहारे ॥ छं० ॥ ५६ ॥
जानि परे गिरि शृंग होहारि वज्र प्रहारे ।
जानि कि कन्हा कोपिया दोइ मल्ल पछारे ॥
कै अप्प कुपे रघुनाथ ने सिर रावन झारे ॥
जानि अलुक्झी गुज्जरी दधि मट्ट फुटारे ॥ छं० ॥ ५७ ॥
कूर कवारी कुट्टिया तरु उंच कुठारे ।
रेनि कहंदै धन्य हो जै सद्द उचारे ॥ छं० ॥ ५८ ॥

पानीपत के मैदान में डेरा पड़ना ।

कवित्त ॥ आषेटक संभरिय । कुंअर म्रगराज प्रहारे ॥
जामदेव जद्दों । पुंडीर का कन्ह विचारे ॥
दस दिस अरिय प्रचंड । तुच्छ सिक्कार सथ्थ हम ॥
मिलि चिन्हय चहुआन । अप्प पिल्लियै भोमि क्रम ॥
सुनि राज अप्प मन फिरन हुअ । मानि मंत सामंत किय ॥
सित माह प्रथम वर पंचमी । पानीपंथ मेलान दिय ॥छं०॥५९॥

गोठ रचना ।

(१) ए. कृ. को.-मुछारे । (२) ए.-सीग।

दूहा ॥ तहां उतरि प्रथिराज पहु। करिय गोठि तथ्थाहु ॥
घन पकवान सुअन अनत। गनै कौन जो हांहु ॥ छं० ॥ ६० ॥

गोठ के समय दुर्गा केदार का आ पहुंचना।

कवित्त ॥ भई गोठि जब राज। सह परिहार सवन किय ॥
आय सूर सामंत। अवर बरदाय बोल लिय ॥
तथ्थ समय इक भट्ट। नाम द्रुग्गा केदारह ॥
सपत दीप दिन जरहि। सथ्थनी सर नीसारह ॥
सिर हेम छत्र उप्पर उरग। अंकुस तस कर दंड सस ॥
आसीस आय दीनी न्रपति। मिलि पहु पुच्छिय मति मरम ॥
छं० ॥ ६१ ॥

चौपाई ॥ आषेटक संभरि न्रप राई बट छाया बैठे [1]तहां आई ॥
दानवंत बलवंत सलज्जौ। सुबर राज राजन प्रथिरज्जौ ॥ छं० ॥ ६२ ॥

कवि के प्रति कटाक्ष वचन।

दूहा ॥ भट डिंभी आडंबरह। अरु पर जानन वित्त ॥
अप्प सु कवि कब्बी कहै। किय न्रप सम्हौ चित्त ॥ छं० ॥ ६३ ॥

कवि की परिभाषा।

गाथा ॥ भट्ट उचरियं बानी ॥ [2]उगतिं लहरि तरंगं रंगं ॥
[3]जुगतिं जल जंभायं। रतनं तर्क वितर्कयं जानं ॥ छं० ॥ ६४ ॥

कवित्त ॥ जानन तर्क वित्तर्क। सरल वानी सुभ अच्छिर ॥
च्यारि बीस अरु च्यार। रूप रूपक गुन तच्छिर ॥
सुंदर अठ गन ग्रेह। लघू दीरघ बल नच्चै ॥
जुगति उगति घन संचि। लेइ गुन औगुन [4]बच्चै ॥
बुधि तीन वान वर भलक करि। वर विधान मा बुद्धि कवि ॥
बिय गुनिय देषि गव्वह गरै। ज्यौं तम भगत देषंत रवि ॥
छं० ॥ ६५ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-नृप छाई। (२) मो.-उकंतं लहर तरगयं रंगं।
(३) मो -जुगत। (४) मो.-बंचै।

दुर्गा केदार कृत पृथ्वीराज की स्तुति और "आशीर्वाद"।

पद्धरी ॥ मिलि भट्ट दिट्ठ न्त्रपती प्रमान। बुलि छंद बंध सम चाहुआन ॥
तुहि इंद्रप्रथ्य आजानबाह। तुहि अग्गि तूल चालुक्क दाह ॥
छं० ॥ ६६ ॥

तुंहि भंजि जुद्ध परिहार धाइ। तुंहि पंच पथ्थ प्रथिराज राइ ॥
तुंहि भंजि मान जैचंद पंग। तुंहि बीर सुरबि तुंहि काम अंग ॥
छं० ॥ ६७ ॥

तुंहि सूर रूप तुंहि अच्छराइ। तुंहि भेद अभेदन बेद गाइ ॥
तुंहि मौज त्याग दिष्षौ न ईस। नन सर वरीस धन्नाधि तीस ॥
छं० ॥ ६८ ॥

विक्कम्म पच्छ सब बंध तूंहि। तुंहि साल पंग सुरतान तूंहि ॥
मम दिट्ठ वाद श्रोतान लग्ग। सोइ देषि आज प्रथिराज द्रिग्ग ॥
छं० ॥ ६९ ॥

दूहा ॥ दिय असीस प्रथिराज कौं। बहुत भाव गुन चाव ॥
साम दाम दंड भेद करि। तब तिन बेध्यौ राव ॥ छं० ॥ ७० ॥

कवित्त ॥ बैनह बेध्यौ राव। चाव बेध्यौ चहुआनं ॥
गगन भान गाहंतौ। भोमि गाहै पल पानं ॥
सूर गरूअ [1]गुर बीर। बीर बीराधि सु बीरं ॥
छत्रपती छिति सोभ। सूर सामंत सु धीरं ॥
सुरतान गहन मोषन सुबर। उभय बेद एकत्त कर ॥
हिंदवान लाज सोभै सु उर। कहै भट्ट द्रुग्गा सु वर ॥ छं० ॥ ७१ ॥

पृथ्वीराज का दुर्गा केदार को सादर आसन देना।

करि जुहार चहुआन। भट्ट आदर बहु किन्नौ ॥
मुक्कि न्त्रपति आषेट। चिंति सुक्काम सु दिन्नौ ॥
संझ महल परमान। भट्ट दोऊ रस वद्दे ॥

(१) मो.-नुर, उर।

उन उच्चार उच्चरत । वाद दोऊ तब वड्है ॥
उच्चऱ्यौ द्रुग्ग केदार बर । क्यों बरदा अप्पन ग्रहै ॥
मानो तो साच बरदाय पनु । जो द्रुग्गा सेमुष कहै ॥ छं० ॥ ७२ ॥

दुर्गा केदार का निज अभिप्राय कथन ।

दूहा ॥ कहै भट्ट न्नप राज सुनि । सुहि मति बुद्धि अगाध ॥
सुनिय चंद बरदाय है । आयौ वद्दन वाद ॥ छं० ॥ ७३ ॥

उसी समय कविचन्द का आना और राजा का दोनों कवियों मे बाद होने की आज्ञा देना ।

कवित्त ॥ दिय असीस कविचंद । आय तिन वेर प्रमानं ॥
उभय अस्स हिंदवान । आइ बैठे इक थानं ॥
उभय बेद रह जानि । उभय बरदाय उभय बर ॥
उभय बाद जित वान । उभय वर सूर सिद्ध नर ॥
न्नप राज तास पुच्छै दुअनि । गुन प्रबंध कवितह रचिय ॥
बरनौ दुबीर तुम बाद बद । ध्यान धरे [1]उभया सचिय ॥
छं० ॥ ७४ ॥

दोनों कवियों का गूढ़ युक्ति मय काव्य रचना ।

दूहा ॥ थल अप्यौ सु दुहून कवि । ससि बरनौ इक बाल ॥
इक पूरन बरनौ ससी । इक जंपो वै काल ॥ छं० ॥ ७५ ॥
इक्क कहौ रितु राज गुन । जुगतें जुगति प्रमान ॥
कहै राज कविराज हौ । तत्तहि तत्त बषान ॥ छं० ॥ ७६ ॥
मिलिय चंद भट तास सम । किय सादर सनमान ॥
सु गुन [2]प्रसंसिय अप्प कर । करौ वाद विद्यान ॥ छं० ॥ ७७ ॥
बाल चंद अरु बाल ससि । द्वै विधि चंद सु मत्ति ॥
वर बसंत पूरन्न ससि । विधि द्रुग्गा किय सत्ति ॥ छं० ॥ ७८ ॥

---

(१) ए. कृ को.-उभया । (२) मो.-प्रसंसित ।

कविचन्द का वचन।

कवित्त ॥ चंद चंद बिध कही। सुनो प्रथिराज राज वर ॥
मदन बाज नष लस्यौ। मदन बांनी [1]नवक्क सर ॥
समर सार कत्तरी। दिसा सुंदरि नष पित पिय ॥
चक्र काटि मनमथ्थ। उभय किय तोरि ताहि बिय ॥
दसि अधर बधू मानोज ससि। सिंघ काटि नष बङ्कियौ ॥
कटाच्छ सुरति बंकै विषम। कै काम दीप हुए सङ्कियौ ॥छं०॥७९॥

गाथा ॥ जं कहियं कविचंदं। संभरि रायान रावतं कहियं ॥
चौपानं सह राजन। सा जंपी कित्तियं भट्टं ॥ छं० ॥ ८० ॥

दुर्गा केदार का वचन (वैसन्धि)

कवित्त ॥ कहै भट्ट दुग्गा प्रमान। वैसंधि उचारिय ॥
पत्र स्फार अंकुरित। डार नव सुभित कुमारिय ॥
कोकिल सुर सजि रहिय। भृंग सजि पंष उड़ावन ॥
सीतल संद सुगंध। पवन विसमौ [2]भौ भावन ॥
वासंत बिना इन सकल बुधि। सब्ब मनोरथ रच्यौ मन ॥
लहरी समुद्र हंससमुद्र में। उलसि उलसि मध्यें सु तन ॥छं०॥८१॥

कविचन्द का उत्तर देना।

कहै चंद वयसंधि। आय ऐसें गति धारिय ॥
सैसव वपु सिकदार। सु वन पत्तह [3]उत्तारिय ॥
सिसिर थान छुट्टयौ। पट्ट जोवन लै धारित।
काम न्टपति दै आन। कट्टि सैसव तन पारित ॥
जागित्त जुब्ब तब भृंग तर। [4]सिसिर कट्ठि भए बंधयौ ॥
नव भए सगुन अच्छिज्ज तन। आन दीप दोय संधयौ ॥ छं०॥८२॥

दूहा ॥ के छुट्टा तुट्टाति के। के अति पोट उचार ॥

---

(१) ए. कृ. को.-निवक्क। (२) मो. मे।
(३) ए. कृ. को.-उच्चारिय। (४) ए.-समिर।

अष्षर कुकवि कवित्त ज्यौं। गति जुन तुट्टाहार ॥
विधि विधि [1]बरन सु अर्थ लिय। अति ढंक्यो न उघारि ॥
अष्षर सु कवि कवित्त ज्यौं ज्यौं। चतुर स्त्री हार ॥ छं० ॥ ८४ ॥

दोनों कवियों में परस्पर तन्त्र और मंत्र विद्या सम्बन्धी वाद वर्णन ।

सो सरसत्तिय सुघ दियन। वाद बरन्न न भट्ट ॥
चित्त मंडि का करन पल। सत कवित्त वढ़ि घट्ट ॥
छं० ॥ ८५ ॥

केदार के कर्त्तव्य से मिट्टी के घट से ज्वाला का उत्पन्न होना और विद्याओं का उच्चार होना ।

पद्धरी ॥ केदार कहै सुनि चंद भट्ट। सत अग्र मुष्प इक मंडि घट्ट ॥
सब मुष्प होंहि ज्वाला प्रचार। [2]मुष मुष्प वेद विद्या उचार ॥
छं० ॥ ८६ ॥

कविचंद कहैं सुनि भट्ट राज। प्रगटौ जु अप्प विद्या सु साज ॥
केदार ताम मंड्यौ जु घट्ट। उच्चर्‌यौ मुष्प प्रति अंग घट्ट ॥
छं० ॥ ८७ ॥

सब मुष्प प्रगटि पावक्क ज्वाल। किल किला सद्द श्रुति बंचि नाल ॥
मंड्यौ सु घट्ट बरदाय चंद। उच्चर्‌यौ मुष्प प्रथु प्रथुल छंद ॥
छं० ॥ ८८ ॥

दस च्यार मुष्प विद्या उचार। ज्वाला सु मद्धि सब वारि धार ॥
हुंकार सद्द किलकार हांक। पूरौ सु चंद देवी भिलाष ॥
छं० ॥ ८९ ॥

बंधी जु गत्ति जब चंद भट्ट। केदार ताम करि अवर यट्ट ॥
केदार कहै सुनि कवि विवेक। [3]बुल्लाउ वास्त जो मास एक ॥
छं० ॥ ९० ॥

(१) मो.-बन्नन ।
(२) ए. कृ. को -सब मुष्प वेद विद्या विचार । (३) ए कृ को बुल्लाउ ।

कविचन्द के बल से घोड़े का आशीर्वाद पढ़ना।

कविचंद कहै सुनि चंडिपाल। जंपै छ भाष दिन एकबाल॥
ठट्टौ जु अग्ग जकि वाज राज। दिय अषित सीस केदार साज॥
छं० ॥ ९१ ॥

है राज राज दीनी असीस। उट्ठे विचंद दिप कुसुम सीस॥
उच्चयौ वाज गाथा सु एक। आसीस राज वर विधि [1]विवेक॥
छं० ॥ ९२ ॥

गाथा ॥ जिन सारथ सजि पथ्यौ। निज रष्षौ सु ग्रभ्भ उत्तरया॥
जिन रष्षौ प्रहलादौ। सो करौ रष्षा राज प्रथिराजं॥ छं०॥९३॥

दुर्गा केदार का पत्थर की चट्टान को चलाना और उसमें अंगूठी बैठार देना।

हनूफाल ॥ वै संधि बाल प्रमान। घट घटिय द्रुग्गा पान॥
पढ़ि छंद मंच विसाल। नर रीझि देवन माल॥ छं० ॥ ९४ ॥
भय अग्ग जंगम अंग। गति लही थावर जंग॥
रिंगि चल्यौ पाहन पंग। नय जानि जमुन तरंग॥ छं० ॥ ९५ ॥
[2]थुति करत सामंत सूर। धनि चंद मंच गरूर॥
कढ़ि मुद्र कीनिय पानि। नंषीति मध्य प्रमान॥ छं० ॥ ९६ ॥
गुन पढ़त रहिय सुभट्ट। भय प्रथम उपल सु घट्ट॥
कर मंगि मुद्रिक चंद। नन दई मुद्रि कविचंद॥ छं० ॥ ९७ ॥
कीनी सु विद्य प्रमान। फिरि बाद मंडिय जान॥ छं० ॥ ९८ ॥

कविचंद का शिला को पानी करके अंगूठी निकालना।

दूहा ॥ प्रथम वाद पाहन कियौ। फिरि मंड्यौ बिय वाद॥
चंद सिला पानी करी। दुग्गा आनि प्रसाद॥ छं० ॥ ९९ ॥

माटक ॥ छत्रं सीस विराजमान वरयं राजेंद्र राजं वरं॥

(१) ए. कृ. को.-विसेक। (२) ए. कृ. को.-छत, छुत, छुति।

भ्रम्म सास्त्र विरत्त [1]मंचति कवी वरदाय गुर सिद्धयौ ॥
केदाराय सु भट्ट किंन चरितं हिंद्वान सापी बरं ॥
जै द्रुग्गा बरदान देवि सुषयौ तर्क बरं भासितं ॥ छं० ॥ १०० ॥

दुर्गा केदार का अन्यान्य कलाएं करना और चन्द का उत्तर देना।

चौपाई ॥ कला बहुरि द्रुग्गा बहु किन्नी। पुच काटि सिर जू जू दिन्नी ॥
धर धावै सिर पढ़ै सु छंदं। इसौ दिष्षि अड्डौ भय चंदं ॥
छं० ॥ १०१ ॥

दूहा ॥ बर प्रसन्न द्रुग्गा कियौ। विविध चरिच विचार ॥
ए सुजानि [2]नर बीर गति। बहु बंधाना भार ॥ छं० ॥ १०२ ॥

देवी का वचन कि मैं कविचंद के कंठ में सम्पूर्ण कलाओं से विराजती हूं।

अरिल्ल ॥ मात कहै सुनि चंदर भासं। एक दिना ठाढ़ी पित पासं ॥
पाप तात कौ संध्यौ पंठ। हु तव छंडि [3]बसी तो कंठ ॥
छं० ॥ १०३ ॥

अनि कवि कंठ बसी परिमानं। कला पाव कै अड्डी जानं॥
तो में बसी सबै [illegible] ी देह नह जानै भौनी॥छं०॥१०४॥

अन्तरिक्ष में [illegible] कविचंद जीता।

झाई सी बोलिय [illegible] गहराही ॥
पिक्क [illegible] ं ॥छं०॥१०५॥

दुर्गा [illegible]

कर [illegible]

दु [illegible]

(१) ए. कृ. को.-मतृ।
(३) मो.-नसी।

दूहा ॥ हारि बोलि उर सकल बर। गयौ पास प्रथिराज ॥
सकल सूर आचिज्ज भयौ। विधि विधान विधि साज ॥ छं० ॥१०६॥

कवित्त ॥ विधि विधान विधि साज। हारि अंतरिष बुल्लिय बर ॥
कहिय अप्प प्रथिराज। कला केदार करिय गुर ॥
थुति जंपै दनु देव। नाग जंपैति असुर नर ॥
सकल सूर सामंत। कित्ति जंपैति कित्ति कर ॥
सिर कट्टि पुच्च माया विभग। छंद बंध मुष उच्चरै ॥
सामंत सकल सेना सुबर। जै जै जै बानी करै ॥ छं० ॥ १०७ ॥

सरस्वती का ध्यान।

साटक ॥ सेतं चीर सरीर नीर सुचितं स्वेतं सुभं निर्मलं ॥
स्वेतं संति सुभाव स्वेत ससितं हंसा रसा आसनं ॥
वाला जा गुन ह्रद्धि सौर सु श्रितं न्त्रिभे सुभं भासितं ॥
लंबी जा चिहु राय चंद्र वदनी दुर्ग्गं नमो निश्चितं ॥ छं० ॥१०८॥

सरस्वती देवी की स्तुति।

भुजंगी ॥ सधी सद्धियं बीर बीरं प्रमानं। हँसी देषि मातंग मातंग न्यायं ॥
करै मुक्ति कौ काज सब्बैति देवं। तहां मुक्ति कौ तत्त आवै सुभेवं ॥
छं० ॥ १०९ ॥

करै रिद्धि कौ काज सब्बै विहंसं। तहां सिद्ध आवै न सेवे वरंसं ॥
करै रिद्ध कौ पास गन्नै सछंडै। तहां रिद्धि आवै न पासै विषंडै ॥
छं० ॥ ११० ॥

इतं बात जानै न तो वाद जीतं। ननं सस्त्र बीरं सनं बीर रीतं ॥
जरी सस्त्र सों जंच जालंधरानी। सबै तेज मातंग तूही समानी ॥
छं० ॥ १११ ॥

कवित्त ॥ तू माया तूं मोह। मोह तत भेदन तूंही ॥
तूं जिह्वा मोयान। तूंव गुन में गुन भोंई ॥
तो विन एक न होय। एक पच्छै कवि राजं ॥
मंच सुनै सह वद्ध। लष्य लष्पन सिरताजं ॥

तजि मोह बीर बंछै सु कबि। तत्त भेद नन अंग तिहि ॥
मो समरि मं डोलै नहीं। उभय आस छंडै जु कहि ॥छं०॥ ११२ ॥

देवी का वचन।

दूहा ॥ सु कवि सों सरसति कहैं। मो तो अंतर नाहि ॥
सूर तेज कोइ हो कहै। ससि अस अम्रत छांह ॥ छं० ॥ ११३ ॥

लीलावती ॥ हहं तूं हहं तूं नहं तूं नहं तूं। ननंहु ननंहुननंहु तुनांही॥
भयं तो भयं तो महंतो महंतो। कथं तूं कथंतूं ननंह्नं ननं ह्नं ॥
॥ छं ॥ ११४ ॥

गुनं तो गुनं तो हु जंची हु जंची। तु जंचं तु जंचं कथती पढ़ंती ॥
कथंती कथंती न्रतंती न्रतंती। भ्रमंती भ्रमंती नतंती नतंती ॥
छं० ॥ ११५ ॥

भ्रमे जेमवंती जमंती जमंती। .... ॥ छं० ॥ ११६ ॥

कवित्त ॥ पय दष्षन कर उंच। मुष्प बोले तूं है वर ॥
कहै सु बर प्रथिराज। बत्त जंपै सु क्रंम गुर ॥
ब्रह्म विष्णु उप्पनौ। ब्रह्म देवी जुग जन्ना ॥
सूर बंस न्रप आदि। चंद बंसी नर दुन्ना ॥
रचि बालय ब्रन्नन तेज बन। किय जमुन्न जगि सुमन किय ॥
उच्चऱ्यौ संत सत्ता सु गति। मति प्रमान जंपैति सिय ॥छं०॥११७॥

दुर्गा केदार का कवि को पुनः प्रचारना।

दूहा ॥ पाषंड न जित्या अमर। सिला दिष्ट बंध कीन ॥
अब जानै बरदाय पन। उमया उत्तर दीन ॥ छं० ॥ ११८ ॥
जु कछु कहै कविचंद सो। [1]करै बनै कवि सोय ॥
जु कछु बत्त तुमसों कहों। सो उतर द्यौ मोय ॥ छं० ॥ ११९ ॥
जो पापान सु पुत्तरी। अस्तुति करै जु आय ॥
जो उमया संमुष कहै। तो सांचो बरदाय ॥ छं० ॥ १२० ॥

कविचन्द का वचन।

जासों तू पाषंड कह। सो रचि मोहि दिषाउ ॥
हो नंषों वर मुंदरी। तूं कर कढ्ढि सु ताउ ॥ छं० ॥ १२१ ॥

(१) ए. कृ. को.: फरै बनें सब कोइ।

एक संधि वै बरनवों। इक चंद छन्नों भट्ट ॥
दो बर साषि उमा कहै। अंतर मझ्झ सु घट्ट ॥ छं० ॥ १२२ ॥

घट के भीतर से लालो प्रगट होकर देवी का कविचन्द को आस्वासन देना।

कवित्त ॥ सुनि सैसब बिछुरत्त। लाल किय अमर अरुन द्रिग ॥
बाम जगावन काज। रह्यौ [1]पिलदार जानि ढिग ॥
छीनरु उन्नित बढ़ै। घटै करकादि मकर जिम ॥
कामसाल गति पढ़ति। चिंति उतरादि स्वर क्रम ॥
इच्छह जु अंछि बंके करन। संका [2]लज्ज बसंकरी ॥
ग्रह ग्रहन फिरत बल दिष्षिए। श्रवन कथा रसनन चरी ॥
छं० ॥ १२३ ॥

गज निसि अंकुस चंद। क्रन्न तारक विहीनी ॥
कै प्राची दिसि त्रिया। बिंद कै कंदर हीनी ॥
कै कुंचिक शृंगार। काम द्रप्पत बर लोभै ॥
गाहनि काननि [3]ग्रनी। सिंघ नष गज सुष सोभै ॥
मनमथ्थ भुवन सोभै सुकवि। नष पच्छिम दिसि बधुअ सुष ॥
मनमथ्थ धजा मनमथ्थ रथ। चक्र एक एक हति रुष ॥
छं० ॥ १२४ ॥

रोला ॥ घट मंझै कविचंद। कवित उभया सुनि सुन्नी ॥
अति रिझ्झय बरदाय। सुरंग यासों सर धुन्नी ॥ छं० ॥ १२५ ॥

*चान्द्रायना ॥ विजै है मति राज। उकत्ति जो बहु धर्‌यौ।
मोहि चंद बरदाय। सु अंतर सति कर्‌यौ ॥ छं० ॥ १२६ ॥

चौपाई ॥ सो विन अक्षर एक न होई। घट घट अंतर व्यित सोई ॥
तुम बहु जुगति द्रुगति कवि आनौ। मो कविचंद न अंतर जानौ ॥
छं० ॥ १२७ ॥

---

(१) मो.-पिलवार। (२) ए. कृ. को.-रुका। (३) ए. कृ. को.-गनी।

* चारों मूल प्रतियों में रोला छन्द को चौपाई करके लिखा है इस चान्द्रायन का नाम ही नहीं दिया है।

चन्द कृत देवी की स्तुति।

भुजंगी ॥ तुंही ए तुंही ए तुंही तुं अुगंतं। तुंही देव देवा [1]सुरेतं ससंतं ॥
मरालंति बालं अलिं सास ओरै। कियं कै सभुक्के उगस्सं विढोरै ॥
छं० ॥ १२८ ॥

लिलाटं न चंदं विराजै कला की। प्रभातं तइंदं वंदै लोय जाकी ॥
रुरें रत्त सोभै बरन्ने सु चंदं। धसे गंग हेमं भुले माहि इंदं ॥
छं० ॥ १२९ ॥

पढ़ै तुं भरं ताहि पावै न पारं। दियो चंद कब्बी इयं जा हुंकारं ॥
छं० ॥ १३० ॥

पुनः दुर्गा केदार का अपनी कलाएँ प्रगट करना और कविचन्द का उन्हें खण्डन करना।

पद्धरी ॥ केदार बत्त तब जंपि एह। दिष्याउं तोहि बरसाय मेह ॥
प्रथमं सु पवन तब बज्जि जोर। गज्जीय गगन घन गरजि सोर ॥
छं० ॥ १३१ ॥

नभ छाइ स्याम बद्दल विसाल। भइ अंध धुंध जनु हुअ निसाल ॥
तरकंत तड़ित चिहुं ओर जोर। लग्गे सु करन कल मोर सोर ॥
छं० ॥ १३२ ॥

झम झमक बूंद बरसन्न लाग। इह चरित मंडि केदार बाग ॥
आचिज्ज हुअ [2]सन सभा एह। दिष्यय बसंत कविचंद तेह ॥
छं० ॥ १३३ ॥

आघात बात चलि फारि मेह। न्रिम्मलिय नभ्भ रबि तयन छेह ॥
हुअ अंब मौर फुल्लिगपलास। द्रुम सघन फुल्लि पंषिन हुलास ॥
छं० ॥ १३४ ॥

भमि भ्रंग जुथ्थ गुंजार भार। कलयंठ कुहुकि द्रुम बैठि डार ॥
[3]सभ सकल माहि रहि इन सु छंद। किन्नी अभूत बत्तह सु [4]चंद ॥
छं० ॥ १३५ ॥

(१) ए. कृ. को. अग्रारं। (२) ए. कृ. को.-सभ सकल।
(३) ए. कृ. को.-सम। (४) ए. कृ. को.-छद।

जे जेय विद्य देषी केदार। ते तेय चंद देषिय [1]विचार ॥
बैठक सु राज सिल एक तथ्य। दिष्षिय सु चंद उच्चरिय कथ्य ॥
छं० ॥ १३६ ॥

सुनि वत्त अहो [2]जुग्गा केदार। प्रगटौ सु विद्य जौ अत्र सार ॥
गुन पढ़ौ याहि अग्गें सु छंद। हुअ उपल गलित तो विद्यवंत ॥
छं० ॥ १३७ ॥

चिंत्तिय सु चिंत्त बरदाय देव। मन बच्च क्रम्म आचिंति तेव ॥
लगि पढ़न चंद देवी चरित्त। वर बानि ग्यान सद्यौ सु मंत ॥
छं० ॥ १३८ ॥

कुहलाय उपल हलहलिय अंग। झलमलगि जानि पारद सुरंग ॥
भिद्यौ सु वज्र गिरि पंक जानि। मुद्रकिय नंषि कवि मध्य थान ॥
छं० ॥ १३९ ॥

डुब्बी सु मध्य मुद्रिक अभिंदु। भयौ बज्र वान [3]सरिवरि कविंद ॥
कविचंद कहै वर बदौं तोहि। अप्पै जौ काढ़ि मुद्रिय सु मोहि ॥
छं० ॥ १४० ॥

लग्यौ जु पढ़न केदार वानि। वर भास छंद अनेक आनि ॥
भेदै न उपल कछु अंग ताहि। थक्यौ अनंत करि करि उपाय ॥
छं० ॥ १४१ ॥

फिरि लग्यौ पढ़न कविचंद मंत। किल किलकि मध्य देवी हसंत ॥
अनेक वीज मंत्रह उचार। पढ़ै सु वानि कविचंद सार ॥
छं० ॥ १४२ ॥

फिरि भयौ गरित गिरिवर सु अंग। कढ़िग सु चंद मुद्रीय नंग ॥
*लग्यौ सु पाय केदार तत्र। सम तोहि दिपि न त्रिभुवन्न कत्र ॥
छं० ॥ १४३ ॥

कविचंद प्रसंसिय ताम भट्ट। वर विमल तुंही बानी सु घट्ट ॥ छं० ॥ १४४ ॥

कवित्त ॥ लज्जि वीर केदार। वाद मंड्यौ मरनं चित ॥
सुवर [4]कट्ट पुत्तरी। देहि उत्तर सजीव हित ॥

(१) ए. कृ. को.-चिधार। (२) ए.-जु। (३) ए. कृ. को.-सर्वरि।

* ये अन्तिम दो पंक्तियां मो. प्रति में नहीं हैं। (४) ए. कृ. को. काट।

तब चंद बंदि आराधि। घट्ट जल बंधि उड़ायौ॥
गंग हेत बरदाइ। बरनि नौ रस्स पढ़ायौ॥
द्रुग्गा केदार घट भंजि कै। कर अंतर संमत करि॥
षिरयौ न सुजल अंतर रह्यौ। सो ओपम कविचंद हरि॥छं०॥१४५॥

दूहा॥ नीर समं तजि पिष्षियै। घट पर्ष्यै कविचंद॥
मानौ [1]किरनि पतंग की। षेलत पारस संडि॥ छं०॥ १४६॥

चौपाई॥ एह चरित्त चंद कवि दिष्षिय। भला भला ऐसा तुम अष्षिय॥
चंद सूर दोऊ करि सष्षिय। बाद विवाद परस पर रष्षिय॥
छं०॥ १४७॥

कवित्त॥ पढ़त मंच बरदाय। चल्यौ पाषान सुरंग कल॥
घट बहै रिति कलिय। दिद्ध आसीस हय सु बल॥
बर सुंदरि काढ़ि नंषि। और आरंभ सु किन्नौ॥
जंच मंच बहु जुगति। संगि फिर बोल सु दिन्नौ॥
ठठुक्यौ सु दुर्गा केदार बर। देव विष्ट नंषे सुमन॥
जीत्यौ न कोय हाऱ्यौ न को। सुनिय कथ्थ प्रथिराज उन॥
छं०॥ १४८॥

अन्त में दोनों का बाद बराबर होना।

दूहा॥ बाद बिबादन बीर [2]कबि। सत्ति सुभाव सुधीर॥
द्रुग्ग मत्ति तौ संचरी। जौ चंद वयट्ठौ नीर॥ छं०॥ १४९॥

दोनों कवियों की प्रशंसा।

नीसानी॥ पुन्न राह पढ़मष्परां हिंदू तुरकाना।
दोई राज सु दीन दो गोरी चहुआना॥
दोई सास्त्र विचार दो कौरान पुराना।
इल उप्पर त्यों भट्ट दो ज्यों राति विहाना॥ छं०॥ १५०॥
इक्कै पुच विवड कर इक नीर पषानां।
दोई राजन मंनिया सामंत सवानां॥ छं०॥ १५१॥

(१) ए. कृ. को.-विराति। (२) मो.-कोइ।

पृथ्वीराज का दुर्गा केदार को पांच दिन मेहमान रख कर बहुत सा धन द्रव्य देकर बिदा करना।

कवित्त ॥ बाद बीर संबाद। [1]रहै मन मझ्झ मनोरथ ॥
[2]कोप छाह सिंधु तरंग। लग्गौ कि बान पथ ॥
संझ परत प्रथिराज। रहै ऐसै मन धारिय ॥
बहुत बाद उच्चार। चंद जीतौ गुन चारिय ॥
न्रप दीन भट्ट दिष्यौ बदन। सो दिन सरसत्तिय बिरस ॥
अप्पयौ दान उचित सु श्रुति। सु कवि दिष्षि तायें सरस ॥
छं० ॥ १५२ ॥

रष्षि पंच दिन राज। चंद आदर बहु दिन्नौ ॥
भोजन भाव भगत्ति। प्रीति महिमान सु किन्नौ ॥
गेंवर सज्जिय तीस। तुंग साकति सिंगारिय ॥
तरल तुरंग सजि बेग। सत्त दिय परिकर सारिय ॥
कोटेक द्रब्य दीनौ न्रपति। अवर गिनै को विविध वरि ॥
सामंत सब्ब दिनौ सु दुत। कवि सु प्रसंसित कित्ति करि ॥
छं० ॥ १५३ ॥

दूहा ॥ हैवर सत गज तीस सुभ। मोती माल सु रंग ॥
लाल माल उभ्भय करुन। दै राजन रस रंग ॥ छं० ॥ १५४ ॥

स्लोक ॥ यावच्चंद्रो दिवानाथ। यावत् गंगा तरंगयोः ॥
तावत् [3]पुच प्रपौत्रस्य। दुर्गा ग्रामं [4]विलोकयेत् ॥ छं० ॥ १५५ ॥

कवित्त ॥ वर समोधि न्रप भट्ट। रोस छिम्माय प्रमोध्यौ ॥
तापच्छैं कविचंद। भट्ट गुन करि गुन सोध्यौ ॥
प्रसन वीर प्रथिराज। लच्छि चतुरंग सु अप्पी ॥
इंद्रप्रस्थ वै थान। ग्राम दस अघटह अप्पी ॥

---

(१) ए. कृ. को. रहेन। (२) ए. कृ. को.-कूप छांह।
(३) ए. कृ. को.-पौत्रस्य। (४) ए. कृ. को.-विलोकयत्।

*

आजन्म जन्म दारिद्र कपि। भट्ट भारह सरद करिय ॥
आदर अदब पहुंचाय करि। सब प्रसंस परसाद किय ॥
छं० ॥ १५६ ॥

दुर्गा केदार कवि का राजा को आशीर्वाद देकर विदा होना।

प्रथीराज चहुआन। दान गुन जान पग्ग धर ॥
अवलोकत से दून। पंच से देड़ बाच वर ॥
जानि समप्पै सहस। सहस वत्तह जौ दिज्जै ॥
बर विद्या रंजवै। तास दारिद्र न छिज्जै ॥
सोमेस सुअन सब जान गुन। दानह अंकन वालियौ ॥
केदार कहै सब कुसल कल। कवि लहु सुत परि पालियौ।
छं० ॥ १५७ ॥

दूहा ॥ चल्यौ भट्ट केदार जब। दिय प्रथिराज असीस ॥
करि सुभाव सामंत सब। उठि रुचि नायौ सीस ॥ छं० ॥ १५८ ॥

कवि की उक्ति।

पिथ्थ बलिय चहुआन पें। बामान ह्वै कवि आय ॥
[1]लिये दान केदार कह। फुनि ब्रह्मंड नमाय ॥ छं० ॥ १५९ ॥

कवि का शहाबुद्दीन से रास्ते में मिलना।

चल्यौ भट्ट गज्जन पुरह। मझ्झ रह मिल्यौ सहाब ॥
लिये सथ्थ घन सेन बर। हय गय [2]तथ्थ तहाब ॥ छं० ॥ १६०

गजनी के गुप्तचर का धम्मीयन के पत्र समेत सब समाचार शाह को देना।

* इस छन्द में "चल्लावनि सामंत सूर सब सेना थप्पी" यह पंक्ति चारों प्रतियों में अधिक है। कहीं कहीं कवि ने इसी कवित्त छन्द को ८ पंक्ति का मान कर "डोढ़े के नाम से लिखा है परन्तु यहा पर न तो इसके जोड़ की दूसरी पंक्ति है न इसका पाठक्रम समयोचित है इस लिये हमने इस पक्ति को मूल छन्द से बिलकुल निकाल कर अलग पाठान्तर में लिखा है।

(१) ए. कृ. को.-पाये। (२) मो.-सथ्थ।

कवित्त ॥ सोइ ग्राम सोइ ठाम। मान अप्पौ चहुआनं ॥
आदर सादर समुह। भट्ट गोरी सुरतानं ॥
ताहि सथ्थ वर दूत। रहैं ऐसें परिमानं ॥
जल महि ज्यों गति जोक। भेद कोई नन जानं ॥
मुक्कयो बाद वहे सु कवि। गए पास सुरतान चर ॥
आघात साहि गोरी सुबर। आषेटक चहुआन धर ॥ छं० ॥ १६१ ॥

अर्द्ध सथ्थ चहुआन। राज आषेटक षिल्लै ॥
हय हथ्थी वर साज। सबै जुग्गिनिपुर मिल्लै ॥
अप्पानो अपजोग। पुच्छि तत्तार प्रमानं ॥
कही सु दूतय बत्त। तत्त जंगली निधानं ॥
निय भट्ट बाद हार्‌यौ सु [1]निय। कछु कछु तत जंपे सगुर ॥
छम्मान बीर कग्गद लिषे। करो साहि सो सत्ति धुर ॥ छं० ॥ १६२ ॥

शहाबुद्दीन का पृथ्वीराज पर चढ़ाई करना।

सुनिय बत्त साहाब। बंचि कग्गर ततार बर ॥
अति आनंदिय चित्त। करिय अति धंघ राज धर ॥
कियौ निसानन घाव। धाक दस दिसि धर फट्टिय ॥
मिले षान अगिवान। चढ़न साहाब सु रट्टिय ॥
दस कोस साहि वर उत्तरिय। सरित तट्ट मुक्काम किय ॥
रग रत्त पीत डेरा बने। हय गय मीर गँभीर जिय ॥ छं० ॥ १६३ ॥

तत्तार खां का फौज में हुक्म सुनाना।

दूहा ॥ बोलि परिग्गह हूर सब। पुच्छे सकल जिहान ॥
षां पुरसान सु बोलि वर। वर बंध्यौ चहुआन ॥ छं० ॥ १६४ ॥

कवित्त ॥ कहै षान पुरसान। साहि गोरी परिमानं ॥
वर संभरि चहुआन। दूत भेज्यौ वनि दानं ॥
लहुति लोह लोहार। पग्ग पुरसान पटक्कै ॥
सुनत दूत वर वेन। साह सज्यौति सटक्कै ॥

(१) ए.-निव।

चहुआन सेन सायर मथन। गहन मान पुब्बा कह्यौ॥
चतुरंग सज्जि बाजिच सुर। करि गोरी आतुर चल्यौ॥छं०॥१६५॥

यवन सरदारों का शाह के सम्मुख प्रतिज्ञा करना।

षा षुरसान ततार। साहि सम्हें कर जोरिय॥
आन दीन सु विहान। एन चहुआन विछोरिय॥
हसहि मीर कहि धीर। मीर रोजा रंजानहि॥
पंच निवाज विकाज। [1]जाइ गोरी गुम्मानहि॥
इन बेर साहि सुरतान बर। करै दीन वत्ता सु गुर॥
भर सूर सधै बंधै न्रपति। कै जीवत गड्डै सुधर॥ छं०॥ १६६॥

दूहा॥ छय मुसाफ सुरतान अग। उंच उंच बंधि तेग॥
सुबर साहि साहाब सुनि। करै दीन उच्च वेग॥ छं०॥ १६७॥
सौगंध मानि साहाब षरि। ढिल्लीवै चहुआन॥
राति दीह सल्लै सुबर। पुब्ब बैर सुरतान॥ छं०॥ १६८॥

शहाबुद्दीन की चढ़ाई का आतंक वर्णन।

पद्धरी॥ चढ़ि चल्यौ साहि आलम असंभ। उप्पन्यौ जानि सायरन अंभ॥
जल थल थलं न [2]जल होत दीस। उनयौ मेछ बर बैर रीस॥
छं०॥ १६९॥

बज्जहि निसान धुंनित विसाल। हालंत नेज सुरतान हाल॥
बारुनि बहंत मदगंध बुंद। मानो कि कूट चलि सत रविंद
छं०॥ १७०॥

सज्यौति सेन सुरतान बीर। बढ़ि तेज तुंग जानै गंभीर॥
सम्हौ सु भट्ट मिलि आय राज। अति क्रूर तेज आहत्त साज॥
छं०॥ १७१॥

सुरतान कहै हो दिल्लि राज। आयौ सु दौरि निय सुनि अवाज॥
तव दूत कहै साहाब बाचि। आपौ सु भट्ट चहुआन जाचि॥
छं०॥ १७२॥

(१) ए. जोइ। (२) ए. कृ.-को.-मिल।

चहुआन सत्त हय दीय उच्च। सामंत अवर समदिय सरुच्च ॥
गज तीस अप्पि ग्रामह दुसष्ष। अप्पिय सु हेम राजन विलष्ष ॥
छं० ॥ १७३ ॥

[1]अनि द्रव्य कोट दीनौ सु भाइ। सामंत सब्ब रुचि सीस नाइ ॥
संभरिय बत्त सुरतान बीर। धारेव उअर मज्झै गँभीर ॥
छं० ॥ १७४ ॥

अग्गें सु बंधि निसुरत्ति षानं। दस पंच हथ्थ उत सुव्विहान ॥
पारस्स साहि लक्करिय लाल। मानो कि सुभ्भि परवाल माल ॥
छं० ॥ १७५ ॥

दूहा ॥ सुबर साहिं बंचिय निजरि। बर चल्लिय अगिवान ॥
यों पहुंच्यौ असपत्ति गनि। देस दिसा चहुआन ॥ छं० ॥ १७६ ॥

शहाबुद्दीन का सोनिंगपुर में डेरा डालना और वहां पर दुर्गा केदार का उससे मिलना और दूतों का भी आकर समाचार देना।

उतरि साह सोनंग पुर। दिसि दष्षिन बर थान ॥
किय डेरा केदार तब। मीर महुब्बति षान ॥ छं० ॥ १७७ ॥

अरिल्ल ॥ निसां [2]साम बज्जिय नौबत्तिय। किय निमाज उमरावन तत्तिय ॥
सज्जि महल साहाव बयट्ठौ। आयौ महल [3]उम्मरां जिट्ठौ ॥
छं० ॥ १७८ ॥

आय महल दुग्गा केदारह। दीन असीस विविधि विद्यारह ॥
मिलि सहाव सादर सम्मानिय। पुच्छिय कुसल विविध कल बानिय ॥
छं० ॥ १७९ ॥

दूहा ॥ पुच्छि कुसल आसन्न दिय। सम द्रुग्गा केदार ॥
तन विभूत जट सिंग म्रग। आए दूत सुच्यार ॥ छं० ॥ १८० ॥
दिय दुवाह तिन चरच वस। काइम साहि महाव ॥

(१) ए. कृ. को.-"अनि द्रव्य कोर दीनो सु भाइ"।
(२) मो.-मात्र। (३) मो.-उमराव।

[1]अग्र बोलि गोरी गरुअ। तब अति दिष्यौ [2]आव॥ छं० ॥ १८१॥

शहाबुद्दीन का कवि से पृथ्वीराज का समाचार पूछना और कवि का यथा विधि सब हाल कह सुनाना।

गाथा॥ आयम दिय लिय अग्गं। पुच्छिय षवरि बिवरि चहुआनं॥
अरु सामंत सु धीरं। पुच्छियं प्रीति रीति साहावं॥ छं० ॥ १८२॥

अरिल्ल॥ बषत बड़े सुरतान मान्नि मन। बंधी गास पंग प्रथि मंतन॥
हनिय अप्प कैमास मंच बर। भए चलचित सामंत सूर भर॥
छं० ॥ १८३॥

भरि बेरी चामंड सु बीरं। चमकि चित्त सामंत सधीरं॥
भयौ षीन चहुआन मंचि दुष। गय पिपास निद्रारु षुधा सुष॥
छं० ॥ १८४॥

चढ़ि आषेटक तुच्छ सेन सजि। सथ्थ सूर सामंत चिंति रजि॥
क्रीड़त देस मद्धि पंथानह। कंपै असि अरि मत्त पयानह॥
छं० ॥ १८५॥

भरि भंगान पुंडि मीना धर। गोरा भरा भज्जियं तज्जिर॥
सहस तीस सब सेन समथ्थह। आए भए रोज दस तथ्थह॥
छं० ॥ १८६॥

रोज तीस मुकाम थप्यौ यह। उतर्यौ आनि मद्धि जलपंथह॥
बषत समय साहि साहाब सुनि। चढ़ि अरि गंजि मंजि महरनि रन॥
छं० ॥ १८७॥

सुलतान का मुसाहिबों से सलाह करके सेना सहित आगे कूच करना।

दूहा॥ सुनिय बत्त साहाब चर। दिय निरिघाव निसान॥
अप्प षान मोरं वरा। कह्यो सजन सब्बान॥ छं० ॥ १८८॥
कह्यो षान षुरसान सम। षा तत्तार निसुरत्ति॥
कह्यो सचव सनियै सबै। जरन याह घर घत्ति॥ छं० ॥ १८९॥

(१) ए. कृ. को.-अग बंले। (२) ए.-आव।

अरिल्ल ॥ कीय बत्त षुरसान ततारह । आयस आन दीन सेला रह ॥
गय अंदर सयनह सुरतानह । कूच कूच भय सेन सबानह ॥
छं० ॥ १६० ॥

दुर्गा केदार के पिता का दुर्गा केदार को समझाना और धिक्कारना ।

दूहा ॥ अप्प अप्पयह उम्मरा । आए सज्जित सब्ब ॥
चमकि चंड केदार मन । आयौ तात [1]सु तब्ब ॥ छं० ॥ १६१ ॥
सुनिय वत्त कवि विविध बर । पति आषेटक साज ॥
सोमेसर सुअ जुद्ध थिर । सलिल [2]लज्ज सिंधु पाज ॥ छं० ॥ १६२ ॥
द्रुग्ग मत्ति सुत सों कहिय । तुम जानहु चहुआन ॥
पहिली भट अपराध बहु । माधव कियौ विनान ॥ छं० ॥ १६३ ॥

कवित्त ॥ दल मोगर मेवात । राज सुत्तौ परिमानं ॥
माधौ पच्छैं भट्ट । राज बैसास म आनं ॥
करौ बत्त न्रप हित्त । कपट दिष्यौ सुरतानं ॥
जाहु पास प्रथिराज । षबरि अप्पौ सु निदानं ॥
धनि भ्रम्म बंध संभरि न्रपति । निगम मोह संम्हौ मिलिय ॥
उज्जेन राज श्रीफल उदित । दे कग्गद संम्हौ चलिय ॥
छं० ॥ १६४ ॥

दुर्गा केदार के भाई का पृथ्वीराज के पास रवाना होना ।

दूहा ॥ लघु बंधव कविदास तिन । दरक चढ़ाइय सु वेग ॥
जाहु सु पानी पंथ तुम । करहि नरह उद्वेग ॥ छं० ॥ १६५ ॥

कवि का पृथ्वीराज प्रति संदेसा ।

कुंडलिया ॥ दिष्य फौज सुरतान की । वंधव मोकलि भट्ट ॥
तुम उप्पर गोरी सुबर । है गै सज्जे थट्ट ॥
है गै सज्जे थट्ट । सज्जि आयौ सुरतानं ॥
तिरि भर जल गंभीर । भीर सज्जे बहु पानं ॥

(१) मो.-सुन । (२) मो.-लाज ।

तीस लष्ष में साहि। [1]थट्ट तारे दस दष्षे ॥
तिन में पंच सु लष्ष। लष्ष में लष्ष सु दिष्षे ॥ छं० ॥ १९६ ॥

कवित्त ॥ सौर फिरस्ते टारि। दव्व मार्‍यौ सिंधु तट्टें ॥
सिंधु विहथ्थैं वीच। साह पुल बंधन घट्टें ॥
छुय मुसाफ तत्तार। मरन केवल विचारे ॥
सज्जि साथ चहुआन। काल्हि उतरिहैं पारे ॥
उप्परे डेर मुक्काम तजि। सेन काज [2]पुंटिय वजे ॥
नीसान हवाई मुंदरी। गज घंटानन डर सजे ॥ छं० ॥ १९७ ॥

दूहा ॥ जाय राज प्रथिराज पहि। विवरि षवरि सुरतान ॥
कहियौ [3]बेगौ सेन सजि। आयौ पंथ चंपान ॥ छं० ॥ १९८ ॥

कविदास की होशयारी और फुर्ती का वर्णन।

कवित्त ॥ चल्यौ चंड कविदास। दमकि उठ्यौ दा सेरक ॥
मनुं वासन किय हड्ड। क्रम्म चयलोक मने सक ॥
[4]कुसा तिष्ष कर कड्ढि। अग्र द्रिय वक्र निरष्षै ॥
मनों कुलटानि कटाच्छ। मध्य गुर जन सम लष्षै ॥
संचर्‍यौ एम संमीर बर। प्रोथ बात रोह्यौ प्रबल ॥
अध धर्‍यौ चक्र कर जेम हरि। मनुं जंबूर स छुट्टि कल ॥
छं० ॥ १९९ ॥

दास कवि का पानीपत पहुंचना और पृथ्वीराज से निज अभिप्राय सूचक शब्द कहना।

दूहा ॥ चल्यौ चंड कविदास तब। पहर एक निसि जंत ॥
अनल वेग हक्क्यौ दरक। आयौ पानी पंथ ॥ छं० ॥ २०० ॥

कवित्त ॥ उत्तम न्रिम्मल सु द्रह। पुलिन बर पंसु झीन सम ॥
करत राज जल केलि। सुमन कसमीर अगर जम ॥

---

(१) मो.-हथ्थ। (२) ए. कृ. को.-पुंटिय।
(३) ए. कृ. को.-बेगी। (४) ए. कसा।

सथ्थ स्हूर सामंत । मत्त षेलत हड्डूअ ॥
. ... . । .... ॥
दिन सेष धरी सत्तरु दुअह । [1]हहकि दरक मन वेग तहां ॥
कविदास आय तब जंपि न्रप । करौ सिलह सामंत सह ॥
छं० ॥ २०१ ॥

*दूहा ॥ मो दिष्षै न्रप दिष्षियौ । गोरी साहि नरिंद ॥
हसम हयग्गह सज्जि कै । दल वद्दल वर इंद ॥ छं० ॥ २०२ ॥
साहबदी सुरतान अब । तुम पर साज्यौ सेन ॥
[2]मों देष्षै देषौ न्रपति । घरी एक अप नेन ॥ छं० ॥ २०३ ॥

कवि के बचन सुनकर राजा का सामंतों को सचेत करना और कन्ह का उसी समय युद्ध के लिये प्रबन्ध करना ।

वृद्धभ्रमरावली ॥ सुनियं तब राजन चंड तनं [3]बयनं ।
तब जग्गिय वीरह धीर तनं नयनं ॥
तब सद्दिय सब्बह एक किए अयनं ।
सब सामंत स्हूरह सीस सजे गयनं ॥ छं० ॥ २०४ ॥
पहु आवरि वीरह अप्प तनं तयनं ।
मुष रत्तह व्यंबह श्रोन समं नयनं ॥
भिरि मुच्छह भौंहह भोंह समं षयनं ।
सब आवध सज्जिय भ्रत्तह जे हयनं ॥ छं० ॥ २०५ ॥

कवित्त ॥ तब सज्जि सेन प्रथिराज । मंत सब सामंत पुच्छिय ॥
हय अरोहि धुज जुरहि । काय [4]पथ होइ सुमत्तिय ॥
कहिय कन्ह चौंहान । सु थल्ल या अग्गें वेहर ॥
पुट्ठि सुने दिसि वाम । पूर जल्ल किन्न सु केहरि ॥
मंडियै जुद्ध हय छंडि सब । इक्क भाग रष्यौ चब्यौ ॥
मंनी सु वत्त सामंत न्रप । भल्ल भल्ल सब सेना पब्यौ ॥छं०॥२०६॥

(१) ए. कृ. को.-हकि ।　　　* यह दोहा मो. प्रति में नहीं है ।
(२) ए. कृ. को.-मै ।　　(३) ए. कृ. को.-बनयं ।　　(४) ए. कृ. को.-पप ।

चहुआन सेना की सजाई और व्यूह रचना।

भुजंगी ॥ सथं सज्जियं व्यूह प्रथिराज राजं। सुरं बीर रस उंच वाजित्र वाजं॥
भरं मंडलं मंडियं मंडि अन्नी। [1]रसं सूर सामंत सा सूर मन्नी॥
छं० ॥ २०७॥

भरं सहस वा बीस हय छंडि वीरं। तिनं रच्चियं व्यूह जल जात धीरं॥
नरं कन्ह चौहान गोयंद राजं। भरं जैत पर सिंघ बलिभद्र साजं॥
छं० ॥ २०८॥

बडं गुज्जरं दून हड्डा हमीरं। रचे अट्ठ सामंत वा पच भीरं॥
बरं बग्गरी देव पज्जून राजं। सुतं नाहरं सिंह परिहार साजं॥
छं० ॥ २०९॥

भए च्यार सामंत सो कर्णि कारं। बियं सब्ब धीरं परागं सु ढारं॥
भयो नारि पम्मारि जैतं समथ्थं। भयौ मध्य मेही प्रथीराज तथ्थं॥
छं० ॥ २१०॥

भरं मध्य उद्दिग्ग बाहँ पगारं। तिनं मझ्झि जद्दों सु जामानि सारं॥
सजे मध्य चंदेल भोंहा सु धीरं। तिनं मझ्झ लोहान सा विंझ बीरं॥
छं० ॥ २११॥

चढ़े रष्षिनं दष्षिनं रा पहारं। सहस्सं च अट्ठं चढ़े सूर सारं॥
छं० ॥ २१२॥

शहाबुद्दीन का आ पहुंचना।

दूहा ॥ सज्जि सेन साहाब सुर। आयौ आतुर हंकि॥
दिष्षि रेन डंबर डहसि। भर चहुआन असंषि॥ छं० ॥ २१३॥
गंभीरां सुरतान दल। अति उतंग [2]वरजोर॥
मिले पुब्ब पच्छिमह तें। चाहुआन चित घोर॥ छं० ॥ २१४॥

यवन सेना की व्यूह रचना।

कवित्त ॥ अनिय बंधि पतिसाह। जुद्ध जीपन चहुआनं॥
षां मुस्तफा दलेल। पुट्ठि रष्षे गिरवानं॥

(१) मो.-रसे। (२) ए. कृ. को.-अनि।

सजे सेन चतुरंग । दंद दंती बनि घट्टा ॥
सुबर बीर सुरतान । बान [1]उब्बरि जल छुट्टा ॥
चहुआन सुन्यौ आचंभ चर । सिंधु उतरि संम्हौ मिल्यौ ॥
दोउ दीन आय आवरि सुभर । षग्ग कढ्ढि षग्गह षुल्यौ ॥
छं० ॥ २१५ ॥

यवन सेना का युद्धोत्साह और आतंक वर्णन ।

हनूफाल ॥ आयो सु सज्जि सहाब । [2]उल्लथ्यौ सायर आब ॥
है लष्ष सारध एक । प्रति रची फौज विमेक ॥ छं० ॥ २१६ ॥
जति अनंत बज्जै बज्ज । गिरधरनि अंबर गज्जि ॥
भर सिलह बंधिय बीर । तजि आस जीवन धीर ॥ छं० ॥ २१७ ॥
सजि कसे आवध सब्ब । बर लज्ज देषिय [3]ग्रब्ब ॥
मद गज्ज अट्ठो अट्ठ । बर बेग राह सु घट्ठ ॥ छं० ॥ २१८ ॥
करि दौरि आयौ साहि । पंचास कोस [4]पहाहि ॥
विच राज जोजन एक । विश्राम सज्जिय सेक ॥ छं० ॥ २१९ ॥
तहां सिलह है गै भार । परसंसि पीर झुझार ॥
उन्नमिय नेज उतंग । गनि जाइ रुवन रंग ॥ छं० ॥ २२० ॥
षुर ऐह उड्डिय रेन । आकास मुंदिय तेन ॥
गहगही सद्द सु गाह । रन गहर पष्पर पाह ॥ छं० ॥ २२१ ॥
बानैंति बानैं साज । रस बीर धरिय सु गाज ॥
भय निजरि ट्रनिय सेन । भर भीर चिंतिय तेन ॥ छं० । २२२ ॥
बज्जंत रन रनतूर । निज भ्रम्म संभरि सूर ॥
जब देषि हिंदु उतारि । उद्धर्‌यौ षान ततार ॥ छं० ॥ २२३ ।

तत्तार का खां आधी फौज के साथ पसर करना, बादशाह का पुष्टि में रहना ।

दूहा ॥ कहि ततार साहाब सों । किय दल हिंदु उतार ॥
हम उत्तरियै मीर सब । तुंम रहौ पुट्ठि साधार ॥ छं० ॥ २२४ ॥

(१) मो.-उच्चरि ।　　(२) ए. कृ. को.-उद्धर्‌यो ।
(३) ए. कृ. को.-पब्ब ।　　(४) ए. कृ. को.-पहाह ।

कवित्त ॥ लष्ष एक है छंडि । कियौ तत्तार उतारह ॥
अद्व लष्ष दल चल्यौ । रह्यो सुरतान सुभारह ॥
मीर मसंद मसंद । अग्ग सज्जे भर सुभ्भर ॥
कुल अरेह अस्सील । बोलि पित पित्र नाम नर ॥
अग्गै सु भार हयनारि धरि । बानग्गीर बानैत तँह ॥
सजि सेन गरट चलि मंद गति । लग्गे बज्जन वीर रह ॥
छं० ॥ २२५ ॥

दोनों सेनाओं का परस्पर साम्हना होना।

दूहा ॥ बज्जे बज्जन लाग दल । उभै हंकि जगि वीर ॥
विकसे सूर सपूर बढ़ि । कंपि कलत्र अधीर ॥ छं० ॥ २२६ ॥

हिन्दू मुसल्मान दोनों सेनाओं का घोर घमासान युद्ध वर्णन।

गीतामालची ॥ छुट्टियं हयनारि दुअ दल गोम व्योमह गज्जियं ॥
उड्डियं आतस झार झारह धोम धुंधर सज्जियं ॥
छुट्टियं बान कमान पानह छाह आयस रज्जियं ॥
निरषंत अच्छरि सूर सुब्बर सज्जि पारथ मज्जियं ॥ छं० ॥ २२७ ॥
सज्जे वि सुभ्भर देवि ईसर आय गंध्रव किन्नरं ॥
नारद नद्दह मंडि मद्दह इष्षि नंचि अचंभरं ॥
हिंदू स जंपिय राम रामह सांइ अग्या सद्दयं ॥
असुरेव जंपिय दीन दीनय [1]पीर मीर महम्मयं ॥ छं० ॥ २२८ ॥
मिलि फौज दूनह एक मेकह झार धारह बज्जियं ॥
हक्के दुसाइय अप्प अप्पह वाहि आवध गज्जियं ॥
तन तेग [2]तुट्टय सीस लुट्टय कमध नच्चय केभरं ॥
वहि श्रोन पूरह कल करूरह किलकि जोगिनि जे सुरं ॥ छं० ॥ २२९ ॥
नच्चंत बीर बिताल्लि तालिय घरहरंत सु सद्दयं ॥
नच्चंत ईसुर रज्जि भीसुर डमकि डौंरुअ नद्दयं ॥
रस रूक बाहैं धाक धाहैं झाक आवध ओझरं ॥

(१) मो.-पदि नीर। (२) ए. कृ. को.-तुट्टहि, लुट्टहि।

असि पटापेलय सेल [1]मेलय सूर तुट्टहि सुभ्भरं ॥ छं० ॥ २३० ॥
परि सीस हक्कहि धर हहक्कहि अंत पाइ अलुभ्झरं ॥
उठि उट्टि झक्कसि केम उक्कसि सांइ सुथ्थल [2]जुभ्भरं ॥
एकेक चंपहि पीठ नंषहि धरनि धर परिपूरयं ॥
हकियं सु वेगं अलिय महमद करिय द्रग्ग करूरयं ॥ छं० ॥ २३१ ॥
सम चले गज्जह देषि रज्जह जोह हनि हनि जंपियं ॥
आवंत दून मसंद राजह देषि चच्चर चंपियं ॥
हनि संग ऊरह मान पूरह दो कलेवर गोइयं ॥
विद्ध वि राजह परे गाजह संगि एक परोइयं ॥ छं० ॥ २३२ ॥
रस रुद्र बीर भयान मच्चिय काल नच्चिय नोदयं ॥
हक्कीय राज दुअप्प सुभ्भर बीर बीरह मोदयं ॥
हँकि सूर मंत गयन्न लग्गिय वाह चंपिय आवधं ॥
ढिलि असुर सयंन पिंड पंचह चंपि जप्पिय सावधं ॥ छं० ॥ २३३ ॥
जामेवा जुद्ध अरुद्ध लग्गिय बीर जंपिय बीरयं ॥
सिद्धीय सिद्धय संत रासह ग्रध्र सोनह सीरयं ॥
. ... ॥
.... ॥ छं० ॥ २३४ ॥

वरनी युद्ध वर्णन।

कवित्त ॥ हय गय हय हय अरय। रथ्थ नर नर सों लग्गा ॥
हय सों हय पायल सु। पाय करि सों करि भग्गा ॥
ईस आन बर चवै। सूर सूरन हक्कारिय ॥
सार धार झिल्लै। प्रहार बीरा रस धारिय ॥
धरि एक भयानक रुद्र हुअ। सीस माल गंठी सु कर ॥
कविचंद दंद दुअ दल भयौ। मुगति मग्ग पुल्ले विदर ॥ छं० ॥ २३५ ॥

लोहाना का फुर्तीलापन।

साटक ॥ मीतं [3]गोप सरेत भीतय वरं नर जोति दिप्पी गुरं ॥
रंभं रंभ सुरथ्थयं च अम्रतं आलंब वाहं वरं ॥

(१) ए. कृ. को.-सेलहि। (२) ए. कृ. को.-जुथ्थरं। (३) ए. कृ. को. तोप।

दिष्टी दिष्टि विभारथोवि सरसा भारथ्थ बिय बुद्धयं ॥
गोरी सा सुरतान रुक्कति तयं आजानबाहं बरं ॥ छं० ॥ २३६ ॥

लोहाना और पहाड़राय का शाह पर आक्रमण करना और यवन सेना का उन्हें रोकना।

दूहा ॥ लोहानो आजान वर। लोहा लंगरि राव ॥
कढ्ढे लंबी तेग वर। साह सनंमुष धाव ॥ छं० ॥ २३७ ॥
सज्जि [1]सेन तूंअर सुभर। [2]वढ्ढिय हय चढ़ि षेत ॥
समुह साहि दिष्यौ सु द्रग। बंध्यौ बंधन नेत ॥ छं० ॥ २३८ ॥

नराच ॥ सु दिट्ठि दिष्पि फौजयं, पहार साहि सम्मयं।
चव्यौ सु राव सूर मंत, दिष्पि सम्म रम्मयं ॥
बचे सु राम बीर बीचि, साजि गाज उट्टए।
कढ़े सु सस्त्र सारि झारि, मीर सीस तुट्टए ॥ छं० ॥ २३९ ॥
मिली दु फौज हक्कि धक्कि, अन्य अन्य आवधं।
जयं सु अप्प बंछि बंधि, वीर संधि सावधं ॥
तुटे सु षग्ग भग्ग भार, दंत उड्डि दामिनी।
बरंत हूर मीर धीर, काम [3]बंछि कामिनी ॥ छं० ॥ २४० ॥
बरंति सूर अच्छरी, सु देह रोहि रथ्थयं।
ग्रहंत अग्नि एक पंति, उर्द्ध जात तथ्थयं ॥
मच्यो करार धार मार, सार सार धारयं।
परंत एक तुट्टि तेग, उट्ठि झार मारयं ॥ छं० ॥ २४१ ॥
करें किलक्क बीर हक्क, सद्दि कंठ पूरयं।
रमंत रासि भीर भासि, नंदि नंचि नूरयं ॥
तुटंत सीस रोम रीस हक्कयं धरप्परं।
... . ॥ छं० ॥ २४२ ॥
नचै कमंध तुट्टि रंध [4]अब्भि रंत संभरं।
अलुझ्झि कंठ कंठ एक तुट्टि तेग दुब्भरं ॥

(१) ए.-फौज। (२) ए. कृ. को.-कढ्ढिय।
(३) ए. कृ. को.-बंधि, वादि। (४) ए. कृ. को.-भर।

वहंत सार बार पार ता रुरंत अंतरं।
ग्रहंत दंत दंत एक कंठ कंठ मंतरं ॥ छं० ॥ २४३ ॥
झटा सु हाक झाक धाक साल सेल संमुहं।
करंत घाव जंम [1]डाव घाव घाव रंमहं ॥
हुअंत षंड षंड घाउ सुन्नरं बगत्तरं ॥
परंत बाजि षंड भाजि सुंडरं सु पष्परं ॥ छं० ॥ २४४ ॥
झरंत मत्त सुंड दंत षंड षंड चिक्करं।
ठिले सु मीर एक धीर नट्ठि षेत निक्करं ॥
चली सु फौज लष्षि साहि रोहि गज्ज सज्जियं ॥
हकारि मीर बब्बकारि षग्ग धारि गज्जयं ॥ छं० ॥ २४५ ॥

क्षत्रिय वीरों का तेज और शाह के वीरों का धैर्य्य से युद्ध करना।

कवित्त ॥ बीर बीर षुट्टए। बीर बीरह आहुट्टे ॥
सार धार बज्जे प्रहार। मद ज्यों दुअ जुट्टे ॥
रन हक्कारें राव। सिंघ पर एन सु छुट्टे ॥
वर उतंग भर सुभर। अप्प पर अनत न छुट्टे ॥
बर बीर साहि दिष्षौ निजरि। सां षुल्लै कुल चाढ़ि सहु ॥
जाने कि काल जीहा उक्कसि। उद्दिग बाह [2]पगार बहु ॥
छं० ॥ २४६ ॥

दूहा ॥ हय गय रघ्य अरघ्य हुअ। नर सों नर नर लग्ग ॥
सघन घाइ उर बज्जते। भय भींभर द्रग भग्ग ॥ छं० ॥ २४७ ॥
हुअ हकार गज्जिय सु भर। जुटे साहि तसील ॥
मानों मत्त गयद दो। जुटि अंकस विन पील ॥ छं० ॥ २४८ ॥

उक्त दोनों वीरों का युद्ध और अन्य सामंतों का उनकी सहायता करना।

---

(१) ए. कृ. को.-दाव।　　(२) मो. पमार।

भुजंगी ॥ जुटे जोध जोधं अभंगं करालं। उठे मुष्य नासा नयन्नं बरालं॥
मिले छोह कोहं अलग्मान लग्गे। परे लोह लत्तं निघत्तं करग्गे॥
छं० ॥ २४९ ॥

दुअं दीन दीदेर ते लोह [1]छक्के। फिरै गेन देवी हकारंत हक्के॥
भए चाल बंधं [2]मसंदं मसंदं। करें हक्क हक्कं सु आहत सद्दं॥
छं० ॥ २५० ॥

ढरें संध बंधं बहैं षग्ग धारें। मनों चक्क पंकं कुलालं उतारें॥
लगे [3]संग अंगं कढ़ें बार पारं। बहै जानि जावक्क श्रोनं प्रनारं॥
छं० ॥ २५१ ॥

लगै गुर्ज सीसं दुअं हथ्थ जोरं। दधी भाजनं जानि हरि ग्वाल फोरं॥
मिले हथ्थ बथ्थं गहै सीस केसं। जरे जम्म दड्ढं महा मल्ल भेसं॥
छं० ॥ २५२ ॥

करें छुल्लिका जुद्ध [4]कित्ते ति बीरं। दिषें भेज अंगं मनों मुंड चीरं॥
रुपे बीर सामंत डिग्गे न पग्गं। तुटै सीस धक्कै धरं हक्क अग्गं॥
छं० ॥ २५३ ॥

चले श्रोन षारं मची कीच भूमी। अभूतं सु कंकं महाबीर भूमी॥
जहा षान तत्तार रुपि राह रूपं। तहां चक्क रुपी प्रथीराज भूपं॥
छं० ॥ २५४ ॥

मिले मुष्य गोयंद चहुआन कन्हं। जुरे जैत बल्लिभद्र परसंग नन्हं॥
परे मेच्छ व्यूहं सु पावै न जानं। करी पारसं कोपि चहुआन आनं॥
छं० ॥ २५५ ॥

गहों साहि गोरी हरों स्वामि चासं। बहै सथ्थ लोहान ज्यों काल ग्रासं॥
मुऱ्यौ षान तत्तार अप्पार मारं। परे षेत अंगं अभंगं अपारं॥
छं० ॥ २५६ ॥

लिये जीति वाजिच हस्ती तुरंगं। तक्यौ तोमरं साहि सज्यौ कुरंगं॥

---

(१) ए. कृ. को.-छक्कं, हक्कं। (२) ए. कृ. को.-मसंवं।
(३) ए. कृ. को.-मंग। (४) मो.-कित्ते सु।

*　....　....　।　....　.... ॥ छं० ॥ २५७ ॥

यवन सेना का पराजित होकर भागना।

कवित्त ॥ [1]लुथ्थि लुथ्थि आहुट्टि। लुथ्थि पर लुथ्थि अहुट्टिय ॥
षां षुरसान ततार। षान रुस्तम बे जुट्टिय ॥
अबर सेन अध लष्य। तेह घाइल भर भग्गिय ॥
सहस [2]सत्त परि षित्त। मुष्य सामंत विलग्गिय ॥
मत्तेति लोह छक्के गरुअ। हरुअत्तन करि गरुअ किय ॥
भग्गौ सु तूल सुरतान दल। क्रम्म क्रम्म उड्डं बरिय ॥ छं० ॥ २५८ ॥

छः सामंतो का शाह को घेर लेना।

चढ़त गज्ज साहाब। दिठ्ठ पाहार सु दिष्यिय ॥
रा जद्दव जामानि। राव भोंहा भर लष्यिय ॥
लोहानों आजान। बाह उद्दिग पग्गारह ॥
बिंझराज चालुक्क। देषि षट सामंत सारह ॥
दौरे सु सज्जि असिवर सुमुष। गहो गहो जंपेव सुर ॥
आए मसंद अड्डे दुदस। मुझ्झ अलुझ्झिय साह पर ॥
छं० ॥ २५९ ॥

उत्तह बीस मसंद। इत्त सामंत सत्त षट ॥
बज्जै सार करार। झार उड्डंत रूक झट ॥
[3]पसरन श्रोन प्रवाह। गाहि रन वीर समथ्थं ॥
परे मसंद मसंद। धरनि सामंत सु हथ्थं ॥
चंप्यौ सु गज्ज गोरी गरुअ। रा भोंहा हय सीस गय ॥
घेर्यौ सु सब्ब सामंत मिलि। लोहानों गज रोह हय ॥ छं० ॥ २६० ॥

लोहाना का शाह के हाथी को मार गिराना।

दूहा ॥ हक्कि तुरी लोहान तव। हन्यौ कंध गज पग्ग ॥
ढरिग सीस पुंतार सम। धरिनि दंत दोय लग्ग ॥ छं० ॥ २६१ ॥

* मालूम होता है यहां के कुछ छन्द खण्डित हो गए हैं।

(१) मो-लोथि।　(२) ए. कृ. को. मित्त।　(३) ए. कृ. को.-पसरत।

शाह का पकड़ा जाना।

कवित्त ॥ ढरत कंध गज साहि। गह्यौ पाहार पंचि कर ॥
कसिय बाह तूंवर सतेन। हय डारि कंध पर ॥
गह्यौ देषि सुरतान। सेन भग्गे सब आसुर ॥
परी लूटि हय गय समूह। बर भरे दरक [2]जर ॥
परे मीर सत्तह सहस। सहस अड्ड हय [3]पंचि गय ॥
दिन अस्त माहि साहाब गहि। दियौ हथ्थ अप्पन सु रय ॥
छं० ॥ २६२ ॥

मृत वीरों की गणना।

दूहा ॥ सय चत्तिय परि हिंदु रन। सत्त एक हय थान ॥
सामंता सब तन कुसल। जय लद्धी चहुआन ॥ छं० ॥ २६३ ॥

लोहाना की प्रशंसा, शाही साज सामान की लूट होना।

कवित्त ॥ लोह हद्द मंडीय। मोहि विसमै द्रिग लिन्निय ॥
अहत कंट मंडयौ। होम पासंग सु किन्निय ॥
सकति अग्ग दुझ्झरी। किन्न पूजा कज बढ्ढिय ॥
सुजस पवन छुट्टयौ। कित्ति चाव दिसि फुट्टिय ॥
आवद्ध रतन लोहान बर। लोहा लंगर धाइयां ॥
आजान बाह बहु भूप बल। गहन तेग उच्चाइयां ॥ छं० ॥ २६४ ॥
गह्यौ साहि सुरतान। जोध हय गय तहं भग्गे ॥
जमदड्ढां जम दड्ढ। असम असिवर नर लग्गे ॥
षामर छच रषत्त। तषत्त लुट्टे सुरतानी ॥
बंधि साह सु विहान। सुकर दीनौ चहुआनी ॥
बर वंध गए ढिल्ली तषत। जै बज्जा वज्जे सघन ॥
सोमेस सुअन संभरि धनी। रवि समान तप

(२) ए.-जारन। (३) ए. कृ. को.-पंचि। (

पृथ्वीराज का सकुशल दिल्ली जाना और शाह से दंड लेकर उसे छोड़ देना।

गहिय साहि आलम्म। गए प्रथिराज अप्प ग्रह ॥
पोस मास पंचमिय। सेत गुरवार कत्ति कह ॥
जोग सकल गहि साह। सज्जि दिल्ली संपत्तौ ॥
अति मंगल तोरन। उछाह नीसान घुरत्तौ ॥
दिन तीस रष्षि गोरी गरुअ। अति आदर आसन्न बर ॥
करि दंड सहस अट्ठह सु हय। गय सु सत्त लिय मुक्कि कर ॥
छं० ॥ २६६ ॥

दंड वितरण।

दूहा ॥ अर्द्ध दंड [1]प्रथिराज पहु। दीनौ राव पहार ॥
अवर पंच सामंत अध। दीनौ प्रथुक पथार ॥ छं० ॥ २६७ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके दुर्ग्गा केदार संवादे पातिसाह ग्रहनं नाम अट्ठावनवों प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ ५८ ॥

(१) मो.-पतिसाह।
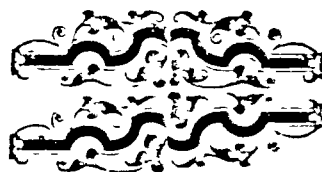
अथ दिल्ली वर्णनं लिष्यते ।

(उनसठवां समय ।)

पृथ्वीराज की राजसी ।

दूहा ॥ साप साष भट भाष षट । । दर सम वर पुर इंद ॥
तपै सूर सामंत इछ । दिल्लिय चंद कविंद ॥ छं० ॥ १ ॥

दिल्ली के राज्य दरबार की शोभा ।

अति अति रूप अनंत बर । जरि जराव बहु भंति ॥
सभा सिंगारिय सकल भर । मनु सुरपति ओपंति ॥ छं० ॥ २ ॥
मधुरिति छत्र विराज महि । सिंघासन बहु साज ॥
जनु [1]कि मेर उतकंठ महि । सामॅत रिद्धि सकाज ॥ छं० ॥ ३ ॥

कवित्त ॥ पट सुभाष षट द्रंन । वहुत बज्जन तहं बज्जत ॥
रंग राषि षट भंति । करिय में अट्टह गज्जत ॥
वपु सुमेर गति सप्प । छके पट रिति मद मत्तह ॥
मनहु काम प्रतिबिंब । । लयौ अवतार [2]दिल्लि यह ॥
चल चलत राइ चिहुं चक्क के । आयस रन डंडक गहन ॥
चहुआन भान सम भान तप । रहन वास उडुपति परन ॥
छं० ॥ ४ ॥

निगमबोध के बाग की शोभा वर्णन ।

नराच ॥ सुधं निगंम बोधयं, जमंन तट्ट सोधयं ।
तहां सु बाग ऽच्छयं, बने सु गुल्ल अच्छयं ॥ छं० ॥ ५ ॥
समीर तासु वासयं, फलं सु फूल रासयं ।
विरथ्य वेलि डंबरं, सुरंग पान अंमरं ॥ छं० ॥ ६ ॥
जु केमरं कुमंकुमं. मधुप्प वास तं भ्रमं ।

(१) मो. जनु कीरन्न । (२) ए. तिनह ।

अनार दाप पल्लवं, सु छच पत्ति ढिल्लवं ॥ छं० ॥ ७ ॥
श्री षंड थंड [1]वासयं, गुलाब फूल रासयं ।
जु चंपकं कदंबयं, षजूरि भूरि अंबयं ॥ छं० ॥ ८ ॥
सु अंननास जीरयं, सतूतयं जंभीरयं ।
अषोट सेव दामयं, अवाल्ल बेलि स्यामयं ॥ छं० ॥ ९ ॥
जु श्रीफलं नरंगयं, सबद्द स्वाद हीतयं ।
चवंत मोर वायकं मनो संगीत गायकं ॥ छं० ॥ १० ॥
उपम्म बग्ग राजयं, मनों कि इंद्र साजयं ।
... , ... ॥ छं० ॥ ११ ॥

दूहा ॥ उड़ि सु वास गुलाल अति । उड़ि अबीर असमान ॥
मनहु भान अंबर सुरत । बजी तंति सुरगान ॥ छं० ॥ १२ ॥

दरबार की शोभा और मुख्य दरबारियों के नाम ।

* बेलीविद्रुम ॥ बजि तंति तंचिय बज्जनं । सुरगान [2]सज्जिय सुरगनं ॥
गुलाल लज्जिय अंगनं । आरक्त रंगि परंगनं ॥ छं० ॥ १३ ॥
चहुआन ओपिय छचयं । वंधान बंधिय सचुत्रं ॥
सामंत दरगह [3]सज्जयं । करतार कोन सु कज्जयं ॥ छं० ॥ १४ ॥
ढरि चमर दुअ भुज ढिल्लयं । मधु उपम मधुवन मिल्लयं ॥
गोयंद निठ्ठुर सल्लष्पयं । धुर धरन गद्दिय नष्पयं ॥ छं० ॥ १५ ॥
बनि इंद देव सु बन्नयं । सोमेस बंधव कन्स्यं ॥
चष पटिय चष्पन थट्टयं । दस लष्ष मीर दवट्टयं ॥ छं० ॥ १६ ॥
रिषि आप आप विधुत्तयं । थिर रहै रिद्धि न थुत्तयं ॥
गुरराम पिठ्ठ विराजयं । जनु वेद ब्रह्म सु साजयं ॥ छं० ॥ १७ ॥

---

(१) ए -वासयं ।

* इ। छन्द को मो. प्रति मे दण्डमालची करके लिखा है । वास्तव मे कौन छन्द ठीक है इसके लिये हमने प्रचलित हिन्दी पिंगलों की छानबीन की परन्तु कुछ भी पता न चला अस्तु हमने ए. कृ. को. तीनों प्रतियों के पाठ को मान कर मो. प्रति के पाठ को पाठान्तर में दिया है।

(२) ए. कृ. को सज्जि कि सरगन । (३) ए. सज्जियं ।

सुष अग्ग चंद सु भष्षनं। रज रीति हद्द सु रष्षनं ॥
हंडीर चंद सु पाहरं। नर नाथ दानव नाहरं ॥ छं० ॥ १८ ॥

वनि अन्यो अन्य सु ठौरयं। सुनि तंति सुरगन सोरयं ॥
पिट्ठ स दिट्ठय पासनं। रचि अंब सेत हुतासनं ॥ छं० ॥ १९ ॥

चामंड लष्ष सु लष्षनं। रजि हिंदु राज सु रष्षनं ॥
रनधीर सामंत सुभ्भयं। भिरि भंजि मीर सु द्रभ्भयं ॥ छं० ॥२०॥

सुष अग्ग वाजन ठट्टयं। पहु दीप मझझाल कट्टयं ॥
दोसत्त जुर रा दुष्षनं। चिहु चक्क चारु सु पिष्षनं ॥ छं० ॥ २१ ॥

घुरि चंब सुर तहं बज्जनं। गह्नि छंड गोरिय गज्जनं ॥
रचि महुल मधुरिति मधुरयं। श्रम छंडि मंडि सु पिष्षयं ॥
छं० ॥ २२ ॥

दिल्ली नगर की शोभा वर्णन।

त्रोटक ॥ घुरि घुम्मिय चंब निसान घुरं। पुर है प्रथिराज कि इंद्रपुरं ॥
प्रथमं दिलियं किलय कहनं। ग्रह पौरि प्रसाद एना सतनं ॥
छं० ॥ २३ ॥

धन भूप अनेक अनेक भती। जिन बंधिय बंधन छत्रपती ॥
जिन अस्व चढ़ै घरि अस्सि लषं। बल श्री प्रथु रूच अनेक भगं ॥
छं० ॥ २४ ॥

दह पौरि सु सोभत पिष्ष वरं। नरनाह निसंकित दास करं ॥
भर हट्ट सु लष्षनयं भरयं। परि वस्त अमोल नयं नरयं ॥
छं० ॥ २५ ॥

तिहि बीच महल्ल सतष्पनयं। लषे कोटि धजी सु कवी गनयं ॥
नर सागर तारंग सुद्ध परें। परि राति सुरायन बाहुपरें ॥
छं० ॥ २६ ॥

---

(१) मो. ए सूहन। (२) ए कृ. को. रूष्षनं। (३) ए. कृ. को. नारि।
(४) ए. कृ. को. लुष्षनयं। (५) ए-सदे।

सचि कीच ओगालन हट्ट मझें। दिपि देव कैलासन दाव दझें॥
[1]रजितार वितारन भंति नवी। परिजानि हुतासन सत्त छवी॥
छं० ॥ २७॥

मनु सावक पावक मद्द किय। विन तार अतारन मारि लियं॥
इन रूप टगं मग चाहनयं। मनों सूर सबै ग्रह राहनयं॥
छं० ॥ २८॥

तिन तट्ट कलिंदय तट्ट सजं। थर मझझन तार अनेक सजं॥
तिन अग्ग सुभंत सु बग्गनयं। लषि लष्पि चौरासिय उड्डनयं॥
छं० ॥ २९॥

पचि लल्लिय नील्लिय मानकयं। रतनं जतनं मनि तेज कयं॥
सुभ दिल्लिय हट्ट सु नैर मझें। करि दंत मिलंत गिरंत सझें॥
छं० ॥ ३०॥

इय सामॅत दामित रूप कला। वर बीर उठै घरि सत्त कला॥
जिन सामॅत सामॅत सुड्डरयं। घटि बड्डि मॅडे गिर दुम्भरयं॥
छं० ॥ ३१॥

कवित्त ॥ परिहारह बन बीर। आय हथ जोरि सु उभ्भिय॥
भोजन सद्द प्रमान। तहां [2]प्रथु सामॅत सुभ्भिय॥
सभा विसरजिय सूर। आय बैठक बैठारिय॥
बहुत मंस पकवान। जबुकि प्रथमी आधारिय॥
षट ग्रन्न दरग्गह सोम सुअ। केसर अगर कपूर उर॥
सामंत नाथ चरचिय सबन। सिव दड्ढी ढुंढा सहर॥
छं० ॥ ३२॥

राजसी परिकर और सजावट का वर्णन।

तोटक ॥ इह इंद्र पुरं किधों दिल्ल पुरं। द्रुम उप्पिय मंदिर सोम [3]सुरं॥
इह मेर किधों इंद्र चापनयं। बहु भंति जरे मनि पट्टनयं॥
छं० ॥ ३३॥

(१) ए. कृ. को.-रचिता विरलारन। (२) ए-प्रिथा, ए. कृ. को.-प्रिथ।
(३) मो-सुअ।

सुर मध्य विराजत सूर ससं। सु मनों सुर उप्पर भान भ्रमं ॥
घन मद्धि तड़िक्त कला विकलं। पुर धाम सुभट्ट सषा प्रबलं ॥
छं० ॥ ३४ ॥

सुभ रूप तहां गनिका गनयं। भ्रमि मानव सिद्ध सुरं भ्रमयं ॥
गहि तंत्रिय जंत्रिय डक्क बजै। जनु मार किधों कुरु कोक सभ्झै ॥
छं० ॥ ३५ ॥

उड़ि बीर अबीर न भारनयं। जनु मेर सुधा गिर धारनयं ॥
लष एक लियै रजनी सजनं। ग्रह रूप अनूपम काम मनं ॥
छं० ॥ ३६ ॥

भरि द्रव्य रमै सब हीर मनं। रमि जूप बदै रमनी गमनं ॥
सब हारि निहारि कोपीन सभ्झै। जब खिल्लिय नारि अपारि दभ्झै ॥
छं० ॥ ३७ ॥

इन मान अमान सु रूप रमै। मनु सिद्धि करामति क्रम्म क्रमै ॥
बनि पंति सुकंत निसान लयं। मुष दिट्ठिय ढिल्लिय मालनयं ॥
छं० ॥ ३८ ॥

मनु रूप अनूप सितं विकनं। भर भीर बढ़ी नह दिट्ठ नयं ॥
[1]घन घोरत सोर अमोघ नयं। मनु वाल सजोवन प्रौढ वनं ॥
छं० ॥ ३९ ॥

सु जहां चहुआन सु भोन सजै। सु मनों ससि कोरन कोर मभ्झै ॥
ग्रह दिष्षिय दासि अवासनयं। तिन सोभ सुकाम करी [2]तनयं ॥
छं० ॥ ४० ॥

बहु रूप रवंन रवंन भती। मुष अम्रत सम्रत प्रान पती ॥
सुर अट्ठ सपो अँग रष्षि कला। मनु सेस वधू प्रभु की अवला ॥
छं० ॥ ४१ ॥

तिन धाम कलस्सन कोर बनी। जनु अंबर डंबर भान घनी ॥

---

(१) ए. कृ. को.-घन सोर अघोर'   (२) ए. कृ. को. नटयं, नटयं।

सित सत्त कलस्स सु [1]सुंदरयं । तिन मझ्झ सषी बहु सुंदरयं ॥
छं० ॥ ४२ ॥

गज राजत राज सु छत्रपती । प्रथिराज कैमास हन्यौ सु मती ॥
चहुआन बधू दसयं भनयं । भिरि लिद्धि मंडोवर दंपतियं ॥
छं० ॥ ४३ ॥

सुभ इंछिनियं कनयं [2]सुनयं । रिति छत्र कला सुर संपतयं ॥
तिय पिथ्थह व्याह पुंडीर कियं । मनु अंबर मद्धि तड़ित्त वियं ॥
छं० ॥ ४४ ॥

भनि नाम चंद्रावति चंद सुती । सुष भाग सुहागन चंद सुती ॥
घर दाहुर दाहिम पुत्रि दयं । तिन पेट रयन्न कुमार भयं ॥
छं० ॥ ४५ ॥

ससि वृत्त सु भंतिय कृष्ण करी । मनु आनिय पीय सु कंध धरी ॥
तिन रूप [3]रूपं मनि लिद्ध रजं । चहुआन सु आनिय देव सजं ॥
छं० ॥ ४६ ॥

बरि लिन्निय षग्ग इंद्रावतियं । जनु मुष्य सरस्वति गावतियं ॥
कुल भान सती सुत हाहुलियं । जनु किस्न रुकमनयं मिलयं ॥
छं० ॥ ४७ ॥

ग्रह पान सुती सु पजून घरं । मनु चित्र कि पुत्तरि आनि धरं ॥
रिनथंभ हंसावति काम कला । तिन दीपति छिप्पत चंद कला ॥
छं० ॥ ४८ ॥

सुर अच्छर मच्छर मान वती । किय अप्प [4]जंजोग संजोग सती ॥
वह रूप अनूप सरूप मती । नह दिष्षिय नागिनि इंद्र सुती ॥
छं० ॥ ४९ ॥

मनु काम [5]धनुंक करी चढ़यं । किधों पंभ द्रुमं सु हिमं [6]चढ़यं ॥
सुर कोटि त्रिषंड नयन्न सुजं । तट तास सुवास जमुंन [7]सजं ॥
छं० ॥ ५० ॥

(१) मो.-सन्दरयं । (२) ए.कृ को -सुमय । (३) ए.कृ को.-रूपमनि । (४) ए कृ को. संजोग ।
(५) ए. कृ. को.-धनक । (६) ए.-चढ़य । (७) ए. कृ.-सज्जं ।

तिन तट्ट अनेक [1]गयंद सढं । पग नट्ट गिरं पवनंति बढं ॥
बहु रूप अनूप सरूप भती । दिषि जानि कला सुर देव पती ॥
छं० ॥ ५१ ॥

गज षंभ छुटंत उमद्द मदं । मनु गाजत गज्ज अषाढ़ भदं ॥
कि मनों षह उट्ठिय कंठ लयं कि बढ़े मनु उप्पर बद्दरयं ॥
छं० ॥ ५२ ॥

बहु रंग सुरंग सु वस्त्र दिपे । तिन मेर [2]सिषंन सुभान छिपै ॥
तिन मध्य रयंन कुमार नयं । सुत स्त्रर गयंन विदारनयं ॥
छं० ॥ ५३ ॥

दिनप्रत्ति रसें तट झूलनयं । सुर पेषि सुराथह भूलनयं ॥
तट रेष रिषी सर पालनयं । क्रित नाम सुधारन कालनयं ॥
छं० ॥ ५४ ॥

राजकुमार रेनसी का ढुंढा की गुफा पर जाकर उसका दर्शन करना, ढुंढा की संक्षेप में पूर्व कथा ।

[3]सत तीन बरष्ष असी अगलं । जब ढूंढ ढढोरिय भू सगरं ॥
तिन सिद्ध गुफा अवतार लियं । मुनि जानि ब्रह्मा समयं दिपयं ॥
छं० ॥ ५५ ॥

तिन ढिग्ग रयंन कुमार गयं । मुनि जानि क्रपाल क्रपाल भयं ॥
बजि तारिय भारिय सद्द बधं । प्रति जीव सु जोति गयंन सिधं ॥
छं० ॥ ५६ ॥

जट जूट विकट्ट भ्रकुट्ट भरं । मधि क्रन्न सुकी सुक मंडि घरं ॥
सुत चंद सु पानि जुगं जुरयं । सिधद्रिग्ग उघारि दिपं नरयं ॥
छं० ॥ ५७ ॥

तिन पुच्छिय बत्त मही रिषयं । तुम बीसल पुत्र नरं [4]भषयं ॥
अब किल्लिय दुल्लिय बास कियं । प्रथमं अजमेर कुबेर दियं ॥
छं० ॥ ५८ ॥

---

(१) ए.-मयद । (२) ए. कृ. को. मयंन ।
(३) मो. तिन तीय बरष्ष असी अल्गं । (४) मो.-भषन ।

दूहा ॥ जब उतपंन सु कुंड मझि। दिय रिषि नें बर ताम ॥
जाहु सु पहिलै [1]अजय बन। जुग्गिनि वास सु ठाम ॥ छं० ॥ ५९

कवित्त ॥ पुर जोगिनि सुर थान। [2]जुग्गहने ताथें तारिय ॥
सतजुग संकर सधर। परत प्रथिराज सु पालिय ॥
द्वापर पंडव राव। सत्त कौरव संघारिय ॥
कलिजुग पति चहुआन। जिन सु गोरी घर ढारिय ॥
घर जारि पंग [3]पारन खरि। फिरि दिल्ली चिहु चक्क धर ॥
मेवात पत्ति इक छच महि। [4]निव अमेव आवट्टि नर ॥छं०॥६०॥

रेनु कुमार की सवारी और उसके साथी सामंत कुमारों का वर्णन।

दूहा ॥ सुभट सीष दिय भर सबन। रिषि प्रमान करि भीर ॥
बिन तारी करतार बर। तट वहि जमना तीर ॥ छं० ॥ ६१ ॥
घुरि निसान सद्दह धमकि। चढ़ि गज रेन कुमार ॥
मनों इंद्र ऐराप धरि। करिय असुर संघार ॥ छं० ॥ ६२ ॥

पद्धरी ॥ अरोहि गज्ज रेनं कुमार। चढ़ि चले सुतन सामंत सार ॥
सुत कन्ह मन्नि ईसरह दास। दिय देस रहन पट्ट [5] सु वास ॥ छं० ॥ ६३ ॥
सुत निडर बीर चंद्रह [5]जु सेन। पल मारि भारि कर बद्ध ऐन ॥
सम जैत सुअन करनह सु जाव। जिन लिये सच सिर सिद्ध दाव ॥ छं० ॥ ६४ ॥
गोयंद सुतन सामंत सींह। जिन स्वामि काम नहि लोपि लीह ॥
कैमास सुअन परताप आप। जिन रष्पि छम्म घर वट्ट बाप ॥ छं० ॥ ६५ ॥
पुंडीर धीर सुत चंद्रसेन। जिन चलै सहस द्वै उड्डि रेन ॥

(१) ए. कृ. को.-अज्ज। (२) ए. कृ को.-जुगह तेता ते तारिय।
(३) ए. कृ. को पारि। (४) ए. कृ. को.-निहच मेव आवट्टि नर।
(५) ए. सु

परिहार पीय सुअ तेज पुंज । मनु दाप पक्क कै केलि कुंज ॥
छं० ॥ ६६ ॥

गुरराम सुअन हरिदेव रूप । मुष मिठ दिट्ठ कलि परन भूप ॥
हम्मीर सुतन नाहर पहार । दस पंच बरष महि बजिय सार ॥
छं० ॥ ६७ ॥

जग जेठ कुँअर चामंड जाव । जिन लिये कोट दस भंजि राव ॥
सुत महनसिंह जैसिंघ बीर । जिन रष्षि वंस पिचवढ नीर ॥
छं० ॥ ६८ ॥

पंमार सिंघ सुअ राजसिंघ । जुरि जुद्ध रुद्र उड़ि बाह जंघ ॥
रिनधीर सुतन गुज्जरह राम । दस देस लिद्ध ग्रह अप्प धाम ॥
छं० ॥ ६९ ॥

बरदाइ सुतन जल्हन कुमार । मुष वसै देवि अंबिका सार ॥
हरिसिंघ सुतन पातल नरिंद । गज दंत कढे जनु भील कंद ॥
छं० ॥ ७० ॥

विंझा नरिंद सुत देवराज । सो जंग मंझ गज करत पाज ॥
अचलेस सुतन देवराज पट्ट । तन तरुन तेज गंगा सु घट्ट ॥
छं० ॥ ७१ ॥

तोंअर सुतन्न विरमाल कन्ह । जिन करी रिद्ध दुज दे अमंत ॥
पज्जून सुअन पाहारराइ । चहुआन इला कलि करन न्याइ ॥
छं० ॥ ७२ ॥

नरसिंघ सुतन [1]हरदास हट्ठ । गुर ग्रब्ब मान हम्मीर गट्ठ ॥
षीची प्रसंग सुअ मल्हनास । वचि देव छम्म वंकट्ट वास ॥
छं० ॥ ७३ ॥

सुत तेज डोड अचला सुमेर । दीपंत देह मानों कि मेर ॥
जंघार भीम [2]सुअ सिवहदास । काठियाराइ सुत वव्हिलास ॥
छं० ॥ ७४ ॥

अतताइ सुतन आरेन रूप । भिरि भीम वइ मारंत भूप ॥
चंदेल माल प्रथिराज हूअ । भिरि जंग मझ्झ गज गहन भूअ ॥
छं० ॥ ७५ ॥

(१) मो-निवदास । (२) ए.-सुट ।

संग्राम सुअन सहसो समथ्य। जुरि जुद्ध भान रोकै सुरथ्य ॥
... .. । .... .. ॥ छं० ॥ ७६ ॥

दूहा ॥ स्वामि दरग्गह चलि सुवन। मनहु प्रथीपुर इंद ॥
[1]कलि सोभन मोहन कवी। मनो सरद्दह चंद ॥छं०॥ ७७ ॥

बसंत उत्सव के दरबार की शोभा, राग रंग और उपस्थित दरबारियों का वर्णन।

पद्धरी ॥ रितराज राज आगंम जानि। पंचमि वसंत उच्छव सुठानि ॥
किय हुकुम सचिय सम बोलि तब्ब। प्रभु सेव साज मंगाय सब्ब ॥
छं० ॥ ७८ ॥

परजनन जुत्त तह मभ्झ आइ। पिल्लहि वसंत गोपालराइ ॥
परधान हुकुम सिर पर चढ़ाइ। सब वस्त रष्षि कन पहि कढ़ाइ ॥
छं० ॥ ७६ ॥

घनसार अगर सत कासमीर। म्रगमद जवाद बहु मोल चीर ॥
बहु बर्न पुप्फ को लहै पार। मन हरत मुनिन सुरगंध तार ॥
छं० ॥ ८० ॥

बदंन अबीर रोरी गुलाल। अति चोल रंग जनु भूड लाल ॥
मिष्टान पान मेवा असंष। मन चिपति होत निरषंत अंषि ॥
छं० ॥ ८१ ॥

सुभ साल विसद अंगन अवास। विच्छाय सु पट जाजिम नवास ॥
अंमोल मोल दुलीच भारि। षंचाइ षुंट रुलितानि धारि ॥
छं० ॥ ८२ ॥

छिरकाव छिरकि गुल्लाब पूरि। दिषियंत उड़ति अब्बीर धूरि ॥
रहि उमड़ि घुमड़ि तहं धूप वास। तन बढ़त जोति सुब्बास रास
छं० ॥ ८३ ॥

तहं धरिय सिंघासन मध्य आनि। नग जरित हेम बिसकर्म जानि।
बैठाय पाट गोपालराइ। घन घंट संप झल्लरि बजाइ ॥
छं० ॥ ८४ ॥

(१) ए.-कावल।

मिरदंग ताल जहं पोंन धार । बीनादि जंच झिनकार सार ॥
नपफेरि भेरि सहनाइ चंग । दुर बरी ढोल [1]आवझ उपंग ॥
छं० ॥ ८५ ॥

दम्माम सबद बज्जत विनोद । बंसी सरस्स सुर उपजि मोद ॥
[2]अनि अनि चरित्त नर नारि आनि । सक्कै न होइ तिन जाति जानि ॥
छं० ॥ ८६ ॥

धरि कनक दंड सिर चमर सेत । रष्षंत पवन विय बिप्र हेत ॥
[3]विद्वान चतुर दस विद्य अच्छ । सम अग्ग सिंघासन बैठि पच्छ ॥
छं० ॥ ८७ ॥

बैठिय सु कन्ह चहुआन आनि । झलहलत क्रोध उर अगनि जानि ॥
गहिलोत राव गोयंद आय । जिन सुनत नाम अरिदल पुलाइ ॥
छं० ॥ ८८ ॥

निद्दुर नरिंद कमधज पधारि । आदर [4]अनंत न्रप करि उचारि ॥
कूरंभ कहर बलिभद्र आय । जिहि सुनत नाम अरिनह दहाय ॥
छं० ॥ ८९ ॥

फुनि आय अप्प अल्ह नरेस । भय भीम रूप जमनेस भेस ॥
अतताइ आइ तहं सिव सरूप । बैठिय सु उट्ठि [5]भहराय भूप ॥
छं० ॥ ९० ॥

चावंड बिना भट सब्ब आय । अरि धरनि धरनि जे देत दाय ॥
पुंडीर आय तहं धीर चंद । अरि तिमिर तेज जिन फटति दंद ॥
छं० ॥ ९१ ॥

कूरंभ कहर पाल्हन्न देव । जिहि वियन काम विन स्वामि सेव ॥
वय वृद्ध बाल सामंत सब्ब । अवधारि राज प्रथिराज तब्ब ॥
छं० ॥ ९२ ॥

फुनि आइ चंद [6]बरदाइ माइ । जिहि प्रमन जीह दुरगा सदाइ ॥
आये सु न्रत्य नाटक अधीन । गंधरव राग विद्या प्रवीन ॥
छं० ॥ ९३ ॥

---

(१) मो.-उवझ । (२) मो.-अनेक चरित्र । (३) मो.-पंडित ।
(४) ए. कृ को. अनंत । (५) ए. भगराय । (६) ए. कृ. को.-बरदाय ।

छह ग्राम मुरछना गुनं वास। सुर सपत ताल विद्या विलास॥
संगीति रीति अभ्यास बाल। उच्चारि राग रिझ्झिय भुवाल॥
छं० ॥ ९४ ॥

अन्नेक चरित श्रीकृष्ण कीन। ते सब्ब प्रगट कीने प्रवीन॥
तिम सुनत तवत तन पाप छीन। न्रप राइ रिझ्झि बहु दान दीन॥
छं० ॥ ९५ ॥

रस रह्यो रंग सभ उट्ठि राज। सामंत सब्ब निज ग्रह समाज॥
अनसंक कंक बंकन पधोर। यों तपै पिथ्थ दिल्ली सजोर॥
छं० ॥ ९६ ॥

इति श्रीकविचंद विरचिते प्रथिराज रासके दिल्ली वर्णनं नाम उनसठवों प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ ५९ ॥

अथ जंगम कथा लिष्यते ।

(साठवां समय ।)

सुसज्जित सभा में पृथ्वीराज का विराजमान होना ।

चौपाई ॥ बैठौ राजन सभा विराजं । सामंत सूर समूहति साजं ॥
विस्तरि राग कला कृत भेदं । हरषित [1]हृदय असम सर षेदं ॥
छं० ॥ १ ॥

सज्जिय थान न्रपति कै पातुर । गुन रुपक विचरति श्रुत चातुर ॥
नाटिक कला स गीत आन रचि । अति [2]न्रत्यत करि विगति सु गति सचि॥
छं० ॥ २ ॥

चंद चारु साठा रूपक धरि । गीत प्रवीन प्रबंध कीन थरि ॥
उघट चिघट [3]अंग प्रमुष्य यह । निंदत चित्ररेष अच्छरि गह ॥
छं० ॥ ३ ॥

राजा को एक जंगम के आने की सूचना का मिलना ।

दूहा ॥ तत्त समै राजिंद बर । अपि सु पबरि अच्छत्त ॥
जंगम [4]एक सु आय कहि । कमधज पुर पति वत्त ॥ छं० ॥ ४ ॥
दिष्षि रहसि न्रप निरति रस । गुन अनेक कल भेद ॥
निरषि परषि प्रति अंग अलि । पातुर कला अषेद ॥ छं० ॥ ५ ॥

राजा का नृत्यकी को विदा करना ।

सत्त हेम है राज इक । दिय पातुर प्रति दान ॥
न्रत्ति विगति अवलोकि गुन । दई सीष यह मानि ॥ छं० ॥ ६ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-हृदय, रिदय । (२) ए. कृ. को.-सु नृत्य ।
(३) ए. कृ. को.-अट । (४) ए. कृ. को इक्कें ।
(५) ए.-वत्ति ।

पृथ्वीराज का जंगम से प्रश्न करना और जंगम का उत्तर देना।

पुनि जंगम प्रति उच्चरिय। कमधज्जन की कथ्य ॥
बहुरि भिन्न करि उच्चरिय। सुनि सामंत सु नथ्य ॥ छं० ॥ ७ ॥

चौपाई ॥ राज जग्य सज्ज्यौ कमधज्जं। देस देस हुंकारत सज्जं ॥
मिलि इक कोटि सूर भर हासं। नृप अंदेस देस रचि तासं ॥ छं० ॥ ८ ॥
थपि दर द्वारपाल चहुआनं। लकुटिय कनक हथ्थ परिमानं ॥
आय पंग तट इष्प समाजं। आनि अप्प चहुआन सु लाजं ॥ छं० ॥ ९ ॥
इह सु कथा पहिली सुनि राजन। आय कही सो फीफुनि साजन॥
लग्यौ राग श्रोतान रजानं। बुझ्झी बहुरि सु जंगम जानं ॥ छं० ॥ १० ॥

संयोगिता का स्वर्ण मूर्ति को जयमाल पहिराना।

कवित्त ॥ [1]आवलि पंग नरेस। देस मंड सुवेस बर ॥
बरन कज्ज चौसर। विचार संजोग दीन कर ॥
देवनाथ कवि अग्ग। बरनि नृप देस जाति गुन ॥
फुनि अप्पै संजोग। कनक विग्रह सु द्वार उन ॥
चहुआन राव सोमेस सुअ। प्रथीराज सुनि नाम बर ॥
गंध्रव्व [2]वचन विचारि उर। धरि चौसर प्रथिराज गर ॥ छं० ॥ ११ ॥

संयोगिता का दूसरी वार फिर से स्वर्ण मूर्ति को माला पहिराना।

दूहा ॥ देपि फेरि कहि नाथ पति। फुनि मुक्कलि कविराज ॥
बहुरि जाहु पंगानि अग। विचरै नृपति समाज ॥ छं० ॥ १२ ॥

कवित्त ॥ बहुरि नाम गुन जाति। देस पित प्रपित विरद बर ॥
लै लै नाम पराम। देवजानी स देव कर ॥

(१) मो-आचलि। (२) मो. वयन।

फुनि चहुआन सु पास। जाय ठट्ठे भए जामं॥
कछु कवि रछिय राज। कछुक जंपे गुन तामं॥
न्रप लज्ज पंग ग्रह भट्ट वर। तुच्छ संषेप सु उच्चऱ्यौ॥
संजोग समझ्झे उर न्रह। कंठ मध्य, चौसर धऱ्यौ॥
छं०॥ १३॥

पुनः तीसरी वार भी संयोगिता का पृथ्वीराज की प्रतिमा पर जयमाल डालना।

दूहा॥ दुसर राज इह देषि सुनि। तिय सु नाथ उर जाम॥
सपत हथ्थ सुर जा धरिय। प्रचरि नरेसनि ताम॥ छं०॥ १४॥

कवित्त॥ फुनि नरेस अदेस। नाथ फिरि आय मझ्झ दर॥
आदि वंस रचि नाम। चवत विक्कम क्रम्म बर॥
दई पानि कवि जानि। होत काह्न कर मंडं॥
भूत भविष्यत वत्त। भव्वि जानी उर चंडं॥
उतकंठ लोकि प्रतिमा प्रतषि। दिष्षि देव देवाधि सचि॥
बरनी संजोग चहुआन वर। पहुप दाम ग्रीवा सु रचि॥
छं०॥ १५॥

जयचन्द का कुपित होकर सभा से उठ जाना।

दूहा॥ कोप कलंमल पंग पहु। समय विरंचि विचारि॥
रोस सोस उर धारि तब। क्रम भति भई न चारि॥ छं०॥ १६॥
उठि राज अंदरह दर। कियौ प्रवेस अपान॥
विमुष निसुष दिष्यौ न्रपति। देव कृत्य परमान॥ छं०॥ १७॥

पंगराज का दैवी घटना पर संतोष करना।

कवित्त॥ दइय काल सुनि पंग। जग्गय विग्गऱ्यौ दच्छ पति॥
द्रुपद राय पंचाल। जग्गय विग्गऱ्यौ इष्ट रति॥
दइय काल दुजराज। जग्य विग्गऱ्यौ सु जानं॥
न्रघुष राइ राज ह्। गत्त जानी परमानं॥

(१) ए. कृ. को. नहुष। (२) ए.-राजह।

श्रुति बर पुरान श्रोतास वल। विधि विचार मंडिय सकल ॥
चय काल काल सामंत कहि। दइय काल मानै अकल ॥
छं० ॥ १८ ॥

राजा जयचन्द का संयोगिता को गंगा किनारे निवास देना।

दूहा ॥ आदि कथा संजोग की। पहिलें सुनी नरेस ॥
अब इह जंगम आय कहि। विधि मिलवन संदेस ॥ छं० ॥ १९ ॥

कवित्त ॥ रचि अवास रा पंग। गंग दंगह उतंग तट ॥
दासि सहस सुंदरिय। प्रसँग कल ग्यान भाव पट ॥
व्रत उचार चहुआन। धरत कर करत छप्प पर ॥
पंच धेन पूजंत। बचन मन क्रम्म गवरि हर ॥
सुनि पुनि नरेस संदेस दिढ़। सोफी फुनि जंगल कहिय ॥
आरत्ति चरित चहुआन मन। दइय भेद चित्तह गहिय ॥
छं० ॥ २० ॥

दूहा ॥ पहिल ग्यान जंगम कहिय। दुतिय सो सोफी आनि ॥
तब प्रथिराज नरिंद ने। दैव काल पहिचान ॥ छं० ॥ २१ ॥

पृथ्वीराज का अपने सामंतों से सब हाल कहना।

उठि राजन तब हुकम किय। बहुरि सूर सामंत ॥
परिहार केहरि कमल। काम नाम भर संत ॥ छं० ॥ २२ ॥

बुलिय स भूपति साधनह। दुतिय स ईसर दास ॥
वरन नेह बिस्तार तन। आन रंग इतिहास ॥ छं० ॥ २३ ॥

गंग जमन जल उभय करि। करि असान नरिंद ॥
क्रत हरि हर उर ध्यान प्रभु। उठ्यौ थान सुरिंद ॥ छं० ॥ २४ ॥

असन मार आराम सुष। सुष सयन्न क्रत राज ॥
उर सल्लै संजोग व्रत। संभरि नाथ समाज ॥ छं० ॥ २५ ॥

*तब परिहार सु हुकम दिय। गए सु भोजन साल ॥
व्यंजन रस रस सेष परि। सुनि सुनि कथा रसाल ॥ छं० ॥ २६ ॥

* यह दोहा मो. प्रति में नहीं है।

पृथ्वीराज की संयोगिता प्रति चाह और कन्नौज को चलने का विचार ।

पद्धरी ॥ लग्गयौ सु राज स्रोतान राग । संजोग हृत संभरि समाग ॥
अति असम बान वेधे सरीर । नह धीर हसं [1]नह भाव धीर ॥
छं० ॥ २७ ॥

[2]रिति राज आनि रंगे सदंग । फुल्लेस विकढ नव कुसुम [3]चंग ॥
कलयंठ कंठ उपकंठ अंब । पाठंत विरहनी पति सितंब ॥छं०॥२८॥
कुंजत उतंग गिरि तुंग सार । तालीस धार [4]उद्दार धार ॥
सति मान जानि सिंदन सु तात । संजोग सुषद विरहिन निपात ॥
छं० ॥ २९ ॥

उन स्रवन सान गाजंत जोर । मधु वृत्त समागध पठत घोर ॥
[5]साहीत सिषी चढ़ि सिषर टेरि । विज्जोग भगनि तिय उप्प वेर ॥
छं० ॥ ३० ॥

सासन सुरंम धरि त्रिविध पोन । वारह मत्त लघुमात गोंन ॥
लगि दहन गहन मदनह सु भाम । रति नाथ नाथ विन सज्जि ताम ॥
छं० ॥ ३१ ॥

संवत्त संभ पंचास मेक । पष स्याम असित [6]उच्चार नेक ॥
पित नछिच जोग सुभ नवमि दीह । नृप मन विचार उर चलन कीय॥
छं० ॥ ३२ ॥

दूहा ॥ लग्गि बान अनुराग उर । मनमथ प्रेरि वसंत ॥
सहै नृपति अप्पै न कहुं । षेदे रिदय असंत ॥ छं० ॥ ३३ ॥

कवित्त ॥ दंग सुरंग पलास । जंग जीते वसंत तपु ॥
मदन मानि मन मोद । लीन छेदे [7]प्रछेद वपु ॥
देस नरेस अहेस । देस आदेस काम कर ॥
नीर तीर नाराच । पंग वेधे अवेध पर ॥

(१) ए. कृ. को.-चित । (२) ए. कृ. को.-रति ।
(३) ए. कृ. को.-जंग । (४) ए.-उद्दास । (५) ए. कृ. को.-साहात ।
(६) ए. कृ. को.-उज्जार । (७) ए. कृ. को.-अछेद ।

कलमलत चित्त चहुआन तव। उर उपजै संजोग हत ॥
बरदाय बोलि तिहि काल कवि। मन अनंत मति पर उघ्रति ॥
छं० ॥ ३४ ॥

कविचन्द का दरबार में आना और राजा का अपने मन की बात कहना।

दूहा ॥ आय चंद बरदाय बर। दिय आदर न्टप ताम ॥
आनि बहुरि दीने सु तव। रष्ये तथ्य सु काम ॥ छं० ॥ ३५ ॥
द्वारपाल कमधज्ज थपि। हम रष्ये दरबार ॥
अब जीवन बंछै कहा। कहौ सु कब्बि विचार ॥ छं० ॥ ३६ ॥
अरु दिढ़ हत्त पँगानि लिय। तुम जानो सब तंत ॥
चल्लन नयर कमधज्ज कै। सु बर विचारहु मंत ॥ छं० ॥ ३७ ॥

कवि का कहना कि कन्नौज को जाने में कुशल नहीं है।

तब कवि [1]एम सु उच्चरिय। सुनि संभरी नरेस ॥
चलत न्टपति बरजिय न कहुं। विधि न्रम्मान सुदेस ॥ छं० ॥ ३८ ॥
पंग सु जानहु तुम न्टपति। चलि कीनो तुम देस ॥
गाम ठाम बाहर विचल। पारि जारि किय रेस ॥ छं० ॥ ३९ ॥

कवित्त ॥ [2]कोरि जोर कमधज्ज। सयन आयौ पर ढिल्ली ॥
जारि पारि बेहाल। षलक कीनी धर मिल्ली ॥
[3]गोपर मार उत्तंग। तोरि उच्छारि झारि भर ॥
दंग जंग परजारि। [4]ठाम कीनौ अठाम नर ॥
कर सांप काल मुष को धरै। को जम पानि पसारि लय ॥
सोमेस नंद विचारि चलि। भवसि सोय [5]देवाधि भय ॥ छं० ॥ ४० ॥

कवन भुजा [6]बलवंत। गयन प्रस्थानन लीनौ ॥
पारावार अपार। कवन पल्लवन तन कीनौ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-गम। (२) मो.-कारि।
(३) ए. कृ. को.-गोपरि गिर। (४) ए. कृ. को.-ताम, छाम।
(५) ए. कृ. को.-देवाम। (६) ए. कृ.-बलबंड।

हेम सैल करताल। धन्यौ सिष नष्ष सुन्यौ न्टप ॥
कवन धनंजय पानि। करै संभरि नरेस दप ॥
जम जोर हथ्थ को जोर रहि। जवन अरुन रन जित्तियै ॥
चल्लहु नरेस परदेस मन। दै विधान मन चिंतियै ॥ छं० ॥ ४१ ॥

पृथ्वीराज का फिर भी कन्नौज चलने के लिये आग्रह करना।

दूहा ॥ चलन नरिंद कविंद पिथ। पुर कनवज मत मंडि ॥
दइय सीष कविचंद कहु। बहुते आसन छंडि ॥ छं० ॥ ४२ ॥

रात्रि को दरबार बरखास्त होना, सब सामंतों का अपने अपने घर जाना, राजा का सयन।

जाम एक रजनी रहिय। तथ्थ सुबर कविचंद ॥
तास काम परिहार कौं। दई सीष उनमंद ॥ छं० ॥ ४३ ॥
तब सु चंद ग्रह अप्प गय। उठिय सु पिथ्थ नरिंद ॥
आभूषन वस वास धरि। ससि दुति तेज सु मंद ॥ छं० ॥ ४४ ॥

राजसी प्रभात वर्णन।

कवित्त ॥ आय राज दीवान। जानि नाकेस अमर गन ॥
उट्ठि [1]सुभर न्टप करि। जुहार आरोहि सोह थन ॥
आय तब्ब बर बुद्धि। [2]बीन धर नमित क्रत्त पहु ॥
सुधरि तंत सुर सपत। कंठ कलरव कलंठ मह्व ॥
जुग घटिय सु घट अनुराग मन। राग श्रोत श्रोता धरत ॥
पांवार तार उस्भय [3]अभय। जर सभीत तारन परत ॥ छं० ॥ ४५ ॥
ताम समय बंदियन। आय वरदाय वीर वर ॥
दिप्पि सभा राजिंद। इंद निंदंत नाक पर ॥
नथ्थि सुहर वाहनह। नथ्थि का लिंद्र वार भर ॥
नथ्थि वरन वलिराइ। नथ्थि दनुनाथ सुलधर ॥
अनजोत निगमबोधह नयर। वयर मान [4]कट्टन [5]महन ॥

(१) मो.-सुभंय। (२) मो.-"बीन धरन मिन ब्रत पहुं।
(३) ए. कृ. को.-उभय। (४) ए. कट्टन। (५) ए. मनह।

कलमलत चित्त चहुआन तब। उर उपजै संजोग हत॥
बरदाय बोलि तिहि काल कवि। मन अनंत मति पर उद्धति॥
छं०॥ ३४॥

कविचन्द का दरबार में आना और राजा का अपने मन की बात कहना।

दूहा॥ आय चंद बरदाय बर। दिय आदर न्टप ताम॥
आनि बहुरि दीने सु तव। रष्षे तथ्थ सु काम॥ छं०॥ ३५॥
द्वारपाल कमधज्ज थपि। हम रष्षे दरबार॥
अब जीवन बंछै कहा। कहौ सु कब्बि विचार॥ छं०॥ ३६॥
अरु दिढ़ हत्त पँगानि लिय। तुम जानो सब तंत॥
चलन नयर कमधज्ज कै। सु बर विचारहु मंत॥ छं०॥ ३७॥

कबि का कहना कि कन्नौज को जाने में कुशल नहीं है।

तब कबि [1]एम सु उच्चरिय। सुनि संभरी नरेस॥
चलत न्टपति बरजिय न कहुं। विधि न्नम्मान सुदेस॥ छं०॥ ३८॥
पंग सु जानहु तुम न्टपति। चलि कीनी तुम देस॥
गाम ठाम बाहर विचल। पारि जारि किय रेस॥ छं०॥ ३९॥

कवित्त॥ [2]कोरि जोर कमधज्ज। सयन आयौ पर ढिल्ली॥
जारि पारि बेहाल। षलक कीनी धर मिल्ली॥
[3]गोपर मार उत्तंग। तोरि उच्छारि झारि भर॥
दंग जंग परजारि। [4]ठाम कीनौ अठाम नर॥
कर सांप काल मुष को धरै। को जम पानि पसारि लय॥
मोमेस नंद विचारि चलि। भवसि सोय [5]देवाधि भय॥ छं०॥ ४०॥

कवन भुजा [6]बलवंत। गयन प्रस्थानन लीनौ॥
पारावार अपार। कवन पल्लवन तन कीनौ॥

(१) ए. कृ. को.-गम।　　(२) मो.-कारि।
(३) ए. कृ. को.-गोपरि गिर।　　(४) ए. कृ. को.-ताम, छाम।
(५) ए. कृ. को.-देवाम।　　(६) ए. कृ.-बलबंड।

हेम सैल करताल। धऱ्यौ सिष नष्ष सुन्यौ न्टप ॥
कवन धनंजय पानि। करै संभरि नरेस द्रप ॥
जम जोर हथ्थ को जोर रहि। जवन अरुन रन जित्तियै ॥
चल्लहु नरेस परदेस मन। दै विधान मन चिंतियै ॥ छं० ॥ ४१ ॥

पृथ्वीराज का फिर भी कन्नौज चलने के लिये आग्रह करना।

दूहा ॥ चलन नरिंद कविंद पिथ। पुर कनवज मत मंडि ॥
दइय सीष कविचंद कहु। बहुते आसन छंडि ॥ छं० ॥ ४२ ॥

रात्रि को दरबार बरखास्त होना, सब सामंतों का अपने अपने घर जाना, राजा का सयन।

जाम एक रजनी रहिय। तथ्थ सुबर कविचंद ॥
तास काम परिहार कौं। दई सीष उनमंद ॥ छं० ॥ ४३ ॥
तब सु चंद ग्रह अप्प गय। उठिय सु पिथ्थ नरिंद ॥
आभूषन वस वास धरि। ससि दुति तेज द्रुमंद ॥ छं० ॥ ४४ ॥

राजसी प्रभात वर्णन।

कवित्त ॥ आय राज दीवान। जानि नाकेस अमर गन ॥
उट्ठि [1]सुभर न्टप करि। जुहार आरोहि सोह थन ॥
आय तव्व बर बुद्धि। [2]बीन धर नमित क्रत्त पहु ॥
सुधरि तंत सुर सपत। कंठ कलरव कलंठ सहु ॥
जुग घटिय सु घट अनुराग मन। राग ओत ओता धरत ॥
पांवार तार उरभय [3]अभय। जर सभीत तारन परत ॥ छं० ॥ ४५ ॥
ताम समय बंदियन। आय बरदाय बीर बर ॥
दिष्षि सभा राजिंद। इंद निदंत नाक पर ॥
नथ्थि सुहर वाहनह। नथ्थि कालिंद्र वार भर ॥
नथ्थि बरुन बलिराइ। नथ्थि दनुनाथ लंकधर ॥
अनजोत निगमबोधह नयर। वयर साल [4]कट्टन [5]महन ॥

---

(१) मो.-सुभय। (२) मो.-"बीन धरन मित व्रत्त पहुं।
(३) ए. कृ. को.-उभय। (४) ए. कट्टन। (५) ए. मनह।

सोमेस नंद अनलह कुलह। जंत्र कित्ति भंजन दहन ॥छं०॥४६॥
गाथा ॥ दिष्षि सुभट्टह दिवानं। राजत बीर धीर अरोहं ॥
निरषि ताम प्रतिसारं। आगम निगम जान सह कव्वी ॥छं०॥४७॥

कविचन्द का विचार।

कवि जानी करतारं। रचना [1]सचन सव्व भर सुभरं ॥
कवन सु मेटन हारं। विधि लिषयं भाल अंकेन ॥ छं० ॥ ४८ ॥
दूहा ॥ गत सभांन भर थान उठि। आयति समय पुलिंद ॥
गहन मझि वाराह वर। निंदत कोहर किंद ॥ छं० ॥ ४९ ॥
तत कोहर इक भाल बर। षात अराम भिराम ॥
विहुरि न्रपत्ति नरेस किय। व्याधि स रष्यहु ताम ॥ छं० ॥ ५० ॥

पृथ्वीराज का कतिपय सामंतों सहित शिकार को जाना।

कवित्त ॥ उठि प्रातह चहुआन। [2]चढ़ि सु क्रम्मत नरेस पिथ ॥
सथ्थ सूर सामंत। मंत जान्यो अषेट पथ ॥
सुभट जाम जद्दों जुवान। बलिभद्र वीझ वर ॥
महनसीह सम पीप। बंधि लंगिय अभंग भर ॥
गुज्जरहराम आजानभुज। जैतराव भट्टी अचल ॥
हाहुलियराव मंडन्न हर। मिले सुभट तहं क्रमत भल ॥छं०॥५१॥

बाराह का शिकार।

दूहा ॥ जाय संपते भर गहन। जोजन इक इक [3]कोह ॥
तहं सूकर सूतौ न्रिमय। कोहर तथ्थ सु [4]षोह ॥ छं० ॥ ५२ ॥
धरि छत्तिय दिढ़ तुपक न्रप। हक्किय व्याधि वराह ॥
उठ्ठि भयंकर षात तजि। तिच्छन संचरि ताह ॥ छं० ॥ ५३ ॥

वाराह का वर्णन और राजा का उसे मारना।

कवित्त ॥ कविय व्याधि वाराह। उठ्ठि धायौ चंचल सम ॥
वदन भयंकर भूत। दंत दीरघ ससि बीय सम ॥

(१) मो.-मचनं। (२) मो.-"चाढ़ि संक्रम्भ नरेस पिथ"।
(३) मो.-ग्रेह। (४) मो.-षेह।

सनमुष क्रमत नरेस। दिष्षि छत्तिय धरि जंतिय ॥
सबद रोस संचार। सूर जोवंत [1]सु पंतिय ॥
संचष्षि उभय भ्रकुटिय सहथ। लग्गिय गोरिय [2]परचरिय ॥
उच्छरत योत धुक्किय धरनि। भल्ल जंपिय भर सारथिय ॥
छं० ॥ ५४ ॥

दूहा ॥ किय सिकार बर सूर पति। ग्रेह संपतौ जाय ॥
चल्यौ प्रात प्रथिराज पहु। सिव सेवन सद भाय ॥ छं० ॥ ५५ ॥

शिकार करके राजा का शिवालय को जाना। शिव जी के श्रृंगार का वर्णन।

पद्धरी ॥ आभत्त ईस ईसान घान। पुर अलक असुर सुर वृंद मान ॥
जट विकट त्रुकुट झलकंत गंग। तिन दरसि भरत पातिग पतंग ॥
छं० ॥ ५६ ॥

तट भाल चंद दुति दुतिय दीह। हरि सुजस रेष राजन अतीह ॥
तिन निकट नयन झलकंत अंग। सिर पंच [3]सोह रजिकय उदंग ॥
छं० ॥ ५७ ॥

आभा अनूप विभ्भूति बार। प्रगटे सुषीर दधि करि विहार ॥
झलकंत तरल तिच्छन सुरंग। [4]तम रहै मेर उपकंठ संग ॥
छं० ॥ ५८ ॥

रजि उरग हार उद्दार धार। रुचि सेत स्याम तन तिन प्रकार ॥
आरोपि उअर वर रुंडमाल। उड़पंति कंति हिम गिरिय [5]भाल ॥
छं० ॥ ५९ ॥

कटि तटि लपेटि लंकाल पाल। आवरिग अंग गज [6]तुज विसाल ॥
कर तरल तुंग तिरसूल सोह। त्रयलोक सोक संकत समोह ॥
छं० ॥ ६०॥

डहडहत डमरू कर दच्छि पानि। क्रत उंच उंच भय भगति [7]भानि॥

(१) ए. कृ. को.-सयत्तिय। (२) ए. कृ. को.-परचारिय।
(३) ए. कृ. को.-सीह। (४) ए. कृ. को.-नन।
(५) ए. कृ.-पयाल। (६) मो. गज तुव। (७) ए. कृ. को.-सानि।

अरधंग उमय सरवंग देव। नाटिक्क कोटि को लहत भेव ॥
छं० ॥ ६१ ॥

चवरँग विसाल [1]माली प्रमथ्थ। अरोहि वृषभ मन [2]सुमन रथ्थ॥
षट बदन बदन गज मदन अग्ग। गन जंत गज्ज अनेक वग्ग॥
छं० ॥ ६२ ॥

कैलास वास सिवरंग रोध। बर बसत आय थिर निगमबोध॥
आहुत्ति परसि क्रित प्रथियराज। उपवास व्याधि कारन सुभाज॥
छं० ॥ ६३ ॥

निसि जगत ईस तिय रथ परिथ्थ। हरिहरि समेत कलि कलन कथ्थ॥
अनेक विधी रिष गन प्रसंग। उर हरन करन क्रमि आय तंग॥
छं० ॥ ६४ ॥

दूहा ॥ राज दरसि हर सरस बर। उर उद्दित आनंद ॥
कर कलंक तिरसूल कर। जै जै समर निकंद ॥ छं० ॥ ६५ ॥
नमित दान शिव प्रमित सुष। वारह वार नरेस ॥
हर हर हर उर ध्यान गुर। दिष्यन दरसन तेस ॥ छं० ॥ ६६ ॥
श्रुति उचार संचय सु रिषि। उज्जल अरचि अचार ॥
मन सु ब्रह्म तन माम सी। ते देषे हरद्वार ॥ छं० ॥ ६७ ॥

पृथ्वीराज का स्नान करके शिवार्चन करना, पूजा की सामग्री और विधान वर्णन।

करि सनान संभरि स पहु। स च सुवास तन धार ॥
अंदर शिव मंदिर परसि। आरोहन क्रत कार ॥ छं० ॥ ६८ ॥

पद्धरी ॥ करि नमसकार संभरि नरेस। अवलोकि अंग उमया वरेस ॥
रिषि रुष षटंग उचरंत चार। ओरहि राज दुज सम सुसार ॥
छं० ॥ ६९ ॥

धरि ध्यान [3]उरध नाटेस राय। मधु दूब षीर दधि तंदुलाय ॥
घट उभय सहस [4]सुर सुरिय अंब। चव सहस कलस जमना प्रसंब॥
छं० ॥ ७० ॥

(१) ए. कृ. को.-मानी। (२) ए. समन।
(३) ए. कृ. को.-अरध। (४) मो. रसुरीय अंब।

दधि सहस एक घट सहस षीर। मधु पंच सत्त सुच्छव सहीर ॥
घट सहस [1]रषि अद्वह प्रवान। घट कासमीर सय पंच थान ॥
छं० ॥ ७१ ॥

रस उभय दून घट विसल बानि। अस्तूति चंद जंपै विधान ॥
वरकुंभ सत्त गुल्लाव पंच। घट उभय नाग संभव सुरंच ॥
छं० ॥ ७२ ॥

घठ उभय जष्षि कृद्दम सु सत्त। घट उभय सात बहु विधि प्रबत्त ॥
सिव सिर स्रवंत न्टप अप्प हाथ। सद भाय अर्चि अलकेस नाथ ॥
छं० ॥ ७३ ॥

तंदुल सु दूब मधु षीर नीर। दधि सार पंच तुछ मंडि सीर ॥
सिव संषि सुघट पुञ्जै चिश्रंब। सु प्रसन्न ईस [2]कारन तिश्रंब ॥
छं० ॥ ७४ ॥

सतपत्र कमुद ससि सूर वंस। मंदार पहुप केतकि सुश्रंस ॥
मालती पंच जाती अनेव। फल पहुप पत्र पल्लव सु भेव ॥
छं० ॥ ७५ ॥

मालूर पंग श्रीषंड धूप। नैवेद ईस आराधि ऊप ॥
आरोह नंत आगम प्रदोष। रचि सयन अयन राजन सु कोष ॥
छं० ॥ ७६ ॥

प्रस थारि कथा ग्रहि संभरेस। अन्नेक दांन रिषि दिय नरेस ॥
.. .... । .... ॥ छं० ॥ ७७ ॥

पूजन के पश्चात कविचन्द का राजा से दिल्ली चलने को कहना।

दूहा ॥ पूजा [3]हर घन हित करी। धूप दीप सब साज ॥
चंद भट्ट बोल्यौ तबै। चल्यौ सु ग्टह फिरि राज ॥ छं० ॥ ७८ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराजरासके जंगम सोफी कथा, सिव पूजा नाम साठवो प्रस्ताव सम्पूर्णम्॥६०॥

(१) ए. कृ. को.-सरपि। (२) ए. कृ. को. कारनीन। (३) ए. कृ. को. घन हर।

अथ कनवज्ज समयो लिष्यते।

(एकसठवां समय।)

[अथ षट् ऋतु वर्णन लिष्यते।]

पृथ्वीराज का कविचन्द से कन्नौज जाने की इच्छा प्रगट करना।

दूहा ॥ सुक वरनन संजोग [1]गुन। उर लग्गे छुटि बान ॥
पिन पिन सल्लै वार पर। न लहै बेद विनान ॥ छं० ॥ १ ॥
भय श्रोतान नरिंद मन। पुच्छै फिरि कविरज्ज ॥
दिष्षावै दलपंगुरौ। धर ग्रीषम कनवज्ज ॥ छं० ॥ २ ॥

कवि का कहना कि छद्म वेष में जाना उचित होगा।

कवित्त ॥ दीसै वहु विध चरिय। सुअन नर दुअन भनिज्जै ॥
बल कलियै अप्पान। कित्ति अप्पनी सुनिज्जै ॥
हींडिज्जै तिहि काज। दुष्ष सुष्षह भोगिज्जै ॥
तुच्छ आव संसार। चित मनोरथ पोषिज्जै ॥
दिष्षियै देस कनवज्ज वर। कही राज [2]कवि चंद कहि ॥
[3]सुक्कही सूर छल संग्रहै। तौ पंग दरसन तत्त लहि ॥ छं० ॥ ३ ॥

यह सुनकर राजा का चुप हो जाना और सामंतों का कहना कि जाना उचित नहीं।

दूहा ॥ सुनिय सुकवि इह चंद वच। ना बुल्यौ सम राज ॥
अंबुज को दोऊ कठिन। उदय अस्त रविराज ॥ छं० ॥ ४ ॥
श्लोक ॥ गमनं न क्रियते राजन्। सूर सामंतमेवच ॥
[4]प्रस्थानं च प्रयाणं च। राजा [5]मध्ये गतं तदा ॥ छं० ॥ ५ ॥

---

(१) मो.-मुन (२) ए. कृ. का. कहि। (३) मो मुक्कहि सूर रछ संग्रहै।
(४) ए. कृ. मो.- प्रच्छानं। (५) ए. कृ. को.- मध्य।

राजा का इंछिनी के पास जाकर कन्नौज जाने को पूछना।

दूहा॥ पुच्छि गयौ कविचंद को। इंछिनि महल नरिंद॥
सुंदरि दिसि कनवज्ज कौ। चलै कहै धर इंद॥ छं०॥ ६॥

रानी इच्छनी का कहना कि वसंत ऋतु में न जाइए।

इन रिति सुन चहुवान वर। चलन कहै जिन जीय॥
हों जानूं पहिलै चलै। प्रान प्रथान कि [1]पीय॥ छं०॥ ७॥
प्रान ज्वाव दूनों चलै। आन अटक्कै घंट॥
निकसन कों झगरौ पर्‌यौ। रुक्यौ गद्‌गद कंठ॥ छं०॥ ८॥

वसंत ऋतु का वर्णन।

साटक॥ स्यामंगं कलधूत नूत सिषरं, मधुरे मधू वेष्टिता।
[2]वाते सीत सुगंध मंद सरसा, आलोल संचेष्टिता॥
कँठी कंठ कुलाहले मुकलया, कामस्य उद्दीपने।
रत्ते रत्त वसंत मत्त सरसा, संजोग भोगायते॥ छं०॥ ९॥
कवित्त॥ मवरि अंब फुल्लिग। कदंब रयनी दिघ दीसं॥
भवर भाव भुल्लै। भ्रमंत मकरंदव सीसं॥
वहत [3]बात उज्जलति। मौर अति विरह अगनि किय॥
कुहकुहंत कल कंठ। पच राषस रति अग्गिय॥
पय लग्गि प्रान पति वीनवों। नाह नेह मुझ चित धरहु॥
दिन दिन अवद्धि जुब्बन घटय। कंत वसंत न [4]गम करहु॥छं०॥१०॥
धुम्र चलिय बन पवन। भ्रमत मकरंद कंवल कलि॥
भय सुगंध तहँ जाइ। करत गुंजार अलिय मिलि॥
बल हीना [5]डगमगहि। भाग आवै भोगी जन॥
उर धर लगै समूह। कंपि भौ सीत भयत नन॥
लत परी ललित सब पहुप रति। तन सनेह जल पवित किय॥
निक्करै भंग अंवुज हरुअ। सीत सुगंध सुमंद लिय॥ छं०॥ ११॥

---

(१) को. कृ-पीउ। (२) ए. कृ. को.- वातो।
(३) ए. कृ. को.- वाव। (४) ए. कृ. को.- गमन। (५) मो. डत।

साटक ॥ लैवंधं सुर थट्ट डंकित मधू, उन्मत्त भ्रंगी धुनी ।
कंद्रप्पे सु मनो वसंत रमनं, प्राप्तो धनं पावनं ॥
कामं तेग मनं धनुष्य सजनं, भीतं वियोगी मुनी ।
विरहिन्या तन ताप पत्त सरसा, संजोगिनी सोभनं ॥ छं० ॥ १२ ॥

कुंडलिया ॥ इहि रिति मुक्कि न बाल प्रिय । सुष [1]भारी मन लुट्टि ॥
कामिनि कंत समीप बिन । हुई षंड उर फुट्टि ॥
हुई षंड उर फुट्टि । रसन कुह कुह आरोहै ॥
चलन कहै जो पीय । गात वर [2]भग्गो सोहै ॥
नयन उमगि कन बीय । सोभ ओपम पाइँ जिहि ॥
मनों षंजन बिय बाल । गहिय नंषत सुत्तिय [3]इहि ॥ छं० ॥ १३ ॥

ग्रीष्म ऋतु आने पर पृथ्वीराज का रानी पुंडीरनी के पास जाकर पूछना ।

दूहा ॥ इहि रिति रष्षिय इंछिनिय । भय ग्रीषम रितु चारु ॥
कांम रूप करि गय न्रपति । पुंडीरनी दुआर ॥ छं० ॥ १४ ॥
सुनि सुंदरि पहु पंग की । दिसि चालन कौ सज्ज ॥
बर उत्तम धर दिष्षियै । पिष्षन भर कनवज्ज ॥ छं० ॥ १५ ॥

रानी पुंडीरनी का मना करना ।

न्रप ग्रीषम ग्रिह सुष्पनर । ग्रेह मुक्कि नन राज ॥
गोमगांम छादिय अमर । पंथ न सुझ्झै आज ॥ छं० ॥ १६ ॥

कवित्त ॥ दीरघ [4]दिन निस हीन । छीन जल धरवैसंनर ॥
चक्रवाक चित मुदित । उदित रवि थक्कित [5]पंथ नर ॥
चलत पवन पावक । समान परसत स ताप मन ॥
सुकत सरोवर मचत । कीच तलफंत मीन तन ॥
दीसंत दिगम्बर सम सुरत । तरु लतान गय पत्त झरि ॥
अक्कुलं दीह संपति विपति । कंत गमन ग्रीषम न करि ॥ छं० ॥ १७ ॥

(१) ए.- भामे ।   (२) ए. भग्गे-ए.-भग्गो ।
(३) ए. क्रु को.-जिहि ।   (४) ए. कृ. को.-दिस ।
(५) ए. कृ. को.-पस्सन ।

साटक ॥ दीहा दिग्घ सदंग कोप अनिला, आवर्त मित्ता वारं।
रेनं सेन दिसान थान मिलनं, गोमग्ग आडंबरं ॥
नीरे नीर अपीन छीन छपया, तपया तरुन्या तनं।
मलया चंदन चंद मंद किरनं, ग्रीष्म च आषेवनं ॥ छं० ॥ १८ ॥

कवित्त ॥ पवन त्रिविध गति मुक्कि। सेन भुअ पत्ति जूथ चलि ॥
विरह [1]जाम वर कदन। मदन मैं संत पील हलि ॥
पथिक बधू भरै। आस आवन चंदाननि ॥
जो चालै चहुआन तौ। मरै फुटि उर व्रंननि ॥
मन भुअन आन दैतो फिरै। प्रिय आगम गज्जै मयन ॥
कंता न मुक्कि वर क्रित्ति गर। कहूं सुनो सोनिय बयन ॥छं०॥१९

दिन तरुनी तन तपै। वहै नित बाव रयन दिन ॥
दिसि च्यारों परजलै। नहिं कहों सीत अरध घिन ॥
जल जलंत पीवंत। रुहिर निसि वास निघट्टै ॥
कठिन पंथ काया। कलेस दिन रयनि सघट्टै ॥
त्रिय लहै तत्त अष्पर कहै। गुनिय न ग्रब्ब न मंडियै ॥
सुनि कंत सुमति संपति विपति। ग्रीषम ग्रेह न छंडियै ॥छं०॥२०

* गीतामालची ॥ त्रिय ताप अंगति दंग दवरित दवरि छव रित भूषनं।
कुरु मेह षेहति ग्रेह लंपिति स्वेद संवित अंगनं ॥
नर रहित अनहित पंथ पंगति पंगयौ जित गोधनं।
रवि रत्त मत्तह अम्भ उद्दिक कोप कर्कस मोषनं ॥ छं० ॥ २१ ॥
जल बुद्धि उठ्ठि समूह बल्लिय मनों सावन आवनं।
हिंडोल लोलति बाल सुष सुर ग्राम सुर सुर गावनं ॥
कुसमंग चीर गंभीर गंधित मुंद बुंद सुहावनं।
छलकंत बेनिय तठ्ठ ऐनिय चंद्र सें निय आननं ॥ छं० ॥ २२ ॥
ताटंक चंचल लजित अंचल मधुर मेषल रावनं।
रव रंग नूपुर हंस दो सुर कंज ज्यौं पुर पावनं ॥
नप द्रप्प द्रप्पन देषि अप्पन कोपि कंपि सु नावनं।
दमकंद दामिनि दसन कामिनि जूथ जामिनि जाननं ॥छं०॥२३॥

(१) ए. कृ. को.-जातु। * आधुनिक हिन्दी पिंगलों में इस छन्द को प्रायः हरिगीतिका करके लिखा है

तंबोल रत घनसार भारह बेलि विद्रुम छावनं ।
अलि गुंज मालहि. देषि लालहि रंभ राज रिझावनं ॥
.... ॥ छं० ॥ २४ ॥

वर्षा के आने पर राजा का इन्द्रावती के पास जा कर पूछना ।

दूहा ॥ मानि रूप मानिनि वचन । रहि ग्रीषम वर नेह ॥
पावस आगम धर अगम । गय इंद्रावति ग्रेह ॥ छं० ॥ २५ ॥

इन्द्रावती का दुखी होकर उत्तर देना ।

पीय वदन सो प्रिय परषि । हरष न भय सुनि गोंन ॥
आस्रू मिसि असु उप्पटै । उत्तर [1]देय सलोन ॥ छं० ॥ २६ ॥

वर्षा ऋतु वर्णन ।

साटक ॥ अब्दे वद्दल मत्त मत्त विसया, दामिन्य दामायते ।
दादूरं दर मोर सोर सरिसा, पप्पीह चीहायते ॥
[2]शृंगारीय वसुंधरा सलिलता, लीला समुद्रायते ।
जामिन्या सम वासुरो विसरता, पावस्स पंथानते ॥ छं० ॥ २७ ॥
कवित्त ॥ मग सज्जल सुझझैन । दिसा धुंधरी सघन करि ॥
रति पहुवी कि चरित । लता तरु वींटि सुमन भरि ॥
आलिंगत धर अब्भ । मान मानिन ललचावत ॥
वर भद्रव कद्रव सचंत । कद्रव विरुझावत ॥
चतुरंग सेन वै गढ दहन । घन सज्जिय न्रप चढ़िन तिन ॥
भरतार संग वंछै चिया । बिन भ्रतार [3]भ्रत्तार बिन ॥ छं० ॥२८॥
घन गरजै घरहरै । पलक निस रेनि निघट्टै ॥
सजल सरोवर पिष्पि । हियौ तत छिन धन फट्टै ॥
जल वद्दल वरषंत । पेम पल्हरै निरंतर ॥
कोकिल सुर उच्चरै । अंग पहरंत पंच सर ॥

(१) ए. कृ. को देति । (२) ए. कृ. को.-शृगाराय ।
(३) ए. कृ. को -भरतार ।

दादुरह मोर दामिनि दमय । अरि चवथ्थ [1]चातक रटय ॥
पावस प्रवेस बालम न चलि । विरह अगनि तनतप घटय ॥छं०॥२९॥
घुमड़ि घोर घन गरजि । करत आडंवर [2]अंमर ॥
पूरत जलधर धसत । धार पथ थकित दिगंवर ॥
झझकित द्रिग सिसु म्रग । समान दमकत दामिनि द्रसि ॥
विहरत चाचग चुवत । पीय दुपंत समं निसि ॥
ग्रीषंम विरह द्रुम लता तन । परिरंभन क्रत सेन हरि ॥
सज्जंत काम निसि पंचसर । पावस [3]पिय न प्रवास करि ॥
छं० ॥ ३० ॥

चंद्रायना ॥ विजय विहसि द्रिगपाल पायननि पंच किय ॥
विरहनि [4]विस गढ़ दहन मघव धनु अग्र लिय ॥
गरजि गहर जल भरित हरित छिति छच किय ।
मनहु दिसान निसानति आनि अनंग दिय ॥ छं० ॥ ३१ ॥

गीतामालची ॥ द्रिग भरित [5]धूमिल जुरति भूमिल कुमुद न्निम्मल सोभिलं ॥
द्रुम अंग वल्लिय सीस हल्लिय कुरलि कंठह कोकिलं ॥
कुसुमंज कुंज सरोर सुब्भर सलित दुब्भर सद्दयं ।
नद रोर दद्दुर मोर नद्दुर बनसि बद्दर बद्दयं ॥ छं० ॥ ३२ ॥
झम झमकि विज्जल काम किज्जल अवति सज्जल कद्दयं ।
पप्पीह चीहति जीह जंजरि मोर मंजरि मंद्दयं ॥
जगमगति झिंगन निसि सुरंभन भय अभय निसि हद्दयं ।
मिलि हंस हंसि सुवास सुंदरि उरसि आनन निद्दयं ॥छं०॥३३॥
[6]उट सास आस सुवास वासुर [7]छलित कलि वपु सद्दयं ।
* करत आडंबर अमर प्रस्त जलधर धार पयथ्थयं ॥
संयोग भोग संयोग [8]गामिनि विलसिराजन भद्दयं॥छं०॥३४॥

(१) मो.-चत्रिक, चातिक । (२) ए. कृ. को.-डमर ।
(३) मो.-प्रिय । (४) ए. कृ. को. नम ।
(५) ए. कृ. को.-भूमिल । (६) ए. कृ. को. उत ।
(७) ए. कृ. को. कलिल । * यह पंक्ति मो० प्रति के सिवाय अन्य प्रतियों में नहीं है ।
(८) मो. माननि ।

साटक ॥ जे [1]बिज्जु झक्कल फुट्टि तुट्टि तिमिरं, [2]पुन अंधनं दुस्सहं ।
बुंदं घोर तरं सहंत असहं, वरषा रसं संभरं ॥
बिरहीनं दिन दुष्ट दारुन भरं, भोगी सरं सोभनं ।
मा मुक्के पिय गोरियं च अबलं, प्रीतं तया तुच्छया ॥छं०॥३५॥

शरद ऋतु के आरंभ में तैयारी करके राजा का हंसावती के पास जाकर पूछना ।

दूहा ॥ सुनि [3]आवन वरिषा सघन । सुष निवास न्रिप कीय ॥
बर पूरन पावस कियौ । राज पयान सु दीय ॥ छं० ॥ ३६ ॥
हंसावति सुंदरि सुग्रह । गयौ प्रीय प्रथिराज ॥
धर उत्तिम कनवज्ज दिसि । चलन कहत न्रप आज ॥छं०॥३७॥

हंसावती के वचन ।

दिष्षि वदन पिय पोमिनी । फुनि जंपै फिरि बाल ॥
सरद रवन्नौ चंद निसि । कितः लभ्भै छुटि काल ॥ छं० ॥ ३८ ॥

शरद् वर्णन ।

साटक ॥ पित्तं पुत्त सनेह गेह [4]गुपता, जुगता न दिव्या दने ।
[5]राजा छचनि साज राज छितिया, निंदायि नीवासने ॥
कुसुमेषं तन चंद न्रिमल कला, दीपाय वरदायने ।
मा मुक्के प्रिय बाल नाल समया, सरदाय दर दायने ॥छं०॥३९॥
दूहा ॥ आयौ सरद स इंद्र रिति । चित पिय पिया सँजोग ॥
दिन दिन मन केली चढ़े । रस जु लाज [6]अलि भोग ॥छं०॥४०॥
कवित्त ॥ पिष्षि रयनि न्रिमलिय । फूल फूलंत अमर धर ॥
श्रवन सवद नहिं सुझ्झै । हंस कुरलंत मान सर ॥
कवल कद्रव विगसंत । तिनह हिमकर परजारै ॥
तुमहि चलत परदेस । नहीं कोइ सरन उवारै ॥

---

(१) मो.-बिज्जुल । (२) मो.-पुनंधन ।
(३) को.-सावन । (४) ए. कृ. को.- भुगता ।
(५) ए. कृ. को.- राजा छत्र निमान (६) ए. कृ. को.-अंत ।

निग्रहन रत्त भरपंच सर। अरि अनंग अंगै वहै ॥
जौ कंत गवन सरदै कहै। तौ विरहिनि सिष ह्वै दहै ॥छं०॥४१॥
द्रप्पन सम आकास। श्रवत जल अम्रत हिमकर॥
उज्जल जल सलिता सु। सिद्धि सुंदर सरोज सर॥
प्रफुल्लित ललित लतानि। करत गुंजारव [1]भंमर॥
उद्दति सित्त निसि नूर। अंगि अति उमगि अंग वर॥
तलफंत प्रान निसि भवन तन। देपत दुति रिति सुप जरद॥
नन करहु गवन नन भवन तजि। कंत दुसह दारुन सरद ॥छं०॥४२॥
माधुर्य ॥ लहु वरन पट विय सत्त, चामर वीय तीय पयो हरे।
माधुर्य छंदय चंद जंपय, नाग वाग समोहरे॥
अति सरद सुभगति राज राजति सुमति काम उमद्दयं।
ग्रह दीप दीपति जूप जूपति भूप भूपति सद्दयं ॥ छं० ॥ ४३ ॥
नव नलिनि अलि मिल अलिन अलि मिन्नि अलिनि अलिव्रतमंडियं॥
चक चकी चक्रित चकोर चप्पित चच्छ छंडित चंद्यं।
दुज अलस अलसनि कुसुम अच्छित कुसुम मुद्दित मुद्दयं॥
भव भवन उच्छव तरु असोकहि देव दिव्य निनद्दयं ॥छं०॥४४॥
नौरता मंचहि न्रपति राजत बीर झंझरि वग्गयं।
महि महिल लच्छिर सुच्छित अच्छिर सकति पाठ सु दुग्गयं॥
अट्ठार भारह पुषित अच्छित अधर अम्रत भामिनी।
रस तीय राजन लहय सोजन सरद दीपक जामिनी ॥छं०॥४५॥
कवित्त ॥ नव नलिनी अलि मिलहि। अलिन अलिमिलि द्दत मंडै॥
तनु न्रम्मल [2]षह चंद। चष्प [3]चकोरति छंडै॥
दुज अलसित बर निगम। कुसुम अच्छित मुद्रावलि॥
[4]पिच नेह ग्रेहरचें। बाल छुट्टे अलकावलि॥
करि स्नान धूत बसतर रचें। कंज वदन चिचंग चरि॥
आनूप जूप अंजन रचै। बिना कंत तिय गुन सुगरि॥
छं० ॥ ४६ ॥

(१) मो.-संभर। (२) ए. कृ. को.- वह।
(३) ए. कृ.-चकोरन। (४) ए कृ. मो.-पित्र ग्रेह नेह रचें।

चंद रयनि न्त्रिम्मली । सरिस आकास अध्यासित ॥
पिया बदन सो चंद । दोइ कुच चिकुर प्रगासित ॥
षंजन नयन अलोल । कीर नासा [1]न्त्रिम्मल मुति ॥
उज्जल वस्त्र अनूप । पुहप भाजन रजता भति ॥
नव गात न्त्रिमल सुंदरि सरल । नवल नेह नित नित भली ॥
चित चतुर रीति बुझ्झै न्त्रपति । सरद दरद करि मति चली ॥
छं० ॥ ४७ ॥

हेमंत ऋतु आने पर राजा का रानी कूरंभा के पास जाकर पूछना और उसका मना करना।

दूहा ॥ हिम आगम वित्तें सरद । गवन चित्त न्त्रप इंद ॥
पुछन कुरंभी महल गय । सरद ग्रेह वर चंद ॥ छं० ॥ ४८ ॥

रानी का वचन और हेमंत ऋतु का वर्णन।

साटक ॥ छिन्नं बासुर सीत दिघघ निसया, सीतं जनेतं बने ।
सेजं सज्जर बानया बनितया, आनंग आलिंगने ॥
यों बाला तरुनी वियोग पतनं, नलिनी दहन्ते हिमं ।
मा मुक्के हिमवंत मन्त गमने, प्रमदा निरालम्बनं ॥ छं० ॥ ४९ ॥

रोला ॥ कुच वर जंघ नितंव निसा बढ्ढत धन बढ्ढी ।
लंक छीन उर छीन छीन दिन सीत सुचढ्ढी ॥
गिरकंदर तप जुगति जागि जोगीसर संनं ।
ते लम्भे कविचंद वाम कामी सर धंनं ॥ छं० ॥ ५० ॥

कवित्त ॥ देह धरें दोगत्ति । भोग जोगह तिन सेवा ॥
कै वन कै वनिता । अगनि तप कै कुच लेवा ॥
गिरि कंदर जल पीन । पियन अधरारस भारी ॥
जोगिनीद मद उमद । कै छगन दसन [2]सवारी ॥
अनुराग बीत कै राग मन । वचन तीय गिर झरन रति ॥
संसार विकट इन विधि तिरय । इहो विधी सुर असुर अति ॥छं०॥५१॥

(१) ए. कृ. को.-झंमल । (२) ए. कृ. को. सचारी ।

रोमावलि वन जुथ्थ। वीच कुच कूट मार गज॥
हिरदै[1] उज्जल विसाल। चित्त आराधि मंडि सज॥
विरह करन कीलई। सिद्ध कामिनी डरप्पै॥
तो चलंत चहुआन। दीन छंडै पै रुप्पै[2]॥
हिमवंत कंत मुक्कै न त्रिय। पिया पन्न पोमिनि परषि॥
ग्रहि कंठ कंठ ऊठन[3] अवनि। चलत तोडि[4] लगिवाय रूष॥ छं०॥५२॥

न चलि कंत सुभचिंत। धनी बहु[5] वित प्रगासौ॥
गह गहि ऐसौ प्रेम। सौज आनंद उहासौ॥
दीरघ निसि दिन तुच्छ। सीत संतावै अगा॥
अधर दसन घरहरै। प्रात परजरै अनंगा॥
[6]जा ऐनि रैनि हर हर जपत। चक्क सद्द चक्की कियौ॥
हिमवंत कंत सुग्रह ग्रहति। इहकरंत फुट्टै हियौ॥ छं०॥५३॥

चोटक॥ गुरु पंच सुभै दस मत्तपयो। श्रिय नाग हन्यौ हरवाहनयो॥
इति छंद विछंद विलास लहै। तत चोटक छंद सुचदं कहै॥ छं०॥५४॥
दिव दुग्ग[7] निसा दिन तुच्छ रवै। जरि सीत वनं वनवारि जवै॥
चक्क चक्कि चकी जिम चित्त भवै। नितवांम प्रिया मुष [8]मोरि ठवै॥
छं०॥५५॥

बिरही जन रंजन हारि भियं। घनसार[8]म्रगंमद पुंज कियं॥
पहुपंकति पुंजति कन्त जियं। परिरंभन रंभन रे रतियं॥
करि विभ्रम निभ्रम लग्ग तियं। .. . ॥
छिन भाजत लाजत लोचनयं। तन कम्पत जम्पत मोचनयं॥
छं०॥५६॥

नव कुंडल मंडल कन्न रमै। कच अभ्रपटी जनु वीज भ्रमै॥
कुसमावलि तुट्टि लवंग लगं। बरनं रचि छुट्टति पंति बगं॥ छं०॥५७॥

(१) मो.-हिरेदे उज्जल जल विसाल चित्त आवित्ति मांड गज। (२) मो.-रुक्कै।
(३) ए. कृ. को.-अवत। (४) ए. कृ. को.-चलन तोहि लग्गीय रुप।
(५) मो.-वत्त। (६) ए कृ. को.-जय नह रैनि।
(७) ए. कृ. को.-कोलि जवै। (८) ए. कृ. को.-मृदंमद।

श्रम बुंदति मुत्ति झरं उरनं । झलती जनु गिम्ह सिवं सरनं ॥
कटि मंडल घंटि रमन्नि रवै । सुरमंजु[1] मंजीर अमीय स्रवै ॥
छं० ॥ ५८ ॥
रति ओज मनोज तरंग भरी । हिमवंत महा रित[2]राज करी ॥
॥ छं० ॥ ५९ ॥

शिशिर ऋतु का आगम ।

दूहा ॥ संगम सुष सुत्तौ न्रपति । ग्रिह विन एक न होइ ॥
सुनि चहुआन नरिंद बर । सीत न मुक्कै तोइ ॥ छं० ॥ ६० ॥
हिम वित्यौ आगम शिशिर । चलन चाइ चहुआन ॥
सुनि पिय आगम शिशिर कौ । क्यों मुक्कै ग्रिह यान ॥ छं० ॥ ६१ ॥
साटक ॥ [3]रोमाली वन नीर निझ[4] चरयो[5] गिरिदंग [6]नारायने ॥
पव्वय पीन कुचानि जानि मलया. फुंकार झुंकारए ॥
सिसिरे सर्वरि वारूनी च विरहा माहह मुव्वारए ॥
मांकंते म्रिगबद्ध मध्य गमने, किं दैव उच्चारए ॥ छं० ॥ ६२ ॥
*दूहा ॥ अरिय सघन जीतन दिसा । चलन कहत चहुआन ॥
रतिपति चल होइ पिथ्थ गय । ग्रह हमीर ग्रिह जानि ॥
छं० ॥ ६३ ॥
कवित्त ॥ आगम फाग अवंत । कंत सुनि मित्त सनेही ॥
सीत अंत तप तुच्छ । होइ आनंद सब ग्रेही ॥
नर नारी दिन रैनि । मैंन मदमाते डुल्लैं ॥
सकुच न हिय छिन एक । बचन मनमानै बुल्लैं ॥
सुनौ कंत सुभ चिंत करि । रयनि गवन किम कीजइय ॥
कहि नारि पीय विन कामिनी । रिति ससिहर किम जीजइय ॥
॥ छं० ॥ ६४ ॥

---

(१) ए. कृ. को -पुज ।　　(२) ए. कृ. को. गति
(३) ए. कृ. को. रोमावलि ।　　(४) ए. कृ. को. निच्चयो ।
(५) ए. कृ. को.-गिरिदंत ।　　(६) ए. कृ. को. नारायने ।
* यह दोहा मो. प्रति में नहीं है ।

हनुफाल ॥ गुर गरुअ चामर मंद। लहु वरन विच विच इंद ॥
विवहार पय पय बंद। इति हनूमानय छंद ॥ छं० ॥ ६५ ॥
रिति ससिर सरवरि मोर। परि पवन पत्त झकोर ॥
वन त्रिगुन तुल्ल तमोर। घन अगर गंध निचोर ॥ छं० ॥ ६६ ॥
भुअ भोज व्यंजन भोर। लव अमर तिप्प कटोर ॥
रस मधुर मिष्टित घोर। रति रसन रमनति जोर ॥ छं० ॥ ६७ ॥
कल कलस न्त्रित्ति किसोर। वय स्याम गुन अति गोर ॥
परि पेम घेम सजोर। अवलोक लोचन ओर ॥ छं० ॥ ६८ ॥
सुष अंत मुकति सकोर। .... ॥
रम रमति पिष्ष्य नृपत्ति। मनों भुवन वनि सुरपत्ति ॥ छं० ॥ ६९ ॥
इति ससिर[1] सुष विलसंत। रिति राइ आय वसंत ॥
षटु रित्तु, षट रमनीय। रषि चंद वरनन कीय ॥ छं० ॥ ७० ॥
तरु लता गह्वरि फेरि। प्रति कुंज कुंजन हेरि ॥
... .. । .... ॥ छं० ॥ ७१ ॥

कवित्त ॥ कुंज कुंज प्रति मधुप। पुंज गुंजत वैरनि धुनि ॥
ललित कंठ कोकिल। कलाप कोलाहल सुनि सुनि ॥
राजत वन मंडित। पराग सौरंभ सुगंधिन ॥
विकसे किंसुक विहि। कदंब आनंद विविध धुनि ॥
परिरंभ लता तरवरइ सम। भए समह वर अनग तिथि ॥
विच्छुरन छिनक संपत्ति पति। कंत असंत वसंत रिति ॥ छं० ॥ ७२ ॥

पृथ्वीराज का कविचन्द से पूछना कि वह कौनसी ऋतु है जिसमें स्त्री को पति नहीं भाता।

दूहा ॥ षट रिति बारह मास गय। फिरि आयौ रु वसंत ॥
सो रिति चंद बताउ मुहि। तिया न भावै कंत ॥ छं० ॥ ७३ ॥

(१) ए. कृ. को. सम।

कबिचन्द का कहना कि वह ऋतु स्त्री का ऋतु समय (मासिक धर्म्म) है।

जौ नलिनी नीरहि तजै। सेस तजै सुरतंत ॥
जौ सुबास मधुकर तजै। तौ तिय तजै सु कंत ॥ छं० ॥ ७४ ॥

रोस भरै उर कामिनी। होइ मलिन सिर अंग ॥
उहि रिति त्रिया न भावई। सुनि चुहान चतुरंग ॥ छं० ॥ ७५ ॥

रानियों के रोकनें पर एक साल सुख सहवास कर पृथ्वीराज का पुनः बसंत के आरंभ में कन्नौज को जाने की तैयारी करना।

चौपाई ॥ षट्ट सु [1]वरनीं विय षट मासं। रष्षे बर चहुआन विलासं ॥
ज्यों भवरी भवरं कुसुमंगा। त्यों प्रथिराज कियौ सुष अंगा ॥
छं० ॥ ७६ ॥

दूहा ॥ बर वसंत अग्गें जिपति। सेन सजी बहु भार ॥
दिसि कनवज बर चढ़न कों। चितवति संभरिवार ॥ छं० ॥ ७७ ॥

कै जानै कविचंदई। कै प्रयान प्रथिराज ॥
सित सामंत सु संमुहै। पंगराय ग्रह काज ॥ छं० ॥ ७८ ॥

गुरुराम का कूच के लिये सुदिन सोधना।

मतौ मंडि संभरि [1]न्रपति। चलन चिंत [2]पहु अज्ज ॥
दिन अप्पौ गुरराज मिलि। चिंत चलन कनवज्ज ॥ छं० ॥ ७९ ॥

राजा का रविवार को अरिष्ट महूर्त में चलने का निश्चय करना।

कवित्त ॥ चैत तीज रविवार। सुद्ध संपज्यौ सूर जव ॥
एकादस ससि होइ। छंडि दस यान मान तव ॥
वर मंगल न्रप राशि। पंच अक्रूर मेछ वर ॥
दुष्ट भाव चहुआन। राशि अष्टम ढिल्ली धर ॥

(१) ए. कृ. को.-वरुनी।　　(१) मो.-सुपहु।　　(२) मो.-वर।

भर रासि गह षोटौ न्टपति। देषि पुच्छि चहुआन चलि॥
भावी विगत्ति मति उरह उर। जु कछु कह्यौ कविचंद पुलि"
छं० ॥ ८० ॥

पृथ्वीराज का कैमास के स्थान पर जैतराव को राजमंत्री नियत करना।

दूहा॥ नन मानी चहुआन न्टप। भावी चिंति प्रमान॥
सलष वोलि मंतह न्टपति। मत कैमासह थान॥ छं० ॥ ८१ ॥

कवित्त॥ मंचिय थपि पामार। मंति कैमास थान वर॥
ता मंची पन अप्पि। सूर सामंत मंझ भर॥
मंच दिट्ठ दिढ़ वाच। काछ दिट्ठौ दिढ़ लोभै॥
लोह दिट्ठ जुध काल। सामध्रम्मह दिढ़ सोभै॥
पुरुषह सु दिट्ठ काया प्रचंड। दिढ़ दुरग्ग भंजन सुहर॥
गुरराज राम इम उच्चरै। सो मंची न्टप करन धर॥ छं० ॥ ८२

राज्य मंत्री के लक्षण।

सो मंची न्टप करिय। पुव्व बंसह सु वीय सुधि॥
दूत भेद अनुसार। मोह रस बसिन ईछ मुधि॥
न्याय ध्रंम अनुसार। न्याय नंदन परगासै॥
रोगजीत नन होइ। तान चिय लछि अभ्यासै॥
परधान ध्यान जानै सकल। अध्रम द्रव्य नन संग्रहै॥
पम्मार सलष मंची न्टपति। बल गोरी मुष संग्रहै॥ छं० ॥ ८३ ॥

राजा का जैतराव से पूछना कि भेष बदल कर चलें या योंही।

सो मंची पुच्छौ न्टपति। चलन चाइ चहुआन॥
दिसि कनवज धर दिष्पियै। पंग जोग परमान॥ छं० ॥ ८४ ॥
छग्गल पान नरिंद बर। अदभुत चरित विराज॥
चंद भेष चहुआन कौ। थेट सुपत्तौ साज॥ छं० ॥ ८५ ॥

जैतराव का कहना कि छद्मवेष में तेजस्वी कहीं नहीं छिपता इससे समयोचित आडंबर करना उचित है।

चौपाई ॥ राजन चंद वदन ढकि किन्नं । छिपै न छिप कर सूर सघन्नं ॥
छिप्पत कवहुँ न सोमभ्भर तिन । रंकति न छिपै वित परषन षिन॥
छं० ॥ ८६ ॥

सुभग मन मधि विदुष सु कव्वी । देषि सुजान न छिपै गुनव्वी ॥
गैपति मैपति समद न छिप्पै । न [1]छिप्पै न रज रजपूत सुदिप्पै ॥
छं० ॥ ८७ ॥

कवित्त ॥ जो आडंवर तजिय । राज सोभै न राज गति ॥
आडबर बिन भट्ट । कव्वि पुनगार मेट यति ॥
आडंबर बिन नट्ट । गोरि गावै नह रुक्कहि ॥
आडंबर विन वेस । रूप रत्ती न सोय कहि ॥
जन एक सुभर वंदन विदुष । हरुअत आडंवरह विन ॥
पर धर नरिंद वंदन मतौ । करि आडंबर बीर तन ॥ छं० ॥ ८८॥

पुनः जैतराव का कहना कि मुझसे पूछिए तो मैं यही कहूंगा कि सब सेना समेत चल कर यज्ञ उथल पथल कर दिया जावे।

दूहा ॥ मत पुछ्छै चहुआन मुहि । सज्जि सवै चतुरंग ॥
अजै विजै जानै नहीं । जग्य विनट्टै पंग॥ छं० ॥ ८९ ॥
तुच्छह सथ्थ नरिंद सुनि । जो जानै पहुपंग ॥
वंधि देए करतार अरि । चोर लग्ग निय संग ॥ छं० ॥ ९० ॥
अरि भंजै भंजौ सु पुनि । सम वरि समर सु पंग ॥
जौ पुच्छै चहुआन बर । [2]तौ सज्जौ चतुरंग ॥ छं० ॥ ९१ ॥

गोयन्द राय का कहना कि ऐसा करना उचित नहीं क्योंकि शहाबुद्दीन भी घात में रहता है।

मतौ गरुअ गोयंद कहि । वर ढिल्ली सुर पान ॥

(१) ए. कृ. को.-नन छिपै रजपूत मरकति यह दिपै। (२) ए. कृ. को.-वर।

हथ्थ वीर विरझाइ चलि। धर लग्गौ सुरतान ॥ छं० ॥ ९२ ॥
जिम लग्गो आखेट अगि। ढिल्ली वै सुरतान ॥
विन वुझाय वुझि अग्गिया। जिम [1]घट्ट जम पानि ॥ छं० ॥ ९३ ॥
चित्त चलन चहुआंन कौ। जिन अप्पी मति नन्ह ॥
सब भृत मझझानटारि लष। न्रप ढुंढिय धन लिन्ह ॥ छं० ॥ ९४ ॥

अन्त में सब सेना सहित रघुवंश राय को दिल्ली की गढ़ रक्षा पर छोड़कर शेष सौ सामंतो सहित चलना निश्चय हुआ।

सौ समंत छ सूर भय। ते इक एकह देह ॥
जोगिनपुर रघुवंश सौ। सो रष्षी तल लेह ॥ छं० ॥ ९५ ॥
तत्त मत्त चालन कियौ। महल विसरजन कीन ॥
सत्त घरी घरियार वजि। वर प्रस्थान सुदीन ॥ छं० ॥ ९६ ॥
एक वरष प्रस्थान ते। विय प्रस्थान सुपत्त ॥
ग्यारह से कनवज्ज कौ। चैत तीज रविरत्त ॥ छं० ॥ ९७ ॥

रात्रि को राजा का शयनागार में जाकर सोना और एक अद्भुत स्वप्न देखना।

कवित्त ॥ बिपन महल चहुआन। राज प्रस्थान सुपत्तौ ॥
निसा निद्द उत्तरिय। सघन उन्नयों सु रत्तौ ॥
बीज तेज सूझंत। तमत उठ्यौ व्रत भारी ॥
निसा पत्ति सुर आय। बोल वर वर उच्चारी ॥
चरि चित्त चित्त चहुआन करि। बान विषम गुन बंधयौ ॥
वल श्रवन दिष्ट संभरि धनी। सुर चिंतह लष संधयौ ॥
छं० ॥ ९८ ॥

प्रथमं स्वर चहुआन। बान संध्यौ गुन मंगह ॥
विय अलुक सुर बोलि। चित्त मुक्यौ तिन संगह ॥

(१) मो.-हट्टै।

तीय वचन अपि जीह । जीव सथ्थह लुक छुट्टिय ॥
कर चारहु मन राज । कह्यौ छंदे अंग जुट्टिय ॥
निस पतन भई जोगय विपन । हंकाऱ्यौ दुजराज बर ॥
घरियार प्रात वज्जै सुघर । रत्त भार वर उग्गि धर ॥
छं० ॥ ९९ ॥

कविचन्द का उस स्वप्न का फल बतलाना

सु गुन विद्व कविचंद । अग्र भय छंद विचारिय ॥
[1]सामि हथ्थ जस चढ़न । सुभ्भत आतुर रन पारिय ॥
कलह केलि आगंम । सामि परिगह आहुट्टिय ॥
बल सगपन किय दान । हीन हीनह अप छुट्टिय ॥
कहुई चंद कवि सुष्य तत । आरुप राज न मानइय ॥
सो भूत्त गति न्रिमान सति । नन मिट्टै जुग जानइय ॥
छं० ॥ १०० ॥

दूहा ॥ नहिं बरज्यो कविचंद न्रप । कहि सुनाय सब सथ्थ ॥
ज्यों विधिना वर न्रिंमयौ । [2]जस कग्गद चढ़ि हथ्थ ॥छं०॥१०१॥

११५१ चैतमास की ३ को पृथ्वीराज का कन्नौज को कूच करना

ग्यारह से एकानवै । चैत तीज रविवार ॥
कनवज देषन कारनें । चल्यौ सु संभरिवार ॥ छं० ॥ १०२ ॥

पृथ्वीराज का सौ सामंत और ग्यारह सौ चुनिंदा सवारों को साथ में लेकर चलना ।

कवित्त । ग्यारह से असवार । लष्य लौने मधि लेषैं ।
इसे सूर सामंत । एक अरि दल बल भष्यैं ॥
[3]तनु तुरंग वर वज्र । वज्र ठेलै वज्रानन ॥
वर भारथ सस सूर । देव दानव मानव नन ॥
नर जीव नास भंजन अरिय । रुद्र सेस दरसन न्रपति ॥
भेटयौ सु यह भर सम्भई । दिपति दीप दिवलोक पति ॥छं०॥१०३॥

(१) ए. कृ. को.-स्वामि। (२) मो० मो. (३) ए० कृ० को०-तनु तन गव्वर वज्र ।

चल्यौ सु संभरिवार। सथ्थ सामंत सूर भर ॥
हनिग राज कयमास। अवनि आकंप राज वर ॥
सर बर संभरिवार। साहि बंध्यौ गज्जनवै ॥
हय गय नर भर वीय। सिद्धि छंड्यौ पुनि द्वै वै ॥
सामंत सूर सथ्थह न्रपति। दैव वत्त कारन सुगति ॥
कनवज्ज[1] राज जग्गह कलन। चल्यौ राज संभरि सुभति ॥
छं० ॥ १०४ ॥

कनवज्जह जयचंद। चल्यौ दिल्लीपति पिष्षन ॥
चंद बरद्दिय तथ्थ। सथ्थ सामंत सूर घन ॥
चाहुआन कूरंभ। गौर गाजी बड़गुज्जर ॥
जादव रा रघुवंस। पार पुंडीरति पष्षर ॥
इत्तने सहित भूपति छल्यौ। उड़ी रेन छीनौ नभौ ॥
[2]इक लष्ष लष्ष बर लेषिए। चले सथ्थ रजपूत सौ ॥छं०॥ १०५ ॥

दूहा ॥ करि सुनंद संभरि सु पहु। चढ़िक्रम्यौ [3]लय मग्ग ॥
हर हर सुर उच्चार मुष। उर आराधन लग्ग ॥ छं० ॥ १०६ ॥

साथी सामंतों का ओज वर्णन।

कवित्त ॥ एक सत्त वल सूर। एक वल सहस पानि वर ॥
एक अयुत साधंत। [4]दुरद रद दहन तत्त कर ॥
एक लष्ष आरुद्ध। जुद्ध जम जेम भयंकर ॥
एक कोटि अंगवन। धरत हर उर सु ध्यान बर ॥
रवि तन समान तन उज्जले। सत षट अग्ग सु बीर तन ॥
तिन सथ्थ सज्जि संभरि स पहु। तिथ्थ क्रम न विच्चारअन ॥
छं० ॥ १०७ ॥

सामंतों की इष्ट आराधना ॥

एक ईस आराधि। एक उमया आरोहन ॥
[5]एक दुमनि चित जपत। एक गजवदन प्रमोहन ॥

(१) मो० करन (२) ए. कृ. को.-एकेक लष्प बर लिषीए।
(३) ए. कृ. को. मग्ग। (४) ए. कृ. को.-डर। (५) मो.-एकदिन मन।

एक सठ्ठि चव रचित । एक पंचास उभय रत ॥
एक हनू हिय ध्यान । एक भैरव घोरत[1] मत ॥
इक जपत अंत अंतक मनह । एक पुरंदर रत्त उर ॥
इक उर विदार विद्दर मिरग । धरत ध्यान लंकाल सुर ॥
छं० ॥ १०८ ॥

राजा के साथ जानेवाले सामंतों के नाम और पद वर्णन ।

भुजंगी ॥ गुरुं अंत मत्तं [2]पयं पाय पायं । असी मत्त सब्बै गयंनं सठायं ॥
लहू षोडसं [3]गोचवं अट्ठ सायं । चवै चंद छंदं भुजंगंप्रियायं ॥
छं० ॥ १०९ ॥

चल्यौ जंगलीराव कनवज्ज पथ्थं । चले सूर सामंत सथ्थं [4]समथ्थं ॥
चल्यौ सथ्थ सामंत कन्हं समथ्थं ॥ जिनै बंदियं सूर संग्राम हथ्थं ॥
छं० ॥ ११० ॥

विरद्दं नरंनाह उग्गाह सोहं । कुलं चाहुआनं चषं पट्ट रोहं ॥
गुरू राव गोयंद बंदै सु इंदं । सुतं मंडलीकं सबै सेनचंदं ॥
छं० ॥ १११ ॥

धरै ध्रंम सामित्त सा रायलंगा । सुतं राव संयम्म रन में अभंगा ॥
सदा सेवसों चित्त हनमंत बीरं । रमै रोस रंगं तवै आय भीरं ॥
छं० ॥ ११२ ॥

चल्यौ स्वामि सन्नाह सा देवराजं । सुतं वग्गरीराव सामंत[5]जाजं ॥
सदा इष्ट आभिष्ट स्वांमित्त चित्तं । वियं बीर चित्तं सु आनै न हित्तं ॥
छं० ॥ ११३ ॥

रनंधीर पावार सथ्थं मलष्षं । चल्यौ जैत[6]सिंघं सु कंकं अलष्षं ॥
भरं जामजद्दौं सु षीची प्रसंगं । करं कच्छवाहं सु पज्जून संगं ॥
छं० ॥ ११४ ॥

बलीभद्र कूरंभ पाल्हंन सथ्थं । करंबाह कथ्थं सु कंकं अकथ्थं ॥
नरं निढ्ढुरं धज्ज कमधज्जराजं । वडंगुज्जरं राम सो सामि काजं ॥
छं० ॥ ११५ ॥

(१) मो.- मन । (२) ए. कृ. को-पाद्य । (३) ए. गोचर ।
(४) कृ. को.-मनथ्थं । (५) मो.-राज । (६) मो.-संगं ।

सदा ईस सेवं सुरं अत्तताई। चले हड्ड हम्मीर गंभीर भाई॥
वरंसिंघ दाहिम्म जंघार भीमं। वरं तास चंपै न को जोर सीमं॥
छं० ॥ ११६ ॥

सज्यौ वाह पग्गार उत्तिग्ग सध्यं। चल्यौ चंद पुंडीर संग्राम मध्यं।
वर चाहुआनं वरस्सिंघ वीरं। हरस्सिंघ संगं सु संग्राम धीरं॥
छं० ॥ ११७ ॥

सज्यौ राव चालुक्क सारंग संगं। समं विभ्भराजं सु बंधं अभंगं॥
सथं जागरं सूर सागौर गोरं। वरं वाररंसिंह सा सूर[1] घोरं॥
छं० ॥ ११८ ॥

बली वाररं रेन रावत्त रामं। दलं दाहिमा रूव संग्राम धामं॥
निरब्बान वीरं सु नारेन नीरं। समं सूर चंदेल भोंहा मधीरं॥
छं० ॥ ११९ ॥

बडंगुज्जरं कंक राजं कनक्कं। सहं सूर सामंत बंधैति अंकं॥
चल्यौ माल चंदेल भट्टी सु भानं। समं सामलं सूर कमधज्जरानं
छं० ॥ १२० ॥

बरं सिंघ वीरं सु मोहिल्ल बंधं। न्रपं राय बंधं वरंनं सुसिद्धं॥
दलं देवरा देवराजं सु सोहं। महा मंडलीराव सीहं अरोहं॥
छं० ॥ १२१ ॥

धनू धावरं धीर पांबार सध्यं। चल्यौ तोमरं पाहरा [2]वारि वध्यं
सज्यौ जावलौ जल्ह चालुक्क भारौ। पलं वग्गरी वाय षेता षंगारौ
छं० ॥ १२२ ॥

बली राय वीरं सु सारंग गाजी। परीहार राना दलं रूव राजी।
वरं वीर जादौं भरं भोजराजं। समं सांषुला सीह सामल्ल साजं॥
छं० ॥ १२३ ॥

कमंधज्ज वीकंम सादल्ल मोरी। जरी ठंठरी टाक सारंन[3]जोरी॥
जयंसिंघ चंदेल वारू कँठेरी। भरं भीम जादौं अरी गो उजेरी॥
छं० ॥ १२४ ॥

(१) ए. कृ. को.-धोरं। (१) ए. कृ. को.-वमि।
(२) मो.-मध्यं। (३) ए. कृ. को.-मोरी।

सुतं नाहरं परिहारं महन्नं। समं पीप संग्राम साहं गहन्नं ॥
बरं बारडं मंडनं देवराजं। रनं अच्चलं पाय अचलेस साजं ॥
छं० ॥ १२५ ॥

चल्यौ कच्चराराव चालुक्क वंभं। सुतं भीम संगं सदा देव संभं ॥
कमधज्ज आरज्ज आहं कुमारं। भरं भीम चालुक्क बीरंबरारं ॥
छं० ॥ १२६ ॥

गनै लष्पनं लष्प बघ्घेल एकं। सुतं पूरन[1]सूर बंदै सुतेकं ॥
परीहार तारन्न तेजल्ल डोडं। अचल्लेस भट्टी अरीसाल सोढं ॥
छं० ॥ १२७ ॥

वडंगुज्जरं चंद्रसेनं सुधीरं। सुतं कट्ठियं सिंघ संग्राम बीरं ॥
विजैराज बघ्घेल गोहिल्ल चाचं। लषंनं पवारं नही क्रूर राचं ॥
छं० ॥ १२८ ॥

भरं रंघरी ध्रम्म सामंत पुडीरं। भिरै सूर भग्गै नहीं सारभीरं ॥
कमध्धज्ज जैसिंघ पुंज पहारं। भरं भारथंराय भारथ्थ भारं ॥
छं० ॥ १२९ ॥

सुतं जागरं केहरी मल्हनासं। बंधंनौरवं कट्ट संग्राम बासं ॥
चल्यौ टांक चाटा सु रावत्त राजं। हरी देवतीराइ जादों सु जाजं ॥
छं० ॥ १३० ॥

बली राइ कच्छं[2]ओहट्टी गंभीरं। हुअं हाहुलीराव सथ्थं हमीरं ॥
पहू पुहकरंराव कन्हं सुराजं। दलं दाहिमा जंगली राय साजं
छं० ॥ १३१ ॥

सुषं पंच पंचाइनं चाहुआनं। सुअं पारिहारं रनंबीर रानं ॥
रसं सूर सामंत सथ्थं ससष्पं। बरंलष्पियं एक एकं मुलष्पं ॥
छं० ॥ १३२ ॥

हनूफाल ॥ इक सेवक छिंगन कंन्ह तनौ। निरष्पे कविचंद पुरष्प घनौ ॥
छह अग्गर सुभ्भट सत्त जुतं। कनवज्ज चल्यौ न्रप सोमसुतं ॥
छं० ॥ १३३ ॥

(१) ए. कृ. को.-पूर　　　　　(२) को. एहट्टी।

पृथ्वीराज का जमुना किनारे पड़ाव डालना।

कवित्त ॥ तट कालिंदी तीर। कियौ मुक्काम दिल्लेसुर॥
अवर सूर सामंत। सब्ब उत्तरे आय तुर॥
समै निसा निज सिवरि। वोल सामंत सूर सब॥
मधूसाह परधान। राज उच्चैर सूर तब॥
तीरथ बन अंतर धरिय। अंतर वेध सुगंग धर॥
आवासि मंत कारन सुनहु। चलौ सुभट्ट समंग भर॥छं०॥१३४॥

दूहा॥ तट कालिंद्री तहँ विमल। करि मुकाम नृप राज॥
सथ्थ सयन सामंत भर। सूर जु आये साज॥ छं०॥ १३५॥

कवित्त॥ अप्प जाति विन सब्ब। चले सामंत सथ्थ तब॥
पहु निकट्ट कनवज्ज। ताहि प्रछन्न गवन कब॥
मधूसाह गुरराम। रहे दिल्ली रह कज्जं॥
गुर वीठल समदेव। अनुज रामह सथ सज्जं॥
अह अट्ट राज आवागमन। सजौ सेन सथ्थें सुविधि॥
काज दान द्रव्य गंगह सजौ। जिम सिझ्झै तीरथ्थ सिधि॥
छं०॥ १३६॥

जमुना के किनारे एक दिन रात विश्राम करके सब सामंतों को घोड़े आदि बांटकर और गढ़रक्षा का उचित प्रबन्ध करके दूसरे दिन पृथ्वीराज का कूच करना।

दूहा॥ [1]किय आयस संभरि स पहु। सुनौ सगुर वर साह॥
सत क्रम्मेलक सथ्थ घन। सजौ सक्र मन राह॥ छं०॥ १३७॥
एकादस सर एक नृप। सौ सामंत छ सूर॥
दिसि कनवज दिल्ली नृपति। चैतह वज्जि [2]स तूर॥ छं०॥ १३८॥

कवित्त॥ पारिहार रनबीर। राजा अग्गें आभासिय॥
प्रछन्नह कनवज्ज। तिथ्थ संक्रमन सु भासिय॥

(१) मो.-कार (२) मो..सनूर।

साज सव्व बर ¹तास। भरौं वासन द्रव रज्जिय॥
अवर सब्ब परिहार। काज भोजन सथ सज्जिय॥
साहनी सहि जगमाल तहँ। देहु सबन सामंत हय॥
सारङ्ग सित्त तेजक्क हय। सजे सब्ब परकार तय॥ छं०॥ १३९॥

दूहा॥ बोलि साहनी सोच मन। दल लष्षन अस लज्ज॥
सामंतन कारन बिल्हन। समपि समर जस कज्ज॥ छं०॥ १४०॥
प्रथम संबोधे सथ्थ सह। सुत दुज रष्षे साह॥
जाम सेष रजनी चढ़्यौ। सिलह सु सज्जी ताह॥ छं०॥ १४१॥

पृथ्वीराज का नाओं पर यमुना पार करना।

इन प्रपंच भुअपति चल्यौ। अरु कविचंद अनूप॥
जमुना ²नावनि उत्तरिय। निकट महल अनुरूप॥ छं०॥ १४२॥

पृथ्वीराज के नांव पर पैर देते ही अशुभ दर्शन होना।

कवित्त॥ चढ़त राज प्रथिराज। सगुन भय भीत उपन्नौ॥
स्याम अंग तन छिद्र। कलस संमुह संपन्नौ॥
एक अंग तिय सकल। एक आभेस भेस बर॥
एक अंग शृंगार। एक अंगह सुंदर ¹नर॥
दिष्षी सु नयन राजन रमनि। पुच्छि वत्त धारह धनिय॥
शृंगार बीर दुअ सचरहि। अब्बूवै अप्पन भनिय॥ छं०॥ १४३॥

नांव से उतरने पर एक स्त्री का मिलना।

दूहा॥ तोन बंधि भुअपति उभय। अरु कविचंद अनूप॥
जमुन उतरि नावह निकट। मिलिय महिल इन रूप॥छं०॥१४४॥

उक्त स्त्री के स्वरूप का वर्णन।

कवित्त॥ पानि नाल दालिमी। हास मुष नैन रोस निज॥
उरसि माल जा सूल। कमल कनशर सिरसी रज॥

---

(१) ए. कृ. को.-ताह। (२) मो.-नावमु।
(१) ए. कृ. को.-नर।

वाम हेम आभ्रंन। लोह दच्छिन दिसि मंडिय ॥
अद्ध केस सलवंध। अद्ध [१]मुकलित तिहि छंडिय ॥
विपरीत पीत अंबर पहरि। पिष्षि राज अचरिज्ज करि ॥
किन महिली किन घर न सुबर। किन सु राज अरधंग धरि ॥
छं० ॥ १४५ ॥

हनूफाल ॥ मिलि महिल सगुन सरूप। द्रग अप्प निरषत भूप ॥
दछि दोर नालि सु लीन। कर वाम समकर भीन ॥ छं० ॥ १४६ ॥
अधकेस मुकुलित संधि। [२]अध कुंत लंकल्ल वंधि ॥
अवतंस इक अव स्रोन। दिसि कंक आसिय वोन ॥ छं० ॥ १४७ ॥
द्रिग वाम अंजन दीन। दछि नेंन नागवि कीन ॥
सल वाल भाल सुपत्ति। परसात कंकि [३]षत्ति ॥ छं० ॥ १४८ ॥
मुष हास नेन विरोस। [४]नासाग्र उग्रन जोस ॥
कर रतन दच्छिन राज। पहु पानि वल्लिय वाजि ॥ छं० ॥ १४९ ॥
मुकतावली अध सेत। अध साल माल मवेत ॥
दुति बरन भूषन रूप। जालंक कलसा नूप ॥ छं० ॥ १५० ॥
अधसेत आसुरि स्याम। रत पीत अंबर काम ॥
सुर गुनिय जा तिल तंत। सिर कमल कल हय यंत ॥ छं० ॥ १५१ ॥
तंडीव तरल तरंग। जालंक तंड सुरंग ॥
अध मत्त गवन अनूप। अध चंचलं मद ऊप ॥ छं० ॥ १५२ ॥
पद जेहरी धरि हेम। क्रम क्रम्यौ उरजत नेम ॥
सच साष वाम सु पुल्लि। पद दच्छिनी क्रत गुल्लि ॥ छं० ॥ १५३ ॥
को महिल को वर गेह। पुछि राज अचरिज एह ॥
... .. । .. . ॥ छं० ॥ १५४ ॥

राजा का कवि से उक्त महिला के विषय में पूछना।

दूहा ॥ इहि बिधि नारि पयान मिलि। मुष कल रत्त फुनिंद ॥
उद्दिम आदर चल्लिय न्रप। तब नह वुझिझय चंद ॥ छं० ॥ १५५ ॥

(१) मो.-मुक्कित बर। (१) ए. कृ. को.-धर।
(२) ए. कृ. को.-पात्ति। (३) ए. कृ. को.-नासाग्र उग्र उग्गन जे।

*कहै चंद न्टप ईस सुनि। दरस देवि दिय तोहि॥
जग्गि भंजि अरि गंजिकै। दुलह संजोगिय होइ॥ छं०॥ १५६॥

राजा का कविचंद से सब प्रकार के सगुन असगुनों का फल वर्णन करने को कहना।

बहुरि सगुन राजन्न हुअ। फल जंपै कविचंद॥
उत्तिम मद्धिम विवह परि। कहि समझावत [1]छंद॥ छं०॥१५७॥

पद्धरी॥ चहुआन चवै सुनि चंद भट्ट। संक्रमन [2]मग्ग उच्छंग थट्ट॥
तुम लहौ अर्थ विद्या सु सार। जंपौ सु सगुन सब्बै प्रचार॥
छं०॥ १५८॥

कविचंद का नाना प्रकार के सगुन असगुनों का वर्णन करना

कविचंद कहै सुन दिल्लिराज। विधि कहौं सगुन सब्बें सु साज॥
दच्छिनहि वादि वामंग वादि। सम थान देवि उत्तिम उमादि॥
छं०॥ १५९॥

अति बृद्धि रिद्धि [3]अप्पै सु लोय। जस कुसल सुफल पंथी सजोइ॥
सुर दून तीन दाहिनी देय। वर्ज्जंत गमन पथिकं परेय॥
छं०॥ १६०॥

मंडलह स्वर तरि संझ सद्दि। मुक्कंत सीम पंथिक परद्दि॥
वायंव हुंत दच्छिन प्रवेस। ताराय ताम जंपे सु तेस॥
छं०॥ १६१॥

एकीक कुसल दुअ कुसल काज। [4]तीसरी होत फल रिद्धि राज॥
दाहिनी हुंत दिसि वाम आय। पंथी गवंन वरजंत ताइ॥
छं०॥ १६२॥

दूसरी घात बंधनह हत्त। तीसरी गवन [5]सूचंत मत्त॥
ताराय उंच फल उंच [6]देस। मद्धिम्म अधम अद्धी सु [7]तेस॥
छं०॥ १६३॥

* यह दोहा मो. प्रति में नहीं है। (१) ए. कृ. को-चंद।
(२) ए. कृ को-लग्ग। (३) ए. कृ. को.-अप्पे। (४) ए. कृ-तीसरी।
(५) मो.-सयुन। (६) ए. कृ को.- देह। (७) ए. तेय। को. मो नेस।

दष्षिनी सगुन सुर दष्षि चारि। बांईय वाय प्रसरंत रारि॥
कारज्ज सिद्धि सूचंत ताम। विपरीत सुफल विपरीत काम॥
छं० ॥ १६४ ॥

सुर एक एक कंटक अरोहि। अंगार तूर भसमं वरोहि॥
सूकें सु कटु गोबर सु हंडि। आहट्ठि सद्दि गुनयंग छंडि॥
छं० ॥ १६५ ॥

उत्तरै तार सद्दै सु सद्द। पूरन्न चित्त कारिज्ज मंद॥
आवंत होय जो येह नाम। वांईय सद्दि सिद्धंत काम॥
छं० ॥ १६६ ॥

केदार कूप नै तट्टवाय। परहरै सिद्ध वंछै सु जाय॥
तीतरह षरह नाहर जंबूक। सारस्स चिल्ह चाचिग अलूक
छं० ॥ १६७ ॥

कपि कंठनील सुक सद्दि नाम। दिस संति सुष्य पूरंत काम॥
यंचाइन दिस दाहिन प्रचार। सादंत अर्थ दष्षित सचार॥
छं० ॥ १६८ ॥

सूचंत सुभय दारुन्न सथ्थ। पति सथ्थ निद्धि निंदं अतिथ्थ॥
चै पंच सत्त एकं उभार। पहु काल म्रग्ग दाहिन सुचार॥
छं० ॥ १६९ ॥

भोजनं पच्छ वाईय माल। पूरंत अर्थ अर्थीव ढाल॥
एकलौ असित म्रग जम्म रूप। बूडंत किरनि अंतकह जूप॥
छं० ॥ १७० ॥

निक्काम सगुन जो होइ सिद्धि। प्रावेस सोय विपरीत रिद्धि॥
सद्दै जो सिवा सद्दह कराल। वाईंय दिसा सुभ भेव ढाल॥
छं० ॥ १७१ ॥

चाचिग्ग निकुल अज भारद्वाज। चामर सु छत्र वीणा सवाज॥
भृंगार वार विरही कनक्क। दुर्वारु[1] दद्धि सुरसुर[2] धनंक॥
॥छं०॥१७२ ॥

(१) ए. कृ. को.-दुर्वास। (२) मो. सुरि।

द्रप्पन कलाल वेसारु गज्ज। [१]सारन्न सिद्धि अष्षै सुरज्ज ॥
मूषक करम्भ गोधह भुअंग। ... ... छं० ॥ १७३ ॥
अंगार कच्च भसमंग पास। गुड़ लवण तक्र गोवर दुरास ॥
[२]प्रवरज्ज अंध सूकंत केस। गरदम्भ रूढ़ तजि अंदेस ॥
॥छं०॥१७४॥

प्रनयास पंच छह करहि जाम। या दुष्ट सगुन छंडै सु राम ॥
सागुन्न पुरिष सह वाम नाम। त्रिय नांम सुम्भ दच्छिनह ताम ॥
॥ छं० ॥ १७५ ॥

दूहा ॥ बनबिलाव घूघू घरह। परत परेव पंडूक ॥
एक थान दष्षिन दिसह। कहिय न अवन समूक ॥ छं० १७६ ॥
रासभ उभय कुलाल करि। सिर वंधन निस भारि ॥
वाम दिसा संमुह मिलिय। अवसि होइ प्रभु रारि ॥छं०॥१७७॥
अतिलक बंभन स्याम असु। जोगी हीन विभूति ॥
संमुह राज परष्षियै। गमन वरज्जै नित्त ॥ छं० १७८ ॥
सिर पंछी दच्छिन रवै। वामी ऊवहि सियाल ॥
मृतक रथी समुंह मुषह। कीजै गवन न्रिपाल ॥छं०॥१७९॥
कलस केलि उज्जल वसन दीपक पावक सच्छ ॥
सुनिय राज बरदाय भनि। एह सगुन अति अच्छ ॥छं०॥१८०॥
राज सगुन संमूह हुअ। धुअ तन [३]सिंघ दहारि ॥
मृग [४]दच्छिन छिन छिन पुरहि। चलहित संभरिवार
॥ छं० ॥ १८१ ॥
सुनत सीस [५]मारस सबद। उदय सुबद्दल भान ॥
परनि भाजि प्रतिहारसौ। करहित काज प्रमान ॥ छं० ॥ १८२ ॥
काल कलार सद्यो समुह। हसि न्रप वुझ्यौ चंद ॥
इक रवि मंडल भेदि है। इक करिहै आनंद ॥ छं० ॥ १८३ ॥

(१) ए. कृ. को. साहसन। (२) ए. ववरज्ज।
(३) मो. "सिवह"। (४) मो. दष्षिन षिन षिन।
(५) ए. कृ. को.- सारद।

कवि का कहना कि आप सफल मनोरथ होंगे परंतु साथही हानि भी भारी होगी।

एक करहि ग्रह नंद वह। इक छिन [1]भिन्न सरीर॥
इक भारथ्थ सु जीतिहै। जे वज्रंग सु वीर॥ छं०॥ १८४॥

यह सुन कर पृथ्वीराज का कैमास की मृत्यु पर पश्चाताप करके दुचित्त होना।

सुबर वीर सोमेस सुअ। गुन अवगुन मन धारि॥
दुष अति दाहिम्मा दहन। मरन सु मंगल गारि॥ छं०॥ १८५॥

सामंतों का कहना कि चाहे जो हो गंगा तीर पर मरना हमारे लिये शुभ है।

सम सामंतन राज कहि। पहु परमारथ मत्ति॥
समर तिथ्थ गंगा उदक। उभय अनूपम गत्ति॥ छं०॥ १८६॥

वसंत ऋतु के कुसमित वन का आनंद लेते हुए सामंतों सहित राजा का आगे बढ़ना।

रति माधव मोरै सु तरु। पुहप पच बन वेलि॥
राज कवी करतह चले। सम सामंतन केलि॥ छं०॥ १८७॥

राजा के चलने पर सम्मुख सजे बजे दूलह का दर्शन होना।

कवित्त॥ चलत मग्ग चहुआंन। जांम पिगीय पहु निकरि॥
सजि दुल्लह सनमुष्प। सुमन सेंहरौ सीस धरि॥
सजे पिट्ठ वामंग। रंग निज नेह प्रकम्मे॥
पिष्षि राज प्रथिराज। मन्नि सा सगुन सु [2]म्रम्मे॥
उदयंत दिवाकर चीय मिलि। सुभट अंत किय जुद्ध जुरि॥
जय जंपि सथ्थ साहा गवन। बज्जे बज्जनि [3]सिंधु सुर॥ छं०॥ १८८॥

---

(१) ए. कृ को.-भीन। (२) को.-भंमे। (३) मो.-सिंधुसुरन।

आगे चलकर और भी शकुन होना और राजा का मृग को वाण से मारना ।

दाग षंचि दिल्लेस । जाम उभया षिन उत्तरि ॥
दिसि दाहिनि सजि द्रुग्ग । बास वित्ती तर [1]उप्परि ॥
दिसि वाइँ वर सद्दि । भसम उप्पर आरुन्नी ॥
ताम तंमि उत्तरी । इष्षि राजन सरसम्मी ॥
एकल्ल मृग्ग सन्हौ मिल्यौ । हयौ राज संधेव सर ॥
उत्तरी ताम देवी दुहर । देषि सर्व दुस्सन्न भर ॥ छं० ॥ १८६ ॥

और भी आगे चलने पर देवी के दर्शन होना ।

चल्यौराज प्रथिराज । उभय षिन तथ्थ विलंबे ॥
मिल्लि संमुह जुग्गिनिय । दरस दीये न्रप अंबे ॥
कर षप्पर तिरसूल । सवद उच्चरि जय जंपे ॥
मधि षप्पर [2]धरि हेम । प्रनमि राजंग पयंपे ॥
साकत्ति सज्जि हय हंकि सव । अवर वारि आरोहि चिय ॥
ग्रह जाइ अप्प अपगुन किये । मिल्लिय राज सा संमुहिय ॥
छं० ॥ १६० ॥

इसी प्रकार शुभ सूचक सगुनों से राजा का बत्तीस कोस पर्य्यंत निकल जाना ।

दूहा ॥ इन सग्गुन दिल्लिय न्रपति । संपत्तौ भूसाम ॥
कोस तीस दुअ अग्गरौ । कियौ मुकाम सु ताम ॥ छं० ॥ १६१ ॥

एक रात्रि विश्राम करके पृथ्वीराज का आगे चलना ।

सहि राज रनवीर तहँ । किय भोजन सु उताम ॥
सव आहारे अन्न रस । चल्या जाम निसि जाम ॥ छं० ॥ १६२ ॥
अरिल्ल ॥ किय भोजन सवसथ्थ व्रहासन ग्राम दिय ।
तिथ्थि चवथ्थिय सोम जाम इक नींद लिय ॥

---

(१) ए. कृ. को.- उत्तरि । (२) मो.-धर ।

फुनि चढ़ि चल्यौ राज न बुझयौ कोइ मत्त।
नट्ट सु बुझ्झै राज समझ्झि न अप्पि व्रत्त ॥ छं० ॥ १९३ ॥

उक्त पड़ाव से राजा का चलना और भांति भांति के भयानक अपशगुन होना।

भुजंगी ॥ चल्यौ राज प्रथिराज कनवज्ज राजं। लिए सहस एकं सतं एक साजं॥
रवीवार वारं तिथी ताइ रूपं। सवं इन्द्र जोगं छठं राह रूपं॥
छं० ॥ १९४ ॥

दुरं वार आकास वाअंक लज्जी। दुहू पष्य नीचं सवं दाव नज्जी॥
मिली नारि पंचं सिरं कुंभ धारी। मुरी मध्य विद्धी उभै रूपकारी॥
छं० ॥ १९५ ॥

न्त्रपं जोग तीरं जु जै जै करंती। दई दच्छिनं वाम पंषी फिरंती॥
मिल्यौ रूपराअं करै सद्द वामं। गरज्जंत मेघं अकालं सु तामं॥
छं० ॥ १९६ ॥

सुवं अग्गि झालं म्रतं कास उट्ठी। वलैजा करीरं मुषं मंस छुट्टी॥
लियं मंस गिद्धी उषं हंनि मग्गी। वुलै सारसं वाम कुरलंत डग्गी॥
छं० ॥ १९७ ॥

एक ग्राम में नट का भगल (अंग छिन्न दृश्य) खेल करते हुए मिलना।

कवित्त ॥ चलत मग्ग चहुआन। निकट इक गाम समंतर॥
नट षेलत नाटक्क। भगल मंड्यौ भ्रम तंतर॥
सत्त संगु उप्परै। नट्ट सुत्तौ जय जंपत॥
कहुंत सीस कहुं पानि। धरनि धर पर्‍यौ सु कंपत॥
इह चरित पिष्षि सामंत सब। अप्प चित्त विभ्रम लहै॥
पिष्पंत परसपर मुष [1]सकल। नको बुझ्झ राजन कहै॥छं०॥१९८॥

---

(१) ए. कृ. को.- सयल।

जैतराव का कन्ह से कहना कि राजा को रोको यह अशगुन भयानक है। कन्ह का कहना कि मैं पहिले कह चुका हूं।

इक्क कहै कोइ तिथ्थ। कवन थानक को देवह॥
जिहि असगुन चल्लियै। कोइ न जानै यह भेवह॥
कहिय जैत सम कन्ह। तुमहिं रष्षौ कहि राजन॥
कहै कन्ह नन लह्यौ। प्रथम बरज्यौ बहु जाजन॥
पज्जून कहै बुझ्झहु [1]सकल। इह अवस्य कनवज क्रमै॥
जानैं सुभट्ट कारज सयल। मति सु कोइ चिंता भ्रमै॥छं०॥१९९॥

कन्ह का कहना कि कहने सुनने से होनी नहीं टरती।

कहै कन्ह नरनाह। सुनहु कूरंभराव ध्रुअ॥
जो भविस्य [2]न्निमान। सोइ मिट्टै न भूर [3]ध्रुअ॥
धरम सुअन [4]क्रत दूत। सोई बरज्यौ नहिं मानिय॥
जनमेजै कहि जग्य। सु हित निष्षेध न जानिय॥
सौमित्र बरज्जित राज रघु। कनक म्रग्ग संधेव सर॥
दसकंध [5]निषेधिय मंत्रियन। सीय न अप्पिय काल वर॥छं०॥२००॥

किय जद्दव त्रिय रूप। स्राप दुर्वास सुधारिय॥
काल विनस निर्घोष। विप्र वाहै नन हारिय॥
इहि राजा प्रथिराज। हन्यौ कैमास अप्प कर॥
भरि वेरी चामंड। किये दुम्मंन मब्ब भर॥
इह गमन भट्ट बुझ्झै न्रपति। करै कहा सुभ्भै न मन॥
उप्पजी कोइ क्रत्या अतुल। सोइ प्रह्लचिय राज म तन॥ छं० ॥२०१॥

*बार सोम पंचमी। जाम एकह निसि वित्ती॥
कें दुर्बल वर पट्ट। तहां उतरी न्रप रत्ती॥

---

* यह २०२ और २०३ दोनो छन्द मो.-और ए. प्रतियों में तो हैं ही नहीं। क. प्रति में लिख कर काट दिए गए है।

(१) ए. कृ. को- सयल　　(२) मो -निरमान।　　(३) मो. कृ. ए.-भुअ।
(४) ए. कृ. को. स्रम।　　(५) ए कृ को. निदेवन।

करि स्तुति सब सथ्य। अश्व तजि नींदह ग्रासं॥
घटी पंच निसि शेष। सु पहु चल्यौ चढ़ि तासं॥
पत्तौ सु जाय संकरपुरह। दिवस अंत बरथान नय॥
आहारि अन्न आसन्न सय। सब बुझ्झे सामन्त तय॥ छं०॥ २०२॥

पृथ्वीराज का सब सामंतों को समझाना।

इह जंपी प्रथिराज। करिव अस्तुति सामंतं॥
धरि छग्गर कविचंद। महल दिष्पन मन संतं॥
जब जानौ युध समय। तुमै सब काम सुधारौ॥
मो चिंता मन मांहि। होय तुमतैं निसतारौ॥
संभल्लिव सकल सामन्त मत। भयौ वीर आभास तन॥
चिंतिय सु इष्ट अप्पान अप। आश्रम्मं सव्वा सुमन॥ छं०॥ २०३॥

पंचमी सोमवार को पहर रात्रि गए पड़ाव पड़ना।

दूहा। जानि सगुन चहुआन नैं। मन भावी सो गत्ति॥
मो न मिटै पर ब्रह्म सौं। ब्रह्म चीत भैभित्त॥ छं०॥ २०४॥

सामंतों का कहना कि सब ने हटका पर आप न माने।

[१]सह समझि नारंजुलै। सो इच्छिनि मोकल्लि॥
गुरू सज्जन सैसव[२] सु बंध। बरजंतै न्टप चल्लि॥ छं०॥ २०५॥

सामंतों का कहना कि हमें तो सदा मंगल है परंतु आप हमारे स्वामी हो इस लिये आपका शुभ विचार कर कहते हैं।

रवि मंडल भेदै स [३]फुटि। प्रथम चित्त [४]फुनि होइ॥
[५]तन जंपै भट जीह करि। न्टपहि अमंगल [६]जोइ॥ छं०॥ २०६॥

(१) ए. कृ. को.- सम। (२) ए. कृ. को.- सैसव्व।
(३) मो.- फुनि। (४) मो.- पुनि।
(५) मो.- नन। (६) ए. कृ को.- होइ।

प्रातःकाल पुनः चाहुआन का कूच करना। स्वामी की नित्य सेवा और उनका साहस वर्णन।

पद्धरी ॥ चढ़ि चल्यौ राज चहुआन सूर । त्रिमलिय किति रवि प्रात नूर॥
इक एक वीर दह दहति सूर[1] । देवत्त वाह दुज्जन करूर ॥
छं० ॥ २०७ ॥

तिन सथ्थ पंच भर पंच जित्त । सज्जोति सेन सिरदार इत्त ॥
इक इक्क संग हुअ दुअन दाह । जनु दार पच्छ बाराह राह ॥
छं० ॥ २०८ ॥

सजि चली संग देविय प्रचंड । उनमन्न[2] रूप कर सजे दंड ॥
सजि चल्यौ संग भैरूं उभंत । सेवक सहाय अरि करत अंत ॥
छं० ॥ २०९ ॥

सजि चले दूय पंचास वीर । कौतक्क कहल मन हरषि धीर ॥
जुग्गिनिय सट्ठि चव चल्लि संग । किलिकिलत काल सम रमन जंग॥
छं० ॥ २१० ॥

भहराति भीत भूतन जमांति । घहराति घोरि सुर प्रेत पांति ॥
अनि अन्नि इष्ट सबदेव साधि । चल्ल सुमंच जंचनि अराधि ॥
॥ छं० ॥ २११ ॥

अकलंक कंक अनमंक चित्त । रच्चे सु स्वामि सव सेव हित ॥
माया न मग्ग जिन चित्त जाइ । पोइनिय पत्त जल ज्यों जनाइ ॥
॥ छं० ॥ २१२ ॥

ऐसे जु मित्त मामंत सूर । उनमत्त अंग जनु नदिय पूर ॥
ढलहलिय ढाल्ल मालह सजूर । वस्संत जानि हल्लत पजूर ॥
॥ छं० ॥ २१३ ॥

निरषंत नयन तिय तेज ताप । चढ़ि चल्यौ राज चहुआन आप ॥
सामंत सूर[3] सूरहि नरंभ । दिप्पियै लाज तिन सुप्प अंभ ॥
॥ छं० ॥ २१४ ॥

---

(१) ए- सूर। 　(२) ए. कृ. को- उनमत्त। 　(३) ए कृ को- सूरद।

सामंत किरनि प्रथिराज सूर। अरि तिमिर तेज वद्दन करूर॥
पूहवी न वीर इन समह कोइ। कवि कहै वरनि जौ आन होइ
॥ छं० ॥ २१५ ॥
इहि पंड समय भूभार पथ्थ। तिहि काज भयौ अवतार [1]तथ्थ
भय अभय चिंति हृद सुपहि जोति। उग्गंत हंस छवि जानि होत।
॥ छं० ॥ २१६ ॥

इस पड़ाव से पांच योजन चलने पर पृथ्वीराज का कन्नौज की हद मे पहुंचना।

जोजनह पंच गय चाहुआन। पर पुरह जानि उग्गौ सुभान॥
.. . । ... .. ॥ छं० ॥ २१७ ॥
दूहा॥ पर पुहमी पत्ते सु पहु। उग्ग भान पयान॥
दल बद्दल सद्दल दिसह। पूरन [2]छ्यत गयान।छं०॥२१८॥

एक दिन का पड़ाव करके दूसरे दिन पुनः प्रातः काल से पृथ्वीराज का कूच करना।

उदय हंस सज्जे सगुन। बज्जे अनहद सद्द॥
दिष्यत दरसन परस तप। पुल्ले दस दिस जद्द॥ छं० ॥ २१९॥

प्रभात समय वर्णन।

कवित्त॥ [3]चढ़ि चतुरंग चहुआन। राइ संभरिय सुयंभर॥
सकल सूर सामंत। मंत भंजन समथ्थ वर॥
पर अहंन सम समय। होत सकुन कुल सोरं॥
वज्जि पंचजन्न देव। सेव अंवर [4]मग ओरं॥
जल पात जात मिलि विष्फुरत। रोर अलिन सलिन रुपद॥
[5]लंपट कपाट विट चिय तजत। तम चर दर कीनी सुषद॥
छं० ॥ २२० ॥

(१) मो - पिथ्थ। (२) ए. कृ. को-सपत। (३) ए. कृ. को. चढ़ि चतुरंग चतुरग।
(४) ए. कृ को.- मन। (५) मो -लपट किपाट विट चिय तजन। चग चर चर कीनी भुखद।

पद्धरी ॥ तत्र सज्जि सुदल विद्दल विसाल। पूरंन [1]गेन मूरंन [2]भाल ॥
[3]डंवरिय धरनि आरोह गेंन। दिसि विदिसि पवनपरसंत[4] ऐन ॥
॥ छं०॥ २२१ ॥

सामंत सूर हैवर अरोहि। आलम [5]क्रत्त मलि अगम सोह ॥
ढलवोय पीय ढलकंत ढाल। दधि झाल पलव वैरष विसाल ॥
॥ छं० ॥ २२२ ॥

हय हींसधरा पूर विहर बाह। तारच्छ सु तन अंतर उलाह ॥
ऐसे सुवीर रिन[6]विषम धार। अरि अंब[7]अचन अग्गमि करार ॥
॥ छं० ॥ २२३ ॥

पहुआंनभान अरि तिमिर तार। मासंत सूरकरिकार प्रचार ॥
दरसंत परसपर सुभट सेन। सींभंत भंति तन धरिग्ग सेन ॥
छं० ॥ २२४ ॥

विहसत विहाय सघ्यान थान। सतपत्र फुल्लि मिलि भ्रमर मान॥
छूटंत गंधि [8]मिलि मंद वात। मिलि चले भ्रमर परसन्न सुधात ॥
॥ छं० ॥ २२५ ॥

परजंक प्रीय नह तजत प्रौढ़। नव पंज रंज [9]तल मलत मौढ़॥
सद्दंत चक्र साहीत वैन। अनुभान मत्त क्रम छंडि सेन॥
॥ छं० ॥२२६ ॥

दिसि विदिसि नयन परसन करंत। रसना रराल हरि वर धरंत॥
संफटि तमोघ [10]तिमरनि तरार। पंजनह नगर उठि पवन धार॥
छं०॥ २२७ ॥

संभरिय राय संभरि सु [11]माम। अवलोक देव नंदन सु गाम ॥
। .... .. छं० ॥ २२८ ॥

(१) ए. कृ को -गोंन। (२) । ए -मूरंत। (३) मो.- डम्मारि।
(४) मो. पमरत। (५) ए कृ को.-क्रम्म। (६) मो.-निरमले।
(७) ए. कृ को -मो. अचपन। परंतु अक्षर बढ़ता है। (८) ए कृ को.-जागि।
(९) मो. नन। (१०) ए कृ. को.-नमृनि। (११) मो.-नाम, को. कृ.-समान।

कवित्त ॥ है सजि संभरि राय। चढ़िव चौहान प्रनं मन ॥
क्रमत मग्ग पिंगलह। मान उद्थान विपंनन ॥
नेंन दरसि दिसि विदिसि। निंद सभगिय पल्ल अंगन ॥
अवलाकित दिन लोक। लोकनर वर है दंगन ॥
दिष्यियै वदन दूलह हगनि। सदन रंग [1]दुलही क्रमत ॥
वंदेवि पाय निंदे अगुन। फल सुभाव अंवर प्रमत ॥
छं० ॥ २२९ ॥

वन प्रान्त में एक देवी का दर्शन करके राजा का चकितचित होना।

दूहा ॥ बन सु थान इक देवि मिलि। संग स्वान गन माल ॥
जट विभूति कर कंबयनि। लषि अचिज्ज भूपाल ॥ छं० ॥ २३० ॥

देव का स्वरूप वर्णन।

हनूफाल ॥ जट विकट सिर जट जूट। अव संचिय मुद्र विनूट ॥
चरचर्थ्य चरचित अंग। द्रग दिपै लोल सुरंग ॥ छं० ॥ २३१ ॥
गर गुंज गुंथित बंध। बनि सेत नेत सुकंध ॥
सजि पानि तानि कराल। सँग रंग स्वानह माल ॥ छं० ॥ २३२ ॥
रव हक्क गज्जत गन। लघु दिघ्घ चुट्टत बैंन ॥
हिय रत्त स्याम सु थान। कटि नील पीत उरान ॥ छं० ॥ २३३ ॥
भुज गेंन [2]रंग रसाल। कंबु ग्रीव [3]पीत सु आल ॥
अव सेत भ्रूव स भूर। लिल्लाट केसरि नूर ॥ छं० ॥ २३४ ॥
तन रंग नान प्रकार। चर चरन रंग सु चार ॥
नष नील घन परवान। मुष मुदित दिष्यि न्रपान ॥ छं० ॥ २३५ ॥
कविचंद दीन असीस। हसि जंपि नंमिय सीस ॥
दिषि दंत नील सुरंग। रसना सुरंग दुरंग ॥ छं० ॥ २३६ ॥
सित असित तन के भाव। सुद देव भूतनि राव ॥

(१) मो -हुल्ली। (२) ए. कृ. को -रेंन। (३) ए. कृ. को.-पीतल।

राजा का पूछना कि तू कौन है और कहां जाती है।

किन थान सों गम कीन। किन ठौर पर मनदीन ॥ छं० ॥ २३७ ॥

उसका उत्तर देना कि कन्नौज का युद्ध देखने जाती हूं।

सतिजुग्ग मो पित जुद्ध। रन त्रिपुर षंड विरुद्ध ॥
त्रता सु रघुकुल राम। हनि लंक रावन ताम ॥ छं० ॥ २३८ ॥
द्वापुर सु अर्जुनराय। [1]घटवंश घल्यौ घाय ॥
कलिजुग्ग कनवज राज। चहुआन कुल [2]प्रथिराज ॥ छं० ॥ २३९ ॥
अरुछी सु कमधज बंस। जुन्हाइ उदर प्रसंस ॥
दिय सुमति ताहि दुसीस। कलिप्रिया नाम सरीस ॥
छं० ॥ २४० ॥
पित पत्ति कुल संघार। सम पानग्रहन सु बार ॥
सो चरित दिष्षन काज। सिव हार कंठ समाज ॥ छं० ॥ २४१ ॥
यह जंपि गवन सु कीन। न्रिप चंद हसि रसभीन ॥
.. । .. ... छं० ॥ २४२ ॥

पृथ्वीराज का चंद से अपने सपने का हाल कहना

तिघट तीय माया सरिय। द्रिग लग्गिय तिहि काल ॥
सजि संवेग सु सुंदरिय। रचि शृंगार रसाल ॥ छं० ॥ २४३ ॥

पूर्व की ओर उजेला होना, एक सुंदरा स्त्री का दर्शन होना।

हनूफाल ॥ पहु ओर प्रगटि [3]प्रहास। छिन प्राचि ओर उजास ॥
तिहि समय न्रप द्रग लग्गि। तिन मध्य सुपन सुपग्गि ॥
छं० ॥ २४४ ॥

उक्त सुन्दरी का स्वरूप वर्णन।

हिय नेन सेन बिहास। नवरंग नारि इहास ॥
तिहि समय सुभ्रम चंद। मुप अग्ग न्रप वर मंद ॥ छं० ॥ २४५ ॥

(१) ए. कृ. को.- घन। (२) ए. कृ. को.-पुगराज।
(३) ए. कृ. को. प्रकास।

कच कुसुमकवरि सुरंग। जनु अमिय [1]इंद उरंग ॥
नग सुत्ति सुमन सुभाल। हर रुद्र कालि कपाल ॥ छं० ॥ २४६ ॥
मधि भाग केसरि [2]आट। हर इंद तिलक लिलाट ॥
श्रुत मंडि कुंडल लोल। रथ भान भंग अलोल ॥ छं० ॥ २४७ ॥
[3]भुअ वंक धनु सुरराइ। कर अंचि [4]चाय सुचाइ ॥
द्रिग दिपत चंचल चार। अलि जुगल कुमुद विहार ॥ छं० ॥ २४८ ॥
नव नासिका सुकनंद। रति विंब वढ़िय अनंद ॥
तिन अग्र मुकति सु नंद। रस सुक्र ससि नय कंद ॥ छं० ॥ २४९ ॥
कल काम आल कपोल। तहं अलक झलकत लोल ॥
[5]दुरि रदन दारिम बीज। रव काल कोकिल मीज ॥ छं० ॥ २५० ॥
बनि चिबुक स्याम सु व्यंद। बसि कुमुदनी अलिइंद ॥
कलग्रीव रेष सुभेष। हरि कंज अंगुल [6]तेष ॥ छं० ॥ २५१ ॥
करकुमुद असुद अनूप। जटि रतन रूप सनूप ॥
कुच मद्धि हार विराज। हरहार गंग जु राज ॥ छं० ॥ २५२ ॥
कटि छीन छवि म्रगराज। पचि अंग पीत समाज ॥
रचि और कंचन थंभ। लजि दुरिग कुल कल रंभ ॥ छं० ॥ २५३ ॥
बनि पिंड नारंगि रंग। जनु कनक दंड सुरंग ॥
नष चरन बरन अनूप। रवि चंद अंबुज जूप ॥ छं० ॥ २५४ ॥
कलहंस गमन विसाल। बरनी सु चंदति काल ॥

राजा का उससे पूछना कि तू कौन है और कहां जाती है।

[7]को नाम को तुम मात। को बंध को पित जात ॥ छं० ॥ २५५ ॥
जाती सु कोपति थान। किहि आत कून पयान ॥
मो देवि पुर जुगिनाथ। मो प्रक्रति भिन्न अकाथ ॥ छं० ॥ २५६ ॥

(१) ए. कृ-इन्द्र। (२) ए. कृ. को.-आड़।
(३) मो.- भुव वक धनुप सु राह। (४) कृ. ए. वाय।
(५) ए. कृ. को. रद कनक। (६) ए. कृ.- भेष, को.-नेक।
(७) मो. को को नाम तम तात को बंध को पित मात ॥

उस सुन्दरी का उत्तर देना।

गाथा॥ पयं पीयं गत नयं। घट्ट कट्टंति हरयं॥
भरता पित कुल बद्धं। स्रापं सुमंतयो सुनी॥ छं०॥ २५७॥
कलह प्रिया मो नामं। संजु घोपापि रंभया सोरं॥
समरस्य जग्य समये। प्रछन्नं कथितं मया॥ छं०॥ २५८॥

कवि का कहना कि यह भविष्य होनहार का आदर्श दर्शन है।

दूहा॥ पल प्रगट्टि कवि चंद सों। कह्यौ कौन इह भाव॥
कह्यौ जु इह ह्वै है अवसि। सुन डंकिनिपुर राव॥ छं०॥ २५९॥

भविष्य वर्णन।

कवित्त॥ कहर कंक काल कलिय। भार फनिमन कर भज्जिय॥
सजिय सेन चहुआन। किन्न कारन अरि कज्जिय॥
अप्प अप्प सजि इट्ठ। चलै जैचंद सभानन॥
बर अप्पन चौसट्ठि। करह सो कर दैवानन॥
रुधि गहन पच दारुन दिवहि। चंद भट्ट आसिष्प दिय॥
सुर करिय कित्ति भय भीत भर। करन छत्त आगम कहिय॥
छं०॥ २६०॥
चिहुर बंध बंधियहि। काल पढ्ढियहि कुलाहल॥
... ... । .. ... ॥
अधर पाइ धर धरनि। कंठ रुधि पियै सु नड्डिय॥
मनो पुज्ज प्रति पाउ। पच पचन उरि लड्डिय॥
संजोग व्याह [1]विध जोग सुनि। चलत राह उद्यान मग॥
रन राग रंग पचन भरन। दुरति रूप दानव सु द्रग॥ छं०॥ २६१॥

देवी का पृथ्वीराज को एक बाण देकर आप अलोप होजाना।

रन बान असुरान। भिरन महिषासुर भग्गिय॥
रन बान रापिसन। राम रावन्न उछग्गिय॥

---

(1) ए. कृ. को. जय।

एन बान कौरव समथ्थ। पथ्थ भर करन पछारिय॥
एन बान संकर सुभग्ग। त्रिपुरारि सु पारिय॥
इन बान पराक्रम बहु करिय। सजिय हथ्थ चहुआन वर॥
इन बान मारि पंगुर पिसुन। करन कंक चल्लै कहर॥छं०॥२६२॥

पृथ्वीराज को शिवजी के दर्शन होना और शिवजी का राजा की पीठ पर हाथ देकर आशीर्वाद देना।

चलत मग्ग चहुआन। भान सम देखि भयंकर॥
गिर तरु लग्गिय गेन। षलन षंडन तरु षंषर॥
वैल गैल जट जूट। पिठ्ठ तठ काम विराजै॥
गंग उदक उछरै। सार चंमर सिर राजै॥
जब चष्प पिष्प चौहान भट। तब उत्तरि सब भरनि भर॥
पेषंत पाइ दुज्जन दुसह। धऱ्यौ पिठ्ठ सवि अप्प कर॥छं०॥२६३॥
उदक गंग विभ्भूत। अंग सारंग सुरंगह॥
बरन अनंत मन हरत। निरषि गिरजा मन रंजह॥
करी चर्म गरलह विक्रंम। रच्छिस उर दाहन॥
द्रिग्ग चयन ज्वाला बयन्न। क्रंद्रप्प न मानह॥
तरु तरुन तार त्रिय बर चसहु। रिसहु सच्च चहुआन रषि॥
भरि भूत धूत दिद्विय पिथह। लिय अग्या सिर नाइ सिष॥
छं० ॥ २६४॥

पुनः पृथ्वीराज का पयान वर्णन।

दूहा॥ चले राहु पहु फट्टतें। सत सामंत सुराह॥
मनों पथ्थ भारथ करन। दल कौरव धरि दाह॥ छं० ॥ २६५॥

कन्ह को एक ब्राह्मण के दर्शन होना। उसका कंन्ह को असीस देकर अन्तर्ध्यान होना।

कवित्त॥ दुज [1]उड्डो दल नाह। प्रवल तन जोति प्रगासिय॥
सुप विद्धी भर कन्ह। मानि अप्पन मन भासिय॥

(१) ए. कृ. को.-उभ्भौ।

द्रग पट्टिय छुटि पट्ट। लग्यौ उद्योत उरानह ॥
भान रूप भज नाह। दिष्ष नाराजी [1]दानह ॥
लगि पाय धाय कर पिट्ठ दिय। मम संके जुद्धह निपुन ॥
फिरि तथ्थ विप्र नह [2]पिष्षयौ। तुम हम मंडल रवि मिलन ॥
छं० ॥ २६६ ॥

हनुमान जी के दर्शन होना।

चलियं अग्ग चहुआन। एक जोजन ता अग्गिय ॥
घटा रूप घन सज्जि। निजरि ता ताहि न लग्गिअं ॥
जीह वीज विकराल। धजा घन बद्दल रंगिय ॥
हथ्थ गद्दा सोभंत। भूत प्रेतह ता संगिय ॥
सामंत राज पिष्षिय सलष। हनूमान चंदह कहिय ॥
बाजंत नद्द विधि विधि वसुह। चह सुबज्जि चंबक दहिय ॥
छं० ॥ २६७ ॥

कविचन्द का हनुमान जी से प्रार्थना करना।

दूहा ॥ चद गयौ अग्गें सुवर। तीतन रूप अथाह ॥
हम मानुष्षी मति अधम। करहु रूप कल नाह ॥ छं० ॥ २६८ ॥

लंगरीराव को सहस्राबाहु का दर्शन और आशीर्वाद देना।

कवित्त ॥ सहस हथ्थ मोट्टल्ल। धूम्र ज्वल्लह मुष सग्गह ॥
अंगि तेज अगि जानि। पानि पल्लचर [3]ता संगह ॥
धनुष धजा फररंत। हथ्थ डंकिनि फिक्कारै ॥
जै जै सुष उच्चरंत। सिंह वह वर बक्कारै ॥
लंगोट बंध काया प्रचंड। लोहालंगर सम्मुष करि ॥
धारंत हथ्थ मध्थें धरिय। सासु पंप मध्थें सुहरि ॥ छं० ॥ २६९ ॥

गोयन्दराय को इन्द्र के दर्शन होना।

जोजन तीन जल्लद्धि। राय गोयंद सु भारिय ॥
आप इष्ट तन सिद्धि। इन्द्र इंद्रासन धारिय ॥

(१) ए. कृ. को.-दानह। (२) ए. कृ. को. दिपई। (३) ए. कृ. को.-ता संगह।

एक कोस आकंप। भद्र जाती उज्जल तन ॥
सहस दंत सित हथ्थ। मनो राका जोतिंबन ॥
विंमान देव बहु जटित मय। चमर छत्र अच्छरि चल्लिग ॥
गोयंदराव सिर हथ्थ दिय। कहिय तुज्झ हम ग्रह मिल्लिग ॥
॥ छं० २७० ॥

एक बावली के पास सब का विश्राम लेना। कवि को देवी का दर्शन देना।

विवर एक वट मंरू। तास मझ्झह कंदल ग्रह ॥
भान तेज [1]भलकंत। आय सेना उत्तरि [2]सह ॥
चंद गयौ चलि अग्ग। देवि पूजा घन विद्धिय ॥
वघ्घ रूप आरोहि। आय उब्भी हर सिद्धिय ॥
मम करहि चंद अंदेस मन। लेय राज मंजोगि ग्रहि ॥
चौसट्ठि सुभर भेटैं सुहरि। जय जय करि अपछरि वरहि ॥
छं० ॥ २७१ ॥

दूहा ॥ चयत दिवस त्रय जामिनिय। चयत जाम फल उन्न ॥
जाजन इक्कत संचरिग। प्रथीराज संपन्न ॥ छं० ॥ २७२ ॥

समस्त सैनिकों का निद्रागस्त होना और पांच घड़ी रात से चल कर शंकरपुर पहुंचना।

कवित्त ॥ बार सोम पंचमी। जाम एकह निसि वित्तिय ॥
के दुक्कल वर पट्ट। तहां उत्तरि पहु रत्तिय ॥
करि अस्तुति सब सथ्थ। अश्व तजि नींद सु ग्रासं ॥
घटी पंच निसि सेष। सु पहु चढ़ि चल्यौ तासं ॥
पत्तौ सु जाइ संकरपुरह। दिवस अंन वर थान नय ॥
आहार अल्प आसन्न मय। सब बोले सामंत तय ॥ छं० ॥ २७३ ॥

(१) को.- झलत। (२) ए. कृ. का.-तहा।

राजा का सामंतों से कहना कि मैं कन्नौज को जाता बाजी तुम्हारे हाथ है।

इह जंपिय प्रथिराज। करिव अस्तुति सामंतं ॥
धरि छगर कविचंद। सहस [1]पिष्पन मन मंतं ॥
जब जानौ सुध सबै। तुम्हैं सब काम सुधारो ॥
सो चिंता मन मांहि। होइ तुमतें निसतारौ ॥
संभलत सब्ब सामंत मत। भयौ बीर आभासि तन ॥
चिंतिय सु इष्ट अप्पान अप। आश्रम्में सब्बां सुमन ॥
छं० ॥ २७४ ॥

दूहा ॥ चयति जांम वासुर विसरि। घटिग हंस तन गात ॥
जु कुछ चष इच्छा हुती। सोइ दिष्षौ परभात ॥ छं० ॥ २७५ ॥

कवित्त ॥ कहै राज प्रथिराज। [2]श्रमित सामंत सुरेसं ॥
सो चिंत्यौ तुम कंध। सुनौ कारन कत एसं ॥
चितिया दिन बाईस। कोस चौबीस चवथ्थी ॥
षट चोसह पंचमी। तीस अठ षष्टि सपथ्थी ॥
जोजन्न उभय कनवज्ज कहि। इन थानक कमधज्ज अगि ॥
देषनह पंग अभिलास अति। हत्थ सब्ब तुम कंध लगि ॥छं०॥२७

पृथ्वीराज प्रति जैतराव के वचन कि छद्मवेष में आप छिप नहीं सकते।

कवित्त ॥ वहन्न चंद किरन्न। छिपै नन सूर छांह घन ॥
सूपनि छिपै न भाग। रंक नन छिपत वसन तन ॥
नाद नेह नह छिपत। छिपै नन पुहप वास तर ॥
कुसट* कटंब न छिपै। छिपै नन दान अधर घर ॥
छिप्पै न सुभर जुद्धह मधै। चतुर पुरुष कवितह कह्या ॥
पंमार कहै प्रथिराज सुनि। तू न छिपै छत्तार गह्या ॥छं०॥२७७॥

(१) ए. कृ. को. पिष्पन। (२) ए. कृ. को.-श्रमित। (३) ए. लस। * कुटंब

सामंतों का कन्नौज आकर जयचन्द का दरबार देखने की अभिलाषा में उत्सुक होना।

दूहा ॥ करि अस्तुति सामंत न्नृप। जंपि निगति रति बत्त ॥
उतकंठा दिष्षन नयन। कमधज राज दरत्त ॥ छं० ॥ २७८ ॥

मुख्य सामंतों के नाम और उनका राजासे कहना कि कुछ परवाह नहीं: आप निर्भय होकर चलिए।

पद्धरी ॥ सुनि तहां सभा ए राज वेंन। उभ्भरे [1]रोम लग्गे सु गेन ॥
अप्पानि अप्प [2]दैवत्त चिंत। संसान सुचित चिंते सुचिंत ॥
छं० ॥ २७९ ॥

संझ्यौ सुराज दीवान राज। जानै कि देव देवन समाज ॥
बैठे सु कन्ह गोयंदराज। पज्जून सलघ निड्डूर समाज ॥
छं० ॥ २८० ॥

पुडीर चंद तूंवर पहार। जामानिजद्द आजान बार ॥
पंमार सिंह लष्पन वघेल। चहुआन अत्तताई अमेल ॥
छं० ॥ २८१ ॥

बलिभद्दराइ षीची प्रसंग। गुज्जरह कनकरासह अभंग ॥
अनि अन्नि सूर सामंतरेस। बैठ स राज आवरि अस्वेस ॥
छं० ॥ २८२ ॥

हक्कारि चंद बरदाइ ताम। उध्धान माने वर जथ्थ ठाम ॥
इह जंपि राज भर सुमत संम। दिष्यौ सपंग [3]दीवान तंम ॥
छं० ॥ २८३ ॥

क्रत काल कव्य लय पान वीर। अवलोकि पंग भर सुभर तीर ॥
सब महिल वरित अन अन्नि रंच। कंधव तंम सोभानि संच ॥
छं० ॥ २८४ ॥

दूहा ॥ [4]विहसि सुभर विकसे सुमन। न्नप न करहु अंदेस ॥
धनि धनि भुष जंपिरू विनय। दिष्षहु महल नरेस ॥ छं० ॥ २८५ ॥

(१) मो.-रोस। (२) मो.-देवान।
(३) ए. कृ.-पंग। (४) ए. विहरि।

तुच्छ निद्रा लेकर आधीरात्रि से पृथ्वराज का पुनः कूच करना

मानि मंत सामंत । राज सुष सेन विचारिय ॥
भूम सेज सुष सयन। गंग मंडल वर धारिय ॥
घटिय पंच जुग अग्ग। तलप अलपह आनदंति ॥
फुनि चढ़ि चल्यौ राज। पुरह संकर सानंदति ॥
सुनियै निसान ईसान घन। जनु दरिया पाहार गुरि ॥
निस अद्ध घरिय ऊपर चतुर। पंग सु उत्तरि गंजि धर ॥
छं० ॥ २८६ ॥

दूहा ॥ चढ़त राज चहुआन निस। घोर सपंग निसान ॥
जान कि मेघ असाढ़ सम। उठिय घोर दरसान ॥छं०॥२८७॥
चलत मग्ग संभरि सपहु। सुर बज्जे सहनाइ ॥
रस दारुन भय संचरिग। घोर गंभीर विभाइ ॥ छं० ॥ २८८ ॥

कवित्त ॥ [1]घटिय च्यार रप्परह। अद्ध जामनिय जरत तम ॥
चढ़िग राज संभरि नरेस। सामंत सकल सम ॥
देवगुरू सप्तमी। अश्वनि अभि जोग प्रमानह ॥
चलत मग्ग अहुआन। [2]गंग मंडल वर थानह ॥
अग्गाह सुभट्ट मारग सुमग। कहत कथा जाह्नविय ॥
कलमल बिछोह तन होत जल। जाल बाल चूरन [3]कविय ॥
छं० ॥ २८९ ॥

पृथ्वीराज का कहना कि कन्नौज निकट आया अब तुम भी वेष बदल डालो।

वचनिका ॥ राजा सामंतन सों बोल्यौ। हूं पंगुरे की दिवान देषन चल्यौ॥
प्रगट रूए सरूप [4]दुराओ॥ और सरूप करि साथ आओ॥
ऐसो कहत सामंतन मानी। सा निसा जुग एक बराबरि जानी॥

(१) मो-दरिय। (२) मो-गगन मंडल वर भानह।
(३) ए. कृ. को. कपि। (४) ए. कृ. को.-दुरावो आवो।

सामंतों की तैयारियां और वह प्रभात वर्णन।

पद्धरी ॥ चंपी सुभोमि कनवज्ज जाइ। दसगुनौ सूर वर चढ़त भाइ॥
उच्चर्‌यौ भट्ट कविचंद सथ्थ। दौमई राज रवि सम समथ्थ॥
छं० ॥ २९० ॥

जिम जिम सु निकट कनवज्ज आय। डरपहि न सूर तिम तिम दृढ़ाय॥
ओपंम चंद जंपी सुराय। बल बंधि पीय संगम दिढ़ाय॥*
छं० ॥ २९१ ॥

उत्तरिय चित्त चिंता नरेस। वेतरहि सूर सुरलोक देस॥
इक कहत लेहि बल इंद्र राज। अस जियन मरन प्रथिराज काज॥
छं० ॥ २९२ ॥

कर करहिं सूर अस्नान दान। बर भरत सूरसुनि क्रन निमान॥
सरबरिय साल बंछहित भान। सुध बाल जेम इच्छत विहान॥
छं० ॥ २९३ ॥

गुरु दयत उदित ञ्चित मुदित इत्त। झलमलिग तार तरु हलिग पत्त॥
देषियत इंद किरनीन मंद। उदिसह हीन जिम न्रपति चंद॥
छं० ॥ २९४ ॥

धरहरिग [1]चित्ति सुर [2]मुद्द मुंद। उप्पज्यौ जुद्ध आवद्ध दुंद॥
पहु फटिग घटिग सर्वरि सरीर। झलकंत कलस दिषि गमन नीर॥
छं० ॥ २९५ ॥

बिरहीन रैंनि छुट्टि [3]मित मान। नष्षंत तोरि भूषन प्रमान॥
असुवंत अंसु उस्सास आइ। बिरहीन कंत चंदहु बुलाइ॥
छं० ॥ २९६ ॥

पहु फट्टि घट्टि भूषननि बाल। दिसि रत्त दरसि दरसी कसाल॥
[4]न्रिप भंमि गंग सब पुब्ब देस। आरन्न अरिन उत्तरि नरेस॥
छं० ॥ २९७ ॥

---

* ए. कृ. को -वल वधि पिय संग दिन दिढाय। आपम चद जानी समाय।

(१) ए. कृ को.-वित्त। (२) ए. कृ. को. सद्द।

(३) ए कृ. को.-नमाति। (४) को.-नृप भूमिग जानि यह पुव्व देस।

न्रप भ्रमिग जानि इह पुब्ब देस। अरि नयर [1]नीर उत्तर कदेस ॥
हर सिद्ध दिद्ध कनवज्ज राव। तिन बथ्यौ अंग धर भ्रम चाव ॥
छं० ॥ २९८ ॥

दूहा ॥ पहु फट्टिय घट्टिय तिमिर। तमचूरिय कर भान ॥
पहमिय पाय [2]प्रहारनह। उदोहोत असमान ॥ छं० ॥ २९९ ॥
रत्तंबर दीसै सुरवि। किरन परष्षिय संत ॥
कलस पंग नहिं होय यह। बिय रबि बंध्यौ नैत ॥छं०॥३००॥

सब का राह भूलना परंतु फिर उचित दिशा बांध कर चलना।

रबि तंमुह संमुह [3]उद्यौ। इह है मग्ग समुझ्झ ॥
भूल्लि भट्ट पुच्छह [4]चाल्लय। कहि उत्तर कनवज्ज ॥ छं० ॥ ३०१ ॥
कंचन फूल्लिय अर्क बन। रतनह किरनि [5]प्रमार ॥
सु न कलस जयचंद घर। संभरि संभरिवार ॥ छं० ॥ ३०२ ॥

पास पहुंचने पर पंगराज के महलों का देख पड़ना।

कवित्त ॥ एह कलस कवि चंद। दंद मंझौ सुष रष्षिय ॥
जग उप्पर जगमगत। [6]भूल्लि कैलासह छष्षिय ॥
जगत पत्ति जग धज्ज। षग्ग कमधज्ज बांहवर ॥
दान षग्ग अनभंग। धजा बिय दान बंधि पर ॥
आभंग अवंग कनवज्ज पति। सुष नरिंद [7]दुनि इंद बर ॥
पाइये बंस छत्तीस तहां। नवै रस्स पट भाप गुर ॥छं०॥३०३॥

कन्नौज पुरी की सजावट और सुखमा का वर्णन।

दूहा ॥ गंगा तट साधन सकल। करहि जु भंति अनेक ॥
नट [8]नाटिक संभरि धनी। वर विष्यात छवि केक ॥छं०॥३०४॥

(१) मो.-जानि। (२) ए. कृ. को.-प्रहारनल, पहार नर।
(३) ए. कृ. को उद्यौ। (४) ए. कृ. को चल्यौ।
(५) ए. कृ. को प्रचार। (६) ए. कृ. को.-ईस कैलास भुल्लि छवि।
(७) ए. कृ. को. दुति। (८) ए. कृ. को.-नागर।

भुजंगी ॥ कहूं संभरे नाथ थट्टे गयंदा। मनु पिष्यियै रूप ऐराप इंदा॥
कहूं फेरिहित भूप अच्छे तुरंगा। मनों प्रव्वतं बाय बट्टे कुरंगा॥
छं० ॥ ३०५ ॥

कहूं मल्ल भूदंड ते [1]रोस साधैं। तिकै मुष्टिकं जोर चानूर बाधैं॥
कहूं पिष्पि पाइक्क बानैत बाधैं। नचें इंद्र [2]आहेस कै वज्र साधैं॥
छं० ॥ ३०६ ॥

कहों विप्र उट्ठंत ते प्रात चल्ले। कहूं देवता सेवते स्वर्ग भुल्ले॥
कहूं जग्य जापन्न ते राज काजैं। कहूं देवात देव न्नित्यान साजैं॥
छं० ॥ ३०७ ॥

कहूं तापसी तप्प ते ध्यान लागै। तिनं दिष्यियै रूप संसार भागै॥
कहूं षोड़सा राय अप्पंत दानं। कहूं हेम सम्मान प्रथ्वी समानं॥
छं० ॥ ३०८ ॥

कहूं बोलही भट्ट छंदं प्रमानं। कहूं [3]औघटं वीर संगीत गानं॥
कहूं दिष्पि सिद्धं लगी तारि भारी। मनों नैर प्रातं कपाटं उघारी॥
छं० ॥ ३०९ ॥

कहूं बाल गावैं विचित्रं सुग्यानं। रहै चित्त मोहन्न डुल्लै न [5]पानं॥
इत चरित पेषंत ते गंग तीरे। स्वयं देषतें पाप नट्ठे सरीरे॥
छं० ॥ ३१० ॥

पृथ्वीराज का कवि से गंगा जी का माहात्म पूछना।

दूहा ॥ कह महंत दरसंन तिन। कह महत तिन न्हान॥
कह महंत सुमिरंत तिन। कहि कविचंद गियान ॥छं०॥३११॥

कवि का गंगा जी का महत्व वर्णन करना।

गाथा ॥ जो फल नीरह नयनं। जो फल गुनी गाइयं गेयं॥
सोइ फल न्हात सरीरं। सोइ फल पीयंत अंजुलं नीरं॥
छं० ॥ ३१२ ॥

---

(१) सरों। (२ ए. कृ. को -आसेह।
(३) ए. कृ. को.-देवानं। (४) मो.-औपटं।
(५) ए. कृ. को.-प्रानं। ※छन्द ३१२ मा.-प्रीति में नहीं है।

जं जय भाव सु बुद्धं । तं तं कहियंपि सुंदरी कथ्थं ॥
महिलान बाल अच्छं । सामं धनं सोभियं सारं ॥ छं० ॥ ३१३ ॥

पुनः कवि का कहना कि गंगास्नान कीजिए ।

अरिल्ल ॥ जं तं न्हान महातम जानों । दरसन तंत महंत बषानों ॥
सुमिरन पाप हरै हर गंगे । सो प्रभु आज परस्सहु अंगे ॥छं०॥३१४॥

सब सामंतों सहित राजा का गंगा तीर पर उतरना ।

कवित्त ॥ अंबुज सुत उमया विलोकि । वेद पढ़त षलि वीरज ॥
सहस बहत्तरि कुंअर । उपजि भीजंत गंगा रज ॥
आभूषण अंबर सुगंध । कवच आयुध रथ संतर ॥
रविमंडल के पास । रहत चौकी सु निरंतर ॥
चहुवांन चमूं तिन समर जत । सु कविचंद ओपम कथिय ॥
सामंत सूर परिगह सकल । उतरि तट्ट भागीरथिय ॥छं०॥३१५॥

कवि का गंगा के माहात्म्य के संवंध मे एक पौराणिक कथा का प्रमाण देना ।

साटक ॥ सोरंभं कमलं तज्यों न मधुपं, मध्ये रह्यौ संपुटं ॥
सो लैज्ञाय सरोज संकर सिरं, चढ़ाइयं अच्छरी ॥
सिंघं तंत स उप्परं घट भरे, गंगा जलं धारयं ॥
वारं लग्गि न चंद कव्वि कहियं, संभू भयौ छप्पयं ॥ छं०॥३१६॥
इकं मृग्ग पियंत नीर डसियं, काली ससं पन्नगं ॥
सोई व्यालय मृग्गछालयं बहो, शृंगी बह्यो सुरसुरी ॥
धारे रूप पसूपती पसु तहां, भागीरथी संगती ॥
*आनंदी दुज वैल लैन क्रमियं, कैलास ईसं दिसं ॥छं०॥३१७॥

राजा का गंगा को नमस्कार करना, गंगा की उत्पत्ति और माहात्म्य वर्णन ।

दूहा ॥ हो सामंत सुमंत कहु । सु हरि चिंति तजि वाज ॥

* "३१६ से ३१७ तक ये छन्द मो-प्रति में नहीं हैं ।

त्रिपथ लोक प्रथिराज मुनि। नमसकार करि राज ॥छं०॥३१८॥

कवित्त ॥ पाप सलंमध हरन। गंग नव बंध अनै पर ॥
हरि चरनन करि जनम। काम छंडै सु दुष्प नर ॥
तीन लोक भर भवन। तहां माक्रंम सु थानन ॥
निगम न हरि उर धरी। भम्म तट काय प्रमानन ॥
बंछहि सु चतुर नर नाग सुर। दुति दरसन परसन [1]विहर ॥
[2]ढिल्लीवनाथ सो गंग दिषि। जस सम उज्जल वसु अपर ॥छं०॥३१९

साटक ॥ ब्रह्मा कष्य कमंडखे कलिकले, कांताहरे कंकवी ॥
तं तुष्टा त्रयलोक संपद पदं, तंवाय सहसंनवी ॥
अघ काष्टं ज्वलने हुतासन हवी, अध विष्णु आगामिनी ॥
जजाखे जग तार पार करनी, दरसाय जाह्नवी ॥ छं० ॥ ३२० ॥

अरिल्ल ॥ ब्रह्म कमंडल तें कल गंगा। दरसन राज भयौ दिवि संगा ॥
तामस राजस धरि उर पारह। [3]सातुक उदक गंग मझ्झारह ॥
छं० ॥ ३२१ ॥

दूहा ॥ अस्तुति कहि बरदाय बर। पढ़िय कवींद्र विचार ॥
सो गंगा उर जंपई। क्रम उत्तारन पार ॥ छं० ॥ ३२२ ॥

जैचन्द की दासी का जल भरने को आना।

वचनिका ॥ राजा दल पंगुरे की दासी गंगोदक भरन आनि ठाढ़ी भई।
चंद कह्यौ राजा इह काम तीरथ मुगति तीरथ हथलेवा मिलत है।

कवि का दासी पर कटाक्ष करना।

दूहा ॥ जरित रयन घट सुंदरी। पट कूरन तट सेव ॥
मुगति तिथ्थ अरु काम तिथ। मिलहि हथह हथ लेव ॥छं०॥३२३

काव्य ॥ उभय कनक सिंभं भृंग कंठीव लीला। पुहप पुनर पूजा विप्रवे कामराजं।
त्रिवलिय गंग धारा मद्धि घंटीव सबदा। मुगति सुमति भौरे नंग रंगं त्रिवेर्नं
छं० ॥ ३२४ ॥

(१) ए. कृ. को.-विग्रर। (२) ए.-ढिल्लीच।
(३) ए.-सादुक।

दूहा ॥ रहसि केलि गंगह उदक। सम नरिंद किय केलि ॥
चिरन चिभंगी छंद पढ़ि। चंद सु पिंगल मेलि ॥ छं० ॥ ३२५ ॥

गंगाजी की स्तुति।

चिभंगी ॥ हरि हरि गंगे तरल तरंगे अघ छित भंगे छित चंगे।
हर सिर परसंगे जटनि विलंगे विहरति दंगे जस जंगे ॥
गुन गंध्रव छंदे जै जै वंदे छित अघ कंदे सुष चंदे।
मति उच गति मंदे दरसत नंदे पढ़ि वर छंदे गत दंदे ॥
छं० ॥ ३२६ ॥

वपु अपु विलसंदे जम भृत जंदे सुर धुनि नंदे कह गंदे।
.... । ... . ॥
षिति मति उर मालं सुगति विसालं विर धुत कालं सद कालं।
हिम रिति प्रतिपालं सुर तट तालं हर छर नालं विधिवालं ॥
छं० ॥ ३२७ ॥

दरसन रस राजं सुमरित साजं जय जुग काजं भय भाजं ॥
अंमर छर करिजं चामर वरिजं वर वहु पाजं सुर साजं ॥
(१) अंमर तरु मंजरि निय तन जंजरि वर वर रंजरि चष पंजरि ॥
करुना रस मंजरि जनम पुनंगिरि हसि हसि संकरि सामंकरि ॥
छं० ॥ ३२८ ॥

कलिमल हरि मंजन भव भ्रत भंजन जन हित संजन अरि गंजन॥
.. । ... ... ॥ छं० ॥ ३२९ ॥

दूहा ॥ हरि जस जिम उज्जल सजल। तरल तरंगति अंग ॥
पाप विडारन अंग तें। भ्रंम तरुन्नि विहंग ॥ छं० ॥ ३३० ॥

राजा का गंगा स्नान करना।

बचनिका। राजा षीरोदक पहिर स्नान कर्‌यौ।
तब चंद बहुरि ओर अस्त,ति करत है ॥

कवि का पुनः गंगा जी की स्तुति करना।

(१) ए.-अमरत।

भुजंगी ॥ तिके दिष्यियै गंग चिहु पास बालं। तहां उप्पमा चंद जंपै विसालं
जरै कामनाथं दया गंग आई। मनों हार धारी रती तत्त छाई॥
छं० ॥ ३३१ ॥

भरै घट्ट भारं घटं नीरभाई। तहा चंद बंदी सु ओपम्म पाई॥
ग्रसे चंद कुंभं करं इंद दंदं। मनों विच्च पारीर मेटै फुनिंदं॥
छं० ॥ ३३२ ॥

करै बाल अस्नान सोभै प्रकारं। तहां चिंतियं चंद ओपंमभारं॥
चमक्कंत लक्कं सु कप्पोल सोहै। मंनों उद्दितम चंद कै पास रोहै॥
छं० ॥ ३३३ ॥

झलक्कं कनक्कं कलस्संत नीरं। मनों सज्ज सथ्थैं सुपंतीज मीरं॥
दिष्यै गंग तट्टं कहै कव्वि कथ्थं। किधौं [1]सुगति तिथ्थं किधौं काम तिथ्थ
छं० ॥ ३३४ ॥

कविचन्द का उस दासी का रूपलावण्य वर्णन करना।

चंद्रायन ॥ दिष्यौ नगर सुहावो कवियन इह कहै।
चष चंचल तन सुद्ध जु सिद्धति मन रहै॥
कंचन कलस झकोरति गंगह जल भरै।
सु कविचंद वरदाय सु ओपम तहँ करै॥ छं० ॥ ३३५ ॥

चषतिष्षी वरबाल बाल सति सहस वर।
आप मनोरथ करै कवींद्रति मंडिनर ॥
सहज तमारि स फुल्लि अलिन ग्रीवाति मन।
मधुसहज्ज वरषंत विहंगन सूर नन॥ छ० ॥ ३३६ ॥

संक्षेप नख सिख वर्णन।

कवित्त ॥ राह चंद इकलास। पास कोवंड कुरंगा॥
कीर बिंबफल जुगल। उभय भूतेस अनंगा॥
मग्गराज गजराज। राज पिष्षिय एकंतं॥
पुच्छि तांम कविराज। कहा इह अचरिज मत्तं॥

(१) ०. कृ. को. सुगति।

बरदाइ ज्वाब दीनों बहुरि। निरषि तट गंग दासि तन ॥
थांनक प्रताप जयचंद के। बैरभाव छंडिय[1] सु इन ॥ छं० ॥ ३३७ ॥

दासी के जल भरने का भाव वर्णन।

दूहा ॥ द्रिग चंचल चंचल तरुनि। चितवत चित्त हरंति ॥
कंचन कलस झकोरि कैं। सुंदरि नीर भरंति ॥ छं० ॥ ३३८ ॥

जल भरती हुई दासी का नख सिख वर्णन।

लघुनराज ॥ भरंति नीर सुंदरी। सु पांनि पत्त अंगुरी ॥
कनक्क वंक जे जुरी। तिलग्गि कट्टि जेहरी ॥ छं० ॥ ३३९ ॥
सुभाव सोभ पिंडुरी। जु मेन चिचक्की भरी ॥
सकोल लोल जंघया। सुनील कच्छ रंभया ॥ छं० ॥ ३४० ॥
कटिंत सोभ मंसुरी। बनी जु बांन केसरी ॥
अनंग छब्बि छत्तियां। कहंत चंद बत्तियां[2] ॥ छं० ३४१ ॥
दुराइ कुच्च उब्भरे। मनो अनंग ही भरे ॥
रुलंत हार सोहए। विचित्त चित्त मोहए ॥ छं० ॥ ३४२ ॥
उठंत हथ्थ अंचले। रुलंत मुत्ति सजले ॥
कपोल लोल उज्जले। लहंत मोल सिंघले ॥ छं० ॥ ३४३ ॥
अरुद्ध अद्ध रत्तए। सुकील कीर वत्तए ॥
सुहंत दंत आलिमी। कहंत बीय दालिमी ॥ छं० ॥ ३४४ ॥
गहंग कंठ नासिका। विनाग राग सासिका ॥
जुभाय मुत्ति सोभए। दुभाय गंज लोभए ॥ छं० ३४५ ॥
दुराय बीय लोचने। प्रतष्य काम मोचने ॥
अबद्ध ओट भोंह ए। चलंत मोंह सोहए ॥ छं० ॥ ३४६ ॥
लिलाट राज आड़ ए। सरद्द चंद लाजए ॥
.... ॥ छं० ॥ ३४७ ॥

(१) ए. ह. को.-मंडिय। (२) ए. कृ. को. रत्तियां।

पृथ्वीराज का कहना कि क्या इस दासी को केश हैं ही नहीं।

दूहा ॥ हसि प्रथिराज नरिंद कहि। कवि चुक्कौ अंदेस ॥
पंग दास आचिज्ज इह। वाल नरनि विन केस ॥ छं० ॥ ३४८ ॥

कवि का दासी के केशों की उपमा वर्णन करना।

ढिल्ली सुह अलि की लता। श्रवन सुनहु चहुआन ॥
जनु भुजंग संमुष चढ़ै। कंच न पंभ प्रमान ॥ छं० ॥ ३४९ ॥

कवि का कहना कि यह सुंदरी नागरी नहीं वरन पनिहारिन है।

[1] रहि रहि चंद म गव्व करि। करहित कवित विचारि ॥
जे तुम नयर सुंदरि कही। सह दिष्षिय पनिहारि ॥ छं० ॥ ३५० ॥

गाथा ॥ जे जंपी कविराजं। साजं सुष्षाय कित्तियं वलयं ॥
तिरए छित्ति समस्तं। जानिज्जे भूलयो कव्वी ॥ छं० ३५१ ॥

कन्नौज नगर की गृह महिलाओं की सुकोमलता और मर्य्यादा का वर्णन।

दूहा ॥ जाह्नवी तट दिषि इस्म। रूपरासि ते दासि ॥
नगर सु नागर नर घरनि। रहहिं अवास अवास ॥ छं० ॥ ३५२ ॥
ते दरसन दिनयर दुलह। निय मंडन भरतार ॥
सुह कारन विह निरमई। दुह कत्तरि करतार ॥ छं० ॥ ३५३ ॥
पाव न धरनि परट्ठियै। उंच थांन जे बास ॥
कै रवि देषत सतषननि। कै मुष कंत विसाल ॥ छं० ॥ ३५४ ॥
कुवलय रवि लज्जा रहसि[2]। रहि भगि भ्रंग सरन्न ॥
सरस बुद्धि हंनन कियौ। दुल्लह तरुन तरुन्न ॥ छं० ॥ ३५५ ॥

उनके पतियों की प्रशंसा।

गाथा ॥ दुल्लह तरुनिति मुष्षं। घन दीहंति ईम सेवायं ॥

(१) ए. कृ. को.-रहहि चन्द मम गर्व करि। (२) ए. कृ. को.-विहसि।

जानिज्जै मन[1] अप्पं । [2]प्रीतमयं तप्प अधिकायं ॥ छं० ॥ ३५६ ॥

कन्नौज नगर की महिलाओं का सिख नख श्रृंगार वर्णन ।

दूहा ॥ पुनर संडि जनमेज जगि । पित अगि कुल दइ अग्गि ॥
भग्गि शेषकुल शेष रहि । रहि त्रिय पीठनि लग्गि ॥छं०॥३५७॥

भुजंगी ॥ पुनर्जन्म जेते रहे जांनि अग्गे । सु ये सेस सेसा तिके पिट्ट लग्गे॥
मनुं मग्ग[3] मोहन्न मोती न बानी । मनों धार आहार कै दूध तांनी॥
छं० ॥ ३५८ ॥

तिलक्कं नगं देषि जगजोति जग्गी । मनों रोहिनी रूप उर इंद लग्गी॥
रुअं अव्वरेषं भुअं देषि जग्यौ । मनों कांम चापं करं उड्डि लग्यौ॥
छं० ॥ ३५९ ॥

[4]प्रगट्टे नयनं विचिं ऐन दीसं । मनों जोति सारंग निर्वात रीसं ॥
तेज षाटंक ते श्रोन डोलं । मनों अर्क राका उदै अस्त लोलं ॥
छं० ॥ ३६० ॥

कही चंद कव्वी उपम्मा प्रमानं । मनों चंद रथभंग द्वै भान जानं ॥
उरज्जं जंभीरं भई मंझ झोलं[5]। उवं दिव्यदर्शी अरूढील बोलं ॥
छं० ॥ ३६१ ॥

अधर आरत्त तारत्त साँई । मनों चंद विय विंब अरुने बनाई ॥
कहों ओपमा दंत मोतीन कंती । मनों बीज माला जुगं सोभ पंती॥
छं० ॥ ३६२ ॥

कपोलं कलागी कली दीव सोहं । अलक्कं अरोहं प्रवाहंत मोहं ॥
सितं स्वाति बुंदं जिते[6] हार भारं । उभै ईस सीसं मनो गंग धारं॥
छं० ॥ ३६३ ॥

करं वोक नद्दंति कंचू समुस्सर्फ्फ । मनो तिब्भराया त्रिवली अलुझ्झं॥
तिनं ओपमा पांनि आनंन[7] लभ्भं। लाजि दुल्लवेलि दृरिमस्स्अ गभ्भं॥
छं० ॥ ३६४ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-नन । (२) ए. कृ. को.-प्रीतम पत सप्प अधिकाय ।
* यह दोहा मो प्रति में नहीं है । (३) ए. कृ. को. मग्ग । (४) मो.-प्रगुर ।
(५) मो. झोलं । (६) ए. कृ. को. जिमि । (७) ए.-आनंत ।

नितंवं उतंगं जुरे वे गयंदं । तिनं मझ्झ रिपुछीन रघ्यौ मयंदं ॥
कटी कांम मापी सुकामी करालं । मनों काम कौ जौति बद्धौ सरालं॥
छं० ॥ ३६५ ॥

जघं व्रन्न सोवन्न भोहन्न[1] थंभं । मनों सीत उस्नेव रितु दोषरंभं ॥
नरंगी निरंगी सुपिंडी छछोटी । मनों कनक कुंदीरु कुंकु अलोटी॥
छं० ॥ ३६६ ॥

किधों केसरं रंग हेमं झकोरं । किधों बद्धियं बांम मनमथ्य जोरं ॥
सदं रोह आरोह मंजीर वादे । मदं छिद्द, तेजं परंकार वादे ॥
छं० ॥ ३६७ ॥

पगं एड़िअं डंबरं श्रोन वानी । मनो कच्च चीनीन में रत्त पांनी ॥
नषं न्निमलं द्रप्पनं भाव दीसं । समीपं सुपीयं कियं मांन रीसं ॥
छं० ॥ ३६८ ॥

रगं अम्मरं[2] रत्त नीलंत पीतं । मनों पावसं धनुक सुरपत्ति कीतं॥
सुकीवं सुजीवं जियं स्वामि जानं । रवी पंग दरसं अरंब्यंद मानं ॥
छं० ॥ ३६९ ॥

दासी का घूंघट उघर जाना और उसका लज्जित होकर भागना।

कुंडलिया ॥ दरस चियन ढिल्ली न्रपति । सोवन घट वर हथ्थ ॥
वर घुंघट छुटि पट्ट गौ । सटपट परि मनमथ्थ ॥
सटपट परि मनमथ्थ । [3]भेद वच कुच तट श्रेदं ॥
उष्ट कंप जल द्रगन । लग्गि जंभायत भेदं ॥
सिथल सु गति लजि भगति । गलत पुंडरि तन सरसी ॥
निकट [4]निजल घट तजै । मुहर मुहरं पति दरसी ॥छं०॥३७०॥

दासी के मुखारविंद की शोभा वर्णन।

गाथा ॥ कमोदं वर विगासं । सरसीरुह सरसियं[5] तेजं ॥
चक्रति चक्र एकं । अरकं रकइ प्रथ्थ संजोगं ॥ छं० ॥ ३७१ ॥

(१) ए. कृ. को. सोहन्न । (२) मो.-अंतर । (३) ए. कृ. को.-भेद तट कुच वच्छेदं ।
(४) मो.-निज्जल । (५) ए. कृ. को.-ससीय ।

रोरंत कच किलास । चंद मुखी दरसि मरसिय प्रतिय ॥
मवसं प्रांन वेसासी । दोहं मेकं सयं एक ॥ छं० ॥ ३७२ ॥

कुमुदं कुच्च प्रगासी । हार वीचं तनं तयं अंवं ॥
अभिवर तरंग ओपं । रोमं राजीव सेवालं ॥ छं० ॥ ३७३ ॥

पावस धनुक सुकंती । अंबर नीलाइ पीतमं बाले ॥
जानिज्जै परमासं । स्यांम घन मद्धि तड़ितायं ॥ छं० ॥ ३७४ ॥

गंगा स्नान और पूजनादि करके राजा का चार कोस पश्चिम को चल कर डेरा डालना ।

दूहा ॥ प्रथम स्नान गंगा निरषि । पुर रट्ठौर निवास ॥
फिरि पच्छिम दिसि उत्तरै । जोजन एक सुपास ॥ छं० ॥ ३७५ ॥

चौपाई ॥ जोजन एक गयौ चहुआनं । सोम सूक्र तिथि षष्टी जानं[1] ॥
अंतरि पट्ट सुनंत नरिंदं । भर विंटे जनु पारस चंदं ॥
छं० ॥ ३७६ ॥

कवित्त ॥ सो पट्टन तजि न्रपति । चल्यौ कनवज्ज राज बल ॥
जाय [2]संपनौ राव । गंग सुरसर सुरंग जल ॥
करि सिनान परमोन । थान आस्रम्म सु उज्जल ॥
दीप जाप मन करै । भ्रंम भंजै सु अभ्रम्म दल ॥
चहुआन दान षोड़स करिय । तिहि जय जय सुरलोक हुअ ॥
दिन पतत निसा बंधय सयन । रस पिल्लिय प्रथिराज जिय ॥
छं० ॥ ३७७ ॥

दूसरे दिन एक पहर रात्रि से तैय्यारी होना ।

दूहा ॥ निसि जंपी चिंतान भर । भयग प्रात तम भग्गि ॥
तरुन अरुन प्रगटिय किरनि । वर प्रयान न्रप जग्गि ॥ छं० ॥ ३७८ ॥
निसि वियाम वित्तिय सु जव । उच्छ सुदिन दा प्रान ॥
प्रात तेज उद्दित भयौ । चढ़ि चल्यौ चहुआन ॥ छं० ॥ ३७९ ॥

---

(१) ए. कृ. को. थानं ।　　(२) ए. कृ. को.-सपनौ ।

राजा पृथ्वीराज का सुख से जागना और मंत्री का उपस्थित होकर प्रार्थना करना।

कवित्त॥ जग्गि सु न्टप चहुआन। थान सामंत सूर फिरि॥
चहूं राज कर जोरि। मंत कीनो सुमंत करि॥
इहइ दिष्पि कनवज्ज। जहां वसि थान सुरत्तं॥
दई विधिना न्निम्मयौ। काल ग्रह आनि सु पत्तं॥
मुष कालव्याल उंदर परै। ग्रास मुष्प मंषी जियन॥
तुम सत्त ग्रहौ बंधौति षग। मंत अप्प देषौ वयन॥ छं०॥ ३८०॥

व्यूह बद्ध होकर पृथ्वीराज का कूच करना।

राज अग्ग गोयंद। बीर आहुट्ठ नरेसर॥
दाहिम्मौ नरसिंघ। चंदपुंडीर सूर सर॥
सोलंकी सारंग। राव कूरंभ पजूनं॥
लोहा लंगरिराव। षग्ग मग्गह दह गूनं॥
लष्पन बघेल गुज्जर कनक। बारहसिंघ सु अग्ग चलि॥
बिय सेन सब्ब साईं सु पुछि। षग्ग मग्ग जिन वल अकल॥ छं०॥ ३८१॥
दूहा॥ इह समग्ग सब सेन चलि। दिसि कनवज्ज नरिंद॥
प्रथीराज ढिग राजई। मधि कविता [1]वरचंद॥ छं०॥ ३८२॥

सबका मिलकर कन्ह से पट्टी खोलने को कहना और कन्ह का आखों पर से पट्टी उतारना।

एक दिसा उत्तरि न्टपति। [2]आरन छिनक सपन्न॥
मतौ करन सांई सु भृत। पुच्छहिं आय सु कन्ह॥ छं०॥ ३८३॥
कवित्त॥ सुनि कन्हा चहुआन। ग्रेह कैमास न मंची॥
तंतसार बिन तुंब। जंच वाजै हिन [3]जंची॥
चंद दंद उप्पाय। गंज विष [4]अग्गि लगाई॥
सुभर भ्रम्म रजपूत। पत्ति रष्षे पति पाई॥

(१) ए. कृ. को कविचन्द। (२) ए. कृ. को.-अरनि।
(३) मो-मंत्री। (४) ए. कृ. को.-अंगि।

दरबार पंग दैवान भर । कल जलह सौ उल्ललै ॥
पुच्छौ सु इच्छ बल मंत बर । दल भंजै पुज्जै दलै ॥ छं० ॥ ३८४ ॥

सुनि कन्हा चहुआन । कन्ह विथ्यौ जु कन्ह जुगि ॥
कन्ह अनी कुव्वर । मेछ मोरन्न मुट्ठि षगि ॥
सामभम्म अगि प्रान । नीति राषन राजंनिय ॥
तिहि कारन तुअ अंषि । निद्धि पाटी जुग जानिय ॥
आचिज्ज लोइ कनवज्ज वर । पूछि न दिषि तन तन नयन ॥
प्रथिराज काज तौ सुद्धरौ । छोरि पट्ट सद्धो सयन ॥छं०॥३८५॥

तत्पश्चात् आगे चलना और प्रभात समय कन्नौज में जा पहुंचना ।

दूहा ॥ कूच करिग भावी अवन । वर वर चलि सहरत्त ॥
प्रात भयौ कनवज्ज फिरि । सुनि निसान धुनि पत्त ॥छं०॥३८६॥

कन्ह मंत मित्तेज वर । वर पुच्छन हग सव्व ॥
वर भावी गति चिंतकिय । नयन सु वरजी तव्व ॥ छं० ॥ ३८७ ॥

देवी के मंदिर की शोभा और देवी की स्तुति ।

भुजंगी ॥ [1]जहां दिष्पियै जासु संदेह सेहं । उभं अर्कसा कोटि संपन्न देहं॥
वने मंडपं जासु सोव्रन्न गेहं । तिनं मुत्तियं छच दीसै न छेहं ॥
छं० ॥ ३८८ ॥

रषिं सित्त माहीप बहु मध्य रत्ती । तिनं प्रात पूजंत न्रनेम अत्ती।
भुजं डंड दुंदेस देसं प्रकारं । भ्रमै देवता इंद्र नम्भै न पारं ॥
छं० ॥ ३८९ ॥

वजै दुंदभी देव देवाल नित्तं । वरं उट्ठि संगीत गानं पवित्तं ॥
वजै मद भांझं ससं जोग सिद्दं । निरत्तं न पायं तिनं कव्विचंदं॥
छं० ॥ ३९० ॥

---

(१) ए. कृ. को-तहां ।

सुष पंड भारथ्थ विरु बैर साजी। सुपं देषि चहुआन किलकारि गाजी॥
प्रभा भान तेजं विराजै अकारी। मनों अग्गि ज्वाला जलं में उजारी॥
छं० ॥ ३९१ ॥

[1]नमो तूंअ तातं नमो मात माई। तुअं सक्ति रूपं जगत्तं बताई॥
तुअं थावरं जंगमं थान थानं। तुअं सत्त पाताल सरतं सतानं॥
छं० ॥ ३९२ ।

तुअं मारुतं पानियं अग्गि मट्टी। तुअं पंचभूतं स्वयं देह यट्टी॥
सुअं स्वस्ति चंदं अनंदं अनंदी। भई मोह माया जपै जाप बंदी॥
छं० ॥ ३९३ ॥

तबै बैन आकास मद्धि भयौ ताजं। तुमं होइ जैपत्त प्रथिराज राजं॥
तबं दच्छिनं अंग करि नमसकारं। धुअं मध्यता नैर कीजै विचारं॥
छं० ॥ ३९४ ॥

सरस्वती रूप की स्तुति।

साटक ॥ वीना धारन अग्र अग्रति दिवं, देवं तमं भूतलं ॥
तूं वाले जल जी जगंत कलया, जोगिंद माया दुतिं ॥
त्वं सारं संसार पार करनी, तोयं तुअं सारसं ॥
दंदीनं दारिद्र दैत्य दलनी, मातं त्वया द्रुग्गया ॥ छं० ॥ ३९५ ॥

कवि का देवी से प्रार्थना करना कि पृथ्वीराज की सहायता करना।

दूहा ॥ [2]कै मातुल कै प्रकृति तू। कै पुरिषत्व प्रमान ॥
तुं सब छचिन मंझ है। तू रष्षै चहुआन ॥ छं० ॥ ३९६ ॥

गाथा ॥ लज्जा रूप सुदेवी। हवी हवीतेज [3]सुगति का गनया ॥
किय कमलं सु जेयं। बंधि पानि उच्चरै बलयं ॥ छं० ॥ ३९७ ॥
तूं धारन संसारं। चंदं चंद कित्तियौ सुनियं ॥
ज्यौं पंडव मंझ प्रगट्टी। अब हुज्जे राज मझझाइं ॥छं०॥३९८॥

---

(१) ए. कृ. को -नमो तू अतानं।
(२) ए. कृ. को. "कै मातुल परकृति गति"। (३) ए. कृ. को. मगति।

चौपाई ॥ इच्छा नाम छचि जौ लेई । सार धार डुल्लिन बल कोई ॥
चो अग्गा छल दाषें वीर । जौ गुन होइ [1]जु मध्यसरीर ॥
छं० ॥ ३९९ ॥

कवि का कहना कि नगर को दहनी प्रादिक्षणा देकर चलना चाहिए।

दूहा ॥ किय विचार नृप नगर कौ । सह सामंत सभेव ॥
चंद बुभिझ तव मन कियौ । चल्यौ सु [2]दष्पन देव ॥ छं० ॥ ४०० ॥
देत प्रदिष्पन नगर कों । होत तहां बहु बार ॥
राज देष पच्छै करै । एह सकल विच्चार ॥ छं० ॥ ४०१ ॥
हर सिद्धी परनाम करि । राषि समंत सु साज ॥
कनवज दिष्पन राज ग्रह । चल्यौ चंद बर राज ॥ छं० ॥ ४०२ ॥

पृथ्वीराज के नगर द्वार पर पहुंचते ही भांति भांति के अशकुन होना।

भुजंगी ॥ वजै पंग नीसान प्रातं प्रमानं । धरी अंक भोमं चली थान थानं ॥
कहै चंद कव्वी उपम्मा सु पत्तं । गजै मेघ मानो नछचं सहित्तं ॥
छं० ॥ ४०३ ॥
धुनं संभरी कन्न साम्रंत भीतं । ग्रहै साध ध्रम्मं सहै साधु नीतं ॥
सधे मग्ग हेतं ग्रहं ध्रम्म जीयं । [3]निहं दोस मंदेह छचं [4]पतीयं ॥
छं० ॥ ४०४ ॥
सोई ध्रंम कन्हं चितंतं प्रमानं । दिपी लज्जि मन्नं कन्नं जोति मानं ॥
धरै सामध्रमं जिनं धूम्र लीनं । जिनं जित्तियं जस्स देहं न कीनं ॥
छं० ॥ ४०५ ॥
सगुन्नं प्रथीराज दीसै नरिंदं । धुरं पैसते भोम पहु पंग इंदं ॥
बुलै देवि वामं घटं वाल मध्यै । बुलै वायसं वाम चढ़ि अस्ति रध्यै ॥
छं० ॥ ४०६ ॥

---

(१) मो.-सु । (२) ए. कृ. को. दिष्पन ।
(३) ए. कृ. को.-निहं । (४) ए. कृ. को.-पयहि ।

दिषी राज दिष्टं गलंती ज ईसं। लरै वाम नंदी अनंतं सुरीसं ॥
दिसा दच्छिनी लोह भट्ठी सु जागी। तहां चक्रितं चित्त कविचंद लागी।
छं० ॥ ४०७ ॥

कवित्त ॥ असुभ सगुन मंगल न। चित्त चहुआन विचारी ॥
मग्ग अग्ग मंजार। वाम दष्षिन निक्कारी ॥
बर उचिष्ट पावक्क। विघन तिन मझ्झ चमंकै ॥
मेघ वृष्टि आकाल। मध्य धुमंरिय गहक्कै ॥
आरिष्ट भाव कविचंद कहि। तव चिंत्यौ न्रिमान वसि ॥
भावी विजत्ति भंजन गढ़न। सुनि चहुआन नरिंद हसि ॥
छं० ॥ ४०८ ॥

दूहा ॥ सिंगिनि बंदि विरंम करि। बाग पंग न्रप जाइ ॥
दिषि आराम सिष ग्रह परसि। रहि सुगंध वरछाइ ॥छं०॥४०९॥

कन्नौज नगर का विस्तार और उसके चारों तरफ के बागानों का वर्णन।

भवर टोल झंकार वर। सुमन राइ फल लिद्ध ॥
कूर दिष्ट मन रह वढी। ससि तारक भ्रित रिद्ध ॥छं०॥ ४१० ॥

पद्धरी ॥ बर मग्ग बग्ग चिहु कोद दिष्षि। विस्तार पंच जोजन्न लष्षि ॥
कछ मग्ग भोमि चिहुं मग्ग दिस्सि। नारिंग सुमन दारिम विगस्सि
छं० ॥ ४११ ॥

प्रतिब्यंब अंभ झलकत सरूप। उप्पम तास बरनत अनूप ॥
नव विद्ध गत्ति सह जल प्रवेस। मुसकंत झुंड दिष्षी सुदेस ॥
छं० ॥ ४१२ ॥

प्रतिब्यंब झलकि चंपक प्रसून। उप्पंम देषि कविचंद दून ॥
दीपक्क माल मनमथ्थ कीन। हरभयति दिष्षि इह लोक दीन ॥
छं० ॥ ४१३ ॥

हलहलत लता दमकंत वाय। मनु बध्धौ सपतसुर भंग पाइ ॥
चलै सुगंध बर सीत वत्त। जानियै सब्ब हथ्थीन जित्त ॥
छं० ॥ ४१४ ॥

भुजंगी ॥ तहां प्रात प्रातं विंबं अंब मौरे। सुरं कंठ कलियंठ रस प्रस्स भोरें॥
फली फूल वेली तरुं चढ़ि सोहै। तिनं ओपमा दैन कविचंद मोहै॥
छं० ॥ ४१५ ॥

रवी तेज देषी ससी बाल भागी। मनों तारिका उड्डि तर सब्ब लागी॥
कहों जूहि जंभीर गंभीर वासी। तमी तप्पनी सेव सीसंम सासी॥
छं० ॥ ४१६ ॥

ग्रसै मोर मकरंद उडि बाग भेंही। मनों विरहनी [1]दिघ्घ उस्सास लेही॥
कितें एक बीजोर फल [2]भार लुट्टै। [3]मनों जीवनं पीउ पीयूष फुट्टै॥
छं० ॥ ४१७ ॥

कहूं सेवसत्ती फुलै ते प्रकारं। किधों दिष्षियं प्रगट मकरंद तारं॥
कहूं सोभही षट्ट गुल्लाल फूलं। चषं भोर मकरंद सहफूल भूलं॥
छं० ॥ ४१८ ॥

वरं बोरसरि फूल फूली सुरंगी। छके भोर भौरं मनं होइ पंगी॥
कहूं वाहली सेसुरंगं जु पंती। किधों [4]मंत मध्थं कि वीचैं धमंती॥
छं० ॥ ४१९ ॥

घरी एक चहुआन तिन थान राही। असंसार संसार संसार काही॥
तरं पिंड आकास फुल्लै निनारै। वरन्न वरन्नं अनेकं सवारे॥
छं० ॥ ४२० ॥

सबैं कव्विराजं उपम्मा न पग्गी। मनों नौ ग्रहं वार रस आय मग्गी॥
कवी जे जुवानं मनं ओप जानै। कवी जेम वत्तं रसं सो वषानै॥
छं० ॥ ४२१ ॥

न लालं न [5]पिंगी षजूरं असग्गी। नरं उंच त्रिपंत मो सीस पग्गी॥
छं० ॥ ४२२ ॥

पृथ्वीराज का नगर में पैठना।

दूहा। विलम सगुन चल्यौ न्रपति। नेन दरसि सो सथ्य॥
दर दीसी हट नैर कौ। मिलन पसारत हथ्य॥ छं० ॥ ४२३ ॥

(१) ए. कृ. को दीरघ, दीर्घ।
(२) ए. कृ. को.-भान।
(३) ए. कृ. को.-"मनो जीवनं पीय पी पीउ फुट्टै"।
(४) मो.-मनमथ्य।
(५) ए. कृ. को. पिंगी।

नगर प्रवेसनि देषि न्रप। जूप साल जेठाइ॥
ता वन्नन रस उप्पज्यौ। कहत चंद वरदाइ॥ छं०॥ ४२४॥

नगर के बाह्यप्रान्त के वासियों का रूपक तदनन्तर नगर का दृश्य वर्णन।

भुजंगी॥ जिते संगरी रूप दिन के प्रसंगा। तिते दिष्पियै कोटि कोपीन नंगा॥
जिते जूपकों चोप चोंपें जु आरी। तिते उच्चरें सो आनंन पारी॥
छं०॥ ४२५॥

जिते साधु संसारि षेलंत लष्षे। तिते दिष्पियै भूप दामंत पष्षे॥
जिते छैल संघाट वेस्यानि रत्ते। तिते द्रव्य के हीन हीनंत गत्ते॥
छं०॥ ४२६॥

जिते दासि कै चाम लग्गे सु रूपा। मनों मीन चाहंत वग मध्य कूपा॥
किते नाइका दिष्षि नर नैन डुल्लै। रहें सुरह लोकं सुरं दिष्षि भुल्लै॥
छं०॥ ४२७॥

बचं उच्चरै बेंन निसि की उज्जग्गी। मनो कोकिला भाष संगीत लग्गी॥
उड़ै उंच अब्बीर सेज्या समारै। मनों होइ वासंत भूपाल द्वारै॥
छं०॥ ४२८॥

कुसम्मं समं चीर संकीर सोभा। मनो मध्यता काम कदली सु ग्रोभा॥
रसं राग छत्तीस कंठं करंती। वरं वीन बाजिंत्र हथ्थें धरंती॥
छं०॥ ४२९॥

तिनें देषि असमान लग्गी ठठुक्की। मनो मेनिका न्रत्य तें ताल चुक्की॥
बरन्नंत भावं लगें जुग्ग सारे। इसे पट्टनं ग्रेह दिष्षे सवारे॥
छं०॥ ४३०॥

दूहा॥ सो पट्टन रट्ठौर पुर। उज्जल पुण्य विपष्य॥
कोट नगर नायक सघन। धज बंधी तिन लष्य॥ छं०॥ ४३१॥

नाराच॥ सु लाष लाष द्रव्य जासु नित्य एक उट्ठवै।
अनेक राइ जासु भाइ आय आय बिट्ठवै॥
सुगंध तार काल मानसा म्रदंग सुब्भवै।
सु दछिनं समस्त रूप स्याम काम लुब्भवै॥ छं०॥ ४३२॥

सु छंद चारु धुक्क देस सेस कंठ गावहीं।
उपंग बीन तासु पानि वालते बजावहीं॥
गमन्नि ते अनंग रंग संग ए परच्चए।
सु बीर सा अरह अंग पठ्ठि पाच नच्चए॥ छं०॥ ४३३॥

सवद्द सुम्भ उच्चरें सु कित्ति का वषानिए॥
नरिंद इंद इत्त ने सु कोटि इंद आनिए॥ छं०॥ ४३४॥

कन्नौज नगर के पुरजनों का वर्णन।

दूहा॥ अमग हट्ट पट्टन नयर। रत्न मुत्ति मनिहार॥
हाटक पट धन धात सह। तुछ तुछ दिष्षि सवार॥ छं०॥ ४३५॥

मोतीदास॥ अमग्गति हट्टति पट्टन संझ। मनों द्रग देवल फूलिय संझ॥
जु नष्षहि मोरि तमोरि सु ठार। उलिंचत कीच कि पीक उगार॥
छं०॥ ४३६॥

मिलै पद पद्द सु वेदल चंप। सु सीत समीर मनो हिम कंप॥
जु वेलि सेवंतिय गुंथहि जाइ। दियै द्रव दासि सु लेहि हलाइ॥
छं०॥ ४३७॥

सुबुद्धि बजावत बीन अलाप। अनेक कथा कथ ग्रंथ कलाप॥
बिवेक बजाज सु बेचहि सार। छुअंत नवासर सूझहि तार॥
छं०॥ ४३८॥

ति देषहि नारि सकुंज पटोर। मनो दुज दष्पन लागहि थोर॥
सु मोति जराइ मढे बहु भाइ। जु कट्टहि कोरि कहै सुनि गाइ॥
छं०॥ ४३९॥

सु लेतन सुष्प रहै अपनाइ। जु सेज सुगंध रचै पलटाइ॥
लहंलह तानक तानति वाम। बनी चिय दीसहि कामभिराम॥
छं०॥ ४४०॥

जराव कनक्क जरंज कसंत। मनो भयौ वासुर जामिन अंत॥
कनिक्कनि रेम सु काढत तार। उगंत कि हंसह कल्न प्रकार॥
छं०। ४४१॥

करंकर कंकन अंकह जोव। मनों दुजहीन सरद्दहि सोव॥
जरे जिव प्रान प्रकारति लाल। मनों ससि सम्भह्व तार विसाल॥
छं० ॥ ४४२ ॥

रूपंत जुपंतत राजनु जोप। मनों घन मद्धि तदिंत्तह ओप॥
जरे जिव नंग सुरंग सुघाटि। ति सुंदरि सोभ[1]उवावति पाट॥
छं० ॥ ४४३ ॥

दु अंगुलि जोरि निरप्पहि हीर। मनों फल बिंबहि[2]च पहि कीरि।
नषं नप चाहति सुत्तिय अंस। मनों भष छंडि रह्यौ गहि हंस॥
॥ छं० ॥ ४४४ ॥

दसों दिसि पूरि हयग्गय भार। सु पुच्छत चंद गयौ दरवार॥
... . । . . ॥ छं० ॥ ४४५ ॥

कविचन्द का राजा सहित राजद्वार पर पहुंचना॥

दूहा॥ हय गय दल सुंदरि सहर। जौ बरनों बहुवार॥
इह चरित्र कहं लगि[3]कहूं। चलि पहुपंग दुआर॥
॥छं० ॥ ४४६ ॥

चलत अग्ग दिष्यौ न्रपति। हरि सिद्धी सु प्रसाद॥
चंद नम्मि अस्तुति करिय। हरिय अघ्घ अपराध॥ छं० ॥ ४४७॥

कौतूहल दिष्यै सकल। अकल अपूरब बट्ट॥
पानधार[4]छर छग्गरह। राजग्रही बर भट्ट॥ छं० ॥ ४४८॥

राजद्वार और दरबार का वर्णन।

कवित्त॥ गज घंटन हय [5]षेह। विविध पसुजन समाज [6]द्रव॥
घन निसान घुम्मरत। प्रवल परिजन समथ्थ नव॥
विविध बज्ज बज्जत सु। चंद भर भीर उमत्तिय।
इक्क लत्त आवत सु। इक्क नरपत्ति समथ्थिय॥

(१) ए. कृ. को.-पुंपावहि। (२) ए. कृ. को. जंपहि। (३) ए. कृ. को.-गनो।
(४) ए. कृ. को.-छग्गल छलह। (५) मो.-हेष। (६) ए. कृ. को.-रत्न।

पुंभीय अवनि सुम्भय महल। जनु डुल्लित उभ्भिय करन ॥
दरबार राज कमधज्ज कौ। जग संडन सक्षस्फुह धरनि ॥
छं० ॥ ४४९ ॥

कौतूहल आलम अलाप। दिष्षिय दर चंदह ॥
पंगराइ दरबार। बार जागत जै विंदह ॥
सत जुग्गह बलिराइ। नगर पुर भ्रंस प्रमानं ॥
त्रितिय जुग्ग रघुनाथ। अवधि पट्टन वर थानं ॥
द्वापरह नाग नागर नगर। जुरा जोध तप्पे सुतप ॥
जै चंद दंद दाह दलन। कलि कमधज कनवज्ज नृप ॥
॥ छं० ॥ ४५० ॥

दिष्षि चंद दरबार। छत्र धरि फिरिहि विनहमद ॥
भ्रमर गुंज पुंजरत।(१)कत्त क्रमंत दुरद रद ॥
अनुचर अनुसंकरह। मत्त गम्मित कठीरव ॥
वासुर संझ विहारि। वारि अचवत अभंग भव ॥
दिष्षियै द्रुगम सुग्गम सुधन। सुगम द्रुगम जयचंद ग्रह ॥
सब जंत तंत जिम सर कटकि। समन दमन वस सूरि बह ।
छं० ॥ ४५१ ॥

कन्नौज राज्य की सेना और यहां की गढ़रक्षा का सैनिक प्रबंध वर्णन।

लष्ष सुभर आवंत। लष्ष दरबार हरज्जै ।
लष्षह गोलंदाज। लष्ष इक नालि भरिज्जै ॥
लष्ष तानि सिलहान। गिरद रष्षै दरबारह ॥
पाइक लष्ष प्रचंड। संक मानै नह सारह ॥
लष असिय सवाल सेवा करै। द्वादस सुरज जोति कल ॥
लष तीन तुरय पष्षर सहित। पवन पाइ पेराक भल ॥
छं० ॥ ४५२ ॥

(१) ए. कृ. को.-[illegible] [illegible] [illegible] ।

नागाओं की फौज का वर्णन।

गज्जत जलधि प्रमान। संष धुनि बज्जत भारिय ॥
मनक्रम त्रिय वच रहित। सहित सन्नाह सुधारिय ॥
रिष सरूप जयचंद। सहस संपहधुनि रष्पन ॥
आवध साल प्रलंब। पंभ रुप्पौ अति तिव्वन ॥
मल सित्त एक हथ्थिय फटक। इक्क हथ्थ झेलत्त बल ॥
भुज दंड प्रचंड उचाय कर। धरत जानि मदगल कि मल ॥
छ० ॥ ४५३ ॥

नागा लोगों के बल और उनकी बहादुरी का वर्णन।

हथ सित ऊरध पंभ। बान नंषत सत भारिय ॥
फोरत लोह प्रचंड। मुट्ठि चौसट्ठि प्रचारिय ॥
किनकि संगि नंषंत। धरनि षुंभत तिष्थारिय ॥
कितक बथ्थ भरि षभ। कढ्ढि नषत उछारिय ॥
इम रमत सहस संषह धुनिय। रिषि सरूप प्राक्रम अतुल ॥
उच्चर्यौ राज भट्टह सरस।[1] इह कौतूहल पिषिष भल ॥
॥ छं० ॥ ४५४ ॥

संखधुनी लोगों का स्वरूप और बल वर्णन।

मोरपंष तन वस्त्र। मोर सिर मुकुट विराजत ॥
मोर पंष बल्लभ अनंत। पंषे कर साजत ॥
तप सु तेज षिचौय। चष्प बध्घह भुज सुंडह ॥
पग नेवर झनकार। समर मेरं गिरि मंडह ॥
अवतार रूप दरसंत भल। संष बजावत माधरिय ॥
लप असी मझ्झ पौरुष अतुल। धर कंपत पग्गह धरिय ॥
॥ छं० ॥ ४५५ ॥

(१) मो.-इक।

पृथ्वीराज का उन्हें देख कर शंकित होना और कवि का कहना कि इन्हें अत्तताई मारेगा।

दूहा ॥ पिष्षि पराक्रम राज इह। विरत भयौ मन मंझ ॥
चंद बरद्दिय उकति करि। सामंत सूर समंझ ॥
॥ छं० ॥ ४५६ ॥

कहिय चंद राजन्न प्रति। कहा सोचि मन मंडि ॥
अत्तताइय जुध जुरै। जब इन सत्तन षंडि ॥
॥ छं० ॥ ४५७ ॥

भापनि भाष सु मिल्लिय दिस। दई सिसिर वनि इंद ॥
नव नव रस अरु सपन सष। जोध सुपंग नरिंद ॥ छं० ॥ ४५८ ॥

पद्धरी ॥ संचरिय देस भाषा न भाष। राषान राय साषान साष ॥
नौवत्ति वज्जि भर तीन लाष।[1]चक्रित सुनाय हुअ निच विसाष ॥
छं० ॥ ४५९ ॥

सामंतो का कहना कि चलो खुल कर देखें कौन कैसा बली है।

दूहा ॥ निसि नौवति मिलि प्रात मिलि। हय गय देषिय साज ॥
विचरि सुभर करिवर [2]गहिय। किनहि कहिय प्रथिराज ॥
॥ छं० ॥ ४६० ॥

कवि चंद का मना करना।

कहहि चंद दंद न करहु। रे सामंत कुमार ॥
तीन लष्य निसि दिन रहै। इह जैचंद दुआर ॥
॥ छं० ॥ ४६१ ॥

उसका कहना कि समयोचित कार्य करना बुद्धिमानी है देखो पहिले सब ने ऐसा ही किया है।

(१) [illegible] (२) [illegible]

कवित्त ॥ एक ठौर[1] पृथिराज। रास संगे हल्ल काजै ॥
समौ ताकि गोविंदि। अग जरासिंध सुभाजै ॥
समौ जानि श्रीराम। बैर पति कामिय मुक्किय ॥
समौ ताकि पंडवन। देह जस वन्न अप लुक्किय ॥
मतिसिष्ट पुरप तक्कै समौ। मनह मनोरथ चिंति मति ॥
कवि कहल कोलि लागी विषम। टारी टरै न पुब्बगति ॥
छं० ॥ ४६२ ॥

राजा का कवि की बात स्वीकार करना।

दूहा ॥ मांनि राज रिस रीस मन। चिंति उदै प्रथुदुत्ति ॥
सो जागी श्रो तान जल। मन भौ कंद उपत्ति ॥ छं० ॥ ४६३ ॥

कवि का पूछते पूछते द्वारपालों के अफसर हेजम कुमार रघुवंशी के पास जाना।

सुरिल्ल ॥ पुच्छत चंद गयौ दरवारह। जहां हेजम रघुवंस कुमारह ॥
जिहि हरि सिद्धि पास वर पायौ। सु कविचंद दिल्लिय तैं आयौ
छं० ॥ ४६४ ॥

द्वारपालों का वर्णन।

कवित्त ॥ करनि कनक मय दंड। परस उदंड चंड बल ॥
दिब्ब देह सुंदर समथ्थ। अति सुमति सु न्रिमल ॥
प्रति नर प्रीति प्रसन्न। परस सपन्न सब्ब जग ॥
अवर भूप पिष्षत नयन्न। परसाद लग्गि[1]नग ॥
सुकलम्भ कलपतरु वग्ग जिम। पुन्य पुंज पुज्जिय सुभुत्र ॥
प्रति हार राज दरवार मह्हि। दिषि वरदाय नमित्त हुत्र ॥
छं० ॥ ४६५ ॥

प्रतिहार का पूछना कि कौन हो? कहां से आए? कहां जाओगे?

(१) ए. कृ. को.-पग।

मुरिल्ल॥ रुकि कविंद हेजम बुल्लिय हसि। कौन थान बर चल्लिय कौंन दिस॥
को न्रप सब देव का नाम। किहि दिसि चिंत कस्यौ परिनाम॥
छं० ॥ ४६६ ॥

कवि का अपना नाम ग्राम बतलाना।

हौ हेजम रघुवंस कुमार। न्रिप चहुआन प्रथीअवतार॥
फिरि ढिल्ली कविथान नरिंद। सौ बर नाम कहै कविचंद॥
छं० ॥ ४६७ ॥

हेजम कुमार का कवि पर कटाक्ष करना।

द्वारपालवाक्य।

स्लोक ॥ संगिवान विवारता कविन, संधिवान् कि विग्रहात्॥
जुद्धवान पंग राएन्। ना भूतो न भविष्यति॥ छं० ॥ ४६८ ॥

दूहा ॥ वैरी काटन राज बच। डंड भरन परधान॥
सेवा सानल भेदियन। हिंदू [1]मुसलमानं॥ छं० ॥ ४६९ ॥

कवि का उत्तर देना

[2]असतिनि बोलहु हेजमन। ग्रब्ब करहु जिम आलि॥
जु कछु समर बित्तें रनह। इह देषहु तुम कालि॥ छं० ॥ ४७० ॥

हेजम कुमार का कवि को सादर आसन देना।

आदर करि आसन दियौ। पालक पंग नरिंद॥
छिनक विलंबहु सुहित करि। जब लगि कहौं कविंद॥
॥ छं० ॥ ४७१ ॥

हेजम कुमार का वचन।

पंग दरस जरन मिसह। कै सोकन्हिग दसौट॥
के मिलि पर मंडल न्रपति। राज राज मृ दौट॥ छं० ॥ ४७२ ॥

---

(१) [illegible] मुसलमान। (२) [illegible] बोलहु हजमन।

कवित्त ॥ एक ठौर[1] पृथिराज । रास संगै हल काजै ॥
समौ ताकि गोविंदि । अग जरासिंध सुभाजै ॥
समौ जानि श्रीराम । बैर पति कामिय मुक्किय ॥
समौ ताकि पंडवन । देह जस बल्ल अप लुक्किय ॥
मतिसिद्ध पुरप तक्कै समौ । मनह मनोरथ चिंति मति ॥
कवि कहल केलि लागी विषम । टारी टरै न पुव्वगति ॥
छं० ॥ ४६२ ॥

राजा का कवि की बात स्वीकार करना ।

दूहा ॥ मांनि राज रिस रीस मन । चिंति उदै प्रथुदुत्ति ॥
सो जागी श्रो तान जल । मन भौ कंद उपत्ति ॥ छं० ॥ ४६३ ॥

कवि का पूछते पूछते द्वारपालों के अफसर हेजम कुमार रघुवंशी के पास जाना ।

सुरिल्ल ॥ पुच्छत चंद गयौ दरबारह । जहां हेजम रघुवंस कुमारह ॥
जिहि हरि सिद्धि पास वर पायौ । सु कविचंद दिल्लिय तैं आयौ
छं० ॥ ४६४ ॥

द्वारपालों का वर्णन ।

कवित्त ॥ करनि कनक मय दंड । परस उदंड चंड बल ॥
दिघ्घ देह सुंदर समथ्थ । अति सुमति सु न्त्रिमल ॥
प्रति नर प्रीति प्रसन्न । परस सपन्न सब्ब जग ॥
अवर भूप पिष्षत नयन्न । परसाद लग्गि[1] नग ॥
सुकलम्भ कलपतरु वग्ग जिम । पुन्य पुंज पुज्जिय सुभुअ ॥
प्रति हार राज दरबार महि । दिपि वरदाय नमित्त हुअ ॥
छं० ॥ ४६५ ॥

प्रतिहार का पूछना कि कौन हो? कहां से आए? कहां जाओगे?

(१) ए. कृ. को.-पग ।

सुरिल्ल॥ एकि कंविद हेजम बुल्लिय हसि। कोंन थान वर चल्लिय कोंन दिस॥
को न्त्रप सेव देव का नाम। किहि दिसि चिंत कस्यौ परिनाम॥
छं० ॥ ४६६ ॥

कवि का अपना नाम ग्राम बतलाना ।

हो हेजम रघुवंस कुमार। न्त्रिप चहुआन प्रथीअवतार॥
फिरि ढिल्ली कविथान नरिंद। सो वर नाम कहै कविचंद॥
छं० ॥ ४६७ ॥

हेजम कुमार का कवि पर कटाक्ष करना ।

द्वारपालवाक्य ।

स्लोक ॥ संगिवांन विवांरता कविन, संधिवान् कि विग्रहात् ॥
जड्डवान पंग राएन्। ना भूतो न भविष्यति ॥ छं० ॥ ४६८ ॥
दूहा ॥ वैरी काटन राज बच। डंड भरन परधान॥
सेवा मानल भेदियन। हिंदू [1]मूसलमांन॥ छं० ॥ ४६९ ॥

कवि का उत्तर देना

[2]असतिनि बोलहु हेजमन। ग्रब्ब करहु जिम आलि॥
जु कछु समर वित्तें रनह। इह देषहु तुम कालि॥ छं० ॥ ४७० ॥

हेजम कुमार का कवि को सादर आसन देना ।

आदर करि आसन दियौ। पालक पंग नरिंद॥
छिनक विलंबहु सुहित करि। जव लगि कहौं कंविद॥
॥ छं० ॥ ४७१ ॥

हेजम कुमार का वचन ।

पंग दरस जच्चन मिसह। कै मोकल्लिग बसीठ॥
कै मिलि पह मंडल न्त्रपति। राज राज सू दीठ॥ छं० ॥ ४७२ ॥

---

(१) ए. मुसलमान ।　　(२) मो.-असत बोलहु हजमने ।

कवि का कहना कि कवि लोग वसीठ पन नहीं करते।

कुंडलिया ॥ सुनि हेजम रघुवंस वर। भट्ट वसीठ न हुंति ॥
पति घट्टक्क छिनकह मरै। जस मंगन नन पंति ॥
जस मंगन नन पंति। कौन प्रथिराज दान वरि ॥
का दिष्षन राज मू। कहा नलराइ जुधिष्ठिर ॥
मंडली मोहि जाचन नियम। दरिद्द करिय चहुआन चुनि ॥
पंगुरौ न्रपति देषन मनह। रघुवंसी हेजम्म सुनि ॥ छं० ॥ ४७३॥

कवित्त ॥ तू मंगन कविचंद। सथ्थ मंगन नन होइय ॥
तौ देषत तिय थान। इंद्र भुल्लिय [1]द्रग जोइय ॥
एह कपट कवि हस्यौ। नयन दिष्षियै निनारै ॥
न्रपन होइ दरबार। भूत भय छंद विचारै ॥
दरबार कव्वि बिरम्यौ न्रपति। [2]भर संमुह रष्यौ न दर ॥
तुम राज नीत जानहु सकल। हुकम बिना रष्यौ न वर ॥
॥ छं० ॥ ४७४ ॥

दूहा ॥ तहां बिरम कीनौं सु कबि। सब सामंत बहोरि ॥
चंद फेरि दष्षिन दिसा। भर उभ्भै बरजोर ॥ छं० ॥ ४७५ ॥

हेजम कुमार का उसे बिठा कर जैचन्द के पास जाकर उसकी इत्तला करना।

न्रप कवि हेजम मद्धि दर। रष्षि गयौ न्रप पास ॥
भट्ट संपतौ राज पै। वंने चंद विलास ॥ छं० ॥ ४७६ ॥
आदर करि हेजम [3]कविहि। गयौ जहां न्रपति नरिंद ॥
दिल्लियपति चहुआन कौ। कह असीस कविचंद ॥
॥ छं० ॥ ४७७ ॥

सुनत हेत हेजम उठिग। दिषत चंद बरदाइ ॥
न्रप आगे गुदरन गयौ। जहां पंग न्रप आहि ॥ छं० ॥ ४७८ ॥

(१) ए. कृ. को.-जुग। (२) ए. कृ. को.-तर। (३) ए. कृ. को.-सुकवि।

हेजम गय पहु पंग पैं। स्वामि आय कविचंद ॥
मत जंपी बुल्यौ सुभट। सुनि सुनि सोभ नरिंद ॥
॥ छं० ॥ ४७९ ॥

जो करिजै चिंतक सुतौ। जानत होइ अजान ॥
हरुअत्तन गरुअत करै। सोई न्रपति सयान ॥ छं० ॥ ४८० ॥

हेजम कुमार का जैचन्द को बाकायदे प्रणाम करके कवि के आने का समाचार कहना।

बस्तबंध रूपक ॥ तव सु हेजम तव सुहेजम। जुगम कर जोरि ॥
.. । .... ॥
सीस नयौ [1]दसवार तिहि। सेत छत्र[2]पति सद सुदिट्ठौ ॥
सकल बंध सथ्थह नयन। चकित चित बुलै गरिट्ठौ ॥
तव सु कियौ परनाम तिहि। बर कारी राय [3]प्रतिहार ॥
जिहि प्रसन्न सरसति कहै। सुकविचंद दरवार ॥ छं० ॥ ४८१ ॥

दूहा ॥ सीस नाथि बुल्लौ वयन। औसर पंग रजेस ॥
कवि जौ जुग्गिनि पुर कहै। संपत्तौ द्वारेस ॥ छं० ॥ ४८२ ॥

कवि की तारीफ।

कवि सरस बानी सरस। कित्तौ रूप प्रमान ॥
चंद [4]वत्त हर विदुष जन। गोपंथिती समान ॥ छं० ॥ ४८३ ॥
गुन आगंम समंद जौ। उक्त तिल हरि तरंग ॥
जुपति कवित म्रज्जाद ज्यौं। रतन वच्च प्रषरंग ॥ छं० ॥ ४८४ ॥
संमिय अगुनि प्रगास ज्यौं। गत्ति जुगत्ति बिचार ॥
सुप्प नरेस निधान धन। [5]जनु अर्जुन भटवार ॥ छं० ॥ ४८५ ॥
गुन विथ्थौ नर्प्पं धनी। तोन प्रकारय कित्ति ॥
सरसेसर उतकंठ कर। ग्रब्बह तत कवि दित्त ॥ छं० ॥ ४८६ ॥

(१) कृ. को.-दरवार, दसार (२) ए कृ को नद। (३) मो.-प्रहार।
(४) मो.-वल्हरे। (५) ए. कृ. को-अनु

आडंबर बर भट्ट वह्। भर वर सथ्थ कंविद ॥
तब रुक्यौ दरबार में। संग रष्पि कबिचंद ॥ छ० ॥ ४८७ ॥

राजा जैचन्द का दसौंधी को कवि की परीक्षा करने की आज्ञा देना।

बयन सुन्यौ रघुवंस कौ। भय सुम सुभहि नरिंद ॥
तिन दसौंधिय सौं कह्यौ। बोलि परष्पह् चंद ॥ छं० ॥ ४८८॥
कवियन तन चाह्यौ न्रपति। जो मुष तकौ न जान ॥
जौ लाइक लष्यौ लपन। तौ लाओ इन थान ॥ छं० ॥ ४८९ ॥

* दसौंधी का कवि से मिलकर प्रसन्न होना।

चौपाई ॥ आयस मौगु तियन तन चाह्यौ। तिन परनाम कियौ सिर नायौ॥
कौधौं डिंभ कवी परवानी। सरसें वर उच्चारहु वानी ॥
छं० ॥ ४९० ॥
ते चवि आइ चंद पहि ठट्टै। मिलतें हेत प्रीति रस बट्टै ॥
हुअ आनंद चंद पहि आए। ज्यौं सक्कर पय भूषें पाए ॥
॥ छं० ॥ ४९१ ॥

कवि और डिंबियों का भेद।

भुजंगी ॥ कितं दंडिया डंबरी भेष धारी। सु कब्बी कुकब्बी प्रकारं विचारी॥
सुनै भट्ट मेंजेह च्यार प्रकारी। किधों ब्रह्म मुनि ब्रत वर ब्रह्म विचारी॥
किधौं ठग्ग कै ठोठ कै हेनगारी। .... ॥ छं० ॥ ४९२ ॥
कहै राइ पंगु सुनौ कव्वि सव्वी। परष्यौ सु पतं कुपतं गुनब्बी ॥
छं० ॥ ४९३ ॥
किते भट्ट जाने दुरे ते कविंदं। तिनं पास आडंबरं नथ्थ इंदं।
कला ग्यान अग न्यान विग्यान जानं। अरथ्थं सुरथ्थं कुरथ्थं प्रमानं॥
छं० ॥ ४९४ ॥

* दसौंधी एक जाति होती है जो कि आज कल जसौंधी भी कहलाती है, दरबार के नाज या कड़खे कहने वाले जोगवर अबतक इस वंश में होते हैं।

कठोरं कुबोलं पंढते तिरष्षं । अदिष्टं अदानं प्रमानी निरष्षं ॥
जिते बाल बानी कवीचंद जानं । तिते पंग दिष्टं अदानं प्रमानं ॥
छं० ॥ ४६५ ॥

अहित्तं सुहित्तं सु वित्तं विचारौ ।रसं नौ छ भाषा स माषा उधारौ॥
परंमान ग्यानी विग्यनी विरूरं ।लषौ बुद्धि विद्या तौ आनौ हजूरं॥
छं० ॥ ४६६ ॥

दसोंधियों का कवि के पास आना और कविचन्द का कवित्त पढ़ना ।

चौपाई ॥ ति कवि आय कवि पहि संपत्ते । गुरु व्याक्रंन कहै मन मत्ते ॥
थकि प्रवाह गंगा सरसत्ती । सुर नर श्रवन मंडि रहै वत्ती ॥
छं० ॥ ४६७ ॥

मुष [1]परसंत परसपर रत्ते । मुन उच्चार कर्‍यौ सरसत्ते ॥
गुन उच्चार चार तन कीनौ । जनु भुष्षे पय सक्कर लीनौ ॥
छं० ॥ ४६८ ॥

सब रूपक कहि कहि कवि जित्ते । नव रस भास सु पुच्छहि तत्ते॥
गजपति गरूअ ग्रेह गुन गंजहु । श्रीधर बरनि पंग मन रंजहु॥
छं० ॥ ४६६ ॥

श्रीवर श्रीकर श्रीपति सुंदर । सुमिरन कियौ तथ्य कविचंदर ॥
बीठल्ल विमल्ल बयन बसुधा वन । द्रुपद पुत्ति चिरु चीर बढ़ावन ॥
छं० ॥ ५०० ॥

ग्राह गहत गंध्रर्व गयंदह । रष्यहु मान सुमान नरिंदह ॥
तुअ चिंत्तत सच्चु सब मित्तिय । विष दातव्य विषा लद्धौ चिय ॥
छं० ॥ ५०१ ॥

जब अर्जुन कोवंड धरिय कर । तब [2]संघरिय सकल षोहिन भर ।
जब अर्जुन मन मोह उपायौ । तब भारथ मुष मझ्झ दिषायौ॥
छं० ॥ ५०२ ॥

(१) ए. कृ. को.-परसन। (२) ए. संधिय।

है हरता करता अविनासी। प्रकृति पुरुष भारथ श्री दासी
सा भारति मुष मझ्झ प्रसन्नी। तव न बरस साटक भाष छ भन्नी
छं० ॥ ५०३ ॥

साटक॥ अंबोरुह मानंद लोइ लग्सिी. दारिम्म सो बीयन्नी ॥
[1]लोयन्ने चल चालु, चालुय वरं, बिंबाइ कीयौ गहौ ॥
के सीरी कै माइ वैनिय रसौ. चीकीमि की नागवी ॥
इंदो मध्य सु इंद मानवि [2]हितो, ए रस्स भामा छठौ ॥
छं० ॥ ५०४ ॥

दसोंधी का प्रसन्न होकर कवि को स्वर्ण आसन देना।

चौपाई॥ कवि पिष्पत कवि को मन रत्तौ। न्याय नयर कवंज संपत्तौ
कवि एकह अंगी क्रित कीनौ। हेम सिंघासन आसन दीनौ
छं० ॥ ५०५ ॥

दसोंधी का कवि की कुशल और उसके दिल्ली से आने का कारण पूछना।

दूहा॥ क्यौ मुक्यौ प्रथिराज बर। क्यों ढिल्ली पुर छेह ॥
जंपि कहौ कविचंद तत। तुम कुसलत्तन ग्रेह ॥छं०॥५०६॥

कवि का उत्तर देना कि भिन्न भिन्न राज्य दरबारों में विचरना कवियों का काम ही है।

गाथा॥ दीसै विविह चरियं। जानिज्जै सज्जन दुज्जनं ॥
[3]अप्पानं चक लिज्जै। हिंडिज्जै तेन पुहवीए ॥छं०॥५०७॥

दूहा॥ जिन मानो चहुआन भौ। सुलाइ जालई भट्ट ॥
देपि ग्रब्व सुरपति गरै। पंगु दरसि सो यट्ट ॥ छं० ॥ ५०८॥
जगत समुद्दयकार जल। षग्ग सीस चहुआन ॥
इह अचिज्ज बर भट्ट सुनि। तुछ निठ्ठुर संमान ॥ छं० ॥ ५०९॥

(१) ए.-को-लोदन्ने, लोहने। (२) मो. हनौ। (३) ए.-अप्पाजं तनक लिज्जे।

दसोंधी का कहना कि यदि तुम बरदाई हो तो यहीं से राजा के दरबार का हाल कहो।

चौपाई ॥ गजपति गरूत्र ग्रेह मन रंजहु। किन गुन पंग राय मन गंजहु॥
जो सरसै बर है तुम रंचौ। [1]तौ अदिष्ट बरनौ कवि संचौ॥
छं० ॥ ५१० ॥

मुरिल्ल ॥ तब सो देषै जान [2]प्रवीनं। भट्ट नयन सोहै रसलीनं॥
दान षग्ग सरबंगै सूरौ। अनीवानि [3]अब्बंगै पूरौ॥छं०॥५११॥

दूहा ॥ दीन वचन लहु करि कहौ। कविन करौ मन मंद॥
जै सरसै बर कछु हुए। तौ वरनौ जयचंद ॥ छं० ॥ ५१२ ॥

अरिल्ल ॥ अहौ चंद बरदाइ कहावहु। कनवज्जह न्नप देषन आवहु॥
जौ सरसति [4]जानौ बर चाव। तौ अदिष्ट वरनौ नृप भाव॥
छं० ॥ ५१३ ॥

कवि का कहना कि अच्छा सुनों मैं सब हाल आशु छन्द प्रवंध में कहता हूं।

दूहा ॥ जौ वरनों जैचंद को। तौ सरसें बर मोहि॥
छंद प्रवंध कवित्त जति। कहि समझाउं तोहि॥ छं० ॥ ५१४ ॥

दसोंधी का कहना कि यदि आप अदिष्ट प्रबन्ध कहते हैं तो यह कठिन बात है।

कहहि पंग बुधिजन कवित। सुनहु चंद बरदाइ॥
दिठि दिष्यौ बरनै सकल। अदिठ न बरन्यौ जाइ॥ छं० ॥५१५॥

कविचन्द का जैचन्द के दरबार का वर्णन करना।

पद्धरी ॥ सभ साज पंग बैठौ नरिंद। गुनगहर सकल साजै सु इंद॥
सिंघासन आसन सुभ्र साज। मानिक्क जटित बहु मोल भ्राज॥
छं० ॥ ५१६ ॥

(१) मो.-तो अदिष्ट वरनहु नृप संचौ।
(२) ए. प्रचीनं।
(३) मो.-सरबंगं।
(४) ए. कृ. को.-जानू।

वासन्न सेत मधि पीति सोहि। झल्लंत ताम कविराज मोहि ॥
मंड्यौ किरीट वररूव सीस। उत्तंग मेर हर सिषर दीस ॥
छं० ॥ ५१७ ॥

वैठो सु भूप मुष दिसि कुवेर। रजि रुद्र थान रचि जानि मेर ॥
दाहिनै वांम भर भर वयट्ठ। रूरत्त दत्त गुन सकल दिट्ठ ॥
छं० ॥ ५१८ ॥

सिर सेत छत्र मंड्यौ सु भूप। बहु देस रिद्धि वहु ताम रूप ॥
सनमुष्ष वैठि वर विप्र भट्ट। इह चव सु विद्य कन्नताम घट्टि ॥
छं० ॥ ५१९ ॥

तिन पच्छ वैठि गायन सु भेव। किन्नरह कंठ रस सकल भेव ॥
हिमदंड छत्र किय सेत पान। ठट्ठौ सु पिट्ठ विस भूप जानि ॥
छं० ॥ ५२० ॥

दुहु पिट्ठ साजि वर चंवर ढार। रजि रूप जानि अश्वनि कुमार ॥
ठट्ठौ सु पन्नधर दच्छि थान। प्रतिविंव रूप दुअ इंद जानि ॥
छं० ॥ ५२१ ॥

वैठे सु पिट्ठवर पासवान। बनि रूप रेह जित राज जान ॥
रत्तौ सु कीर मुष अग्र जान। भुज्जंत पक्क फल्ल करक पान ॥
छं० ॥ ५२२ ॥

यरि करह बाज ठट्ठौ समुष्ष। देयंत ताम तामो सुरुष्ष ॥
इहि विद्धि वयट्ठौ पंगराज। आसनह जीति जोगिंद साज ॥
छं० ॥ ५२३ ॥

जैचन्द का वर्णन।

साटक ॥ जा सीसं चमरायते मित छत्तं, ष षिन्न इंदोलिता ॥
बाला अर्क समान तेज तपनं, कोटी तयं मौलिता ॥
सस्चे सस्च समस्त षिचि दहियं, सिंधुं प्रयाते षलं ॥
कंठे हार रुलंति आनल समं, प्रथिराज हाल्लाहल्लं ॥
छं० ॥ ५२४ ॥

दरबार में प्रस्तुत एक सुग्गे का वर्णन।

दूहा॥ नील चंच अरु रत्त तन। कर करकटी भषंत॥
जोइ जोइ अप्पै राज मुष। सोइ सोइ कीर कहंत॥छं०॥ ५२५॥

कवित्त॥ नीम चंच तन अरुन। पानि आरोहि राज सुक॥
रुचि संपार परंस। चरन पिंगल सुभंत जुक॥
कंठ सुकत गुन रतन। जटित ओपत आभूषन॥
[1]रूर वारु कर नपनि। दछि भष्पित तन पूषन॥
जिम जिम उचार अप्पत न्रपति। तिम तिम कीर करंत सुर॥
भूलंत सुनत क्रत वेद बर। रस रसाल बानी सु फुर॥
छं०॥ ५२६॥

दूहा॥ सहस छच वज्जन बहल। बहुल वंस विधि नंद॥
एक सहस संषहधुनी। महल जानि जयचंद॥ छं०॥ ५२७॥

दसौंधी का कहना कि सब सरदारों के नाम गाम कहो।

दूहा॥ तब तिन कवियन उच्चरिय। अहो चंद बरदाइ॥
[2]पृथुक पृथुक नर नाम सभ। बरनिरु हमंहि सुनाइ॥
छं०॥ ५२८॥

कवि चन्द का सब दरबारियों का नाम गाम और उनकी बैठक वर्णन करना।

पद्धरी॥ राजिय सुसभा राजै सपंग। बिहु बांह पंति रंगह सुरंग॥
सोभत सुरस सुर समय सार। हनि हूतअसुर दरबार भार॥
छं०॥ ५२९॥
दष्षिनिय अंग रयसल कमंध। तिन अंग बीरचंदह सुवंध॥
जदवह भांन जुगराज बीर। कासह नरिंद रविवंस धीर॥
छं०॥ ५३०॥

(१) ए.-रू चारु वर नपनि, कृ.-रुचिरु रनि पनि, मो. उरट वारु कर नपनि।
(२) ए कृ. को.-"पृथुक नाम नर नाम सब"।

बरसिंघ राव बघेल सूर। [1]कठिया राय केहरि करूर ॥
परताप वीर तेजंप नाथ। रा राम रेन राहप्प पाथ ॥
छं० ॥ ५३१ ॥

केलिया बंध कट्ठी सु आस। करनाट भर काहप्प तास ॥
सारंग भट्ट सुग्रीव भाव। मोरी सुवंद परमार राव ॥
छं० ॥ ५३२ ॥

वीरंमराव नर पाल वीर। नरसिंघ कन्ह मम भुज गंभीर ॥
महदेव समह हरंसिघ बंक। मेहान इंद सद सार कंक ॥
छं० ॥ ५३३ ॥

पुरन्नराव चालुक्क देव। गोयंदराव परमार भेव ॥
हम्मीर धीर परताप तत्त। परवत पहार पाहार सत्त ॥
छं० ॥ ५३४ ॥

सचसाल अवधि पाटन नरिंद। साषुला हीर भुज फर कंविंद ॥
हन्नू लंगूर रनबीर बाह। जसवंत उट्ठ द्रुग सवर नाह ॥
छं० ॥ ५३५ ॥

बर बीरभद्र बघघेल मेर। नृप छण्णराय सङ्घन अरेर ॥
श्री मकुंद्राइ वीराधिधार। जै सिंघ सूर [2]आकार भार ॥
छं० ॥ ५३६ ॥

भुज बाम बंक सेनी सधीर। आघात पात वज्जंग बीर ॥
रठवरह सूर रावत्त राज। रनवीर धीर आवद्ध भाज ॥
छं० ॥ ५३७ ॥

न्रप चंद्रसेन पांवार राव। न्रप भीमदेव आजान दाव ॥
नरसिंघ सूर चालुक्क वीर। वर रुद्रसिंघ कंठी सधीर ॥
छं० ॥ ५३८ ॥

श्री रामसेन राजेस राज। सांषुला देव दासह समाज ॥
रा रामचंद्र रानिंग राव। हम्मीर सेन चतुरंग चाव ॥
छं० ॥ ५३९ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-कठिसा। (२) कृ. को.-आकार, ए.-साकार।

जट्टह सुदेव सारंग सूर । वीरंम सवन घाती समूर ॥
जैसिंघ कमध आजानि पांनि । पंमार भीम रण सिंघ थान ॥
छं० ॥ ५४० ॥

अरजुन्नदेव निमकुल नरेस । आसोक राइ साहन सुरेस ॥
चंदेल वीरभद्रह सवीर । सहदेव बंक भुज धज गँभीर ॥
छं० ॥ ५४१ ॥

केहरी ब्रह्म चालुक्क वीर । हरिचंद तेज चहुआन नीर ॥
हरसिंघ राइ रजि पास वान । निसुरत्ति बीर ममरेजषान ॥
छं० ॥ ५४२ ॥

इतमीस मीर बहबल मसंद । [1]आरासषान पीरोज बंद ॥
कंमोदषान जहान भार । जुग बलिय अमिय अलिय करार ॥
छं० ॥ ५४३ ॥

महमुंद षान केलिय गंभीर । अबदुल्ल रोम राहिम्म मीर ॥
सल्लेम साहि [2]इसमित्त षान । [3]आरोज साहि असवद्द पान ॥
छं० ॥ ५४४ ॥

ढारंत चँवर जुग पच्छ भूप । हरि बीर रास सम वय सरूप ॥
ठट्ठौ सु दषिन कर मंचि राव । थट्टे मुकुंद पहु वाम थाव ॥
छं० ॥ ५४५ ॥

शिव राग होत हरि गुन [4]मिलंत । उर सुनत सत्त पत्तह [5]षिलंत ॥
श्रीकंठ सु गुर कवि कमल भट्ट । जुग जोर समुष कमधज्ज पट्ट ॥
छं० ॥ ५४६ ॥

जुग पुरुष आय विनतिय समान । पट्ठए नाथ तिरहुत्त थाम ॥

दसोंधी का दरबार में जाकर कवि की शिफारिस करना ।

कवि गमत बहुर फिरि पंग तीर । सुनि गुन गंभीर कमधज्ज बीर ॥
छं० ॥ ५४७ ॥

---

(१) ए.-आरात । (२) ए. कृ. को.-इसभीर । (३) मो.-आरज्ज ।
(४) कृ ए.-मिल्लत । (५) मो.-लिपंत ।

कवि कमल्ल विमल्ल गुन अद्दरेस। अप्पियै अंपि निज वर नरेस॥
छं० ॥ ५४८ ॥

दूहा ॥ * मंगल बुध गुरु सुक्र सवि। सकल सूर उड़दिट्ठ ॥
आत पत्र धुअ जिम तपै। सुभि जयचंद वयट्ठ ॥छं० ॥ ५४९॥

नव रस सुनि हित्थ अदिठरस। भाषा जंपि न्त्रपाल ॥
सद्दह पत्त कुपत्त लिषि। गुन दरसी चयकाल ॥ छं० ॥ ५५० ॥

कवि का एक कलश लिए हुई स्त्री को देख कर उसकी छवि वर्णन करना।

जान्यौ बर बरदाइयन। बर संचौ कविचंद ॥
कंद्रप कितो कि और बर। लेत पीठ जैचंद ॥ छं० ॥ ५५१ ॥

चौपाई ॥ दस दिस कवि संमुही उहाई। घट धरि बाल [1]कुरित्तन जाई॥
धरत सुधरि छाई मुष [2]छाइया तिहि कविराज सु ओपम [2]पाइय॥
छं० ॥५५२॥

दूहा ॥ बर उपजै विपरीति गति। रहत सहायक इंद ॥
तत्त विरम्भि निवेस किय। [3]चित्तहि तत्तहि चंद ॥छं०॥५५३॥

कवित्त ॥ तहां सुदिष्षि कविचंद। चंद दह दह संजुत परि ॥
पूरानन आनंद। शुद्ध मकरंद सुद्ध जुरि ॥
म्रगा मीन गुन गनै। गुनह लज्जीत छिपाकर ॥
तहां अपुब उप्पनौ। हीर चक्रवाक प्रभाकर ॥
सज्जीव मदन बेली विहसि। बरकमोद सामोद घटि ॥
संजोग भोग सम जोग गति। रति प्रमान मनमथ अनटि ॥
छं० ॥ ५५४ ॥

*यह दोहा मो. प्रति में इस छन्द पद्धरी के पहिले और दोहा छन्द ५१७ के बाद है।

(१) ए. कृ. को.-कुरित्तिन। (२) ए. कृ. को.-छाई पाई।

(३) ए. कृ. चित्तरि ततरि चंद।

कवि की विद्वत्ता का वर्णन।

दूहा ॥ भाषा षट नव रस पढ़त। बर पुच्छै कविराज ॥
संप्रति पंग नरिंद कै। बर दरबार बिराज ॥ छं० ॥ ५५५ ॥

भाष परिछा भाष छह। दस रस दुभ्भर भाग ॥
वित्त कवित्त जु छंद लौं। षग सम पिंगल नाग ॥छं०५५६ ॥

कवित्त ॥ भेद भाव गुन कला। सुनत[1] आचिज कविंद घन ॥
नृपति वरन अनदिट्ठ। सभा सद विवह बचन घन ॥
छंद कवित पारस प्रचार। मुरधार नंदि सुर ॥
रस रसाल बानी पुनंत। गय भज्जि उरह जुर ॥
दीरघ दरस्स कविचंद बर। सुनि नरिंद कनवज्ज पति ॥
[2]अनि गुनिय कला गुन सष्पवै। सरसें वर धरि सरस मति ॥
छं० ॥ ५५७ ॥

कविचन्द का दरबार में बुलाया जाना।

दूहा ॥ प्रभु बोलिय कवि मझ्झ ग्रह। दरसि पंग असथान ॥
मनु भान चरन नव ग्रस परसि। नक बैठो सुरथान ॥
छं० ॥ ५५८ ॥

राजा जैचन्द का ओज साज वर्णन।

कवित्त ॥ जिम सरद ससि व्यंब। तिम सु [3]महि छच विरज्जिय ॥
जिम सु ध्रम्म पव्वय। पविच [4]छीरनिधि जिम छज्जिय ॥
जग मंडिन जिम मुत्ति। कित्ति तानिय वितान तिम ॥
जिन सु सत्त [5]मय पुंज। सेत सुरतरु फुल्लिय तिम ॥
मित सहस पच विगसिय जिमसु। दुरद मत्त अलि सुम्मयौ ॥
अति तुंग सुधा रस राजग्रह। पिषत कव्वि द्रग भुल्लयौ ॥
छं० ॥ ५५९ ॥

---

(१) ए. कृ. को. सुनत। (२) ए. कृ.-अति।
(३) ए. कृ. को.-माछि। (४) ए. कृ. को.-छीर निधि। (५) मो.-गय

हेजम का अलकाव बोलना और कविचन्द का आशीर्वाद देना

दूहा ॥ हक्कार्‍यौ हेजम्म कवि। निकट बोलि नृप ईस ॥
सरसें वर संभारि करि। कवि दीनी आसीस ॥ छं० ॥ ५६० ॥

कवि का आशीर्वाद देना।

कवित्त ॥ जिम ग्रह पिति ग्रहपंति। जिम सु उड़पति तारायन ॥
मधि नाइक जिम लाल। जिम सु सुरपत नाराइन ॥
जिम विषयन संग मयन। सकल गुण संग सील जिम ॥
वरन मध्य जिम उगति। चित्त इन्द्रिय जालह तिम ॥
अनि अनि नरेस भर भीर सर। दारिम न्टप मंदिर मरिय ॥
दिख पंग पानि उन्नित करिय। सुकविचन्द आसिष्प दिय ॥
छं० ॥ ५६१ ॥

बचनिका ॥ साहि भार साहि विभ्भार। वलिय साहि कंध कुदार ॥
सबर साहि मान मरदान। निबर साहि मान भूमि वरदान ॥
अदतार राइ अंकुस्स सीस। दातार राइ सरसोभ दीस ॥
सुक्रति राइ बाहन बरीस। विजैपाल सूय कनवज्ज ईस ॥

जैचंद की दरावरी बैठक वर्णन।

कवित्त ॥ मंगल्ल बुध गुरू सोम। सुक्र सनि सोभ पास तप ॥
हत तप [1]धुतम नरिंद। पंग सोहीज मंडि जप ॥
सकल सूर बर सुभट। सुबर मंडिल्ली विराजै ॥
द्रुग्ग देषि कविचंद। [2]सुभत सुरराज सुभाजै ॥
क्रंम वेन सम उच्चर्‍यौ। विरह तुंग द्रिगपाल तप ॥
क्रम अट्ठ अट्ठ षिटें सु बर। मध्य बीर मंडलिय अप ॥ छं० ॥ ५६२ ॥

जैचन्द की सभा की सजावट का वर्णन।

भुजंगी॥ सभा सोभियं बीर विजपाल नंदं। मनों मंडियं थान बिय इंद दंदं ॥
बरं थान थानं दुलीचै विराजै। तिनं देषि रंगं धनंपंति लाजै ॥
छं० ॥ ५६३ ॥

(१) ए. कृ. को.-पुतम। (२) ए. कृ. को.-सुदित सुरनाथ सु भाजै।

गुंथे रत्त पट्टं सुई डोरि हेमं । मनो भूमि रविक्रंन मिल चलहि तेमं॥
जरे रत्त नीलं नगं पट्ट साही । मनो आवरे बंधु धर नील माही ॥
छं० ॥५६४ ॥

ढरैं चोर सेतं झपै मोज ताही । तिनंकी उपम्मा कवीचंद भाही ॥
मनं आरुही भान लगि लग्गि आजं। डरं जान उग्गै रमै रथ्थ साजं॥
छं० ५६५ ॥

उठै छत्र पंगं उपम्मा समग्गं । मनो नौग्रहं मान तजि सीस लग्गं॥
कवीचंद राइं बरद्दाय बीरं । कला काम कल कोटि दिष्षी सरीरं॥
छं० ५६६ ॥

राजा जैचन्द को प्रसन्न देख कर सब दरबारियों का कवि की तारिफ करना ।

दूहा ॥ पंग पयंप्यौ कवि कमल । अमर सु आदर कीन ॥
पुब नरेस परसंन दिट्ठि । सब जंपयौ प्रवीन ॥ छं० ॥ ५६७ ॥
चंद अग्ग प्रथिराज बर । हनौ फुनि फुनि एष ॥
जिम जिम नृप पुच्छै बिरद । तिम तिम बढ़ै विसेष ॥छं०॥५६८॥

पुनः जैचन्द का बल प्रताप और पराक्रम वर्णन

कवित्त ॥ कोरि जोर दल प्रबल । अचल चल सुथिर थरथ्थर ॥
नाग सु फनि फन सकुचि । कच्छ षुप्परिय षरष्षर ॥
चढ़त भान छावंत रेन । [1]गयनेव दसं दिस ॥
दीपक ज्यौ बसि बात । आत पचं [2]आधारिस ॥
कमधज्जराइ विजपाल सुअ । तो बर भूपति हय किसौ ॥
बरदाइ चंद हैदेवि बर । जिसौ होइ अष्षै तिसौ ॥ छं०॥५६९ ॥

इस समय की पूर्व कथा का संक्षेप उपसंहार ।

प्रथम परसि संदेह । भयौ आनंद सबै जन ॥
अरू गंगा जल न्हाय । पाप परहर्‍यौ ततच्छन ॥

---

(१) ए. कृ. को. गयनेंन दसंज्जिय ।　　(२) ए. कृ. को.-आधारिय ।

गयौ चदं दीवान। अनी वानी सु फुरंतौ॥
सुफल हथ्थ सुष विरद। राय भिंथ्यौ सु तुरंतौ॥
श्रुत सुनिय विरद पुच्छिय तुरत। संच पयंपहु भट्ट सुनि॥
जिम जिम अचार ढिल्लिय न्रपति। तिम तिम जंपहि पुनह पुन॥
छं० ॥ ५७० ॥

भुजंगी॥ जहां आसनैं सूर ठट्टै सनाहं। जिनै जीति छितिराइ किय एक राहं॥
धरा भम्म दिगपाल धर धरनि पंडं। धरै छत्र सिर सोभ दुति कनक [1]डंडं॥
छं० ॥ ५७१ ॥

जिनै साजतें सिंधु गाहें सु पंगा। उनै तिमिर तजि तेज भाजै कुरंगा॥
जिनें हेम परवत्त सें सव्व ढाहे। [2]जिनें एक दिन अट्ठ सुरतान साहे॥
छं० ॥ ५७२ ॥

असं जंपियं [3]सष्प सो चंद चंडं। जिनै थप्पियं जाय तिरहूत पिंडं॥
जिनै [4]दष्षिनी देस अप्पै विचारै। जिनैं उतऱ्यौ सेतवंधं पहारै॥
छं० ॥ ५७३ ॥

जिनैं करन डाहाल दृअ बान वेध्यौ। जिनैं सिद्ध चालुक्क कय वार षेध्यौ॥
तिनं दिन्न जुद्धं भिरै भूमि रुंडं। वरं तोरि तिल्लंग गोआल कंडं॥
छं० ॥ ५७४ ॥

जिनै छिंडियौ बंधि इक गुंड जीरा। ग्रहे लिद्द वैरागरें सब हीरा॥
जिने गज्जने सूर साहाब साही। तिने मोकल्यौ सेव निसूरत्ति भाहीं॥
छं० ॥ ५७५ ॥

वरं भुल्लि भष्षी षनं जोब रोरै। तहां रोस कै सोस दरिया हिलोरै॥
जिनैं वंधि षुरसान किय मीर बंदा। इसौ [5]रट्ठवर राय विजपाल नंदा॥
छं० ॥ ५७६ ॥

जहां बंस छत्तीस आवैं हकारे। परं एक चहुआन षुमान टारै॥
छं० ॥ ५७७ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-दड। [२] मो.-जिते। [३] ए. कृ. को.-सच्च।
[४] ए. कृ. को.-दछिन। [५] मो.-रिटवर।

पृथ्वीराज का नाम सुनतेही जैचन्द का जल उठना।

दूहा ॥ सुनत न्रपति रिपु को बयन। तन मन नयन सु रत्त ॥
दिय दरिद्र मंगन घरह। को मेटै विधिपत्त ॥ छं० ॥ ५७८ ॥
रतन बुंद बरषै न्रपति। हय गय हेम सु हद्द ॥
लग्गि न बुंद सु मग्ग तन। सिर पर छत्र दरिद्द ॥ छं० ॥ ५७९ ॥

पुनः जैचन्द की उक्ति कि हे*बरद्द दुबला क्यों है ?।

मुह दरिद्र अरु तुच्छ तन। जंगलराव सु हद्द ॥
बन उजार पसु तन चरन। क्यौं दूबरौ बरद्द ॥ छं० ॥ ५८० ॥

कवि का उत्तर देना कि पृथ्वीराज के शत्रुओं ने सब घास उजार दी इसी से ऐसा हूं।

कवित्त ॥ चढ़ि तुरंग चहुआन। आन फेरीत परद्धर ॥
तास जुद्ध मंडयौ। जास जानयौ सबर बर ॥
केइक तकि गहि पात। केइ गहि डार मूर तरु ॥
केइत दंत तुछ चिन्न। गए दस दिसनि भाजि [1]डर ॥
भुअ लोकत दिन अचिरिज भयौ। मान सबर बर मरदिया ॥
प्रथिराज षलन षद्धौ जु षर। सु यों दुब्बरौ बरद्दिया ॥
छं० ॥ ५८१ ॥

पुनः जैचन्द का कहना कि और सब पशु तो और और कारणों से दुबले होते हैं पर बैल को केवल जुतने का दुःख होता है। फिर तूं क्यों दुबला है।

हंस न्याय दुब्बरौ। मुत्ति लभ्भै न चुनंतह ॥
सिंघ न्याय दुब्बरौ। करी चंपे न कंठ कह ॥

---

(१) ए. कृ. को. कर।

* "वरद्द" शब्द के दो अर्थ होते हैं एक वरदाई दूसरा बैल। अब भी बैसवाड़े में बैल को बरधा, वरध या बधिया इत्यादि कहते है।

म्रग्ग न्याय दुब्बरौ। नाद बंधियै सु बंधन॥
छैल छक्क दुब्बरौ। चिया दुब्बरी मीत मन॥
आसाढ़ गाढ़ बंधन धुरा। एकहि गहि ह हरद्दिया॥
जंगर जुरारि उज्जर घर न। क्यों दुब्बरो बरद्दिया॥ छं०॥ ५८२॥

पुरै न लग्गी आरि। भारि लद्यौ न पिट्ठ पर॥
गज्जवार गंमार। गही गट्ठी न नथ्थ कर॥
भ्रम्यौ न कूप भावरी। कबंहुक सब सेन रत्तौ॥
पंच धार ललकारि। रथ्थ सथ्था नह जुत्तौ॥
आसाढ़ मास बरषा समै। कंध न कहौं हरद्दिया॥
कमधज्ज राव इम उच्चरै। सु क्यौं दुब्बरौ बरद्दिया॥ छं० ॥५८३॥

पुनः कवि का उपरोक्त युक्ति पर प्रत्युत्तर देना।

फुनि जंपै कविचंद। सुनौ जैचंद राज बर॥
पुरै आर किम सहै। भार किम सहै पिट्ठपर॥
नथ्थ हथ्थ किम सहै। कूप भाँवरि किम मंडै॥
है गै सुर बर सुधर। स्वामि रथ भारथ तंडै॥
बरषा समान चहुआन कै। अरि उर बरह हरद्दिया॥
प्रथिराज षलनि षद्दौ सु षर। सुइम दुब्बरौ बरद्दिया॥ छं० ॥५८४

प्रथम नगर नागौर। बंधि साहाब चरिग तिन॥
सोझंत्ते भर भीम। सीम सोधीत सकल बन॥
मेवाती मुगल महीप। सब्ब पचजु षद्दा॥
ठट्ठा कर ढिल्लिया। सरस संमूर न लद्दा॥
सामंत नाथ हथ्थां सु कहि। लरिकैं मान मरद्दिया॥
प्रथिराज षलन षद्दौ सु षर। यौं दुब्बरौ बरद्दिया॥ छं०॥५८५॥

कवि के वचन सुन कर जैचंद का अत्यंत कुपित होना।

सुनत पंग कवि बयन। नयन श्रुत बदन रत्त वर॥
भुवन बंक रद अधर। चंपि उर उससि सास झर॥
कोप कलंमलि तेज। सुनत विक्रम अरि क्रम्मह॥
सगुन विचार कमंध। दिष्षि दिस चंद सु पिम्मह॥

आदर सुभट्ट राजिंद किय। अंग एँडाइ विसतारि कर ॥
नन मिलत मोहि संभरि धनिय। कहौ वत्त मुष विरद वर ॥
छं० ॥ ५८६ ॥

कवि का कहना कि धन्य है महाराज आप को। आपने मुझे वरद पद दिया। वरद की महिमा संसार में जाहिर है।

जिहि वरद्द चढ्ढि कै। गंग सिर धरिय गवरि हर ॥
सहस मुष्ष संपेषि। हार किन्नौ भुजंग गर ॥
तिहि भुजंग फन जोर। झोलि रष्षौ वसुमत्तिय ॥
वसुमत्ती उप्परैं। मेरगिरि सिंधु सपत्तिय ॥
ब्रहमंड मंड मंडिय सकल। धवल कंध करता पुरस ॥
गरुअत्त बिरद पहुपंग दिय। क्रपा करिय भट्टह सरिस ॥
छं० ॥ ५८७ ॥

जैचन्द का कहना कि मुझे पृथ्वीराज किस तरह मिले सो बतलाओ।

दूहा ॥ आदर किय न्रप तास कौं। कह्यौ चदं कवि आउ ॥
[1]मिले मोहि ढिल्लिय धनी। सु वत कहिग स मझाउ ॥ छं० ॥५८८॥

राजा जैचन्द का कहना कि पृथ्वीराज और हम सगे हैं और तुम जानते हो कि सब राजा मेरी सेवा करते हैं।

उनि मातुल्ल मुहि तात कहि। नित नित प्रेम वढंत ॥
जिम जिम सेव स अद्दरिय। तिम तिम दान चढंत ॥ छं० ॥ ५८९॥
सोमेसं पानिग्ग्रहन। जब ढिल्ली पुर कीन ॥
हम गुरजन सब वत्त करि। बहु धन मंग सु लीन ॥ छं० ॥ ५९० ॥
कै कमान सद्धौ सु इह। सुन्यौ न विजय नरिंद ॥
सब सेवहि पहु हमहि न्रप। सो तुम सुनि कविचंद ॥छं०॥५९१॥

[१] मो.-मिले न मुहि।

कविचन्द का कहना कि हां जानता हूं जब आप दक्षिण देश को दिग्विजय करने गए थे तब पृथ्वीराज ने आपके राज्य की रक्षा की थी।

पद्धरी ॥ अवसर पसाउ सुनि पंगराव । तुअ तात मात द्रिगविजय चाव ॥
तुम दिवस लग्गि दच्छिनह देस । तब लग्ग मेछ [1]इछ्यह प्रवेस ॥
छं० ॥ ५९२ ॥

सामंत नाथ तपि तोन बंधि । संहऱ्यौ साहि सब सेन संधि ॥
दामित्त रूप छत्ती कुलाह । सामंत सूर दुहु विधि दुवाह ॥
छं० ॥ ५९३ ॥

अन पुच्छि करै ग्रिह राज काज । कुल छच पंड चहुआन लाज ॥
[2]सिंगिनि समथ्थ सर सबद बेध । जिन करहु राव उन मिलन पेध ॥
छं० ॥ ५९४ ॥

हिँदवान जेन लग्गीय धाय । उहि छिच कोंन द्रिग विजै राइ ॥
मानिक्कराव दुअ बंस सुब्ब । रघुवंसराव जिमनि विन दुब्ब ॥
छं० ॥ ५९५ ॥

मुक्कल्यौ तोहि दिष्पनि बरीति । राज सु जेम मंड्यौ प्रवीति ॥
.... । .. .... ॥ छं० ॥ ५९६ ॥

जैचन्द का कहना कि यह कबकी बात है आह यह उलहना तो आज मुझे बहुत खटका।

कवित्त ॥ कहै पंग सुनि चंद । येह वितक किम वित्तौ ॥
किम गोरी सुरतान । भार भर थंभर जित्तौ ॥
कोंन समैं इह बत्त । घत्त षेली किम गोरी ॥
यादिन ही मुहि परम । परी बत्ता सब भोरी ॥
कहि कहि सु चंद मम ढील करि । राज पयंपत पुनह पुन ॥
[3]तब कही चंद वचनह विवर । एह कथ्य संमूल सुनि ॥ छं० ॥५९७॥

(१) ए. कृ. को.-इथ्यह । (२) मो.-सग्गानि । (३) ए. कृ. को. लब कही चंद बरदाइ ने ।

कवि का उक्त घटना का सविस्तर वर्णन करना ।

संवत तीस चिआर । विजय मंड्यौ सुपंग पह ॥
जीति देस सब अवनि । लीन करमध्य हिंदुसह ॥
दिसि दच्छिन संपत्त । कोपि गोरी सहाब तब ॥
रचिय बुद्धि बर अप्प । बोलि उमराव मीर सब ॥
तत्तार षान पुरसान षां । षां रुस्तम [1]कालन गनिय ॥
जेहान मीर मारूफ षां । बोलि मंत मंचह मनिय ॥ छं० ॥ ५९८ ॥

शहाबुद्दीन का कन्नौज पर चढ़ाई करने का मंत्र करना ।

गुज्झ महल्ल साहाब । दीन सुरतान सपत्तौ ॥
मंडि मंत एकंत । बोलि उमरावन तत्तौ ॥
इह काफर बरजोर । जीति अवनीय अप्प किय ॥
तेज अनंत मति अनंत । सेन सज्जै भर बंकिय ॥
आए सु साज कंगुर करषि । करन सेव को देन कर ॥
बर जोर हिंदु सा दीन पहु । घटै न रंचि सु बुद्ध [2]नर ॥
छं० ॥ ५९९ ॥

मंत्रियों का कहना कि दल पंगुरा बड़ा जबरदस्त है ।

कहिय षान तत्तार । साहि साहाब दीन सुनि ॥
विषम जोर बर हिंद । जीति पहुपंग अप्प फुनि ॥
मिले सेन सुरतान । [3]मलिक अनेक द्रव्य भर ॥
द्रव्य पानि पथ्थार । संकरि सब वस्य अप्प पर ॥
गहि कोट सज्जि गज्जन सुवर । आतस चरित [4]अनेक करि ॥
आवंत पंग साधर सयन । [5]लरि मनमथ्य पियान अरि ॥
छं० ॥ ६०० ॥

---

(१) ए. कृ. को.-तालन यह नाम महोबे के चंदेल राजा परिमाल के दरबारी एक मुसलमान सरदार का भी है ।

(२) ए. कृ. को. वर ।
(३) ए. कृ. को.-मिलक ।
(४) ए. कृ. को.-अनंत ।
(५) ए. कृ. को. जीरे मनमथ पिय थान लरि ।

शाह का कहना कि दिल छोटा न करो दीन की दुहाई बड़ी होती है।

कहै साहि साहाब। अहो तत्तारषान सुनि ॥
षुरासान रुस्तमां। जमन मारुफ षान गुनि ॥
काल्ल जमन जेहान। सुनौ वर वत्त चित्त तुम ॥
मंत सत्त सुद्धरौ। दीन नन हीन करौ क्रम ॥
सजि सेन चढ़ौ कनवज्ज धर। भंजि देस सम पुर सयल ॥
हरि रिद्धि बंधि नर नारि धर। आतस झालिय अप्प बल ॥
छं० ॥ ६०१ ॥

दूहा ॥ सज्जि सेन [1]साहन [2]समुद। गज्जनवै सुरतान ॥
बोलि मीर गंभीर भर। भंजि देस यन यान ॥ छं० ॥ ६०२ ॥

शहाबुद्दीन का हिंदुस्तान पर चढ़ाई करना और कुंदनपुर के पास रयसिंह बघेले का उसे रोकना।

पद्धरी ॥ मिलि सेन साहि आलम असंष। गंभीर मीर दिढ़ तीर नंषि ॥
मेमंति दंति घन बज्जि सार। आगाढ़ स्याम बद्दर सु ढारि ॥
छं० ॥ ६०३ ॥

बर तुरिय तेज अग्गल उभाव। उत्तंग अंग [3]जिम वेग वाव ॥
सजि लष्ष चढ़े गोरीस सेन। रज्जे सु बाज बज्जे सु गेन ॥ छं० ६०४ ॥
धज नेज भंड हल्ले अनंत। बहुरंग अंग लभ्भै न अंत ॥
षह पूरि धूरि धुंधुरिग भान। दिसि विदिसि पूरि मंनिय नमान ॥
छं० ॥ ६०५ ॥

गहरह सुमंत सुनियै न कान। संचार बत्त संचरहि थान ॥
संपत्त सेन कनवज्ज देस। भंजिए नयर पुर ग्रमनेस ॥ छं० ६०६ ॥
बंधियहि बांधि गोचीय बाल। धर जारि पारि किज्जै बिहाल ॥
.... । .... ॥ छं० ॥ ६०७ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-साहिन। (२) ए.-समुह। (३) ए. कृ. को.-ताजि।

कवित्त ॥ कुंदन पुर बघ्घेल । राय रयसिंघ सिंघ रन ॥
आगम साहि सहाब । सेन सज्जिय [1]बीरह तिन ॥
सहस उभै साहन । समुंद दस सहस पयभ्भर ॥
बंधि नारि नग ढारि । रच्यौ निज सेन सज्जि बर ॥
आवंत सेन रुक्यौ सकल । भयौ जुद्ध हरि उग्ग मनि ॥
परसै न सुदल रोक्यौ सकल । भयौ जुद्ध अदभुत्त तिन ॥ छं० ६०८ ।

हिन्दू मुसलमान दोनों सेनाओं का युद्ध वर्णन ।

भुजंगी ॥ चली अग्र चौकी सु साहाव सायं । अगें गज्ज चालीस मत्ते महायं॥
अगें हथ्थनारी उभारी उतंगा । सयं सत्त सासद्द वादी सु चंगा ॥
छं० ॥ ६०९ ॥

सहस्संच पंचं गजं बाज पूरं । महाबीर बाजिच बज्जे करूरं ॥
मिली फौज हिंदू तुरक्कीस तेजं । कहै सूर रैसिंघ अप्पं अजेजं ॥
छं० ॥ ६१० ॥

सरं टून छुट्टै सुभारं उभारं । सरा पंजरं पंथज्यों पंड चारं ॥
हकै हक्क वज्जी भरं टून टूनं । चपे सिंघ न्रसिंघ हक्कं सऊनं ॥
छं० ॥ ६११ ॥

भगी साहि चौकी चंपे सिंघ रायं । परे मीर भीरं सयं तीन घायं ॥
महा आय गज्जे सु मैदान सिंघं । भगे मीर मारूफ करि जेम जंगं॥
छं० ॥ ६१२ ॥

हके कट्टि तत्तार कत्तार तिष्षं । भली मुच्छ भोहैं भई रत्ति अंषं ॥
करै फौज अग्गै चल्यौ गज्जि गोरी । चवै दीन दीनं लषै भल्लि षोरी॥
छं० ॥ ६१३ ॥

मिलै आवधं मीर हिंदू करारे । धुरं भ्रुव्व तुट्टै उभै सार धारै ॥
भरं आवधं आवधं भाक बज्जै । बजै बीर वाजिच गोगेन गज्जै ॥
छं० ॥ ६१४ ॥

धरा कार [2]लोहं रसं रुद्र मत्तं । उभै हार मन्नै नहीं आय अंतं॥

(१) ए.-बारह । (२) ए.-मोहं ।

मिली दिट्ठ तत्तार रैसिंघ दूनं। मिले घाय मायं पुलै पग्ग ऊनं॥
छं० ॥ ६१५ ॥

करै दिट्ठ तत्तार कम्मान मुट्ठी। कसे बान गोरी महा दठ्ठ दिठ्ठी॥
लगे ऊर सींसंग फुट्टे परारं। हँसे झार संगी हयौ षान मारं॥
छं० ॥ ६१६ ॥

लगे बाहु ग्रीवा समं घाय सालं। पन्यो षान तत्तार बाजी बिहालं॥
हयो सिंघ कालन्न मीरं सनेजं। पन्यो राय रनसिंध रन अंत सेजं॥
छं० ॥ ६१७ ॥

भगी फौज हिंदू जुधं जीति मीरं। धन्यौ षान तत्तार झोरी सु तीरं
छं० ॥ ६१८ ॥

मुस्लमानी सेना का हिन्दू सेना को परास्त कर देश में लूट मार मचाते हुए आगे बढ़ना।

दूहा॥ परे हिंदु सय तीन धर। सत्त पंच पर मीर॥
गुर गुस्ताना नंचिया। बजि बाजिच गुहीर॥ छं० ॥ ६१९ ॥

मंझ ढाल तत्तार षां। धरि आयौ साहाब॥
साज सज्जि चढ्यौ सु फुनि। जनु उलौ [1]दरियाव॥ छं० ॥ ६२० ॥

भंजि रयन पुर लूटि निधि। बजि बाजिच निहाय॥
अलहन सागर उत्तरिय। बंधि तत्तार सु घाय॥ छं० ॥ ६२१ ॥

नागौर नगर में स्थित पृथ्वीराज का यह समाचार पाकर उसका स्वयं सन्नद्ध होना।

दिसि दिसि धाह जु संचरिय। भगिय प्रजा तजि देस॥
सुनिय बत्त नागौर पहु। चढ़ि प्रथिराज नरेस॥ छं० ॥ ६२२ ॥

---

(१) मो. दधि आव।

पृथ्वीराज का सब सेना में समाचार देकर जंगी तैयारी होने की आज्ञा देना।

कवित्त ॥ सुनिय बत्त प्रथिराज। चढ्यौ चहुआन महाभर ॥
बोलि कन्ह चहुआन। राय बरसिंघ सिंघ बर ॥
बोलि चंदपुंडीर। बोलि बघ्घेल्ल सु लष्यन ॥
लोहानौ आजानबाहु। मिलयो सु ततच्छिन ॥
गुज्जरह राम जिन बंध सम। चालुक बीझ सु भीम भर ॥
हाहुल्लिराव हम्मीर हर। मिल्लिय सेन दस सहस सर ॥छं०६२३॥

दूहा ॥ अवर सेन सामंत मिलि। चढ्यौ राज प्रथिराज ॥
गाजि गुहिर बाजित्र बजि। सज्जि सयन [1]जुध साज ॥ छं०॥६२४॥

कुमक सेना का प्रबंध।

कवित्त ॥ बोलि चंद चंडीस। दीन आयस प्रथिराजहु ॥
तुम षट्टूपुर जाहु। [2]जहां तिथि मंचिय काजह ॥
लै आवहु कैमास। राइ चामंड महाभर ॥
हैवर पष्पर सूर। सज्जि आतुर सु जुझ्झ हर ॥
कहियौ सु वत्त साहाव सब। भंजि देस कनवज्ज इन ॥
षिन पंग हिंदु मिरजाद मिटि। आवहु आतुर षेत रिन ॥
छं० ॥ ६२५ ॥

पृथ्वीराज का सारुंड के मुकाम पर डेरा डालना जहां से शाही सेना केवल २८ कोस की दूरी पर थी।

दूहा ॥ पठय चंद षट्टूपुरह। चढ्यौ राज चहुआन ॥
आतुर बढ्यि अवधि न्रप। सारुंडै सुसथान ॥ छं० ॥ ६२६ ॥
जाइ चंद षट्टूपुरह। कहिय षबर कैमास ॥
चढ्यौ सु अप्पन सुनत हीं। आनि संपतौ पास ॥ छं० ॥ ६२७ ॥

---

(१) ए.-सुच। (२) ए. कृ को -जहा थिति माची कैमासह।

सारुंडे चहुआन पह । संपत्तौ बरबीर ॥
सुनिय बत्त [1]सुरतान की । जोजन सित्तह [2]नीर॥ छं० ॥ ६२८ ॥

पृथ्वीराज की सेना का ओज वर्णन।

भुजंगी ॥ स्वयं चढ्ढियं सेन प्रथिराज राजं । बजे नीर बाजित्र [3]आयास गाजं॥
धुअं सीस सामंत सूरं सुधारे । भरं बंधियं राग रज्जे करारे ॥
छं० ॥ ६२९ ॥
तुरी सद्द उत्तंग पुंदे धरन्नी । मनो छुट्टियं मेघ सेना सुरन्नी ॥
पुरं जाइ संपत्त सो संकराई । सबैं उत्तरे बाग मध्ये सु भाई ॥
छं० ॥ ६३० ॥

चंद पुंडीर का कहना कि रात को छापा मारा जाय।

दूहा ॥ चवै चंड पुंडीर तव । अहो राज चहुआन ॥
निसा जुद्ध सज्जिय समय । भंजिय सेन परान ॥ छं० ॥ ६३१ ॥

पृथ्वीराज का सात घड़ी दिन रहते से धावा करके आधी रात के समय शाही पड़ाव पर छापा जा मारना।

कवित्त ॥ मानि मंत चहुआन । मंत पुंडीर चंद कहि ॥
घटिय सत्त दिन सेष । राज सज्जिय सु सेन सह ॥
चढ्यौ राज प्रथिराज । नद्द नौसान बीर सुर ॥
कौन दान तं हान । सूर सामंत सब्ब भर ॥
सन्नाह सब्ब सेना धरिय । निसा अद्ध पत्ते सु पुर ॥
हल्लाल हल्लि सय सत्ति दुति । चढ़ि चौकी गोरी गहर ॥छं०॥६३२॥
दूहा ॥ चौकी चढ़ि षुरसान षां । सहस सत्ति हय रज्जि ॥
उभय सत्त गज मद गहर । गुरु सनाह हय रज्जि ॥ छं० ॥ ६३३ ॥
घोटक ॥ चढ़ि सज्जि सबैं प्रथिराज भरं । पर चौकिय [4]चंपिय हक्कि हरं ॥
भर बज्जिय आवध रीठ सुरारि । मनों वन कूटहि कढ्ढि कवारि ॥
छं० ॥ ६३४ ॥

---

(१) ए. कृ. को.- चहुआन । (२) मो.-नीरं ।
(३) ए. कृ.-अकास । (४) मो.-चंपय ।

दोनों सेनाओं का घमासान युद्ध होना और मुसलमानी सेना का परास्त होना ।

हहक्किय चंपिय सूर सुधीर । महा भर सामँत विभ्रम वीर ॥
महा वर चंपिय चौकिय काल । ठिलै भर भग्गिय मिच्छ विहाल ॥
छं० ॥ ६३५ ॥

कहंकह सद्द सु मच्चि करार । सुन्यौ सुरतान भजे दल भार ॥
बजे मुष मारि चँपे चहुआन । लरे मझि अप्पह मेछ अपान ॥
छं० ॥ ६३६ ॥

हवक्कहिं धक्कहि सेलहि संग ।पटा भर झार विडारिय अंग ॥
वहै किरमाल सुचाल सुभेद । मनों सुभ सार करव्वत छेदि ॥
छं० ॥ ६३७ ॥

परे सिर नंचत उट्ठक मंध । करे रिनषंड सु धार विसंद ॥
षलक्कत श्रोन नदी जिम षाल । परे गज बाल भरे रन ताल ॥
छं० ॥ ६३८ ॥

करष्षत केस सु एकहिं एक । परे रन रिंघहि तुट्टि सुतेक ॥
तरफ्फत उट्ठन लग्गत कंठ । सुछुट्टिय घाव करै दिठ मुंठि ॥
छं० ॥ ६३९ ॥

लरक्कर लग्गहि कंठ करीति । मनों मतवार लरै रस मींत ॥
किनक्कहि बाजिय वीर सुभार । [1]फिरें गज भीर करंत चिकार ॥
छं० ॥ ६४० ॥

लष्यौ पतिसाह सु चंद पुँडीर । हयौ हिय सेल भगी भर भीर ॥
भग्यौ रन सेन सहाब सचस्सि । निकस्सिय सक्कि दिसा [2]अवदस्सि ॥
छं० ॥ ६४१ ।

रह्यौ पतिसाह इक्कल्लो वीर । भयो जिम मीन गयै सर तीर ॥
धरी गर सिंगनि चंद पुंडीर । सयो पतिसाह सु बंधिय वीर ॥
छं० ॥ ६४२ ॥

(१) ए कृ. को -परे । (२) ए. कृ. को -अवदिस्स ।

चंद पुंडीर का शाह को पकड़ लेना।

दूहा॥ भाग्यौ सेन साहाब गिरि। इक्कलौ गहि सार॥
गह्यौ चंद पुंडीर परि। हय कंधहि दिय डारि॥ छं०॥ ६४३॥
भगे सेन साहाव रन। उग्गि सूर सुविहान॥
अठ सहस धर मीर परि। पंच कोस रन थान॥ छं०॥ ६४४॥

पृथ्वीराज का खेत झरवाना और लौट कर दर पुर में मुकाम करना।

सोधि सु रन प्रथिराज पहु। [1]दरपुर कीन मुकाम॥
लुट्टि रिद्धि चिय गोस धन। जुरि जस लद्धौ ठाम॥ छं०॥ ६४५

पृथ्वीराज का शाह से आठ हजार घोड़े नजर लेना।

दंड कियौ सुरतान सिर। अठ्ठ सहस हय सब्ब॥
घत्ति सुषासन पठ्ठ घर। गज्जिय पिथ्थ सु गब्ब॥ छं०॥ ६४६॥

कविचंद का कहना कि पृथ्वीराज ने इस प्रकार शाह को परास्त कर आप का राज्य बचाया।

इम गज्जनवै गंजि पिथ। जस लिन्नौ षल मारि॥
सरबर सक संभरि धनी। कोइ न मंडौ रारि॥ छं०॥ ६४७॥

जैचन्द का कहना कि पृथ्वीराज के पास कितना औसाफ है।

कितक सूर संभरि धनी। कितक देस [2]दल बंधि॥
कितक हथ्थ रन अग्गरौ। हसि न्रप बूझयौ चंद॥ छं०॥ ६४८॥

कवि का उत्तर देना कि उनकी क्या बात पूछते हैं पृथ्वीराज के औसाफ कम परंतु कार्य्य बड़े हैं।

(१) दरपुर (या) हरपुर। (२) ए. कृ. को.-बल।

कवित्त ॥ कितक सूर संभरि नरेस। अंदेस कहत करि ॥
कितक देस बल बंधि। [1]राव रावत्त छत्रधर ॥
कितक को स मेंगल मदंध। तोषार भार भर ॥
कितइक गहि करिवार। कलह विहारि बीर भर ॥
कित इक्क मौज विदरन बहत। अति पर आगम जानियै ॥
उग्गो न अरक तिक्कह लगै। तिमिर तितें बल मानियै ॥
छं० ॥ ६४९ ॥

पृथ्वीराज का पराक्रम वर्णन।

दूहा ॥ सूर जिसौ गयनह उवै। दल बल मारन आस ॥
जब लग अरि कर उठ्ठवै। तब लग देय पचास ॥ छं० ॥ ६५० ॥

कवित्त ॥ सूर तेज चहुआन। हनत गज कुंभ झार षग ॥
विय विहंड होइ षंड। परत धर रत्त धार जग ॥
दल बल धरै न आस। तेज आजानबाह बर ॥
सपत नाग सर पार। तार [2]कोवंड तजै कर ॥
मत्ते दुरद रद सद्द बर। पारि भारि मध्यै धरनि ॥
विसगो बिकार उष्षारि पटु। मालकार नंषे करनि ॥छं०॥६५१॥

जैचन्द का पृथ्वीराज की उनिहार पूछना।

दूहा ॥ विहसत कवि बुल्ल्यौ वयन। इह लच्छन छिति है न ॥
सूअ सु मूरति लच्छिनह। को दिषवों पहु नेंन ॥ छं० ॥ ६५२ ॥
मुकट वंध सब भूप हैं। सब लच्छिन संजुत्त ॥
कौन वरन उनहार किहि। कहि चहुआन सु उत्त ॥छं०॥६५३॥

कवि चन्द का पृथ्वीराज की आयु बल बुद्धि और शकल सूरत का वर्णन करके सच्चे पृथ्वीराज को उनिहारना।

कवित्त ॥ बत्तीसह लच्छिनह। बरस छत्तीस मास छह ॥
इस दुज्जन संग्रहत। राह जिस चंद सूर ग्रह ॥

(१) ए. कृ. को. रह। (२) ए. कृ. को.-कोदंड।

एक छुटहि महिदान। एक छुट्टहिति दंड भर ॥
एक गहहि गिर कंद। एक अनुसरहि चरन परि ॥
चहुआन चतुर चावद्दिसहि। हिंदवान सब हथ्थ जिहि ॥
इम जंपै चंद वरद्दिया। प्रथीराज उनहारि इहि ॥ छं०॥६५४॥

इसौ राज प्रथिराज। जिसौ गोकुल महि कन्हह ॥
इसौ राज प्रथिराज। जिसौ पथ्थर अहि वन्नह ॥
इसौ राज प्रथिराज। जिसौ अहँकारिय रावन ॥
इसौ राज प्रथिराज। राम रावन संतावन ॥
बरस तीस छह अग्गरौ। लच्छिन सब संजुत्त गनि ॥
इम जंपै चंद बरद्दिया। प्रथीराज उनहारि [1]इनि ॥ छं०॥६५५॥

जैचन्द का कुपित होकर कहना कि कवि वृथा बक बक करके क्यों अपनी मृत्यु बुलाता है।

दिष्षि नयन कमधज्ज। नरेस अंदेस हल्ल वर ॥
दंग दहन जीरन जरंत। परचंत अंत पर ॥
श्रुत्ति अरुन मुष अरुन। नेन आरत्त पत्त सम ॥
पानि मीँडि दवि अधर। दंत दब्बंत तेज तम ॥
कविचंद बहुत बुल्लहु बयन। छित्ति अछिति षची कवन ॥
चल दल्ल समान रसना चपल। विफल बाद मंडौ मवन ॥छं०॥६५६॥

पृथ्वीराज और जैचंद का दूर से मिलना और दोनों का एक दूसरे को घूरना।

दूहा ॥ देषि थवाइत थिर नयन। करि कनवज्ज नरिंद ॥
नयन नयन अंकुरि परिय इक थह दोइ मयंद ॥ छं० ॥ ६५७ ॥

कवित्त ॥ दिष्षि नयन रा पंग। दंग चहुआन महा भर ॥
अंकुरि नयन विसाल। झाल झारंत रंच उर ॥

(१) ए. कृ. को.-इहि।

इक्क थार कंठीर। [1]पल न आकम्म करत तमि ॥
बर बारुनी समग्ग। मत्त मातंग रोस [2]जमि ॥
कमधज्जराज फिरि चंद कहु। कहत बत्त संभरधनिय ॥
बर बर कवित्त कवि उच्चरिय। अब सुकित्ति कथ्थौ घनिय ॥
छं० ॥ ६५८ ॥

जैचन्द का चकित चित्त होकर चिन्ताग्रस्त होना और कविचंद से कहना कि पृथ्वीराज मुझ से मिलते क्यों नहीं।

अति गँभीर पहु पंग। मन सु दब्बै द्रिग [3]लज्जइ ॥
कवन काज छग्गरह। पानि ग्राही भट कज्जइ ॥
कित्त काज करि बेंन। बानि बंदन बरदाइय ॥
श्रवन राग हम तुमै। दिष्ट गोचर तत लाइय ॥
संभरै जंम देषै सुभट। अंत निमत पुज्जै भिलत ॥
सोमेस पुत्त तुम हित्त करि। क्यौं मुझ्झहि नाहीं [4]मिलत ॥
छं० ॥ ६५९ ॥

कवि का कहना कि बात पर बात बढ़ती है।

दूहा ॥ मत मंती लहु मंत कहि। नीतें नीति बढंत ॥
जिम जिम सैसव सो दुरै। तिम तिम मदन चढ़ंत ॥ छं० ॥ ६६० ॥

कवि का कहना कि जब अनंगपाल पृथ्वीराज को दिल्ली दान करने लगे तब आपने क्यों दावा न किया।

कवित ॥ चहुआना कुल रीति। ध्रम्म जानन सोमी वर ॥
वर सोमेसर सीस। तिलक कढ्ढच अनंग करि ॥
अप्प जानि दोहित्त। राज ढिल्ली दे हथ्था ॥
प्रजा [5]लोक परधान। राय सह तूंअर कथ्था ॥

(१) मो.-पलन। (२) ए. कृ. को.-जिमि। (३) ए. कृ. को.-कज्जह, लज्जह।
(४) ए. कृ. को.- भिलत। (५) ए. कृ. को.-लोइ।

तिन्नेंति बीर तिष्यन्ह गयौ। रन्हसि फेरि विष पत्त दिय ॥
जे मुरिय नृपति कविचंद [1]कहि। तब जोगिनि पुर छल न लिय
छं० ॥ ६६१ ॥

जैचन्द का कहना कि अनंगपाल जब शाह की सहायता ले कर आए थे तब शाही सेना को मैं नें ही रोका था।

अनंग पाल चक्कवै। साहि। गोरी पुक्कारै ॥
हय गय दल चतुरंग। मीर मीरह सव्वारै ॥
में बल रुकि साहिब्ब। सेन श्रग्गा पुरमानी ॥
बर अगस्ति कमधज्ज। समुद सोषै तुरकानी ॥
मी सरन रहन हिंदू तुरक। जग्गि जानि तिहि मंडयौ ॥
बिग्गारि जग्ग चहुआन गय। हिंदु जानि मैं छंडयौ ॥छं०॥६६२॥

कवि का कहना कि यदि आपने ऐसा किया तो राजनीति के विरुद्ध किया।

कोन लोइ जग्गंते। बसत अप्पनी गमावै ॥
कोन जोर रस जोइ। दई जन कोन छलावै ॥
को तात बैर दुज्जनै। दया मानव को मुक्कै ॥
को विषहर बर डसै। दाव को घावह चुक्कै ॥
पहुपंग जानि चहुआन अरि। वसि परि सकै न मुक्किये ॥
पुज्जै न सुबल कर चढ़त नहिं। घात अप्प अप चुक्किये ॥
छं० ॥ ६६३ ॥

जैचन्द का पूछना कि इस समय सर्वाङ्ग राजनीति का आचरण करने वाला कौन राजा है।

दूहा ॥ हँसि पुच्छी पहुपंगने। तुम जानौ बहु मित्त ॥
को राजन तकि काल रत। को रत कोन विरत ॥ छं० ॥ ६६४ ॥

(१) मो-सुनि।

कवि का कहना कि ऐसा नीति निपुण राजा पृथ्वीराज है जिसने अपनी ही रीति नीति से अपना बल प्रताप ऐश्वर्य्य आदि सब बढ़ाया।

पद्धरी ॥ संभरिय पंग आयस प्रमान । बोलैं सु छंद पाधरी मान ॥
संभरि सु वीर सुनि तत्त राज । नोतें सु बंध सब चलन साज ॥
छं० ॥ ६६५ ॥

नीतिय सु लहिय लड्डौ सु राज । धन ध्रम्म कित्ति तिहिं तेज साज ॥
जीवन सु नीति न्रप जमिन पीन । वड़ मरन बीर कुल ध्रंमहीन ॥
छं० ॥ ६६६ ॥

पुनः कवि का कहना कि आपका कलियुग में यज्ञ करना नीति संगत कार्य्य नहीं है।

उच्चरै चंद बरदाइ तब्ब । राज सू जग्य को करै अब्ब ॥
बलिराय प्रथम जुग जग्गि मंडि । बर बीर बंधि पाताल छंडि ॥
छं० ॥ ६६७ ॥

कट्टन कलंक ससि मंडि जग्ग । गज्जरे कुष्ट वर बीर अंग ॥
रघुराइ जग्य मंडे प्रमान । काकुष्ट धरिग तन कोपि ध्यान ॥
छं० ॥ ६६८ ॥

इच्छियै इच्छ गुर मंडि बीर । नव सीय दोष जज्जर सरीर ॥
श्री राम जग्य मंड्यौ विचारि । कुब्बेर बरषि सोब्रन्न धार ॥
छं० ॥ ६६९ ॥

मह दान कलहि षोडस्स होइ । राजसू जग्य मंडै न कोइ ॥
सुन्नै सरूप पंगु लम्भ कीय । देवरह ध्रम्म बड़ बंध चीय ॥
छं० ॥ ६७० ॥

राजसू जग्य को करन भाय । नन होय पंच कलिजुग्ग राइ ॥
*सतजुग्ग जग्य सुत कवल कीन । हाटक सुमेर दच्छिना दीन ॥
छं० ॥ ६७१ ॥

---

* यहां से मो. प्रति में पाठ नहीं है आवान्तर कथा की कल्पना होने से कुछ भाग के क्षेपक होने का भी संदेह है।

संकलित नग्ग तिहिं संग च्यार। लूटंत विप्र हरि हथ्थ हारि ॥
ता परछ जग्य रचि मरुत रज्ज। दानह सु दीन वेपार दुज्ज ॥
छं० ॥ ६७२ ॥

नंषिय सु मग्ग लगि हेम भार। परि साठि सहस पंकति पहार ॥
गो दान दीन फुनि तिहि अलेह। तारक्क गंग रज बुंद मेह ॥
छं० ॥ ६७३ ॥

आरंभ जग्य फुनि राज ऐल। तसु दान वेद कहि सकि न सैल ॥
नवषंड पूरि वेदी रवंन। डाभाग्र रहि न षाली अवंनि ॥
छं० ॥ ६७४ ॥

करि जग्य सेत कीरत्ति भूप। दस सहस नदी चल्लाय नूप ॥
सक्रि सक्किय न झेल आहुत्ति वन्हि। तजि कुंड गइय ब्रह्मा सरन्नि ॥
छं० ॥ ६७५ ॥

पथ्थहि चराइ षंडीव जब्ब। मिट्टिय अजीर्न घन दिनौ तब्ब ॥
बलिराइ जग्य रच्चिय जिवार। उतपन्न भ्रंम वामनति वार ॥
छं० ॥ ६७६ ॥

थपि जग्य जुधिष्टिर राज पंड। पनवार अप्प श्री कृष्ण मंडि ॥
गुह्हरिय तब्ब इह चंद भट्ट। जैचंद राइ सों विविध थट्ट ॥
छं० ॥ ६७७ ॥

राजा जैचन्द का कवि को उत्तर देना।

सुनि श्रवन जंपि पहुपंग ताम। पर होइ करन कहु कौंन काम ॥
उनमान अप्प अप्पनि अवन्नि। रष्षहि जु नाम सोइ भूप धन्नि ॥
छं० ॥ ६७८ ॥

*साध्रम्म होइ जोगिन पुरेस। आमंत निरषि संची नरेस ॥
नीतह सु भ्रंग किट्टी सुरज्ज। भनतंत जोति विच्चरै सज्ज ॥
छं० ॥ ६७९ ॥

तजि नीत सोय अप इष्ट जान। कट्टै जु अद्ध दिन घरि प्रमान ॥
जुध सथ्थ साइं मुक्कियै अंग। रष्षियै भ्रंम साईं सुरंग ॥
छं० ॥ ६८० ॥

---

* यहा से मो.-प्राति का पाठ पुनः आरंभ होता है।

बिन राजनीति ग्रह जी अरज्ज। घट घटहि नीर छिन गलति सज्ज॥
बिन राजनीति दुति तजिय जोन्ह। सोभन्न प्रतिम मंडियै बैंन॥
छं०॥ ६८१॥

इह सुनिय बैंन पहुपंग बीर। मुष तत्त सुष्प कलह सरीर॥
न्त्रिप कलह साउ जेही जनाय। कालंत कहिय कल किति गाय॥
छं०॥ ६८२॥

चाटंक निसुष घटि कला जाइ। जानौ सुकाल छल हीन ताय॥
रत गुन अरत्त रत्ते न मोह। उप्पंम चंद जंपै सद्रोह॥छं०॥६८३॥
रंग रंग गत्त मज्जीठ मन्न। कस्सूंभ रंग रंग मोह पन्न॥
बर विरत श्रोन लच्छिन प्रमत्त। नव नवी वाम इच्छा रमत्त॥
छं०॥ ६८४॥

[1]सातुक्क सकहूं हित बढंत। आतंम मोह माया चढ़ंत॥
दिष्षौ ज स्त्रग्ग चित्ता सरंत। संसार क्रूप रस मैं परंत॥
छं०॥ ६८५॥

राजा जैचन्द का कहना कि कवि अब तुम मेरे मन की बात बतलाओ।

दूहा॥ मत सुवत्त कविचंद मुष। तब पुच्छिय इह बत्त॥
हौं पुच्छौ चाहूं सुमति। सो जंपौ कवि तत्त॥ छं०॥ ६८६॥

कवि का कहना कि आप मुझे पान दिया चाहते हैं और वे पान रनिवास से अबिवाहिता लौंडियां ला रही हैं।

जे त्रिय पुरिप रस परस बिन। उठिगराइ सु निसान॥
धवलग्रह संपन्न कहि। भट्टहिं अप्पन पान॥ छं०॥ ६८७॥

राजा का पूछना कि तुमने यह कैसे जाना।

महल अदिट्ठ त्रिय दिट्ठ सुअ। क्यों व्रन्नै बर कव्वि॥
सरसें वुधि व्रन्नन कह्यौ। मुष दिष्षे नन रव्वि॥ छं०॥ ६८८॥

(१) ए. कृ. को. सक्क हितहि बढन।

कवि का कहना कि अपनी विद्या से।

कछुक सयन नयनह करिय। कछु किय बयन बषान॥
कछु इक लछिन विचार किय। अति गंभीर सु जानि॥छं०॥६८६॥

कवि का उन पान लाने वाली लौंडियों का रूप रंग आदि वर्णन करना।

तिन कह अध्थि सु हथ्थ किय। जे राजन ग्रह अच्छि॥
ते सुंदरि सब एक सम। चली सुगंधनि कच्छि॥ छं०॥ ६९०॥

षोड़स बरस समुच्च ग्रिह। ते सब दासि सु जानि॥
मनों सभा सुरलोक की। चलि अच्छरिय समान॥ छं० ॥६९१॥

उक्त लौंडियों की शिख नख शोभा वर्णन।

अर्धनराज॥ विहिंग भंग जो पुरं। चलंत सोभ नूपुरं॥
अनेक भंति सादुरं। अषाढ़ सोर दादुरं॥ छं०॥ ६९२॥

सुधा समान सध्यही। सुगंध हथ्य हथ्यही॥
चरन रत्त सोभई। उपम्म कब्बि लोभई॥ छं०॥ ३९३॥

बरन्न रत्त श्रीर जे। कसीस कासमीर जे॥
चरन्न एड़ि रत्त ए। उपम्म कब्बि पत्त ए॥ छं०॥ ६९४॥

सु वंक चंद अंकनं। सु राइ तेज संकनं॥
सुसंक जीवनं टरै। सुनें सरूप में करै॥ छं०॥ ६९५॥

नषादि आदि उप्पनं। सु काम केलि द्रप्पनं॥
चरन्न हंस सद्दही। उपम्म कब्बि बद्दही॥ छं०॥ ३९६॥

सुनंत होड़ छंडयौ। चरन्न सेव मंडयौ॥
सु पिंडि बाल सोभई। सु रंग रंग लोभई॥ छं०॥ ६९७॥

सुरंग कुंकुमं भरी। पराद काम उत्तरी॥
सुरंग जंघ ताल से। कि काम षंभ आलसे॥ छं०॥ ६९८॥

नितंब तंब स्याम के। मनो सयन्न काम के॥
सवन्न भ्रंग गुंजही। सुगंध गंध पुंजही॥ छं०॥ ६९९॥

दिषंत डोर कंकनं । कटिं प्रमान रंकनं ॥
टिकै न दिट्ठ लंकयौ । विलोकि अष्पि अंकयौ ॥ छं० ॥ ७०० ॥
उतंग तुंग तामयौ । कि ध्रम्म लोभ कामयौ ॥
सु रोमराजि दिट्ठयौ । रुलंत बेलि पिट्ठयौ ॥ छं० ॥ ७०१ ॥
सु चंपि चंद गाढयौ । विपास काम चाढ़यौ ॥
जुअन्न हीय सोभई । सु सिद्ध मेंन लोभई ॥ छं० ॥ ७०२ ॥
ग्रहन्न रंग चालई । सु लज्जि लंक हालई ॥
उठंत कुच्च कंचुअं । कि तंबु काम रच्चयं ॥ छं० ॥ ७०३ ॥
बजे प्रमान सज्जनं । सुमेर अब्ब भंजनं ॥
जु पोत पुंज सोभयौ । सु चित्त काम लोभयौ ॥ छं० ॥ ७०४ ॥
सु जित्ति राह थानयौ । सु चंद बैठि मानयौ ॥
जराइ चौकि कंठयौ । उपम्म क्ब्बि तंठयौ ॥ छं० ॥ ७०५ ॥
ग्रहं जु इंद आइयं । चरन्न चंद साहियं ॥
बनित्त सब्ब जंपयौ । सुराह थान अप्पयौ ॥ छं० ॥ ७०६ ॥
चिबुक्क चारु सोभयौ । उपम्म कब्बि मोहयौ ॥
सु बाल भ्रंग पत्तयौ । सु कंज मुक्कि जत्तयौ ॥ छं० ॥ ७०७ ॥
सुरत्त अद्ध [1]रत्तयौ । लहै न ओप अंतयौ ॥
ओसाफ, कव्वि सोहयौ । प्रबाल रत्त मोहयौ ॥ छं० ॥ ७०८ ॥
सुधा समान सुप्पही । दसन्न दुत्ति रुप्पही ॥
सु सद्द बद्द पंचमं । कलिन्न कंठ तं कमं ॥ छं० ॥ ७०९ ॥
सुनी सु कव्वि राजई । उपम्म कब्बि साजई ॥
ससंक सारगं हरी । प्रगट्ट काम मंजरी ॥ छं० ॥ ७१० ॥
धनुक्क भोंह अंकुरे । मनों नयन्न वंकुरे ॥
श्रवन्न मुक्ति ताल जे । अलक्क वंक आलुजे ॥ छं० ॥ ७११ ॥
सबद्द सोभ जो फुलै । रहंत लज्जि कोकिलै ॥
अनेक हन्न जो कहै । तौ जम्म अंत ना लहै ॥ छं० ॥ ७१२ ॥

(१) ए.कृ. को.-जत्तयौ ।

दासी का पानों को लेकर दरबार में आना और पृथ्वीराज को देख कर लज्जा से घूंघट घालना।

कवित्त ॥ आय निकट रापंग। अंग आरयन बेद बर ॥
अति सुगंध तंमोर। रंग जुत धरय जुष्य पर ॥
दिष्षि न्त्रिपति प्रथिराज। दासि आगोहि सीस पट ॥
मनहु काम रति निरषि। सकुचि गुर पंच मद्धि घट ॥
कमधज्ज राज संकुल सभा। अकुल सुभर दरमंत दिस ॥
उस्ससे अंग उब्भरि अरषि। परसपर सु अवलोकि [1]सिस ॥
छं० ॥ ७१३ ॥

कवि का इशारा कि यह दासी वही करनाटकी थी।

चौपाई ॥ चहुआनह दासी सिर कंपिय। पुर रट्ठौर रही दिसि नंषिय ॥
बिगरत केस पुरुष नहिं अंकिय। प्रथीराज देषत सिर ढंकिय ॥
छं० ॥ ७१४ ॥

दासी के शीश ढांकने से सभासदों का संदेह करना कि कवि के साथ में पृथ्वीराज अवश्य है।

अरिल्ल ॥ ढंकित केस लषी भय [2]भूपह। दिन दिन दिस्सि कहां राई मह ॥
कविवर सथ्थ प्रथीन्त्रप आयौ। सो लच्छिन बर दासि बतायौ ॥
छं० ॥ ७१५ ॥

उच्च सरदारों और पंगराज में परस्पर सुगबुग होना।

कवित्त ॥ अप्प अप्प भट अटकि। षटकि पट दासि मंडि सिर ॥
इक्क चवै क्रत बद्दम। एक षल नष्य जानि थिर ॥
इक्क कहै प्रथिराज। इक्क जंपय षवास बर ॥

दिष्षि दरस [1]रयसिंघ। कहत दीवान अज्ज भर॥
कढ्ढिया [2]विकट केहरि कहर। जहर भार अंगय मनह॥
संग्रहौ आय रिपु दुष्ट ग्रह। समय सद्ध रा पंग कह॥छं०॥७१६॥

दूहा॥ भै चक्कि भूप अनूप सह। पुरष जु कहि प्रथिराज॥
सुमति भट्ट [3]सथ्थह अछै। जिहि करंत तिय लाज॥ छं०॥ ७१७॥

कविचन्द का दासी को इशारे से समझाना।

अरिल्ल॥ करि बल कलह स मंची मार्‌यौ। नहि चहुआन सरंन बिचार्‌यौ॥
सेंन सुबर कहि कवि समुझाई। अब तूं कलह करन इहां आई॥
छं०॥ ७१८॥

दासी का पट पटक देना और पंगराज सहित सब सभा का चकित चित्त होना।

समझि दासि सिर बर तिन ढंक्यौ। कर पल्लव तिन द्रग बर अंक्यौ॥
कव रस सबै सभा कमधज्जी। भैचकि भूप [4]सिंगिनी सज्जी॥
छं०॥ ७१९॥

उक्त घटना के संघटन काल में समस्त रसों का आभास वर्णन।

कवित्त॥ बर अदभुत कमधज्ज। हास चहुआन उपन्नौ॥
करुना दिसि संभरी। चंद बर रुद्र दिपन्नौ॥
वीभछ वीर कुमार। बीर बर सुभट विराजै॥
गोष बाल झंषतह। द्रिगन सिंगार सु राजै॥
संभयौ सन्त रस दिष्षि बर। लोहालंगरि बीर कौ॥
मंगाइ पान पहुपंग बर। भय लव रस नव सीर कौ॥
छं०॥ ७२०॥

दूहा॥ सिर ढंकति सकुचिय तरुनि। सु विधि चिंति स्वामित्त॥
वहुरि सु जिम तिम ही कियौ। [1]लवन विचारिय हित्त॥छं०॥७२१॥

---

(१) मो.-रामिंघ। (२) मो. निकट। (३) ए.कृ. को.-अथ्थह।
(४) ए. कृ को. सिगनि गुन। (१) ए. कृ को.-नवन।

एक कहै बैठै सुभट । इनह सथ्थ प्रथिराज ॥
ए न्रप जीवन एक है । तिनहि करत त्रिय लाज ॥ छं० ॥ ७२२ ॥

जैचन्द का कवि को पान देकर विदा करना ।

अप्पि पान सनमान करि । नहि रष्यौ कवि गोय ॥
जु कछु इच्छ करि मंगिहौ । प्रात समप्पौं सोय ॥ छं० ॥ ७२३ ॥

राजा का कोतवाल रावण को आज्ञा देना कि नगर के पश्चिम प्रान्त में कवि का डेरा दिया जाय ।

हक्कारयौ रावन न्रपति । के कें मुक्कि सुवास ॥
पच्छि दिस्सि जैचंद पुर । तिहि रष्यौति अवास ॥ छं० ॥ ७२४ ।

रावण का कवि को डेरों पर लिवाजाना ।

आयस रावन सथ्थ चलि । अयुत एक भट सथ्थ ॥
अग्ग राह सो संचरै । मेर उचावहि वथ्थ ॥ छं० ॥ ७२५ ॥

कवित्त ॥ पच्छिम दिसि पुर चंद । सु कवि सौ न्रपति सपत्तौ ॥
रावन सथ्थ समथ्थ । वचन सो कवि रस रत्तौ ॥
धवल मझ्झ सपन्न । कलस कुंदनह वज्र दुति ॥
जठित षंभ जगमगहि । कनक वासन विचित्त भति ॥
प्रज्जंक कनक मनि मुत्ति भति । मानिक मध्य विविद्ध भति ॥
आसनह पट्ट बहु मोल विधि । मनु मनि भूमि कि संझ क्रति ॥
छं० ॥ ७२६ ॥

दूहा ॥ डेरा सु कवि विरंम तुम । करि कवि लग्गौ चरित्त ॥
राजनीति रज गति चरित । चित गनि कहौ [1]सुचित ॥
छं० ॥ ७२७ ॥

रावण का कवि के डेरों पर भोजन पान रसद आदि का इन्तजाम करके पंगराज के पास आना ।

---

(१) ए. कृ को. चरित्त ।

डेरा कराइ रावन चल्यौ। षान पान तिन ठाहि॥
सुष्ष सुषासन आरुहै। तहां पंग न्रप आहि॥ छं० ७२८॥

डेरों पर पहुंच कर पृथ्वीराज का राजसी ठाठ से आसीन होना और सामंतों का उसकी मुसाहबी में प्रस्तुत होना।

कवित्त॥ बोलि लियौ सब सथ्थ। तथ्थ प्रथिराज "सुअत्तं"[2]॥
सलिता जेम समुद्द। मुद्ध पति मिलन सपत्तं॥
चामर छत्र रषत्त। लियै सामंत सपत्ते॥
रति सुभ्यौ राजान। मद्धि ग्रह पति रवि रत्ते॥
आए सु सुहर सब चंदपुर। देषि अनूपम षंति तथ॥
सामंत नाथ बरदाइ बर। आय सपत्ते सब्ब सथ॥ छं०॥ ७२९॥

सब सामंतों का यथास्थान अपने अपने डेरों पर जमना।

दूहा॥ सथ्थ सपत्तौ तथ्थ सब। भ्रित सामंत रु सूर॥
हय हयसाला बंधि गै। सुभि राजन दर नूर॥ छं०॥ ७३०॥
अरिल्ल॥ मंदिर वंटि दिए सब भूपन। आप रहै निज ग्रेह अनूपन॥
हीर हिरंनन की दुति षंडिय। तापर लाल षरग्गहि मंडिय॥
छं०॥ ७३१॥

पृथ्वीराज के डेरों पर निज के पहरुवे बैठना।

दिय डेरा सामंत समानह। फिरि आवास सुवास सबानह॥
दर रष्षे दरवार सुजानह। बिन आयस न्रिप रुक्कि परानह॥
छं०॥ ७३२॥

पंगराज का सभा विसर्जन करके मंत्रियों को बुलाना और कवि के डेरे पर सिजवानी भेजवाना।

दूहा॥ सभा विसरजी पंग पहु। गय मधि साल विचित्र॥
तहां सुषासन इंद्र सम। तिष्ट सुमंचिय मंच॥ छं०॥ ७३३॥

(२) ए. कृ. को.-सुअप्पं।

कवित्त ॥ तब राजन जैचंद। बोलि सोमित्र प्रधानह ॥
अरु प्रोहित श्रीकंठ। मुकंद परिहार सुजानह ॥
दियौ राइ आएस। जाहु सो कवियन थानह ॥
विविध अन्न व्यंजनह। सरस रसरंग रसानह ॥
तंमोर कुसुम केसरि अगर। कट्ठ कपूर सुगंध रुह ॥
आदर अनंत उपचार वर। करि सु प्रसन्नह कविय कह ॥छं०॥७३३

सुमंत का कवि के डेरे पर जाना, कवि का सादर मिजवानी स्वीकार करके सबको विदा करना।

तब आयस जैचंद। मंनि सो मित्र प्रधानह ॥
अरु प्रोहित श्रीकंठ। मुकंद परिहार प्रमानह ॥
बचन बंदि जय जंपि। लिए उपचार सार सब ॥
गये कव्वि सुथ्थान। रुके दर सथ्थ सब्ब जब ॥
दर रष्षि कह्यौ दरबार न्रप। भय पवास संबोलि सहु ॥
धरि वस्त विवह अग्गै सु कवि। विविध विवरि वर लष्ष लहु ॥
छं० ॥ ७३५ ॥

सुमंत का जैचंद के पास आकर कहना कि कवि का सेवक विलक्षण तेजधारी पुरुष है।

चोटक ॥ कवि आदर किन्न सु पंग दियं। किय विद्य सु विद्यह जीति जियं
फिरि मंगिय सीष सु पंग रजं। लषि नीति सु कित्ति अनंत सजं॥
छं० ॥ ७३६ ॥
रज मित्ति सु गत्ति अनंत भती। महनूर अदब्ब न जाइ मती ॥
कवि भ्रत्त सरूप सु भूप वरं। तिन तेज अजेज असेस भरं ॥
छं० ॥ ७३७ ॥
चित चक्रित मंचि मुकंद गुरं। भए देषि बिमन्न ग्रहन्न नरं ॥
गय पंग दरं सुधि पंग लही। चित्रसाल सुधूपह वोलि तही ॥
छं० ॥ ७३८ ॥

सब पुच्छिय कब्बि चरित्त कला। कहि मंत्रिय 'मोसहु बार न ला ॥
कहै मंत्रिय विप्र सु राज सुनै। कवि मंनिय गत्ति न चित्त गुनै
छं० ॥ ७३९ ॥

रज रीति अनूप अदब्ब लही। भ्रित देषि अनूप न जाय कहीं ॥
भ्रित रूपहि इंद्र समान लजं। बल तेज अजेज सु राज सजं ॥
छं० ॥ ७४० ॥

कवि सथ्थ जु भ्रितह तेज नवं। भर पंग निरष्षिय नैन सबं ॥
... । .... ॥ छं० ॥ ७४१ ॥

जैचंद के चित्त में चिन्ता का उत्पन्न होना।

दूहा ॥ सुनि चित्तह चिंत्यौ न्रपति। कवि यह कह कथ चित्त ॥
गुन गंभीर सु गंठि हिय। गौ दिय सिष्ष सु रूत्त ॥ छं० ॥ ७४२ ॥

रानी पंगानी के पास कविचन्द के आने का समाचार पहुंचना।

चौपाई ॥ सुनिय बत्त न्रप पंग सु राजह। आयौ कवि चहुआन सु लाजह ॥
सुनि जुन्हाइय चित्त सु चिंतिय। बोलि सहच्चरि मंत सुमंतिय ॥
छं० ॥ ७४३ ॥

रानी पंगानी का कवि के पास भोजन भेजना।

गाथा ॥ इह कवि दिल्लियनाथो। मैं सुन्यौ बीर बरदाई ॥
तिहि नव रस भाष छ भनियं। पट्ठाइयं अस्सनं[2] तथ्थं ॥ छं०। ७४४॥
तिहि सषि बोलि सुयानं। चित्तनि चित्त केसरी समुषं ॥
लीला विमल सु बुद्धी। सा बुद्धी लग्गि चरनायं ॥ छं० ॥ ७४५ ॥

दूहा ॥ पंगराइ वर बीर वर। सेंन अप्पि सहलीन ॥
दिसि जुन्हाइ असीस कवि। हुकम कहन न्रप दीन ॥ छं०॥ ७४६॥

पद्धरी ॥ चौबार स्याम वर पंग ग्रेह। ग्रिह मद्धि रतन कै मद्धि केह ॥
षोड़स वरष्ष अप्रपत्त बाल। [3]दिष्षियै पंग भामिनि विसाल ॥
छं० ॥ ७४७ ॥

(१) मो-मा माति। (२) मो-तयं। (३) ए. कृ को. दिपी सु।

दिषि हरन कत्ति करवत्त काम। मनों मीन मीन विस्राम ताम।
पद्मिनिय हंस चित्रनिय बाल। सोभै सुपंग ग्रिह मुरु विसाल॥
छं० ॥ ७४८ ॥

पद्मिनी कुटिल केलह सुदेस। अस्तनह चक्र वक्रह सुनेस॥
वरगंध पद्म सुर हंस चाल। जन जीभ रत्त भ्रिग अंकि माल॥
छं० ॥ ७४९ ॥

कुलवंत सील अंमृत वचन्न। पद्मिनी [1]हरै पहुपंग मन्न॥
आसीस भट्ट वोल्यौ प्रकार। चित हरै चंद मुषचंद मार॥
छं० ॥ ७५० ॥

पंगानी रानी "जुन्हाई" की पूर्व कथा।

कवित्त*। सूर किरनि तें प्रगटि। रुचिर कन्यका तपत्या॥
तरवर तुंग कैलास। माघ संग्रहि कर सत्या॥
झूलंती संपेषि। भयौ भुअपत्ति सु आसिक॥
एक पाइ तय मंडि। धारि द्रग अग्ग सु नासिक॥
वाचिष्ट रिष्षि सु प्रसन्न होइ। रवि प्रारथ्थि विवाह किय॥
जैचंद राय बरदाइ कहि। तिहि सम जुन्हाइ लहिय॥ छं० ॥ ७५१ ॥

अरिल्ल ॥ पंग हुकम अरुह्लान जुन्हाई। भट्ट न्नपति चहुआन सुनाई॥
रहि सि चीय चित दै बहु बढ्ढै। [2]जनों किरन कल पचम चढ्ढै॥
छं० ॥ ७५२ ॥

दासियों की शोभा वर्णन।

मुरिल्ल ॥ सब अंग सु रंगिय दासि घनं। घन हथ्थय पीत पटंबरनं॥
घनसार सुगंध जु हथ्थ धरै। तिन उप्परि भोरन भोर परै॥
छं० ॥ ७५३ ॥

रानी जुन्हाई के यहां से आई हुई सामग्री का वर्णन।

(१) ए. कृ. को.-रहै। *यह कवित्त मो-प्राति में नहीं है और क्षेपक जान पड़ता है।
(२) ए. कृ.-जनों कि हथ्थ कल पत्रम चढ्ढै।

कवित्त ॥ सहस एक हेमंग । सहस दोइ पीत पटंबर ॥
सहस अद्व नव नालि । केलि [1]कप्पूर सु ठुंमर ॥
म्रिग जु नाभि निक रासि । देस गवरी सा षंगी ॥
मुक्कि गंध काकीन । सेत बंधह भारंगी ॥
दारिम्म विजोरी इष्ष वर । विमल मद्द मोदक भरन ॥
अरु गंध पंग संभारि करि । जाति जुन्हाई संधि रन ॥ छं० ॥ ७५४ ॥

हनूफाल ॥ मिलि मंजरी गुन बेलि । मदनावली गुनकेलि ॥
मालती अविज सरूप । लीलया कमला अनूप ॥ छं० ॥ ७५५ ॥
मक्ष हिय सुलष्य सुबुद्धि । लषि नेंन लषन सु बुद्धि ॥
[2]क्रंमारि माला मुष्य । सम हंसगोरिय रुष्य ॥ छं० ॥ ७५६ ॥
वर वीर सषि सम लाज । पुच्छिय सु स्वामिनि काज ॥
कर जोरि आयस मंगि । बहु सषिय बोलिय संग ॥ छं० ॥ ७५७ ॥
जुन्हाइ जंपिय तब्ब । पति दिल्लिय आयौ कब्ब ॥
मिष्टाइ लै [3]तहां तथ्य । [4]सम जाहु सषिसम सथ्य ॥ छं० ॥ ७५८ ॥
मिष्टाइ विवह विचित्र । मिष्टाइ रुप पवित्र ॥
सें तीन बानय पूरि । आच्छादि अवर सनूर ॥ छं० ॥ ७५९ ॥
रस अगर पंच सुअट्ठ । करपूर पूरित जट्ठ ॥
केसरि सद्रोन सदून । म्रगमद्द थालन रून ॥ छं० ॥ ७६० ॥
तंमोलि चौसट्ठि पान । द्वै सहस हेम जुनान ॥
हिम हंस एक अनूप । जस जपै चातुर भूप ॥ छं० ॥ ७६१ ॥
मानिक्क जटित अमूल । मनि विचित्र जानि अतूल ॥
मरकंति मनि विन रेह । वर वृद्व मुत्ति जलेह ॥ छं० ॥ ७६२ ॥
मनि जटित विवह विराज । वर बसन धारित भाज ॥
सुभ सुजल मुत्तिय माल । वासंसि सुभ धरि थाल ॥ छं० ॥ ७६३ ॥
वर विचित्र अन्न अनंस । सुभ गत्ति स्वाद सुमंस ॥
मिष्टाइ जाति न संप । वहु रूप राजित अंप ॥ छं० ॥ ७६४ ॥

(१) ए.-ठुमर। (२) ए. कृ को. क्रन्यारि।
(३) ए. कृ. को.- थह। (४) ए. कृ को.-लै।

अनि वस्त्र विवह विभंति । गनि जाति कौंन गिनंत ॥
॥ छं० ॥ ७६५ ॥

दूहा ॥ सु बन सिंगारिय सह सषिय । विवह वस्त लिय सब्ब ॥
सो निज खामिनि अंग सुनि । क्रमिय सु अध्यह कब्ब ॥ छं० ॥ ७६६ ॥

कवि के डेरे पर मिठाई लेजाने वाली दासियों का सिखनख श्रृंगार वर्णन ।

लघुनराज ॥ रजंत बान सा सषी । द्रगंत बानता तिषी ॥
सिंगारि साज सब्बयौ । दिपै छरीव गब्बयौ ॥ छं० ॥ ७६७ ॥
सु गोपि वास रासयं । तमोर भष्षि आसयं ॥
बदन्न रूव रज्जयौ । सरद्द [१]विंब लज्जयौ ॥ छं० ॥ ७६८ ॥
ढुरंत मुत्ति बेनियं । विराजि काम नेनियं ॥
सुभाल कोर वासनं । उही सुमुच्छ भासनं ॥ छं० ॥ ७६९ ॥
चाटंक सोभि असरं । तड़ित्त दुत्ति संमरं ॥
[२]खंत कट्टि मेषरं । चकोर साव से सुरं ॥ छं० ॥ ७७० ॥
सुरंस हंस हंस यौ । समूह साव रंसयौ ॥
सुरं समध्य कामिनं । समोहि मुट्ट वामिनं ॥ छं० ॥ ७७१ ॥
वरष्प अट्ठ अट्ठयं । सवंक कंपि तट्ठयं ॥
रुलंत हीय हारयं । समुट्ठि काम कारयं ॥ छं० ॥ ७७२ ॥
विचित्र हंस कामिनी । मयंद मत्त गामिनी ॥
सषी सुबीय सष्षयं । क्रमंत अंग पष्षयं ॥ छं० ॥ ७७३ ॥
प्रवीन बीन बद्दनं । सुरन्न षद्द अद्दनं ॥ ॥
विचित्र काम जं कला । कटाषि चाल अष्पिला ॥ छं० ॥ ७७४ ॥
विसाल वैन चातुरी । मनो सु मोहिनी जुरी ॥
सु सामं दान भेदयौ । कुसल्ल दंड षेदयौ ॥ छं० ॥ ७७५ ॥
कला सु अट्ठ अट्ठयौ । सुभेव भाव गट्ठयौ ॥
सभाव चन्न सोभिलं । बदंत काम कोकिलं ॥ छं० ॥ ७७६ ॥

(१) मो.-रूप । (२) मो. रचाति ।

चलौं सु सब्ब संजुरी । मनो सुइंद अच्छरी ॥
चढ़ी कि डोलियं बरं । सरोहि कै हयं बरं ॥ छं० ॥ ७७७ ॥
सषी सु पंचयं सयं । गमंत सथ्थ सेनयं ॥
लियं सु सब्ब साजयं । सु अथ्थि रिद्धि राजयं ॥ छं० ॥ ७७८ ॥
सपन्न कव्वि थानयं । दरं सु रष्पि मानयं ॥
... . । . ॥ छं० ॥ ७७९ ॥

कवित्त ॥ पंकज सुत[1]सोवंत । फेरि करवट्ट प्रजंकह ॥
असुर उपजि अनपार । धरनि कज मंडिय कंकह ॥
संझ समय तब ब्रह्म । देह तजि रंभ उपाइय ॥
रूप अचंभम देषि । रहे दानव ललचाइय ॥
नष सिष मानहु तिहि सम । रचे संप्रतीक सहचरि सकल ॥
कविचंद थान कमधज पठय । कलन सु छल पिथ्यह अकल ॥
छं० ॥ ७८० ॥

उक्त दासी का कवि के डेरे पर आना ।

अरिल्ल ॥ सतु दासी न्नप थान सपत्ती । नूपर सद कवियान प्रपत्ती ॥
चंद चिंत उप्पय बर भारे । जूथ वजे मनमथ्थ नगारे ॥
छं० ॥ ७८१ ॥

दरवान का दासी को कवि के दरबार में लिवा जाना ।

गाथा ॥ सषि दरवार सपन्नी । आदर दीन तथ्थ दरवानं ॥
दर गय अंदर राजं । नइवेदयं तथ्थ सब्बायं ॥ छं० ॥ ८७२ ॥

चौपाई ॥ वोलिय मभ्भ सु कव्विय वालह । तव सिंघासन छंडि भुआलह ॥
आय सषी सब मभ्भ स वुल्लिय । आदर विवह वानि कवि किल्लिय ॥
छं० ॥ ७८३ ॥

दासी का रानी जुन्हाई की तरफ से कवि को पालागी कहना और कवि का आशीर्वाद देना ।

(१) को.-सोवत्त ।

विवह विचित्र धरी सुप अंबह । कही असीस जुन्हाइय कब्बह ॥
तुम त्रिकाल दरसी बुधि पाइय । बहु आदर दिन्नौ जु जुन्हाइय॥
छं० ॥ ७८४ ॥

तुम चहुआन सु भट्ट समत्तिय । अगम सुमग गत लहौ सु गत्तिय॥
मंगिय विदा सु कव्वि प्रसन्निय । देषि चरित रजगत्ति सु[1] मन्निय॥
छं० ॥ ७८५ ॥

दासी का रावर में वापस जाकर रानी से कवि का आशीर्वाद कहना ।

गति मति अंतर भेद सु जन्निय । देषि चरित अचिज्ज सु मुन्निय ॥
फिरि आई जु जुन्हाइय थानह । पयलग्गी विधि कही विनानह॥
छं० ॥ ७८६ ॥

गाथा ॥ कहि आसीस सु कव्वी । सुप्रसन्नों दिष्टतो भासं ॥
[2]तो तन चिंता भंगो । कथ्यि आसीस केलि कव्वीसं ॥ छं ॥ ७८७॥
रामा रज गति [3]लद्धी । आदर अदब नीति अनभूतं ॥
कवि यह अथ्यह राजं । संपिष्पेय कह कहंनाई ॥ छं० ॥ ७८८ ॥
सुनि सा बत्त जुन्हाई । दिय निज कस्म सब्ब सपिरनं ॥
निज हिय चिंता ठानी । संपन्नी धवल मक्कस्क नं ॥ छं० ॥ ७८९॥

यहां डेरों पर यथानियम पृथ्वीराज की सभा का सुशोभित होना और राजा का कवि से गंगाजी के विषय में प्रश्न करना।

दूहा ॥ तहां सु सूर सामंत मिलि । मधि [4]नायक कवि चंद॥
प्रथीराज सिंघासनह । [5]जनु परिपूरन इंद ॥ छं० ॥ ७९० ॥
अहो चंद इह दंद भलि । हंज दरसन किय गंग ॥
मन उछाह पुनि मुझ भयो । कछु बरनन करि रंग ॥
छं० ॥ ७९१ ॥

(१) ए. कृ. को. गत्तिय, मत्तिय ।
(२) ए. कृ को-"तो तन चिंतिय भंगो कहीं असीस केलि कव्वीस" ।
(३) मो.-रिद्धी ।
(४) ए. कृ. को.-ताकिप । (५) मो. मनों प्रथीपुर इंद ।

कविचन्द का गंगाजी की स्तुति पढ़ना ।

कहै कव्वि न्रप राज सुनि । मो मुष रसना एक ॥
इह सु गंग सुर सुनि जिते । [1]लहहि न पार अनेक । छं० ॥ ७९२ ॥

भुजंगी ॥ मुनी साधु जोगी जती आय जेते । गुनी ग्यान ध्यानं प्रमानं न तेते ॥
धरा रोम ते व्योम तुम्मे तरंगे । बसी ईस सीसं जटा जूट गंगे ॥
छं० ॥ ७९३ ॥

चतूरान पानं व्रह्मंडं कमंडं । त्रयीकाल संध्या रिषी दोष षंडं ॥
समाधिं धरै कूल साधून साधं । तुही एक तें चंद चक्कोर राधं ॥
छं० ॥ ७९४ ॥

तुमं सेव भागीरथं जानि कीनी । सबें मेलि जाचानि तू संग दीनी ॥
हुती स्वर्गवै लोक धारा अपारं । धसी प्रब्बतं पेलि नाना प्रकारं ॥
छं० ॥ ७९५ ॥

प्रवाहं अमानं प्रमानं न जानं । मनो एक मुष्षं मती मूढ़ ग्यानं ॥
कंपै पाप जो भीर पत्तं सु सत्तं । रहै दिष्य संमिष्य तद्वार भत्तं ॥
छं० ॥ ७९६ ॥

तुही सग्गुनं निग्गुनं सुद्धि कासं । तुही सब्ब जीवं सजीवं स सासं ॥
तुही राजसं तामसं सातुवंती । तुही आहितं हित्त चितं चरंती ॥
छं० ॥ ७९७ ॥

तुही ज्वाल माला कुलाला कुरष्टी । तुही वारिधारा अधारं अरिष्टी ॥
तुही वर्न भेदे विसंताहि साधै । तुही नाद रूपी सजोगी अराधै ॥
छं० ॥ ७९८ ॥

तुंही ते हरी तूं हरी तेन औरै । जिसौ भेद जो कंचनं टूक कोरै ॥
लपै को गती ता मती देव गंगे । रटै कोटि तेतीस तो नाम अंगे ॥
छं० ॥ ७९९ ॥

जिसौ वारि गंगा तरंगे प्रकारे । तिसौ तोमने अप्प अप्पं अपारै ॥
करै पाप भारं फना व्याल कंपै । रसन्नाजि कै देवि तो नाम जंपै ॥
छं० ॥ ८०० ॥

(१) मो.-लहत ।

न्त्रिभारं करै पाप भारंत दूरं। रची पुन्य कै क्यारवै भ्रम्म सूरं॥
सते साध गहि लोक तें सीस रष्यौ। तवै वेद भय वेद सव छेद नंष्यौ॥
छं० ॥ ८०१ ॥

असी आइ अंगाइ न्त्रिमया न किन्नौ। हंतौ दीप आदिष्ट गारिष्ट भिन्नौ॥
तुंही देषि करि तेज कष्पौ समुद्दं। छल्यौ सब्ब करि देवि छंड्यौ सु चंदं॥
छं० ॥ ८०२ ॥

धरे सहस सत रूप आनूप भारी। कला नेक नेकं अनेकं प्रकारी॥
रमी रंग रंगं तरंगं सरीरं। जिसौ भेद पय पान जान्यौ न नीरं॥
छं० ॥ ८०३ ॥

जिसौ सिंह अरु सगति भयभीत भारी। जिसी मुत्तिहर मूर तें झाकझारी॥
जिसौ अप्प अप्पै अपारें अनंतं। तिसौ मोप नर भेद पावै तुरंतं॥
छं० ॥ ८०४ ॥

सिया रूप हुय भूप रावन सहाऱ्यौ। भये देवकी अंस चानूर माऱ्यौ॥
इसौ कौन सहगत्ति सों कहै ग्यानी। इहै द्रोपदी होइ भारथ्थ ठानी॥
छं० ॥ ८०५ ॥

[1]समी सीस तें देवि देवी मुरारें। रमी सीस तें माहिषं पाइ ठारे॥
[2]इहै कालिका काल जिम दुष्ट मारै। इहै संभनिस्संभ धायौ प्रहारै॥
छं० ॥ ८०६ ॥

तूंही ग्रंथ गेनं सिवं संग धंगे। तुही मोचनी पाप कल अलष गंगे॥
दयालं दया जानि चवि चंद बानी। जयं जान्हवी जोति तू पापहानी॥
छं० ॥ ८०७ ॥

श्री गंगा जी का माहात्म्य वर्णन।

चन्द्रायण॥ मनसा एक जनम्म महा अघ नासही।
दरसन तीन प्रकारति पाप प्रनासही॥
न्हायै दुष्ष समूह मिटै भव सात के।
अंव हरै लगि बूंद सहस्सति गात के॥ छं० ॥ ८०८ ॥

(१) मो-रमी। (२) ए. कृ. को.-रहे।

गंगाजी के जलपान का माहात्म्य और कन्ह का कहना कि धन्य हैं वे लोग जो नित्य गंगाजल पान करते हैं।

गाथा ॥ सो फल निरषित नयनं। सो फल गुन गाइयं बैनं ॥
सोइ फल न्हात सरीरं। सोइ फल पिअत अंब अंजुलयं ॥
छं० ॥ ८०९ ॥

भुजंगी* ॥ जलं गंग न्हावै कितीकं कलत्तं। अलंकार चीरं सरीरं सहित्तं ॥
सरं केस पासं नितंबं बिलंबे। तिलं तेल फुल्लेल सीचें प्रलंबे ॥
छं० ॥ ८१० ॥

द्रगं कज्जलं म्रग्गयं कस्तूरी। करी कच्छपं भीजियं हथ्थ चूरी ॥
मुकत्ताफलं सीपयं कीट पट्टं। विलेपन्न कीनें सुगंधं सुघट्टं ॥
छं० ॥ ८११ ॥

मुषं नाग वल्ली विरष्षं बरंगं। महंदी नषं जावकं रंग पग्गं ॥
इतें जीव पायं तुरन्तं मुकत्ती। कवीचंद जंपी न झूटी उकत्ती ॥
छं० ॥ ८१२ ॥

धरे ध्यान चौहान किन्नौ सनानं। अचिज्जं कहा पावनं मोषथानं ॥
सुने क्रन्न तामं कहै कन्ह काकौ। पियें अंब निसि दीह वड़भाग ताकौ॥
छं० ॥ ८१३ ॥

दूहा ॥ इय गंगा राजं न थुति। सुनी रत्ति धरि ध्यान ॥
जनम मरन दोऊ सधै। जो उपजै इह थान ॥ छं० ॥ ८१४ ॥

सामंत मंडली में परस्पर ठट्ठा होना और बातों ही बात में पृथ्वीराज का चिढ़ जाना।

तव सामंतन चंद कहु। सव पुच्छिय न्नप वत्त ॥
जु कछु सत्य संबोध भौ। निट्ठ,ररायह तत्त ॥ छं० ॥ ८१५ ॥

* यह छन्द मो. प्रति में नहीं है।

अरिल्ल ॥ तत्त करे न्रिप निट्ठुर बुभिझय । राजा चंद प्रहास समुभिझय ॥
आदि दियै कमधज्ज सु रायहि । दासि समेत कह्यौ सब भायहि ॥
छं० ॥ ८१६ ॥

आचिज एक भयौ चहुआनह । मान सबै मुक्किय नृप पानह ॥
भट्ट निवेस करै कर जोरहि । छत्र धन्यौ कहि कौन निहोरिहि ॥
छं० ॥ ८१७ ॥

फेरि कह्यौ कविचंद सु वत्तिय । पंग प्रताप गयौ तप छत्तिय ॥
पान सु पात तुम्हें गर [1]थल्लिय । भट्ट कहै कर छग्गर [1]झल्लिय ॥
छं० ॥ ८१८ ॥

संभरि राव तमंकि रिसानों । में भ्रम काज धन्यौ कर पान्यों ॥
काल्हि सु भेस करों भुअपत्तिय । कंप न तोहि धरद्धर छत्तिय ॥
छं० ॥ ८१९ ॥

कन्ह का कविचन्द से बिगड़ पड़ना।

भट्ट सों कन्ह निपट्ट रिसानौ । तूं सामंत न तोर घरानौ ॥
तूं कवि देत असीसन छुट्टहि । सूर सीस दे सस्त्रन [2]जुट्टहि ॥
छं० ॥ ८२० ॥

कविचन्द का राजा को समझाना और सब सामंतों का कन्ह को मनाकर भोजन प्रसाद करना।

कवित्त ॥ [3]कपह जग्ग मंडयौ । न्योंति जम इंद्र बुलाइय ॥
दिग्गविजय तँह करत । फौज लै रावन आइय ॥
मरन अचिंत्यौ जानि । चिंत कायरपन आदर ॥
वायस करकोटिया । रूप धरि उग्गरि दादुर ॥
दिय श्राद्ध पिंड जम कग्ग कौं । रंग क्रकेटक सुरपती ॥
मंडिक मद्ध गन्यौ वरुन । चंद कहत सुनि नरपती ॥
छं० ॥ ८२१ ॥

(१) ए. कृ. को.-घल्लिय । (२) मो. छुट्टहि । (३) कृ.-कगह, को.-कवह ।

अरिल्ल ॥ तब परिहार वीर वीरन वर । भोजन सद्द सवै कीनौ नर ॥
राव गोयंद इंद बर उट्ठे । धरिय कन्ह निज बाह स रुट्ठे ॥ छं० ॥ ८२२॥

सब का शयन करने जाना।

तो लगु भोजन भष्य संपज्जे । हसि करि मंन सुचेतन लज्जे ॥
हो सब साथ सनाथ सयानौ । सूर कहै कब होइ बिहानौ ॥
छं० ॥ ८२३ ॥

वार्ता ॥ जब लगि मिष्टान पान सरसे । तब लगि अंबर [1]दिनयर दरसे ॥

पृथ्वीराज का निज शिविर में निःशंक होकर सोना।

दूहा ॥ भइत निसा दिन मुदित बिनु । उड़पति तेज बिराज ॥
कथक साथ कथ्थहि कथा । सुष्प सयन प्रथिराज ॥ छं० ॥ ८२४ ॥
अदरस दिनयर देषि करि । तलप प्रजंक असंक ॥
मनहु राज जोगिनिपुरह । सोभै सेंन निसंक ॥ छं० ॥ ८२५ ॥
कोतर रत रत चित्त तह । मानों यान विहंग ॥
जुवती जन मन कुमुद बसि । मनु मनि सथ्थ भुअंग ॥ छं० ॥ ८२६ ॥

जैचंद का कवि को नाटक देखने के लिये बुलवाना।

ओसर पंग सुरत्त किय । चंद सुजानह भट्ट ॥
कहै जाय जुग्गिनि पुरह । नव रस भास सुषट्ट ॥ छं० ॥ ८२७ ॥
और प्रपंच विरंच कौ । निजरि पंग लगि कूर ॥
साच दिषावन राग रँग । चंद बुलाय हजूर ॥ छं० ॥ ८२८ ॥
जाम एक निसि बीति वर । बोले भट्ट नरिंद ॥
ओमर पंग नरिंद कौ । देषहु आय कविंद ॥ छं० ॥ ८२९ ॥
एकाकी बोल्यौ सु कवि । ओसर देषन राय ॥
राज नींद मुक्यौ करत । पौरि संपतौ जाइ ॥ छं० ॥ ८३० ॥

(१) ए. कृ. को.-दिनरय।

नृत्यारंभ की मुद्रा वर्णन।

दूहा ॥ पुहपंजलि दिसि वाम कर। फिरि लग्गी गुरपाइ ॥
तरुनि तार सुर धरिय चित। धरनि निरष्पय चाइ ॥
छं० ॥ ८४५ ॥

मुरिल्ल ॥ सजि नग पातुर चातुर चल्ली। कैवर चंद चंद वर वुल्ली ॥
देषि सुवर ओपम [1]वर भल्ली। मदन दीप मालामजि चल्ली ॥
छं० ॥ ८४६

मंगल आलाप।

दूहा ॥ मंग प्रथम जंपं जपै। जै गजमुष अग्गजाइ ॥
सेत दंत पाठक उदै। सोभै पंगुर राइ ॥ छं० ॥ ८४७ ॥

वेश्याओं का नृत्य करना; उनके राग, बाज, ताल. सुर,ग्राम, हाव भाव आदि का और उनके नाट्य कौशल का वर्णन।

नराज ॥ उअं अलाप मद्धिता सुरं सु ग्रामपंचमं।
षडंग तप्प मूरछं मनुंत मान संचमं ॥
निसंग थारंत अलप्प जापते प्रसंसई।
दरस्स भाव नूपुरं इतन्न तान नेतई ॥ छं०। ८४८ ॥
सुरंसपत्त तंच कंठ[2]बोधि राग साभरं।
हहा हुहू निरष्षि तार रंभ चित्त ताहरं ॥
ततंग थेइ तत्तथेइ तत्तथे सुमंडियं।
थथुंगं थुंग थुंगथे विराम काम मंडयं ॥ छं० ॥ ८४९ ॥
सरग्गमप्प धुन्निधा धुनं धुनं निरष्पियं।
भवंति जोति अंग मानु अंग अंग लष्पियं ॥

(१) ए. कृ. को. सुर। (२) ए. कृ. को.-बोलि।

कलं कलं सु [1]सथ्थनं सुभेदनं मनंमनं।
रनक्कि झंकि नूपुरं बुलंत भंझनं झनं ॥ छं० ॥ ८५० ॥

थमंडि थारु घंटिका भमंति भेष रेषयौ।
[2]जुटंति घुंट केस पास पीत स्याह रेषयौ ॥
लजंति गत्ति तारया कटिं प्रमान कंटरी।
कुसम्मसार आउधं कुसुम्म ओड नंटरी ॥ छं० ॥ ८५१ ॥

उरंप रंभ भेष रेष सेषरं करं कसं।
तिरप्पि तिप्प सिप्पयौ सु देस दच्छिनं दिसं ॥
सुरंति संगि गातनी धरंति सासने धुने।
जमाइ जोग कट्टरी चिविद्ध नंच संपने ॥ छं० ॥ ८५२ ॥

तिरप्पि लेत [3]पातुरं सु चातुरं दिषावहीं।
कै अठ्ठ ग्रेह बीय चंद भोर कै अमावहीं ॥
छतीस राग बंधि तार बाल ता बजावहीं ॥
.... छं० ॥ ८५३

सु झम्म तार धी मृदंगचित्त बंध संचरं ॥
विरम्म काम धूव बंधि चंद्र ध्रूव उच्चरं ॥
समीप रथ्थ भेदयौ जु चित्त चित्त चोरई ॥
अनेक भंति चातुरी जुमन्न मेर डोरई ॥ छं० ॥ ८५४ ॥

सिंगार ते कलेवरं परस्सि उब्भ रावके ॥
सिंगार सोभ पातुरं कि [4]चातुरं सिंगार के ॥
उलट्टि पट्टि नाचनौ फिरद्दि चक्कि चाहनौ ॥
निरत्ति नेंन राषि जानि बंभ पुत्ति बाहनौ ॥ छं० ॥ ८५५ ॥

विसेष देस द्रुप्पदं वदन्न देंन राजयौ ॥
सु चक्र भेष चक्र दृत्ति बाल ता विराजयौ ॥
उरद्ध सुद्ध मंडली अरोह रोह चालिनं ॥
ग्रहंति मुत्ति दुत्तिमा मनों मराल मालिनं ॥ छं० ॥ ८५६ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-मथ्थनं। (२) ए. कृ. को.-जटंति।
(३) ए. कृ. को पातुरं। (४) ए. कृ. को.-पातुरं।

प्रवीन वान उद्धरी मुनींद्र मुद्र कुंडली ॥
प्रतष्षि भेष उद्धर्यौ सु भुम्मि लोइ षंडली ॥
तलं तलं सुताल ता मृदंग धुंकनें घने ॥
अपा अपा भनंत भे जपंत जान ज्यौं जने ॥ छं० ॥ ८५७ ॥

अलाष लाष लाष नेनयं न बेन भंपने ॥
नरे नरिंद मास मेस मेस काम सुप्पने ॥
.... । ... छं० ॥ ८५८

सप्तमी शनिवार के बीतक की इति।

दूहा ॥ जाम एक छिन [1]दान घट सत्तमि सत्तनिवार ॥
कहु कामिनि सुष रति समर। [2]न्निपनिय नीद निवार ॥छं०॥८५९

घटि त्रियाम घरियार बजि। ससि मिटि तेज अपार।
अकस अच्छ दिन सो तजौ। त्रिय रुठि निसि भरतार ॥छं०॥८६०॥

नृत्यकी (वेश्या) की प्रशंसा।

साटक ॥ सुष्षं सुष्ष मृदंग तत्त जघनं , रागं कला कोकनं ॥
कंठी कंठ सुभासने समजितं , कामं कला पोषनं ॥
उरभी रंभ कि ता गुनं हरहरी , सुरभीय पवनं पता ॥
एवं सुष्षह काम कुंभ गहिता , जय राज राचं गता ॥ छं०॥८६१॥

कांती भार पुरान यौविंगलिता , साषा न गलहस्थलं ।
तुच्छं तुच्छ तुरास लग्गि कमनं , कलि कुंभ निंदा दलं ॥
मधुरे माधुरयासि आलि अलिनं , अलि भार गुजारियं ॥
तरुनं [3]प्रात लुटीय पंगज जिया, राचं गता साम्प्रतं ॥
छं० ॥ ८६२ ॥

(१) ए. कृ. को.-दक्षिन (२) ए. कृ. छो.-न्निय तिय निंदनिवार।
(३) ए. कृ. को.-प्रान।

तिपहरा बजने पर नाच बंद होना, जयचंद का निज शयनागार को जाना और कवि का डेरे पर आना।

अरिल्ल ॥ भई भ्रम बेर अथवंत निसं। गछि चोर परद्दर कपट बसं ॥
झलि झालरि देवर सुष्ष नदं। भइ विप्र उचारिय बेद बदं ॥
छं० ॥ ८६३ ॥

दूहा ॥ गयौ चंद थानह न्रपति। मतौ पंग चितवार ॥
भट्ट सथ्थ चहुआन सत। बंधि दियौ करतार ॥ छं० ॥ ८६४ ॥
प्रातराव संप्रापतिग। जहं दर देव अनूप ॥
सयन करहि दरबार तहं। सत्त सहस अस भूप ॥ छं० ॥ ८६५ ॥
गत चिजाम राजन उठ्यौ। सीष दई कविचंद ॥
निसा जाम इक नींद किय। प्रात उठ्यौ जैचंद ॥ छं० ॥ ८६६ ॥
प्रापत चंद कविंद तहं। जहं ढिल्ली चहुआन ॥
जगि बरदाइ बर बुल्लै। बरबंधन सुरतान ॥ छं० ॥ ८६७ ॥

इधर पृथ्वीराज का सामंत मंडली सहित सभा में बैठना, प्रस्तुत सामंतों के नाम और गुप्तचर का सब चरित्र चरच कर जैचन्द से जा कहना।

भुजंगी ॥ सभा सोभियं राज चहुआन पासं। बिठे सूर सामंत रस बीर लासं।
सभा सोभियं सूर सूरं प्रमानं। तहां बैठियं सूर चौहान ध्यानं ॥
छं० ॥ ८६८ ॥
तहां बैठियं राइ गोयंद जूपं। जिनै मुग्गली बंध दिय हथ्थ भूपं ॥
भरं दाहिमौ सोभि नरसिंघ बीरं। जिनै पत्ति बंध्यौ षुरासान मीरं॥
छं० ॥ ८६९ ॥
सभा सोभियं सूर कूरंभरायं। जिनै आस हांसीपुरं जीति पायं॥
सभा मझ्झ सारंग चालुक्क मंड्यौ। मनों लाल मोतीन में मेर छंड्यौ॥
छं० ॥ ८७० ॥

सभा सोभियं सूर बघ्घेलरायं। जिनैं सेहरो स्वामि चित्तौ चढ़ायं॥
रजं राज पासार लष्ष' सलष्षं। जिनै बंधि गोरी सबै सेन भष्षं॥
छं० ॥ ८७१ ॥

सभा सोभियं राइ आलहन्न रायं। जिनै ठेलि ठट्ठा समुद्दं बहायं॥
सभा बीरचंदं सुचंदं पुंडीरं। जिनें प्रांन रक्कं सरद्दं गंभीरं॥
छं० ॥ ८७२ ॥

सभा सोभियं बीर भोहां प्रकारं। जिनैं देवगिरि सीस भिल्लै दुधारं॥
सभा धावरं सोभि नारेन बीरं। जिनै भंजियं मीर सुरतान तीरं॥
छं० ॥ ८७३ ॥

सभा सोभियं जावलौ जल्ह कातं। जिनै पेदि सत्रं ससी पल्ह जंतं॥
सबै सूर सामंत सभ में बिराजैं। जिनैं देषि ससि सरद की भांति लाजैं॥
छं० ॥ ८७४ ॥

चरं संभरी कथ्थ जंपै ननिंदं। इदं बैठियं भासि प्रथमीपुरंदं॥
ढुरै कनक सीसं सु चौंर जु दीसं। मनों उग्गयौ भान प्राची प्रदीसं॥
छं० ॥ ८७५ ॥

[1]सुनी पंग बीरं अबी रंति मिंटी। करे जोर जम्मं रह्यौ भान ब्यंटी॥
बरं बोलहौं दिष्ष बिहु जन्न एकं। जनों आरजं बार बर इंद मेकं॥
छं० ॥ ८७६ ॥

अरिल्ल ॥ गयौ दूत सब देषि चरित्तं। पंग अग्गि जंपी बर तत्तं॥
भट्ट जानि जिन भुल्लो चंदं। बैठो जेम प्रथीपुर इंदं॥छं०॥८७७॥

दूत के बचन सुनकर जैचन्द का प्रसन्न होना और शिकारी तैयारी होने की आज्ञा देना।

कवित्त ॥ श्रवन सुनिग कमधज्ज। पंग फुल्ल्यौ बर भासं॥
प्रात फुल्लि सतपच। संझ कामोद प्रकासं॥
[2]बार रूप भौ बीर। भीम दुस्सासन बारं॥
द्रोन कज्ज हनुमान। कन्ह गोधन्न उपारं॥

(१) ए. कृ. को.-सुनी पग बीरं अपं रीति मिट्टी"। (२) मो -वीर

उइयं चंद चंदहति सम । दंद पुब्ब भंजन सु दह ॥
आषेट हुक्कम दै पुब्ब दिसि। चंद समप्पन दान बह ॥ छं० ॥ ८७८ ॥

जैचन्द की शिकारी सजनई की शोभा वर्णन ।

आषेटक पहुपंग । बाजि नीसान प्रथम बर ॥
हिंदवान अरु असुर । गयरु सज्जीय [1]धरड्डर ॥
दुतिय बज्जि नीसान । सबै भृत हैबर सब्बर ॥
मग्ग अट्ठ पय वांम । राज कमधज्जह समभर ॥
बज्जै निसांन न्रपतिय चढ़ौ । पंच सबद बाज्जिय बजि ॥
सामंत सूर बर भरि भरिय। करह न दंद नरिंद कजि॥ छं० ॥८७९॥

दूहा ॥ आषेटक पहु पंग क्रत । चढ़िग लष्य बजि तूर ॥
आज बीर कमधज्ज सौ। इंद फुनिंद न सूर ॥ छं० ॥ ८८० ॥

क्रम्यौ राज जैचंद बर। जहां चंद प्रथिराज ॥
सुभि ग्रहगन मध्ये सवित। अदभुत चरित विराज ॥ छं० ॥८८१ ॥

कवित्त ॥ नग सु तुल्य चलि नाग। मान सेना कितीस तर ॥
मनहु काम कर सज्जि । रंग चवरंग [2]चंग चर ॥
अदभुत चरित विराज । नग्ग जर बंग विराजत ॥
अंतरष्थि हय [3]हथ्थि । मनहुँ पातुर तिय साजत ॥
दरबार उतरि भयभीर भर । सकल सोक बर इंद कों ॥
जैचंद राज विजपाल [4]सुअ । विदा करन कविचंद कों ॥
छं० ॥ ८८२ ॥

वृद्ध नाराच ॥ चढ्यौ नरिंद पंग राइ बाजि बीर सद्दयं ।
अनेक राइ राज सज्जि द्दि [5]जान नद्दयं ॥
कनंक हथ्थ पच सुलक्करीन कंध्रियं ।
मनों समंद उड्डि मोर बीर बोझ क्रम्मियं ॥ छं० ॥ ८८३ ॥

---

(१) मो. वर पर ।
(२) मो.-चंक, चक्क ।
(३) मो.-हच्छि ।
(४) ए. कृ. को.-तन ।
(५) को.-जाम ।

सभा सोभियं सूर बघ्घेलरायं। जिनै सेहरो स्वामि कित्ती चढ़ायं॥
रजं राज पामार लष्यं सलष्यं। जिनै बंधि गोरी सबै सेन भष्यं॥
छं० ॥ ८७१ ॥

सभा सोभियं राइ आल्हन्न रायं। जिनै ठेलि ठट्टा समुद्दं बहायं॥
सभा बीरचंदं सुचंदं पुंडीरं। जिनें प्रांन रक्कं सरद्दं गंभीरं॥
छं० ॥ ८७२ ॥

सभा सोभियं बीर भोहां प्रकारं। जिनैं देवगिरि सीस झिल्लै दुधारं॥
सभा धावरं सोभि नारेन बीरं। जिनै भंजियं मीर सुरतान तीरं॥
छं० ॥ ८७३ ॥

सभा सोभियं जावलौ जल्ह कातं। जिनै पेदि मन्नं ससी पल्ह जंतं॥
सबै सूर सामंत सभ में बिराजैं। जिनै देषि ससि सरद की भांति लाजैं॥
छं० ॥ ८७४ ॥

चरं संभरी कथ्थ जंपै ननिंदं। इदं बैठियं भासि प्रथमीपुरंदं॥
ढुरै कनक सीसं सु चौरं जु दीसं। मनों उग्गयौ भान प्राची प्रदीसं॥
छं० ॥ ८७५ ॥

[1]सुनी पंग बीरं अबी रंति मिंटी। करे जोर जम्मं रह्यौ भान ब्यंटी॥
बरं बोलहीं दिष्ट बिहु जन्न एकं। जनों आरजं बार बर इंद मेकं॥
छं० ॥ ८७६ ॥

अरिल्ल ॥ गयौ दूत सब देषि चरित्तं। पंग अग्गि जंपी बर तत्तं॥
भट्ट जानि जिन भुल्लो चंदं। बैठौ जेम प्रथीपुर इंदं॥ छं०॥८७७॥

दूत के बचन सुनकर जैचन्द का प्रसन्न होना और शिकारी तैयारी होने की आज्ञा देना।

कवित्त ॥ श्रवन सुनिग कमधज्ज। पंग फुल्ल्यौ बर भासं॥
प्रात फुल्लि सतपत्र। संझ कामोद प्रकासं॥
[2]बार रूप भौ बीर। भीम दुस्सासन बारं॥
द्रोन कज्ज हनुमान। कन्ह गोधन्न उपारं॥

(१) ए. कृ. को. सुनी पंग बीरं अपं रीति मिट्टी"। (२) मो.-बीर

उड्डरं चंद चंदहति सम । दंद पुब्ब भंजन सु दह ॥
आषेट हुकम दै पुब्ब दिसि। चंद समप्पन दान बह ॥ छं० ॥ ८७८ ॥

जैचन्द की शिकारी सजनई की शोभा वर्णन ।

आषेटक पहुपंग । बाजि नीसान प्रथम बर ॥
हिंदवान अरु असुर । गयरु सज्जीय [1]धरब्बर ॥
दुतिय बज्जि नीसान । सबै भृत हैबर सब्बर ॥
मग्ग अठ्ठ पय वांम । राज कमधज्जह समभर ॥
बज्जै निसांन त्रपतिय चढ़ौ । पंच सबद बाज्जिच बजि ॥
सामंत सूर बर भरि भरिय । करह न दंद नरिंद कजि ॥ छं० ॥ ८७९ ॥

दूहा ॥ आषेटक पहु पंग कृत । चढ़िग लष्य बजि तूर ॥
आज बीर कमधज्ज सौ। इंद फुनिंद न सूर ॥ छं० ॥ ८८० ॥

क्रम्यौ राज जैचंद बर। जहां चंद प्रथिराज ॥
सुभि ग्रहगन मध्ये सवित। अदभुत चरित विराज ॥ छं० ॥ ८८१ ॥

कवित्त ॥ नग सु तुल्य चलि नाग। मान सेना कितीस तर ॥
मनहु काम कर सज्जि । रंग चवरंग [2]चंग चर ॥
अदभुत चरित विराज । नग्ग जर बंग विराजत ॥
अंतरथ्थि हय [3]हथ्थि । मनहु पातुर तिय साजत ॥
दरबार उतरि भयभीर भर । सकल सोक बर इंद कों ॥
जैचंद राज विजपाल [4]सुअ । विदा करन कविचंद कों ॥
छं० ॥ ८८२ ॥

वृद्ध नाराच ॥ चढ्यौ नरिंद पंग राइ बाजि बीर सद्दयं ।
अनेक राइ राज सज्जि द्दि [5]जान नद्दयं ॥
कनंक हथ्थ पच सुलक्करीन कंक्रियं ।
मनों समंद उद्धि मोर बीर बोझ क्रम्मियं ॥ छं० ॥ ८८३ ॥

---

(१) मो -अर पर ।
(२) मो -चंक, चक्क ।
(३) मो.-हाच्छि ।
(४) ए. कृ. को.-तन ।
(५) को.-जाम ।

सुपंग अंग बंधि बीर बार कंद्रपं कयं।
रजंत अग्ग एक सौ ज दंति पंति चोरयं ॥
तिमह रह हेम पट्ट घट्ट यट्ट फेरयं।
सुभंत छत्र राज सीस हेम दंड मेरयं ॥ छं० ॥ ८८४ ॥
धनुष्पधार मीर बंद दुष्ट [1]अप्प दिप्पयं।
रमंत तत्त बेध साम बान ते विसप्पयं ॥
सुदुंद सज्ज हथ्थ रथ्थ पट्ट पोत चल्लयं।
मनौं करीय नाग अग्ग पट्ट कांम षुल्लयं ॥ छं० ॥ ८८५ ॥
दसं दिसान कंपवै निसान राज संभरै।
सुन्यौ जू सूर लोक वाम पुंज तेज विफ्फुरै ॥
.... छं० ॥ ८८६ ॥

जैचंद का सुखासन (तामजाम) पर सवार होना।

दूहा ॥ मिसि बज्जहिं गंगा बरन। दान कवी पति सेव ॥
चढ़त सुषासन संमुहौ। जहं सामत न्रपेव ॥ छं० ॥ ८८७ ॥

पंगराज का मंत्री को बुलाकर शिकार की तैयारी बंद करके कवि की विदाई के विषय में सलाह करना।

कवित्त ॥ बोलि सु मंचिय पंग। मुक्कि आषेट राइ बल ॥
भट्ट किति चल चित्त। भट्ट निस चलरु किति चल ॥
भेद मंच दिय दान। दंद दालिद कवि भग्गिय ॥
सवें मनोरथ भग्गि। सुष्प आसुष्प विलग्गिय ॥
जाचै न दून हिंदून दुह। कै कवि भग्गौ कंक बल ॥
संभारै बाल संभरि धनी। जम्म चंद भग्गौ जलल ॥ छं० ॥ ८८८ ॥
*चिंति चित्त कमधज्ज। दान बेताल सु विक्रम ॥
अद्ध लप्प मन कनक। अंक मेटन बिधि अक्रम ॥

(१) ए. अप्प।
* यह छन्द मो प्रति में नहीं है।

मुत्तिय मन इकतीस । दुरद मदगंध प्रकासं ॥
वारंगन इकतीस । रूप लावन्य निवासं ॥
मंत्री सुमंच इह कुमति किय । बरजि राइ जैचंद कौं ॥
पन किती कहरि क्रप्पन्न होइ । इतिक विदा सजि चंद कौं ॥
छं० ॥ ८८९ ॥

मंत्री सुमंत का अपनी अनुमति देना ।

हनूफाल ॥ सो मंच मंचिय तब्ब । करि अरज फेरि सु कन्न ॥
दहतीय सजि गजराज । सुनि गगन मंद अवाज ॥ छं० ॥ ८९० ॥
सम इंद्र आसन जूप । चलि नाग नाग सरूप ॥
घन चुअत मद परि अंत । गिरि राज झरनि झरंत ॥ छं०॥ ८९१ ॥
जटि कनक [1]काज सुरंग । सम बसति सोभ दुरंग ॥
सत उभय तुरिय सु तेज । दुअ अंस वंस विरेज ॥ छं० ॥ ८९२ ॥
फरकंत चातुर जेम । असमान सज्जत तेम ॥
नग जीन करित अमोल । उत साज सज्जित तोल ॥ छं० ॥८९३॥
लगि लाग लेत ललित्त । गति अंतरिच्छ कलित्त ॥
रस उभै बानी हेम । सतमन्न तुल्लिय तेम ॥ छं० ॥ ८९४ ॥
द्वै लाष पूरि प्रमान । गिरिराज उदर समान ॥
मनि रतन मोल अनंत । गनि होइ गनिकन अंत ॥
छं० ॥ ८९५ ॥
फिरि पुरष कीनी कोस । सकलाति फिरगरु तोस ॥
जरबाफ कसब जराव । उद्दोत करन प्रभाव ॥ छं० ॥ ८९६ ॥
वहु जात चामर रूप । सिर ढुरै जानि सुभूप ॥
जिन चरचि वहुत सुवास । कलि कसब सवित उहास ॥
छं० ॥ ८९७ ॥
जैचंद इंद विराज । हैगै सुघन घन साज ॥
कविचंद कारन इंद । सम दैन चलि जैचंद ॥ छं० ॥ ८९८ ॥

(१) ए. कृ. को.-साज ।

कविचन्द की विदाई के सामान का वर्णन।

कवित्त ॥ तीस सज्जि गजराज। गगन गर जार मंद करि ॥
हूै सैं चपल तुरंग। चरन लग्गै धरनि पर ॥
हाटक षोडस बानि। मनहू सत केवल तोलिय ॥
रतन अमोलक मुत्ति। परपि ते गंठहि बंधिय ॥
मकलाति फिरंग चामर चरचि। कसब सबें विधि जर जरिय ॥
जैचंद इंद वित विविध लै। विदा करन चलि चंद किय ॥
छं० ॥ ८९९ ॥

दूहा ॥ तीस करिय मुत्तिय सघन। द्वै सैं तुरंग बनाय ॥
द्रव्य बद्दर बहु संग लिय। भट्ट समंपन जाय ॥ छं० ॥ ९०० ॥

पंगराज के चलते समय असकुन होना।

कवित्त ॥ भट्ट समंषन जात। राज नट बिंद प्रबंधी ॥
सीस बैंन नहि चित्त(1)। मभक्ष हक्कत सालष्षी ॥
सिभू(2) भेस अनंत। रुंड माला रचि गुंथी ॥
षंड षंड अंगार। मच जूरी तत रुंथी ॥
उष्षई कंभ षग मग्ग करि। गिद्धि पष फुनि फुनि करैं ॥
जनय चोट धाराहरह। रस प्रसिद्ध बीरह भिरै ॥ छं० ॥ ९०१ ॥

दूहा ॥ कुरलंती त्रिलिहय गयन। चंच बिलग्गो सप्प ॥
वाम अंग मंजार भय। चक्रित चिंत न्टप अप्प ॥ छं० ॥ ९०२ ॥

पंगराज का चिंता करके कहना कि जिस प्रकार से शत्रु हाथ आवे सो करो।

बोलि सबन्नी सुनि श्रवन। सुर अन भग अकथ्य ॥
धन्नि भ्रंम भरि कित्ति जन। ज्यों अरि आवै हथ्य ॥ छं० ॥ ९०३ ॥

---

(१) मो.-चित। (२) मो.-सिभ सेस।

मंत्रियों की सलाह से पंगराज का कवि के डेरे पर जाना।

भुजंगी॥ ननं मांनियं जानियं देव भंती। गयं [1]चंद न्रप ग्रेह देषै बिरंती॥
गतं सायरं साम गभीर दालं। सद जा प्रवालं पवनं [2]प्रचालं॥
छं०॥ ९०४॥

बलं तेज केली ननं जाहि कालं। सुरज्जं समं पाइ संचार आलं॥
बरं लावनं हंदियं दिग्ग पालं। बलीनं बलीनं भरं विभ्र बालं॥
छं०॥ ९०५॥

ब्रह्मंड विजै थभ करि हथ्थ बज्रं। पगं जानि पारथ्थ भारथ्थ सज्जं॥
दिदी असु दिट्ठी सबैं सथ्थ रारी। धरी सथ्थ नंदी संसारी सुभारी॥
छं०॥ ९०६॥

दिपी पंग जैचंद इंदं परष्षी। तहांईय आसीस बरदाय भष्षी॥
छं०॥ ९०७॥

जैचन्द का शहर कोतवाल रावण को सेना सहित साथ में लेना।

कवित्त॥ जीत मत्त पहुपंग। बोलि राठौर सुबीरं॥
सास दान करि भेद। डंड बंध्यौ अरि मीरं॥
छल बल कल संग्रहै। दई दुरजन दावानल॥
भट्ट थान आहुट्टि। पंग बुट्ठे सारह जल॥
चतुरंग लच्छि लीजै सघन। दै दुवाह घायन चढ़हि॥
सब सथ्थ सथ्थ प्रथिराज बल। सुनौ सुभर सो बुद्धि ढ़हि॥
छं०॥ ९०८॥

रावण के साथ में जाने वाले योद्धाओं का वर्णन।

(१) ए. कृ. को.-गयंदंच। (२) ए. कृ. को.-प्रवालं।

दूहा ॥ अगि मोकलि रावन न्टपति । हक्कान्यौ कविराज ॥
भट्ट हट्ट मोकलि सु वर । कंक विसाहन काज ॥ छं० ॥ ९०९ ॥

कवित्त ॥ मेर उच्चवहि वथ्थ। देय तन वज्र पात कर ॥
भषै च्यार अज इक्क । नेर सम क्रंति देह धर ॥
हठिय अग्ग रिन परहि । स्वामि स्वामित्तन चुक्कहि ॥
पर नारि पर मुष्प धर। धरा धीर सु रप्पहि ॥
कर चलहि अप्प पय अचल बर। रावन सथ्थ सु मंडि लिय ॥
दिष्षिय सु भंति इह कव्वि करि । मनुं सरद अभ्भ ससि कुंडलि
छं० ॥ ९१० ॥

रावण का कवि को जैचन्द की अवाई की सूचना देकर नाका जा बांधना।

दूहा ॥ सवैं क्रूर ग्रह पंग बर । एकादस न्टप राह ॥
दुष्ट मंत्र दानह करिग । भट्ट सुनंदन राहु ॥ छं० ॥ ९११ ॥
गयौ रावन मैलान बर । कपट चित्त मुह मिट्ठ ॥
दान समप्पन भट्ट कों। चित बंधन बर दिट्ठ ॥ छं० ॥ ९१२ ॥

पंगराज के पहुंचने पर कवि का उसे सादर आसन देना और उसका सुयश पढ़ना।

कवित्त गयौ रावन मेल्हान । चंद बरदिया [1]समष्पन
देषि सिंघासन सथ्यो। पास पारस्स इंद्र जनु ॥
कवि आदर बहु कियौ। देषि कनवज्ज मुकट मनि ॥
इह ढिल्लिय सुर दत्त । बियौ नहि गनै तुभ्भ गिनि ॥
थिरु रहै थवा इत वज्र कर । छंडि सिकारहि छिन कुरहि ॥
[2]जिहि असिय लष्प पलानि यहि । पान देहि दिढ हथ्थ गहि ।
छं० ॥ ९१३ ॥

(१) मो.-समप्पन । (२) मो. निसि ।

पान देहु दिढ़ हथ्थ। परिस पांवास पंग वर॥
जा अग्गै अस तेज। तेज कंपहि जु नाग नर॥
देषि प्रथीपुर उदै। सूर सरनै गौ तंतक॥
बर कंपै द्रिगपाल। चित्त चंचल गत्ती भ्रक॥
अघ हरनं किरन किरनो प्रचंड। देखि दून गति देषियै॥
अप्पि बर पान पारस सुगत। दुती परस सो लिष्षियै
छं० ॥ ९१४ ॥

पान धार दै पान। भट्ट न्त्रिप जानि मंडि कर॥
नर नरिंद जैचंद। जग्गि सम मंडि देव बर॥
इंद्र मौज जच्चन [1]विसा। सह होय जचाइय॥
१ .... । . .... ॥
[2]त्रय हथ्थ लंक उप्पर न्त्रपति। तरन हथ्थ कमधज्ज कहि॥
आदि करि देव दानव सुरह। बलि जांच्यो बावन जुजहि॥
छं० ॥ ९१५ ॥

खवास वेष धारी पृथ्वीराज का जैचन्द को बाएं हाथ से पान देना और पंगराज का उसे अंगीकार न करना।

दूहा ॥ पान देइ दिढ हथ्थ गहि। बर करि हथ्थ दिवंक॥
मनु रोहिनि सो मिलिग ज्यों। बीय उदित्त मयंक॥ छं० ॥ ९१६ ॥
लिय सु पान भुअ राज रुष। मुखप्रसन्न [3]मन रोस॥
दिषत न्त्रपति चल चिंत किय। पुन्न प्रसन्नौ दोस॥ छं० ॥ ९१७ ॥
करै न कर प्रथिराज तर। धरै न कर जैचंद॥
उभय नयन अंकुरि परिग। ज्यौं जुग मत्त गयंद॥ छं० ॥ ९१८ ॥
[4]सुनि तमोर पट्टिय सुकर। मुष उत करि दिठ वंक॥

(१) मो विमाल। (२) मो.-त्रय लोक हथ्थ लंक उद्धर नृपति।
(३) ए.कृ. को.-मुन मुन। (४) ए. कृ. को.-मुनि।

जनु छैलनि कुलटा मिलै। बहुत दिवस [1]रस पंक ॥ छं० ॥ ९१९
राज पान जब अप्पही। पंग न मंडै हथ्थ ॥
रोस न्टपति जब चिंति मन। कही चंद तब गथ्थ ॥ छं० ॥९२०

कवि का श्लोक पढ़ कर जैचन्द को शान्त करना।

श्लोक ॥ तुलसीयं विप्र हस्तेषु। विभूति श्रिय जोगिनां ॥
तांबूलं चंडि हस्तेपु। भयो दानेव आदरं ॥ छं० ॥ ९२१ ॥

जैचन्द का पान अंगीकार करना परंतु पृथ्वीराज का ठे कर पान देना।

चौपाई ॥ भट्ट जानि करि मंग्यौ राय। उहि तंमोर दियौ न्टप चाइ ॥
ठट्टै पानि दियौ नित ठेलि। मनों वज्जपति वज्जह मेलि ॥छं०॥९२२

पृथ्वीराज का जैचंद के हाथ में नख गड़ा देना।

दूहा ॥ पानि पान करिकें दियौ। कमधज्जह प्रथिराज ॥
चल्यौ रकत कर पल्लवनि। ग्रह्यौ कुलिंगन बाज ॥ छं० ॥ ९२३ ॥
कर चंपे न्टप तास कर सारंग दिट्ठ सुचंग ॥
पानि प्रथीपति दब्बियौ। श्रोन चल्यौ नष संग ॥ छं० ॥ ९२४ ॥

इस घटना से जैचंद का चित्त चंचल हो उठना।

कवित्त ॥ पान धार दै पान। दिष्ट आरुहिय बंक वर ॥
एक थान द्वै सूर। तेज दिष्यौ कि सूर वर ॥
[2]बिहुन हथ्थ विभ्भरै। लाज संकर गर बंधिय ॥
अंष वह दिषि भट्ट। बीर भंजन सु बीर पिय ॥
निश्चल सु चित्त चहुआन कौ। चित निश्चल नन पंग वर ॥
लग्गौ सु पान न्टप वज्ज सर। पान धरे वर वज्ज [3]सर ॥
छं० ॥ ९२५ ॥

दूहा ॥ प्रथमहि सभा परष्षयौ। पानधार नहि भट्ट ॥
न्टप कविथान सपत्तयौ। तब परषयौ निपट्ट ॥ छं० ॥ ९२६ ।

(१) मो -रिम। (२) ए. कृ. को. बहुन। (३) ए. कृ. को -कर।

भुअ बंकी किय पंग नृप। अप्पि हथ्थ तंमोर ॥
मनहु बज्रपति वज्र धर। सब अप्पौ तिहि जोर छं० ॥ ९२७ ॥

जैचन्द का महलों में आकर मंत्री से कहना कि कवि के साथ का खवास पृथ्वीराज है उसको जैसे बने पकड़ो।

कवित्त ॥ गहि कर पान सु राज। फिर्यौ निज पंग ग्रेह वर ॥
सोमंचिक परधान। बोल उच्चरिय क्रोध भर ॥
गहौ राज संभरि नरेस। सामंत अंत रिन ॥
मिटै बाल उर आस। आस जीवन सु मिटै तिन ॥
बोलिय सुमिच कमधज्ज बर। छग्गर भट्ट न पृथु गहन ॥
भृत भ्रात तात सामंत सुत। छलन काज पट्टिय पहन।
छं० ॥ ९२८ ॥

मंत्री का कहना कि पृथ्वीराज खवास कभी न बनेगा यह सब आपके चिढ़ाने को किया गया है।

दूहा ॥ छलन काज पट्टिय पह न। मिलिन छ्म्म दरबार ॥
पान भट्ट पृथु किम ग्रहै। नृप बर सोचि विचार छं० ॥ ९२९ ॥

कवित्त ॥ नृप बर सोचि विचारि। संग सुझ्झै बरदाइय ॥
अवधि बसीठ रु भट्ट। बंस नृप लगै बुराइय ॥
इह कलि कित्ति नरिंद। रज्ज अपजस हुअ ढंकन ॥
दिष्टमान बिनसिहै। लग्गि अंमर कुल अंकन ॥
जुग्गिनि समध्य जौ इन हए। तौ सब भृत गिनि मारियै ॥
रिधि मच राइ राजन सुनौ। विप्र भट्ट नन टारियै ॥ छं०॥ ९३०॥

जैचन्द का कवि को बुला कर पूछना कि सच कहो तुम्हारे साथ पृथ्वीराज है या नहीं।

चौपाई ॥ टरिय राज उर क्रोध विचारिय। बरदाई मिथ्या न उचारिय ॥
फिरि जैचंद पिथ्थ यह आयौ। निज कर [1]रावन भट्ट बुलायौ ॥
छं० ॥ ९३१ ॥

(१) मा.-राव सुभट्ट।

कवित्त ॥ अप्पि पान करि मान । नाथ कनवज्ज अप्प कर ॥
दिल्लीवै चहुआन । तास वर भट्ट सिद्धि हर ॥
अमर नाग नर लोक । जास गुन ज्ञान ग्यान वर ॥
आदि बध मुनिवर । प्रबंध षट भाष भाव भर ॥
नव रस पुरान नव दून जुत । चतुर देह चातुर सु तप ॥
रष्यौ न राज अप्रछन्न कवि । कहत तत्त कनवज्ज न्रप ॥
छं० ॥ ९३२ ॥

चौपाई ॥ बोलो भट्ट सु मत्ति विचार । किन सिर आतपत्र आधार ॥
जौ प्रथु ह्वै तौ हनों तलच्छिन । नहिं तुझ्झ है गै [1]देउ अप्पि घन॥
छं० ॥ ९३३ ॥

कवि चंद का स्वीकार करना कि, पृथ्वीराज हैं और साथ वाले सब सामंतों का नाम ग्राम वर्णन करना।

दूहा ॥ पद्धरि छंद सु चंद कहि । सिंघासन प्रथिराज ॥
कन्ह सु दिष्षिन जन्ह गिरि । निड्डर वाम विराज छं० ॥ ९३४ ॥

पद्धरी ॥ बैठो [2]सुभट्ट आरोहि पिट्ठ । तिन ढिगह सोभ इंद्रह वयट्ठ ॥
छत्रह उतंग चामर बइंझ । कण्णह सरूप फुल्लीत संझ ॥छं०॥९३५॥
डोलीय पच आरोहि तिथ्थ । तिन मझ्झ वयठ निड्डुर समथ्थ ॥
बल कन्ह देषि पट्टी आरोहि । कौरवह पत्ति कर्नह समोहि ॥
छं० ॥ ९३६ ॥

पुच्छै सु बत्त कनवज्ज राइ । देषेव रूप प्रज्जलित लाइ ॥
दामित्त रूप सामंत देषि । लिन्नौ सु ध्रंम जम्मह स-लेष ॥
छं० ॥ ९३७ ॥

कन्हा नरिंद चहुआन बंक । पट्टनह राव मार्‍यौ जु कंक ॥
गोयंद राव गहिलौत नेस । जिन दोय फेर गज्जन गहेस ॥छं०॥९३८॥
जैतह पमार अब्बू नरेस । छत्रह धरंत मध्धै असेस ॥
पंडियौ राय बंध्योति साष । बलबंधि साह दस सहस लाष ॥
छं० ॥ ९३९ ॥

(१) ए. कृ. को.-दिया। (२) ए. कृ. को.-जु।

हरसिंघ नाम बर सिंघ बीर । तिन हथ्थ जुट्टि षचवट्ट नीर ॥
वालुका राव सध्यौ सु पंग । संभरिय राय झाला प्रसंग ॥
छं० ॥ ९४० ॥

विंझ राज देषि चहुआन रूप । जिन भरिय लष्ष द्रव्यान कूप ॥
परमाल देषि चंदेल राज । बंधिया राय द्रव्यान काज ॥
छं० ॥ ९४१ ॥

बारड़ सु राव अधिपत्ति सेन । तिन चढ़त लग्गि वह उड्डि रेन ॥
अचलेस नाम भट्टी सु संध । मुरधरह राइ पडिहार बंध ॥
छं० ॥ ९४२ ॥

परिहार षीप सामंत सुद्ध । पतिसाह बंधि लीयौ अरुद्ध ॥
निढुरह राय अवनी अकंप । गजनेस राइ ज्वाला तलंप ॥ छं० ॥ ९४३ ॥

तोंवर पहार अवनी सु जोर । बधयौ राइ कन्रा समोरि ॥
कूरभ राव पज्जून बीर । सद्धये जेन इक लष्ष मीर ॥ छं० ॥ ९४४ ॥

नरसिंघ एक नागौर पत्ति । रिनधीर राज लीयै जुगत्ति ॥
परमार सलष जालौर राह । जिन बंधि लिद्ध गजनेस साहि ॥
छं० ॥ ९४५ ॥

कंगुरौ देस दल लीन ढाहि । कीनी सु एक षिच वट्ट राह ॥
परमार धीर रिनधीर सथ्थ । मेवात बंधि मुग्गल अकथ्थ ॥
छं० ॥ ९४६ ॥

जद्दव सु जाम षीची प्रसंग । लीनें सु देस अवनी पुलिंग ॥
हाहुलिराय कंगुर नरेस । लीए सु सत्त पतिसाह देस ॥
छं० ॥ ९४७ ॥

जंघार भीम उड़गन सु सोह । रिन जुद्ध बीर संकर अरोह ॥
सारन राइ मोरी भुआल । कट्ठिया राइ जिन किद्ध काल ॥
छं० ॥ ९४८ ॥

तेजल्लह डोड परिहार रान । भिड़ एक तेक वंदै सु भान ॥
गुजरात धनी सागौत गौर । आरनि सु माहि वंधंत मौर ॥
छं० ॥ ९४९ ॥

परिहार एक तारन सुरष्प। कर सलय लोय सेना समष्प॥
वारड़ सुधीर सहसौ करन्न। वरियाति वीस हुत्र छिन्न भिन्न॥
छं० ॥ ६५० ॥

चहुआन एक अततार रुप। कालिंज राइ वंध्यौ अनूप॥
बलिराइ एक भारथ्थ भीम। कूरंभ राव चंपेव सीम॥छं०॥६५१॥
भोंहा चंदेल जिन बंध राज। पानीय पंथ प्रथिराज काज॥
गुज्जरह राम धूवत समान। मारयौ जेन आलील पान॥
छं० ॥ ६५२ ॥

चंदेल माल यट्टा अरोह। साधियौ वीर जनचंद मोह॥
रस सूर रोह मेरह समान। जिन हेम प्रवत लिय जोर पान॥
छं० ॥ ६५३ ॥

मंडलीक राव वघ्घह अरोह। आवद्ध एक चिसूल सोह॥
पूरन्न माल षल हंड षेत। जिन सूर दीन सत अश्वमेत॥छं॥६५४॥
धावरह धीर सामंत राज। जिन जीव एक प्रथिराज काज॥
हाडौ हमीर सथ्थें कुलाह। बंधयौ जेन भिरि पातिसाहि॥छं॥६५५॥
रावत्त राम सामंत सूर। जिन द्रिग्ग देषि नट्ठे करूर॥
जावलो जल्ह रिनतूर बज्जि। लिय बंधि जेन इकतीस रज्जि॥
छं० ॥ ६५६ ॥

चालुक्क एक भारो जु सोह। लीयें जु फिरै इक सहस लोह॥
बग्गरी बघ्घ षेता षंगार। रिनथंभ तेन करि मार मार॥ ६५७॥
दाहिम सुभट्ट संग्राम धाम। मारयौ वरुन करुना सु काम॥
मंडलीक [1]कंकवे सेन चंद। बंधयौ जेन भीमह नरिंद॥छं०॥६५८॥
परमार सूर सामल नरेस। रिन मंझ अटल दल असहेस॥
परमार कनक पछवान लीन। प्रथिराज ग्राम दस सहस दीन॥
छं० ॥ ६५९ ॥

संजम हराय वर जुद्ध नेस। षोडस्स दान दिय वाल वेस॥
चाटौ जु टांक बैठौ नरिंद। देषंत जानि धुत्र रूप इंद॥ छं०॥ ६६०॥

(१) ए. कृ. को.-कंसवे।

विरसन्न इसौ चाटंत सेन। रिन जुवत सेन उड्डंत रेन ॥
साषुलौ सहस मलनेत बंध। दस सहस ग्राम पट्टैति बंध ॥
छं० ॥ ९६१ ॥

विक्रमादित्य कमधज्ज राइ। जिन देस भोग लीयात नाय ॥
भुज राज सुभट दो सहस सेन। बंधिया राइ अवधूत तेन ॥
छं० ॥ ९६२ ॥

मोरीति सुभट सादल नरिंद। कंठिया राव वासीति हिंद ॥
बघेल सूर सोहंत सेन। लिन्नीय षग्ग बल दष्षि नेन ॥
छं० ॥ ९६३ ॥

लंगरिय राव सथ्थह भुआल। अध देस दिद्ध व्याघात काल ॥
पुंडीर चंद सोहंत सथ्थ। किरनाल नेच कीनी अकथ्थ ॥
छं० ॥ ९६४॥

परिहार सुअन तारन सु सोह। देषंत अछर करि मोह सोह ॥
केहरिय मल्हनासह विधूस। बधनौर वास सत जाइ भूम ॥
छं० ॥ ९६५ ॥

हरिदेव सहस सामंत रूप। जद्दव सु जाज अवनी अनूप ॥
उहठी गंभीर सोहंत एह। रज रीति रूप रष्षीति रेह ॥
छं० ॥ ९६६ ॥

सामंत राइ पुहकर समथ्थ। जिन लीन दिल्लि जोधान कथ्थ ॥
दाहिमौ कन्ह समियान गट्ठ। बंधि लिय राय सोक तल वट्ठ ॥
छं० ॥ ९६७ ॥

चहुआन पंचाइन सहस सेन। चलंत सथ्थ उड्डंत रेन ॥
परिहार इसौ रिनधीर सोह। रिन चढ़ै जन्न जालिम लोह ॥
छं० ॥ ९६८ ॥

सामंत सित्त पंगुर नरेस। तिन पिट्ठ सूर सत्तह कहेस ॥
तिन पिट्ठ सूर सुभटह हजार। रिन जुद्ध करंतह मार मार ॥
छं० ॥ ९६९ ॥

सामंत एक वुंदह सु जत्त। उट्ठंत वीर घरि एक सत्त ॥

जुध करहि सूर धड़ मचहि सार। मस्तकहि पिट्ठ करै मार मार॥
छं० ॥ ९७० ॥

पंगुरै देपि चित चक्रित नाथ। असमान सीस लगि ढिल्ल नाथ॥
डेरौ सुदीन जयकोस माहि। जे लिए रखत उत्तंग माह॥
छं० ॥ ९७१ ॥

अनेक कलस अनेक रूप। रह वास थान तल उच्च सूप॥
कनवज्जराय तब उट्ठि चल्लि। रायान राय साषा न हल्ल ॥छं०॥९७२॥
दस लष्ष रष्षि चौकी भुआल। इंद्र रूप दरस सेवंत काल॥
प्रथिराज प्रात कीनौ पयान। दस लाष वींटि परि परस [1]भान॥
छं० ॥ ९७३ ॥

जैचन्द का हुक्म देना कि पड़ाव घेर लिया जाय, पृथ्वीराज जाने न पावे।

कवित्त॥ कहि सब कनवज राइ। भज्जि प्रथिराज जाइ जिन॥
असिय लष्ष हय दलह। षबरि किज्जै सु पिन्नषिन॥
हसिय सव्व सामंत। रोस प्रथिराज उहासै॥
मिलिय सेन रघुबंस। चंद तब भट्ट प्रगासै॥
इह दैत्य रूप जुध मंगिहै। आज नीक परतहं बहै॥
कनवज्ज नाथ मन चिंत इह। जुध अनेक बल संग्रहै ॥छं०॥९७४॥
पहचान्यौ जयचंद। इहत दिल्ली सुर लिष्यौ॥
नहिय चंड उनिहार। दुसह दारुन तन दिष्यौ॥
कर संज्यौ करिवार। कहै कनवज्ज मुकुटमनि॥
हय गय दल पष्परहु। भाजि प्रथिराज जाइ जिन॥
इत्तनौ सोच भुअपति उठ्यौ। सुनि नरिंद किन्नौ न भौ॥
सामंत सूर हसि राज सों। कहै भलौ रजपूत भौ॥ छं० ॥ ९७५ ॥

इधर सामंतों सहित पृथ्वीराज का कमरें कस कर तैयार होना।

(१) ए. कृ. को.-पसिमान।

धनि धनि धनि सामंत । सूर कहि राज इंद बर ॥
निरषि हरषि कर करषि । परषि कनवज्ज नाथ तर ॥
निरभै सोम सिंगार । करन कलहंत मंत मन ॥
नरनि नाह कन्हह कमंध । उच्चन्यौ बीर तन ॥
आभासि अवर आनन सुभट । थट्ट मंति चट्ठे चलन ॥
करि साथ तुरंगम सथ्थ भर । कसि ठट्ठे अप अप बलन ॥
छं० ॥ ९७६ ॥

दोनों ओर के बीरों की तैयारियां करना ।

रसावला ॥ उठ्यौ पंग राजी, रवी तेज साजी । उठे बीर सूरं, छछोह सभीरं ॥
छं० ॥ ९७७ ॥

भृंगी राज राजी, सुराजी बिराजी । चिह्न पास साजी, अरी दोस गाजी ॥
छं० ॥ ९७८ ॥

दोऊ रोस जग्गी, प्रलै जानि अग्गी । . . .... ॥ छं० ॥ ९७९ ॥

पृथ्वीराज के सामंतों की तैयारियां और उनका उत्तेज ।

कवित्त ॥ ऊठ सूर दाहिम्म । अंग लज्जी सुवास तन ॥
लष्प मद्धि दुह प्रगटि । अग्गि उट्ठी सूरं घन ॥
चंद वीय ज्यों बट्ठ । अग्गि लग्गी दरसानी ॥
हय [1]हय हय उच्चार । गहग्गह सुनिये बानी ॥
लंगरीराव [2]लोहा लहारी । चावौगौ चहुआन दल ॥
बर भरी बीर जित्तन अरिय । [3]मुगति पंथ षुल्लिय सु बिल ॥
छं० ॥ ९८० ॥

कवित्त ॥ पञ्चसर प्रथिराज । राज सोमेसर संभरि ॥
लंगी लंगरराइ । राय संजम सुत्र जंबरि ॥
वारा डाथह भुल्लि । बघ्घ उठ्यौ लोहानिह ॥
पारद्धी भुल्लि धार । मूल चंप्यौ चहुआनह ॥
बर बीर बराहां उप्परैं । केहरि वट्ठारी बढन ॥
इक चप्प क्रन्न कर पग्ग इक । सावक मुष लग्गा रहन ॥ छं० ॥ ९८१ ॥

(१) मो गय । (२) ए क को -लोहो । (३) ए क को -मुकति ।

अद्वा आसन अद्व। राज अद्वा तंमूलं॥
अद्वा देस सुवेस। एक आदर संमूलं॥
पंगानै दीवान। रहै न रष्यौ चलि सथ्थह॥
काया तुंग सु कन्ह। देव साच्यौ भुज वथ्थह॥
गुरवार रत्ति गोचर कियौ। प्रात प्रगट्टत छुट्टयौ॥
दरबार राव पहुपंग दल। चौकी चौरंग जुट्टयौ॥ छं० ॥ ९८२॥

पंग दल की तैय्यारी और लंगरीराय का पंगदल को परास्त करके राजमहल में पैठ पड़ना।

पद्धरी॥ जुध जुटन लंग उठ्यौ भीम। मानों कि पथ्थ गो ग्रहन मीम॥
संभरिय राज सों करि जुहार। चय सहस सुभट मजि लोह सार॥
छं० ॥ ९८३॥
मद गंध करी च्यालीस सोह। गज फूल कनक रूप्पह करोह॥
मानेज सहसमल सथ्थ व्योम। धुंधरिग [1]भान इह दिग्ग धोम॥
छं० ॥ ९८४॥
हम्मीर कनक राठौर बंस। चाल्यौ कि कृष्ण मारनह कंस॥
हरि सिद्ध जाइ कीनौं प्रनाम। दुअ सहस महुर दुज दिन्न दाम॥
छं० ॥ ९८५॥
दरबार जाइ दरबान रुक्कि। सत सहस पौरि दरवान मुक्कि॥
लष तीन महल चौकीन हल्लि। परधान सुमित्र तब तेग झल्लि॥
छं० ॥ ९८६॥
हहकारि सीस दर गयौ लंग। हल हलिय सुभट देषंत पंग॥
उंचे अवास जाली सु भंति। दस पंच महल मंडी जु पंत॥
छं० ॥ ९८७॥
तिन मद्धि पंग देषै सु भट्ट। अनेक अवर मिलि एक थट्ट॥
घम घम निसान चय लष्य वज्जि। सिंधूर राग करनाल सज्जि॥
छं० ॥ ९८८॥
गुजरत्त सद्द जंगी तवल्ल। मानो कि भूम्म करिहै जु मल्ल॥

(१) मो.-वाम।

अनेक गिद्धि परि ठौर ठौर। जंबुक कुलाह जिय नद्द सोर॥
छं० ॥ ९८९ ॥

चौसट्ठि रुद्द तुंबर [1]अनेय। रंजि रंभ रही टगटगी लेय॥
संजोगि मात पुच्छै सु जोइ। आचिज्ज एह ग्रह कवन लोइ॥
छं० ॥ ९९० ॥

अद्धा सु अंग इह कहां दिट्ठ। तरवारि झपट पारंत रिट्ठ॥
मुह मुह चमक्कि दामिनि झपट्टि। त्रय लष्य घटा लीनी लपट्टि॥
छं० ॥ ९९१ ॥

लंगरीराय के आधे धड़ का पराक्रम वर्णन और उसका शान्त होना।

अनेक छिंछ आकास उट्ठि। जैचंद थट्ट रहे निट्ठ निट्ठ॥
विहथ्थंत तेग [2]वाहत अछेग। उड्डंत सीस धर परत वेग॥छं०॥९९२॥
निरषंत सीस घर मद्धि पंग। दुअ लष्य सेन करि मान भंग॥
हल हले सहर दुनियां अकंप। वाडलिय लग्गि [3]उड्डंत लंप॥
छं० ॥ ९९३ ॥

जयचंद घरनि सव निरषि व्योम। धुंधरिग धराधर उड्डि धोम॥
उट्ठंत वीर झपटंत सेन। लरषरहि परहि उट्ठंत तेन॥
छं० ॥ ९९४ ॥

निकल्यौ महोदधि जन्‍न वीर। मुह लेय चिन्न उतर्‍यौ नीर॥
लेयंत सीस हर हार कीन। वर्‍यौ सु मित्त अपछरन लीन॥
छं० ॥ ९९५ ॥

किलकंत सट्ठि रुधि पीय पूर। सम्हौ जु जुद्ध जे किये सूर॥
अंतह अलुझ्झ पग वेरि वाहि। धर झार धार भर पारि याहि॥
छं० ॥ ९९६ ॥

पछचर उडंत पल धापि लेय। आवंत रथ्थ अनेक वेय॥
चालत रुधिर सलिता प्रवेन। तिन मध्य चली अनेक सेन॥
छं० ॥ ९९७॥

(१) ए. कृ. को -अनेक। (२) ए. कृ. को -चाहत। (३) को.-उड्डत।

पट्टनह हट्ट विच चलिय तट्ट। मारीय सु करि वहता सु मट्ट॥
चौसट्ठि पच बुद्बुदा चल्लि। अंगुली झिंग सल सलत मल्ल॥
छं०॥ ९९८॥

भरसुंड करी मग रहवि बुड्डि। कमलनि सुभंत सर मड्डि रुड्डि॥
उप्परह भोंह सो भवर तुंड। अपछर अनेक तट जानि झुंड॥
छं०॥ ९९९॥

घुप्परिय कछ सेवाल केस। लंगरिय किद्ध क्रीड़ा नरेस॥
ऐसौ सु जुद्ध करिहै न कोउ। चय लष्ष मान आवट्ट सोउ॥
छं०॥ १०००॥

घर मड्डि रुधिर पलचर अमेय। घर छोड़ि सरन हर सिद्धि लेय॥
तुट्टौ अकास धरनिय पलट्टि। गिद्धनी सलित उप्पर झपट्टि॥
छं०॥ १००१॥

संभले राज प्रथिराज सेन। करि है न जुद्ध करुना सु केन॥
संजम्मराय सुत सकल संभ। गम्मयौ दृरिद्र रुद्र तनौ रंभ॥
छं०॥ १००२॥

किलकिका नाल छुट्टी अग्राज। लै चली लंग पर महल साज॥
दस कोस परे गोला रमक्कि। परि सहल कोट गज्जी धनक्कि॥
छं०॥ १००३॥

संजमह सुअन लै चली रंभ। सब लोक मड्डि हूऔ अचंभ॥
.... । .... ॥ छं०॥ १००४॥

जैचन्द के तीन हज़ार मुख्य योद्धा, मंत्री पुत्र भानेज और भाई आदि का मारा जाना।

कवित्त॥ परे तुरिय सत सहस। परे मदगंध सहस्सह॥
परे षेत षंगार। पर्‌यौ मंत्री सु धरंनह॥
परे सुभट चय लष्ष। परे लंगा चहुआनह॥
परि सहसो भानेज। परे चय सहस सबानह॥
परि धनी सेन किय उद्ध गति। रुधिर कन्नित कनवज वही॥
पर मड्डि परी गिद्धनि अछरि। सु कविचंद ऐसी कही॥ छं०॥ १००५॥

लंगरीराय का पराक्रम वर्णन ।

एह जुद्व लंगरिय । आय चौकी सम जुथ्यौ ॥
एक अंग लंगरिय । तीन लष्पह हथ पुथ्यौ ॥
सार सार उछरंत । परी गिद्वा रव भष्पन ॥
गज वाजिच निहाय । वज्जि उत्तराधि दष्षिन ॥
द्रुम भिन्यौ लंग पंगह अनी । हाय हाय मुष फुट्टयौ ॥
हल हलत सेन असि लष्प दल । चौकी चौरंग जुट्टयौ ॥
छं० ॥ १००६ ॥

मंत्री राव सुमंत । हथ्थ विंटचौ सचलंतौ ॥
दुज्जाई दिल्लीप कोप । ओघ कुंजरनि बढ़ंतौ ॥
हालो हल कनवज्ज । मंझ केहरि कूकंदा ॥
संजमराव कुमार । लोह लग्गा लूसंदा ॥
चहुआन महोवै जुद्ध हुअ । ग्रेहा गिद्ध उड़ाइयां ॥
रन भंग रावनै वर विरद । लंगै लोह उचाइयां ॥
छं० ॥ १००७ ॥

एक कहै अप्पान । एक कहि बंधि दिवाना ॥
वंधौ बंधन हार । मार लद्धी सिर कन्हा ॥
बावारौ बर तुंग । षग्ग [1]साहै बिलझाना ॥
लंगी लंगरराव । अद्ध राजी चहुआना ॥
उरतान ढंकि कमधज्ज दल । संजम राव समुद्द हुअ ॥
प्रारंभ जुद्ध जुद्धे सबल । चलि चलि वीर भुजंग [2]भुअ ॥
छं० ॥ १००८ ॥

पृथ्वीराज का धैर्य्य ।

जौ पच्छिम दिसि उयै । पुव्व अंथवै दिनंकर ॥
धर भर फनि फन मुरहि । गवरि परहरै जु संकर ॥
ब्रह्म वेद नह चवै । अन्वित जुधिष्टिर जौ वुल्लय ॥
जौ सायर जल छिलै । मेर [3]मरयादह डुल्लय ॥

(१) ए. कृ. को.-मोहै । (२) ए. कृ. को.-हुअ । (३) मो.-मरयादा ।

इतनीय होय कविचंद कहि। इह इत्तो पिन में करहि॥
तुम हीन दीन सब चक्कवै। प्रथीराज उर नहिं डरहि॥
छं०॥ १००९॥

लै संजोगि नृप षेत। जाइ ठढ्ढौ रुकत बर॥
तब लगि पंग कनवज्ज। वीर चढ्ढै संमुह धर॥
रावन रन [1]उत्तर्‍यौ। सामि फौजह अधिकारिय॥
मीर कटक मोकलहु। ताम रुक्यौ झुकि भारिय॥
बनबीर रान सिंहा सुभर। मुक्कल्यौ वेगि चतुरंग दल॥
सज्जे सुबंध चहुआन भर। .... ॥ छं०॥ १०१०॥

अपनी सब सेना के सहित रावण का पृथ्वीराज पर आक्रमण करना।

तब झुकि पंग नरिंद। दिष्टि कीनी झुकि अग्गी॥
जिम सुकिया दुति बचन। दूत टारिय अँपि अग्गी॥
ज्यों जोगिंद सुष इंद। रंभ टारै तप भग्गै॥
झुक्किय कित्त [2]कुटवार। पंग रावै द्रव मग्गै॥
भयभीत नृपति रावन्न तजि। तजै धनज जोगिंद तजि॥
यों बढ्यौ राज चहुआन पर। अप्प सेन नलवारि रजि॥
छं०॥ १०११॥

रावण की फौज का चौतरफा नाकेबंदी करना।

अप सेन सम नरिंद। लरन धायौ रावन बर॥
काल जाल जम जाल। हथ्थ कीने जु अग्गि गिरि॥
[3]सजि सनाह जमदाह। कूह मंची जु अत्ति बर॥
सुनि सु कान रव पाल। वीर संभरि निसान घुरि॥
फिरि पर्‍यौ सेन इन उप्परहि। सो ओपम कविचंद कहि॥
फट्टी फवज्ज चावद्दिसह। गंग कूल वक्कारियहि॥ छं०॥ १०१२॥

---

(१) ए. कृ. को.-उच्चर्‍यौ। (२) ए. कृ को.-कोटवार।
(३) मो. सजि।

रावण का पराक्रम और उसकी वीरता का वर्णन।

फिऱ्यौ हथ्थ जमजाल। ग्रहन अति चार पच्छ फिरि ॥
नीर थंभ थह फिऱ्यौ। तुट्टि जल फिरै मीन हरि ॥
पवन फेर पित फिरै। बीर ज्यों फिरै हकाऱ्यौ ॥
फिरै हथ्थ बर रोस। पेम ज्यों फिरै संभाऱ्यौ ॥
भज्जई हथ्थ हथ्थौत्र बल। करिस नैंन रत्ते रुधिर ॥
जानै कि दट्ठ जम की विसल। [1]चुबै जांनि मंगलति झर ॥
छं० ॥ १०१३ ॥

मोरि हथ्थ बिट्ठारि। काल बिट्ठारि भवन कौं ॥
तिरस जांनि रस सुट्ठि। चल्यौ मोरन्न पवन कौं ॥
काम अंध दिष्षै न कोइ। सोच सुद्धित मदपानिय ॥
राज मद्द राजनिय। ग्यान सुद्दिन सुर पानिय ॥
करि देषि मंत रावन बलिय। उप्पर हरि धावै लरन ॥
ओपम्म चंद जंपै विसल। तत्त मंत कबहूं करन ॥ छं० ॥ १०१४ ॥

ज्यों कलंक पर हरै। न्हान गंगा तिथ्थह बग ॥
अध्रम ध्रम्म परहरै। अजस पर हरै सुजस मग ॥
माह चवथ ससि तजै। देवध्रम तजै सूद्र नर ॥
चंप भवर गुन तजै। भोग जिम तजै रिष्य गुर ॥
इम मुक्कि करिय रावन बलिय। राज सेन उप्पर पऱ्यौ ॥
जमजाल काल हथ्थी सु बर। ता पच्छै क्रम क्रम पऱ्यौ ॥
छं० ॥ १०१५ ॥

रावण के पीछे जैचन्द का सहायक सेना भेजना और स्वयं अपनी तैयारी करना।

लरत राज रावन्न। पंग पच्छै फवज्ज फटि ॥
सूर किरन फट्टंत। वान छुट्टंत पथ्थ फटि ॥

---

(१) ए. कृ. को.-चवै। (२) ए. कृ. को.-मोरन्न।

है गै मत्त मतंग। [1]दंद दंतिन धर छाइय॥
ज्यों बद्दल इल उपरि। छांह चल्लै सो धाइय॥
ता पच्छै पंग अप्पन चढ़न। सुनि रावन आहत जुध॥
जाने कि राज चहुआन को। इसौ दरसि भग्गौ जु बंध॥
छं०॥ १०१६॥

चांद्रायन॥ इह ओपम कविचंद। पिष्षि [2]तन रन्नियं॥
सोज राज संमेत। जपेपय तन्नियं॥ छं०॥ १०१७॥

अरिल्ल॥ सूर करी मधि डोर कहंकह। कढे प्रथिराजन लेउ गहंगह॥
.... । .. . . ॥ छं०॥ १०१८॥

पंगराज की ओर से मतवाले हाथियों का झुकाया जाना।

दूहा॥ छूटत दंतिन संकरनि। सो मत मंत उतंग॥
गात गिरव्वर नाग गति। [3]चालत सोभ सुअंग॥ छं०॥ १०१९॥
सत्त सूर सोभत सजत। अभंग सेन भर राज॥
गहन राज प्रथिराज कों। सेन सुरंगह साज॥ छं०॥ १०२०॥

पंगराज और पंगनी सेना का क्रोध।

विअष्परी॥ देषियहि राजं रस सूर भल्लै। सूर रज बीर सारोस हल्लै॥
वेंन आकास सर लल्ल कल्लै। देषियहिं पंगुरें नेंन लल्लै॥
छं०॥ १०२१॥

दोनों सेनाओं का परस्पर मिलना।

कवित्त॥ मिले सूर बज्जे अघात। [4]सस्त्र बज्जे अस्त्रन सों॥
ज्यौं ताल ताल बज्जए। जीभ चिय मग उलालं सों॥
गजर बज्जि घरियार। लोह भय अंति अघानं॥
बजि त्रिघात उतंग। मस्त्र घल्लै सुर पानं॥

---

(१) ए. कृ. को.- दंत। (२) ए. कृ. को.-रन, को.-तर।
(३) ए. कृ. को.-चालति। (४) ए. कृ. को.-सस्त्र वज्जे जु सत्र सों।

चहुआन आनं कमधज्ज करि। पाइ मंडि आघाट दुज ॥
हक्कै पहक्क कायर परै। देव रूप आहत्त सुज ॥ छं० ॥ १०२२ ॥
तेग वहत मंडली। रोष जनु करी तुंग बर ॥
पूर जूह आवंत। रुधिर रन लोह लग्गि पर ॥
स्वामिध्रंम सों लच्छि। मेर हथ लच्छि न ग्राहै ॥
रगत पील मक्कि गिरत। तिनह में मोती बाहै ॥
भेदै न कमल जल सुबर बर। कमल पत्र छिंटन्न लग ॥
हवि गात तेग आतुर बहै। रुधिर छिंट छुट्टै न जुग ॥छं०॥१०२३॥

पंगराज का सेना को प्रगट आदेश देना।

दूहा ॥ तब हंकारौ कीय न्रप। चढ़ि मच्छर बर जीव ॥
जनु प्रजरंती अग्गि महिं। लै करि ढारिय घीव ॥छं०॥१०२४॥
संचिय जुद्ध अनुद्ध सुनि। अरियनं ग्रहन न सार ॥
रे चहुआन न जाइ घर। पंग पिटारै मार ॥ छं० ॥ १०२५ ॥
इह कहंत पंगह चल्यौ। आइस ले सब सेन ॥
लेहु लेहु इम उच्चरिय। जन जन मुष मुष बेंन ॥ छं० ॥ १०२६ ॥

पृथ्वीराज का कविचंद से पूछना कि जैचन्द को पंगु क्यों कहते हैं।

*पुच्छि नरिंद सु चंद सौं। तुम बरदायं कविंद ॥
सब पंगुर किहि विधि कहत। यह जयचंद सु इंद ॥
छं० ॥ १०२७ ॥

कवि का कहना कि इस का पूरा उपनाम दलपंगुरा है क्यों कि उसका दलबल अचल है।

कवित्त ॥ जैसे नर पंगुरौ। विनु सु [1]झंगुरी न हल्लहि ॥
आधारित झंगरी। हरू वह वत्त न चल्लहि ॥
तैसे रा जयचंद। असंष दल पार न पायौ ॥

* छन्द १०२७ और १०२८ मो प्रति में नहीं हैं। (1) को-टगुरी।

चालुक इक सर सरित। दलन हरवल्ल अघायौ ॥
दिसि उभय गंग जमुना सु नदि। अद्ध कोस दल तव वह्यौ ॥
कविचंद कहै जैचंद न्टप। तातें दल पंगुर कह्यौ ॥ छं० ॥ १०२८ ॥

जैचन्द की सेना का मिलना और पृथ्वीराज का पड़ाव पर घेरा जाना।

चंद अम्रित झरि बीर। विषय झाला सु प्रजल्लि चलि ॥
नेन दंत आरुहिज। मत्त दंती सु दंत पुलि ॥
तम तामस उक्करै। बीर नीसान धुनंके ॥
बीर सद्द सुनि क्रन्न। मद्द गजराज झुनंके ॥
विंटये सूर सामंत न्टप। रावन सव न्टप मग्ग गसि ॥
असि लष्य न्त्रपति पहुपंग दल। सूर [1]चिंत मन मंत वसि ॥ छं० ॥ १०२९ ॥

दूहा ॥ असि रावन विहु मग्ग रहि। सर प्राहार प्रमान ॥
ग्रहन राज चहुआन कौं। पंग वज्जि नीसान ॥ छं० ॥ १०३० ॥
साम सनाह कनंक वर। सलष सु लष्य प्रमान ॥
मग रष्पन रजपूत बट। अरि सुक्यौ न सु थान ॥ छं० ॥ १०३१ ॥

कवित्त ॥ रावन दल दलमलत। हलत भग्गेव सुभर अरि ॥
भग्गौ दल बोहिथ्थ। बीर भाटी पहार फिरि ॥
घरी एक आहत्त। झंझ वज्जी जुध जग्गी ॥
जनु कि महिष मैंमंत। अत्त विभ्रम बल लग्गी ॥
भर सिंघ पंच पचाइनह। तजन राज रज राज भिय ॥
पांवार धन्नि धावर धनी। मग्ग षग्ग मग भीर लिय ॥ छं० ॥ १०३२ ॥

जैचन्द का मुसलमानी सेना को आज्ञा देना कि पृथ्वीराज को पकड़ो।

चौपाई ॥ वज्जे सुनवि पंग सुर रूपं। चकित चित्त भूपाल सु भूपं ॥
[2]पुकारे वर उन न्त्रिप अंगं। अरि गौ भंजि पान सुर मंगं ॥
छं० ॥ १०३३ ॥

(१) मो.-चित्त। (२) ए. कृ. को.-पुक्कारी।

पद्धरी ॥ अग्गें सुपंग बज्जीर बीर । फुरमान अप्पि अरि गहन मीर ॥
बंधि सिलह कन्ह उभ्भौ करूर । मनु धाइ छुट्टि [1]भद्दव तिहूर ॥
छं० ॥ १०३४ ॥

सन्नाह सज्जि गोरी पहार । जानियै सूर सायर अपार ॥
हज्जार सित्त सजि सुभर मीर । मिलि पंग हेत बर बीर तीर ॥
छं० ॥ १०३५ ॥

जानियै बीर बीरन्न जूर । कंद्रप्प कित्ति जानीय सूर ॥
मनुं हक्क सज्जि सजि सिलह थान । बहकरै बीर दस कंध मान ॥
छं० ॥ १०३६ ॥

हज्जार साठि सजि षरे मीर । कलहंस मान कसि अंग बीर ॥
हय गय पलान पहुपंग षुल्लि । देषंत किरनि बर किरनि डुल्लि ॥
छं० ॥ १०३७ ॥

हलहलत होत गजराज छुट्टि । आयसं आनि धन पंग लुट्टि ॥
सन्नाह सज्जि सोभै सु भूप । द्रप्पन झलक्कि प्रतिब्यंब रूप ॥
छं० ॥ १०३८ ॥

सोभै अनेक आकार बीर । मानो मद्धि इछ सोभै सरीर ॥
पष्षरै भीर हय भीर जंपि । गति डुलै प्रबत प्रव्वत्त सु कंपि ॥
छं० ॥ १०३९ ॥

बर हुकम पंग न्त्रिप इहय दीन । टिड्डीस अन्न सम गवन कीन ॥
बिछुरे सेन कमधज्ज षान । ग्रहन भौ ग्रहन प्रथिराज भान ॥
छं० ॥ १०४० ॥

उग्रहन बत्त करतार हथ्थ । रुक्कवन धाइ चहुआन सथ्थ ॥
छं० ॥ १०४१ ॥

युद्ध-रँग राते सेना समूह में कवि का नव रस की सूचना देना।

वत्ताकल ॥ नचि नौरस थान अदभ्भुत वीर । भयौ रस रुद्द कवैं कवि भीर॥

(१) मो.-भद्दव कि ।

भैभंति भयानक कायर कंपि। करुना रस केलि कलामुप जंपि॥
छं० ॥ १०४२॥

तहां रस संकर ह्वै अरि संच। उठ्यौ अदबुद्द महारस नंचि॥
लियौ रस निट्ठुर वीभछ अंग। दिष्यौ चहुआन सु सेनह पंग॥
छं० ॥ १०४३॥

हस्यौ रस हास सलष्य पवार। बरं बरझालि सु वीर दुधार॥
भयौ रस सत्त सुगत्ति य मग्ग। सुधारहि काम चलै जस अग्ग॥
छं० ॥ १०४४॥

रचैइ सिंगार बरब्बर रंभ। झुल्यौ रस वीर पगं पग अंभ॥
... ... । .... छं० ॥ १०४५॥

दूहा ॥ काल किंचित किंचित करहि। सुरग सुधारहि मग्ग॥
भंजौ लज्ज मुकत्ति बर। ग्रहि भग्गीह न दग्ग॥ छं० ॥ १०४६॥

पृथ्वीराज का सामंतों से कहना कि तुम लोग जरा भीर सम्हालो तो तब तक मैं कन्नौज नगर की शोभा भी देख लूं।

सकल सूर सामंत सम। बर बुल्यौ प्रथिराज॥
जौ रुक्कौ षिन षेत में। देषौं नगर विराज॥ छं० ॥ १०४७॥

सामंतों का कहना कि हम तो यहां सब कुछ करें परंतु आपको अकेले कैसे छोड़ें।

कवित्त ॥ हम रुक्कैं अरि जूह। स्वामि कौं तजैं इकल्लै॥
कै रषि दुज्जन पढन। स्वामि मुक्कियै न ढिल्लै॥
नारिंघनि करि देव। ताप तप जांहि देव वर॥
सुनहि राज प्रथिराज। दिट्ठ बंधीय अप्प कर॥
सो चलै संग छाया रुकिय। कै छांह स्वामि मुक्यौ भिरन॥
चहुआन नयर दिष्पन करै। दुरन देव सोभै किरन॥
छं० ॥ १०४८॥

कन्ह का रिस होकर कहना कि यदि तुम्हें ऐसाही कहना था तो हम को साथ ही क्यों लाए।

दूहा ॥ कहै सब्ब सामंत सौं। एकल्लौ बिन बग्ग ॥
दइ विधिना फिरि मैं लई। जाय परस्सो गंग ॥ छं० ॥ १०४९ ॥
बोल्यौ कन्ह अयान न्रप। रे मत मंड समथ्थ ॥
जो मुक्कै सत सथ्थियन। तौ कित लायौ सथ्थ ॥ छं० ॥ १०५० ॥
जौ मुक्कौं सत सथ्थियन। तौ संभरि कुल लज्ज ॥
दिष्षन करि कनवज्ज कौं। फिर संमुह मरनज्ज ॥ छं० ॥ १०५१ ॥

परन्तु पृथ्वीराज का किसी की बात न मान कर चला जाना।

चल्यौ नयर दिष्षन करन। तजि सामंत सुलच्छि ॥
गौ दिष्षन दिष्षन करन। चित्त मनोरथ बंछि ॥ छं० ॥ १०५२ ॥
कुंभ चित्त चहुआन कौ। चीकट बुंद न अभ्भ ॥
जल भय पंगह ना भिदै। ज्यौं जल चीकट कुंभ ॥ छं० ॥ १०५३ ॥

युद्ध के बाजों की आवाज सुनकर कन्नौज नगर की स्त्रियों का वीर कौतूहल देखने के लिये अटारियों पर आ बैठना।

गाथा ॥ दम सुंदरि गहि बालं। विसालं सुष्प अलनि मिलि अलियं ॥
सुनि वज्जे पहुपंग। चरितं सो भुल्लियं बाला ॥ छं० ॥ १०५४ ॥
चढ्ढि गवष्षन बाला। सु विसालं जोइ राजियं राजं ॥
थक्के विमान सूरं। सुभंतिय वाय कंसजियं ॥ छं० ॥ १०५५ ॥
दूहा ॥ दैपन लच्छिन न्रपति वर। गो दच्छिन क्रत वेर ॥
स्रवन राज चहुआन बढि। पंग घरंघर वेर ॥ छं० ॥ १०५६ ॥

जैचन्द का स्वयं चढ़ाई करना।

जो पत्ती पत मरन की। बोलि सहेट प्रमत्त ॥

इम सीलत बंचे सु बट। न्रिप तिह मिलहि न मत्त ॥ छं० ॥ १०५७ ॥
इह कहंत पंगह चल्यौ। बजि निसान सरभेर ॥
सकल सूर सामंत सम। लेहि नरिंदह घेरि ॥ छं० ॥ १०५८ ॥
कवित्त ॥ पल्लान्यौ जयचंद। गिरद सुरपति आ कंप्यौ ॥
असिय लष्य तोषार। भार फनपति फन तंप्यौ ॥
सोरह सहस निसान। भयौ कुहराव भूअ भर ॥
घरी मद्धि तिहुलोक। नाग सुर देव नाम नर ॥
पाइक्क धनुद्धर को गिनै। असी सहस गेंवर गुरहि ॥
पंगुरौ कहै सामंत सम। लेहु राज जीवत धरहि ॥ छं० ॥ १०५९
हय गय दल धसमसहि। सेस सलसलहि सलक्कहि ॥
सहस नयन झलझलहि। रैंन पल पूरि पलक्कहि ॥
तरनि किरन मूंद्यौ। मान द्रगपाल स छुट्टिहि ॥
वसंत पवन जिम पत्र। अरिय इम होइ सु थट्टहि ॥
पायान राय जैचंद को। बिगरि पिथ्थ कुन अंगमै ॥
हय लार बहति भाजंत थल। पंक्ति चहुट्टै चक्कवै ॥ छं० ॥ १०६० ॥

जैचन्द की चढ़ाई का ओज वर्णन।

विजय नरिंदह तनौ। रोस करि इम धरि चल्ल्यौ ॥
इम हम षुर षुंदत। एम पायालह [1]डुल्ल्यौ ॥
एम नाद उछर्‍यौ। एम सुर इंद गयंदहि ॥
एम कुलाहल भयौ। एम मुद्दित रवि इंदहि ॥
दल असिय लष्य पष्पर परहि। एम भुअन आकंप भय ॥
पंगुरौ चल्यौ कविचंद कहि। बिन प्रथिराजह को सहय ॥
छं० ॥ १०६१ ॥

एक एक अनुसरिग। अंग दह लच्छि कोटि नर ॥
धानुक धर को गिनै। लष्य पचासक हैंवर ॥
सहस हस्ति चवसट्ठि। गरुअ गाजंत महाभर ॥
समुद सयन उलटंत। डरहिं पन्नग सुर आसुर ॥

(१) को. झुल्यो।

जैचंद राइ चालंत दल। चक्क सूर पुज्जन चलिग ॥
गढ़ गिरिग्ग जलथल मिलिग। इत्त सब दिष्षिय जुरिग ॥
छं० ॥ १०६२ ॥

पंगराज की सेना के हाथियों का वर्णन।

मत्त गत्त सन भिरिग। हट्ट पट्टन सह तुट्टिग ॥
कच्छि कच्छि जुरि भीर। घंट घंटा रुरि फुट्टिग ॥
बाल बाल आलुझ्झि। करन सम करन लागि पग ॥
सेंगल मदगल चलत। थार हस्ती सन चंपिग ॥
जैचंद राय चालंत दल। गिरिवर कंपहि चंद कहि ॥
देषंत राइ भंभरि रहहि। दंति पंति दस कोस लहि ॥
छं० ॥ १०६३ ॥

दूहा ॥ जल थल मिलि दुअ कंप हुअ। टुटि तरवर जल मूल ॥
देषि सपन सामंत बल। छलन कि वामन फूल ॥ छं० ॥ १०६४ ॥

दल पंगुरे के दल बद्दल की चढ़ाई का आतंक वर्णन।

बाघा ॥ दह दिसा थर थिथरंत। दिगपाल दसन करंत ॥
उरबी न धारत सेस। ससि होत फेर दिनेस ॥ छं० ॥ १०६५ ॥
धरधुंध रज छदि व्योम। सद नास थिर गहि गोम ॥
कठ कमठ पीठ कसंठ। थल विथल फिरत न कंठ ॥ छं० ॥ १०६६ ॥
धुरि मेर मुरि मुरि जात। सर स्नकि सवित उपात ॥
मम चढ़हु पंग नरिंद। हरहरत गगन गुरिंद ॥ छं० ॥ १०६७ ॥
हरि सीस रज बरषंत। द्रिग उरग मद्धि परंत ॥
हुंकार प्रगटित अग्गि। त्रिय नयन प्रजलि विलग्गि ॥ छं० ॥ १०६८ ॥
ससि तवैं अमिय पतंत। [1]अवि बुंद सिंह जगंत ॥
बबकारि [2]गज्जत सद्द। विह्वरत धवल दुरद्द ॥ छं० ॥ १०६९ ॥
सिव फिरत तिन संग जूर। नन चढ़हु पंगह सूर ॥
ब्रह्मंड नप अरु एक। इल मिलत होत समेक ॥ छं० ॥ १०७० ॥

(१) ए. कृ. को.-आप। (२) ए. कृ. को.-मज्जन।

गन सैंन विथुरित भूमि। घन मिटत नासा घूम॥
जल प्रलय लोपत लोह। धर बिथरि होत अगोह॥ छं० ॥ १०७१॥
भुअ परत अच्छरि व्योम। नीसान गज्जत गोम॥
तुम चढ़त जैचंद राज। तिहुलोक ढरंति अवाज॥ छं० ॥ १०७२॥
कवित्त ॥ डरं द्रुग्गम परहरहि। अढर ढरि परहि गरुअ गिरि॥
चिन बन घन टूटंत। धरनि धसमसहि हयनि भर॥
सर समुंद षरभरहि। डिढह डिढ डाह करक्कहि॥
कमठ पिट्ठ कलमलहिं। पहुमि महि प्रलय पलट्टहि॥
जयचंद पयानौ संभरत। फुंनि ब्रह्मंड विछुट्टि हय॥
मम चलहि मचलि मम चलि मचलि। चलहिंत प्रलय पलट्टि हय॥
छं० ॥ १०७३॥
दूहा ॥ साजत पंग नरिंद कहुं। विनय स छोनिय वाग॥
मुगता ग्रह सुक कवित कह। [1]जलथल थंग्ग अमाग ॥छं०॥१०७४॥
कवित्त ॥ दल राजन मिलि विभजि। अट्ट दिग्गं [2]करवरं कर॥
कर धरंत द्रिग अट्ठ। [3]डट्ठ वाराह मुरहि हरि॥
हरि वराह दिढ दट्ठ। करंतु फनवै फन टारहि॥
फनिवै फनह टरंत। कमठ षोपरि जल भारहि॥
भारहि सुजल्ल पुप्फरि उछरि। उच्छरि है पायाल जल॥
जल होत होय जगतै प्रलौ। समु चढ़ि चढ़ि जैचंद दल॥
छं० ॥ १०७५॥

समस्त सेना में पृथ्वीराज को पकड़ लेने के लिये हल्ला होना।

दूहा ॥ मढरि मढरि छोनी सु चिय। सत करि छिनक सुवल्ल॥
छत्रपति करि जीरन भषिग। तूं नित नितह नवल्ल ॥छं०॥१०७६॥
धम धमंकि धुकि मिष्प महि। रमहि न गंग सु तट्ट॥
गहहि चंपि चहुआन कों। भव भरि मुहित सु वट्ट ॥छं०॥१०७७॥

(१) ए. कृ. को.-"जल थल मग्ग अमग्ग"।
(२) ए. कृ. को करु। (३) मो.-मट्ठ, को झट्ट।

भौ टामंक दिसि विदिस कहु । बहु पष्पर बहु राव ॥
मनु अकाल्ल टिड्डिय सघन । पब्बय छुट्टि पहाव ॥छं०॥ १०७८ ॥

कन्नौज सेना के अश्वारोहियों का तेज और ओज वर्णन ।

भुजंगी ॥ प्रवाहंत ताजी न [1]लज्जीय हारे । मनों रब्बि रथ्थं सु आनै प्रहारे॥
जिके स्वासि संग्राम झल्लै दुधारं । तिनं ओपमा क्यों बदी जै छिकारे॥
छं० ॥ १०७९ ॥

तिनं साहियं बग्ग गट्टै न लारा । मनों आवधं हथ्थ वज्जंत तारा॥
हयं छट्टियं तेज ठट्टे जिकारा । सयं सज्जियं सूरं सव्वै [2]करारा ॥
छं० ॥ १०८० ॥

सरे पापरे प्रान जे मार वारा । तिके कंध नामै नहीं लोह झारा॥
तहां घांट औघट्ट फंदै निनारा । तिनं कंठ झूलंत गज गाह भारा॥
छं० ॥ १०८१ ॥

दिसा राह लाहौर बज्जै तुरक्की । तिनं धावतें धूर दीसै पुरक्की ॥
दिसं पच्छिमं भूमि जानै न थक्की । तिनं साथ [3]सिंधी चलै नाव जक्की॥
छं० ॥ १०८२ ॥

पवंनं न पंषी न अंषी मनक्की । तिके सास कट्टै न चंपै न नक्की ॥
तिनं राग चंपै न सुट्टी डरक्की । मनों ओपमा उंच आए धरक्की ॥
छं० ॥ १०८३ ॥

अरब्बी विदेसी लरै लोह लच्छी । गनै कोनं कंठील कंठील कच्छी॥
धरं पेत पुंदंत रुंदंत बाजी । [4]हरंबी हए एक तत्तार ताजी ॥
छं० ॥ १०८४ ॥

तिके पंडु ए पंगुरे राइ साजे । मनों दुअन दल तुच्छ देषंत लाजे॥
इसौ एह आपुब्ब कविचंद पिष्यौ । तिनं रव्वि दुजराज सम तेज दिष्यौ॥
छं० ॥ १०८५ ॥

डरं डब्बरी रेन अप्पै न पारं । अपीनं [5]पषीनं सपीनं निरारं ॥

---

(१) ए. कृ. को.-लाजा अहोर ।
(२) ए. कृ. को.-तुरारा ।
(३) ए. कृ. को.-मिधं ।
(४) ए. कृ. हंरबी हए एक ताजी तत्तारी ।
(५) ए. कृ. को.-अपीन ।

तहां कौन सामंत राजं न [1]ठढ्ढै । मनों मेर उत्तंग हस्ती न चढ्ढै

छं० ॥ १०८६ ॥

मुषं जोव जोवं भरं भूप भारे। [2]तिनं काम कनवज्ज मझ्झै पधा

छं० ॥ १०८७ ॥

दूहा ॥ भर हय गय नीसान बहु । इह दिष्पिय सह थान ॥

जौ चढ़िजै हर [3]दिष्पियै । चिहु दिसि समुद प्रमान ॥

छं० ॥ १०८८ ॥

वृद्धनाराज । जहां तहां हयग्गयं निसान घान घुंमरे ।

मनों कि मेघ भद्दवा दिसा दिसान धुंमरे ॥

चमक्कती सनाह संग वीज तेज विप्फुरै ।

मनो कि गंग न्हाय कै किरन्न भान निक्करै ॥ छं० ॥ १०८९ ॥

सपष्षरं प्रमान राज बाज राज सोभई ।

मनो कि पंष प्रब्बतं सुफेरि इंद लोभई ॥

गहग्गहं जु वाजि नाद तेज हथ्थ विथ्थुरे ॥

सुने सबद्द तेज सूर कायरं स विद्दुरे ॥ छं० ॥ १०९० ॥

इतने बड़े भारी दलबल का साम्हना करने के लिये पृथ्वीराज की ओर से लंगरी राय का आगे होना।

दूहा ॥ सुनिय सबर दल गंग हित । लंगा लोह उचाय ॥

पंग सेन सम्हौ [4]फिरिय । बोलि वज्र विरुझाइ ॥ छं० ॥ १०९१ ॥

लंगरी राय का साथ देने वाले अन्य सामंतों के नाम।

कवित्त ॥ लंगा लोह उचाइ । जूह झल्लिय संमुह भिरि ॥

दुज्जन सल्लष पुंडीर । धरै बंधव उप्पर करि ॥

तूंअर तमकि ततार । तेग लीनी गढ़ तत्तौ ॥

बर पुच मिच अचान । भान कूरंभ सुभत्तौ ॥

सांषुला सूर बंकट भिरं । मोरी केहरि सूर भर ॥

(१) ए.-डढ्ढै । (२) ए. कृ. को -फिनं ।

(३) मो. दिष्पिकै । (४) ए मो. परिय ।

पहु पंग सेन सम्हौ भिरिग। सु बजि बीर बर विग्गहर ॥
छं० ॥ १०९२ ॥

दोनों सेनाओं का एक दूसरे को प्रचार कर परस्पर मार मचाना।

रसावला ॥ पंग सेनं भिरं। षग्ग षोलं झरं ॥ बीर हक्कं बियं। लोह लग्गी लियं॥
छं० ॥ १०९३ ॥

षग्ग लग्गे झलं। भिन्न रत्तं पलं ॥ बीर हक्के अरी। घाय बज्जं घरी॥
छं० ॥ १०९४ ॥

तुंग बाहं बरं। नंषि वड्डुप्फरं ॥ बीर लग्गे भरं। कालते संघरं ॥
छं० ॥ १०९५ ॥

द्रोन नंचं धरी। मार हक्कं परी ॥ कूक वीरं करी। गिद्ध उड्डे डरी॥
छं० ॥ १०९६ ॥

टूक पावं वटं। षग्ग टेके ठटं ॥ घाइ घुम्मे घनं। मत्तवारे मनं ॥
छं० ॥ १०९७ ॥

कंधनं बंधरं। जंमुषं विड्डुरं ॥ रंभ तारी चसी। सूर पानं हसी॥
छं० ॥ १०९८ ॥

घाव वज्जे घटं। पाइ कै सुब्वटं ॥ अंत तुट्टै बरं। पाइ आलुझ्झरं॥
छं० ॥ १०९९ ॥

भट्ट ऐसे रजं। तंति बंधे गजं। मुगति मग्गे अरी। षग्ग षोली दरी॥
छं० ॥ ११०० ॥

कवित्त ॥ घरी एक आवरत। पंग संघार अरिय पर ॥
लुथ्थि लुथ्थ आहुट्टि। रुद्र रस भयत वीर बर ॥
हय गय नर भर भरिय। पऱ्यौ रन रुद्दि प्रताप्यं ॥
षग्ग मग्ग अरि हलिय। चलिय धारनि धर आपं ॥
दुअ जन्न भट्ट हक्कारि करि। कमल सेन जिन चिंत परि ॥
उच्चरे ब्रह्म ब्रहमंड सों। गोटन कोट गह्न फिरि ॥छं०॥११०१॥

चौपाई ॥ धाए न्त्रिपत न लोह अघानं। छुट्टक सिद्ध किद्ध विरुझानं ॥
संझ किधों घरियारन घाई। चच्चर सी चुतुरंग वजाई ॥
छं० ॥ ११०२ ॥

सायंकाल होना और सामंतों के स्वामिधर्म की प्रशंसा।

दूहा ॥ भंजन भीरन जो नृपति। करिभन भौंर चरंच ॥
सांई बिन जीवन्न कों। मोहनि करन छ पंच ॥ छं० ११०३ ॥
भान न भग्गौ भान चलि। भान सिरंतह भान ॥
अस्ति समंपिय भान कों। दै सिर संकर दान ॥ छं० ॥ ११०४ ॥

युद्ध भूमि की वसंत ऋतु से उपमा वर्णन।

कवित्त ॥ पंग बसंत सो सिग सु। गंध गज मद झरि दानं ॥
सो कायर पत पीप। पत्त झर झर कर पानं ॥
प्रसव चंद सिर आन। मान भिरि छिरि अग्गह हर ॥
सज्जा छोह सुरंग। रंग रंग्यौ सु सुरंग वर ॥
बोलंत घाव भवरिय भवर। कूक कूह कोकिल कलह ॥
फूल्लिग्ग सुभर अंजह सुरन। पवन त्रिविध सेना सुलह ॥
छं० ॥ ११०५ ॥

अट्ठ अट्ठ अरु अ । एक आगरे पंच वर ॥
पग्ग मग्ग रित पत्त। भरें भर धज्जि जित्त भर ॥
थर पलचर हर रंभ। नंद नरिंदह आघाई ॥
मुगति त्रिपंग मन मज्जि। अंब पौवन जिहि आई ॥
गोरष्प कित्ति जित्ती सपन। मात पित्त गुर बंध [1]रन ॥
दई साम सुधारन सकल कौं। इन समान कौरति मयन ॥
छं० ॥ ११०६ ॥

अरिल्ल ॥ ठट्ठ के सुसेन पहुपंग अग्गं। छिले लोह सूरं मनं जंग भग्गं ॥
सबै धाय बीरं रहै बीर पासं। न को कंध कट्ठै ठढे पास वासं ॥
छं० ॥ ११०७ ॥

पंगराज का पुत्र के तरफ देखना।

दूहा ॥ पंग प्रपत्तौ पुच दिषि। झुक्कि किय [2]मुप दिसि वाम ॥
बीर मत्त रत्त नयन। उत्तर सु किय प्रनाम ॥ छं० ॥ ११०८ ॥

(१) मो.-रत। (२) ए. कृ. को.-सुख।

पंग पुत्र के वचन ।

कवित्त ॥ जोरि हथ्थ फिरि तथ्थ । राज संमुह उच्चारिय ॥
असुर ससुर नर नाग । जुद्ध दिष्यौ न संभारिय ॥
अप्प सथ्थ [1]सुनि सामि । अरिन सम्हौ छकारिय ॥
भय भारथ्थ सु जुद्ध । जीह आवै न प्रकारिय ॥
धनि हथ्थ सूर सामंत के । धनि सु हथ्थ पहुपंग भर ॥
घरि तीन मोहि सुझ्झयौ न कछु । सार अगनि अग्गैं सु नर ॥
छं० ॥ ११०९ ॥

तन्द जित्यौ दल अप्प । दल न भग्गौ चहुआनं ॥
द्वादस हथ्थियन बीच । लुथ्थि पर लुथ्थि समानं ॥
पच्छै दल सुनि स्वामि । लोह छीनं अनलोपं ॥
राज कहन्न सुकलीय । सामि अवगुन सुनि कोपं ॥
अरि अरिय हथ्थ दह छंडि रन । रन में ढुंढिय पंग बर ॥
हज्जार उभै अप सेन परि । तुच्छ सु परि चहुआन भर ॥ छं० ॥ १११० ॥

पंगराज का क्रोध करके मुसल्मानों को युद्ध करने की आज्ञा देना ।

दूहा ॥ तुच्छ तुच्छ अरि पंग भर । चित्त सपच्छ हस हथ्थ ॥
यों चक्के चहुआन दल । लच्छि गमाई हथ्थ ॥ छं० ॥ ११११ ॥
[2]झुक्कि पंग दिय हुकम सह । गहन मीर चहुआन ॥
प्रात सु डंबर मझ्झतं । किरन सु छुट्टिय भान ॥ छं० ॥ १११२ ॥

पंगसेना का क्रोध करके पसर करना, उधर पृथ्वीराज का मीन चरित्र में लवलीन होना ।

पद्धरी ॥ बर हुकुम पंग दुअ दीन दीन । मंची सुमंचि सजि मिलह लीन ॥
अप्पं तुरंग पहुपंग फेरि । भर सुभर लेत घन मझ्झ हेरि ॥
छं० ॥ १११३ ॥

(१) ए. कृ. को.-मुनि । (२) ए मुकवि, कृ. को -झुकवि ।

गजराज पंच आकास अन्न ॥ सोभै सु पंग रत्तं नयन्न ॥
चिहु मग्ग फट्टि फौजैं सु लीन। चहुआन भूलि वर चरित मीन
छं० ॥ १११४ ॥

दूहा ॥ पिथ्थ चरित्त जु भुल्लि वहु। नट नाटक वहु भूप ॥
दूहा दासि संयोग की। हरि चित रत्ती रूप ॥ छं० १११५ ॥
भर भुल्लिय सह चित भुलि। अरि रहि अनि तजि क्रोध ॥
बढि ढिल्ली पहुपंग कौ। छुट्टि सु मंत्री सोध ॥ १११६ ॥

घोर घमसान युद्ध होना।

रसावला ॥ सुधं मंच बानं। कलं भूर गानं। रसं वट्ट जानं। लहू क्रूर मान
छं० ॥ १११७ ॥
लषै चढ्ढि चन्नं। वरं रत्त रन्नं ॥ हयं उट्टि तिन्नं। तुलं वज्र छिन्नं
छं० ॥ १११८ ॥
सुरं सोभ घन्नं। दिवं आस मंनं ॥ हयं बीव तानं। बनं नष्षि धानं
छं० ॥ १११९ ॥
रतं कंध तीनं। षची विभ्भरीनं ॥ [1]रठं रंक थन्नं। सुनी सुद्ध मन्नं
छं० ॥ ११२० ॥
उभं झेलि फिन्नं। दतं कट्ठि लिन्नं ॥ [2]जवं जानि तीनं। जुधं जीत बीनं
छं० ॥ ११२१ ॥
लजं मेर जंनं। सदाहत्त पंनं ॥ धरं दुद्ध रानं। ससी झल्लि फानं ॥
छं० ॥ ११२२ ॥
सुधं मंच सूरं। भुअं नंषि पूरं ॥ जहं जं पियारी। रुके पार सारी
छं० ॥ ११२३ ॥

लंगरीराय के तलवार चलाने की प्रशंसा।

दूहा ॥ पारस फिरि पहुपंग दल। दई समानति रुक्कि ॥
जंघारो जोगी वली। बाबारो पग धुक्कि ॥ छं० ॥ ११२४ ॥
पग धुक्किय मुक्किय न पग। लंगा लोह उचाय ॥

(१) मो. टरं। (२) ए. कृ. को.-वजं।

पंग समुह संमुह पऱ्यौ। हर बडवा नल धाइ॥ छं०॥ ११२५॥

जैचंद के मंत्री के हाथ से लंगरी राय का मारा जाना।

भुजंगी॥ [1]परे धाइ सोमंच मद्देक वारं। बद्दै पग्ग [2]सोरं गुरज्जं निनारं॥
हयं नारि सोवान कौहक्क फुट्टै। करै हथ्थ छत्तीस आवद्ध छुट्टै॥
छं०॥ ११२६॥

वरं बीर बीरं तथा बिद्ध पारं। [3]पगं बाजि सो षग्ग झामं किसारं॥
सहंनाइ में सिंधुऔ राग बज्यौ। लगी लोह [4]में जुद्ध आजुद्ध गज्यौ॥
छं०॥ ११२७॥

गयं मुष्प हाकी हहाकी करारी। [5]बरं बीर सोमंचियं जुद्ध भारी॥
बढ़ी बाजि सो मुक्कि प्राधान बीरं। लगी धायसो लंगरी बद्ध पीरं॥
छं०॥ ११२८॥

षलं पंचकं लोकलं कित्ति भुल्लौ। बरं भारथं लग्गि सो तुंग हल्लौ॥
बरं लंगरी राइ प्राधान बीरं। भगी सार मा भग्गियं सूर नीरं॥
छं०॥ ११२९॥

तुटी रंच कीरच्च कीरच भयन्नं। तुटी षग्ग सोवं गिनं उड्डि गेनं॥
इकं पंच तें पंचकं विद्ध नच्चं। हके तिन्न के सीस सारं सु नच्चं॥
छं०॥ ११३०॥

वरी लंगरी बीर प्राधान वारे। भयौ भार उत्तारनं बंग धारे॥
छं०॥ ११३१॥

दूहा॥ पऱ्यौ बीर लंगरि सु बर। जंघारो घन घाइ॥
सु बर बीर सामंत मिलि। मंचो सोम उपाइ॥ छं०॥ ११३२॥

कन्ह का गुरुराम को पृथ्वीराज की खोज में भेजना।

कवित्त॥ राज गुरू दुज कन्ह। कन्ह मोकलि सु लेन न्टप॥
स्वामि मल्हि सह सथ्थ। मंच कारज्ज मंच अप॥

---

(१) ए. कृ. को.-"परे धाइ सोमंच मन्त्रीक वारं"।
(२) ए. कृ. को.-गोरं।   (३) ए. कृ. को.-पगं।
(४) ए. कृ.-मैं।   (५) ए. कृ. को.-करारी।

लै आवौ प्रथिराज। पंग है विड्डुर सेन॥
षप्पवै न पथ आज। भयौ भर अंतर केन॥
यों करिग देव दच्छिन सु दुज। दिषि सामंत पटंग वर॥
संजोग दासि ढुंदह न्रपति। ठठुकि रह्यौ [1]तणि थान नर॥
छं० ॥ ११३३॥

पृथ्वीराज का कन्नौज नगर का निरीक्षण करते हुए गंगा तट पर आना।

दूहा॥ फिरि राजन कनवज्ज महँ। जानि संजोगिह वत्त॥
चढ़ि विमान जै जै करहि। देव सु रंगन कित्ति॥ छं० ॥ ११३४॥

कवित्त॥ नगर सकल गुन मय। निहार लद्धीय सुप न्रपति॥
मंडप सिपर गवष्य। जालि दिट्ठी सु विचित्र अति॥
द्वार उंच पागार। बिपुल अंगन आगारहं॥
जह तहं निझ्झर झरंत। निरमल्ल जल धारह॥
नर बाज दुरद बन गेह पसु। भरिय भीर पट्टन परम॥
सुर असुर चमंकत सबद सुनि। सु फिरि समुद मथ्थन भरम॥
छं० ॥ ११३५॥

दूहा॥ करिग देव दच्छिन नयर। गंग तरंगह कूल॥
जल छुटै तव इच्छ करि। मीन चरित्तन मूल॥ ११३६॥

पृथ्वीराज का गंगा किनारे संयोगिता के महल के नीचे आना।

भुजंगी॥ रची चित्र सारी त्रिषंडी अटारी। नकस लाज वर्द्दं सुवंनं सु ढारी॥
जरे तथ्थ जारी नही राजु वन्नं। रही फैलि रवि इंद मानों किरन्नं॥
छं० ॥ ११३७॥

हसै घ्याल षेलै तहां म्रग्ग नैनी। भरें माग मुत्ती गुहै बैठि वैनी॥
सजै छत्र आचार आनंद भीनै। तिनं सीस भीरानि आदत्त कीनैं॥
छं० ॥ ११३८॥

(१) ए. कृ. को.-तेहि।

सुभं रूप सोभा तिनं अंग वेसं। तनं चीर सारी पटं कूल नेसं॥
चमक्कंत चौकी कनै फूल झब्बी। गरै पीति पुंजं रिदै हार फब्बी॥
छं०॥ ११३९॥

कटिं छुद्रघंटा वंली जे बनीयं। पयं झंझनं सद्द श्रवने सुनीयं॥
इदं रूप हंसाय गंमाय तेनं। लजै कोकिला कान सुनतें सुरेनं॥
छं०॥ ११४०॥

बनी निकट नारी सुगंधाय बासै। सबै चंद बदनी तहां चंद भासै॥
तहां संभरी नाथ लागै तमासै। लरै मीन हय फीन, तिन देषि हासै॥
छं०॥ ११४१॥

कुंडलिया॥ मीन चरित्त जु भुल्लि न्टप। पंग न भुल्लिय युद्ध॥
तीन लष्य अग्गें न्टपति। जो भारथ्थ विरुद्ध॥
जो भारथ्थ विरुद्ध। दई अंगमै सु सब्बल॥
दई बन लाई कलिय। जुपिय रुक्कियै सवद्दल॥
वल अभंग अरिभंग। पंग सिर पान सु लिन्नौ॥
कहर कन्ह साहस्स। सिंघ सो दिल्ल समिन्नौ॥ छं०॥ ११४२॥

दूहा॥ इतें सेन चढ़ि पंग वर। है गै दिसा दिसान॥
दछिन नैर नरिंद करि। गंग सु पत्तौ ध्यान॥ छं०॥ ११४३॥

पृथ्वीराज का गले की माला के मोतियों को मछलियों को चुनाना।

चन्द्रायना॥ भूलौ न्टप इह रंगहि जुद्ध विरुद्ध सह।
नंषहि मीननि मुत्ति लहै जुअ लष्य दह॥
होइ तुछं तुच्छ सु मुत्ति मरं तनं कंठ लह॥
पंक प्रवेस हसंत झरंत न कंठ मह॥ छं०॥ ११४४॥

संयोगिता और उसकी सखी का पृथ्वीराज को गोख में से देखना।

कवित्त॥ सुनि वज्जन संजोग। सुनिय आवन्न न्टपति वर॥
भयौ चित्त चर चित्त। मित्त संभरि सु रंग नर॥

बल बींटिय राज नह। लाज रष्षी मत किन्नौ॥
गोप कुंअरि सिर रही। उठ्ठि सुंदरि वर चिन्हौ॥
दिसि पुव्व देखि चहुआन नृप। वर लोचन मन पग्ग मग॥
उपम्म बाल चिंतै सु चल। पुव्व दिसा दौ रवि सु डग॥
छं० ॥ ११४५॥

पृथ्वीराज का संयोगिता को देखना।

कुंजर उप्पर सिंघ। सिंह उप्पर दोय पव्वय॥
पव्वय उप्पर अंग। अंग उप्पर ससि सुम्भय॥
ससि उप्पर इक कीर। कीर उप्पर मृग दिठ्ठौ॥
मृग उप्पर कोवंड। संध कंद्रप्प बयठ्ठौ॥
अहि मयूर महि उप्परह। हीर सरस हेम न जर्‌यौ॥
सुर भुअन छंडि कविचंद कहि। तिहि धोषै राजन पर्‌यौ॥
छं० ॥ ११४६॥

दूहा॥ भूल्यौ नृप इन रंग महि। पंग चव्यो हय पुठ्ठि॥
सुनि सुंदर वर बज्जने। अई अपुब्ब कोइ [1]दिट्ठ॥ छं० ॥ ११४७॥
देषत सुंदरि दल मिलनि। चमकि [2]चढ़ौ मन आस॥
नर कि देव किधों नाग हर। गंगह संत निवास॥ छं० ॥ ११४८॥
अरिल्ल॥ बजि बीर निसान दिसान बजी। सु किधों फिरि भद्दव मास गजी॥
सह नाइन फेरि अनेक [3]सजी। सुनि सोर संजोग सु गौष रजी॥
छं० ॥ ११४९॥
चौपाई॥ सुनि सुंदरि बर बज्जन चल्ली। षिन अलपह तलयह मुष भल्ली॥
देषि रंजि संजोगि सु भल्ली। फूलि वाह मुष कुमुदह कल्ली॥
छं० ॥ ११५०॥

पृथ्वीराज और संयोगिता दोनों की देखा देखी होने पर दोनों का अचल चित्त हो जाना॥

स्लोक॥ दिष्टा सा चहुआनं। संमरं कामं संमायते॥

(१) ए. कृ को.- दृष्टि। (२) ए. कृ. को.-चढ़ी। (३) ए. कृ. को. बजी।

कमधुज्ज वर वीरं। विगलति नीवीवनं वसति ॥ छं० ॥ ११५१ ॥
मुरिल्ल ॥ उर संजोइ साल घन मंडं। श्रवन श्रोतान जु लागि चिकंडं ॥
फरन फराक भये षग भग्गे। जनु चंमक लोहान सु लग्गे ॥ छं० ॥ ११५२ ॥

संयोगिता का चित्रसारी में जा कर पृथ्वीराज के चित्र को जांचना और मिलान करना।

मोतीदाम ॥ प्रति बिंब निरष्षि हरष्षिय बाल। लई सषि सथ्य चढ़ी चित्रसाल ॥
साइक्क समान न मौढन मूढ़। समान सु केलि सिंगार सु षोढ़ ॥
छं० ॥ ११५३ ॥
स बुद्धि स बुद्ध अबुद्धि न बुद्ध। चलं चल नेंन सु मेंन निबद्ध ॥
षिनं षिन रूप सरूप प्रसन्न। पुजै किम कोकिल जास रसन्न ॥
छं० ॥ ११५४ ॥
लगी वर जालि न गौषन नाय। लिषी दषि पुत्तलि चित्र समाइ ॥
रही वर देषि टगं टग चाहि। मनों चित्र पास न वै दिन जाहि ॥
छं० ॥ ११५५ ॥
कहै इक नारि संयोगि दिषाई। धरै अंग अंग अनंग जु साई ॥
किधों दिसि प्राचिय भान प्रकार। किधों मन मध्य कै काम अकार ॥
छं० ॥ ११५६ ॥
कि इंद फुनिंद नरिंद्द कोइ। किधों इत लीन संयोगिय सोइ ॥
छं० ॥ ११५७ ॥

संयोगिता की सहेलियों का परस्पर वार्त्तालाप।

दूहा ॥ इक्क कहै दनु देव इह। इक कहै इंद फुनिंद ॥
इक्क कहै अस कोटि नर। इक प्रथिराज नरिंद ॥ छं ॥ ११५८ ॥
सुनि वर सुंदरि उभै तन। उभै रोम तन अंग ॥
स्वेद कंप सुर भंग भौ। नेंन पिपत प्रथुरंग ॥ छं० ॥ ११५९ ॥

संयोगिता के चिबुक बिंदु की शोभा।

त्रोटक ॥ हिय कंप विकंप विपध्य पथं। मनु मंत विराजत काम रथं ॥
कल कंपित कंप कपोल सुभं। अलकावलि पानि उचंत उभं ॥
छं० ॥ ११६० ॥

निज निंदति मंथुर पंथनियं। धव धक्क धकं धक अस्ति हियं॥
सुर भंग विभंग उरांग पियं। रद मंडल पंडल चंपि लियं॥
छं० ॥ ११६१ ॥

निज नूपुर झारि नितंब छियं। रिजु नेह दुनेह त्रिभंग त्रियं॥
चिबुकं चिकु उद्दिम बिंदु धुअं। कटि मंडल हार विहार सुअं॥
छं० ॥ ११६२ ॥

अध दिष्ट उनष्टि कतं तिलकं। बरुनी वर भंगत यौं पलकं॥
सत भाव सतं [1]तिल की कथयं। निज सोजि विलोकि तयं पथय
छं० ॥ ११६३ ॥

हँसि हँस्सिह रम्य करी करयं। सषि सापि परष्षि हँसी हरयं।
छं० ॥ ११६४ ॥

संयोगिता का पृथ्वीराज को पहिचान कर लज्जित होना

गाथा ॥ पिय नेहं विलवंती, अवली अलि [2]गुज नेन दिट्ठाया।
परसान सद्द हीनं, भिन्नं की माधुरी माध ॥ छं० ॥ ११६५ ॥

चन्द्रायन ॥ दुलह जानि अनराइ सु हाइ सुषं अली।
लज्जा गरुअ समुंद अबुड्डन यह कली॥
मरन सरन संजोगि विहत बरनं सचिय।
सहि चहुआन सु बुझ्झिभय पेम सु मंझ चिय॥ छं० ॥ ११६६

संयोगिता का संकुचित होते हुए ईश्वर को धन्यवाद देना और पृथ्वीराज की परीक्षा के लिये एक दासी को थाल में मोती देकर भेजना।

अरिल ॥ सारति संकुल सांवर वीरं। सषि संकुचि भौ लोचन नीरं॥
[1]परसपर संपर भीरन भीरं। कामातुर निट्ठर लगि तीरं॥
छं० ॥ ११६७ ॥

गुरु जन गुर निंदरियं सुंदरि। राज पुत्ति पुच्छियै न दुरि दुरि
अमहि पुच्छि तौ दुत्ति पठावहि। कुन अच्छै पुच्छ विकारि आवहि
छं० ॥ ११६८ ॥

---

(१) ए. कृ. को तिक। (२) ए. कृ. को. गुंजनेव।

चोटक ॥ मन षंचिय सौजुग यौ जविषं। सुमरी मन लज्जिय मात पषं ॥
अध दिष्ट करी चितयौ सु हितं। गुरनी गुर बंधिव गंठि चितं ॥
छं० ॥ ११६९ ॥

चन्द्रायण ॥ जनो गोचर कथ कलंनि कथं कथ अष्पियै।
रस संकहि अंकुरि मान मनं मथ भष्पियै ॥
जान इहै परमान बिधानन लष्पियै।
को मिट्टै संजोग संजोगिन अष्पियै ॥ छं० ॥ ११७० ॥
तब पंगुर राय सु पुत्तिय मुत्तिय थाल भरि।
जौ हिय इह प्रथिराजह पुच्छहि तोहि फिरि ॥
जौ इन लच्छिन सब तत्त्व विचारि करि।
है व्रत मोहि न्रप जीव तौ लेउं सजीव वरि ॥ छं० ॥ ११७१ ॥

कवित्त ॥ दिष्ट फंद संजोग। दासि षिल वारि हथ्थ दिय ॥
म्रग बंधन चहुआन। पुब्ब ओतान षेद किय ॥
पुब्ब रूप गिद्धीव। मद मन मध्य संभारिय ॥
भय म्रग पंग नरिंद। चंद वंधन वन डारिय ॥
हक्कैति हक्क हाका सषिय। भूर गोष अपबंध सिष ॥
वेधंत आनि वानह [1]अभुल। भगुक सीस कोमंग इष ॥छं०॥११७२॥

दासी का चुप चाप पीछे जाकर खड़े हो जाना।

दूहा ॥ सुंदरि धरि श्रवननि सुन्यौ। गुन कढ्ढौ गुनं विद्ध ॥
ठग मग प्रत्ति [2]प्रतच्छि पिय। प्रसनह प्रत्ति प्रसिद्ध ॥छं०॥११७३॥

चन्द्रायन ॥ सुंदरि आइस धाइ निचारन वुल्लइय।
ज्यौं जल गंग हिलोर प्रथीति प्रसंग तिय ॥
कमलति कोमल पानि केलि कुल अंगुलिय।
मनहु अंध दुज दान सु अप्पत अंजुलिय ॥ छं० ॥ ११७४ ॥

पृथ्वीराज का पीछे देखे विना थाल में से मोती ले ले कर मछलियों को चुनाना।

(१) ए.-अभुज। (२) ए. कृ. को.-परषि।

दूहा ॥ अंजुलि जल मंडत न्टपति। जव वित्त गलमुत्ति ॥
जलहल भै भ्रंमन कियौ। पमीति वाल निपत्ति ॥ छं० ॥ ११७५॥
गौप निरष्पहि सुभ्भ त्रिय। हियै हरष्पहि बाल ॥
उभै पानि एकत करिग। देपि गुरज्जन हाल ॥ छं० ॥ ११७६ ॥

थाल के मोती चुक जाने पर दासी का गले की पोत पृथ्वीराज के हाथ में देना। यह देखकर पृथ्वीराज का पीछे फिर कर दासी से पूछना कि तू कौन है और दासी का उत्तर देना कि मैं रनवास की दासी हूं।

छंद नराज ॥ नराज माल छंद ए कहंत कब्बि [३]चंद ए।
अपंत अंजुलीय दान जान सोभ लग्ग ए ॥
मनों अनंग रत्त सेय रंभ इंद पुज्जए।
सु पानि बार थक्कि थाल मुत्ति वित्तए ॥ छं० ॥ ११७७ ॥
पुनेपि हथ्थ कंठ तोरि पोति पुंज अप्पए।
... ... ॥
सुटेरि नैन फेरि रेन तानि पत्ति चाहियं।
तरप्पि दासि पास कंपि संकियं न वाहियं ॥ छं० ॥ ११७८ ॥
भयं चक्यौ भयान राज गात अम्म दिष्पयौ।
कै स्वर्ग इंद गंग में तरंग नित्त पिष्पयौ ॥
अनेक संग रूप रंग जूप जानि सुंदरी।
उछंग गंग मद्धि धुक्कि स्वर्ग पत्त अच्छरी ॥ छं० ॥ ११७९ ॥
हों अच्छरी नरिंद नाहि दासि ग्रेह पंगुरे।
जु तास पुत्ति जम्म छंडि ढिल्लि नाथ अद्दरे ॥
सपन्न सूर चाहुआन मन्न एम जानये।
करी न केहरी न दीप इंद एन थान ए ॥ छं० ॥ ११८० ॥
प्रतप्प हीर जुद्ध धीर जो सुवीर संचही।

(३) मो. चन्दए।

बरंत मान मानि नीच सौ सु देन गंठही ॥
सुनंत सूर अस्व फेरि तेज ताम हंकयं ।
मनों दरिद्र रिद्व पाइ जाय कंठ लग्गयं ॥ छं० ॥ ११८१ ॥
कनक कोटि अंग धात रास बास मालची ।
रहंत भोंर झोर स्यास छत्र तत्र कामची ॥
सुधा सरोज मौजयं अलक्क अखि हल्लियं ।
मनों सयन्न रत्ति रत्न काम पास घल्लियं ॥ छं० ॥ ११८२ ॥
करस्ति काम कंकनं जु पानि फंद माजए ।
जु भावरी सषी सु लाज झुंड सो बिराज ए ॥
अनेक संग डोर रंब रत्त मत्त सल्लियं ।
जु संगही सरोज सोभ होत कंत तल्लियं ॥ छं० ॥ ११८३ ॥
अचार चारु देव सब्ब दोउ पष्प जंपियं ॥
सु गंट्ठि दिट्ठ एक चित्त लोक लीक चंपियं ॥
सु इंद्रनी जु इंद्र जानि गंध्रवी विवाहयं ।
मुसक्कि मंद हासयं ससुष्प दिष्पि नाहयं ॥ छं० ॥ ११८४ ॥
सु अंगुली उचक्कि एक देवतानि सुंदरी ।
मिलंत होय कथ्थ मोहि स्वर्ग वास [1]मंदरी ॥
अनेक सुष्प सुष्प सास जुद्ध साध लग्गियं ।
सुकंत कंति अष्पिता तमोरि मोरि अष्पियं ॥ छं० ॥ ११८५ ॥
दूहा ॥ इहि विध [2]धिरताईं कहत । विद्धिय विद्धि निषद्ध ॥
सुष्प सु विद्धय जान सें । मुष्पह विद्धि निपिद्धि ॥ छं० ॥ ११८६ ॥
दिपन सासु सहस वल्लिय । अरि चम सिंघनि डार ॥
कानिन गन अनभंग है । मत्ति तेन दह च्यार ॥ छं० ॥ ११८७ ॥
चक्रित चित्त चहुआन हुअ । दरसि दासि तन चंद ॥
तन कलंक कट्टन मिसह । जहां रत्न विष वद्द ॥ छं० ॥ ११८८ ॥

दासी का हाथ से ऊपर को इशारा करना और पृथ्वीराज का संयोगिता को देख कर बेदिल होजाना ।

(१) ए. कृ. को.-मंगरी । (२) ए. धिरमाई कृ. को.-धिरनाई कोंह ।

मुरिल्ल ॥ दरसि दासि तन न्टप वर ठढ्ढी। भेद बांच पंडुर तन चढ्ढी ॥
उष्ट कंप जल नैंन जंभाई। प्रात सेज ससि रोहिनी आई ॥
छं० ॥ ११८९ ॥

दासि दिष्ट चहुआन सु जोरी। रूप निहारि उभै दिसि मोरी ॥
इंद्र द्वंद्र रस भरि ढरि चीनो। मनो मुष रोष वारुनी पीनो ॥
छं० ॥ ११९० ॥

करिवर दासि संजोगि दिषाई। दिष्पत न्त्रिप दुरि तन भय गाई ॥
झंकत तुछ्छ तन सब्ब न सारन। सुकल ससि रत्ति हस्स पारन ॥
छं० ॥ ११९१ ॥

दूहा ॥ चंद चमक झंषिम गवष। चंद्र पत्ति दुति मार ॥
मनों बदन चहुआन कौ। वंधति वंदर वार ॥ छं० ॥ ११९२ ॥

संयोगिता का इच्छा करना कि इस समय गठ वंधन हो जाय तो अच्छा हो।

मुरिल्ल ॥ कुसल जोग[1] राजन चित हट किय। जनम पुब्ब प्रथिराज पट्ट किय ॥
बर बिचार बर बाल बुलाइयं। गंठ जोरि ग्रह बर चल्लाइय ॥
छं० ॥ ११९३ ॥

संयोगिता का संकुचित चित्त होना।

दूहा ॥ जौ जंपौ तौ [2]जित्त हर। अनजंपै विहरंत ॥
अहि डढ्ढै छच्छुंदरी। हियै बिलग्गी बंति ॥ छं० ॥ ११९४ ॥

ऊपर से दस दासियों का आकर पृथ्वीराज को घेर लेना।

चन्द्रायन ॥ उतर देन संजोगिय धाइय दासि दस।
चावद्दिसि चहुआन सु बिट्टिय कीय बस ॥
नही कोट दै ओट सु गट्टिय काम कस।
मनु दह रुद्र न विंटि करै मन मध्य बस ॥ छं० ॥ ११९५ ॥

दासियों का पृथ्वीराज पर अपनी इच्छा प्रगट करना।

(१) मो. रोज। (२) ए. कृ. को-चित्त।

दूहा ॥ मुक्कि सुबर चहुआन को । अली सु कहिय जु बत्त ॥
पुब्ब अंक विधि बर लियौ । को मेटै विधि पत्त ॥ छं० ॥ ११९६ ॥
पानि ग्रहन संजोगि कौ । जोइ सु देवनि ग्रेह ॥
यों नथि भाविति भाव गति । मनु पुच पंग सु एह ॥ छं० ॥ ११९७ ॥

संयोगिता की भावपूर्ण छवि देख कर पृथ्वीराज का भी बेबस होना ।

कवित्त ॥ देषि तथ्थ संजोगि । नेह जल काम करारे ॥
हाय भाय विभ्रम । कटाच्छ दुज बहु भंति निनारे ॥
रचित रंग झंकोर । [1]वयन अंदोल कसय सब ॥
हरन दुष्ष द्रुम रुम सिवाल । कुच चक्क वाक सोदि सब ॥
द्रिग भवर मकर बिंबर परत । [2]भरत मनोरथ सकल सुनि ॥
[3]बर विद्दुर न्रपति स्रनाल नें । नन जानो किहि घटिय गुनि ॥
छं० ॥ ११९८ ॥

सखियों की परस्पर शंका कि व्याह कैसे होगा ।

दूहा ॥ मंगल कढि पानि ग्ग्रहन । सुष्य संजोग सु बंक ॥
दिषि विवाह सुस्यौ वदन । ज्यौं मुंदरि ससि पंक ॥ छं० ॥ ११९९ ॥

अन्य सखी का उत्तर कि जिनका पूर्व संयोग जाग्रत है उनके लिये नवीन संबंध विधि की क्या आवश्यकता ।

कवित्त ॥ सुनि सषि सषि उच्चरिय । कोन बंध्यौ अकास मज ॥
अमर न देषे देव । वेद गंध्रब्ब रिषिय सुज ॥
रुषमनि अरु गोविंद । वेद गंध्रव सुप किन्नौ ॥
दमयंती नल व्रत्त । पन्न अग्गं तिन लिन्नौ ॥

(१) ए. कृ. को.-वैन अंदोल कसय सव ।
(२) ए. कृ. को.- भरत मनो मुनि मकल अंग ।
(३) ए. कृ. को. वर विदुर नपति मूनाल्ने नत जानो केहि दाढि लागि ।

योँ रत्त लीन सुंदरति पन। धावि अगें सो सुन्नही॥
संजोगि अंग जो विहि लिष्यौ। सो मिटे न सिर नन धुन्नही॥
छं०॥ १२००॥

दूती का पृथ्वीराज और संयोगिता को मिलाना।

दूहा॥ कहि करि न्रप संजोगि फुनि। दिसि सुहथ्थ बहु लाइ॥
मिलि कमोद सत पत्र रवि। दूती दूह न माइ॥ छं०॥ १२०१

पृथ्वीराज का संयोगिता के साथ गंधर्व विवाह होना।

छनूफाल॥ संजोगि गहि न्रप हथ्थ। मनों सरज जोरित नथ्थ॥
संजोगि न्रप वर राज। उप्पंम कवि वर साज॥ छं०॥ १२०२॥
पदमिनिय पन्न प्रमान। हरु अंपिआन अधान॥
सषि बिंट दंपति सोभ। कविराज ओपम लोभ॥ छं०॥ १२०३
दिषि चंद रोहिनि लास। गइ लास कुमुदनी पास॥
फिरि रंभ आरंभ कीय। न्रप वाम वाम सुलीय॥ छं०॥ १२०४
तन बंध मन दै दान। न्रप छोरि गंठ [१]प्रवान॥
....,.... । .... ॥ छं०॥ १२०५॥

दूहा॥ करि चल्यौ ढीली न्रपति। सुत जयचंद कुमारि॥
गंठ छोर दच्छिन फिरिग। प्रान करिग मनुहार॥ छं०॥ १२०६

पृथ्वीराज का संयोगिता से दिल्ली चलने को कहना।

कहि चल्ल्यौ चहुआन चित। उरझे चित्त सु [२]पथ्थ॥
[३]बद चल्ले प्रथिराज न्रप। हठ संजोगि सु तथ्थ॥ छं०॥ १२०७

स्लोक॥ प्रयाने पंगपुत्री च। जैतिकं जोगिनीपुरं॥
विधि सर्व निषेधाय। तांबूलं ददतं न्रपं॥ छं०॥ १२०८॥

संयोगिता का क्षण मात्र के लिये विकल होकर स्त्रीजीवन पर पश्चाताप करना।

गाथा॥ सुनि इंदो अनुराओ। दिट्ठी रिझाइ सब्ब सो अप्पं॥

(१) ए. कृ. को.-प्रमान। (२) मो.-तथ्थ। (३) ए. कृ. को. बदालि चले।

दै हथ्थं हवि छुट्टा। हाहं जे वज्जनो हियथौ ॥ छं० ॥ १२०९ ॥
हंजेह आह नंषी। कंपी तनपाहं काम संजोइ ॥
निरधा अधार विनसं। या [1]बाला जीवनं कुच ॥ छं० ॥ १२१० ॥
दूहा ॥ नर आसुर सु रंस मन। [2]सबल्ल बंध अबलेह ॥
थान लाज चहुआन कौं। टुट्टिय संकर नेह ॥ छं० ॥ १२११ ॥

दंपतिसंयोग वर्णन।

चौपाई ॥ रति संजोगि जगि उप्पम नेनं। रच्यौ विचारि कब्बि वर मेनं ॥
जोग ग्यान द्रिग पुच्छि उचारै। तौ दंपति रति ओपम मारै ॥
छं० ॥ १२१२ ॥
मेर जेम सो मन सा जानं। जो हत लीय जिही चहुआनं ॥
सुष भरि बेंन नेंन अवलोकं। गंठि बंधि पुब्बह परलोकं ॥
छं० ॥ १२१३ ॥
कह्नं कंति धर मुछि वल बुल्ली। षीन देहु दुति छुट्टी लल्ली ॥
कल अधकी अध छिप्पत मन्नं। रुकि चतुरघ्घि सुकल ससि जन्नं ॥
छं० ॥ १२१४ ॥
मुच्छि परंत प्रजंक प्रसंसी। [3]माइस अद्ध घरी घट चंसी ॥
षोडस आदि कलंकल कंपी। रष्पि सषी सषि सों सपि जंपी ॥
छं० ॥ १२१५ ॥

पृथ्वीराज का संयोगिता प्रति दक्षिण से अनुकूल होजाना।

दूहा ॥ [4]सुनि अंदोअन राव दिठ। रिझ्झाए सब सोइ ॥
फंदह मांहि विछुट्टही। देह जे वज्र न होइ ॥ छं० ॥ १२१६ ॥
वर दच्छिन पुब्बह न्रपनि। भौ अनकूल प्रमान ॥
कंक कन्न अप्पन वावन। पन्न सु धन परिमान ॥ छं० ॥ १२१७ ॥
मुरिल्ल ॥ मन रूषी तन पिंजर पीरे। दंपति दुष जंपति तन तीरे ॥
हरुअ दुष्प सुष सषी प्रगासी। परमहंस गुर वैन सन्यासी॥ छं० ॥१२१८॥

(१) ए. कृ. को.-बाले।
(२) ए.-सबल।
(३) ए. कृ. को.-माइस अद्ध घरी घर संसी।
(४) ए. कृ. को.-सुनि इन्द्रोनव रावदित।

संयोगिता का दिल खोल कर अपने मन की बातें करना, प्रातः काल दोनों का बिलग होना।

कवित्त ॥ दच्छिन बर चहुआन। कीय अनुकूल पिम्म तन ॥
बिरह बाल द्रग उमगि। झंपि कनक क्रप नंधन ॥
न्रप मन धन दच्छिय सनेह। देह दुष काम वाम अगि ॥
ज्यों कुलाल घट अग्गि। पचपयौ उमझि उट्ठि लगि ॥
दंपत्ति नेह दुष दुहुन कहि। बिछुरि साय चक्रवाक जिम ॥
ज्यों सहै दुहन जिहि कुल बधू। काहत साप पंजर सु तिम ॥
छं० ॥ १२१६ ॥

गुरुराम का गंगा तीर पर आ पहुंचना।

दूहा ॥ पहुंचायौ दस दासि न्रप। गंग सपत्तौ ताम ॥
वह दिष्यौ गुरु राज ने। ज्यों रति बिछुरति काम ॥ छं० ॥ १२२० ॥
चौपाई ॥ दिसि गुर राज राज तन चाहं। मनो गजिय उर उज्जल गाहं ॥
दिष्षि सु छबि ढिल्ली चहुआनं। जानै कन्ह सु लछियं जानं ॥
छं० ॥ १२२१ ॥

पृथ्वीराज का गुरुराम को पास बुलाना।

दूहा ॥ बर दंपति दस दासि ढिग। दंद जुदो जनु ब्याह ॥
दुहु दिसि मंगल बज्जिहै। बिच मंगल बरधाह ॥ छं० ॥ १२२२ ॥
तब देषिय गुर राज न्रप। चलि आइय तिहिं पास ॥
मन देषत सीतल भयौ। बढिय राज उर आस ॥ छं० ॥ १२२३ ॥

गुरुराम का आशीर्वाद देकर सब बीतक सुनाना।

दै असीस उच्चारि अज। संभरि संभरि वार ॥
सुभर सूर सामंत सों। पंग सु जुद्ध प्रहार ॥ छं० ॥ १२२४ ॥
कवित्त ॥ बीर हेम झुझ्झयौ। वाम जग्गयौ जु कंक आगि ॥
वर दंपति हथ लेव। बधि बंदी उपंम मनगि ॥
बरसै सब उतरंत। चढ़त सम राज पाज बंधि ॥

कै भगि मगि भन्नि पाल । मंगि बाला जोवन संधि ॥
आचार चार दुहु पष्ष बर । देव देव मिलि जंपइय ॥
भाँवरिय लाज सषि ज्यों जुरिय । धीर बीर [1]मिलि बज्जइय ॥
छं० ॥ १२२५ ॥

पऱ्यौ राव लंगरी । पंग भंजै परधानं ॥
इर्द दमन कूरंभ । परे दुरजन [2]सलषानं ॥
सिंघ मिले संमरह । सिंह न्रिब्बान सभानं ॥
बर प्रताप तूँवर ततार । सकति सुनि न्रिप कानं ॥
रघुबंस भीम जै सिंघ दिनि । भान भष्ष गौ झुल्लयौ ॥
इन परत पंग ढिल्ली बहुअ । न्रिप ढिल्लीस न ढिल्लयौ ॥
छं० ॥ १२२६ ।

गुरुराम का कहना कि सामंतों के पास शीघ्र चलिए ।

दूहा ॥ ढिल्ली वै संभरि न्रपति । बत्त कहंतह बेर ॥
फिरि सामंतन सूर मिलि । करहि न न्रपति अबेर ॥ छं० ॥ १२२७
दुज दासी संयोग पै । कहन सोभ कलिरीय ॥
दे सुराज चहुआन चित । ओडन मुक्किय जीय ॥ छं० ॥१२२८॥

कवित्त ॥ इह सर सुनि सजोगि । जोग पायौ न देव मुनि ॥
तिहि सर सुष्ष न दुप्प । जीत भौटरै जम्म फुनि ॥
रंभा भर जुग्गिनी । गिद्ध बेताल सु कंपी ॥
हंस हंस उड़ि चलै । रहि जल कमल नियंपी ॥
रस बीर विचे सेवाल कच । कित्ति भवर तिहि गंजइय ॥
[3]रत्तय म्रनाल कित्तिय अथय । सूर सुतन मन रंजइय ॥
छं० ॥ १२२९ ॥

दूहा ॥ सुनिय बयन संजोगि कहि । लिपि दिय पट्ट प्रमान ॥
दई करै सो न्रिम्मयौ । मिलन तेह चहुआन ॥ छं० ॥ १२३० ॥

कन्ह का पत्र पढ़ कर पृथ्वीराज का चलना और संयोगिता का दुखी होना ।

(१) ए. कृ. को.-मिलि । (२) ए. कृ. को.सल्यानं । (३) ए. को. इत्तह ।

चौपाई ॥ लै पटि बंचि कन्ह गिरि संगं। चल्यौ न्रपति [1]जुद्ध रस अंगं॥
जिम जिम बर चल्लै चहुआनं। तिम तिम बाल प्रमुक्कै प्रानं॥
छं० ॥ १२३१ ॥

कवित्त ॥ चल्यौ राज प्रथिराज। पास गुर कन्ह मन॥
चिंति स सूर सँजोग। चल्यौ चहुआन राह पन॥
सौ क्रंम दस ता अग्ग। पंग दल रुद्धि जुद्ध बल॥
इक्क कहै [2]प्रिथु पथ्थ। इक्क तप जुत्त जुधिष्ठल॥
रुक्कयौ रतन सा निंद्धि पत। रतन सींह चिहू मग्गि गसि॥
हंकारि सूर सम्हौ फिरिय। संभरि वै कढ्ढीति असि॥छं॥१२३२॥

पृथ्वीराज का घोड़ा फटकार कर अपनी फौज में जा मिलना।

नंषिहै मान नरिंद। बज्जि षुरतार कंपि भुअ।
बज्जघात न्रिघघात। बज्ज संपत्त कंपि भ्रुअ॥
अष्ट सु चल दह विचल्ल। उड्डि बंबर धर धुम्मर॥
बजी सद्द पर सद्द। महतजि रहिग मद्द करि॥
भै चक्क सुभर न्रप बीर बर। लष्षि वीर चहुआन वर॥
[3]बर नचे बीर सुनि कन हँसे। जियत बत्त प्रथिराज नर॥
छं० ॥ १२३३ ॥

मुसलमान सेना का पृथ्वीराज को घेरना पर कन्ह का आड़ करना।

रसावला ॥ राजरुक्के अरी, सिंघ रोहं परी। पंजरं षोलियं, बीर सा बोलियं॥
छं० ॥ १२३४ ॥
षग्ग बंकी कढ़ी, तेज बीयं बढी। बान नष्षं भरं, मोह [4]मंतं झरं॥
छं० ॥ १२३५ ॥
राज बिच सारयं, पंच हज्जारयं। बंक धंकं डनी, बीर नंषे धुनी॥
छं० ॥ १२३६ ॥

(१) ए. कृ. को.-दुद्ध। (२) मो.-प्रथिराज।
(३) ए. कृ. को.-बरनचे। (४) ए. कृ. को.-मत्त जंर।

राषि सज्ज धनं, बौलि पत्त मनं। फौज फट्टी फिरी, कन्ह रुक्के अरी॥
छं० ॥ १२३७ ॥

सामि कट्टे बलं, काज रुद्धं षलं। ...., ... ॥
छं० ॥ १२३८ ॥

सात मीरों का पृथ्वीराज पर आक्रमण करना और पृथ्वीराज का सब को मार गिराना।

कवित्त ॥ सत्त मीर जम सम सरीर। जइ रुक्यौ न्टप अग्गा ॥
राज कन्ह दुज गुरू। सार छल स्हरह लग्गा ॥
नग सम सत्त पुरष्ष। पूर मंचह असि वर पढ़ि ॥
होम जाप जुथ्यौ सु। बीर सरसं प्रहार चढ़ि ॥
सम सेवग सेव सु स्वामि ध्रत। किंत्ति देव संतोष वलि ॥
पॅड अग्ग भाग प्रथिराज कौ। देव भ्रम्म उग्गारि वल ॥
छं० ॥ १२३९ ॥

फिरि पच्छौ चहुआन। बान आरोह प्रथम करि ॥
षां वहिरम वरजही। फुटि टट्टर टरिग्ग धर ॥
बीय बान संधान। षान पीरोज सु भग्गा ॥
पष्पर अश्व पलान। मीर सहितं धर लग्गा ॥
चय बान कमान सु संधि करि। मुगति मग्ग गुन चंद कहि ॥
जल्लाल मीर सम बल प्रचंड। वालि प्रान संमह सढहि ॥
छं० ॥ १२४० ॥

बान चवथ्थै राज। तूटि कंमान पनक्की ॥
उडि गासी छुटि तीर। [1]पंच वहु सद्द भनक्की ॥
इति उत्तरि चहुआन। षग्ग कढि वज्र कि पायौ ॥
दुति उप्पम कविचंद। तीय विक्रम असहायौ ॥
नषि राज बाज उप्पर वसिम। सक्क मीर अवसान चुकि ॥
षग मीर ताप तप्यौ नही। मुक्कि अस हिसि वाम धुकि ॥
छं० ॥ १२४१ ॥

(१) मो.-पंच।

दूहा ॥ हय गय बर गंभीर चढ़ि । नर भर दिसन दिसान ॥
पंग राव कोपिय सुवर । गहन मेछ चहुआन ॥ छं० ॥ १२४२ ॥
रैन परै सिर उप्परै । हय गय 'गतर उछार ॥
मलहु ठग्ग ठग सूरि लै । रहिग सबैं सु छार ॥ छं ॥ १२४३ ॥

पृथ्वीराज को सकुशल देख कर सब सामंतों का प्रसन्न होना ।

मनहु बंध अनभूति धर । द्वै तिन जानत यट्ट ॥
बचन स्वामि भंग न करहि । सह देपहि न्रप बट्ट ॥छं०॥१२४४॥
अवलोकति तन स्वामि मन । भौ सामंतनि सुष्प ॥
हँसहि सूर सामंत मुष । कायर मानहि दुष्प ॥ छं० ॥ १२४५ ॥
धीरत धरि ढिल्लेस बर । बहु दंती उभ 'रोभ ॥
न्रपति नयन तन अंकुरे । मनहु मद्द गज सोभ ॥ छं० ॥ १२४६ ॥

सामंतों की प्रतिज्ञाएं ।

कुंडलिया ॥ देषि सुभर न्रप नेन । आनि भौ आनंद चंद ॥
अरि गंजे रुप न्त्रिप्प । बीर हक्के ग्रह दंद ॥
बीर हक्के ग्रह दंद । मुकति लुट्टे कर रक्षी ॥
आज सामि रन देहि । बरै अच्छरि कुल लक्षी ॥
काम तेज संभरी । देव कंदल जुध पिष्षे ॥
गुरू गल्ह उद्दरै। दुट्टि धारा रवि दिष्षै ॥ छं० ॥ १२४७ ॥

कन्ह का पृथ्वीराज के हाथ में कंकन देख कर कहना यह क्या है ।

दूहा ॥ हरषवंत न्रप भत्त हुअ । मन मझ्झह जुध चाव ॥
मिलत हथ्थ कंकन लष्यौ । कह्यौ कन्ह इह काव ॥छं०॥१२४८ ॥
गगन रेन रवि मुंदि लिय । धर भर छंडि फनिंद ॥
इह अपुब्ब धीरत्त तुहि । कंकन हथ्थ नरिंद ॥ छं० ॥ १२४९ ॥

(१) ए. कृ को.-गज । (२) मो.-रोस ।

हथ्थह कंकन सिर तिलक। अच्छित लगे लिलार॥
कंठ माल तुअ कंठ नहि। कहि न्रप कवन विचार॥छं०॥१२५०॥

पृथ्वीराज का लज्जित होकर कहना कि मैं अपना पण पूरा कर चुका।

चौपाई॥ सुनि सुनि बचन भुमि सिर नायौ। क्रपन दान ज्यौं बंजि दुरायौ॥
पंच पंच अब लीन क चिंतर। छंडित बहि दियौ तब उत्तर॥
छं०॥१२५१॥

बरिय बाल सुत पंगह राय। वह व्रत भंग मोहि हत जाइ॥
तिहि संधहि अब जुद्ध सुहाई। अध्थि अवासह देउं बताई॥
छं०॥१२५२॥

कन्ह का कहना कि संयोगिता को कहां छोड़ा।

तिहि तजि चित्त कियौ तुम पासं। छंडिय कन्ह स्हंत अवासं॥
सौ सुभट्ट महि एक भट होइ। तौ नृप धनहि न मुक्कै कोइ॥
छं०॥१२५३॥

जौ अरि थाट कोरि दल साज। तौ दिल्लिय तषत दैहि प्रथिराज॥
इतनौ नृपति पुच्छियै तोहि। परनि मुक्कि सुंदरि इह होइ॥
छं०॥१२५४॥

पृथ्वीराज का उत्तर देना कि युद्ध में स्त्री का क्या काम।

श्लोक॥ जज्ञकालेषु धर्मेषु। कामकालेषु शोभिता॥
सर्वच वल्लभा बाला। संग्रामे नच गेहिनी॥ छं०॥१२५५॥

कन्ह का कहना कि धिक्कार है हमारे तलवार बांधने को यदि संयोगिता सकुशल दिल्ली न पहुंचे।

चौपाई॥ हम सौ रजपूत र सुंदरि एक। मुक्कि जांहि ग्रह बंधहि तेक॥
जौ अरियन थट कोरि दल साजहि। तौ दिल्लिय तषत दैहि प्रथिराजहि॥
छं०॥१२५६॥

कवित्त ॥ महि मंडन महिलान। जोग मंडन सुष मंडन ॥
दुष वंटन जम त्रसन। नेह पूषनि मन षंडन ॥
काम वंत सोभाय। पूर चित समर विमत्तन ॥
मय मुष दिष्पत मोह। लीन भौ अनुरत रत्तन ॥
संसार सुवरनी सरम रुष। करहि सरन अनमुष्प रुष ॥
अरि धरनि मुक्कि धारन न्नपत। चलहि कित्त जुग एक सुष ॥
छं० ॥१२५७॥

पुनः कन्ह के वचन कि उसे यहां छोड़ चलना उचित नहीं है।

दूहा ॥ जग्गि काल धूम काल कौ। सब्ब काल मोभित्त ॥
पूरन सब सारथ्थ सग। मोकिल ना मोहित्त ॥ छं० ॥ १२५८॥
भर बंकै अच्छरि बरन। रस बंके दिसि बाल ॥
दुहु बंके पारथ करन। चढ्ढि सूरत्तन साल ॥ छं० ॥ १२५९ ॥

पृथ्वीराज के चले आने पर संयोगिता का अचेत होजाना।

चलि चलि सूरति सथ्थ हुअ। [1]रन निसंक मन भोंन ॥
सह अचार मुष मंगलह। मनहु करहि फिरि गोंन ॥
छं० ॥ १२६० ॥

पति अंतर विछुरन विपति। न्नपति सनेह संजोग ॥
सुनत भयौ सुष कोंन विधि। दैव जिवावन जोग ॥ छं० ॥ १२६१॥
मुरिल्ल ॥ पानि परस अरु दिट्ठ विलग्गिय। सा सुंदरि कामागिन जग्गिय ॥
[2]षिन तलपह अलपह मन कीनों। ज्यों बर वारि गये तन मीनौ ॥
छं० ॥ १२६२ ॥

अंगन अंग सु चंदन लावहि। अरु राजन लाजन समुझावहि ॥
दै अंचल चंचल द्रिग मूंदहि। विरहायन दाहन रवि उद्दहि ॥
छं० ॥ १२६३ ॥

फिरि फिरि बाल गवष्पनि अष्पिय। तासिष देंन बेंन बर सष्पिय ॥
विन उत्तर सु मोंन मन रष्पिय। मन बच क्रम प्रीतम रस कष्पिय ॥
छं० ॥ १२६४ ॥

(१) ए. कृ.-को.-नर (२) मो.-षिन तप्पन तलयह।

सखियों की उसे सचेत करने की चेष्टा करना।

कवित्त ॥ बाली विजन फिरन। चंद चारी क्रितम रस ॥
के घन सार सुधारि। चंद चंदन सो भति लस ॥
बहु उपाय बल करत। बाल चेतै न चित्त मय ॥
है उच्चार उचार। सखी बुल्लयति हयति हय ॥
श्रवनें सु नाइ जंपै सु अलि। नाम मंच प्रथिराज बर ॥
आवस निवत्त अगाद भय। तं निबलह द्रिग छिनक कर ॥
छं० ॥ १२६५ ॥

संयोगिता का मरने को तैयार होना, सखियों का उसे समझा कर संतोष देना।

दूहा ॥ तन तज्जै संजोगि पिय। गहि रष्षी फिरि बाल ॥
जानि नष्ठचिन परि गिरी। चंद सरद्दति काल ॥ छं० ॥ १२६६ ॥

अरिल्ल ॥ बहुत जतन संजोगि समाए। साम कमल दिनयर दरसाए ॥
उभ्भकि भ्भंकि दिष्षो प्रन पत्तिय। पति दिष्षत मन महि अलि [1]रत्तिय॥
छं० ॥ १२६७ ॥
व्याह नाथ संजोगि सु लच्छन। जिहि तुम कर साह्यौ वर दच्छिन॥
सा तुश्र तात भए दल तत्तौ। सरन तोहि सुंदरि संपत्तौ ॥
छं० ॥ १२६८ ॥

संयोगिता का वचन।

दूहा ॥ ता सुष मुंदिन मोद किय। अलियन जंपहु आलि ॥
दाधेऊ पर लवन रस। म्रतक न दिज्जै गारि ॥ छं० ॥ १२६९ ॥
अंध न द्रप्पन दिष्षिहै। गुंग न जंपहि गल्ह ॥
अश्रुत नर गान न लहै। अबल न [2]करै मवल्ल ॥ छं० ॥ १२७० ॥
में निषेद किन्नौ जु कथ। दुज अरु दुजिय प्रमान ॥
टरै न गंध्रव गंध्रविय। विधि कौनौव प्रमान ॥ छं० ॥ १२७१ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-रज्जिय। (२) ए. कृ. को. करै।

श्लोक ॥ गुरजनं मनो नास्ति। तात आज्ञा [1]विवर्जितं ॥
तस्य कार्यं विनश्यंति। यावत् चंद्रदिवाकरौ ॥ छं० ॥ १२७२ ॥

दूहा ॥ इह कहि सिर धुनि सपिनि सों। दिपि संजोगिय राज ॥
जिहि प्रिय जन अंगुलि करै। तिहि प्रिय जन किहि काज ॥
छं० ॥ १२७३ ॥

इह चिंतित बत्ती सु सुनि। क्रोध ज्वाल भरि अंब ॥
रही जु लिपिये चित्र मैं। ज्यों सरद्द प्रतिव्यंब ॥ छं० ॥ १२७४ ॥

संयोगिता का झरोखे में झांकना और पृथ्वीराज का दर्शन होना।

कुंडलिया ॥ धुनत गवष्यन सिर लष्यौ। अंबुज मुष ससि अंब ॥
अनिल तेज झलहल कंपै। सरद इंद्र प्रतिव्यंब ॥
सरद इंद्र प्रतिव्यंब। चिंति चतुरानन आनन ॥
निरषि राज प्रथिराज। साज सुंदरि अपकानन ॥
हय सत भट्ट सु भूप। मग्ग भोहैं न गनंतन ॥
मानि विसब्बा वीस। सीस धुनि धुनि न धुनंतह ॥छं०॥१२७५॥

पृथ्वीराज का संयोगिता को मूर्छा से जगाकर कहना कि मेरे साथ चलो।

चौपाई ॥ झंकत न्त्रप दष्षी बर बुल्लै। गंग निकट प्रतिव्यंब सो हल्लै ॥
चिहलै यन्थौ चंद तरपीनौ। कै मृग तिल देषि मन मीनौ॥
छं० ॥ १२७६ ॥

मुच्छि बाल संजोगि उठाई। देवर तर दिसि दिसि पट्ठाई ॥
कै ओतान सूर सुनि झूठे। कै कातर अबहीं न्त्रिप दीठे ॥
छं० ॥ १२७७ ॥

दूहा ॥ ए सामंत जु सत्त कहि। पंग पुति घटि मंत ॥
एक लष्प भर लष्पियै। जै कट्टै गज दंत ॥ छं० ॥ १२७८ ॥

(१) मो.-नर्जितं।

गाथा ॥ मदनं सरा लति विविहा। जिव्हा रटयोति प्रान [1]प्रानेसं ॥
नयन प्रवाहति विवहा। अह वांमा कंत कथ्थायं ॥छं०॥१२७९॥

आर्या ॥ कहु लोभा सो चंद लासौ। मन मध्यं पहु पांजलि ॥
बरन मान निसा दिवसे। धुनयं सीस जो मम ॥ छं० ॥ १२८० ॥

संयोगिता का कहना कि मैं कैसे चलूं यदि लड़ाई में मैं लूट गई तो कहीं की न रही।

दूहा ॥ किम हय [2]पुट्टहि आरुहौं। घटि दल संगह राज ॥
भीर परत [3]जो तजि [4]चल्यौ। तब मो आवै लाज ॥छं०॥१२८१॥

पृथ्वीराज का कहना कि मेरे सामंत समस्त पंग दल का संहार कर सकते हैं।

तब हंसि जंप्यौ न्रप बयन। गहर न करियै अब्ब ॥
सब्ब पंग दल संहरों। सुंदरि लाज न तब्ब ॥ छं० ॥ १२८२ ॥

संयोगिता का कहना कि जैसा आप जाने पर मैं तो आपको नहीं छोड़ सकती।

कवित्त ॥ सुंदर जंपै बैंन। ढीठ दिल्लिय नरेस सुनि ॥
कहहि सूर सामंत। पवन हलहि पहार फुनि ॥
अजहौं अलियों चवै। गंठि दैहै [5]सु जंम कहु ॥
जो सहै सुरलोक। लहहि अच्छरि नन संकहु ॥
इह चित्त कंत इच्छहि बहुल। बहु समृह भुज बल काहहि ॥
संदेह सास संभरि धनी। पत्तन प्रान पच्छै लहहि ॥
छं० ॥ १२८३ ॥

(१) मो.-प्रानेव।
(२) ए. कृ. को.-पुट्टी। (३) ए. कृ. को.-मुहि। (४) मो.-चल्यौं।
(५) ए. दाम।

गाथा ॥ अवलोकित न्त्रप नयनं। वचनं जिव्हा सु कातरा सामी॥
निंदा सह स्तुत माने। घोरं संसार पातकी॥ छं०॥ १२८४॥

संयोगिता का जैचन्द का बल प्रताप वर्णन करना।

कवित्त॥ सिंगारिय सुंदरिय। हास उपजत वर मद्दह॥
करुना वुलि इहि वीत। रुद्र कामिनि कथ वद्दह॥
बीर कहत गंध्रब्ब। भयो भामिनी भयानक॥
वीभच्छिय संग्राम। मनहि आचिज्ज सयानक॥
छिन संत मंत इय कंत तुअ। पिय विलास दिन करि करिय॥
इम कहै चंद बरदाय वर। कलहकंत तुअ तौ डरिय॥छं०॥१२८५॥
जे पड्डुरी बिमान। तेह पड्डुरी बिमानह॥
जे सारंग करार। तेह सारंग करारह॥
जिहि कित्तिय गय कोस। तेह कित्ती गय कोसह॥
जिहि गय सघन सरोस। तेह गय सघन सरोसह॥
बिल्लोर पयोहर गै मलन। मलन विलोर पयोहरह॥
जयचंद पयानौ परठयौ। भा भुअ हुअरु वसंत रह॥छं०॥१२८६॥
करत पंग पायान। षेह उड्डत रवि लुक्कै॥
महुरैजल पुट्टै सु। पंक सरिता सर सुक्कै॥
पानौ ठाहर षेह। एह उड्डती विराजै॥
बर पयान छावंत। भान [1]सिर पट्ट कविज्जै॥
दिगपाल कंपि हल्लि दसो दिस। सेसपयानौ नहि सहै॥
बर न्त्रपति सीस ईसं सु सुनि। भौ पंगुर तातें कहै॥छं०॥१२८७॥

संयोगिता प्रति गोइन्दराय का बचन।

हे कमधज्ज कुमारि। कहै गोयंद राज बर॥
जे भर पंग नरिंद। सबैं भंजों अभंग [2]षर॥
सम सामंत सहित्त। जंग जैचंदह मंजौं॥
जब कोपै चहुआन। षग्ग मैमत्त विहंडौं॥

(१) चारों प्रतियों में "कूट" पाठ अधिक है। (२) ए. कृ. को.-पक।

जदपि बहुत्त गोमाय गन। तदपि म्रग्गपति नह डरै॥
ममसंकि चित्त चिंता न करि। पहुचाऊं दिल्ली घरै॥छं०॥१२८८॥
चढ़त पंग बर वीर। नाग बर वीर दढिय अहि॥
जिहि कर करिवर धरिय। घरिय ते भार विदुष महि॥
चित्त करिग कुंडली। अप्प पोषंन बाय बर॥
कर कढ्ढिरु कलिवान। नाहि धारंत इक्क कर॥
जिनि पहुमि मनी मनि सहस फन। सो फनि फुनि फुनि फनि धरिय॥
जानें कि हथ्थ तत्ते कि त्रिय। सुबर भाजि कर कर करिय॥
छं०॥ १२८९॥

हाहुलिराय हम्मीर का बचन।

दूहा॥ हाहुलि राव हमीर कहि। सुनि पंगानी बत्त॥
एक भिरै असि लष्प सों। सो भर किमि भाजंत॥छं०॥१२९०॥

संयोगिता का बचन।

कवित्त॥ कोरि एक चंचल। चलंत हवर बर पष्पर॥
ता उप्पर दस सहस। वालि जिसे असि होइ जलच्चर॥
सोलह सहस निसान। सहस सत्तरि गैवर घन॥
तीस लष्प गेंवर प्रचंड। पग्ग फारक्क न्रभै तन॥
चालंत सेन विजपाल सुअ। पहुमि भार फनयति मुरिय॥
कह होइ सूर सामंत हो। पंग सु दल वल उप्परिय॥छं०॥१२९१॥

चंदपुंडीर का कहना कि सब कथा जाने दो यज्ञ विध्वंस करने वाले हमी लोग हैं या कोई और।

चवै चंद पुंडीर इम। कह वल कथ्थह पुब्ब॥
पंग पंग पग नरिंद कौ। जग्य विध्वंस्यौ सब्ब॥ छं०॥१२९२॥

यह सुनते ही संयोगिता का हठ छोड़ना।

सुनत बाल छंड्यौ सु हठ। वर [1]चढ्ढी द्रिग वंक॥

(१) ए. कृ. को. टट्ठी।

किधौं बाल सन सोहिनी। कै बिय उदित मयंक ॥ छं० ॥ १२६३॥

कन्ह वचन कि स्वामी की निंदा सुनना पाप है, हे पंग पुत्री सुन।

कवित्त ॥ सुनिय वचन वर कन्ह। सीस धुनि धुनि फुनि जंपिय ॥
अग्ग जियन स्रत सब्ब। [1]पिंड वेचिय उर थप्पिय ॥
मन्न वचन तन रत्त। अस्स छुट्टै सुष भग्गा ॥
गरुअ पान जो जियन। जूह जीयन तुछ लग्गा ॥
सो अम्म छचि रष्यन [2]सु तन। जो सांमि निंद कानन सुनैं ॥
कातर वचन संजोग सुनि। जौ परन आन रष्यै [2]ननैं ॥छं०॥१२६४॥

कन्ह का बचन कि मैं अपने भुजबल से ही तुझे दिल्ली तक सकुशल भेज सकता हूं।

हे प्रथिराज वामंग। संग जौ कन्ह नन्ह दल ॥
हौ चहुआन समथ्थ। हरू[3]रिपु राय भुजन वल ॥
मोहि विरद नर नाह। दंद को करै[4]भुअन वर ॥
मो कंपहि सुरलोक। पंति पन गरू भूमि नर ॥
मम कंपि चंपि सुंदरि सु पहु। चढ़िग कोटि कायर रषत ॥
इन भुजन ठेलि कनवज्ज कों। तों अप्पों ढिल्ली तषत ॥छं०॥१२६५॥
तेग छोरि जद्दवन। सोंह सिर धरि करि कथ्थिय ॥
इहै सत्त सामंत। भूमि शृंगार भरथ्थिय ॥
अतुलित बल अतुलित प्रमान। अतुलित बलदेवह ॥
अतुलित छिति छचि न गियान। स्वामित्त सु सेवह ॥
देषहि न राज बंसहि विलगि। कलह केलि कलहंत पिय ॥
अबलत्त छंडि मन सबल करि। बिघर राग सिंधूव किय॥छं०॥१२६६
सुनि उच्चरि गोयंद। गरुअ गहिलौत राज बर ॥

(१) मो.-सुथन। (२) ए. कृ. को.-तनै। (३) ए. कृ. को.-हगे।
(४) मो भुजन।

बीर पंग लगि धीर। लग्गि को छरन छिन्न कर॥
जुद्ध जूह पहु पंग। करिग गौ पैज सूर सर॥
सबर सेन भर अग्ग। धाय दुअ लग्गि सेन धर॥
जद्दप्पि सु रहि रष्षै अलष। अरकु तदपि रहि हन सरै॥
जद्दपि अगनि सम्हौ बलै। जीरन अग उंछी परै॥छं०।१२६७

चंदपुंडीर का कहना जिस पृथ्वीराज के साथ में निड्ढुरराय सा सामंत है उसके साथ तुझे चिंता कैसी।

कहै चंद पुंडीर। सूर नहि सूर घरघ्घर॥
घास लगै नन सस्त्र। भजै आभंग मंच बर॥
पंग पान बुट्टंत। तन्न भज्जैन ज्वाल पर॥
प्रथी जेम वल अवृन। संग चतुरंगी निड्ढुर॥
निमषेक निकष वर ब्रह्म कौ। दौरि जुगी वहुतें जुषल॥
असि प्रान मान सामंत कौ। न्रिप सुंदरि नन चिंति बल॥
छं० ॥ १२६८ ॥

राम राय बड़गुज्जर का बचन।

प्रति सुंदरि न्रप काज। कनक बोल्यौ बड़ गुज्जर॥
हरि चक्कह सहज वत्। जाल नन रहै बुद्धिवल॥
कोट क्रम्म संजवत। अंति भज्जै हरि नामं॥
नीर परस संजवत। मैल नन रहै विरामं॥
नन रहै गुनी अग्गैं अवधि। सिध अग्गै सिद्धि न रहै॥
संजोग जोग भंजंन क्रम। राह सूर चंपिरु ग्रहै॥ छं० ॥ १२६६॥

आल्हन कुमार का बचन।

तव बोलै अल्हन कुमार। सव्व ब्रहमंड वीर वर।
जिहि मिलंत भर सुभर। होहि तन मत्त वीर मर॥
मिलै सरित सब गंग। होइ गंगा सव अंगा॥

(१) मो-आरा।

भग्गै सब परपंच। मिलै ब्रह्म ब्रह्मह मग्गा॥
ऐसे सुबीर सामंत सौ। ढील बोल बोलै बदन॥
जानै न बत्त बर बंध की। पहुंचावै ढिल्ली सुधन॥छं०॥१३००॥

सलष पँवार का बचन।

बोलि सलप पांवार। पार लभ्भ्यौ न सस्त्रबल॥
ब्रह्म पार पायौ न। रूप अबरेप रूप कल॥
मेघ सोय आग्राज। पार वायन में धारिय॥
सो कहि असति चरित्त। ब्रत पापॅड अधिकारिय॥
सौ जुभ्झ्झ पार धारह धनी। जुद्ध पार लभ्भ्यौ न दोउ॥
तिहि सत संजोगि सुहै प्रलै। प्रलै राज ढिल्लीव सोउ॥छं०॥१३०१

देवराज बग्गरी और रामरघुवंस के बचन।

देवराज बग्गरी। बीर बाल्यौ विह से बर॥
* .... ॥छं०॥१३०२।

कहै राम रघुवंस। सुनहि संजोगि बाल बर॥
पंग प्रलै संमूह। जगत बुभ्झन न्नप कग्गर॥
बरष सात सामंत। सोभ पत्तिन पररुष्पं॥
बर दंपती 'निसंक। सस्च भग्गा न विसुष्पं॥
नल कमल मांहि कंद्रप रहै। पति रष्पै चहुआन इम॥
दिषि बत्त सति संयोग इह। तब सु प्रलै सासहित क्रम॥
छं० ॥ १३०३॥

पुनः आल्हन कुमार का बचन।

फुनि जंप्यौ अल्हन कुमार। सुनि सुंदरी सूर बल॥
बर अगनित अंजुली। पंग सो सै समुंद दल॥
सार मेघ बुट्ठतैं। बीर टट्टी विच्छोरै॥
बर दंपति संयोगि। बंधि दल गौत न जोरै॥

---

* छं: १३०२ की चारों प्रतियों में केवल एक ही पंक्ति है शेष पंक्तियां हैं ही नहीं।

(१) ए. कृ. कों.-न सक।

उप्पारि ससत्र गो व्रह्मनह । न्रिप रषि वज्री जेम काल ॥
कमधज्ज इंद बुट्टै म्र पुनि । सुमन संच जानैं अकाल ॥छं०॥१३०४

पल्हन देव कच्छावत का बचन।

पल्हनदे कूरंभ । लाज बड पन बड बीरं ॥
न्रिप लग्गै नन अंच । पंच जौ पंच सरीरं ॥
सोम नंद संभरी । सूर सो भ्रम्म न होई ॥
सौ मे एकज होइ । तेज मुक्कै ग्रह जोई ॥
इक अग्ग पंच जौ सत्त है। सत्त मेर सत जीन तजि ॥
नन डरहि चलहि प्रथिराज सँग । रषत कोटि कायरह सजि ॥
छं० ॥ १३०५ ॥

संयोगिता का बचन कि यह सब है पर दैव गति कौन जानता है।

तब कहंत संजोगि । इक्क बन मभ्झ सरोवर ॥
तहं पंकज्ज प्रफुल्लि । सरस मकरंद समोभर ॥
आय इक्क मधु करह। तथ्थ विस्रामि गुंजा रत ॥
रैंनि प्रपत्तिय ताम । रह्यौ मधि [2]भंवर विचारत ॥
ह्वै है विक्तित जामनि सबै । तबै गमन इह वुद्ध किय ॥
विन प्रात होत विधि इह करिय। से कलिका गजराज लिय ॥
छं० ॥ १३०६ ॥

दाहिमा नरसिंह के बचन कि सुन्दरी वृथा हमलोगों का क्रोध क्यों बढ़ाती है। कहते हैं कि सकुशल दिल्ली पहुचावेंगे।

तव दाहिम नरसिंघ । [1]सिघ वुलत्यौ वंचाइन ॥
सुनिय वचन सुंदरी । ज्वाल उट्ठी लगि पाइन ॥
इन दष्षित संजोगि । जोग जिन मग्ग प्रहारै ॥
इन परच्छै बलदेव । जम्म गति दिष्षि निहारै ॥

(१) ए. कृ. को. गुंजारं । (२) ए. कृ. को.-बरे ।

उड्डरों बीर दंपति दुहुनि। सरस मदह्हम मथ्थियसै॥
चलि सथ्थ राज प्रथिराज कै। मुकति भुगति हम हथ्थलै॥
छं० ॥ १३०७॥

पुनः सलष का वचन।

सु बर बीर पामार। सलष बुल्ल्यौ प्रति धारं॥
जग्गि जलनि कमधज्ज। जोग जीवन जग तारं॥
ए अमंत सामंत। भज्जि जानै न अभंग अपु॥
वज्र सार झल्लै प्रहार। निश्चलित सार वपु॥
जं करै गहर संजोगि सुनि। मुगति गहर वित्तिय घरिय॥
(१)जग्गाय पंग दिष्षै दलं। रपित कुंअर केअरि फिरिय॥
छं० ॥ १३०८॥

सारंगदेव का बचन।

सारंग सारंग बीर। बीर चालुक्क उचारिय॥
षग्ग मग्ग बो हिथ्थ। मरन जिहि तत्त विचारिय॥
बीच राज प्रथिराज। सूर चावद्दिसि चल्लै॥
ज्यों सिर मग धुअ झाल। भूअ सामंत न डुल्लै॥
संजोगि करिन कायरह तौ। पहुँचावै ढिल्ली घरह॥
प्रथिराज ग्रहै जो पंग बर। तौ पंग सूर एकत धरह॥ छं०॥१३०९॥

रामराय रघुवंसी का बचन।

तब रायां रघुवंस। जनक उच्चै उच्चारिय॥
हम निकलंक छचीय। जुद्ध बर जुद्ध विचारिय॥
जे मेरें कुल भए। हुए ते षंड तन झुझ्झर॥
मत्ति सस्त्र हसुमंत। बीर जंपिहि बड़ गुज्जर॥
संजोगि वचन कातर कहिग। सहिग प्रान मझ्झह रहिग॥
हम अग्ग पंग कच्छून बर। जम कंपत षग्गह गहिग॥ छं०॥१३१०॥

(१) ए कृ को.-जग्गवै।

भोंहाराव चंदेल का बचन ।

भोंहा राव नरिंद । बीर उच्चरि बीरत्तं ॥
पै लच्छिन बतीस । पंग पुची घटि मत्तं ॥
तिहि इक लछिन हीन । बही लछिन नन सष्पै ॥
एक एक सुरइंद्र । आइ दुज्जन दल भष्पै ॥
सत कोस पंच घटि थांन न्टप । हमह सत्त छह अग सुभर ॥
इक इक्क कोस इक इक्क भर । पहुंचावै संयोगि बर॥छं० ॥१३११॥

चंदपुंडीर का बचन ।

तब कहि चंद पुंडीर । मतौ सुनि सख्च सूर बल ॥
लष्ष एक लष्षियै । एक भंजैति लष्ष दल ॥
बल अगनित अति जुद्ध । पंग जीरन तिन सेनं ॥
दावा नल सामंत । सस्त्र मारुत बल देनं ॥
ढंढोरि ढाल गजदंत कढि । कवल पीर कन्हति वर ॥
नष्षै सु बाजि गम भीम दुति । पंग सेन प्रथिराज भर ॥
छं० ॥ १३१२ ॥

निढ्ढुरराय का बचन कि जो करना हो जल्दी करो बातों में समय न बिताओ ।

तब निढ्ढुर उच्चरिय । सब्ब सामंत राज प्रति ॥
पंग सेंन [1]निरदरहु । ग्रब्ब बोल्यौ सुदेवभित ॥
मन मथी गोविंद चंद । होइ न कहि कालं ॥
मन पुच्छिह कहौ जीह । काल घत्ते जिहि जालं ॥
जौ करै ढील ढिल्ली धनी । तौ जुग्गिनिपुर जल हथ्य दै ॥
सत पंड जीह जंपत वारौ । पै चल्हि राज इह लाल दै ।।छं०॥१३१३॥
मानि मत्तौ सब सेन । गरुत्र गोयंद कन्ह कहि ॥
सुजै अप्प जो चलै । चलै हम हथ्य रंभ ग्रहि ॥
जो अप्पन आभंज । सबल बंधी अब बंधी ॥

(१) ए कृ को.-निरदरे ।

ढील न करि सुंदरी । लीह अलधं कल संधी ॥
ढंढोरि ढाल पहुपंग दल । तन अरत्त जिम तोरियै ॥
पहुंचाय सांमि ढिल्ली धरा । जम्म जजर तन जोरियै ॥ छं० ॥ १३१४ ॥

संयोगिता के मन में विश्वास हो जाना ।

दूहा ॥ बाले बल सामंत कलि । देखि सूर सम चित ॥
इन जु हीन बल [1]जंपियै । [2]धिकत बुद्धि इन वृत्त ॥ छं० ॥ १३१५ ॥

संयोगिता का मन में आगा पीछा विचारना ।

चंद्रायना ॥ बचन सुनिय कनि बाल बिचारत सोचि मन ।
माया गुरजन चित्त विगोवत वेर तिन ॥
* .... ॥ छं० ॥ १३१६ ॥

अरिल्ल ॥ सुबर चंद औपम लिय कथ्यं । ज्यों कुछ वधु वर इंद्री अपहथ्यं ॥
† .... ॥ छं० ॥ १३१७ ॥

संयोगिता का पश्चाताप करके राजा से कहना कि हा मेरे लिये क्या जघन्य घटना हो रही है ।

कवित्त ॥ बाल कहिग संजोगि । पुब बंधी सु गंठि वर ॥
रिष सराप अरु देव । काज भौ भरन मरन भर ॥
स्वरग मग्ग रुक्कयौ । मरन संभरि चहुआनं ॥
केवल कित्ति सु कंत । रंभ बर बरनन पानं ॥
बंधई गंठि संभरि धनी । अब इत्तिव अंतर रहिय ॥
सामंत सूर संभरि सु कथ । न्निपति सु दंपति इम कहिय ॥
छं० ॥ १३१८ ॥

राजा का कहना कि इस का विचार न करो यह तो संसार में हुआ ही करता है ।

चंद्रायना ॥ राज सेन दे नैन समझिझय चंद कबि ।

(१) ए. कृ. को.-चंपिये । (२) मो.-ध्रिग बुद्दि दय वृत ।
* यह छंद चारों प्रतियों में आधा है । † चारों प्रतियों मे ऐसा ही है ।

सुनि संजोग इह जोग बुझ्झि मन दुष्प हवि ॥
आंसू भरि छह [1]सात [2]अगनि भेज पबर पंग।
रहै गल्ह जुगजाइ सब्ब संमूह नर ॥ छं० ॥ १३१९ ॥

संयोगिता का कहना कि होनी तो हुई सो हुई परंतु चहुआन को चित्त से नहीं भुला सकती।

कवित्त ॥ सुंदरि सोचि सु चित। प्रथम व्रत लियौ राज बर ॥
बरजि मंत पित बंध। बरजि गुर जन छोनी धर ॥
तात जग्य बिग्गरि। भ्रम्म लोपे सु लीह कुल ॥
सहस सुष्य अपहास। हीन भय दीन पलति पल ॥
कर तारह जे लिषिय कर। स्वांमि द्रोह बर बिछुरन ॥
मै लीन भाव भावी विगति। नन मुक्कौं चहुआन मन॥छं०॥१३२०॥

पृथ्वीराज का संयोगिता का हाथ पकड़ कर घोड़े पर सवार कराना।

दूहा ॥ परनि राव ढिल्लीं सुपहि। ग्रहि लीनी कर वांम ॥
सम संजोगि न्रप सोभियत। मनहु बने रति कांम ॥छं०॥१३२१॥
चंद्रायना ॥ सुंदरि सोचि समुझ्झत गह गद्द कंठ भरि।
तबहि पानि प्रथिराज सुषंचिय बाह करि ॥
दिय हय पुट्ठहि भोर सु सब्ब सु लच्छनिय।
करत तुरंग सुरंग सु [3]पुच्छनि वच्छनिय ॥ छं० ॥ १३२२ ॥

अश्वारोही दंपति की छवि का वर्णन।

कवित्त ॥ हय संजोगि आरुहिय। पुट्ठि लग्गौ सु वांम नृप ॥
पति राका पूरन प्रमांन। अरक बैठे सुन्हर विप ॥
काम रित्तु रहि चढी। काम रति दंपति राजं ॥
कै विद्रुम हिम संग। वियन ओपम [4]छपि साजं ॥

(१) ए. कृ. को. बार। (२) मो.-अगनि भेजे जु पंगवर।
(३) ए. कृ. को.-पुच्छनिय। (४) ए. कृ. को. छिति।

सामंत सूर पारस नृपति। मधि सु राज राजंत बर ॥
ग्रह सत्त भान ससि बिंटिकै। दिपत तेज प्रथमी सु पुर ॥छं०॥१३२३॥

संयोगिता सहित पृथ्वीराज का व्यूह वद्ध होकर चलना।

पंग पुत्ति आरुहिय। सूर चावद्दिसि रष्षे ॥
दिसि ईसान सु कन्ह। पंग पंधार विलष्षे ॥
केहरि वर कंठेरि। पंग पहुरै सो मुक्यौ ॥
पुब्ब सेन निड्डुर नरिंद। धाराहर रुक्यौ ॥
अगि नेव बीर पहु पंग कौ। धार कोट ओटह, सुभर ॥
पांवार धार धारह धनी। सुजस लष्प लष्पन सुवर ॥छं०॥१३२४॥
दिसि दच्छिन लषन कुआर। सार पाहार पंग छल ॥
भौंहा राव नंरिद। सांमि रष्षे रुकि कंदल ॥
नयन रत्त दल सिंघ। रिंघ रष्पन कमधज्जी ॥
बर लच्छन बघघेल। सार सारह भुअ छज्जी ॥
दिसि मरुत बीर बर सिंघ दे। लष्प सेन आरुहिय रन ॥
बर बंध बरुन साई सु पथ। जम विसाल कंपन डरन ॥छं०॥१३२५॥
दिसि उत्तर गषर गुरेस। रनह रुद्व रावत बर ॥
उभै स्वामि षल और। छंडि मदसुष्य भेष बर ॥
दिसि पच्छिम बलिभद्र। [1]जांम जद्दव अवरोही ॥
दई दुवाह दो बीर। रंभ रंभन मन मोही ॥
सुरपत्ति समासै नग डुलै। दुहूं दिसा जै उच्चरिय ॥
सामंत सूर रषे नृपति। पंग राय पारस फिरिय ॥ छं० ॥ १३२६॥
कोट पंग आरुहिय। नीम कित्तिय थह मंडिय ॥
थंभ सूर सामंत। अटल जुग ससि सिष छंडिय ॥
वर चिनेत अरु प्रेत। ताल तुंमर नारद पढ़ि ॥
देव रूप प्रथिराज। लच्छि संजोगि वाम गढ़ि ॥
कामना मुकति अप्पै तही। जो बीर रूप संचै धयौ ॥
सेवै जु सूर औ सूर मिलि। पार बरी तारन भयौ॥छं०॥१३२७॥

(१) मो.-भान।

पंग दल में घिरे हुए पृथ्वीराज की कमल-संपुट भौंरे की सी गति होना।

आर्या ॥ एकथ्थोय संजोई। एकथ्थौ होइ समर नियोसौ ॥
अलि लेय यथा पदमं। अंदोलए राज रिदएवं ॥ छं० ॥ १३२८ ॥
दूहा ॥ मन अंदोलित चंद सुष। दिषि सामंत सरुष्प ॥
अंदोलित प्रथिराज हुअ। सिर कढ्ढिय सुष दुष्प ॥ छं० ॥ १३२९ ॥

पृथ्वीराज के हृदय में यौवन और कुल लज्जा का झगड़ा होना।

वय सु लग्गि एकंत करह। कक्कार लग्गिय लाज ॥
वय जुग्गिनि पुर चलि कहै। लाज कहै भिरि राज ॥छं०॥ १३३० ॥
चौपाई ॥ वै सुष सब्ब सँजोगि बतावै। राज मरन दिसि पंथ चलावै ॥
दोई चित्त चढी बर राजं। वै बिलास मरनं कहि (१)लाजं ॥
छं० ॥ १३३१ ॥

वय भाव।

दूहा ॥ मिष्टानं बर पान भय। नव भामिनि रस कोक ॥
अमर राइ (२)इच्छति सवै। लाज सुष्प पर लोक ॥ छं० ॥ १३३२ ॥

लज्जा भाव।

चौपाई॥सो तजि मति चोहान सुजाई। ज्यों जलबिंदु सब किति समाई ॥
तौ तिय पन वय तज्जि दिषाई। तिन जिय जाहु ये लज्जन आई॥
छं० ॥ १३३३ ॥

वय विलासिता भाव।

दूहा ॥ सुनत वचन लज्जिय वयह। उत्तर दीय न लज्ज ॥
वै विलास उत्तर दियौ। अज्जु लज्ज हम कज्ज ॥ छं० ॥ १३३४ ॥

पृथ्वीराज के हृदय में लज्जा का स्थान पाना।

वै सुष कोपि प्रमान से। मुक्किय जुगति जुगत्ति ॥

(१) ए. रु. को.- काजं। (२) ए. कृ. को.-इच्छैनि कै।

ए [1]हलका दंतीन के । धार उज्जल कंति ॥ छं० ॥ १३३५ ॥
वैतन कुरषि निरण्षयौ । लाज सु आदर दीन ॥
कलि नारद नीरद कवि । प्रगट करहु हम कीन ॥ छं० ॥ १३३६ ॥

कवि का कहना कि पंग दल अति विषम है।

कहत भट्ट दल विषम है। तुहि दल तुच्छ नरिंद ॥
परनि पुक्ति जैचंद की । करहि आइ ग्रह नंद ॥ छं० ॥ १३३७ ॥

पृथ्वीराज का वचन कि कुछ परवाह नहीं मैं सब को विदा करूंगा।

झुकित राज उत्तर दियौ । सो सथ सत्त सुभट्ट ॥
हूं चहुआन जु संभरी । भुज ठिल्लौ गज थट्ट ॥ छं० ॥ १३३८ ॥

कविचंद का पंग दल में जाकर कहना कि यह पृथ्वीराज नव दुल्हिन के सहित हैं।

चल्यौ भट्ट संमुह तहां । जहं दल पंग अरेस ॥
जो इंछै नृप तुज्झ मन । टट्टौ षेत नरेस ॥ छं० ॥ १३३९ ॥
परनि राइ ढिल्लिय सु मुष । रुष किन्नौ मन आस ॥
कहौ चंद न्रप पंग दल । जुद्ध जुरै जम दास ॥ छं० ॥ १३४० ॥
चढिग सूर सामंत सह । न्रिप अम्मह कुल लाज ॥
सुहर समुह दिष्षहि नयन । चिय जु वरिग प्रथिराज ॥ छं० ॥ १३४१ ॥
गयौ चंद न्रप बयन सुनि । जहं दल पंग नरिंद ॥
अरि आतुर अरिग्रहन कौ । मनों राहु अरु चंद ॥ छं० ॥ १३४२ ॥

अंतरिक्ष शब्द (नेपथ्य में) प्रश्न।

श्लोक ॥ कस्य भूपस्य सेनायां । कस्य बाजित्र बाजनं ॥
कस्य राज रिपू अरितं । कस्य संन्नाह पष्षरं ॥ छं० १३४३ ॥

उत्तर।

दूहा ॥ छलि आयौ चहुआन न्रप । भट्ट सथ्थ प्रथिराज ॥
तिहि पर गय हय पष्षरहि । तिहि पर बज्जत बाज ॥ छं० ॥ १३४४ ॥
गाथा ॥ सा याहि दिल्लि नाथो । सा यंतु जग्य विध्वंसनौ ॥
परनेवा पंगपुत्री । जुद्ध मांगंत भूषनं ॥ छं० ॥ १३४५ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-ए हेला देतीर के।

चहुआन पर पंग सेना का चारों ओर से आक्रमण करना ।

दूहा ॥ सुनि श्रवननि चहुआन को । भयो निसानन घाव ॥
जनु भद्दव रवि अस्त मनि । चंपिय बद्दल बांव ॥ छं० ॥ १३४६ ॥

प्रकोपित पंगदल का विषम आतंक और सामंतों की सजनई ।

भुजंगी ॥ भरं साजतें धोम धुम्मै सुनंतं । तहां कंपियं केलि तिय पुर कँपंतं ॥
तहां डमरु कर डहकियं गवरि कंतं । तिनं जानियं जोग जोगादि अंतं ॥
छं० ॥ १३४७ ॥

तबं कमक मिरु सेस सिर भार सहियं । तहां क्रिम सु उच्चास रवि रथ्य सहियं ॥
तहां कमठ सुत कमल नहिं अंबु लहियं । तबै संकि ब्रह्मान ब्रह्मंड गहियं ॥
छं० ॥ १३४८ ॥

[1]उनं राम रावन्न कवि किन्न कहता । उनं सकति सुर महिष बल धन्न लहिता ॥
मनों कंस ससिपाल जुर जमन प्रभुता । तिनं भ्रम्मियं एम भय लच्छि सुरता ॥
छं० ॥ १३४९ ॥

भरं चढ़ियं सूर आजान बाहं । तिनं तुट्टि वन सिंघ दीसंत लाहं ॥
तिनं गंग जल मोंन धर हल्लिय ओजैं । भरं पंगुरे राव राठौर भोजैं ॥
छं० ॥ १३५० ॥

तबै उप्परें फौज प्रथिराज राजं । मनों बांदरा लेन ते लंक गाजं ॥
तवं जग्गियं देव देवं उनिंदं । तिनं चंपियं पाय भारं फुनिंदं ॥
छं० ॥ १३५१ ॥

तबै चापियं भार पायाल दुंदं । घनं उड्डियं रेन आया समुंदं ॥
गिनै कोन अगनित्त रावत्त रत्ता । तिनं छच छिति भार दीसै नपत्ता ॥
छं० ॥ १३५२ ॥

जु आरंभ चक्की रहै कौन संता । सु वाराह रूपी न कंधै धरंता ॥
जु सेनं सनाहं नवं रूप रंगा । [2]तिनं भिल्ल वैतेग तेचै च गंगा ॥
छं० ॥ १३५३ ॥

तिनं टोप टंकार दीसै उतंगा । मनों बद्दलं पंति बंधी विहंगा ॥

(१) ए. कृ. को-उनं । (२) ए. कृ. को-तिनं झिल्ल वेचे मते बेच गगा ।

जिरह जंगीन वनि अंग लाई। मनो कठ्ठ कंती सुगोरय वनाई॥
छं० ॥ १३५४ ॥

तिनं हथ्थरं हथ्थ लग्गै सुहाई। तिनं घाइ गंजै न थक्कै थकाई॥
तिनं राग जरजीव वनि वान अच्छै। भरं दिष्षियै जानु जोगिंद कच्छै॥
छं० ॥ १३५५ ॥

मनं सस्त्र छत्तीस करि लोह साजै। इसे सूर सामंत सौ राज राजै॥
छं० ॥ १३५६ ॥

लज्जा भाव कि लज्जा के रहने से संसार में कीर्ति अमर होगी।

कुंडलिया॥ वाद वत्तवै कढ्ढि न्निप। बहु उपाइ तो लाज॥
में वपु लज्जै सौंपि कर। कै चल्लै प्रथिराज॥
कै चल्लै प्रथिराज। कित्ति भग्गौं भगि जित्तौ॥
मरन एक जम हथ्थ। दुरै भज्जिन जम वित्तौ॥
ते अप्पन तिय राज। लाज इक राग सदेवति।
गति के प्रान तिन काज। राज हन्नहि सु बद्द ब्रत॥छं०॥१३५७॥
मुरिल्ल॥ जब लाज सबै वे कार रस बद्दे। तब लगि पंग वीर रस सद्दे॥
दिसि दिसि दल धाए कविचंद। ज्यौं गाह्यौ वर ससि पाल [1]गुविंद॥
छं० ॥ १३५८ ॥

पृथ्वीराज के मन का लज्जा का अनुयायी होना।

दूहा॥ दुहु [2]एनौ तन चढ्ढियै। लज्ज प्रसंसत राइ॥
सत्त सुसत्त प्रनंब चढ़ि। चढ़िय सु उत्तर राई॥ छं०॥ १३५९॥

पृथ्वीराज का वचन।

तूं लज्जी तन चढ्ढयौ। लज्ज प्रान संग [3]गथ्थ॥
अब कित्ती वत्तीय लगि। [4]अब सन चूक न तथ्थ॥छं०॥१३६०॥

---

(१) ए. कृ. को.-गुव्यंद। (२) ए. कृ. को.-एतौ। (३) मो. सथ्थ।
(४) ए. कृ. को. अनसन सक न नथ्थं।

पंग सेना के रण वाद्यों का भीषण रव ।

मुरिल्ल ॥ बाजि न्रपन्न विचित्र सु बाजिग । मेघ कला दल बद्दल साजिग॥
बंबरि चौर दिसान दिसानं । दस दिसि [1]रत्ते घोर निसानं ॥
छं० ॥ १३६१ ॥

भुजंगी ॥ निसानं दिसानंति बाजैं सुचंगा । दिसा दच्छिनं देस लीनी उपंगा॥
तबल्लं तिदूरं भुजंगी म्रदंगा । मनों न्रत्य नारद्द कढ्ढै प्रसंगा ॥
छं० ॥ १३६२ ॥

बजै बंस विसतार बहु रंग रंगा । तिनं मोहियं सथ्थ लग्गे कुरंगा॥
वरं वीर गुंडीर संसे ससंगा । तिनं नच्चई ईस ते सीस गंगा ॥
छं० ॥ १३६३ ॥

सुनै अच्छरी अच्छ मंजै सु अंगा । सिरं सिंधु सद्दनाइ श्रवने उतंगा॥
रसे सूर सामंत सुनि जंग रंगा । .... ॥ छं० ॥ १३६४ ॥
नफेरी नवं रंग सारंग भेरी । मनों न्रत्यनी इंद्र आरंभ केरी ॥
सुने सिंगि सावद्द नंगी न नेरी । मनों झिंझ आवद्ध हथ्थैं करेरी ॥
छं० ॥ १३६५ ॥

करी उच्छरी घाव घन घंट टेरी । चितं चिंति तन हीन बाढी कुवेरी॥
अन्यं ओपमा पंड नैने निभग्गी । मनो राम रावन्न हथ्थें विलग्गी॥
छं० ॥ १३६६ ॥

पंगराज की ओर से एक हजार संख धुनियों का शब्द करना ।

दूहा ॥ सुनि बज्जन रज्जन चढ़िग । सहस संष धुनि चाइ ॥
मनों लंक विग्रह करन । चल्यौ रघुप्पति राइ ॥ छं० ॥ १३६७ ॥
राम दलह बंदर विषम । रष्षस रावन वृंद ॥
असी लष्ष सौं सौ जुरिग । धनि प्रथिराज नरिंद ॥छं०॥१३६८॥

सेना के अग्रभाग में हाथियों की वीड़ बढ़ना ।

दल संमुह दंतिय सघन । गनत न वनि अगनित्त ॥

(१) ए. कृ. को.-नेरत ।

मनों[1] पव्वय बिधि चरन किय। सह दिष्षिय मय मत्त ॥छं०॥१३६९॥

मतवारे हाथियों की ओजमय शोभा वर्णन।

मद मंता दँत उज्जला। मय कपोल मकरंद॥
दुहुं दिसि भवर गुंजार करि। [2]छुटि अंदून गयंद॥छं०॥१३७०॥

भुजंगी॥ देषियहि मंत मैमत्त मंता। छत्र छहरंग चौरं ढुरंता॥
छके जेह अंदून छुट्टै जुरंता। बाय वहु वेग झटकंत दंता॥
छं०॥१३७१॥

जिते सिंघली सिंघ सुंडी प्रहारे। तिते सोर संमूह धावै हकारे॥
उज्जए वान आवै [3]वकारे। अंकुसं कोस तेनं चिकारे॥
छं०॥१३७२॥

मीठ मंगोल चिहु कोद बंके। इसे भूप वाजून वाजून हंके॥
दंति मनु मुत्ति जरये सुलष्षी। मनों बीज झमकंत जलमेघ पष्षी॥
छं०॥१३७३॥

घटं घेन घोरं न सोरं समानं। हलं हाल ए मंत लागे विमानं॥
बिरद बरदाइ आगे मृदंगा। स्वर्ग संगीत [4]करि रंभ संगा॥
छं०॥१३७४॥

तेह तर जोर पट्टेव झिल्लैं। चंपियं पान ते मेर ढिल्लैं॥
रेसमी रेसना रीति भल्ली। सिरी सीस सिंदूर सोभा सु मिल्ली॥
छं०॥१३७५॥

रेष वैरष्य पति पात वल्ली। मनहु बन राइ द्रुम डाल हल्ली॥
सीस सिंदूर गज जंप झंपे। देषि सुरलोक सहदेव कंपे॥
छं० १३७६॥

इत्तनिय आस धरि मध्य रहियं। कहहि प्रथिराज गहियं सु गहियं॥
.... । ... . छं०॥१३७७॥

दूहा॥ गहि गहि कहि सेना सकल। हय गय बन उठि गव्व॥
जनु पावस पुव्वहु अनिल। हलि गति बद्दल सब्ब॥छं०॥१३७८॥

(१) मो.-पव्वन। (२) ए. कृ. को.-छुट्टिय अदन।
(३) ए. कृ. को.-हकारे। (४) ए. कृ. को. डरि।

सुसज्जित सेना संग्रह की रात्रि से उपमा वर्णन ॥

लघुनराज ॥ हयं गयं नरं भरं। [1]उनम्मियं जलद्धरं ॥
दिसा दिसानं बज्जये। समुद्द सद्द लज्जए ॥ छं० ॥ १३७९ ॥
रजोद मोद उष्षली। सव्योम पंक संकुली ॥
तटाक बाल रींगनीं। सु चक्कयो वियोगिनी ॥ छं० ॥ १३८० ॥
पयाल पाल पल्लए। द्रगंत मंत हल्लए ॥
प्रहृति छचि छज्जए। सरोज मौज लज्जए ॥ छं० ॥ १३८१ ॥
अनंदिते निसाचरे। कु कंपि तुंड साचरे ॥
भगंत [2]गंग कूल ए। समुद्र हून फूल ए ॥ छं० ॥ १३८२ ॥
अषंड रेन मंडयौ। डरप्पि इंद्र छंडयौ ॥
कमट्ठ पिट्ठ निट्ठुरं। प्रसाल भाल विथ्थुरं ॥ छं० ॥ १३८३ ॥
छिपान हंस मग्ग ए। समाधि आधि जग्ग ए ॥
अपूर पूर बद्दए। जटाल काल सुद्द ए ॥ छं० ॥ १३८४ ॥
नरिंद पंग पायसं। सु छचि मंगि आयसं ॥
गहन्न जोगिनी तुरे। सु अप्प अप्प विपफुरे ॥ छं० ॥ १३८५ ॥

पंग सेना का अनी वद्ध होना और जैचन्द का मीर जमाम को पृथ्वीराज को पकड़ने की आज्ञा देना।

दूहा ॥ अप्प अप्प दल विप्फुरे। दिल्ली गहन नरिंद ॥
* मीर जमांम हमांम कौ। दिय आयस जैचंद ॥ छं० ॥ १३८६ ॥
दिसि दिसि अग्गौ सज्जि वर। चतुरंगिनि पंग राइ ॥
चक्की चक्क वियोगइन। अनंद कमोद कंदाइ ॥ छं० ॥ १३८७ ॥

जंगी हाथियों की तैयारी वर्णन।

भुजंगी॥चढी पंग फौजं चवं कोद लोकं। दिठी जानि कालं चली जोध होकं ॥
वंधे वंरषं रन्न[3]हल्लै प्रकारं। मनों [4]नौकरी नौत सोभै सहारं ॥
छं० ॥ १३८८ ॥

(१) ए. कृ. को.-उनम्मियं। (२) ए. कृ. को.-नग। * यह दोहा मो. प्रति में नहीं है।
(३) मो.-सोभै। (४) ए. कृ.को.-निक्करी।

बजे तब्बलं सह बंदी निनारे। मनों भृत्त बीरंद हथ्यं सँवारे॥
सिरी पष्परं लोह गन्दं बनाई। नगं रत्त मझ्झै झमकंत झांई॥
छं० ॥ १३८९ ॥

सुती बैठियं लाल माला प्रकारं। मनों षेलही [1]पारसं कन्ह भारं॥
गजं सज्जयं हेम ओपं विराजे। तिनं अग्र सोहै सितं चौर साजे॥
छं० ॥ १३९० ॥

तिनं की उपम्मा कवी का विचारं। मनों हेम कूटं वहै गंग धारं॥
सिरी उज्जलं लोह है सीस राजं। तहां चौरं ढट्टं सु सीसं विराजं॥
छं० ॥ १३९१ ॥

तहां चंद कब्बी उपम्मा विचारी। मनों राह कूटं टटं भान मारी॥
सजी पंग सेनं रसं [2]लोह बीरं। तिनं मोकले गहन प्रथिराज मीरं॥
छं० ॥ १३९२ ॥

रावण कोतवाल का सब सेना में पंगराज का हुक्म सुनाकर कहना कि पृथ्वीराज संयोगिता को हर लाया है।

दूहा ॥ सजत सेन पहुपंग घन। आय स पत्ते तीर॥
बर रावन कुटवार तब। पुक्कारे बर बीर॥ छं० ॥ १३९३ ॥

पद्धरी ॥ धर पथ्थराइ बरनौ सुबीर। बिस्राम राइ मन मथ सरीर॥
रइबान सिंघ न्रप भेद दीन। चहुआन हरन संजोगि कीन॥
छं० ॥ १३९४ ॥

दरबार जैत मिल्लाइ आइ। संजोगि हरन न्रप सथ्थ जाइ॥
घरि एक एक घरियार बज्जि। पुक्कार लग्गि मारूफ सज्जि॥
छं० ॥ १३९५ ॥

जैचन्द का रावण और सुमंत से सलाह पूछना।

दूहा ॥ परी भीर बर द्रिग्ग बर। द्रिष्ट संजोइय कंत॥
तब तराल रावन कहै। पंग राइ सोमंत॥ छं० ॥ १३९६ ॥

(१) ए. कृ.-को.-पीर सं। (२) ए. कृ. को.-रोस।

सुमंत का कहना कि बनसिंह और केहर कंठीर को आज्ञा दी जाय।

कवित्त ॥ मोहि मत पुछै नरिंद। तौ चहुआन गहन गुन ॥
दल बल अरि अरि दट्टि। ठट्ट ठेलै दुज्जन दुव ॥
प्रथम राव बन सिंघ। राव बन बीर अग्गि करि ॥
[1]हेत सुमन जग्गीत। उनै पहुपंग पूरि परि ॥
केहरि कंठीर पठौ सु न्त्रप। इन समान छिची न छिति ॥
अड्डौ सु धरो बिभ्भार घन। रावन रिन सिष ईय पति ॥
छं० ॥ १३९७ ॥

जैचन्द का कहना कि पृथ्वीराज मय सामंतों के जीता पकड़ा जावे।

तब नरिंद रा पंग। सु मुष बोल्यौ रावन प्रति ॥
आज गिद्ध ननि जौग। हनै घन स्याम भूप प्रति ॥
अति अयान अनबुझ्झ। अग्गि आगम्म प्रगट्टिय ॥
अप्प अप्प जस हीन। दीन दुनिया दल छुट्टिय ॥
अवरन्न सेन लष्षा चढी। कढौ तेग वंधे दिवन ॥
वहु लाभ होइ जो पेम विन। जु कछु काम कीजै सु चन ॥
छं० ॥ १३९८ ॥

वघघेलो वर सिंघ। राव केहरि कंठेरिय ॥
कालिंजर कोलिया। राय वंधिय वरजोरिय ॥
[2]रन रावन तलियार। बघ्घ कह्यौ मुष जंपौ ॥
रवि जैपाल नरिंद। काम कारन हूं अप्पौ ॥
वर गहन चंपि चहुआन कौ। [3]सत्त घत्त सामंत मह ॥
सम समथ सथ्थ भारथ्थ भिरहि। सहस दिये कमधज्ज दह ॥
छं० ॥ १३९९ ॥

---

(१) ए. कृ. को. हेन सुमन जग्गीज।　　(२) ए. कृ. को.-नर।
(३) मो.-सन्त।

रावण का कहना कि यह असंभव है। इस समय मोह करने से आपकी बात नहीं रह सकती।

तब रावन उच्चरै। न्रिपति इह मत्ति सु भुट्टौ ॥
दीन होइ रापंग। सरित डंडी गुर मिट्टौ ॥
इह जोगिनि पुर इंद। गंजि गोरी गज बंधन ॥
इन सु सथ्थ सामंत। सूर अति रन मद मद्दन ॥
इह गहन दहन इच्छै न्रपति। भर समूह मोहन करै ॥
नव अश्व बाज नव नव न्रपति। नव सु जोरि जग्गह धरै ॥
छं० ॥ १४०० ॥

रावण के कथनानुसार जैचन्द का मीर जमाम को भी पसर करने का हुक्म देना।

दूहा ॥ सहस मान सह छत्रपति। सह सम जुड म जुड ॥
गहन मीर बंदन कहै। तिहि लग्गै लहु वड ॥ छं० ॥ १४०१ ॥
मीर बंद बारुन बलिय। सक सामंत नरिंद ॥
मंच घात सक हरिमा। विष मुत्तरै फुनिंद ॥ छं० ॥ १४०२ ॥
अप्प अप्प दल विप्फुरयो। दिल्ली गहन नरिंद ॥
मीर जमाम हमाम कों। दिय आयस जैचंद ॥ छं० ॥ १४०३ ॥
तुम बिन जग्य न न्रिब्बहै। तुम बिन राज न धाम ॥
सुक कट्ठ कट्ठन समुह। जरि जरि अंब बुझान ॥ छं० ॥ १४०४ ॥

रावण का कहना कि आप स्वयं चढ़ाई कीजिए तब ठीक हो।

फिरि रावन न्रप सौं कह्यौ। जात पर्यौ तुहि काम ॥
जब लगि अप्प न नांचियै। काम न होइ सु ताम ॥ छं० ॥ १४०५ ॥

पंगराज का कहना कि चोरों को पकड़ने मैं क्यों जाऊं।

कवित्त ॥ तब झुकि पंग नरिंद। ढीठ कुटवार हट्ट पर ॥
बाट घाट तस करन। चास वसि करन प्रज्ज धर ॥
रस अदभुत संग्राम। मह्हि रष्पत धरि छंडी ॥

न कछु मझ्झ माजनौ। बाद राजन सौं मंडी ॥
अति ग्रब्ब अरब बर्ज्जै सिरह। नरनि नीर उत्तरि रह्यौ ॥
जानहि न जुद्ध अविरुद्ध गति। किम सु बचन राजन कह्यौ ॥
छं० ॥ १४०६ ॥

दूहा ॥ अरे ढीठ रावन्न सुनि। जितहि न डट्टो अप्प ॥
जो अलभ्भ लोकनि कह्यौ। जिहि मरि मारिय अप्प ॥
छं० ॥ १४०७ ॥

पुनः रावण का प्रत्युत्तर की आपने अपने हठ से सब काम किए।

कवित्त ॥ फिरि रावन उच्चर्यौ। जग्य मंडि रुकुमत्ति किय ॥
जैन जग्य आरंभ। प्रथम चहुआन बंध लिय ॥
बहुत मत्त चुक्कए। अवहि तुम मंत सुमंत्ते ॥
संदेसै व्यौहार। कहौ किन होतैं भंत्ते ॥
बंचहु बबंच मंचिय मरन। चाहुआन गहियन गहिय ॥
संबरे जाय कन्या [1]रवन। जुगति जग्य पसरिय रहिय ॥ छं० ॥ १४०८

कुतवाल का बचन कि जिसका पालन करना हो उसे प्राण समान माने परंतु संग्राम में सबको कष्ट जाने।

श्लोक ॥ अप्प प्रानं समानस्य। लालना पालनादपि ॥
प्रापते तु युद्धकालस्य। शुष्ककाष्टं हुताशनं ॥ १४०९ ॥
दूहा ॥ कै प्रारंभन प्रिय भरन। मरन सु अग्गर राइ ॥
जग्य बिगारन जूह चढ़ि। लियें सु कन्या जाइ ॥ छं० ॥ १४१० ॥
सुप मजाद बुल्ल्यौ बयन। नयर कंध कुटवार ॥
सु बिधि मौर संग्राम भर। तुम रष्पहु हटवार ॥ छं० ॥ १४११ ॥
हट्ट नाम कुटवार सुनि। परि सामंतन जंग ॥
मबन निरष्षत पंग दल। पर पति दीप पतंग ॥ छं० ॥ १४१२ ॥

(१) ए. रु. को.-दरन

मुसल्मानी सेना नायक का सेना सहित हरावल में होकर आगे बढ़ना।

भुजंगी ॥ तबें पठ्ठियं पंग रायं सु षीसं। मषै दोइ द्रु म्मीन षीनेन दीसं॥
किय नीच कंधं तुछं रोम सीसं। परी उप्परें फौज प्रथिराज ईसं॥
छं०॥१४१३॥

रसावला ॥ [1]कोल पल्लं लषी। मंस स्त्रवं भषी॥
रोम राहं नषी। वेयजे विछु्षी॥ छं०॥१४१४॥
बीर बाहू पषी। सुम्मरे नां लषी॥
विढ्ढि सा बद्दषी। टंक अट्ठरषी॥ छं०॥१४१५॥
षंचि विम्भारषी। लोह नारंजषी॥
कोल चाहै [2]चषी। बाज बाहै लषी॥ छं०॥१४१६॥
दुम्म साहै मुषी। बोल तें ना लषी॥
पारसी पारषी। बान वाहं पषी॥ छं०॥१४१७॥
प्रान तिन्नं तषी। पंग पारठ्ठषी॥
स्वांमिता चित्तषी। ढिल्लि ढाहं झषी॥ छं०॥१४१८॥
बीच रत्तं मुषी। सट्ठि हज्जारषी॥
पवंगे पारषी। .... छं०॥१४१९॥

पंगदल को आते देख कर पृथ्वीराज का फिर कर खड़ा होना।

भुजंगी। हयं सेन पय सेन अग्गें सुडारै। त्रिपत्ती नछ्ची न लभ्भै नपारै॥
तिनं सूर सामंत मध्यं हजारे। मनों विटियं कोट मंझे मुनारे।
छं०॥१४२०॥

तबै मोरियं राज प्रथिराज बग्गं। बरं उठ्ठियं रोस आयास लग्गं।
मनों पथ्थ पारथ्थ हरि होम जग्गं। मनों षोलियं षग्ग षंडून लग्गं।
छं०॥१४२१॥

बरं उठ्ठियं सूर सामंत तज्जै। तबें षोलियं षग्ग साहथ्य रज्जै॥
सुरं बाजनै पंग रा वीर वज्जै। मनों आगमं मेघ आषाढ़ गज्जै
छं०॥१४२२॥

(१) ए कृ. को.-"कोल पल अभर्ष्वा." (२) ए.-पषी।

पृथ्वीराज की ओर से बाघ राज बघेले का तलवार खींच कर साम्हने होना।

कवित्त ॥ बघ्घराव बघ्घेल । हेल मुग्गल निहल्ल किय ॥
मेघ सिंघ विज्जुल्लिय । जांनि झंमूर झलक्किय ॥
वे गयंद बारुन वहंत । बारत्तन वारिय ॥
मीर पुट्ठि आरुट्ठि । सेन गहि गहि अप्फारिय ॥
आवृत्त वत्त सामंत रन । जमर मेछ संमुह मिलिय ॥
अष्टमी चष्प इक्कह सु ग्रह । प्रथम रोस दुअ दल मिलिय॥छं०१४२३॥

सौ सामंत और असंख्य पंग दल में संग्राम शुरू होना।

दूहा ॥ जोध जोध आयरु मिले । एक इक्क सौं लष्ष ॥
नारद तुंबर सिव सकति । सौ सामंतां पष्प ॥ छं० ॥ १४२४ ॥

पुनः रावण का वचन कि पृथ्वीराज को पकड़ने में सब सेना का नाश होगा।

कवित्त ॥ फिरि रावन उच्चरिय । सुनौ कमधज्ज [1]इला बर ॥
अरि बंधन इंछियै । सु तन वंछियै मरन भर ॥
प्रथम मूल दिज्जियै । व्याज आवै धुर जन्नी ॥
इन कज्जें इल भार । देव[2]करयौ छिति लिन्नी ॥
छिति ग्रीषम बुठ पावसह । वैंन पहु जु पंगह सुनिय ॥
[3]कायर सु भीर भंजै न भर । भर भंजै संभरि धनिय॥छं०॥१४२५॥

केहर कंठेर का कहना कि रावण का कथन यथार्थ है।

केहरि बर कंठेर । पंग सम्हौ उच्चारिय ॥
मत्त सु मत उच्चरिय । वीर रावन अधिकारिय ॥
जंच जोर जो वजै । मार तंची मिलि जंची ॥
जंचि जोर जो [4]दलै । सार वंधी अनु तंची ॥

---

(१) मो.-इलावर । (२) मो.-करयौ
(३) ए. कृ. को.-कायरन भीर भंजै सुभर । (४) मो. वजै ।

भंजौ जु बीर चहुआन दल । दह्र दुबाह सम्हौ भिरै ॥
भारथ्थ बीर मंडन सहै । अरी जीत कायर मुरै ॥ छं० ॥ १४२६ ॥

पंग का उत्तर देना कि सेवक का धर्म स्वामी की आज्ञापालन करना है।

सुनि केहरि बर वेंन । कोंन उच्चरै जुद्ध यथ ॥
धर संग्रह गो ग्रहन । सामि संकट जु बीर तथ ॥
साम दान अरु भेद । सोइ चुक्कै बर साई ॥
नरक निवास प्रमान । सुश्रित कित्ती निधि पाई ॥
जंकरै मंत्त उत्तरि परै । सामि अग्गि मंगे सुभर ॥
यों हँसन केलि घर घर करै । इकत पच्छ बढ्ढै सुभर ॥
छं० ॥ १४२७ ॥

पंग को प्रणाम करके केहर कंठेर और रावण का बढ़ना।

दूहा ॥ केहरि कन्ह सु गत्तमी । करि जुहार न्रप भार ॥
हस्ति काल जम जाल लै । चलि अग्गै कुटवार ॥ छं० ॥ १४२८ ॥

उनके पीछे जैचन्द का चलना।

कवित्त ॥ केहरि बर कंठीर । कन्ह कमधज्ज सु रावन ॥
हस्ति काल जम जाल । [1]अग्गि नग चासति धावन ॥
ता पच्छै कमधज्ज । सेन चतुरंगी चल्लिय ॥
हसम हयग्गय सुभर । भूमि चावद्दिसि हल्लिय ॥
कंद्रप्प केत पहुपंग सँग । बजि निसान अप्पन चढ़िय ॥
घन अँगम्यौ सेन चहुआन बर । पवन सेन टिड्डी बढ़िय ॥
छं० ॥ १४२९ ॥

जैचन्द के सहायक राजा रावतों के नाम।

भुजंगी ॥ तिकें चढ्ढियं पंग अज्जान बाहं । बचं उच्चरें सेनं चौहान साहं ॥
सुतं चढ्ढियं [2]सेर कंद्रप्प केतं । मनों बंधियं काम वे बीर नेतं ॥
छं० ॥ १४३० ॥

(१) ए. कृ. को.-अगिन, अगिनिग । (२) ए. कृ. को. बीर ।

चढै प्रम्मतं बीर बीरं प्रमानं। कहै पंग अप्पै बंधे चाहुआनं॥
चढे चंचलं चंपि चंदेर राई। जिनैं पुब्ब बैरं रनंथंम पाई॥
छं० ॥ १४३१ ॥

चढ़े किल्हनं कान्ह कन्नाट राजी। उठी बंक मुंछं ससी बीय लाजी॥
चढ्यौ दच्छ भानं सुभानं प्रमानं। चढे कन्ह चंदेल भौधू समानं॥
छं० ॥ १४३२ ॥

चढ्यौ बग्गरी बीर तत्तौ [1]तुरीसं। लरैं सामि कामं असम्मानं सीसं॥
चढ्यौ इंद्र राजं असप्पति बीरं। महा तेज जाजुल्य बीरं सरीरं॥
छं० ॥ १४३३ ॥

चढ्यौ मालवी बीर वर सिंह तद्दं। भजै तेज जाजुल्य देष्यौ [2]फुनिंदं॥
चढ्यौ पंच पंचाइनं बीर मोरी। चढै बारु रंजैत पावंग जोरी॥
चढ्यौ दाहिमी देव देवत्त गत्ती। चढ़े मीर वीरं षुरासान तत्ती॥
छं० ॥ १४३४ ॥

असी लष्प सेना चिह्नं मग्ग धाई। मनौं भूमि बाराह कंधै उठाई॥
कमठ्ठंति पिट्ठंति ठीसी समालं। कंपी सेन मुक्कै कुवे हथ्थ [3]झालं॥
छं० ॥ १४३५ ॥

पंग की चढ़ाई का आतंक वर्णन।

कवित्त॥ [4]वजत धरद्दर सीस। धार धरनीय सेस कहि।
कुंडलेस कुंडलिय। कहय पन्न गति अरुल रहि॥
[5]अहि अहि कहि अहि नाम। संकभौ सीस सेस वर॥
गहिन परै तिहि नाग। चित्त विभ्रम चिचक पर॥
कंपेस नाम कंपत भयौ। बहुत नाम तद्दिन लहिय॥
जिन जिन उपाय रष्यिय इला। [6]पंग पयानह तिहि कहिय॥
छं० ॥ १४३६ ॥

दूहा॥ फन फन पर मुक्कत जु इल। तत्त बसत दझि हथ्थ॥

(१) ए. कृ. को.-तिरीसं। (२) ए. कृ. को.-दुनिंदं।
(३) ए. कृ. को.-झालं। (४) ए. कृ. को.-जवन।
(५) ए. कृ. को.-अहि अहि अहि वहि नाम। (६) ए. कृ. को.-पंग पयानन होत वहि।

अट्ठ कंपि दो अट्ठ डरि। रवि सुझ्झै नह पथ्थ ॥छं०॥१४३७॥

क्षत्री धर्म की प्रभुता।

कवित्त॥ मिलि गरूर सामंत। विपथ अरु सुपथ उचारं॥
विपथ जु बंध्यौ मोह। सुपथ पति रषि पति वारं॥
रहैं विपथ रजपूत। मझ्झि अनि रषि चित भारथ॥
इह सु पथ्थ रजतीय। सामि प्रेमह होइ सारथ॥
सह कित्ति कलं काल कथ्थयौ। काल सु पंग कलंतरै॥
कस ध्रम्म ध्रम्म छत्री तनौ। मवन मत्त [५]चुक्कहि नरै॥छं०॥१४३८॥

दूहा॥ निसि भै भै काइर भजिग। [१]तमस भज्ज गनि सूर॥
भय भयान रन उदित वर। अद्ध निसा अध पूर॥ छं०॥१४३९॥

प्रफुल्ल मन वीरों के मुखारबिंद की शोभा वर्णन।

भुजंगी॥ परी अद्ध निस्सा जमं छिद्र कारी। ठठुक्के सुरं देखि वरसे न पारी॥
फिरी पंति चावद्दिसं पंग सूरं। महा तेज आजुल्य दिट्ठी करूरं॥
छं०॥१४४०॥

सपत्तेज सूरं तहां युद्ध तूरं। दिषे सूर प्रतिबिंब तो सुझ्झ नूरं॥
महा तेज सूरं समुद्दं जु प्रीतं। बड़े कव्वि रावन्न उप्पम दीतं॥
छं०॥१४४१॥

करे सिद्धि जेमन सकारंन नाईं। थपे सिद्धि मानं वियं सिद्धि पाईं॥
[२]सतं पत्रयं मुद्दि फुल्लै कमोदं। मनौ बालवै संधि दो संधि ऊदं॥
छं०॥१४४२॥

तरें को तरं उड्डि पंखं प्रमानं। वसे भौर भोरं सतं पत्र थानं॥
[३]मिलं दंपती भौर जोगं सरंगी। ललं वेस सीसी जु मुकरंद पंगी॥
छं०॥१४४३॥

चले लोइ जानं मनं मथ्थ बीरं। सजै कुट्टि लै रथ्थ भुअनं सरीरं॥
डगे उड्डि गेनं इकं दुत्ति मानं। रगं रत्त सुझ्झै अभै आसमानं॥
छं०॥१४४४॥

---

(५) ए. कृ. को.-चक्काहि।
(१) ए. कृ. को—तम सभजगनि सूर।
(२) ए. कृ. को. संत पत्र जा
(३) मो.-मिले दंपती भौरँ ज्यौ गंध रंती।

पृथ्वीराज को पकड़ने के लिये पांच लाख सेना के साथ रूमीखां और बहराम खां दो यवन योद्धाओं का बीड़ा उठाना ॥

दूहा ॥ षाँ मारुफ नव रत्ति षां। रुषमीं षां बहराम ॥
पान मंडि लीनौ सुकर। सामि सपत्ते काम ॥ छं० ॥ १४४५ ॥
पंच लष्य तिन सथ्थ किय। अनी बंधि न्रप राज ॥
गुन गोरी नन जानई। सामि भ्रम्म सौं काज ॥ छं० ॥ १४४६ ॥

मोतीदाम ॥ बजे बर चंग निसार्नान नद्द। सिरं सहनाय नफेरिन सद्द ॥
बजंत निसान सुरंभ रिझंत। सुने सद ईस [1]पलक्क पुलंत ॥
छं० ॥ १४४७ ॥
बजै घट घुघघर घोरनि भार। कै इंद्र अरंभ करै बिबिचार ॥
बजै रंग जोज जलज जल घंट। हरै ग्रब संभरि नारद कंठ ॥
छं० ॥ १४४८ ॥
बजै सद बंस मह्विष्यत सिंघ। मनों कन नंकन आरँभ रंग ॥
तवल्ल टंकार निसानन हल्ल। किधों गज मेघ अषाढ़ सु कल्ल ॥
छं० ॥ १४४९ ॥

आगे रावण तिस पीछे जैचन्द का अग्रसर होना और इस आतंक से सब को भाषित होना कि चौहान अवश्य पकड़ा जायगा ॥

दूहा ॥ रावन न्रप बहुत सुबर। पिजि बंधव बर वीर ॥
आदि बैर चहुआन सौं। चढ़ि फवज्ज भर भीर ॥ छं० ॥ १४५० ॥
फटिय फौज पहुपंग बर। मत मंत्री न्रिप चिंति ॥
अप्प चढ़न बहन अरी। नीर फौज छबि कित्ति ॥ छं० ॥ १४५१ ॥

कवित्त ॥ करि रावन न्रप अग्ग। पंग चढ्ढै बर नागर ॥
[2]धरनि धाय सननंति। रंग दुस्सह जुग मागर ॥

(१) मो-सु पलह सभन। (२) मो.-धर्नात।

मुगति दान अप्पनह। जंम जीवन उथ्थप्पन ॥
फल कित्ती भोगवन। क्रंम भंजन अघ कप्पन ॥
जाजुल्य देव दैवान भर। दिषि नरिंद तोमर तरसि ॥
डगमगे भग्गि द्रगपाल वर। बीर भुगति तुंमर परसि ॥
छं० ॥ १४५२ ॥

दूहा ॥ तरसि तुंग बद्दलति दल। पल भल विजय निसान ॥
बाल वृद्ध इम उच्चरै। गहै पंग चहुआन ॥ छं० ॥ १४५३ ॥

हरावल के हाथियों की प्रभृति।

वर सोहै बद्दलति दल। वर उतंग गज रत्त ॥
काज न सज्जल रष्षई। कीन गंग उर गत्त ॥ १४५४ ॥
चलि गज दंतिन सघन घन। गति को कहै गनित्त ॥
मनों प्रव्वत विधि चरन कै। फौज अगैं मैंमत्त ॥ छं० ॥ १४५५ ॥

पंग दल को बढ़ता देख कर संयोगिता सहित पृथ्वीराज का सन्नद्ध होना और चारों ओर पकड़ो पकड़ो का शोर मचना।

पद्धरी ॥ पूरन्न राव चालुक्क बंभ। हम्मीर राव पामार थंभ ॥
गोयंद राव बघ्घेल सूर। अंगमी सेन घन ज्यों लंगूर ॥
छं० ॥ १४५६ ॥

पहुपंग गोपि प्रविकास राज। दिष्षै कमंध दल करिय साज ॥
बाजिच ताम बज्जे गुहीर। हय गय सु ताम सज्जेति बीर ॥
छं० ॥ १४५७ ॥

न्रिप नाइ सीस मिलि राज सव्व। दिष्षेव पंग गुर तेज ग्रब्ब ॥
दल सजे साजि सब देषि पंग। उच्चऱ्यौ गरुअ चहुआन जंग ॥
छं० ॥ १४५८ ॥

सिर धारि बोलि [1]जसराज सामि। बंधें अवन्नि गुरु तेज ताम ॥
सजि सेन गरट चलि मंद गत्ति। निज स्वामि काम [2]गुभ भं गुरत्ति ॥
छं० ॥ १५५९ ॥

(१) मो.-सज। (२) मो. गुंजे।

आवंत सेन प्रथिराज जानि । उट्ठेव सूर सामंत तानि ॥
सामंत सूर सजि चढ़े जाम । हय मंगि चढ़न चहुआन ताम ॥
छं० ॥ १४९० ॥

संजोगि पुट्ठि [1]आरोहि बंधि । यट्टौ सु राज सन्नाह संधि ॥
छं० ॥ १४९१ ॥

दूहा ॥ गहि गहि गहि मुष बेंन कहि । भग्गि न पावै जान ॥
स्रवन सवद्द न संचरिय । मनों गुंग करि सान ॥ छं० ॥ १४९२ ॥

लोहाना आजान बाहु का मुकाबला करना और वीरता के साथ मारा जाना ।

कवित्त ॥ दल समंद पहुपंग । गज्जि लग्गौ चावद्दिसि ॥
लोहानौ वर वीर । पारि मंडी अड्डिय असि ॥
लोह लहरि ढिल्लई । फिरिव वज्जे दल षग्गह ॥
हं हं हं आरुह्यिय । गजति गज्जन नर लग्गह ॥
पारथ्थ वीर बर बार हर । वट्ट कूर कट्टी विहर ॥
रघुबीर तरंग तुरंग जल । कमल जानि नंचैति सिर ॥छं०॥१४९३॥
मित्त रथ्थ रजि व्योम । मड्डि अट्टई असुर गुर ॥
रसह रौद्र विथ्थुऱ्यौ । षिति षिजि लग्गे अमर पुर ॥
संकर भरि लगि लोह । धूरि धुंधरि तिनि सा छबि ॥
हाजुर मीर हमाम । मीर गिरदान सामि नमि ॥
चवदिट्ठ उट्ठि राजन सबद । पारसि गहन गहन्न किय ॥
है छंडि मंडि असिवर दुकर । जंपत आतुर जीह लिय ॥
छं० ॥ १४९४ ॥

लोहाना के मरने पर गोयंदराय गहलौत का अग्रसर होना और कई एक मीर वीरों को मार कर उसका भी काम आना ।

भुजंगी ॥ तबै हक्कि गहिलौत गोयंद राजं । हयं छंडि हर्रि जेम करि चक्र माजं ॥

(१) ए आरोधि ।

लगे [1]सुद्ध धारं सु वाहं सु झारं। मनों कक्कसं तार तुट्टै करारं॥
छं० ॥ १४६५॥

वहै षग्ग झट्टं स झन्नति सट्टं। विसीसं विघट्टं मनों नच्चिनट्टं॥
तुटै षग्ग उड्डंत व्योमं विहारं। मनों संझ संक्रंति हव्वाइ आरं॥
छं० ॥ १४६६॥

हहक्कार हक्कार हक्कै सुमीरं। षवं गाहि बीरं बजे जुद्ध धीरं॥
समुष्षं हमामं सु मीरं मिलंदे। मनों गाह ग्राहं कुटं वेम इंदे॥
छं० ॥ १४६७॥

हए तोमरं हीय फेरे फरक्के। मनो नट्ट वेसं सु भूमं तरक्के॥
तबै चंपि गिरियं सु गोयंद राजं। हये संगिनी छुट्टि मीमं सु गाजं॥
छं० ॥ १४६८॥

फटे तोमरं पुट्ठि उट्टंति रंगे। धमक्के धरा नाग नागं सिरंगे।
षवै दीन दीनं गिरंदी गुमानं। कियं आय पाहार नाविक्क बानं॥
छं० ॥ १४६९॥

चँपै चंप बर बेग गोयंद राजं। मृगी जेम मृगराज धपि पंपि बाजं॥
हए ताम नेजानि सूरंति धायं। कियं कंत प्राहार गोयंद रायं॥
छं० ॥ १४७०॥

हए षग्ग सीसं परे रंभ थंभं। मनों कोपिनं षत्ति घेटंति ईभं॥
बियं लग्गि बथ्थं बलं बाहु बाहं। जमं दड्ढ चंपे डरं मेछ गाहं॥
छं० ॥ १४७१॥

उठे हक्कि करि झारि कोपेज डालं। हए च्यार मीरं दुबाहंड ढालं॥
उरं लग्गि जंबूर आरास षानं। पऱ्यो राव गोयंद दिल्ली भुजानं॥
छं० ॥ १४७२॥

गोयंदराय की वीरता और उसके मरने पर पज्जूनराय का हथियार करना।

दूहा॥ पहर एक असिवर सुभर। आरिसि बुट्ठौ सार॥
गिनै कौन गोयंद सिर। जे षग तुट्टिय धार॥ छं० १४७३॥

---

(१) ए. कृ. को.-जुद्ध।

कवित्त ॥ तब गरज्यौ गहिलौत । पत्ति पाहार धार चढ़ि ॥
बड़वा नल असि तेज । पंग पारस संमुह चढ़ि ॥
अरि अवुझ्झ सिष्षवै । मस्त्र बज्री तन झिल्लै ॥
अंकै मरन समूह । सस्त्र बर 'सस्त्रन छिल्लै ॥
आहत्त घाय तन झंझरिय । मन अच्छरि तिन तन बरिय ॥
गोयंदराय आहुट्ठ पति । सुगति मग्ग पुच्छिय दरिय ॥
छं० ॥ १४७४ ॥

परत धरनि गहिलौत । सेन नच्चिय असुरायन ॥
चितिय जांम अह सुक्र । रस्स मत्तौ रुद्रायन ॥
गयत प्रान गोयंद । मीर इति मित्ति सुपिल्लिय ॥
पिझ्झे राज पज्जून । सुधर कम्मार सु ढिल्लिय ॥
हहकारि सीस साजे गयन । किहथ कंध असि झारि कर ॥
धर पर्‍यौ दंत शत मित्त परि । ज्यौ हक्कि हरि जेम अरि ॥
छं० ॥ १४७५ ॥

पज्जूनराय पर पांच सौ मीरों का पैदल होकर धावा करना और इधर से पांच सौ सामंतों का उसकी मदद करना ॥

इत मित्तह उपारह । 'मीर सौ पंच छंडि हय ॥
है है है जंपै जुवान । उथ्थान थान भय ॥
तिन रोहिग पज्जून । राय केहरि करि जुथ्यह ॥
देपि 'सिघ पामार । पीप परिहार सु पथ्यह ॥
चंदेल भूप भोंहा सुभर । दाहिम्मौ नरसिंघ वर ॥
कछरा राइ चालुक्क पहु । मिलिय पंच उप्पर समर ॥
छं० ॥ १४७६ ॥

नरसिंहराय का वीरता के साथ मारा जाना ।

मोतीदाम॥मिलि हक्किय हक्क सु भीर गंभीर । गुमान दुमान सु चंपिय पीर॥
महाभर स्तरसामंत सु धीर । सु न्त्रिम्मल नेम रजे रज नीर ॥
छं० ॥ १४७७ ॥

---

(१) ए. कृ. कां.-मद्दुन　　। (२) ए. कृ. को. मीर ।

हबक्कि सु धक्कि अनी अनि अंग। लगे जम दड्ढ सु सेलह संग॥
छुरिक्कइ घाइ सु तुट्टहि सीस। पिलंत कमंध उठै भर रीस॥
छं० ॥ १४७८॥
चलै घर पूर रुहीर प्रवाह। सबै मिलि घूंटि सकेति सु राह॥
त्रिपति करूर 'निभ्भारत पन्न। मनों नटिनी मुष जक्क अगन्नि॥
छं० १४७९॥
मिले इत मित्त पजून सु थाइ। हयौ हिय नेज कुरंमह राइ॥
चले सम नेज हयौ असि भ्भार। पऱ्यौ इत मित्त मनों तरतार॥
छं० १४८०॥
पऱ्यौ धर राइ पजून समुच्छि। हयौ असि सेर न सीसं उच्छि॥
चंप्यौ नरसिंघ मनों करि सिंघ। महातन मंडिग सेन कुलिंग॥
छं० १४८१॥
लग्यौ दल सिंघ करष्षि सु तीर। चंपे चव सिंघ सु भग्गिय मीर॥
पऱ्यौ नरसिंघ नरव्वर सूर। तुटे सिर आवध जाम करूर॥
छं० १४८२॥

नरसिंह राय की वीरता और उसका मोक्ष पद पाना।

कवित्त। दाहिम्मै नर सिंघ। रिंघ रष्यी रावत पन॥
सिर तुट्टै कर कट्टि। चट्टि धायौ धर हर घन॥
मार मार उचरंत। राव बज्जे धारा हर॥
देव स्तुति करि चार। रंभ अग्गरी कहिरु बर॥
संकरह सीस लीन्यो जु कर। दई दरिद्री ज्यौं गहिय॥
कविचंद निरषि सुभ्भै सिरह। जुगति उगति कवियन कहिय॥
छं० ॥ १४८३॥

मुसलमान सेना का जोर पकड़ना और पज्जूनराय का तीसरे प्रहर पर्यंत लड़ना।

पंग हुकम परमान। अग्र चौकी षुरसानिय॥
प्रथम जुद्ध किय 'मीर। हारि किनही नह मानिय॥

(१) ए. कृ. को. डारत। (२) ए. कृ. को.-मार।

परे मीर पथ्थार । धार असिवर सिर झारं ॥
सामंतनि लंगरिय । घाइ उट्ठी ग्रह सारं ॥
सम सथ्थ बाघ बघ्घेल न्त्रिप । जंग जोट कोटह अकल ॥
टारै न मुष्ष सांईय छल । लोह लहरि बाजंत झल ॥
छं० ॥ १४८४ ॥

मुसलमान सेना के क्षित विक्षित होने पर उधर से बाघराज बघेले का वसर करना और इधर से चंदपुंडीर का मौका रोकना ।

परत राइ पज्जून । वित्तचय जाम सु बासुर ॥
विषम रुद्र बिथ्थर्यौ । भार लग्गै भर सुब्भर ॥
बघ्घराव बघ्घेल । मार कामोद सेन सम ॥
मिलि चंपिय चहुआन । सूर सुझ्झै न अगम गम ॥
षह धूरि उड्ढि धुंधरि धरनि । किलक हक्क बज्जिय विषम ॥
पुंडीर राइ राजह तनौ । समर वार सज्यौ असम ॥ छं० ॥ १४८५॥
बीर संच उच्चार । धार धाराहर बज्जिय ॥
तिमर तेग निब्बरिय । गुडिल गयनं लफि गज्जिय ॥
उडपति कमल अलोइ । तेज मंजिय तारा अरि ॥
[1]अनी भोर अर अकल । सयर लोग उप्पर परि ॥
धर धार धार धुक्किय धरनि । करिय अरिय किननंत धर ॥
पुंडीर राइ चंदह सुचित । [2]अरिन नट्ट नच्चै सु नर ॥छं० ॥१४८६॥

मीर कमोद और पुंडीर का युद्ध और पुंडीर का माराजाना ।

बीर मीर कामोद । आय जब पुंडिर उप्पर ॥
विहथ नेज उभ्भारि । बाहि निभ्झाहि चंद उर ॥
सेल्ल सैल संमुहिय । हट्ट भंजिय हिय चंपिय ॥
सुधर ढार निभ्भार । वाहि असुराइन कंपिय ॥
पुंडीर राइ आसर सयन । मृत जिम नंचिय समर ॥
दलभंति पंग पुंडीर परि । जय जय सुर सद्दे अमर ॥छं०॥१४८७॥

(१) ए. कृ. को.-अनी मोर अरि कमर ।
(२) ए. कृ. को.-अरिय ।

चंद पुंडीर की वीरता।

दूहा ॥ परत राइ पुंडीर धर। तरनि सरन गय सिंधु ॥
गनै जु को पुंडीर सिर। जे धर तुट्टि अनिंधु ॥ छं० ॥ १४८८॥

चंदपुंडीर के मरने पर कूरंभराय का धावा करना और बाघ राज और कूरंभराय दोनों का मारा जाना।

कवित्त ॥ परत राइ पुंडीर। गहिव कूरम पग धायौ ॥
बाघ राइ बघेल। उहित [1]असिवर करि माझौ ॥
त्रिभै त्रिभ्मै त्रिम्मरिग। तेग झारिय टट्टर पर ॥
मनहु बेद दुजहीन। पिट्टि झल्लरि अग्गै हर ॥
गल बांह लग्गि गट्ठौ पिसुन। मीत भेट महा विच्छ,रिय ॥
उर चंपि दोइ कट्टारि कर। मुगति मग्ग लभ्भी घरिय॥छं०॥१४८९॥

कूरंभ के मरने पर उसके भाई पल्हनराय का मोरचे पर आना॥

कूरंभह उप्परह। [2]बंधु पाल्हनह आयौ ॥
सिंघ छुट्टि संकलकि। देषि कुंजर घट धायौ ॥
कुंतन तरनि सु मंजि। दठ्ठ जम दट्ठ विकस्से ॥
भाला षग्गन छुट्टि। पंग सेना परिनस्से ॥
गजबाज जुद्ध घन नर परिग। पहु कारन दिय प्रान जुअ ॥
सुरनरह नाग अस्तुति करै। बलि बलि बीर भुअंग भुअ ॥
छं० ॥ १४९० ॥

पाल्हन की वीरता और दोपहर के समय उसका खेत रहना॥

मध्य टरत विप्पहर। सार बज्यौ प्रहार भर ॥
मेघ पंग उन्नयौ। मार मंडीय अपार सर ॥
भय कूरंभ टट्टीव। छार भीजै तहां दिज्जै ॥
बर ओडन प्रथिराज। बीर बीरां रस लिज्जै ॥
तन तमकि तमकि असि बर कढ्यौ। असि प्रहार धारह चढ्यौ ॥
पज्जून बंध अरु पुच बर। कारन जेम हथ्थह बढ्यौ ॥ छं०॥१४९१॥

(१) ए. कृ. को-असिमर। ।(२) मो.-पाल्हनराय।

पाल्हन और कूरंभ की उदंड वीरता और दोनों का मोक्ष पद पाना।

परे मध्य विप्पहर। पल्ह पज्जून बंध वर ॥
रज रज तन किय हटकि। कटक कमधज्ज कोटि भर ॥
ईस सीस संहऱ्यौ। हथ्थ सों हथ्थ न मुक्कयौ ॥
सूर मुऱ्यौ सुख हऱ्यौ। बीर बीरा रस तक्क्यौ ॥
मारत अरिन कूरंभ झुकि। ते रवि मंडल भेदियै ॥
डोल्यौ न रथ्थ संमुष चल्यौ। कित्ति कला नह देषियै ॥
छं०॥ १४९२ ॥

गंग डोलि ससि डोलि। डोलि ब्रह्मंड सक्र डुल ॥
अष्ट थान दिगपाल। चाल चंचाल विचल्ल थल ॥
फिरि रुक्यौ प्रथिराज। सबर पारस पहु पंगिय ॥
च्यारि च्यारि तरवारि। बीर कूरंभति सज्जिय ॥
नंपिय पहुप्प इक चंदनै। एक कित्ति जंपत वयन ॥
बे हथ्थ दरिद्री द्रव्य ज्यौं। रहे सूर निरपत नयन ॥छं० ॥ १४९३ ॥

पज्जूनराय का निपट निराश होकर युद्ध करना।

दूहा ॥ भीर परी पहुपंग दल। भये चतिय पहुराम ॥
तब पजून संमुह करन। मरन कत्य किय काम ॥छं० ॥ १४९४ ॥

भुजंगी ॥ भिरें बीर पज्जून यों पंग जानं। बहै पग्ग अग्घाइ अग्घाइ बानं ॥
करी छिन्न भिन्नं सनाहंति जीनं। हयं अंस वंसं द्रुमं बीर कीनं॥
छं० ॥ १४९५ ॥

महा सूर बीरं बुलै क्रूर बानी। चल्यौ धार पज्जून संमार जानी॥
करी अग्ग परहं सु टूनं दिपंदे। भयौ स्वामि सन्नाह बैरी छुडंबे॥
छं० ॥ १४९६ ॥

पहू पंग राइं लग्यौ भान राजं। भुजा दान दीनौ पगं खग्ग माजं॥
बुलै मुष्प कूरंभ सो छत्र राई। मिलै हथ्थ बथ्थं रुपे सेम पाई ॥
छं० ॥ १४९७ ॥

कवी जीह जंपै सु पज्जून हथ्थं। इकं झारि उभझारि हथ्थं समथ्थं॥
अदृ अष्ठत पज्जून ओपंम पाई। कु कुव्वी कला जे नहिं दृ सभाई॥
छं० ॥ १४९८॥

गये तथ्थ नाही तुगी तत्त मत्ते। रत्तौ कुट्टरं मध्य ज्यों जुद्ध रत्ते॥
दिष्यौ सामलं सिंह पुत्तं चरित्तं। वढ़ बांन ज्यौं पथ्यदानं सु रथ्यं॥
छं० ॥ १४९९॥

दिपै यों पजूनं मिल्यौ सिंह रुष्यं। भिरंतं वसंतं भयौ ज्यों विरष्यं॥
भई पंच आए प्रथीराज कामं। भए एक घट्टं भिरे तीन जामं॥
छं० ॥ १५००॥

पज्जूनराय के पुत्र मलैसी के वीरता और ज्ञान मय वचन।

दूहा ॥ है हम मंगल अब जियौ। मरन सुमंगल काज॥
मरे पुच कों विप्र सुनि। भंजों तामस राज॥ छं० ॥ १५०१॥
हम रत्ते कूरंभ रन। मरन सुमंगल होइ॥
पंच पचीस संवच्छरन। जाहु सु जीवन जोइ॥ छं० १५०२॥
कवित ॥ आवरदा सत बरष। अद्ध तामें निसि छिन्निय॥
अद्ध तास बै वृद्ध। बाल मभ्भै होइ हन्निय॥
सुतह सोक संकट प्रताप। प्रिय चिय नित संग्रह॥
वट्टि छोह रस कोह। वृद्ध दारुन दुष दुग्रह॥
यौं सनों सकल हिंदू तुरक। कोंन पुच को तात बर॥
करतार हथ्थ तरवार दिय। इह सु [2]तत्त रजपूत कर॥छं०॥१५०३॥

मलैसिंह का वीरता और पराक्रम से युद्ध करके मारा जाना।

भुजंगी ॥ तबै देषियं तात पुत्तं चरित्तं। मनों पिष्पियं बाह आयास मित्तं॥
घल्यौ हथ्थ बथ्थं दुहथ्थंत नष्षौ। भिन्यौ हथ्थ बथ्थं रसं बीर धष्यौ॥
छं० ॥ १५०४॥

दिष्यौ एक एकं अनेकं प्रकारं। मनों ब्रह्म माया सु सोयं अपारं॥
कथ्यौ कंध हीनं कमद्धं कलापं। लगी जुग्गिनी जोग माया अलापं॥
छं० ॥ १५०५॥

(१) ए. कृ. को.-सुमथ्थं। (२) मो.-तन

तुटै अंत पायं उरझ्झं सरीरं। मनों नाल कट्टै किनालं ¹गंभीरं।
तुथ्यौ बाज राजं बिराजै दुकूलं। मधू माध वै जानि केहू सु फूलं॥
छं० ॥ १५०६ ॥

उरं बान मुष्पं अघानं प्रमानं। मनों पत षायै जु धावै किसानं॥
कह्यो सब्ब सामंत जै जै मलैसी। दुवं बंस तारै सुअं माल तैसी॥
छं० ॥ १५०७ ॥

लगे घाव सट्ठिं परे धीर षेतं। उपाऱ्यौ सु विप्रं भयौ सो अचेतं॥
पऱ्यौ यौं पजूनं सुपुत्तं उचाऱ्यो। भयो इत्तने भान अस्तमित चाऱ्यौ॥
छं० ॥ १५०८ ॥

उधर से रावण का कोप करके अटल रूप से युद्ध करते हुए आगे बढ़ना।

कवित्त ॥ तब रावन नं टरै। सिर न चंपिय चतुरंगी॥
हस्ति काल जमजाल। उठे गज झंपि सुपंगी॥

पंग सेना की ओर से मतवार हाथियों का झुकाया जाना।

पीलवान रायन्न। दई अंकुस गज मध्यं॥
सुभर सीस गज झरी। करी आरूढ़ सु तथ्यं॥
²उमड़े मीर आयो अगह। कुह कहर पच्छैं फिरिग॥
सैं मत्त कोइ अप्पै अपन। अप्प सेन उप्पर परिग॥छं०॥१५०९॥

सामंतों का हाथियों को विचला देना जिससे पंग सेना की ही हानि होना।

अप्प सेन उप्परै। परे गजराज काज अरि॥
सेन पंग विध्धुरी। मीर उच्छारि झारि धर॥
नर समूह परि पील। बान मिट्टी मंथानी॥
वारी समह वार वट्टि। मुष्प दीनं दह्आनी॥

(१) [illegible] (२) [illegible]

संमुह्यौ पग्ग सामंत सब। उररि सेन उप्पर परिय॥
धनि धनि नरिंद सामंत सह। असी लष्य सम मों भरिय॥
छं० ॥ १५१० ॥

सामंतों के कुपित हो कर युद्ध करने से पंग सेना का छिन्न भिन्न होना इतने में सूर्य्यास्त भी हो जाना।

भुजंगी ॥ मिले लोह हथ्थं सुवथ्थं हँकारे। उडै गेंन लग्गैं सकं सार झारे॥
कटै कंध कामंध संधं निनारे। परें जंग रंगं मनों मत्तवारे॥
छं० ॥ १५११ ॥

झरं संभरी राव सो सारझारे। जुरे मल्ल हल्लै नहीं ज्यौं अपारे॥
जबै हार मन्ने नहीं को पचारे। तवें कौपियं कन्ह मै मत्त वारे॥
छं० ॥ १५१२ ॥

जबै अप्पियं मार हथ्थं दुधारे। फटै कुंभ झूमंत नीसान भारे॥
गहे सुंड दंतीन दंती उभारे। मनों कंदला कंदु [1]भील उपारे॥
छं० ॥ १५१३ ॥

परे पंगुरें पंडुरे मीर सीसं। मनों जोगजोगीय लागंत रीसं॥
वहैं वान कम्मान दीसै न भानं। भ्रमै गिद्धनी गिद्ध पावै न जानं॥
छं० ॥ १५१४ ॥

लगे रोह रत्ते अरत्ते करारं। मनों गज्जियं मेघ फट्टै पहारं॥
दई कन्ह चहुआन अरि पील सीसं। करी चंद कव्वी उपम्मा जगीसं॥
छं० ॥ १५१५ ॥

तितं संग संधी महा पील मत्तं। मनों षंचियं द्रोन बरवाय पुत्तं॥
किधों षंचियं राम हथिना पुरेसं। किधों षंचियं मथन गिरिसुर सुरेसं॥
छं० ॥ १५१६ ॥

किधों षंचियं कन्ह गिरि गोपि काजं। धरी सीस ऐसी सुभद्दं विराजं॥
[2]रूरै षेत रत्तं सुरत्तं करारं। सुरै कंठ कंठी न लागै उभारं॥
छं० ॥ १५१७ ॥

सुरं स्रोन रंगं पलं पारि पंकं। वजे बंस नेसं सुवेसं करंकं॥

(१) ए.-नीलं। (२) ए० कृ. को.-रुरै

द्रुम ढाल ढालं सु लालं सुवेसं । गए हंस नंसी मिले हंस वेसं॥
छं० १५१८ ॥

परे पानि जंघं धरंगं निनारे । मनों मच्छ कच्छा तिरंतं उभारे॥
सिरं सा सरोजं कचं सासि वाली । गहै अंत गिद्धी सु सोहै मनाली॥
छं० ॥ १५१९ ॥

तटं रंभ [1]थम्भं भरत्तंव चीरं । कितं स्याम सेतं कितं नील पीरं॥
वरं अंग अंगं सुरंगं सु भट्टं । जिते स्वामि काजै समप्पै जु घट्टं॥
छं० ॥ १५२० ॥

तिते काल जम जाल हथ्थी समानं । हुअै इत्तनै जुद्ध अस्तमित भानं॥
छं० ॥ १५२१ ॥

कन्ह के अतुलित पराक्रम की प्रशंसा ।

कवित्त ॥ तब सु कन्ह चहुआन । गहिय करवान रोस भरि ॥
असिय लष्य चिन गनिय । हनत हय गय पय निंदरि॥
करत कुंभस्थल घाव । चाव ववगुन धरि धीरह ॥
तुबक तीर तरवार । लगत संक्यौ न सरीरह ॥
कहि चंद पराक्रम कन्ह कौ । दिय ढहाय गेंवर समर ॥
उछरंत छिंछ श्रोनित सिरह । मनहु लाल फरहरि चमर ॥
छं० ॥ १५२२ ॥

सारंगराय सोलंकी का रावण से मुकाबला करना और मारा जाना ।

सोलंकी सारंग । वीर रावन आरुड्डिय ॥
दुअ सु हथ्थ उत्तंग । तेग लंबी सा लुड्डिय ॥
दो मरदह आरुह । रुह भानं भिल्लोरिय ॥
टोप फुट्टि सिर फुट्टि । छिंछ फुट्टिय कविल्लोरिय ॥
निल वट्टि फुट्टि पल्लवन्न वन । कै ज्वाल माल पावक पमरि ॥
तन भंग घाय अरि संग करि । पत्ति पहुर चालुक्क परि ॥
छं० ॥ १५२३ ॥

(१) ए. कृ. को. थंभ ।

सोलंकी सारंग की वीरता।

ब्रह्म चालुक ब्रह्म चार। ब्रह्म विद्या वर रष्षिय॥
केस डाभ अरि करिय। रुधिर पन पच विसष्षिय॥
षग्ग गहिग [1]अंजुलिय। नाग गहि नासिक तामं॥
धरनि अषर दुहं श्रवन। जाप जापं मुष रामं॥
सिर फेरि षग्ग सम्हौ धन्यौ। दुअन तार मन उलहसिय॥
अष्टमी जुद्ध सुक्रह अथमि। सुर पुर जा सारँग बसिय॥
छं०॥ १५२४॥

सायंकाल पर्य्यंत पृथ्वीराज के केवल सात सामंत और पंगदल के अगनित बीरों का काम आना।

भुजंगी॥ परे सत्त सामंत सा सत्त कोटं। पलं चंपियं बीर भै सोम ओटं॥
लगी अंग अंगं कहूं षंग [2]मध्यं। किधों वज्र छुट्टै कि वज्जीय हथ्यं॥
छं०॥ १५२५॥

वहै गग्ग मग्गं प्रचारे सु बीरं। झलै षग्ग नीरंजिनें मुष्य नीरं॥
लरै सत्त बीरं दिष्षै सब्ब थट्टं। हरी एक माया करै घट्ट घट्टं॥
छं०॥ १५२६॥

षगं मग्ग सेना जुपंगं हलाई। मनों बोहथी मारुतं कै रुलाई॥
दुती देषतें ओपमा कव्वि पाई। मनों बीर चक्कं कुलालं चलाई॥
छं०॥ १५२७॥

भषै काइ पंषी किअग्गी कि दाही। तुटै धार मग्गं लियै अंग लाही॥
बरै काहि दूरं शिवं माल काकी। ढुढै ब्रह्म लोकं सलोकं सुताकी॥
छं०॥ १५२८॥

ननं देव ओपम्म सी धन्नि जाकी। लगी नाहि माया तजे तंत ताकी॥
वजे लोहि आनं फिरी ग्रेह मग्गी। तिनं तेज छुट्टं सुरं ग्रेह भग्गी॥
छं०॥ १५२९॥

---

(१) मो. अंगुरिय। (२) मो.-मध्थं।

दूहा ॥ भान विहान जु देषि कै। पिषि सामंत सु सूर ॥
पिनुकन धीरं तनु धरहि। तीरथ हक्क्यौ कूर ॥
छं० १५३० ॥

गाथा ॥ निसि गत बंछिय भानं। चक्की चक्काइ सूर साचित्तं ॥
विधु संजोग वियोगी। कुमुद कली कातरां नांचं ॥
छं० १५३१ ॥

प्रथम दिन के युद्ध में पंगदल के मृत मुख्य सरदारों के नाम।

कवित्त ॥ प्रथम मार सामन्त। सहिय मीरन इत मित्तिय ॥
बाघ राव बघ्घेल। हेल इन उप्पर वित्तिय ॥
उभय उमगि गजराज। काज किन्नौ प्रथिराजह ॥
इकति सुंड आपारि। एक [1]मिंडिग पग पाजह ॥
पुंतार डरह कट्टारि कर। परिग पित्त तेपिन न जिय ॥
इह जुड मच्चि चहुआन सों। प्रथम केलि कमधज्ज किय ॥
छं० ॥ १५३२ ॥

मृत सात सामन्तों के नाम।

दाहिम्मौ नरसिंघ। पर्यौ नागौर जास धर ॥
पर्यौ गंजि गहिलोत। नाम गोयंद राज वर ॥
पर्यौ चंद पुंडीर। चंद पिष्यौ मारंतौ ॥
सोलंकी सारंग। पर्यौ असिवर झारंतौ ॥
कूरंभ राव पाल्हन दे। बंधव तीन सु कट्टिया ॥
कनवज्ज रारि पहिलै दिवस। सौमेसत्त निघट्टिया॥छं०॥१५३३॥

पंगदल के मारे गए हाथी घोड़े और सैनिकों की संख्या।

दूहा ॥ उभै सहस हय गय परिग। निसि निग्रह गत भान ॥
सत्त सहस अस मीर हनि। घल्लि दियौ चहुआन ॥छं०॥ १५३४ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-हुंडै। (२) मो.-मंडिग।

जैचन्द के चित्त की चिन्ता।

कवित्त ॥ चित्त [1]चिंता कमधज्ज। देषि लग्गी चहुआनं ॥
प्रथम जुद्ध दरबार। सूर सद्दे असमानं ॥
घटिय सत्त दिन उद्ध। जुद्ध लग्गे सु महाभर ॥
अस्त काल [2]सम मीर। परे धर सूर अप्प धर ॥
सामंत सत्त प्रथिराज परि। करे क्रम्म अतुलित्त मह ॥
प्रथिराज तरनि सामंत किरनि। थपी तेज आरेन यह ॥
छं० ॥ १५३५ ॥

जैतराव का चामण्डराव के बन्दी होने पर पश्चात्ताप करना।

पज्जूनह उप्परह। राज प्रथिराज संपतौ ॥
गरुअ राय गोयंद। घाव अघाइ संसतौ ॥
चाइ चित्त चहुआन। कन्ह किन्नौं कर उभ्भौ ॥
रा रंडी ठिल्लरीय। आज लग्गौ मन दुभ्भौ ॥
धाराधि नाथ धारंग धर। जैत जीत कीनौ रुदन ॥
चामंड डंस मुक्यौ सुग्रह। रष्षन छिति छत्ती हदन ॥छं०॥१५३६॥

अष्टमी के युद्ध की उपसंहार कथा।

दूहा ॥ जिहि ग्रह निग्रह पथ्थिवर। बंधि सनाह सयन्नि ॥
मन बंधिय अच्छरि बरन। बंधि अंग संजोगिन्नि ॥
छं० ॥ १५३७ ॥

पद्धरी ॥ बंधे सनाह न्रप सेन कीन। सोगी उपम्म मनु रंभ दीन ॥
आवृत्त पंग बज्जे निसान। भै चितन लग्गि वर चाहुआन ॥
छं० ॥ १५३८ ॥

तिन सुनी जानि पंगुर नरेस। जनु सत्त जुद्ध जुग्गिनिपुरेस ॥
जनु पंग बिषम धुक्किय सयन्न। जुध सभें बीर विष पियन अन्न ॥
छं० ॥ १५३९ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-मेंस। (२) ए. कृ. को.-तथ्य।

आवृत्त भूमि रनहक्कि वीर। कंपंत वप्प, कायर अधीर॥
हक्कंत [1]न्रप्प सो पंष वीर। सुनि श्रवन हास नारद गंभीर॥
छं० ॥ १५४० ॥

उर ग्रहन बाल दंपति सनाह। दिषि उदित पत्ति रत्तीस दाह॥
पहुपंग वीर संबर सु ताम। मनु बंधिय सेन रति पत्तिकाम॥
छं० ॥ १५४१ ॥

सोभै सनाह उज्जल अवझ्झ। चमकंति भान द्रप्पनति मझ्झ॥
निस गयति अद्ध ससि उदित वीर। बज्जे सु वज्जि मद्यत सुमीर॥
छं० ॥ १५४२ ॥

पृथ्वीराज की वाराह और पंगराज की पारधी से उपमा वर्णन।

कवित्त ॥ अद्ध रयनि चंदनिय। अद्ध अग्गैं अंधियारिय॥
भोग भरनि अष्टमिय। सुक्क वारह सुदि रारिय॥
च्यारि जाम जंगलिय। राव निसि निंदन घुंघ्यौ॥
थल विंध्यौ कमधज्ज। रुंध्यौ कंदल आहुट्यौ॥
दस कोस कोस कनवज्ज तें। कोस कोस अंतर अनिय॥
वाराह रोह जिम पारधी। इम रुक्यौ संभरि धनिय॥ छं०॥१५४३॥

रोह राह वाराह। झार सामंत डढारे॥
ढिल्लो ढार जुझ्झार। पंच सूरति रपवारे॥
रन सिंघार झुझ्झार। उड्ड बड्डा उच्चारे॥
पारथ [2]वर पथ्थियै। सत्त स्वामित्त सु धारे॥
पारस विलास रा पंग दल। धन जिम धर वंवरि दवन॥
संग्राम धाम धुंधरि परिय। निसि न्रिघात तारह छवन॥
छं० ॥ १५४४ ॥

अंधेरी रात में मांसाहारी पशुओं का कोलाहल करना।

चंद्रायना ॥ तारक मंत प्रगट्टिय। घट्टिय पंषियन॥
अंपिन अह उरहन। अहन निंद मन॥

(१) [illegible]।　　(२) [illegible]।

ढिल्लिय ढाल कुलाल। कुलाहल किन्नरन।
ढिल्लिय नाथ सु हाथ। समध्थिन अध्थियन॥ छं०॥ १५४५॥
दूहा॥ अद्ध अवन्निय चंद किय। तारस मारू भिन्न॥
पलचर रुधिचर अंस चर। करिय रवन्निय रिन्न॥ छं०॥ १५४६॥

सामंतों का कमल व्यूह रचकर पृथ्वीराज को बीच में करना।

कवित्त॥ चावद्दिसि रपि स्वर। मद्धि रष्यौ प्रथिराजं॥
ज्यौं सरद काल रस सोष। मद्धि ससि [1]जुत्त विराजं॥
ज्यौं जल मद्धित जोत। तपति वड़वानल सोहं॥
ज्यौं [2]कल मद्धे जमन। रूप मधि रत्तौ मोहं॥
इम मद्धि राज रष्यौ सुभर। नरन सकल निंदौ सु वर॥
सब सुष्प पंग रुक्यौ सु वर। सो उप्पम जंप्यौ सु गिर॥ छं०॥ १५४७॥

पृथ्वीराज का प्रिया के साथ सुख से शेष रात्रि बिताना।

चंद्रायना॥ मिच महोद्दधि मझ्झ। दिसंत ग्रमंत तम।
पथिक बधू पथ द्रष्टि। अहुट्टिय चंग जिम॥
जुवजन जुवतिन गंजि। सुमंति अनंग लिय॥
जिम सारस रस लुद्ध। सुमुद्ध ह मद्ध तिय॥ छं० १५४८॥
चांद्रायन॥ षह[3] चारु रुचि इंद इंदीवर उद्दयौ।
नव [4]बिहार नवनेह नवज्जल रुद्दयौ॥
भूषन सुभ्भ समीपनि मंडित मंड तन।
मिलि म्रदु मंगल कौन मनोरथ सब्ब मन॥ छं०॥ १५४९॥
स्लोक॥ जितं नलिनी तितं नीरं। जितं नलिनी [5] जलं तितं॥
जतो ग्रह ततो ग्रहिणी। जच ग्रहिणी ततो ग्रहं॥ छं०॥ १५५०॥

सब सामन्तों का सलाह करना कि जिस तरह हो इस दंपति को सकुशल दिल्ली पहुंचाना चाहिए।

दूहा॥ मिलि मिलि बर सामंत सह। न्रप रष्षन विचार॥

(१) मो.-जुद्ध। (२) ए. कृ. को.-कमल। (३) मो. यह।
(४) मो.-विरहा। (५) ए. कृ. को-नीरं।

चलै राज निज तरुनि सम। इहै सुमत्तह सार ॥ छं० ॥ १५५१ ॥

जैतराय निढ्ढुर और भौंहा चंदेल का विचारना कि नाहक की मौत हुई।

कवित्त ॥ रा निढ्ढुर राजैत। राव भौंहा भर चिंतिय ॥
सो अरिष्ट उप्पज्यौ। मरन अपकित्ति सुनंतिय ॥
छछुंदरि ग्रहि अप्प। ग्रहन उग्रह को सुझ्झह ॥
मरि छुट्टौ कैमास। मंत जरिगय ता मझ्झह ॥
न्रिप कियौ सुभयौ इन भट्ट सथ। तट्ट भेष राजन कियौ ॥
परपंच पंच बंधहु सुपरि। जोगिनि पुर जाइ सुजियौ ॥
छं० ॥ १५५२ ॥

आकाश में चाँदना होतेही सामंतों का जाग्रत होना और राजा को बचाने के लिये व्यूह वद्ध होने की तैयारी करना।

राजनिढ्ढि कै काज। सूर जग्गे जस पहरैं ॥
पलह चोर लगि आय। भ्रम्म लज्जा रषि गहिरैं ॥
छुध पिपास निद्रान। जानि हवि दीन पछित्तिय ॥
पंच इंद्री सुष बंधि। भए जोगिंद सु गत्तिय ॥
जहं लगि निढ्ढि यष रचन रहै। तहं लग्गि मच्च पर बीर उत ॥
सब मिलिरु सूर पुच्छहि सुमति। अप्प रहैं कहूं न्रपति ॥
छं० ॥ १५५३ ॥

पति दर दर चहुआन। काम चड्डन पंगी भय ॥
हेमादक उनमाद। मुक्कि मोहन सोपन लय ॥
हय गय नर मर नारि। गोर चिहुकोट चलाइय ॥
लाज कोट चहुआन। दुहुन दंती दुहुलाइय ॥
मन रक्कि मार दल रक्किदल। उग्गि चंद कविचंद कहि ॥
सामंत सूर उच्चारि तद। कही मंत फुनि प्रत्त लहि ॥ छं० ॥ १५५४ ॥

(१) ए. इ. को. -- [illegible]

मिले चंद सामंत। मंति सा धृम्म विचारिय॥
इह सुवेह मंगलिय। होइ मंगल अधिकारिय॥
सुगति कुगति अप्पियै। जुगति लभ्भै न जुगंतह॥
जस मंगल तन होइ। काम मंगल सुभ जै ग्रह।
कढ्ढियै स्वामि तन वढ्ढियै। चढ्ढियै धार धारह धनी॥
मंगलन होय इह अन्त कौ। पति रष्षै पति अप्पनी॥ छं०॥१५५५॥

गुरुराम का कन्ह से कहना कि रात्रि तो बीती अब रक्षा का उपाय करो।

दूहा॥ मानि मंत सामंत सह। चलिग बोलि दुजराज॥
स्वामि ध्रम्म पत्तिय सु पति। चलि पुच्छन प्रथिराज॥छं०॥१५५६॥
कन्न लग्गि कहि कन्ह सौं। तकित राय अनुवत्त॥
निसा अप्प ग्रह कियन कछु। प्रात परै इह [1]छत्त॥छं०॥१५५७॥

कन्ह का कहना कि औघट से निकल चलना उचित है।

कवित्त॥ कहै कन्ह तम मुद्ध। मूढ़ राजन जिनि[2]संगह॥
उद्ध मरन तैं डरह। काइ भग्गहु अनभंगह॥
कहिय राव पज्जून। सोब बित्तक द्रह वित्तिय॥
असुर बुद्धि असुरिय। भट्ट मंडन किय कित्तिय॥
गारुडिय ग्रह्यौ अंमृत मितिय। विषम विष्य नल उत्तरै॥
[3]अवघट्ट घाट नंषै न्रपति। दैव घाट संमुह करै॥ छं०॥१५५८॥
जिहि देवल भर कोट। सूर सामंत थंभ धर॥
कित्ति कलस आरुहिय। नीम जीरन जुग्गह कर॥
सार पट्ट पट्टयौ। चिच मंड्यौ सु उकति अप॥
धर्‍यौ पुहुप पहुपंग। करौ पूजा सु वीर जप॥
सा ध्रम्म वचन लग्गौ चरन। देव तेव प्रथिराज हुअ॥
वामंग अंग संजोगि करि। लच्छि रूप मंड्यौ सु धुअ॥
छं०॥१५५९॥

(१) मो.-वत्त। (२) मो.-संग्रह। (३) ए. आवट्टनाव।

राजा पृथ्वीराज का सोकर उठना ।

दूहा ॥ सुनी मत्त कन्नह नृपति । जगी संजोगि निवारि ॥
वीर रोस उठ्यौ न्नपति । मनु रजि रुद्द सार ॥ छं० ॥ १५६० ॥

पृथ्वीराज से सामंतों का कहना कि आप आगे बढ़िए हम एक एक करके पंग सेना को छेड़ेंगे ।

कवित्त ॥ मिलिरु सब्ब सामंत । बोल मांगहिति नरेसर ॥
आप मग्ग लग्गियै । मग्ग रष्षै इक इक्क भर ॥
इक्क इक्क जूझंत । दंति दंतन ढंढोरहि ॥
जिके पंग रा भीछ । मारि सारिन मुष मोरहि ॥
इम बोल रहै काल अंतरै । देहि स्वामि पारथ्थियै ॥
अरि असी लष्ष की अंग मैं । विना राइ सारथ्थियै ॥छं०॥१५६१॥

सामंतों का कहना कि सत्तहीन क्षत्री क्षत्री ही नहीं है ।

कहै सूर सामंत । सत्त छंडै पति छिज्जै ॥
पत्ति छिज्जत छिज्जंत । नाम छिज्जत जस छिज्जै ॥
जस छिज्जत छिज्जै सुगति । सुगति छिज्जत क्रम बढ्ढै ॥
क्रम बढ्ढत बढ्ढै अकिति । अकिति वढ्ढहि नक्क दिज्जै ॥
दिज्जियै नक्क कढ्ढन कुमत्ति । कारनी पति तैं जान भर ॥
छिची निछित्ति सत गरुअ निधि । सत छंडै छची निगर ॥
छं० ॥ १५६२ ॥

सामन्तों का कहना कि यहां से निकल कर किसी तरह दिल्ली जा पहुंचो ।

समद सेन पहुपंग । धार आवध नभ लग्गिय ॥
चढि दो ग्घिचत सामि । पैज लगि धंकिन मग्गिय ॥
स्वामि सुष भुग्गिवै । जित सुर्गां जु सुगति रम ॥
जगि जीवन प्रथिराज । गिल्लौ सप्पीज जंप जम ॥
निद्दान पान भामिनि भवन । ह्व वहौ ज उप्पनौ ॥

मिले चंद सामंत। मंति सो धृम्म विचारिय॥
इह सुवेह मंगलिय। होइ मंगल अधिकारिय॥
सुगति क्षुगति अप्पियै। जुगति लभ्भै न जुगंतह॥
जस मंगल तन होइ। काम मंगल सुभ जै ग्रह।
कढ्ढियै स्वामि तन वढ्ढियै। चढ्ढियै धार धारह धनी॥
मंगलन हीय इह अन्न कौ। पति रष्षै पति अप्पनी॥ छं०॥१५५५॥

गुरुराम का कन्ह से कहना कि रात्रि तो बीती अब रक्षा का उपाय करो।

दूहा॥ मानि मंत सामंत सह। चलिग बोलि दुजराज॥
स्वामि ध्रम्म पत्तिय सु पति। चलि पुच्छन प्रथिराज॥छं०॥१५५६॥
कन्न लग्गि कहि कन्ह सौं। तकित राय अनुवत्त॥
निसा अप्प ग्रह कियन कछु। प्रात परै इह [1]छत्त॥छं०॥१५५७॥

कन्ह का कहना कि औघट से निकल चलना उचित है।

कवित्त॥ कहै कन्ह तम मुद्ध। मूढ़ राजन जिनि[2]संगह॥
उद्ध मरन तैं डरह। काइ भग्गहु अनभंगह॥
कहिय राव पज्जून। सोब बित्तक द्रह वित्तिय॥
असुर बुद्धि असुरिय। भट्ट मंडन किय कित्तिय॥
गारुडिय ग्रह्यौ अंमृत मितिय। विषम विष्य नल उत्तरै॥
[3]अवघट्ट घाट नंषै न्रपति। दैव घाट संमुह करै॥ छं०॥१५५८॥
जिहि देवल भर कोट। सूर सामंत थंभ धर॥
कित्ति कलस आरुहिय। नीम जीरन जुग्गह कर॥
सार पट्ट पट्टयौ। चित्त मंड्यौ सु उकति अप॥
धस्यौ पुहुप पहुपंग। करौ पूजा सु बीर जप॥
सा ध्रम्म वचन लग्गौ चरन। देव तेव प्रथिराज हुअ॥
वामंग अंग संजोगि करि। लच्छि रूप मंड्यौ सु धुअ॥
छं०॥१५५९॥

(१) मो.-वत्त। (२) मो.-संग्रह। (३) ए. आवट्टनाव।

राजा पृथ्वीराज का सोकर उठना ।

दूहा ॥ सुनी मत्त कन्नह नृपति । जगी संजोगि निवारि ॥
वीर रोस उठ्यौ न्रपति । मनु रजि रुद्र सार ॥ छं० ॥ १५६० ॥

पृथ्वीराज से सामंतों का कहना कि आप आगे बढ़िए हम एक एक करके पंग सेना को छेड़ेंगे ।

कवित्त ॥ मिलिरु सब्ब सामंत । बोल मांगहिति नरेसर ॥
आप मग्ग लग्गियै । मग्ग रष्षै इक इक भर ॥
इक्क इक्क जूझंत । दंति दंतन ढंढोरहि ॥
जिके पंग रा भीछ । मारि सारिन मुष मोरहि ॥
हम बोल रहै कल अंतरै । देहि स्वामि पारथ्थियै ॥
अरि असी लष्ष की अंग मैं । बिना राइ सारथ्थियै ॥ छं० ॥ १५६१ ॥

सामंतों का कहना कि सत्तहीन क्षत्री क्षत्री ही नहीं है ।

कहै सूर सामंत । सत्त छंडै पति छिज्जै ॥
पत्ति छिज्जत छिज्जंत । नाम छिज्जत जस छिज्जै ॥
जस छिज्जत छिज्जै सुगत्ति । सुगति छिज्जत क्रम बट्टै ॥
क्रम बट्टत बट्टै अकित्ति । अकित्ति बट्टहि नूक दिज्जै ॥
दिज्जियै नूक कट्टन कुमत्ति । करनी पति तै जान भर ॥
छिची निछित्ति सत गरुअ निधि । सत छंडै छची निगर ॥
छं० ॥ १५६२ ॥

सामन्तों का कहना कि यहां से निकल कर किसी तरह दिल्ली जा पहुंचो ।

समद सेन पहुपंग । धार आवध नभ लग्गिय ॥
चढि वो हियअत सामि । पैज लगि अंकिन मग्गिय ॥
स्वामि सुष्ष भुग्गियै । भ्रित भुग्गै जु सुगति रस ॥
जगि जीरन प्रथिराज । गिल्यौ सप्पीज जंप जस ॥
मिष्टान पान भामिनि भवन । चूक कह्यौ जू उप्पनौ ॥

चहुआन नाय जोगिनिपुरह । धर रष्यै वर अप्पनौ ॥
छं० ॥ १५६३ ॥

राजा का कहना कि मरने का भय दिखाकर मुझे क्यों डराते हो और मुझ पर बोझ देते हो।

मति घट्टी सामंत । मरन भय मोहि दिषावहु, ॥
जम चिट्ठी विन कहन । होइ सो मोहि बतावहु ॥
तुम गंज्यौ भर भीम । तास ग्रब्बह मैमंतौ ॥
मैं गोरी साहाव । साहि सरवर साहंतौ ।
मैरैंज सुरन हिंदू तुरक । तिहि मरनागत तुम करहु ॥
बुझियै न सूर सामंत हौ । इतौ बोझ अप्पन धरहु ॥ छं०॥१५६४॥

पृथ्वीराज का स्वयं अपना वल प्रताप कहना।

राव सरन रावत्त । जदहि धर पायै आवै ॥
राव सरन रावत्त । जदहि कछु पटौ लिपावै ॥
राव सरन रावत्त । काल दुक्काल उवारहि ॥
राव मरन रावत्त । जदहि कोइ [1]अनिवर मारहि ॥
रावत्त सरन नित राव कै । कहा कथन काहावता ॥
संग्राम वेर मुझ्झै सुभर । राव सरन तदि रावता॥छं०॥१५६५॥
मैं जित्तौ गढ द्रुग्ग । मोहि सब भूपति कंपहि ॥
मोहि कित्ति नव षंड । पहुमि बंदी जन जंपहि ॥
मैं भंजै भिरि भूप । भिरवि भुजदंड उपारे ॥
होंव कहा मुष कहौं । कोंन षग षत वियारे ॥
मैं जित्ति साहि सुरतान दल । मुहि अमान जानै जगत ॥
चहुआन राव इम उच्चरै । इं देष्यौ कव कौ भगत ॥छं०। १५६६॥

सामंतों का कहना कि राजा और सेवक का परस्पर का व्यवहार है। वे सदां एक दूसरे की रक्षा करने को वाध्य हैं।

बन राषै ज्यौं सिंघ । बिंझ बन राषहि सिंघहि ॥

(१) मो.-आमिवर ।

धर रष्षै यौं भुअंग। धरनि रष्षैति भुअंगह ॥
कुल रष्षै कुल बधू। बधू रष्षैति अप्प कुल ॥
जल रष्षै ज्यौं हेम। हेम रष्षैति सब्ब जल ॥
अवतार जबहि लगि जीवनौ। जियन जम्म सब आवतह ॥
रावत्त तेहरा रष्षनौ। राजन रष्षहि रावतह ॥ छं०॥ १५६७ ॥

सामंतों का कहना कि तुम्हीने अपने हाथों अपने बहुत से शत्रु बनाए हैं।

तें रष्यौं रा भान। षान रष्यौ हूसेनं ॥
तें रष्यौ पाहार सुरन किन्नर सो मेनं ॥
तें रष्यौ तिरहुंति। कढ़ि तोंअर तत्तारी ॥
तें रष्यौ पंडुयौ। डंडि नाहर परिहारी ॥
रष्षनह ढोल ढिल्ली सुरह। गौर भान भट्टी सरन ॥
चहुआन सुनौ सोमेस सुअ। अरिन अब्ब दिज्जे मरन ॥छं॥१५६८॥

सामंतों के स्वामिधर्म की प्रभुता ॥

अति अग्गें हठ परहि। चोट चिहु रत्तन घल्लहि ॥
परे लेहि परि गाहि। दाह दुअननि उर सल्लहि ॥
पहु डोलंत पछै परंत। पाय अचल्ल चलहि कर ॥
अंत असन सिर सहहि। भाव भल्ल पनति लहहि भर ॥
बरदाय चंद चिंतनु करै। धनि छची जिन'ध्रंम मति ॥
मुक्कहि न स्वामि संकट परें। ते कहियै रावत्त पति॥ छं०॥१५६९॥

पुनः सामंतों का कहना कि "पांच पंच मिल कीजे काज हारे जीते नाहीं लाज" इस समय हमारी कीर्ति इसीमें है कि आप सकुशल दिल्ली पहुंच जावें।

पंचति रष्षहि पास। पंच धरणी धन रष्षहि॥
पंच पृच्छि अनुसरहि। पंच तत्तै जिय लष्षहि ॥

पंच भीत वंचियै। पंच आदर अमनाइत ॥
पंच पंच धर तोन। कहनि मंडियै वासन जति ॥
चहुआन राइ सोमस सुअ। इमग तेग वद्दै सुकिति ॥
अनुसरिय लाज राजन रवन। सुनौ राज राजंन पति ॥
छं० ॥ १५७०

दूहा ॥ राज विमुष्यौ लोक सुनि। धुनि सामंत अनंत ॥
वंक दीह वंछै न को। सुर नर नाग [1]गनंत ॥ छं० ॥ १५७१ ॥

कवित्त ॥ तें रष्यौ ँहिंदवान। गंजि गोरी गाहंतौ ॥
तें रष्यौ जालौर। चंपि चालुक्क चाहंतो ॥
तें रष्यौ पंगुरौ। भीम भट्टी दै मथ्थै ॥
तें रष्यौ रनथंभ। [2]राय जद्दों सै हथ्थौ ॥
इहि मरन कित्ति रा पंग की। जियन कित्ति रा जंगली ॥
पहु परनि जाई ढिल्ली लगै। तौ होइ घरघ्घर मंगली॥छं०॥१५७२॥
सुनौ सूर सामंत। सूर मंगल सुपत्ति तन ॥
लाज वधू सो पत्ति। राज सोपत्ति सूर घन ॥
कबि बानी सोपत्ति। जोग सोपत्ति ध्यान तम ॥
भिचापति सोपत्ति। पत्ति बंधै सो आतम ॥
हम पत्ति पत्ति न्रप जो चलै। तो पति हम [3]पुज्जै रली ॥
सा भ्रम जु पेंज सामंत भर। रुक्के पंगह संजाली॥छं०॥१५७३॥

पुनः सामंतों का कथन कि मर्दों का मंगल इसी में है कि पति रख कर मरें।

सूर मरन मंगली। स्याल मंगल घर आयैं।
वाय [4]मेघ मंगली। धरनि मंगल जल पायैं ॥
क्रियन लोभ मंगली। दान मंगल कछु दिन्नै ॥
सत मंगल साहसी। मँगन मंगल कछु लिन्नै।
मंगली बार है मरन की। जो पति सथह तन षंडियै ॥
चढि षेत राइ पहु पंग सों। मरन सनंमुष मंडियै॥छं०॥१५७४॥

(१) ए. कृ. को गावंत। (२) ए. कृ. को. सुई।
(३) ए. कृ. को.-पुरजै रली। (४) मो. मंगल।

मरन दियै प्रथिराज। हसैं छचिय कर [1]पट्टिहि ॥
मीच लगी निय पाइ। कहैं आयौ घर [2]बैठहि ॥
पंच पंच सौ कोस। कहै दिल्ली अस कथ्यैं ॥
एक एक सूरिमा। पिष्षि बाहंते बथ्यैं ॥
घर घरनि [3]परनि रा पंग की। पहुंचै इस्है बड़प्पनौ ॥
जब लग्गि गंगधर चंद रवि। तब लगि चलै कविप्पनौ ॥
छं० ॥ १५७५ ॥

कहै राज प्रथिराज। मरन छचिय सत लिद्धी ॥
जस समूह गुर सद्द। महिम करि मानन रिद्धी ॥
कथ समूह उच्चरै। चित्त कीजै कवि रूपं ॥
कलस मरन मन चढ़त। पार पल में सो जूपं ॥
छचीन मरन मारन सुरब। नथ्यि सु मिट्टन काल वर ॥
जीरन्न जम्म संदेस बल। ढिल्ली हंदे ढोल गिर ॥ छं० ॥ १५७६ ॥

राजा का कहना कि मैं तो यहां से न जाऊंगा रुक करके लडूंगा।

सुनौ सूर सामंत। जियन अहि डट्ठ काल पुर ॥
अधम अकित्ती मुष्ष। सा ममौ ग्रह दंड दुर ॥
मोंह मंद वर जगत। भए विधि चित्त चिताही ॥
अचित होइ जिहि जीत। पुन्न जित देषि पिषाही ॥
नन मोह छोह दुष सुष्ष [4]तन। तौ जर जीवन हथ्थ भुत ॥
पहु पंग जंग सुक्कै नहीं। जौ जग जीवहि एक सत॥ छं०॥ १५७७॥

सामंतों का उत्तर देना कि ऐसा हठ न कीजिए।

दूहा ॥ राजन मरन न इंछियै। ए भ्रत बंछै नित्त ॥
सिर सट्टै धन संग्रहै। सो रष्पै छच पत्ति ॥ छं० ॥ १५७८ ॥

कवित्त ॥ तन बंटन दुष अपन। कित्ति विय भान न होई ॥
पुच चिया सेवक सु। बंध कर भुग्गवै जोई ॥

(१) ए. कृ. को.- विट्टहि, पेंटाहि। (२) मो.-बट्टहि। (३) ए.-मगनि
(४) ए. कृ. को.-तत।

सुवर सूर सामंत। जीति भंजौ दल पंगं॥
तुम समान छत्री न। भिरौ भारथ्थ अभंगं॥
इन सुभर सूर पच्छै मरन। कित्ती रस मुक्कै न नृप॥
रजपूत मरन संसार वर। ग्रह्न बात बोलै न अप॥छं०॥१५७९॥

पृथ्वीराज का कहना कि चाहे जो हो परंतु मैं यहां से भाग कर अपकीर्ति भाजन न बनूंगा।

बैर व्याह मंगलीय। बेह मंगल अधिकारिय॥
मो कित्ती गर भग्गि। पच्छ भग्गौ जम भारिय॥
बीर मात गावही। अप्पि प्रिय अछित उछारिय॥
मुत्ति जुथानक भग्गि। करौ कानिन उद्दारिय॥
कुट्टी प्रजंक जस मुगति किथ। काम मुक्कि कित्ति सु मुकी॥
जी भंग होइ निसि चीय करि। रहित मोंन वर भ्रंम की॥
छं०॥ १५८०॥

जा कित्ती कारनह। स्रत्त मंग्यौ भीषम नर॥
जा कित्ती कारनह। अस्ति दद्धीच देव वर॥
जा कित्ती कारनह। देव दुर्जोधन मानी॥
जा कित्ती कारनह। राम बनवास प्रमानी॥
कारन्न कित्ति [1]दीलीप न्रप। सिंघ मंग गोदान दिय॥
मम मुक्कि कित्ति हथ्यह रतन। सत्त बरष जीवै न जिय॥छं०॥१५८१॥

सामंतों का कहना कि हठ छोड़ कर दिल्ली जाइए हम पंग सेना को रोकेंगे।

मरन दियै प्रथिराज। कित्ति भज्जै जु अप्प कर॥
पंग कित्त सिंचवय। अषै बल्ली सु बट्ट बर॥
जोगि न्रेस जच्चियै। छंडि मंगल करि मंगल॥
एक एक सामंत। पंग रुद्धंत जाइ दल॥
मानुच्छ देह [3]दुल्लह न्रपति। फुनि देह राजन्न मिलि॥

(१) ऐ. कृ. को-इछै। (२) मो.-दिल्लिय नपति। (३) मो.-दुल्लभ।

रजपूत द्रोह भज्जत लगै । हम रुंधै निसि पंग [1]बल ॥छं०॥१५८२॥

पृथ्वीराज का कहना कि यहां से निकल कर जाना कैसा और शरीर त्याग करने में भय किस बात का ।

अरे अमंत सामंत । मोहि भज्जंत लाज जल ॥
काम अग्गि प्रज्जरै । लोभ आधीन बाइ बल ॥
निस दिन चहै प्रमान । दुहुं कन्ना परि सुझझी ॥
इह लग्गी कल पंक । कत्त जिहि जिहि वर बुझझी ॥
को राव रंक सेवक कवन । कवन न्नपति को चिक्करै ॥
ढिल्लीव दिसा ढिल्लिव न्रपति । पंग फौज धर उप्परै ॥छं०॥१५८३॥

दूहा ॥ सो सति सत न्नप उब्बरै । परैं लभ्भ इह ग्रेह ॥
जिहि वर सुब्बर सोउ न्नप । फल भुग्गवै सु तेह ॥छं०॥ १५८४ ॥

चौपाई ॥ सुनी देह गत जीव प्रमानं । जीरन ज्यौं बंमन फल मानं ॥
जीरन बस्त्र देह ज्यौं छंडै । त्यौं ग्रह छंडि पर त्तिन मंडै ॥
छं०॥ १५८५ ॥

सामंतों का मन में पश्चाताप करना ।

कवित्त ॥ कहै स्हूर सामंत । राज इह बत्त न आइय ॥
जौ भ्रम सतु करि रिदै । बचन मद्धि मन जाइय ॥
कोट हरन द्रग रंजन । चूक क्कहुं न नाइय ॥
जौ साम ध्रंम भ्रत्तहीं । साम द्रोही नन पाइय ॥
अवरन्न ह्रदै धरि रंजै ज्यौं । कब्बि बीर बंदै बचन ॥
ज्यौं अनल डसन मानुन करै । यौं प्रथिराज रन तत्त मन ॥
छं० ॥ १५८६ ॥

राजा का कहना कि सामंतों सोच न करो कीर्ति के लिये प्राण जाना सदा उत्तम है ।

सोच न करु सामंत । सोच भग्गै बल्ल छत्तिय ॥
सामि द्रोह सो बंध । आहि बंधी तन रत्तिय ॥

(१) ए. कृ. को.-कल ।

सोच किधे बल भग्ग। भग्गि बल किति न पाइय ॥
सुगति गये नर सव्व। निड्डि ज्यौं रंक गमाइय ॥
ज्यों उतर सूर पहरैं अरुनि। न्निघति रंज नह ढ्रिग्ग हर ॥
सामंत सूर बोलंत वर। सुवर बीर बित्ते पहर ॥ छं० ॥ १५८७ ॥

पृथ्वीराज का किसी का कहना न मान कर मरने पर उतारू होना।

गाथा ॥ मिटयो न जाइ कहिनौ। कहनो कविचंद सूर सामंतं ॥
प्राची क्रम्म विधानं। ना मानं मायई गत्तं ॥ छं० ॥ १५८८ ॥

दूहा ॥ चित्ति त्यौंर सामंत सह। वहुरि सु रुक्के थान ॥
इहै चित्त चहुआन की। कंचन नैन प्रमान ॥ छं० ॥ १५८९ ॥
मरन मंत प्रथिराज भौ। मरन सुमत सामंत ॥
इंद्रासन मत्तौं[1] लहिय। डोलिय बोल कहंत ॥ छं० ॥ १५९० ॥

सामंतों का पुनः कहना कि यदि दिल्ली चले जांय तो अच्छा है।

कवित्त ॥ सामि हथ्थ भर नथ्थ। नथ्थ भर साम हथ्थ वर ॥
और मंच हिन मंच। [2]मंच उर श्रम पिव सर नर ॥
प्रथम सनेह वियोग। बिछुरि तीय पीय बिच्छवर ॥
जीव सधन पुच विपछ। इष्ट [3]संकट अवुड्डि गिर ॥
सामंत सूर इम उच्चरै। बिरंग द्वेष बंधेत नर ॥
प्रथिराज ग्रेह जौ जाइ वर। जम्म सुष्य बंधौत धर ॥
छं० ॥ १५९१ ॥

पृथ्वीराज का कहना कि मैं तो जैचन्द के साम्हने कभी भी न भागूगा।

चलै नौमेर निधाम। धूम्र डुल्लै चल्लै अपु ॥
सत्त समुद जल षुटै। सत्त मरि जाहि काल वपु ॥

(१) मो· गत्ता (२) ए. क्रु. को-मंत्र उर सम पाविस नर।
(३) ए. कृ. को -संकष्ट।

चंद चंदायन घटै। बढै सूर औगुन अगा ॥
पच्छा पंग नरिंद। राज अग्गै नन भग्गा ॥
जं करौ सूर उप्पाइ बर। राज रहे रज रष्पियै ॥
कहुँ न बैन प्रथिराज अग। बार बार नन अष्पियै ॥
छं० ॥ १५९२ ॥

कविचन्द का भी राजा को समझाना पर राजा का न मानना।

नह मन्निय मति राज। सब्ब सामंत सहित्तं ॥
बरजि ताम कविचंद। मन्न मन राजन बत्तं ॥
बहुरि दिन्न सामंत। गिरद रष्यौ फिरि राजन ॥
फिरे भ्रत्य अप थान। बिंट [1]लिन्ने ते जाजन ॥
बुल्यौ ताम जादव जुरनि। अष्षो कन्ह सुनि नाह नर ॥
न्रिप व्याह राह चिंतौ सुचित। घर सु तरुनि तरुनिय सु घर ॥
छं० ॥ १५९३ ॥

जामराय जद्दव का कन्ह से कहना कि यह व्याह क्या ही अच्छा है।

दूहा ॥ अवर व्याह अनि मंगली। एह व्याह [2]जुधराह ॥
तिन [3]रति व्याह हरष्पियै। रयन मयन प्रथमाह ॥ छं० ॥ १५९४॥

*भुजंगी ॥ परी पंग पारस्स घन घोर कोटं। भए सूर सामंत सो सामि ओटं॥
दिसा अट्ठ बीरं सुषं पंग साहे। गहे सामि ध्रम्मं अध्रम्मं न गाहे॥
छं० ॥ १५९५ ॥

व्यूह वद्ध सामंत मंडली और पृथ्वीराज की शोभा वर्णन।

कवित ॥ दिसि बांई [4]उर भ्रत्त। सूर हय अरुहि पंति फिरि ॥
सत्त पंच हय तेज। पच्छ उभ्भै पारस्स करि ॥

(१) ए. कृ. को.-लिल्ले। (२) ए.-जुद्धराह। (३) ए. कृ. को.-रतिवाह।
* इस छन्द को ए. कृ. को. तीनों प्रतियों में चौपाई और मो. प्रति में अरिल्ल करके लिखा है।
(४) ए. कृ. को.-सुर।

बर उज्जल सन्नाह। तेज चिहुं पास बिराजै ॥
कै पसरी रवि किरनि। मेर बिच लषि प्रथिराजै ॥
नग सुष्प गढ़ी दुकूल बिधी। वीर बीच दंपति मयन ॥
सन्नाह सहित सुभ्भै सु न्रिप। रति तीरथ परमै मयन॥
छं० ॥ १५९६ ॥

उक्त समय संयोगिता और पृथ्वीराज के दिलों में प्रेम की उत्कंठा बढ़नी ।

गाथा ॥ श्रम भौ बर संग्रामं। अभि लिष्पियं चिंतयो बालं ॥
ग्रब्बं भौ चहुआनं। नंदरीयं सेन पंगायं ॥ छं० ॥ १५९७ ॥

मुरिल्ल ॥ कुंचित न्रिप कल किंचित पायौ। नेह दिष्ट दंपति न महायौ॥
छुटित लाज छिन छिन चढ़ि मारे। ज्यौं जोबन चढ़ि सैसव वारे॥
छं० ॥ १५९८ ॥

कन्ह का कुपित होकर जामराय से कहना कि तुम समझाओ जरा मानें तो मानें।

कवित्त ॥ तब कहै कन्ह नर नाह। सुनहि जामान जादवर॥
बिरध राह हड्डाह। तुमहि बुझ्झौ सुभाव भर ॥
तुम समान नहि बीर। नेह सम सगुन सुधा रस॥
तुमहि कहौ तिन राज। प्रेम कारन्न काम कस ॥
हम काज आज सिर उप्परें। षग्ग धार [1]टालों सु षल ॥
पुज्जओं राज ढिल्ली सु धर। दुभर सु भर भंजों सु दल ॥
छं० ॥ १५९९ ॥

मे जान्यौ पहिलों न। एह राजन क्रत काजन ॥
मरन पच्छ कैमास। मंत जानै नह ताजन ॥
भट्टकज्ज न्रप करिय। [2]सकल लोकह सो जानिय ॥
एह कथा पहिलौंन। संन सन भई सयानिय ॥
[3]मत्यौ सु एह कारन प्रथम। पुर कमद्ध प्रथिराज किय ॥

(१) ए. कृ. को. राले। (२) ए. कृ. को.-सव्व।
(३) ए. कृ. को.-मंत्यों।

षंडौ सु अब्ब अरि हर उक्कसि। लोक सु जित्तौ काज जिय॥
छं० ॥ १६०० ॥

जामराय जद्दव का राजा से कहना कि विवाह की यह प्रथम रात्रि है सो सुख सेज पर सोओ।

सुनिय बत्त राजंन। कन्ह मन रीस अप्प चित॥
पय लग्यौ नरनाह। धन्नि जंपी सु धन्नि हित॥
बलिय बास न अन अन्य। फिरत रोपिय सब संगिय॥
बंध वारि विथ्थारि। उद्ध चिंतान विलग्गिय॥
जंपयौ राज जद्दौ नमिय। प्रथिम रज इह व्याह रह॥
खनिय सु ग्रेह प्रथमाह यह। करहु सयन न्रिप सुष्प सह॥
छं० ॥ १६०१ ॥

दरबार बरखास्त होकर पृथ्वीराज का संयोगिता के साथ शयन करना।

दूहा॥ संजोगिय नयननि निरषि। सफल जनम न्रप मानि॥
काम कसाये लोयननि। हन्यौ मदन सर तानि॥
छं० ॥ १६०२ ॥

सुधि भूली संग्राम की। भूलि अप्पनिय देह॥
जोन भयो बसि पंग दल। सो भयो वाम सनेह॥
छं० ॥ १६०३ ॥

नयन चरन करमुष उरज। विकसत कमल अकार॥
कनक वेलि जनु कामिनी। लचकनि वारन भार॥छं०॥१६०४॥
रवनि रवन मन राज भय। भयौ नैंन मन पंग॥
सूरन सों संग्राम तजि। मंड्यौ प्रथम रस जंग॥ छं० ॥ १६०५॥
तब सु राज रवनिय निरषि। हसि आलिंगन दिट्ठ॥
रचिय काम सयनह सुबर। दिय अग्या भर उट्ठ॥ छं० ॥ १६०६॥

प्रातः काल पृथ्वीराज का शयन से उठना सामंतों का उस

के स्नान के लिये गंगाजल लाना स्नान करके पृथ्वीराज का सन्नद्ध होना।

पद्धरी॥ अग्गिय दीन जद्दवह जाम। रष्यहु जु मध्य निष्ठाम ठाम॥
संगयौ ताम प्रथिराज वारि। अंदोलि मुप्प पय पान धारि॥
छं०॥ १६०७

आवद्ध वद्ध सुघ सयन कीन। सब दिसा अप्प बर बंटि लीन॥
सब फिरत याह सामंत दीन। पारस फिरंत सामंत कीन॥
छं०॥ १६०८॥

दस हथ्थ मग्ग सीसह सु चंद। बैठो सुचिंत चिंता समंद॥
निड्डरह राव जामान सथ्थ। बलिभद्र सिंघ पामार तथ्थ॥
छं०॥ १६०९॥

सामलौ सूर दिसिं पुब्ब पंच। रष्पनह राइ राजेस मंच॥
नर नाह कन्ह पामार जैत। उद्दिग्ग उदोत राष्यै सु भैत॥
छं०॥१६१०॥

हाहुलियराव हंमीर तथ्थ। जंघालराव भीमान पथ्थ॥
धन पत्ति दिसि राषै सु धीर। अप अप्प परिग्गह जुत्त वीर॥
छं० ॥१६११॥

बंधव बरन्न तोमर पहार। बग्घेल सु लष्पन लष्प सार॥
द्वै बंध हड्ड सम अप्प सूर। महनसी पीप परिहार पूर॥
छं० ॥ १६१२॥

पच्छिम दिसाह सजि धीर सार। भंजनह मंत गय जूहभार॥
पवार सलष आजानबाह। चहुआन अत्त ताई उधाह॥
छं० ॥ १६१३॥

चालुक्क बिंझ भोंहा अभंग। बग्गरी देव षीची प्रसंग॥
बारउह सिंह अनभंग भार। दच्छिन दिसाह सजि जूह सार॥
छं० ॥ १६१४॥

(१) मो.-पुज्ज।

[1]साहस्स एक सत एक सथ्थ। सब भ्रत्त इंच नीचह उरथ्थ॥
छं० ॥ १६१५ ॥

अप अप्प भ्रत्य सामंत सब्ब। पट्टए काज जल पंग तब्ब॥
कमधज्ज भ्रत्य मध्ये वराह। आनयौ अप्प भेदेव ताह॥छं०॥१६१६॥
मुष पाय पानि अंदोलि वारि। अच्चयौ अप्प आतम अधारि॥
करि सुतन संति सामंत राज। चिंते सु इष्ट भर स्वामि काज॥
छं० ॥ १६१७ ॥

आवद्ध बंधि सजि बाजि सब्ब। आसन्न ताम अप्पह अथब्ब॥
उच्छंग भ्रत्य कौ दै असीस। अस्तंमि षेट के षिन परीस॥
छं० ॥ १६१८ ॥

पारस्स बैठि पंगुरह सेन। गज्जैं निसान हय गय गुरेन॥
चिंता सु चुंभि अति पंग राज। पारस्स फिरे चहुआन काज॥
छं० ॥ १६१९ ॥

प्रातः काल होते ही पुनः पंग दल में खरभर होना।

दूहा॥ चित्त अत्ति चिंता तपित। सज्जि राज कमधज्ज॥
जिके सुभट वर अप्पने। फिरै तत्त क्रित रज्ज॥ छं० ॥ १६२० ॥
सेन संजोग प्रथिराज हुअ। बाजहि लाग निसान॥
काइर बिधु मन बंछही। सूरही बंछहि भान॥ १६२१ ॥

प्रभात की शोभा वर्णन।

रासा॥ इसी राति प्रकासी। सर कुमुदिनी विकासी॥
मंडली सामंत भासी। किवन कल्लोल लासी॥ छं० ॥ १६२२ ॥
पारसं रज्जि चंदं। लारस्स तेज [2]मंदं॥
कातरा क्रति बंधे। सूर सूरत्तन संधे॥ छं० ॥ १६२३ ॥
वियोगिनी रैंनि लुट्टी। संजोगिनी लाज छुट्टी॥
* * * । * * छं०॥१६२४॥

(१) ए. कृ. को.-माहस। (२) ए. कृ. को.-मंदं।

चोटक ॥ छुटि छंद गिसा सुरसा प्रगटी। मिलि ढालनि माल रही सु घटी॥
निसमान निसान दिसान हुअं। धुअ धूरिन मूरिन पूरि पुअं॥
छं० ॥ १६२५ ॥

नव निझ्झरयं बनयं बनयं। गज बाजत साज तयं घनयं॥
निज कच्छरि अच्छरियं सदयं। करि रंजन मंज नयं जनयं॥
छं० ॥ १६२६ ॥

करि सारद नारदयं नदयं। सिर सज्जन मज्जनयं सदयं॥
निज निर्भय यं चहुआन मनं। किर निर्भर रज्जित सूर जनं॥
छं० ॥ १६२७ ॥

गाथा ॥ सितभ किरनि समूरौ। [१]पूरयं रेनं पंग आयेसं॥
जुग्गनि पति भर सूरौ। पारस मिलि पंग राएसं॥ छं० ॥ १६२८॥

मुरिल्ल ॥ पारसयं पसरी रस कुंडलि। जानकि देव कि सैव अपंडलि॥
हालि हलाल रही चव कोदिय। दीह भयौ निस की दिसि मुंदिय॥
छं० ॥ १६२९ ॥

प्रातः काल से जैचन्द का सुसज्जित हो कर सेना में पुकारना कि चौहान जाने न पावे।

* कुंडलिया ॥ देषि चिरा उद्योत घन। चंद सु ओपम कथ्य॥
दीपक विद्या जनु रचिय। द्रोन कि पथ भारथ्य॥
द्रोन कि पथ भारथ्य। काम आये जै जरथं॥
उभय घरी दिच्छतें। रुधि हरि चक्र विरथं॥
दो प्रदीप गज तुरँग रथ। एक धनुष पाइल करग॥
पावै न जानि पथ्थीखिका। निसा दीह सम करि भिरग॥
छं० ॥ १६३० ॥

कवित्त ॥ सहस पंच सम सूर। पास वर तिय निरमल कुल॥
निज सरीर हथ देह। सज्जि सिर अग्गि राज बल॥
तिन समथ्थ रा पंग। फिरत सब सेन अप्प प्रति॥

(१) मो.-चूरयं सेन पंग आएसं ।

* वास्तव में यह डोढ़ा छन्द है परंतु इसकी बीच की दो पंक्तियां खो गई है। यह छन्द मो. प्रति में नहीं है ।

जिके सेन प्रथिसेव । कहै प्रथिराज रोह तति ॥
जिन जाय निकसि चहुआन ग्रह । ग्रहौ तास सब सेन हय ॥
[1]इम फेरत राज निज भ्रत्त प्रति । प्रथु सनमानित सब्ब रय ॥
छं० ॥ १६३१ ॥

जैचन्द का पूर्व दिशा से आक्रमण करना ।

करति अरति पहु पंग । फिरे सब सेन अप्प प्रति ॥
जग्गि तेज हुल्लाल । झाल दुति भई दीह भति ॥
प्रथम पुब्ब दिसि राज । जथ हुं तह फिरि पारस ॥
तहं फिरि आइय राज । जाम जामनिय रहिय तस ॥
प्राचीय मुष्प सजि राज गज । दिष्षि सोय कमधज्ज नमि ॥
न्रप चढ़े तेव टामंक करि । ग्रहन राज चहुआन तमि ॥
छं० ॥ १६३२ ॥

सुख नींद सोते हुए पृथ्वीराज को जगाने के लिये कविचन्द का विरदावली पढ़ना ।

पद्धरी ॥ सोवै निसंक संभरि नरिंद । पष्परत पंग संक्यौ सुरिंद ॥
प्रथिराज काम रत सम संजोगि । अवतार लियौ धर करन भोग ॥
छं० ॥ १६३३ ॥

जग्गवै कोन जाल्मिम जोइ । प्रेमनिय प्रेम रस रच्यौ भोइ ॥
चव बाह मत्त [2]हौसेंकि कान । चंपि चुंग दिसनि रहि घुरि निसान ॥
छं० ॥ १६३४ ॥

सिंधूअ मारु मलक्यौ सु गान । सुनि सूर नद्द काइर कंपान ॥
पंचास कोस रुद्धी धरन्नि । मेलान मध्य चहुआन किन्न ॥
छं० ॥ १६३५ ॥

कवि किय किवार बुल्ल्यौ बिरद्द । सिंघ जिंम जग्ग सुनि श्रवन सद्द ॥
छं० ॥ १६३६ ॥

---

(१) ए. कृ. को -इम फेर राजनित भृत पाति । (२) ए. कृ. को.-हौंसहि ।

पृथ्वीराज का सुख से जागना।

दूहा ॥ बिरदावलि बोलत जग्यौ। श्रीय संजोइय कंत ॥
कंदल रस रत्ते नयन। क्रोध सहित बिहसंत ॥ छं० ॥ १६३७ ॥

गाथा ॥ इम सज्जत सामंत। घटय रयनि तुच्छ संघरियं ॥
जग्गत नृप चहुआनं। पयानं भान [1]प्रच्छानं ॥ छं० ॥ १६३८ ॥

दूहा ॥ सयन संधि मंडिय नृपति। दुअ थट्टौ अरि षेति ॥
मानि घात सामंत मन। तब उभ्भै करि नेत ॥ छं० ॥ १६३९ ॥

पृथ्वीराज का सैन से उठ कर संयोगिता सहित घोड़े पर सवार होना और धनुष सम्हालना।

त्रोटक ॥ न्रिप मंगिय राज तुषार चढ़े। कविचंद जयज्जय राज पढे ॥
परिपंग कटक्कत घेर घनं। दस पंचति कोस निसान सुनं ॥
छं० ॥ १६४० ॥

गज राज विराजित मध्य घनं। जनु बद्दल अभ्भ सुरंग बनं ॥
[2]परि पष्षर सार तुरंग घनी। जनु ह्ल्लत हेल समुद्द अनी ॥
छं० ॥ १६४१ ॥

बर बैरष बंबरि [3]छच तनी। बिच माहिय स्याहिय सिंघ रनी ॥
[4]हरि पष्ष इमा उभ्भ पीत बनी। जनु लज्जत रैंनि सरद्द तनी ॥
छं० ॥ १६४२ ॥

भन नंकहि भेरि अनेक सयं। सहनाइय सिंधुअ राग लयं ॥
निसि सब्ब न्रिपत्ति अनीन फिरै। जनु भांवरि भान सुमेर करै ॥
छं० ॥ १६४३ ॥

दल सब्ब सँभारि अरित्त करी। जिन जाइ निकस्सि नरिंद अरी ॥
गत जांम चिजाम सु पीत परी। जय सद्द अयासह देव करी ॥
छं० ॥ १६४४ ॥

कर चंपि नरिंद सँजोगि ग्रही। उपमा चर चारु सुभट्ट कही ॥
मनों भोर दुझारसि अग्गि तपी। कलिका गजराज कमोद झपी ॥
छं० ॥ १६४५ ॥

---

(१) ए. को.-प्रस्थानं। (२) मो.-परि पष्पर ताप सुरंग घनी।
(३) मो.-पचवती। (४) ए. कृ. को.-हरि पष्ष उमापति पीत पती।

पय चंपि रके बनि बाल चढ़ी। रबि बेलि किधों गरु काम बढ़ी॥
तर तोन चमंकत पच्छ दिठी। जु मनों तन भांन [1]मयूष उठी॥
छं० ॥ १६४६ ॥

मुष दंपति चंद बिराज बरं। उदै अस्त ससी रबि रथ्य षरं॥
भर त्रप्प सजे सु तरंग चढ़े। मनुं भान पयानति लोह कढ़े॥
छं० ॥ १६४७ ॥

चहुआन कमानति कोपिलियं। मिलि भोहनि षंचि कसी सदियं॥
सर छुट्टत पंषति सद्द [2]सयं। मद गंध गयंदन मुक्कि गयं॥
छं० ॥ १६४८ ॥

सर एक सु बिद्धत सत्त करी। दल दिष्षत नेंन ठठुक्क परी॥
नरवारि हजारक च्यार परी। प्रथिराज लरंत न संक करी॥
छं० ॥ १६४९ ॥

पंग सेना का व्यूह वर्णन।

कवित्त॥ उभै सहस गजराज। मद्द मुष्षह पँति फेरिय॥
नारि गोर जंबूर। बान छुटि कहुँकि सु भेरिय॥
पंग अग्ग कँद्रप कुआर। [3]मीर गंभीर अभंगम॥
ता अग्गे बन सिंघ। टांक बलिभद्रति जंगम॥
केहरि कंठेरि अग्गें नृपति। सिंह बिभग्गा सिंह रन॥
उग्यौ न भान पयान बिन। [4] मथन मेंर मच्चौ महन॥
छं० ॥ १६५० ॥

वीर ओज वर्णन।

रसावला॥ षग्ग वीरं षुलं, अंत दंतं रुलं। दंत दंती षुलं, लोहरतं मिलं॥
छं० ॥ १६५१ ॥

बीर बीरं ठिलं, सार सारं झिलं। चच्च [5]रंसी पिलं, बीर अंगं ढिलं॥
छं० ॥ १६५२ ॥

(१) ए. कृ. को.-मझंप। (२) ए. कृ. को.-भयं। (३) ए. कृ. को.-मीर।
(४) मो.-मथन। (५) ए. कृ. को.-चच्चरं चीपिलं।

काइरं अे पुलं, बैन बड्डे वुलं। सिञ्च 'बिरतं डुलं, अम्म बंधं षुलं॥
छं० ॥ १६५३ ॥

सुगति मग्गं चलं, ईस सीसं रुलं। ढुंढि बंधं गलं, पग्ग मग्गं दलं॥
छं० ॥ १६५४ ॥

ढाल गज्जं मलं, देवलं अं ढुलं। घाइ घुम्मै षलं, अंग सोभै ललं॥
छं० ॥ १६५५ ॥

सीस हक्कै कलं, काइ रंजं ढ़लं। पिंड रत्नं पनं, पग्ग वित्तं तनं॥
छं० ॥ १६५६ ॥

सूर उट्ठै पनं, द्रोन नच्ची धनं। आयुधं भंभनं, नारदं रिभभनं॥
छं० ॥ १६५७ ॥

सूर्योदय के पहिले से ही दोनों सेनाओं में मार मचना।

कवित्त ॥ बिनह भान पायान। इदं कमधज्ज जुद्ध दुअ ॥
सच्चौ न बोल संषुलै। बिरद पागार बज्ज भुअ ॥
सुकल 'षोलि कल्हार। भ,कित कव्यौ भाराहर ॥
बिनहि अरुन उद्योत। अरुन उग्यौ धाराहर ॥
पह विन पुकार पह उप्परिग। सु प्रह पहक फट्टी फहन ॥
उह्गि सुतन अरि वर किरन। मिलिव चक्क चक्की गहन ॥
छं० ॥ १६५८ ॥

असिवर भार उघ्घरिय। चक्क चक्की अनंद मन ॥
कुमुद मुदिग कमधज्ज। सेन संपुटिग सघन रिन ॥
पंच जन्य संपन्न। सकल कुरु घरनि घरीयं ॥
पसु कि मभ्भ मुष पंच। तिमिर किरनिनि निवरीयं ॥
उडगन अचंभ कौतूहलह। अरु जु स्वामि किन्नौ गहरु ॥
उह्गि पगार सुत पंचनन। समर सार बुल्यौ पहरु ॥
छं० ॥ १६५९ ॥

(१) मो.-विर्त्ते। (२) ए. कृ. को.-कोल।

युद्ध वर्णन।

वृद्धनाराज ॥ हयग्गयं नरभ्भरं [1]रथं रथंति जुट्टयौ।
मनों नरिंद देव देव झल्लरी सु बद्दयौ ॥
किनंकही तुरंग तुंग जूह गज्ज चिक्करं।
जु लोह छक्कि नष्षि भोमि षेत मुक्कि निक्करं ॥ छं० ॥ १६६० ॥

बजंत घाय सद्दकं ननद्द नद्द मुद्दरं।
गरब्भि देषि अग्गि ज्यों विदोष मन्न जो दुरं ॥
उठंत दिष्ट सूर की करूर अंषि राजई।
मनों कि सौकि बीय दिष्ट बंकुरीति साजई ॥ छं० ॥ १६६१ ॥

उभै सथन्न क्रम्म थंक को न भूमि छंडयं।
जु मक्खि भ्भ कंक भज्जि कोन सार अंग षंडयं ॥
बरंत रंभ रंभ भंति सार के दुझारयं।
जुधं जुधं बजंत सूर धार धीर पारयं ॥ छं० ॥ १६६२ ॥

त्रुटंत श्रोन सीस द्रोन नंचि रीस हक्कयौ।
[2]रचंत भोम बिद्र कार बीर बीर झक्कयौ ॥
परंत के उठंत फेरि मच्छ ज्यों तरप्फई।
रनं बिधान धीर बीर बीर बीर जंपई ॥ छं० ॥ १६६३ ॥

अरुणोदय होते होते भोनिग राय का काम आना।

कवित्त ॥ पहर एक असि एक। एक एकह निब्बर धर ॥
धर धर धरनि निहारि। नाग धक्कयौ सु नाग सिर ॥
हल्ल हल्लि मिल्लि रट्टौर। रीठ बज्जी बज्जारह ॥
कर क्कस रस केलि। धार तुट्टिय लगि धारह ॥
दुहुं दल्ल पगार पागार गिरि। [3]भिरि भुअंग भूनिग तनौ ॥
पहु फटिग पटिग सर्वरि समर। भ्रमर मोह जग्यौ घनौ ॥
छं० ॥ १६६४ ॥

(१) मो.-रथं रथं सु। (२) ए- कृ. को.-चरत नाम छिद्रकार। (३) मो.-भर।

अरुणोदय पर साषुला सूर का मोरचा रोकना।

अरुन बरुन उट्ठयौ। अरग उद्दिग उद्दिग जुज॥
सद्द सुप्परि सा षुलौ। पोलि पंडौ उग्गिग दुज॥
हय गय नर आरुरि सु। राह बंबरि बर तोस्यौ।
सार सार [1]संझार। बीर बंबरि झंझोस्यौ॥
पहुपंग समुद ऊरद्ध[2]अध। सूर सार मारह हनिय॥
दनु देव नाग जै जै करहिं। वरन रुद्र रुद्रह भनिय॥
छं० ॥ १६६५ ॥

घरी एक दिन उदै। पंग आरुहिय सेन भिरि॥
हय गय नर भर भिरत। लुथ्थि आहुट्टि लुथ्थि पर॥
किन्नर बर [3]चै नेन। बीर पस पंप किलक्किय॥
पंचम सुर जुग्गिनिय। बंधि नारद्द सु वक्किय॥
हं हंत हंत सुर असुर कहि। जै जै जै प्रथिराज हुअ॥
असि लष्ष पंग साइर उलटि। धनि नरिंद मंडेति भुअ॥
छं० ॥ १६६६

एक घड़ी दिन चढ़े पर्य्यंत सामंतों का अटल हो कर पंग सेना से लड़ना।

परिग बीर बन सिंघ। रंग कमधज्ज सुरष्पिय॥
बर सुरंभ घरि फेरि। तज्यौ बर प्रान सु लष्पिय॥
ज्यौं मझ्झ बर [4]अष्पि। जैन बंकुरि तिय लष्पिय॥
बीनि रंभ दुहु हथ्थ। मरन जीव ते लष्पिय॥
लष्षन प्रमान मझ्झहिति रुष। रंभ अरंभन फिरि बरी॥
तिहि परत सिंघ रषि रिंघ अप। पंग पंच हथ्थिय परी॥
छं० ॥ १६६७ ॥

दूहा॥ घरिय उदय उभ्भय दिवस। हक्कि हलक गज पंग॥
सुभर सूर सामंत सुनि। टरिय न बीर अभंग॥ छं० ॥ १६६८ ॥

(१) मो.-संसार (२) ए.-अस । (३) ए. कृ.को.- त्रैनेत्र। (४) कृ. को. अछि।

सामन्तों का पराक्रम और फुर्तीलापन।

कवित्त ॥ जहं जहं संभरि वार। सूर सामंत बहिग बर ॥
तहं ति तेज अग्गरौ। फिरयौ करि वार करतु कर ॥
जहं तहं भय भागंत। सार सनमुष सिर सहयौ ॥
जहां जहां चहुआन। चिहुरि चंचल चित रहयौ ॥
तहँ तहं सु सार [1]सारंग लिय। विरचि बीर चंदह तनौ ॥
पहु पुच्छ तुरी रिंझवि रनह। तहं तहं करै निबच्छनौ ॥
छं० ॥ १६६९ ॥

पङ्गराज की अनी का व्यूह वर्णन और चंदेलों का चौहानों पर धावा करना और अत्तताई का मोरचा मारना ॥

षोड़स गज पहु पंग। मीर सत सहस राज अगि ॥
अट्ठ अट्ठ गज राज। दिसा दच्छिन रु वाम मग ॥
षां पहार मोहिल्ल। महिद बंध रान ततारिय ॥
समर सूर चंदेल। बंध मिलि बाग उपारिय ॥
वर बंध वरुन अल्हन उभै। अत्तताइ अवरत्त बर ॥
दिसि मुक्कि वाम दच्छिन परिग। हाइ हाइ आरत्त भर ॥
छं० ॥ १६७० ॥

रसावला ॥ हल्लके हल्लकं, गिरं जानि बक्कं। छुटी मद्द पट्टं, वपं मेर घट्टं॥
छं० ॥ १६७१ ॥
चढ़ी जम्म भल्ली, गिरं भ्मान हल्ली। सर क्कित्त मद्दं, घटं जानि भद्दं॥
छं० ॥ १६७२ ॥
दियै दंत भारी, सनंना सयारी। [2]कवी बक्क अप्पं, भ्रमै मेघ पप्पं॥
छं० ॥ १६७३ ॥
धयै तेज जस्सं, जपं कंक कस्सं। [3]सरं नाव कस्सं, पनु रंत अस्सं॥
छं० ॥ १६७४ ॥
कुकं कोपि हल्ली, उपम्माति भल्ली। नदी नंद पायौ, रुपी पान धायौ॥
छं० ॥ १६७५ ॥

(१) ए- मा मंगलिय। (२) मो०-कची चक्क अप्पं। (३) ए० कृ. को.-रसं।

पतू रत्त अस्सं, जपं कंक कस्सं। मुषं मोर आनं, उपम्मान आनं॥
छं० ॥ १६७६ ॥

इतने में पृथ्वीराज का दस कोस बढ़ जाना परंतु हाथियों के कोट में घिर जाना ॥

कवित्त ॥ चढ़ि पवंग प्रथिराज। कोस दस गयो ततच्छिन ॥
परत कोट चिहुकोद। घेरि करि लियौ गयंदनि ॥
इम जंपै जैचंद। भग्गि प्रथिराज जाइ जिन ॥
सोइ रावत रजपूत। सूर तिहि गनौं अयंगनि ॥
[1]कंमान कठिन कविचंद कहि। दुहु भुव ब्ल कर तानियौ॥
लग्गौ सु बान जयचंद हय। तब दल फिरि दुहुं मानयौ ॥
छं० ॥ १६७७ ॥

पृथ्वीराज का कोप करके कमान चलाना।

इसौ देषि प्रथिराज। सहस ज्वाला जक जग्गिय ॥
मनों गिरवर गरजंत। फुट्टि दावानल अग्गिय ॥
अप्प अप्प विप्फु-यौ। करिय ज्वाला क्रम लग्गिय ॥
मनु पावक सस्त्रि बीज। आनि अंतर गन जग्गिय ॥
हिरनाल फाल कट्टिन सकै। दावा नल भट्टह तयौ ॥
कनवज्ज नाथ असिलष्ष दल। जन जन अग्गि झपट्टयौ ॥
छं० ॥ १६७८ ॥

एक प्रहर दिन चढ़ते चढ़ते सहस्त्रों योद्धाओं का मारा जाना।

सत विद्धौ चहुआन। पंग लग्गौ अभंग रन ॥
सु बर सूर सामंत। जोति झलहलिय उंच घन ॥
जांम एक दिन चढ्यौ। रथ्थ पंच्यौ किरनालं ॥
ब्रह्म चौंति फुनि परिय। देषि भारथ्थ विसालं ॥
पूतंनि ताम देवन्न कर। धरे ग्रब्भ दस मास बर॥
जोगवै जतन पन निम्मइय। तिन मरत न लग्गत पल सुभर ॥
छं० ॥ १६७९ ॥

(१) ए. कृ. को.-लैकर कमान कविचंद कहि।

गाथा ॥ इष्टं सनाह सरिसं। निसुष निसुष बंधनं तनहं ॥
तिष्टं जोग प्रमानं। तं भंजयौ सूर निमिपाई ॥ छं० ॥ १९८० ॥
दूहौ ॥ रन रुंध्यौ संभर धनी। पंग प्रमानत घेरि ॥
निसुष सु रष्यौं बर न्टपति। ज्यौं पति भान सुमेर ॥ छं०॥१९८१ ॥

जैचन्द का कुपित होकर सेना को आदेश करना।

कवित्त ॥ लल्लै नैन सु पंग। बान रत्ती रस बीरं ॥
हथ्थ रोस विथ्थुरै। मोंह मुक्कत्ति सरीरं ॥
गह गहगह उच्चार। भार भारथ सपंतं ॥
बंधन बर चहुआन। भीम दुस्सासन रतं ॥
सावंग अंग चित पंग कौ। ग्रत्त[1] सोज प्रथिराज रस ॥
सामंत होम भारथ्थ कस। बीर मंच जदि होइ बस ॥ छं० १९८२ ॥

घनघोर युद्ध वर्णन।

रसावला ॥ परे पंच वीरं, म्रदेलष्य भीरं। परे बंद मन्नी, समंदं हरन्नी ॥
छं० ॥ १९८३ ॥
मथे बीर भीरं, जुजंतं सरीरं। उडै छिंछ ध्रग्गं, लगे अंग अग्गं ॥
छं० ॥ १९८४ ॥
नगं रत्त जैसं, जरे हेम तैसं। लगे लोह तत्ती, सहं बीर पत्ती ॥
छं० १९८५ ॥
सुन्यौ बीर नदं, वहै बग्ग हदं। वही अंष जारी, विजू यों संझारी॥
छं० ॥ १९८६ ॥
[2]धुसी लग्गि वीरं, वरं मंत पीरं। [3]गढ़ ढाहि नीरं. दंती कढ्ढि वीरं ॥
छं० ॥ १९८७ ॥
कन्हं कंस तीरं, कंधं नंषि भीरं। घयं वार पारं, रुधी धार धारं ॥
छं० ॥ १९८८ ॥
जयं कंन रायं, पलं छुट्टि वायं। सिरं तुट्टि पारं. रुधी छुट्टि धारं ॥
छं० ॥ १९८९ ॥

(१) मो०-व्रत। (२) ए. कृ. को.- छुट्टी (३) ए. कृ. को.- गजं।

नभं होम लग्गी घृतं होम अग्गी। घटं घट्ट धारं, दिवी घट्ट भारं॥ छं० ॥ १६६०॥

झले पग्ग जग्गी, तिने लोक लग्गी। जिवं मुक्ति भट्टं, चलो बंधि यट्टं॥ छं० ॥ १६६१॥

धरं धार चट्टं, पगं मग्ग बट्टं। सस्त्र वीर झारं, अधं लीन भारं॥ छं० ॥ १६६२॥

मरं मार [1]मारं, पंगं बीर वारं। * * छं० ॥ १६६३॥

पृथ्वीराज के सात सामंतों का मारा जाना और पंग सेना का मनहार होना परंतु जैचन्द के आज्ञा देने से पुनः सबका जी खोलकर लड़ना।

कवित्त ॥ परिग पंग भर सुभर। राज रजपूत सत्त परि॥
लोथि लोथि पर चढ़ी। बीर बट्टीति कोट करि॥
परिग सूर जै सिंह। गौर गुज्जर पहार परि॥
परिय नन्द अरु कन्ह। अमर परि नाभ अमर करि॥
बग्गरी परिग रनधीर रन। रनरुंधिग रिन मल्ल परिग॥
इन परत स्हर [2]सत्तौ तिरन। पंग सेन ढट्टु कि करिग॥ छं० ॥१६६४॥

भुजंगी ॥ ठठुक्के सुसेनं मनं मीर मिल्लै। डरं [3]विढ्ढुरी सेन सब्बें निवल्लै॥
बरं बैर राठौर चहुआन [4]झल्लै। तवै लष्यियं पंगु रा नेन लल्लै॥ छं० ॥ १६६५॥

तिंन उप्पजी रोस उर अभ्भ अग्गी। उतं निक्करे न्त्रिपनि कै नैन मग्गी॥
तिनं लुंविय नैंन दीसै दिसानं। तवं चंपियं राज नें चाहुआनं॥ छं० ॥ १६६६॥

तिनं उप्पजी संष धुनि सिंगिधारं। तिनं वज्जियं नद्द नीसान भारं॥
लयं लग्गियं क्रन्न राजं संजोई। तिनं अप्पियं कंत कोवंड जोई॥ छं० ॥ १६६७॥

तिनें सुमरियं चित गंध्रब्ब सद्दं। उतं जोइयं मुष्य सामंत इद्दं॥

---

(१) मो.-झारं, कृ.- कारं। (२) ए.- मत्तौ। (३) को.- विझ्झरी। (४) ए. कृ को.- हल्लै।

बचन्न सु सद्द कवी चंद बोल्यौ। तबै भंजियं कन्ह सों सौ अबोलौ॥
छं० १६६८॥

तबें लग्गियं भान रायंति रायं।[1]उनं देषियं आज कौतूह चायं॥
तबै कोपियं बीर विजपाल पुत्तं। तिनं आवधां झारि जमजालि दुत्तं॥
छं०॥ १६६९॥

सवं संहरी सेन सीन्नह दीहं। इसौ नौमि तिथि थान प्रथिराज सीहं॥
तिनं राजसं तामसं बे प्रगट्टं। भरं मुक्कियं सब्ब सातुक्क वट्टं॥
छं०॥ १७००॥

सरं सार संपत्ति पंत्तति रच्छं। मनो आवधं इंद्र रुद्रानि कच्छं॥
बरं निट्ठुरौ ढाल गय पत्ति मत्तं। तबै उट्ठियं सूर सामंत रत्तं॥
छं०॥ १७०१॥

उतं भूमि भर धरनि ढहि ढरि सुपथ्थं। तिनं अथ्थि बिय हथ्थ प्रथिराज सथ्थं॥
बढे वीर सामंत सा बीर रूपं। जिसै सैल संदूर संदेस जूपं॥
छं०॥ १७०२॥

उडै विग्रवानै सुमानै उदंता। जिसें अरक फल फूटि होतें अनंता।
ततें कंपियं काइरं लोह इत्तं। मनो अनिल आरंभ प्रारंभ पत्तं॥
छं०॥ १७०३॥

इसौ जुद्ध आवद्ध मध्यान हूअं। रहे हारि हथ्थं जु जूवारि जूअं॥
छं०॥ १७०४॥

दूसरे दिन नवमी के युद्ध के ग्रह नक्षत्रादि का वर्णन।

कवित्त॥ तिथि नौमी सनिवार। मेष संक्राति सिंघ ससि॥
गंज नाम बर जोग। चित्त जोगिनी वाम वसि॥
दिन नछिच रोहिनी। जांम मंगल बुध तीजौ॥
के इंद्री गुर देव। भान ससि राह सुभीजौ॥
वर द्रष्टि येह ग्रह दान रन। नवमि जुद्ध [2]अवरुद्ध वजि॥
पहुपंग बीय सुमुह ढरी। चावद्दिसि रघ्यै सु सजि॥ छं० ॥१७०५॥

(१) ए. कृ. को. तिनं। (२) ए. कृ. को.- अवरत्ति।

जैचन्द की आज्ञा से पंग सेना का कोप करना और चौहान की तरफ से पांच सामंतों का मोरचा लेना। इन्हीं पांचों के मरते मरते तीसरा पहर हो जाना।

तद्दिन रोस रट्ठौर। चंपि चहुआन गहन कहि॥
सो उप्पर सैं सहस। [1]वीह अगनित्त लप्प द्दहि॥
छुटि डुंगर थल भरिग। फुदि जल्ल थल्लति प्रवाहिग॥
सह अच्छरि अच्छहि। विमान सुर लोक वनाइग॥
कहि चंद दंद दुंह, दल भयौ। घन जिम सिर सारह भरिग॥
हरि सैस ईस ब्रह्मानि तनि। तिहुं समाधि तद्दिन टरिग॥छं०१७०६॥

पंग वीर गंभीर। हुकम अप्पौ जु गहन वर॥
वर हैवर वर रम्य। द्रुग्ग दैवत्त जुद्ध भर॥
चित चच,भुज भर दंद। गोर सूरंत नपत हर॥
चावद्दिसि चहुआन। रुक्कि कट्ठी असिवर भर॥
दल मुररि मुररि मोहिल्ल मयन। नयन रत्त बोल्लिग सुभर॥
जुग्गिनि पुरेस निंदरि चलिय। अवल होत उप्पर सुधर॥
छं०॥ १७०७॥

गाथा॥ विपहर [2]पहुरति परियं। हय गय भार सार [3]नथ्थेनं॥
रह रंग रोस भरियं। उट्ठियं वीर विवेनं॥ छं०॥ १७०८॥

कवित्त॥ सुनिग माल चंदेल। भान भट्टी भुआल वर॥
धनू वीर धवलेस। उट्ठि न्त्रिबान हक्कि वर॥
तमकि सूर सामलौ। सार झल्लिय पहार भर॥
पंच पंच तिय पंच। पंच पंचंत पंच वर॥
दैवान जुद्ध पंचै भिरिग। भिरि भारथ्थ अपुब्ब वर॥
बजि घरी पहर तीसैर उठी। [4]ज्यौं अगनि धुंम संजुत्त धर॥
छं०॥ १७०९॥

---

(१) मो.-वीरह। (२) ए. कृ. को महुरति।
(३) मो.-मथ्थेनं। (४) मो.-ज्यौं अगनि धुंमर जुत्त धर।

वीर योद्धाओं का युद्ध के समय के पराक्रम और उनकी वीरता का वर्णन ।

बाघा ॥ परि पंच जुद्ध सु बीर । बजि सस्त्र बज्जि सरीर ॥
भर अग्गि अंजन भीर । झुझझही षग्गनि नीर ॥ छं० ॥१७१०॥
तुटि सस्त्र बस्त्र सरीर । मनु [1]तरनि सोभि करीर ॥
नरपत्ति चाहत बीर । तिन किलकि जोगिनि तीर ॥ छं० ॥ १७११॥
तजि सवन यों अन बीर । षग मिल्लिग झल्लिग सरीर ॥
दल मथत दलन अधीर । जनु समुद थाहत कीर ॥ छं०॥१७१२॥
बर बरै अच्छरि बीर । जिन मुष्ष झलकत नीर ॥
तुटि अंत दंतन तीर । म्रिन्नाल मन कढि नीर ॥ छं०॥१७१३ ॥
बजि पग्ग नद्द निनद्द । [2]गज गजत सोरस मद्द ॥
गज रत्त रत्त जु ढाल । षग लगत भज्जत हाल ॥ छं० ॥ १७१४ ॥
सद व्रत्त जनु गहि दीन । तिन ईस सीस जुलीन ॥
घट उट्ठि धरियत अद्ध । चंदेल माल विरुद्ध ॥ छं० ॥ १७१५ ॥
सिर हथ्थ साहि प्रमान । कर नंषि दिसि चहुआन ॥
बर [3]पंग है गै बीत । भारथ्थ दस गुन गीत ॥ छं० ॥ १७१६ ॥

उक्त पांचों वीरों की वीरता और उनके नाम ।

कवित्त ॥ परे पंच बर पंच । सुभर भारथ्थह षुत्ते ॥
उंच हथ्थ करतूति । उंच वड़पन वड़ जुत्ते ॥
तिल तिल तन तुट्टयो । [4]पंग अगनित दल भंजिय ॥
पंच पंच मिलि पंच । रंभ साहस मन रंजिय ॥
दिन लोक देव आनंद कार । बर बर कहि कहि झग्गरैं ॥
इन परत पंग जो गति वुझी । पिष्षत फिरी पारस परैं ॥
छं० ॥ १७१७ ॥
पऱ्यौ माल चंदेल । जेन धवली धर गुज्जर ॥
पऱ्यौ मान भट्टी । भुआल यट्टा धर अग्गर ॥

---

(१) ए. कृ. को.-सरनि । (२) ए. कृ को.-गज गजन सोरह मद्द ।
(३) ए. कृ. को.-पंच । (४) ए-अग ।

पऱ्यौ सूर सामलौ। जेन बानै मुष मच्छह॥
हँसै तेन पांवार। जेन विरदावल अच्छह॥
न्निव्वान वीर धावर धनू। [1]हनुय नरिंद अनेक बल॥
इन परत पंच भय विप्पहर। अगनित भंजि असंप दल॥
छं० ॥ १७१८॥

पृथ्वीराज को पकड़ लेने के लिये जैचन्द की प्रतिज्ञा।

चल्यौ सूर मध्यान्ह। पंग परतंग गहन किय॥
[2]सुरनि षेह षह मिलिय। श्रवन इह सुनिय सुलीय लिय॥
तब नरिंद जंगलिय। कोह कढ्ढौ सु वंकि असि॥
धर धूमिलि धुम्मरिय। मनहु दल मझ्झि झ्झि दुतिय ससि॥
अरि अरुन रत्त कौतिक कलस। भयौ न भय सुभिरंत भर॥
सामंत निघट पंचह परिग। नृपति सपिट्टिय पंच सर॥
छं० ॥ १७१९॥

साटक ॥ इक्कं तोन सकढ्ढियं कर धरं, पंचास [3]वर्द्धासने।
उत्तारे सहसं सु बीय उडनं, लष्यं चलष्यं बियं॥
सब्बं पारि इमंच क्रित्त जनकं, पत्तं च धारायनं॥
एवं बाहु सु बाह बान धरियं, द्रोनाहि पथ्यं जया॥ छं० ॥ १७२०॥

जैचन्द का अपनी सेना की आठ अनी करके चौहान को घेरना और सेना के साथ राजकुमार का पसर करना। उक्त सेना का व्यूहवद्ध होना। मुख्य योद्धाओं के नाम और उनके स्थान।

कवित्त ॥ अष्ट फौज पहु पंग। परिस चहु आनह फेरिय॥
मीर धीर धरवान। षान असमानह केरिय॥
क्रोध परिग गजराज। सत्त मुर मह मोष बर॥
तिन मझ्झै मल्हन मेंहेस[4]। बंसीति सहस भर॥
ता अग्ग केत कुंअर कंद्रप। दस सहस्स भर सु भर सजि॥

(१) ए. कृ. को.-हनिय। (२) ए. कृ. को.-मुरनि।
(३) मो.-पंचास वर्द्धाननै। (४) "सर" पाठ अधिक है।

ता अग्गै न्रपति [1]बज्जीत सबि । पंच सत्त गज मुष्य गजि ॥
छं० ॥ १७२१ ॥

ता अग्गै तिरहुति नरिंद । बीर केहरि कंठेरिय ॥
बिच जद्दों रा भान । देव दच्छिन न्रप भेरिय ॥
ता अग्गैं अंगोल । देव दहिया तत्तारिय ॥
मोरी रा महनंग । बीर भीषम षंधारिय ॥
ता अग्ग सींह बल अंग बल । सजि समूह ब्रह्मह सयन ॥
प्रथिराज सेन दिष्षत गिलं । सुकविचंद बंटहि नयन ॥ छं० ॥ १७२२ ॥

वीर रस माते योद्धाओं का ओज वर्णन ।

रसावला ॥ पंग रा सेनयौ । रत्त जानै नयौ ॥
आइ संछुट्टियं । [2]दिट्टयं तुट्टियं ॥ छं० ॥ १७२३ ॥
बीर जं विप्फुरं । जोर जम्मं जुरं ॥
सस्त्र वाहं बरं । वज्जतं सिप्परं ॥ छं० ॥ १७२४ ॥
सस्त्र छुट्टं नियं । बथ्थ जुथ्थं लियं ॥
जुद्ध अद्धं मयं । बज्जि जुद्धं मयं ॥ छं० ॥ १७२५ ॥
रूर स्हरं अरी । जानि मत्ते करी ॥
पाइ बज्जे घटं । बीर बोले भटं ॥ छं० ॥ १७२६ ॥
कूक मच्ची षरं । सार सारं भरं ॥
अंत रष्षं बरं । देव रथ्थं षरं ॥ छं० ॥ १७२७ ॥
बोल जे जं वरं । फूल नंषे सिरं ॥
देव जुद्धं ननं । सूर बंटै धनं ॥ छं० ॥ १७२८ ॥
अंत गिद्धी कुड़ी । अंतरिछं उड़ी ॥
मन्न मुष्यं परं । रथ्थ हक्के डरं ॥ छं० ॥ १७२९ ॥
क्रंम सत्तं वरं । द्रोन नंचै धरं ॥
थोर थोरं थनी । [3]अप्प ढुंढै धनी ॥ छं० ॥ १७३० ॥
चंद जीहं करी । गौ पथं उच्चरी ॥
गज्ज ढालं ढरी । दंत दंती परी ॥ छं० ॥ १७३१ ॥

(१) मो.-बज्जनि । (२) ए. कृ. को.-यवनं दिठियं । (३) ए. कृ. को.-अध्य ।

सोमि सुक्क करी। अस्स पंषी परी॥
* * * । * * छं० ॥ १७३२॥

लड़ते लड़ते दोपहर हो जाने पर संभरी नाथ का कुपित हो हाथ में कमान लेना।

कवित्त ॥ दिनयर सुभ्र दिन जुद्ध। जूह चंपिय सामंतन॥
भर उप्पर भर भर। परिहि उप्पर धावंतन॥
दल दंतिन विच्छुरहि। हय जु हय हय किन नंकहि॥
[1]अछरि वर हर हार। धार धारन भ्भन नंकहि॥
जय जया सद्द जुग्गिनि करहि। कलि कनवज दिल्लिय वयर॥
सामंत पंच षित्तह षपिग। भिरत पंच भये [2]विप्पहर॥
छं० ॥ १७३३॥

रन रत्तौ चित रत्त। [3]वस्त्र रत्तेत पग्ग रत॥
हय गय रत्तै रत्त। मोह सों रत्त बीर रत॥
धर रत्त [4]पत रत्त। रुक रत्ते विरुभ्भानं॥
रत्त बीर पलचर सु रत। [5]पिंड रत्ती हिय सानें॥
विप्फुरे घाइ अघघाय फुट। पंग ठट्ट चंपे सु भर॥
दैवत्त जुद्ध चहुआन वर। षिजि कमान लीनी सु कर॥ छं० १७३४॥

घनघोर युद्ध का वाकचित्र दर्शन।

मोतीदाम ॥ रजे रविरथ्थ रहस्सिय व्योम। धमक्किय बज्जिय गज्जिय गोम॥
जग्यौ रस तांम रा पंगह पूर। गहग्गह राग [6]वज्यौ सम सूर॥
छं० ॥ १७३५॥

नवम्मिय क्रत्यकसूर सु अन्न। घटी दह अट्ठ सु[7]गव्वह दिन्न॥
नयौ सिर आनि सु डुंगह देव। गहौ पहु जंगल सूर समेव॥
छं० ॥ १७३६॥

---

(१) ए. कृ. को.-कच्छर। (२) ए. कृ. को.-दुप्पहर।
(३) मो.-वस्त्र रत्ते सु। (४) ए. कृ.-पर।
(५) ए. कृ. को पिंड रत हिये न साने।
(६) ए. कृ. को.-मच्यौ। (७) ए. कृ. को.-गत्तह।

भुवन्नह राज सु जंगह अग्ग। कढ़ी कारनट्टिय सिंघ सु बग्ग॥
तुरंगम पंति पयद्दल सक्क। जु सज्जिय अग्गह सद्द सरक्क॥
छं० ॥ १७३७ ॥

धमक्किय धीम निसानन नद्द। झनक्किय कातर सिंधु अमद्द॥
षद्दं मंडि सिंधुअ सूंपुर रेन। गहग्गह बज्ज कम्यौ सब सेन॥
छं० ॥ १७३८ ॥

उलट्टिग सिंधु सपंतिन अप्प। उरब्बिय सा जनु अंत कलप्प॥
सुरक्किय बग्ग सु जंगल राज। प्रगट्टित कोप [1]धुअं वर गाज॥
छं० ॥ १७३९ ॥

चह चह चंब तरं रन तूर। सु रब्बर संष सजे घन सूर॥
मिले पहु जंगल सेन सु पंग। मनों मिलि सागर संग सु गंग॥
छं० ॥ १७४० ॥

जगे रस तामस नग्गिय षग्ग। मनों रस हारि जु आरिय लग्ग॥
झरझ्झर वज्जिय धारनि धार। मनों ससि क्रकस्सि तुट्टिय तार॥
छं० ॥ १७४१ ॥

लगे मुष नाग सकत्ति न झेरि। मनों गजराज बजावत भेरि॥
हयद्दल पैदल दंतिय एक। लगे कर आवध सावध केक॥
छं० ॥ १७४२ ॥

झरझ्झर सेन झनक्किय झार। धरद्धर लुथ्थि [2]ढरें धर भार॥
[3]कढी चहुआन कमान सु वंक। मनों पह सेन सु बीय मयंक॥
छं० ॥ १७४३ ॥

पृथ्वीराज की कमान चलाने की हस्तलाघवता।

दूहा ॥ कढि कमान असमान घन। मद्धि चमंकिय बीज॥
मनों काल की जीभ ज्यौं। झ,कि कढ्ढी करि पीजि॥
छं० ॥ १७४४ ॥

तमकि तेज कोवंड लिय। जंगल वै जुध,वान॥
अमी लप्प दल तुच्छ गनि। न्याइ वंध्यौ सुरतान॥ छं० ॥१७४५॥

(१) ए. कृ. को.-धुअंगर। (२) ए. कृ को.-धरें। (३) ए कृ को.-चढी।

पृथ्वीराज का जैचन्द पर वाण चलाने की प्रतिज्ञा करना और संयोगिता का रोकना।

कवित्त ॥ कहै राज प्रथिराज। सुनहि संयोगि सु [1]लष्षिन ॥
आज हनों जैचंद। दंद ज्यों मिटै ततष्षिन ॥
पिता मरन सुनि डरिय। करिय अरदास जोरि कर ॥
मोहि पंग वग सीस। कंत किज्जै सु प्रेम धर ॥
मन्नेव वचन संयोगि तव। चल्यौ राज अग्गे विमन ॥
कलहंत नारि जानिय सु चित। मिटै न गंध्रव कौ वचन ॥
छं० ॥ १७४६ ॥

पृथ्वीराज के घोड़े की तेजी।

दूहा ॥ असी लष्प दल उप्परै। नंषि वाजि प्रथिराज ॥
धरनि फट्टिकै गगन तुटि। भरकि सु कायर भाजि ॥ छं० ॥ १७४७ ॥

चहुआन की तलवार चलाने की हस्तलाघवता।

चोटक ॥ [2]चहुआन कमानति कोपि करं। पघनं पघनं प्रिथिराज वरं ॥
जिहि लष्प असी दल तुच्छ करी। दल गाहि नरिंद जु मंझ फिरी ॥
छं० ॥ १७४८ ॥

वहि बान कमान धुंकार बजी। कि मनों वर पुब्वय मेघ गजी ॥
सर फुट्टि सनाहन भेदि परी। नर हथ्थ तरंगनि जुद्ध [3]तरी ॥
छं० ॥ १७४९ ॥

चहुआनति मुष्षहि बीर चढ़ी। सर नंषि तहां किरवान कढ़ी ॥
लगि राज उरं किरवान कटी। कि मनों हरि पै तड़िता वि छुटी ॥
छं० ॥ १७५० ॥

चहुआन वही किरवान वरं। सु परे अरिषंड विषंड धरं ॥
अरि ढाहि परे गजराज मुषं। सु बहै [4]तिन बान कमान रुषं ॥
छं० ॥ १७५१ ॥

(१) ए. कृ. को.-लच्छिन। (२) यह पंक्ति मो. प्रति में नहीं है।
(३) मो.-करी। (४) मो.-नित।

कटि सुंडि सु नेनन दंत कटी। सु मनों तड़िता घन मद्धि छुटी ॥
सु परे धर बीरति पंग भरं । प्रथिराज जयज्जय चंपि बरं ॥
छं० ॥ १७५२ ॥

सुकरी अरि [२]अप्प विडारत गज्ज । मनों बन जारिन जानि धनज्ज॥
ढहै गज ढाल सु झंडहि झारु। मनों फल भारह तुट्टिय डारु ॥
छं० ॥ १७५३ ॥

ढह्यौ घन घाव सु डुंगह देव। भुवन्नह राव पर्‍यौ घह घेव ॥
भरक्किय सेन सु भग्गिय पंति। परे दह तीन सहस्सह दंति ॥
छं० ॥ १७५४ ॥

परे धर वीर सु पंग भरं। प्रिथीराज जयज्जय चंपि बरं ॥
छं० ॥ १७५५ ॥

सात घड़ी दिन शेष रहने पर पंगदल का छिन्न भिन्न होना देख कर रयसलकुमार का धावा करना।

कवित्त ॥ घरिय रस्स रवि सेष। भयौ कलहंत ताम भर ॥
वज्र घात सामंत। अग्गि लग्गी सु षग्ग झर ॥
हलहलंत दल पंग। दंग चहुआन जान [३]भय ॥
तब आयौ रयसल्ल। विरद भैरुं सु भूत रय ॥
हाकंत हक्क बर उच्चरिग। अतुल पान आजान हुअ ॥
कमधज्ज लग्गि कमधज्ज छल। वीर धीर विजपाल सुअ ॥
छं० ॥ १७५६ ॥

पृथ्वीराज के एक एक सामंत का पङ्ग सेना के एक एक सहस्त्र वीरों से मुकाबला करना।

दूहा ॥ सहस वीर भर अप्प वर इक इक रष्यै रिंघ ॥
संभरि जुध सामंत सम। मनों लग्गि स्रम सिंघ ॥ छं०॥१७५७॥

घमासान युद्ध वर्णन।

(२) ए. कृ.-को.-अप्प।   (३) ए.-कृ.-को. भुव।

पद्धरी ॥ लग्गे सु सिंघ सम सिंघ धाइ। चहुआन सूर कमधज्ज राइ॥
हाकंत मत्त झारंत तेक। हम संत रत्त हलि चलन एक॥
छं० ॥ १७५८ ॥
गय नभ्भ सूर रुधि रत्त भौन। पसरे मरीच नह मझ्झि तौन॥
संचार क्रन्न सद्दी न व्योम। धुंधरिग धाम दह दिग्ग धोम॥
छं० ॥ १७५९ ॥
पावै न मध्य गिद्धी पसार। भिद्दै न अन्य पह अद्ध चार॥
'देषंत सूर 'कौतिग्ग सोम। नारद्द आनि अध निरषि व्योम॥
छं० ॥ १७६० ॥
षह चरह सुद्ध सुझ्झै न कंक। घन घुरह षेह पूरित पलंक॥
अच्छरिय रथ्थ रुद्दंत सीस। पावै न वरन इच्छंत ईस॥
छं० ॥ १७६१ ॥
पत्तौ सु काल रयसल्ल रूप। गह गद्द चवंत चहुआन भूप॥
भौ तिमिर धुंध सुझ्झै न भान। प्रगटै न अप्प द्रिग अप्प पान॥
छं० ॥ १७६२ ॥
दिष्षहि न सूर सामंत राज। संग्रहौ सद्द दल सकल साज॥
सद्यौ सु कन्ह सामंत हद्द। हो जैत राव जामानि जद्द॥
छं० ॥ १७६३ ॥
निद्दुरह सिंघ सुनि अत्त ताइ। सुझ्झै न ईस सौधौ सु राइ॥
वंच्यौ सु सूर चौरंगि नंद। लष्यौ सु राज अरि लष्य छंद॥
छं० ॥ १७६४ ॥
वंच्यौ सु कन्ह धुअ गेन धार। गय पंग ढारि बंधी सु पारि॥
भम्यौ सु श्रवन सुनि अत्ततान। भौंहा सु धीर धरि तोन धाइ॥
छं० १७६५ ॥
हलकंत सथ्थ सामंत तार। मानहु क्रमंत हरि दंत भार॥
विहथंत कोपि वाहंत कोन। भिद्दंत सिंधु उद्दंत श्रोन॥
छं० ॥ १७६६ ॥
प्रगटंत झाक पावक्क 'षोम। किलकंत घूंटि संठी सु व्योम॥

(१) ए. कृ. को. देषन्न। (२) मो.-कौतिक्क। (३) ए मो धोम।

धमकंत नाग धर असि उसंध । चक्कंत कंध कूरंम बंध ॥
छं० १७६७ ॥

घर तुट्टि धरनि पल पलनि पंक । तन खन श्रवन ब्रह्मान संक ॥
गय ढार सार मुषमत्त भार । प्रगटंत मड्डि दुअ दल पगार ॥
छं० ॥ १७६८ ॥

रुक्कंत पारि पंगुरह सेन । निरषंत स्वामि सामंत नेन ॥
*　*　*　*　*　*　छं० ॥ १७६९ ॥

नवमी के युद्ध का अंत होना ।

दूहा ॥ संझ सपत्तिय न्रप तिरन । बिय पारस पर कोट ॥
रहै सूर सामंत जकि । देषि न्रपति तन चोट ॥ छं० ॥ १७७० ॥
दोइ बर अश्रवनि पष्परह । दुअ न्रप इक संजोइ ॥
इह अवस्थ अंषन लषी । हम जीवन न्रप तोइ ॥ छं० ॥ १७७१ ॥

सामंतों का कहना कि अब भी जो बचे हैं उन्हें लेकर दिल्ली चले जाओ ।

इह कहि न्रप लग्गे चरन । सांई दिष्षत अंषि ॥
[1]जाहु सुजीवत जानि घर । पंच सु बीसह नंषि ॥ १७७२ ॥
जीत हारि न्रप होत है । अरु हांसी दुज्जन लोग ॥
जुरि धर अद्ध निरद्ध किय । अब जंगल वै भोग ॥ छं० ॥ १७७३ ॥

नवमी के युद्ध में तेरह सामंतों का मारा जाना ।

सविता सुन दिन जुद्ध बर । भौ रस रुद्र [2]समंत ॥
होत संझ नवमिय दिवस । परे तेर सामंत ॥ छं० ॥ १७७४ ॥

मृत सामंतों के नाम ।

कवित्त ॥ परे रेन रावत्त । राम रिन जंग अंग रस ॥
उठत इक्क धावंत । पंच वाहंत वीर दस ॥
बलि बारड मोहिल । मयंद मारुअ मुष मध्ये ॥
आरेनो अरि लंघि । पंग पारस दल पद्धे ॥

(१) ए. कृ. को.-जाहु सु जीवन ।　　　(२) ए.-ममात ।

नारेन वीर बंधव वरन। दिव देवान [1]गौ देवरौ॥
कलहंत बीज सामंत मुश्र। रह्यौ स्वामि सिर सेहरौ॥छं०१७७५॥

संध्या को युद्ध बंद होना।

दूहा॥ संझ सपत्तिय रत्ति भर। फुनि सज्जै दल पंग॥
चलिग पंति [2]पहु पंग मिलि। जुड़ भरनि किय जंग॥
छं०॥ १७७६॥

पंग सेना के मृत रावतों के नाम।

कवित्त॥ कमधज्जह रयसल्ल। बिरद भेरू सु भूत गहि॥
कर नाटिय किय सोर। राग सारंग थट्ट थहि॥
सु पहु गुंड सु ग्रीव। राव बघ्घेल सिंघ वर॥
मोरी [3]का सु मुकंद। पुट्ठि भौमेह पंति धर॥
न्टप कन्ह राव मरहट्ठ वै। हरिय सिंघ [4]हथनेव पर॥
नरपाल राव नेपाल पति। राइ सल्ल क्रमि लै सभर॥
छं०॥ १७७७॥

नवमी के युद्ध की उपसंहार कथा।

विज्जुमाला॥ नवमिय [5]सूरन सूर। बज्जिग विषम तूर॥
गहन [6]गट्ठन पंग। बच्चिग सज्जिग जंग॥ छं०॥ १७७८॥
तरनि सरनि सिंधु। धरनिति मिर धुंध॥
संचार गौ मय बानि। झलकि सज्जित जानि॥ छं०॥ १७७९॥
सघन जुग्गन जूह। प्रगटित पहुमि रूप॥
सज्जित सु चहुआन। करषि कार कम्मान॥ छं०॥ १७८०॥
रजति रामठि संक। मनहु लेयन लंक॥
घुट्टि छग्गन कंन। बहिया तुरंग [7]तंन॥ छं०॥ १७८१॥
पष्पर सब्बर सार। प्रगटि उरनि पार॥
सनमुष पंग सेल। सहित सूरन ठेल॥ छं०॥ १७८२॥

---

(१) ए. कृ. को. गयौ। (२) ए. कृ. को-पहुपंति।
(३) मो.-पास। (४) मो. हथनेर। (५) मो.-सूअन।
(६) ए. कृ. को.-गन। (७) ए. कृ. को.-छंन।

बहिग विष्षम सार। प्रगटि उरनि पार॥
धार धार लगि झार। धरनि धर सुद्दार॥ छं०॥ १७८३॥
रयसल्ल लष्षिय राज। क्रमि गहनं भु साज॥
लषि सम रज धाय। आइ लगि अततार॥ छं०॥ १७८४॥
[1]हय होय सिंगी झार। नष्षौ जु पूर पगार॥
उद्दिग क्रमि सु सुअ। मंडि गज सिंघ [2]रूअ॥ छं०॥ १७८५॥
रयमल्ल परे पिष्षि। क्रमे गह राज रिष्षि॥
मिली कन्ह अत्ता ताइ। रिषि रन रुक्कि राय॥ छं०॥ १७८६॥
परे दह सत्त घाइ। सघन घइ अप्प आइ॥
परे अन्न भूय पिषि। भोग सेन सब लषि॥ छं०॥ १७८७॥

पंग सेना का पराजित होकर भागना तब शंखधुनी योगियों का पसर करना।

दूहा॥ भगे सेन विजपाल न्रप। लषि भै तामस राइ॥
सहस एक भर संब धर। कहि हय छंडि रिसाइ॥ छं०॥ १७८८॥
बाते संष बिरह धर। बैरागी जुध धीर॥
सूर संष न्रिप नामि सिर। भर पह मज्जन भीर॥ छं०॥१७८९॥

शंखधुनी योद्धाओं का स्वरूप वर्णन।

कवित्त॥ पवंग मोर पष्षरह। मोर ग्रीवत गज गाहिय॥
मोर टोप टट्टरी। मोर मंडित संनाहिय॥
मोर माल उर संष। संक छंडिय भय भज्जिय॥
धार तिथ्थ आदरिय। पंग सेवहि वैरागिय॥
तिहि डरनि डारि घल्लै। तिनहिं नित राज अग्गे रहै॥
हल हलत सेन सामंत भय। मुक्कि मुक्कि अप्पन कहै॥छं०॥१७९०

पृथ्वीराज का कवि से पूछना कि ये योगी लोग जैचन्द की सेवा क्यों करते हैं।

दूहा॥ रिषि सरूप संपह धुनिय। अति बल पिथ्थ कहंद॥
बैरागी माया रहित। किमि सेवै जयचंद॥ छं०॥ १७९१॥

(१) मो.-हय हाय मेंग झार। (२) ए. कृ. को.-सूय।

कविचन्द का शंखधुनियों की पूर्व कथा कहना।

कहत चंद प्रथिराज। ए सब रिषि अवतार॥
मुनि नारद [1]परबोध भौ। कथ्थ सुनहु विस्तार॥ छं० ॥१७९२॥

तैलंग देश का प्रमार राजा था उसके रावत लोग उस से बड़ी प्रीति रखते थे।

कवित्त॥ सहस एक सुधवंस। सहस एकह धर सोहै॥
सेवा करत तिलंग। लष्य दस सस्त्र अरोहै॥
एक सहस वाजिच। समुद तट सेवा सझै॥
वपु सु वज्र चित वज्र। एक निरलेप अरुझै॥
सब एक जीव तन भिंन भिन। बंस छत्तीस अपाढ़ सिध॥
पामार तिलंग हरि सरन हुअ। कुल छतीस धर [2]दान दिध॥
छं० ॥१७९३॥

उक्त प्रमार राजा का छत्तीस कुली छत्रियों को भूमि भाग देकर बन में तपस्या करने चला जाना।

न्रप केहरि कंठेर। राइ सिंधुआ पाहारं॥
रा पछार परताप। पत्त डंडीर सुधारं॥
राम पमार तिलंग। जेन दिन्निय वसुधा दन॥
उज्जैनिय चक्कवै। करै सेवा तिलंग जन॥
सह सेक सुभट सब एक सम[2]। जब तिलंग परलोक गय॥
छचीन दान दिन्नौ तबहि। सहस सुभट बनवास लय॥
छं० ॥ १७९४॥

दिय दिल्ली तोंवरन। दई चावंड सुपट्टन॥
दय संभरि चहुआन। दई कनवज कमधज्जन॥
परिहारन मुर देस। सिंधु बारड़ा सु चालं॥
दै सोरठ जद्दवन। दई दच्छिन जावालं॥

---

(१) मो. परमोद। (२) ए. कृ. को.-मन।

चरना कच्छ दीनी कारग । भट्टां पूरब भावही ॥
बन गए न्रपति बंटै धरा । गिरिजापति माला गही ॥छं०॥१७९५ ॥

राजा के साथी रावतों का भी योग धारण कर लेना ।

दूहा ॥ एक सहस रिष रूप करि । अजपा जपै सु नाम ॥
बन षंडह विश्राम किय । तप तप्पत तिन ठाम ॥छं०॥१७९६॥

ऋषियों का होम जप करते हुए तपस्या करना ।

पद्धरी ॥ रिषि मंगि आइ सुर धेन ताम । दीनी सु इंद्र बर होम काम ॥
रिषि तास दूध [1] बर करै होम । संच पत होइ तिन सुरभ धोम॥
छं० ॥ १७९७ ॥
अध्याय अधिन जाजंन जप्प । रिषि करै सव्व उन क्रष्ट तप्प ॥
तहं करत दैत्य बहु विघन [2] नित्त । भष्षी सु गाव वच्छी सहित्त ॥
छं० ॥ १७९८ ॥

एक राक्षस का ऋषि की गाय भक्षण कर लेना और ऋषियों का संतापित होकर अग्नि में प्रवेश करने के लिये उद्यत होना ।

विअष्परी ॥ रिषि तहां बसै उभै सत वर्षं । राक्षस तहां धेन वछ भष्षं ॥
कोपवंत रिषि हुए सु भारी । सब मिलि अगनि प्रवेस विचारी ॥
छं० ॥ १७९९ ॥
इह उतपात चिंति नारद रिषि । आयौ तिन्न आश्रम्म समह सिषि॥
अरघ पाद सब्बह मिलि किन्नौ । मुनि सुष पाइहु औआधिन्नौ ॥
छं० ॥ १८०० ॥

नारद मुनि का आना और सब योगियों का उनकी पूजा करना ।

दूहा ॥ रिषि आवत नारद मुनि । लग्गे सब्बह पाइ ॥
फनपत्ती से दिष्षि करि । चरन पषालै आइ ॥ छं० ॥ १८०१ ॥

(१) ए. दूस । (२) मो. वित्त ।

नारद मुनि का योगियों को प्रवोध करना।

दूहा ॥ मुनि प्रवोध मुनिजन कियौ। प्रति राक्षस कृत साप ॥
सो तुमकों लग्यौ सबै। तव रिष लग्गे ताप ॥ छं० ॥ १८०२ ॥

नारद का कहना कि तुम जैचन्द की सेवा करो वहां तुम युद्ध में प्राण त्याग कर साक्षात मोक्ष पावोगे।

विअष्षरी ॥ नारद रिषि उच्चरै सु वत्तं। सुनौ सबै इह इक्क करि चित्तं ॥
फिरि रिषि राज सु आयस दिन्नं। करौ तपस्या साधक 'सिद्ध' ॥
छं० ॥ १८०३ ॥

वरष बीस तुम तप्प सु तप्पे। एक चित्त करि अजया जप्पे ॥
तुम हौ छत्री जाति सबैं मुनि। तिहि आचरौ धार तीरथ फ,नि॥
छं० ॥ १८०४ ॥

और तप्प बहु काल अभ्यास। इंद्री ड,लै सबैं भ्रम नास ॥
धार तिथ्थ आदरै जु षत्री। सुष में पावै मुगति तुरत्ती ॥
छं० ॥ १८०५ ॥

धार तिथ्थ पहिलै छत्री ध्रम्म। भू पर सबै और जानौ भ्रम ॥
कहौ कौन हम सों जुध आवै। देषत दूरिहु तें जरि जावै ॥
छं० ॥ १८०६ ॥

जग मध्ये जयचंद कमंद न्रप। अवनी उप्पर तास महा तप ॥
मानों इंद्र सरूप बिचारं। आयौ प्रथी उतारन भारं॥छं०॥१८०७॥
ता रिपु एक रहै चहुआनं। अवर सबैं न्रप सेवा मानं ॥
संभरि वै दिल्ली पति रज्जं। सौ सामंत सेव तिन सज्जं ॥
छं० ॥ १८०८ ॥

सो ढुंढा अवतारी भारी। ते तुम संमुह मंडै रारी ॥
जाउ तुम सेव जयचंद प्रति। एक लष्य गढ़ तिन घर सोहति ॥
छं० ॥ १८०९ ॥

---

(१) ए. कृ. का.-चित्तं।

लष्ष असी तोषार पलानै । जग मध्ये तीनूं पुर जानै ॥
रषि मुनि बन सबें सुष पायौ । अच्छौ गुर उपदेस बतायौ ॥
छं० ॥ १८१० ॥

कवि का कहना कि ये लोग उसी समय से जैचन्द की सेना में रहते हैं ।

दूहा ॥ रिषि आयस मंन्यौ सु रिष । संष चक्र धरि साज ॥
दिन प्रति सेवै गंग तट । सुनि विजपाल सु राज ॥ छं० ॥ १८११ ॥
मोर चंद्र मध्यै धरिय । जटा जूट जट बंधि ॥
संष बजावत सब्ब भर । सेवें जाइ कमंध ॥ १८१२ ॥

नारद ऋषि का जैचन्द के पास आना और जैचन्द का पूछना कि आपका आना कैसे हुआ ।

विअष्षरी ॥ धुज्जै भूमिरु अंबर गज्जै । तीन लष्ष वाजित्र धुनिज्जै ॥
तुट्टि अकास तीन पुर भग्गै । जोग मायथौ जोगिनि जग्गै ॥
छं० ॥ १८१३ ॥

है षुर रज ढंकियैं सु अंबर । चढ़ै कमंध करि मेघाडंबर ॥
लष्ष पचास पड़ै हय पष्षर । हुअ मैदान मेर से भष्षर ॥
छं० ॥ १८१४ ॥

अग्गै जल पच्छै मिलि पंकं । सर वर नदी लादि मों ठंकं ॥
पानी थान पेह उड्डै वहु । अंत कलष्ष दूसी सुनियै कहु ॥
छं० ॥ १८१५ ॥

दस दिगपाल परै भंगानं । मानव संमटैव संकानं ॥
इन आडंबर चढ़ि कमधज्जं । आतपत्र ढंक्यौ उडि रज्जं ॥
छं० ॥ १८१६ ॥

यौं जयचंद तपै तट गंगा । नाम सुनंत होइ अरि पंगा ॥
नारद मुनि आये तिन ठामं । पंग उट्ठि तव कीन प्रनामं ॥
छं० ॥ १८१७ ॥

कुसल पुच्छि बहु सुष रिष किन्नं। चरन सु रज मस्तक न्रप दिन्नं।
किन कारन आए पुच्छौ न्रप। भाग अज्ज मो नगर आय अप॥
छं० १८१८॥
रिष्य कहै संभलि न्रप राजं। सावधान मन करै समाजं॥
* * * । * * * छं० ॥१८१९।

नारद ऋषि का शंखधुनी योगियों की कथा कह कर राजा को समझाना कि आप उनको सादर स्थान दीजिए।

दूहा॥ नाद सु नारद जंपि इह। सुनि जैचंद विचार॥
सहस एक पिची सु तन। सेवक तिलंग पंवार॥छं०॥१८२०॥
जीव एक देही उभय। अवतारी रजपूत॥
जब पवांर परलोक गय। गह्यौ भेष अवधूत॥ छं०॥ १८२१॥
सागर तट तप सद्दयौ। बरष उभै सित एह॥
होम धेन राक्षस हतौ। तिन डर डरी सु देह॥ छं०॥१८२२॥
सब मिलि मरन विचारयौ। अगनि प्रवेस कुमार॥
उभय भाग रिषि राज सुनि। ह्वं आयौ तिन वार॥छं०॥१८२३॥
दहन बरज्ज्यौ बोध दै। धारा [1]तिथ्थ सु सत्ति॥
वेद पुरान प्रमान जुग। दस अट्ठह [2]संम्रत्ति॥ छं०॥१८२४॥
श्लोक॥ जीविते लभ्यते लक्ष्मी। म्रते चापि सुरांगणा॥
क्षणं विध्वंसिनी काया। का चिंता मरणे रणे॥ छं०॥१८२५॥
कवित्त॥ मुनि प्रबोध मन मानि। रिष्षि आये तुम पासं॥
धारा तीरथ आदि। तहां साधन किय आसं॥
मोर पंष जट मुगट। सिंगि संग्राम सु धारै॥
मोह देह सब रहित। मरन दिन अंत विचारै॥
कलहंत वार मिलकंत न्रप। संष नाद पूरंत सर॥
जैचंद सेव आये सबै। [3]एक जीव उमया सु हर॥छं०१८२६॥

(१) ए. कृ. को तीरथ। (२) मो.-सुम्रत्त।
(३) मो.-"एक जीव उरभया सुहर"।

नीसानी ॥ बषत बड़े कनवज्ज राय रिषि तेग गहाई।
　　संषधुनी सहसेक न्रप हुये जु सहाई ॥
　　जब चल्लै संष सह दै गिरि मेर ढहाई।
　　लष्ष असी मधि देषियै नारद बरदाई ॥
　　ए अवतारी मुनी सबै पूरब पुनि पाई।
　　जब कोपे करि वार लै पुर तीन ढहाई ॥
　　ए पराक्रमी सूरिमा हर उमया जाई ॥ छं० ॥ १८२७ ॥

कवि का कहना कि तब से जैचन्द इन्हें अपने भाई के समान मान से रखता है।

दूहा ॥ राज पंग पय लग्गि करि। सब रष्षे निज पास ॥
　　लष्ष एक देही लहै। पुज्जै द्वादस मास ॥ छं० ॥ १८२८ ॥
　　अति वर न्रप आदर करै। जेठा बंधव जोग ॥
　　तिनहि राज रष्पह रहै। ते छुटि अज जुध भोग[1] ॥
　　　　　　　　　　　　छं० ॥ १८२९ ॥

जैचन्द की आज्ञा पाकर शंखधुनियों का प्रसन्न होकर आक्रमण करना।

कवित्त ॥ न्रिप केहरि कंठेर। राय परताप पट्ट चह ॥
　　सिंधुअ राय पहार। राम पम्मार यट्ट यह ॥
　　कट्ठिय आस सुकाज। पत्त गुडीर नरत्ता ॥
　　पह परवत पाहार। रहै सांपुला सुमत्ता ॥
　　अनेक सेव पति संष धर। सहस एक विन मोह मन ॥
　　अग्या सुपंग किल कंत क्रमि। अप्प अप्प मुष उप्परत ॥
　　　　　　　　　　　　छं० ॥ १८३० ॥

शंखधुनियों का पराक्रम।

　　हय हय हय आयास। केलि सज्जी सुव्योम सिर ॥
　　किल किलंत का मक्कि। डक्क वज्जी सुहंम हर ॥

(१) मो.-जोग।

ओर राह पति संप । हक्कि असि ताईय तत्ते ।
मनहुं पात त्रिघघात । पत्ति सामंत सुमत्ते ॥
हम संत सेन अम्भय उभय । चाहुआन कमधज्ज कस ॥
उच्चरिग आन अप अप्प मुप । हक्कि धार रत्ते सुरस ॥
॥ छं० ॥ १८३१ ॥

युद्ध की शोभा और वीरों की वीरता वर्णन।

विज्जुमाल ॥ पैदलह मंत रत्त । जु गुर सुलह जुत्त ॥
वंचित सुचंद छंद । विज्जूमालवि वंद ॥ छं० ॥ १८३२ ॥
विमल सकल व्योम । रजति सिरनि सोंम ॥
[1]प्रगटि ताम सपंग । हलि मिलि झिलि गंग ॥ छं० १८३३ ॥
सुरत सेन सुलष्षि । निरषि परषि पिष्षि ॥
विहसि द्रिग्ग करूर । बाजित त्रिंव तूर ॥ छं० ॥ १८३४ ॥
मुंछति निरति भोंह । भोंह दु कुंतल सोंह ॥
दल सु समुद दूप । अचवन अगस्ति रूप ॥ छं० ॥ १८३५ ॥
हाकंत संष सुधार । वहत बिषम सार ॥
धार धार लगि धार । भररंत तुट्टी भार ॥ छं० ॥ १८३६ ॥
किननंत सिर निसार । अचल मनु आधार ॥
हबकि हबकि संग । अनी अनी लगि अंग ॥ छं० ॥ १८३७ ॥
बिहल कराल कूप । क्रिषित काल सरूप ॥
बानैत संष समंत । अरिग सूकर अंत ॥ छं० ॥ १८३८ ॥
सु वचि सामंत राज । अप अप इष्ट साज ॥
सुमिरंत्त बीर मंत । आइग सब सुनंत ॥ छं० ॥ १८३९ ॥
एकित सु तोन धारि । कढ्ढिग सिरनि सार ॥
धरनि सु धर धोर । हक हाक बजि झार ॥ छं० ॥ १८४० ॥
नंचित चीर षंग । थइ थेई थंग ॥
घन नंक सघन घंट । किलकंत [2]गोम कंट ॥ छं० ॥ १८४१ ॥
गिधिय अंत गहेस । अंत सु लगिय तेस ॥

(१) ए कृ. को प्रगटित ताम संग । (२) मो.-मोम ।

मनों बल बाला रंग। उभरँत चारु चंग॥ छं०॥ १८४२॥
सु रचि जठ्ठर सार। अद्वध उद्ध विहार॥
फर फर टरे फेफ। परति [1]पंषी रेफ॥ छं०॥ १८४३॥
हकित सिर बिकंध। नचित धर कमंध॥
नचित रुचि जटाल। संचि सिरनि माल॥ छं०॥ १८४४॥
सकति अघाइ घोर। बजि राग घंट रोर॥
रमित रस सभंद। आनंद चिल्हय व्रंद॥
चुंगल ग्रहंत पल। चुंच बल लै कमल॥ छं०॥ १८४५॥

शंखधुनी योगियों के साम्हने भौंहा का घोड़ा बढ़ाना।

दूहा॥ बजत संष दह सत्त। सघन नीसान धुनक्किय॥
पावस रिति आगमन। सिषर सिषि जानि निरत्तिय॥
तिन अमित्त पौरष्य। सहस सामंत बिभष्यिय॥
निठ्ठुर जैत नरिंद। स्वामि अग्गी धपि दिष्यिय॥
हहकारि सीस भौंहा सु भर। गहि अकास नंष्यौ स हय॥
उड़ मंडल उत्त निरष्ययौ। मनो बाज पंषी सु भय॥छं०१८४६॥

मांसभक्षी पाक्षियों का बीरों के सीस ले ले कर उड़ना।

दूहा॥ रुंड मुंड पल पंड [2]भुष्य। मचि योगिनि वेताल॥
चिल्हनि भष जंबुक गहकि। हर गुंथी गल माल॥ छं०१८४७॥
लै चिल्ही भष्षिय सु भर। है हर सिद्धी रूप॥
बीर सीस चुंगल चंपे। गय [3]ग्रधन्न अनूप॥ छं०॥ १८४८॥

एक चील्ह का वहुत सा मांस ले जाकर चील्हनी को देना।

कवित्त॥ लै चिल्हन सिर बीर। बीर भारथ्य देषि भर॥
का तर पर तिह थान। विषम प्रब्बत सु रंग वर॥
उंच दृच्छ बट अति सु रंग। पंष [4]घूंसल अध विच्चं॥

(१) ए. कृ. का.-पंषी। (२) ए. कृ. को.-हुअ।
(३) ए. कृ. को.-अग्धन्न। (४) ए. कृ. को.-घूंमन।

तिहिं सु तट्ट चौसट्ठि। देवि आरंभन रच्चं ॥
जिम जिम सु सीस सप्पन कियौ। तिम तिम सुभभ्भै तीन भुअ ॥
पल भप्पत छुट्ट भप्पित सकल। आनंदी पंषी सुनिय॥छं०॥१८४९॥

चीलहनी का पति से पूछना यह कहां से लाए।

दूहा ॥ आनंदी पंषी सकल। चिल्हानी पुछि कंत ॥
कहि कहि गल्ह सु रंग वर। सुप दुप जीवन जंत ॥छं०॥१८५०॥
चिल्हानी बुल्लि पत्ति सों। 'ऊमंती बरजंत ॥
वड़ गुरजन बत्ती सुनी। सो दिट्ठी दिषि कंत ॥ छंद ॥ १८५१ ॥

चीलह का कहना कि जैसा अपने पुरुषों से प्राचीन कथा सुनता था सो आज आखों देखी।

कवित्त ॥ पुब्ब सुन्यौ वर कंत। जुद्ध बलि राइ इंद्र वर ॥
तिपुर युद्ध संकरि विरुद्ध। भारथ्थ पंड भर ॥
चंद जुद्ध तारक। कन्ह ससिपाल लंक रघु ॥
जरासिंध जद्दवनि। दच्छ नंदी जु जगी अघु ॥
हरि जुद्ध बीर ²बीत्यौ असुर। पुब्ब सेन जंप्यौ सुनिय ॥
दिट्ठौ सु कंत भारथ्थ मैं। पुब्ब पच्छ अब नह सुनिय ॥१८५२॥

चीलहनी का पूछना किस किस में और किस कारणवश यह युद्ध हुआ।

श्लोक ॥ कस्यार्थे कंत भावीति। बरणं कस्य सुंदरी ॥
कस्य वैर विरुद्धं सौ। कस्य कस्य पराक्रमं ॥ छं० १८५३ ॥

चीलह का सब हाल कहना।

जग्य वैर विरुध्धं सौ। बुरनं कृत्य रंभयौ ॥
प्रथीभारो पंगराजो। जोधा जोधंत भूषनं ॥ छं० ॥ १८५४ ॥

चीलह का चीलहनी से युद्ध का वर्णन करना और उसे अपने साथ युद्ध स्थान पर चलने को कहना।

(१) ए. कृ. को-उग्गती। (२) मो.-चित्यौ।

चौपाई ॥ [1]लुथ्थी लुथ्थि पुलथ्थि प्रमानं । भर बजि गज्जि बीर लुटि थानं॥
हेरे संमर रंभ हकारी । कहो कंत मो पन उच्चारी ॥छं०१८५५॥

दूहा ॥ सुनि विवाद चिल्हौ सु बर । धुनि सुनि वर भारथ्थ ॥
उमा कंति चौसट्ठि दिय । रहि ससु पुच्छिय कथ्थ ॥छं०॥१८५६॥

पद्धरी ॥ [2]उच्चरी चिल्ह भारथ्थ कथ्थ । चौसट्ठि सुनौ सुनि कंत तथ्थ ॥
नर भिरै जुद्ध देवनि मसान । उत मंग गुरें हकि सीस पान ॥
छं० ॥ १८५७ ॥

सुनि दिव्व दिव्व जुद्धह सयंन । षग षगति जुद्ध वन नित्तवंन ॥
रथ रथनि रथ्थ गज गजन जुट्ट । बाजीन बाजि नर नर अहुट्टि॥
छं० ॥ १८५८ ॥

बर सुन्यौ देवि भारथ अपुव्व । उद्दित्त बीर देषत सव्व ॥
इह रित्त सव्व बाजित्त सार । तन सिद्धि दिंत जोगिनि सु तार ॥
छं० ॥ १८५९ ॥

डमरु डक्क वज्जै [3]अजूप । तुंमर पिसाच पल चर अनूप ॥
गावंत गीत जुग्गिनिय [4]थान । आहत्त जुद्ध चल्लै न भान ॥
छं० ॥ १८६० ॥

नारद नद वैताल [5]डक्क । वर वैर रंभ फिरि वरै चुक्क ॥
नच्चै कमंध हक्कंत सीस । पीसंत दंत वंशनी रीस ॥ छं०॥१८६१॥
आचिज्ज जुद्ध जो दिषत तथ्थ । उड़ि चलौ कंत चौसट्ठि सथ्थ ॥
*　　*　　*　　*　　।　　*　　छं० ॥ १८६२ ॥

कवित्त ॥ सुनत कंत आनंद । वीर आनंद चवसठी ॥
लै चिल्हनि चलि सथ्थ । जुद्ध पिष्पन दिवि उठी ॥
उठे सूर बल ग्रंह । वान अरजुन जिम विद्धत ॥
एक भार उभभार । एक समुप [6]पग संधत ॥
तेगां अचंभ सुभभै [7]सपत । आरुध्यौ प्रथिराज दिपि ॥

(१) मा लोथा लोथि । (२) को. उत्तरी ।
(३) मो.-अनूप । (४) ए. कृ. को.-गान ।
(५) ए.कृ.को स्वक । (६) मो. मुप । (७) ए. कृ. को सपनु ।

मोहिनि संजोग पहुपंग सुर। भेंन रत्न चहुआन लिपि ॥
छं० ॥ १८६३ ॥

शंखधुनी योगियों के आक्रमण करने पर महा कुहराम मचना।

दस हजार बर मीर। पंग आयस फिरि अष्षिय ॥
छुटिय बान कम्मान। मेघ चावद्दिसि धष्षिय ॥
सबर सूर सामंत। बीर बीरं बिरुभानं ॥
गज्ज जिमी बर पत्त। पत्त भंकुरिआ पानं ॥
आवद्ध बीर प्रथिराज बर। असम सिंह आहुत्त बल ॥
लगि पंच बान उप्पर सु धपि। अगनित दल भंजै सु षल ॥
छं० ॥ १८६४ ॥

बड़ी बुरी तरह से घिर जाने पर सामंतों का चिंता करना और पृथ्वीराज का सामंतों की तरफ देखना।

दूहा ॥ दुतिय बेर सामंत फिरि। देषि श्रोन धर धार ॥
मन चिंता अति चिंतवन। ढिल्ली ढिल्ली पार ॥ छं०॥१८६५॥

कवित्त ॥ बान श्रोन प्रथु बीर। बाल देषी अग्गी हुअ ॥
ससन बीर बिच राज। बान उडुगन जु मद्धि धुअ ॥
दूसी लोह बिप्फुरै। जानि लग्गै बिय अग्गा ॥
फिरि नंष्यै है राज। सूर साही न्रप बग्गा ॥
मोरे सु मीर मोहिल परिग। षग्ग मग्ग वोहिथ्थ रिन ॥
बर कन्ह सलष भोंहा न्रपति। फेरि न्निपति दिष्षौ सु तन ॥
छं० ॥ १८६६ ॥

पृथ्वीराज के सामंतों का भी जी खोल कर हथियार चलाना॥

सूर पत्त दित संझ। सूर चिंती रस मग्गा ॥
बन कट्ठी जल जलनि। राज अग्गा नन अग्गा ॥
अल्हन कुंअर नरिंद। कनक बड़ गुज्जर बीरं ॥
न्रप अस्वंबन चल्ली। राज अप्पौ लिय तीरं ॥

संजोगि पीय दंपति दुहनि । मुष ष्यालन आलस भिरिगि ॥
रवि मुदित चंद उग्गनि परइ । फेरि पंग पारस फिरिग ॥
छं० ॥ १८६७ ॥

पृथ्वीराज का कुपित हो कर तलवार चलाना और बान बर्साना ।

झ,कित पंग प्रथिराज । गहिय कर वार चंपि कर ॥
रोस मुट्ठि नित्तरिय । दंत बाही सु कुंभ पर ॥
धार मुक्ति आदरिय । पंति लग्गिय सुभ चीरहि ॥
मनहु रोस गहि षग्ग । ढाहि धारा धर नीरहि ॥
मनु दुतिय चंद वद्दल बिचै । पंति लग्गि उड़गन रहिय ॥
धर धुकत मंत इम दिष्षियै । मनहु इंद्र बज्जह वहिय॥छं०॥१८६८॥

दूहा ॥ पंग डंस चहुआन वर । मंच सँजोगि सु झार ॥
संझ पार सम्हो अरै । अरि पंचन रिपुचार ॥ छं० ॥ १८६९ ॥

कवित्त ॥ परी निसि ससि उदित । सूर सामंत पंति फिरि ॥
उतरि न्रपति प्रथिराज । लघु अनिसंक अभंग करि ॥
उभै तुपार [1]तुषार । वान छुट्टै कमड्ड वर ॥
उभै वीर सम्हौ नरिंद । सोभै सु रंग भर ॥
लग्गौ सु नेंन त्रिकुटी विविच । टोप फट्टि कंठं[2] सु भगि ॥
प्रथिराज सु वल संभरि धनी । जै जै जै आये सु लगि ॥
छं० ॥ १८७० ॥

दूहा ॥उभै दिवस वित्ते सकल । गत घाटिका निसि अग्ग॥
जो पुच्छै दिवि सकल तू । सुनि भारथ्थ [3]समग्ग ॥ छं० ॥ १८७१ ॥

इसी समय कविचन्द का लड़ने के लिये पृथ्वीराज से आज्ञा मांगना ।

तीर तुबक सिर पर वहत । गहत नरिंद गुमान ॥
बरदाई तहां लरन कों । हुकम मांगि चहुआन ॥

(१) ए. कृ. को. तिहार । (२) मो.-कुमग । (३) ए. कृ. को.-मगि ।

पृथ्वीराज का कवि को लड़ाई करने से रोकना।

हम रू भ्भत रजपूत रिन। जंपत संभरि राव॥
अमर कित्ति सामंत करन। बरदाई घर जाव॥ छं०॥ १८७२॥

कविचन्द का राजा की बात न मान कर घोड़ा बढ़ाना।

कित्ति करन गुन उद्धरन। जल्हन पच्छ सु लज्ज॥
मोहि न्निपति आयस करौ। ईस सीस द्यौ अज्ज॥ छं०॥ १८७३॥
विन आयस प्रथिराज कै। धाय नंपयौ बाज॥
कौ रष्षै सुत मल्ह कौ। सूर नूर मुष लाज॥ छं०॥ १८७४॥

कविचन्द के घोड़े की फुर्ती और उसकी शोभा वर्णन।

लघुनराज॥ कविंद बाज नष्षयं। नरिंद चष्प दिष्षयं॥
मनों नछित्र पातयं। कि अंकि मद्धि राजयं॥ छं०॥ १८७५॥
पवंन वेग पाइसं। तुरंग कब्बि रायसं॥
न्नपत्ति अप्प पारषं। बियौ न कोइ आरिषं॥ छं०॥ १८७६॥
नचंत वै किसोरयं। हरै गुमान मोरयं॥
धरा ऐराक ठौरयं। लियौ सु वप्प तोरयं॥ छं०॥ १८७७॥
दियौ चुहान मौर को। समुद्द की हिलोर को॥
जरावयं पलानयं। अमोल पिट्ठ ठानयं॥ छं०॥ १८७८॥
मनो कि रथ्थ भानयं। कविंद जाचि आनयं॥
सु भंत अग्रकान के। मनों भलक्क बान के॥ छं०॥ १८७९॥
हरन्न सत्रु प्रान के। करे विरंच पानि के॥
हुती उपंम जोरयं। चिया सुनेन कोरयं॥ छं०॥ १८८०॥
कि भोर चित्त हेत की। गरभ्भ फाफ केतकी॥
प्रफुल्ल चंद मौजयं। कि पंषुरी सरोजयं॥ छं०॥ १८८१॥
पवन्न हीन पिष्षयं। कि दीप जोति सिष्षयं॥
तमं दरिद्र भंजनं। पतग सूम दक्भ्भनं॥ छं०॥ १८८२॥

सुभंत केस वालयं । सरित्त ज्यौं सेवालयं ॥
सबद्ध कंध वक्र कौ । सगोल पुट्ठि चक्र कौ ॥ छं० ॥ १८८३ ॥
गिरद्द देत घुम्मरं । पलं हलंत झुम्मरं ॥
षुरं चमक्क उज्जलं । मनों घनंम विज्जुलं ॥ छं० ॥ १८८४ ॥
वरन्न गात भोंर सौ । हलंत पुंछ चोंर सौ ॥
करतं फौज हौसयं । दिष्यौ कनौज ईसयं ॥ छं० ॥ १८८५ ॥
षुरं रजं तुरंगयं । उड़ंत जोर जंगयं ॥
किरन्न सूर मुंदयं । छुट्टंत तीर हद्दयं ॥ छं० ॥ १८८६ ॥
बजै निसान नद्दयं । गरज्ज ज्यौं सुमुद्दयं ॥
बहंत गज्ज मद्दयं । करंत सद्द रद्दयं ॥ छं० ॥ १८८७ ॥

कविचंद का युद्ध करके मुसलमानी आनो को विदार देना और सकुशल लौट कर राजा के पास आजाना ।

उठै रनं रवद्दयं । सुनंत भट्ट सद्दयं ॥
कमद्ध पंग उट्ठयं । सुमेर जेम दिट्ठयं ॥ छं० ॥ १८८८ ॥
करै हुकम्म पट्ठयं । गंभीर भीर अट्ठयं ॥
हुसैन षां कमालयं । षलील षां जलालयं ॥ छं० ॥ १८८९ ॥
पिरोज षां हुजाबयं । फरीद षां निवाजयं ॥
अजब्ब साज बाजयं । धरंत जुद्ध लाजयं ॥ छं० ॥ १८९० ॥
कुलं जरं गरिट्ठयं । भुजा तिनं बलिट्ठयं ॥
द्रिगं सु [1]घात रत्तयं । मनो गयंद मत्तयं ॥ छं० ॥ १८९१ ॥
लरंत मीर भट्टयं । छुटै हथ्यार थट्टयं ॥
करंत घाव घट्टयं । नचंत जेम नट्टयं ॥ छं० ॥ १८९२ ॥
झरी घटा दवट्टयं । कि विज्जुलं लपट्टयं ॥
परंत चट्ट पट्टयं । पिशाच श्रोन चट्टयं ॥ छं० । १८९३ ॥
सनट्ट हथ्थ भट्टयं । उभै सु मीर कट्टयं ॥
हयग्गयं मु अंगयं । चलंत श्रोन पंकयं ॥ छं० ॥ १८९४ ॥

(1) ए. कृ. को.-गात रत्तयं ।

कृपान हथ्थ चंदयं । सु रम्गदेव वंदयं ॥
झरंत मीर अंगयं । निकट्ट तट्ट गंगयं ॥ छं० ॥ १८९५ ॥

घटं सु धाव घुम्मयं । परे सु मीर झुम्मयं ॥
लगे तुरंग अंगयं । स पूर लोह जंगयं ॥ छं० ॥ १८९६ ॥

घटं सु घाव घुम्मयं । परे सु मीर झुम्मयं ॥
लगे तुरंग अंगयं । स पूर लोह जंगयं ॥ छं० ॥ १८९७ ॥

फिरयौ सु चंद तज्जयं । करन्न राज कज्जयं ॥
लगे न घाव गातयं । सहाय द्रुग्ग मातयं ॥ छं० ॥ १८९८ ॥

कवि का पराक्रम और राजा का उसकी प्रसंशा करना ।

दूहा ॥ कुंजर पंजर छिद्र करि । फिरि वरदाई चंद ॥
तिन अंदर जिद्धनि भ्रमत । ज्यौं कंदरा मुनिंद ॥ छं० ॥ १८९९ ॥

कवित्त ॥ लरत चंद वरदाइ । करत अच्छरि विरदावलि ॥
झरत कुसम गयनंग । धरत गर ईस मुंडावलि ॥
करत घाव [1]कबि राव । पिसुन परि बथ्थ पछारत ॥
भरत पच कालिका । भूत वेताल उकारत ॥
जहं तहं ढरंत गज बाज नर । लोह लपटि पावक लहर ॥
मुष वाह वाह प्रथिराज कहि । काटक भट्ट किन्नौ कहर ॥
छं० ॥ १९०० ॥

कवि का पैदल हो जाना और अपना घोड़ा कन्ह को देना ।

भयौ पाज कविराज । तंग रुक्यौ दल सायर ॥
कर कुपान चमकंत । कंपि थर हर कर काइर ॥
साज बाज रुधि भीज । फिरयौ छर हर गति नाहर ॥
भूमि तुरंग परंत । मुष्ष जंपिय गिरिजा हर ॥
कविचंद पयादौ होइ करि । नृप बिरदावलि आपु पढ़ि ॥

(१) मो.-कविराज ।

विलहान कन्ह चहुआन कौ। वगसि भट्ट सिर नाइ चढ्ढि॥छं०॥१९०१॥

नवमी को एक घड़ी रात्रि गए जैचन्द के भाई का मारा जाना।

दूहा॥ नौमी निसि इक घटि चढ़ी। बंधि परत षिझि पंग॥
धाइ परे चहुआन पर। ज्यौं अगि मज्झर दंग॥ छं०॥१९०२॥

जैचन्द का अत्यन्त कुपित होकर सेना को ललकारना। पंग सेना के योद्धाओं का धावा करना। उनकी वीर शोभा वर्णन।

भुजंगी॥ धाए पंग राजं महा रोस गत्तं। सुनी सावधानं रसं बीर बत्तं॥
चले तीर तत्ते कहें मेघ बुट्टे। जले पंष पंषी तिते भज्जि छुट्टे॥
छं०॥१९०३॥

कछू [1]पंष हीनं [2]तन जान पायं। जिते वान मानं सरीरं बँधायं॥
महा तेज सूरं बरच्छी भ्रमायं। तहां बद्द कब्बी उपम्माति पायं॥
छं०॥१९०४॥

फलं उज्जलं सोभिते स्याह डंडं। मनों गाह चंदं हहूडंत मंडं॥
बजे लोह लोहं बरं सूर रुट्टै। मनों इंद्र के हथ्य तें बज्र छुट्टै॥
छं०॥१९०५॥

गदा लग्गि सीसं फुटे टूक टोपं। फुटी जानि भानं मयूषं अनोपं॥
[3]भिर तंनु दीसै न दीसै गुरंतं। तुटी सीस दीसं वलं जा अनंतं॥
छं०॥१९०६॥

पियं राग [4]सिंधू श्रवन्नं न [5]बट्टं। द्रवै सूर वीरज्ज अंपं उलट्टं॥
तिनं कन्ह सूरं वलं जा [6]अमन्नं। तनं कि क्रमं रूप भावै दिवन्नं॥
छं०॥१९०७॥

बहै तेग वेगं गजं सीस धारं। दुहं अंग छंछं रुधी धार पारं॥
कवीचंद मत्ती उपम्मा जु पट्टी। उपं वद्दलं जानि भारथ्य कट्टी॥
छं०॥१९०८॥

(१) मो.-पंग। (२) को-तिनं, मो. ननं (३) ए. कृ. को.-भिरंजानि।
(४) मो-मोर्हे। (५) ए. कृ को-बट्टं। (६) मो.-अनन्नं।

सुभै स्याम [1]फुंदा सनाहंनि जक्की। चलै रुद्र धारं दुहं अंग बक्की॥
उभै पंति बंधू ससी भौंर बीचं। उरं चंद मानो चलै चंद सीचं॥
छं० ॥ १९०९॥

करी बज्र बीरं न हक्कै हल्लाई। बधू बाल जैसैं बधू ज्यौं चलाई॥
हसं हंस हंसं हसं पंच पंचे। उड़ै पंच पंचे भगी देह संचे॥
छं० ॥ १९१०॥

सुनै सूर दिल्ली सु सोभै सु देस्ह। फ़ले जानि सोभै मधू माधुकेस्ह॥
भये छिन्न छिन्नं सनाहं निनारी। मनों ग्रेह रज्जं मँडी जानि जारी॥
छं० ॥ १९११॥

दिपै देवि आई मुषं एक मोरं। कहै कोनं तो[2]सौज भारथ्य जोरं॥
परे सीस न्यारे विरुभझ्झाइ उठ्ठे। विना सीस दीसैं जमं तंज छुटै॥
छं० ॥ १९१२॥

करै सीस हक्कै धपै दो निनारे। मनों केत ते राह दूनों हकारे॥
कही बत्त चिल्ही कहं ए सु जीयं। वनी नाहि जीहं सुकै कोटि कीयं॥
छं० ॥ १९१३॥

सामंतों का बल और पराक्रम वर्णन।

साटक ॥ छत्री जे पहुपंग जुग्गिनि पुरं लोथंत धारा धरं॥
दुत्ती बज्जन बीर धीर सुभटं आलुथ्थि अलुथ्थनं॥
अंती अंत रुरंति भंजिति धरं धारं रुधिं षारयौ॥
चिल्ही जंभर बीर भारथ बरं जो गीव जत्ती गतं॥ छं० ॥१९१४॥

चिल्हनी का युद्ध देख कर प्रसन्न होना।

दूहा ॥ इह, सुनि कर भारथ्य गति। उद्धि चिल्ही चवसट्ठि॥
सो भारथ्य न दिट्ठयौ। पंषिन अंषिन दिट्ठ॥ छं० ॥ १९१५॥

कवित्त ॥ उठें एक धावंत। सहस रुद्दा अगिनित बल॥
क्रोध किये दस होइ। सहस दसमथ्य जूह षल॥
वाहंतै सुरपंच। लष्ष सम्हो उच्चारं॥
रुधिर पारसह हौंसु। षलह अगनित उझ्झारं॥

(१) ए.-फंदा। (२) ए. कृ. को.-तो सूंज।

उच्चरै चिल्ह अस्तुति करी । साषि भरै सामंत दल ॥
भारथ्थ देवि मन उल्हसी । चिल्ह पंषि दिष्यौ सकल॥छं०॥१९१६॥

केहरि कंठीर का पृथ्वीराज के गले में कमान डाल देना ।

केहरि रा कंठेरि । स्वामि सिगिनि गर घत्तिय ॥
वरुन पास निय नंद । लोक पालह पति पत्तिय ॥
हसि हलक्कि हक्कारि । पंग पुत्तिय जानन पन ॥
तात अग्य संवरिय । राज राजन आनी धन ॥
चहुआन रथ्थ सथ्थह चढ़िय । नंषि बथ्थ कमधज्ज बर ॥
अब देषि बाल लालन सु पर । सुतन ढाल विच्चै सु बर ॥
छं० ॥ १९१७ ॥

संयोगिना का प्रत्यंचा काट देना और पृथ्वीराज का केहरि कंठीर पर तलवार चलाना।

दूहा ॥ गुन कट्टिय रसनिय सु वर । डसनह पंग कुंआरि ॥
असि बर झार प्रथिराज हनि । सूर हथ्थ नर वारि ॥छं०॥१९१८॥

तलवार के युद्ध का वाक् दृश्य वर्णन ।

त्रोटक ॥ निर वारि सु कढ्ढिय कंठ तनं । धर ढारि धरङ्गर भार घनं ॥
भार लग्गिय झार उभार भरं । कटि मंडल पंड विहंड धरं ॥
छं० ॥ १९१९ ॥
लगि हक्कि सु धार सु बीर सुअं । कठिया किकरिस्सर धार धुअं ॥
असि रुंड सु मुंडन झुंझ परट्ठ । मनों सुक कूटि कनारिय वट्ठ ॥
"छं० ॥ १९२० ॥
जु क्रमे बर केहरि चंगल चंपि । ग्रहे कर पाव उडंत उझंपि ॥
धरे सम जंगल पुच्छ सरोह । सनंपत मंडल उंडन मोह ॥
छं० ॥ १९२१ ॥
फिरक्कन आय धरप्पर धुक्क । किलक्कति चप्प विलग्गिय लुक्क ॥
विभरच्छह रत्त सु रच्छिय मेन । हयग्गय लुथ्थिय तहाँ पर अन ॥
छं० १९२२ ॥

(१) ए-उड़ंपि ।

धर प्परि संघ धरं मय सत्त। मुरक्किय सेन स, पंगु रपत्त॥
मनो भगि धूर अधूर नरिंद। मुदंत मरीच अथंगय चंद॥
छं० ॥ १९२३ ॥

नवमी की रात्रि के युद्ध का अवसान। सात सौ शंखधुनियों का मारा जाना।

दूहा। तिथ नौमी सिर चंद निसि। बारह सुत्त रविंद॥
सुत चौरंगी संघ धर। कहर कलह कविचंद॥ छं० ॥ १९२४ ॥
संघ धुनिय परि सत्त सय। मुर रानौ कमधज्ज॥
अति सु अरिष्ट विचारयौ। जाय कि संभर रज्ज॥ छं० ॥ १९२५ ॥

नवमी की रात्रि के युद्ध की उपसंहार कथा और मृत योद्धाओं के नाम।

कवित्त॥ निसि नौमी सिर चंद। इक्क बज्जी चावद्दिसि॥
भिरि अभंग सामंत। वारि वरषंत मंच असि॥
अयुत जुद्ध आवद्ध। इष्ट आरंभ सत्ति वर॥
एक जीव दस घटित। दसति ठेलै सु सहस भर॥
दिठ्ठै न देव दानव भिरत। जूह रत्त रत्तिय सु पल॥
सामंत सूर सोरह परिग। मोरे पंग अभंग दल॥ छं० ॥ १९२६

भुजंगी॥ भए राय दुअ कंक इक्कै समानं। परे सूर सोलह तिनं नाम आ
पस्यौ मंडली राव माल्हं नहंसौ। जिनै पारिया पंग रा सेन गंसौ
छं० ॥ १९२७ ॥

पस्यौ जावलौ जाल्ह सामंत भारे। जिनै पारिया पंग पंधार सारे॥
पऱ्यौ बग्गरी बाघ वाहे दुहथ्थं। भिरै षग्ग भग्गौ मिल्यौ हथ्थ बथ्थं॥
छं० ॥ १९२८ ॥

पस्यौ बीर जादौं बली राव बानं। जिनै नंषिया गेंन गय दंत पानं॥
पऱ्यौ साह तौ सर सारंग गाजी। दुहुं सथ्थ भष्यो भलौ हथ्थ माजी॥
छं० ॥ १९२९ ॥

प-यौ पद्धरी राव परिहार राना । षुले सेल साजै पुलै पंग बाना ॥
[1]जवै उप्पटौ पंग आवद्ध नीरं । तबै सांषुला सिंह भुजभानि भीरं ॥
छं० ॥ १९३० ॥

प-यौ सिंधुआ सिंधु सादल मोरी । लगे लोह अंगं लगी जानि होरी ॥
भिरैं भोज भग्गै नहीं सार अग्गै । प-यौ मत्तह मानों लहौ जूह लग्गै ॥
छं० ॥ १९३१ ॥

प-यौ राव भौंहा उभै चंद साषी । इकै कुसुम नंषै इकै किति भाषी ॥
जिसी भारथं षोडनी अट्ठ होमी । तिसी चैत सुदि रारि निसी एक नौमी ॥
छं० ॥ १९३२ ॥

कवित्त ॥ तब नायौ [2]रयपाल । जहां ढिल्ली संभरि वै ॥
सुहि सांईं लगि मरन । चंद रु सूर साषि दुऐ ॥
सार सिंगि सिर परत । फुट्टि सिर चिहुं दिसि तुट्टौ ॥
धर धायौ असमान । अंत पय [4]पय भर षुट्टौ ॥
छटक्यौ सु कटक किन्नौ चटक । सब दल भयौ भयावनौ ॥
जग जेठ झझिझझ धरनी प-यौ । अच्छरि [5]करिहि वधावनौ ॥
छं० ॥ १९३३ ॥

दूहा ॥ पहु पचार रट्ठौर रिन । जिहि [6]सिंगिनि गुर कौन ॥
भुज [7]भुअंग सामंत कय । गही संष धर लौन ॥ छं० ॥ १९३४ ॥
तुरंग विछिं डिग पंडि तसु । करिग सु सस्त्र विसस्त्र ॥
रुधिर धार धर उड्डरिय । भरिग उमा पति पत्र ॥ छं० ॥ १९३५ ॥
राज पर्यंप्यौ भिरन भर । आज कहौं हिय छोह ॥
भौंहा भौंह पराक्रमह । कुल चंदेल न होहि ॥ छं० ॥ १९३६ ॥

कवित्त ॥ जिनै सेष धर संष । पूर पूरत भुअ कंपिय ॥
जिनै संष धर संष । भूमि डारत भर चंपिय ॥
जिनै संष धर संष । राज गर सिंगिनि घत्तिय ॥
सो संषद्धर असि समेत । आयाम सपत्तिय ॥

(१) ए. कृ. को.-जबै । (२) मो. जानि । (३) ए. कृ. को.-रजपाल ।
(४) ए. कृ. को. पथ, पथ्थ । (५) ए. कृ. को.-करिहि ।
(६) मो.-सिंगिनि गर । (७) ए. कृ. को.-तुरंग ।

धनि वीर वीर वीरम्म सुअ । सु कज्ज वारि अवधारितैं ॥
सामंत सूर सूरन हनहि । सुकल किति विमतार तैं ॥छं० ॥ १९३७॥

दिट्ठी द्रुग्ग नरिंद । कासि राजा जुग जग्गिय ॥
राय छनों लंगूर । गोठि करनं कर भग्गिय ॥
पंग राय परतष्षि । जंग रष्पन रन माई ॥
निसि नवमी ससि अस्त । गस्त [1]गौअर गहि पाई ॥
हक्कंत दंत चंप्यौ न्रपति । सामंतन असि वर बहिय ॥
भग पर्यौ सत्त आथंत कौ । कहिग सब्ब गहियन गहिय ॥
छं० ॥ १९३८ ॥

दूहा ॥ सिंधु जस्ति कमधज्ज दल । [2]विवरि अनी अन लष्प ॥
दिय आयस कर उंच करि । [3]कनक राइ परतष्प ॥ छं० ॥ १९३९ ॥
एक लष्प सेना सुभर । बाजि बज्ज रसवीर ॥
अनिय वंधि आषाढ़ नभ । वरषि वूंद घन तीर ॥ छं० १९४० ॥

युद्ध वर्णन ।

चोटक ॥ सजि सेन मनों मिलि मत्त जलं । मिलि उप्पर पुट्ठि कमड्ड दलं ॥
घन नंकिय घंट सु वीर घुरं । भर निर्मल स्वामि सु नेह धुरं ॥
छं० ॥ १९४१ ॥

मिलि सेन उभै भर आतुरयं । छुअ नारि सु कातर कातरयं ॥
लगि लोह उभै भर संकरयं । असि पावक झाक वढी झरयं ॥
छं० ॥ १९४२ ॥

हय भार ढरै धर धार मुषं । किननं कहि धुक्कहि दुट्ठ दुषं ॥
करि तुट्टहि सुंड सु सीस ढुरै । पय तुट्ट पुलै चक चौह करै ॥
छं० ॥ १९४३ ॥

भर सामंत जुद्ध अयास लगै । जय स्वामि सु अप्पह अप्प मगै ॥
निज इष्ट सु सूरनि संभरियं । सुनि आइ सबै सोइ सुंधरियं ॥
छं० ॥ १९४४ ॥

(१) मो.-गौवर । (२) ए. कृ. को.-विचार । (३) ए. कृ. को.-कैंचन राउ ।

भय बीर भयानक रुद्र रसं। धर नच्चि धरप्पर सीस कसं॥
जु किय कर अस्सि जुधं अधयं। दिठि दिट्ठि सुनीन सु सा जुधयं॥
छं०॥ १९४५॥

'भय धुंधर हक्क किलक्क बर्ज। गज तुट्टिय ढाल सु नेज धज्जं॥
भय सामंत जुद्दह सद्दरयं। जुरि जुद्दहि रुद्दमि सुद्दरयं॥
छं०॥ १९४६॥

भ्रम छत्त 'अछत्त सु राज भयं। जय आस उभै भर बीर गयं॥
छं०॥ १९४७॥

सामंतों की प्रशंसा।

कवित्त॥ धनिव सूर सामंत। जीव लगि जतन न कीनौ॥
धनिव सूर सामंत। सबद जंपत पुर तीनौ॥
धनिव सूर सामंत। घाय दुज्जन संघारे॥
धनिव सूर सामंत। देष पिची रिन पारे॥
इतनौ सु कियौ प्रथिराज छल। कहत चंद उत्तिम हियौ॥
संदेह देवि पय लग्गि करि। तवहि गंग मज्जन कियौ॥छं०॥१९४८॥

अत्ताताई का युद्ध वर्णन।

दूहा॥ *चौरंगी नन्दन सुभर। अत्ताताइ उतंग॥
समरि ईस आनंद न्रप। धरि चिहूल जुरि जंग॥ छं०॥१९४९॥

अत्ताताई की सजावट और युद्ध के लिये उसका ओज एवं उत्साह वर्णन।

पद्धरी॥ जुरि जंग सूर चौरंगि नंद। धकि दंत मंत उप्पर मयंद॥
जा गिनिय पच लै 'सजिय संग। उल्हास ईस आनंद अंग॥
छं०॥ १९५०॥

---

(१) ए. कृ. को.-धर। 　(२) ए. कृ. को.-अमत्त।
* दिल्ली के राजा अनंगपाल तूंअर के प्रधान चौरंगी चहुआन जिनका बेटा अताताई था।
(३) ए. कृ. को. -सज्जिय।

उत्तंग तोलि त्रिस्सूल वीर। गज्यौ गगन गल कल कंठीर॥
थर सर पयट्ठ मधि मत्त दंति। उभ्भारि कमल षग ढिग सु पंति॥
छं० ॥ १९५१ ॥

जलडोहि सु जल वीरत्त रत्त। भंजी सु पारि अरि अनिय मत्त॥
जय जय सु किति जंपै अघाइ। नच्चै सु ईस भर रुंड पाइ॥
छं० ॥ १९५२ ॥

प्राहार लत्त औरत्त एक। द्वै गै तुटंत नर ताम तेक॥
घन रुहिर झाक रंगिय सकत्ति। तन रत्त रुद्र रल ज्यौं अरत्ति॥
छं० ॥ १९५३ ॥

उट्ठी दुरंग मुषि लग्यौ धाहि। त्रिसूल झारि धर धरनि ढाहि॥
जसवंत कमध कोपै करार। आयौ सु साज सह यट्ट सार॥
छं० ॥ १९५४ ॥

प्राहार कियौ चहुआन जाम। [1]संग्रह्यौ हक्क कंठह सु ताम॥
असि घाइ सीस उप्पर उझार। प्राहार अवरि अवनी सु ढारि॥
छं० ॥ १९५५ ॥

रुहिरै सु पूर पावस प्रवाह। जल रत्त गंग मिलि भयौ [2]नाह॥
भग्गे सु सेन न्रिप पंग जाम। आइयौ हनू लंगूर ताम॥
छं० ॥ १९५६ ॥

अत्ताताई पर मुसलमान सेना का आक्रमण करना।

दूहा॥ तत्तारिय तमि पंग भर। करि उप्पर द्रिग बीर॥
अत्ताताई उध्धरै। आइ षरक्कै मीर॥ छं० ॥ १९५७ ॥

अत्ताताई का यवन सेना को विदार देना।

कवित्त॥ अतताई बर बीर। सेन रुंध्यौ तत्तारी॥
छोह सामि तजि मोह। कोह कट्ठीं कट्टारी॥
गलह अप्पि आभंग। वज्जि नंष्यौ बर बाही॥
जाम समंत विप्फरे। पंग सेना सब गाही॥

(१) ए. कृ. को -संग्रह्यौ कंठ हासिहक्क ताम। (२) ए. कृ. को.-ताह।

तोषार [1]तुंग पष्पर सहित। परिग भीर गंभीर भर॥
पहु पंग फेरि पारस परिय। घटिय तीय घट्टी पहर॥
छं० ॥ १९५८ ॥

अत्ताताई का अतुलित पराक्रम वर्णन।

अतताई वर बीर। स्वामि लद्धौ न पार बल॥
तीय पहर बाजिग्ग। बज्र बिच परे जूह षल॥
धर समुंद परमान। बद्द मेलौ देषी जुअ॥
धुअ प्रमान पै मंडि। धूअ की नौत अप्प भुअ॥
धर परत धरनि उट्ठे भिरन। हक्कि सीस तिहि ईस बर॥
जंपरे बीर धरनी सु बर। बरन रंभ बंटेति भर॥ छं० ॥ १९५९॥

बरन रंभ बंटयो। भरन पिष्यै पौरिष बर॥
बरन सु बर किय चित्त। सूर रंह्यि रन चित्त भर॥
रंभ कहत्तिय आदि। हूर उर वसि उर मंडं॥
जमगत्ती जिन अंनि। बंद छंडे जिन छंडं॥
संभरी बोल तम वर वरी। भ्रित्त छंछ इच्छी सु बर॥
नन बरे बरहि रहि सु बर। बऱ्यौ न को रवि चक्रतर॥
छं० ॥ १९६० ॥

कोपि चाइ चहुआन। तट्ठि तर सूर उपारिय॥
सिंगी नाद अनंद। इष्ट करि इष्ट संभारिय॥
सुधिर सत्त सामंत। रुधिर पष्पर लप मंगह॥
रहसि राइ लंगूर। ग्रीव चंप्यौ आभंगह॥
जै सद्द बद्द जोगिनि करिय। अत्ताताइ उतंग सिर॥
भरि हरिय पंग पंगुर सयन। गंग सु रंगिय रंग हरि॥ छं०॥ १९६१॥

अत्ताताई के युद्ध करते करते चहुआन का गंगा पार करना।

दूहा॥ तरत सु धर चहुआन कौ। मद्दि गंग वै माहि॥
जय जय सुर जंपिय सु भर। धनि धनि अत्ताताइ॥ छं०॥ १९६२॥

(१) मो.-तुंगा।

गंधर्वों का इन्द्र से कहना कि कन्नौज का युद्ध देखने चलिए और इन्द्र का ऐरावत पर सवार होकर युद्ध देखने आना।

पद्धरी ॥ गंध्रव्व सुग्ग पत्ते सु जाम। आनंद उअर उप्पनौ ताम ॥
आदर सु इंद्र दीनौ विस्राम। मेलयौ जुद्ध भल्ल कीन काम॥
छं॥ १९६३॥

गंध्रव्व कहै सुनि सुर्ग देव। सामंत जुद्ध पिष्पन स टेव॥
जस करौ रथ्थ ऐराय इंद्र। देषनह जुद्ध कमधज्ज दंद॥
छं॰॥ १९६४॥

सजि चले देव अन्नेक सथ्थ। सोभंत रंग अन्नेक रथ्थ॥
अपछर अनेक चालंत सुर्ग। अन्नेक सुभट लेपंत मग्ग॥
छं॰॥ १९६५॥

गंगह दुकूल ढाहंत सेन। रेलयौ कटक सरिता प्रवेन॥
अन्नेक करी वहता सु दीस। बेहाल मुष्प पारंत चीस॥
छं॰॥ १९६६॥

चंपे लँगूर अततांइ जब्ब। वधेव तोन संकर गुरब्ब॥
सा वद्ध बेध लाघव्व सार। मारंत सेन संगह प्रहार॥छं॰॥ १९६७॥
सामंत सज्जि चव ओर जोर। अन्नेक सेन बिच करत सोर॥
रोपयौ बीच सित सहस षंभ। गज गाह बंधि देषत अचंभ॥
छं॰॥ १९६८॥

पचास कोस रिन षेत हुअ। कीनौ सु जुद्ध सामंत धूअ॥
* * * * ॥ * * छं॰॥ १९६९॥

पृथ्वीराज का कविचन्द से अत्तातांई की कथा पूछना।

दूहा॥ अत्तातांइ अभंग भर। सब पहु प्राक्रम पेषि॥
लगी टगटगी दुअ दलनि। न्रिप कवि पुच्छि विसेष॥छं॰॥१९७०॥
अतुलित बल अतुलित तनह। अतुलित जुद्ध सु विंद॥
अतुलित रन संग्राम किय। कहि उतपति कविचंद॥छं॰॥१९७१॥

(१) ए. कृ. का.-सर्ग। (२) ए. कृ. को.-तव्व।

कविचन्द का अत्ताताई की उत्पत्ति कहना कि तुअरों के मंत्री चौरंगी चहुआन को पुत्री जन्मी और प्रसिद्ध हुआ कि पुत्र जन्मा है ।

कवित्त ॥ चौरंगी चहुआन । राज मंडल आसापुर ॥
तूंअर धर परधान । सु बर जानै हत्तासुर ॥
[1]धर असंष धन धरिय । एक नारिय सुचि धाइय ॥
तिहिं उर पुत्री जाइ । पुत्र करि कही बधाइय ॥
करि संसकार दुज दान दिय । अत्ताताइय कुल कुंअर ॥
न्त्रिप अनंगपाल दीवान महि । पुत्र नाम अनुसरइ सर ॥
छं० ॥ १९७२ ॥

पुत्री का यौवन काल आने पर माता का उसे हरिद्वार में शिवजी के स्थान पर लेजाकर शिवार्चन करना ।

अति तन रूप सरूप । भूप आदर कर उट्ठहि ॥
चौरंगी चहुआन । नाम कीरति कर पट्ठहि ॥
द्वादस बरष सु पुज्ज । मात गोचर करि रष्यौ ॥
राज काज चहुआन । पुत्र कहि कहि करि भष्यौ ॥
हरद्वार जाइ बुल्ल्यौ सु हर । सेव जननि संहर करिय ॥
नर कहै रवन [2]रवनिय पुरुप । रूप देषि सुर उद्धरिय ॥
छं० ॥ १९७३ ॥

दूहा ॥ जब त्रिय अंग प्रगट्ट हुअ । तब किय अंग दुराइ ॥
अह रयन लै अनुसरिय । सिव सेवन मत भाइ ॥ छं० ॥ १९७४ ॥

शिवस्तुति ।

निराज ॥ स्वयं संभु सारी । समं जे सुरारी ॥
उरं विष्प धारी । गरल्लं विचारी ॥ छं० ॥ १९७५ ॥
ससी सीस सारी । जटा जूट धारी ॥
सिरं गंग भारी । कटिं ब्रह्मचारी ॥ छं० ॥ १९७६ ॥

(१) ए. कृ. को.-धन ।　　(२) ए. कृ. को.-नर्रनिय ।

सया सोह कारी। अपंजा विडारी ॥
गिरिज्जास पारी। उछंगं सु नारी ॥ छं० ॥ १९७७ ॥
धरी वज्र तारी। त्रयं नाउं कारी ॥
ग्रनै जहि स्रारी। करे नेन कारी ॥ छं० ॥ १९७८ ॥
अनंगं प्रहारी। मतं ब्रह्मचारी ॥
धरै सिंग सारी। विभूतं अधारी ॥ छं० ॥ १९७९ ॥
जुगं तत्त जारी। छिनं जे निवारी ॥
सुत्रं सार धारी। [1]भुगत्तं उधारी ॥ छं० ॥ १९८० ॥
इसौ सिंभु राया। न दिष्यौ न माया ॥
तिनं कित्ति पाया। जगत्तं न चाया ॥ छं० ॥ १९८१ ॥
चढे वृष्य सीसं। विभूती वरीसं ॥
सनों क्रन्न रव्वी। अपं जोध सव्वी ॥ छं० ॥ १९८२ ॥
दूहा ॥ मात पिता बंधव सकल। तजि तजि मोह प्रमान ॥
दस कन्या वर संग लै। गायन गौ सुरथान ॥ छं० ॥ १९८३ ॥

कन्या का निराहार वृत कर के शिवजी का पूजन करना॥

ईस जप्प दिन उर धरति। तजि संका सुर [2]बार ॥
सो बाली लंघन किये। पानी पन्न अधार ॥ छं० ॥ १९८४॥
पंच धने पुज्जंत सिव। गहि गिरिजा तस पानि ॥
चिय कि पुरुष हवि संचु कहि। विधि कलि बंध प्रमान ॥
छं० ॥ १९८५ ॥

शिवजी का प्रसन्न होना।

एक दिवस सिव रीझ कै। पूछन छेहन लीन ॥
सुनि सुनि बाल विसाल तौ। जो मंगै सोइ दीन ॥ छं० ॥ १९८६॥

कन्या का बरदान मांगना।

मुझ पित जुग्गिनिपुर धनिय। अनँगपाल परधान ॥
पुत्र पुत्र [3]कहिं अनुसरिय। जानि वितड्डर मानि ॥ छं० ॥ १९८७॥

(१) ए. कृ. को.-मुगत्त। (२) ए. कृ. को.-बाल। (३) ए. कृ. को-कर।

कवित्त ॥ [1]विदित सकल सुनि चपल। सतीत्र लंपट विन कपटे ॥
भगत उधव अरुविंद। सीस चंदह दिषि झपटे ॥
गीत राग रस सार। सुभर भासत तन सोभित ॥
काम दहन जम दहन। तीन लोकह सोय लोकित ॥
सुर अनंग निद्धि सासंत गवन। अरि भंजन सज्जन रवन ॥
मो तात दोष वर भंजनह। तुअ बिन नह भंजै कवन ॥
छं० ॥ १९८८ ॥

शिवजी का बरदान देना।

दूहा ॥ जयति जुवति संतोष घन। संचहि यामी आव ॥
सुवर बाल नन आइयै। सो विह लध्यौ सु पाव ॥ छं० ॥ १९८९ ॥
पुत्र लिषिनि पुब्बैं कहों। देउ सु ताहि प्रमान ॥
जु कछु इंछ वंछै मनह। सो अप्पौ तुहि ध्यान ॥ छं० ॥ १९९० ॥

शिवजी का बरदान कि आज से तेरा नाम अत्ताताई होगा और तू ऐसा वीर और पराक्रमी होगा कि कोई भी तुझ से समर में न जीत सकेगा।

पद्धरी ॥ बोलेति सिंभ बालह प्रमान। आघात कियौ देवलनि आनि ॥
आना नरिंद वेताल हक्कि। डर करै नाय वाला प मुक्कि ॥
छं० ॥ १९९१ ॥
षट मास गये बिन अन्न पान। दिष्यौ सु चिंत निह कपट मान ॥
चल चलइ चित्त तिन लोइ होइ। पावै न देव तप झूठ कोइ।
छं० ॥ १९९२ ॥
निश्चलह चित्त जिन होइ वीर। पावै जु सुर्ग सुप मद्धि कीर ॥
जगि जग्गि निसा तज्जिय चिजाम। सपनंत ईम दिष्यौ [2]प्रमान ॥
छं० ॥ १९९३ ॥
अततोइ नाम तो धरों वीर। पावै व राज राजन सरीर ॥
ना लपै युक्त तुअ तात ग्रेह। तजि नारि रूप धरि ध्रम्म देह ॥
छं० ॥ १९९४ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-विदित सकल। (२) ए. कृ. को. प्रनाम।

जं होई सन्न भारथ्य काल। भंजै न तूत्र तिन अंग साल॥
फिरनेव फिरन फुट्टत प्रकाल। भंजै सु पलह लुकि अग्ग धार॥
छं० ॥ १९९५॥

भारथ्य रमन जब होइ काल। मरअंत काल बाल हति बाल॥
तुअ अंग अंग पुज्जै न जुद्ध। मानुच्छ कोन करिहै बिरुद्ध॥
छं० ॥ १९९६

जिन मध्य होइ अततताइ भान। कढ्ढिहै तिमिर दुज्जन निधान॥
झलकंत कनक दिष्षौत बाल। जग्गयौ बीर तिन मध्य काल॥
छं० ॥ १९९७॥

लच्छि कच्छि बंधी सु थाल। पावहि सु बीर बीरह बिसाल॥
इह कहिरु बीर गय अप्प थान। बिम्भूत चक्क डोंरु प्रमान॥
छं० ॥ १९९८॥

मालाति अरक्त दीसै उतंग। सिव रूप धरिग मन दुति अनंग॥
सिर नेत दीन सुष्षम थान। इह काल करिग आयौ सु पान॥
छं० ॥ १९९९॥

साटक॥ जुत्तं जो सिव थान अनगति वरं, कापाल भूतं वरं॥
डोंरु डक्कय नद्द नारद बलं, वेताल वेतालयं॥
तूं जीता रन बारुनैव कमलं, जै जै अताताइयं॥
स्रातं मंत्रय छित्ति तारन तूही, पुज्जै न कोई बलं॥ २०००॥

कवि का कहना कि अत्ताताई अजेय योद्धा है।

दूहा॥ नागति नर सुर असुर मय। असुर चित्त परमान॥
तो जित्तै अततताइ जुध। सो नह दिष्षिय आन॥ छं० ॥२००१

अत्ताताई के वीरत्व का आतंक।

कवित्त॥ अत्ताताइ उतंग। जुद्ध पुज्जै न भीम बल॥
थुति धावत करै देव। चक्र वक्कैत काल कल॥
गह गह गह उंच्चार। मध्य कंपै मघवा भर॥

(१) ए. कृ. को.-पुच्छे।

अरु कंपै हगपाल। काल कंपै सु नाग नर ॥
उच्छाह तात संमुह करिय। जाय सपत्तह पुत्त पह ॥
लभ्भै सु कोटि कोटिह सु नन। सो लभ्यौ [1]सत्ती सु दहि ॥
छं० ॥ २००२ ॥

दूहा ॥ तूं तारन कल उपज्यौ। अत्ताताइ उतंग ॥
जिन हुकंम कल कल करिय। करै सु रनह अभंग ॥
छं० ॥ २००३ ॥

रन अभंग को करै तुहि। तूं बढ़ देवह थान ॥
चाव छिसि सो भिंटई। हरत पान गुन मान ॥ छं० ॥ २००४ ॥

उस कन्या के दिल्ली लौट आने पर एक महीने में उसे पुरुषत्व प्राप्त हुआ।

इक्क मास षट दिवस वर। रहि न्टप दिल्ली थान ॥
सु बर बीर गुन उप्पजिय। सुनि संभरि चहुआन ॥ छं० ॥ २००५ ॥
भाई सोई पय सु लहि। वंछि जनम सँघ नाव ॥
दुसतर जुग ने तीर ज्यौं। छुटै न बंधव पाव ॥ छं० ॥ २००६ ॥
नर चिंता पाच तलभै। जौ परुषन सुष्याइ ॥
तों बंधन छुट्टै परी। जौ सुड्डौ जग्गाइ ॥ छं० ॥ २००७

इस प्रकार से कवि का अत्ताताई के नाम का अर्थ और उसके स्वरूप का वर्णन बतलाना।

कवित्त ॥ सिव सिवाह सिर हथ्थ। भयौ कर पर ममथ्थ दै ॥
सु विधि राज आदरिय। सत्ति स्वामित्त अघ्यलै ॥
वपु विभूति आसरै। सिंगि संग्राह धरै उर ॥
त्रिजट कथं कंठरिय। तिप्पि तिरस्हल धरै कर ॥
कलकंत बार किलकंत क्रमि। जुग्गिनि सह मध्यै फिरै ॥
चौरंगि नंद चहुआन चित। अत्तताइ नामह मरै ॥ छं० ॥ २००८ ॥

(१) ए. कृ. को.-छती।

आयौ तब ढिल्ली पुरह। ले चहुआन सु भार॥
कोट सबै सामंत भय। अत्तताइ [१]हम नार॥ छं०॥ २००९॥
नमसकार सामंत करि। जब जब दिष्पहि ताहि॥
तब तब राज विराज में। रहैं भूप मुप चाहि॥ छं०॥ २०१०॥
ढिल्ली सह सामंत सह। अमर सु क्रत ढिग थान॥
[२]समर सिंघ रावल सुभर। ग्रह लै गौ चहुआन॥ छं०॥२०११॥
इह वत्ती कविचंद कहि। सुनिय राज प्रथिराज॥
जुद्ध पराक्रम पेपि कैं। मंन्यौ सब क्रत काज॥ छं०॥ २०१२॥

अत्ताताई के मरने पर कमधुज्ज सेना का जोर पकड़ना और केहरि मल्ल कमधुज्ज का धावा करना।

कवित्त॥ अतताइय धर पर्यौ। बाग उप्परी पंग भर॥
गहन हुकम किय राज। बीर पंगुरा सुभर भर॥
सस्त्र बीर प्रथिराज। दिसा केहरि करि मिल्लं॥
हुकम बीर कमधज्ज। सस्त्र [३]ओडन सब भिल्लं॥
कम्मान सीस धनि न्त्रपति गुन। कढ़ी रेप नरपत्ति वर॥
सामंत सूर तीरह निकसि। करिग राज उप्पर सु भर॥
छं०॥ २०१३॥

पंग की कुपित सेना का अनेक वर्णन।

भुजंगी॥ कहै चंद कव्वी कह्यौ ज्यों फुनिंदं। वरं चार चारं भुजंगी सुछंदं॥
ससी सोम सूरं करूरं जु धायं। गिरि पंग सेनं छिनं भेह लायं॥
छं०॥ २०१४॥
करी बीर दूनं दुहन्नं दुहाइ। दुहुं अग्गि सिंगी दुहुं नैन नाई॥
दोऊ बीर रूपं बिरूभ्भाय धाई। मनों घोटरं टक्करं एक छाई॥
छं०॥ २०१५॥
अनी सों अनी अंग अंगी षरक्की। मनों भोंन भानं दुहुं बीच वक्की॥
मिली मंडली फौज पहूपंग घेरी। कियं क्रोध दिट्ठी चहूआन हेरी॥
छं०॥ २०१६॥

(१) ए. इम। (२) मो. अमर सिंह। (३) मो. ओड़त।

मनै सस्त्र मंतं अवतं ज सूरं। मारै दिष्ट वैरी लगै जे करूरं ॥
दिसा धुंधरी पंच विम्मान छायौ।किधौं फेरि बरिषा जु आषाढ़ आयौ॥
छं० ॥ २०१७ ॥

गजै सार धारं निसानं प्रमानं। फिरै पंति दंती घनं सेस मानं ॥
बजै सद्द झिंगूर [1]उदंद कूरं। पढै भट्ट वीरं समं जानि [2]सूरं ॥
छं० ॥ २०१८ ॥

धजा सेत नीलं सु मतं फिरंती। मनों सुक्क मालं वगं पच्छ जंती॥
उडै सार धारं [3]किरच्चान तथ्थं।उड़ै झिंगनं जानियै बिज्ज सथ्थं ॥
छं० ॥ २०१९ ॥

उडै सार सारं असी वंक झारं।मनों अभ्भि [4]सरन बाल बज्जयौ सवारं॥
भयं अंग रत्तं ढ़रै रुद्धि हल्ली। मनों हथ्थ पायं नदी जानि चल्ली॥
छं० ॥ २०२० ॥

कहै रंभ लेयं नहीं हथ्थ आवै ।तिनं सार धारं सु संगल्ल गावै॥
रही अच्छरी हारि मनोरथ्थ पुट्टै।मनो विरहिनी हथ्थ तें पीउ छुट्टै॥
छं०॥ २०२१ ॥

ढलं ढाल ढालं सु रत्ती फिरंती। गुरं गज्ज छंडै चढ़ै पंप पंती॥
परे पंच सूरं जु भारथ्थ भारै। जिनं पंग सेनं सवं षग्ग झारै॥
छं० ॥ २०२२ ॥

दूहा ॥ पंग राव चहुआन वर । सव वित्ते कविचंद ॥
देवासुर भारथ्थ नन । नन व्रित्त सुर इंद्र ॥ छं० ॥ २०२३ ॥

कवित्त ॥ परत पंच भारथ्थ । चंपि चहुआन अरुझ्झिय ॥
डररि सब्ब सामंत। मुक्ति लहन मन सुझ्झिय ॥
धर धारव चंपिय सु। पंग पारस गहि लंपिय ॥
जियन जुद्ध तुछ कीय। कित्ति कीनी जुग मप्पिय ॥
कलहंत केलि लग्गी विषम। [5]तन सुरत्त वर उस्सरिय ॥
मनों पुहप हथ्थ बंधन पलह। अमर अप्प पूजा करिय ॥
छं० ॥ २०२४ ॥

(१) ए. कृ. को. उद्दन। (२) मो. सूरं। (३) मो. किरवान।
(४) ए. कृ. को.-सर। (५) मो.-तन।

युद्ध स्थल की पावस से उपमा वर्णन।

बर साधव पहुपंग। सार उन्नयौ सम्च भर ॥
बज्जी बर प्रथिराज। मोर मंडे अड्डै गिरि ॥
सस्त्र तेज उट्ठाय। [1]सांम लगियन सु बुंद असि ॥
घरी एक धर धरे। सार बुट्टंन सूर धसि ॥
अवरत्त बीय बज्जे विषम। भगि अप्पौ नर सूर बिव ॥
प्रथिराज दान घन दीय सस्त्र। ग्रहन राह अरि भजन रवि ॥
छं० ॥ २०२५ ॥

दूहा ॥ छिनक उसरि बद्दलति दल। छत्र पंग सिर भास ॥
हेम दंड चलि उदै सथ। ग्रह चंपे रवि रास ॥ छं० ॥ २०२६ ॥

पंगराज के हाथी की सजावट और शोभा।

कवित्त ॥ रत्ति ढाल ढलंकति। रत्त अम्मरिय पीत धज ॥
सेत मंत गज झंप। रत्त मंडत्त सहस गज ॥
मनों राइ रवि व्योम। भोम चढ़ि पिष्षि दल ग्यंवं ॥
सज्जि सेन कमधज्ज। अग्ग दीनौ अरि हिंवं ॥
तिम चढ़त घटत किरनाल कर। भै अभंत चतुरंगिनिय ॥
तन कट्टि करषि कायर धरषि। सुमरि सोम वासर गनिय ॥
छं० ॥ २०२७ ॥

पंगराज की आज्ञा पाकर सैनिकों का उत्साह से बढ़ना। उनकी शोभा वर्णन।

दूहा ॥ इन भज्जै संजोगि ग्रह। जीय संपतौ राज ॥
अद्भुत जुद्ध रिन जित्तही। पंग सु भर [2]किहि काज ॥छं०॥२०२८॥

रसावला ॥ पंग कोपे घनं। लोह बज्जे झनं ॥
ओड मंडे ननं। बीर बज्जै [3]रनं ॥ छं० ॥ २०२९ ॥
चच्चरं चंगनं। चंपि षुत्ते मनं ॥
बान रोसं भनं। अंत [4]तुट्टै घनं ॥ छं० ॥ २०३० ॥

---

(१) ए. कृ. को.-स्याम। (२) ए. कृ. को.-कहि।
(३) ए. कृ. को ननं। (४) ए कृ. को.-लुट्टै

सज्ज बीरं जनं। बीर नंचै छिनं॥
दंत दंती तनं। सीस चट्ठी फनं॥ छं०॥ २०३१॥
माहि मेलं ननं। जोत रिष्पे कनं॥
सोर लग्गो तिनं। जक्क जे संमनं॥ छं०॥ २०३२॥
सिंघ देषे तिनं। ग्रब्ब मेरं मनं॥
कोटि तप्पं तनं। षग्ग पावं छिनं॥ छं०॥ २०३३॥
सीस हक्के फनं। द्रोम नंचे घनं॥
सूर दिष्पे छिनं। जानि कीयं ननं॥ छं०॥ २०३४॥
लज्ज पंकं धुतं। ढोरि षन्नं [१]जुतं॥
लोटि घंनं मनं। कित्ति बंधं तनं॥ छं०॥ २०३५॥

पृथ्वीराज की तरफ से हाड़ा हम्मीर का अग्रसर होना।

कवित्त॥ हाड़ा राव हमीर। राय गंभीर विबंधौ॥
लष्षी ना तोषार। लष्प जर जीन सहंदौ॥
राज अग्ग फेरि यहि। जाहि जंगल पति जानहि॥
चहुआन चामर नरिंद। जोगिनि पुर थानहि॥
असि द्रुग्ग द्रुग्ग दल सों जुरिग। सामंतति सत्तह चढ़िग॥
आलोह सेन लागन विषम। [२]वलीदान वामन वढिग॥
छं०॥ २०३६॥

पंग सेना में से काशिराज का मोरचे पर आना।

दूहा॥ कासिराज सज्यौ सु दल। फुनि अग्या दिय पंग॥
गाजे भीर अभीर रनि। वाजे विषम सु जंग॥ छं०॥ २०३७॥

काशिराज के दल का वल।

कवित्त॥ कासिराज दल विषम। मह्नि जानु तार विछुट्टिय॥
सिरिनि हार जुध धार। अट्ट अट्टह लिय बंटिय॥
निपनि घात तन वात। घात हय घात अघानिय॥
जनों जिहाज सायरिय। तिरन तुंगत तिहि वानिय॥

(१) कृ० को० हुतं। (२) "मनों" पाठ अधिक है।

बल बंधि बलपति बल तिन। छिन छिनदा कमधज्ज दल॥
भूचाल भूमि उथ्थल पथल। इस सु छवि पहुपंग दल॥
छं० ॥ २०३८॥

कासिराज और हाड़ा हम्मीर का परस्पर युद्ध वर्णन।

भुजंगी॥ हलं पंग छत्रं, न छित्रं निधानं। उवं हड्डु हम्मीर गंभीर वानं॥
हलं हाल भग्गी सु जग्गी जुआनं। रधी धार उद्धार भूमी भयानं॥
छं० ॥ २०३९॥

ससं सेल संद्देह अंदेह गानं। हयं तानि छंडै न छंडे परानं॥
वके राइ पंगे बद्दे पीलवानं। नभं गाम गज्जे व जंजीर थानं॥
छं० ॥ २०४०॥

निमा एक सेकं समेकं हियानं। दिमा धूरि धुंधी उड़ीगैं गिधानं॥
भिरै वीर सामंत तत्ते उतानं। महा भार भुत्ते सु साँई सु तानं॥
छं० ॥ २०४१॥

दोनों का द्वंद युद्ध और दोनों का मारा जाना।

कवित्त॥ हाड़ाराय हलकि उत। कासिराजह कर वर कसि॥
जोगिनि पुर सामंत। बहत कनवज्ज वीर रस॥
लियौ बीर आहुरिय। धरिय दंतह्नर आवध॥
नासि वीर निज्जरिय। करिय केहरि कुस रावध॥
उड़ि हंस मंस नंसह सुहर। कुहरति सा बाज्जय सुहर॥
जग्गयौ नाग तब नाग पुर। होम दुरग धामंक धर॥ छं० ॥२०४२॥

दूहा॥ हाड़ा राय सु हथ्थ धरि। गंभीरा रस वीर॥
कासिराज दल सम जुरिग। कुल उच्चारिय नीर॥ छं० ॥ २०४३॥
नृप अलसिग अलसिग सुभर अलसिय पंग नरिंद॥
विलसित काल करंक किय। सह सति तीस गनिंद॥ छं० ॥२०४४॥

नवमी का चन्द्र अस्त होने पर आधी रात को दोनों सेनाओं का थक जाना।

कवित्त॥ निसि नवमी ससि अस्त। घटिय मुर बीय स उप्परि॥

(१) ए. कृ. को. हयं थाल। (२) मो.-निधानं।

थक्किय हथ्थ सामंत। थक्किय पंगुर दल जुप्परि॥
रुधिर सरित परहरिय। गिद्ध [1]गोमाय अघाइय॥
ईस सीस गत दरिद। बीर बेताल नचाइय॥
आलुर सु उहटि थट भट रहिग। पंग फेरि सज्जिय सुभर॥
करि सीस रीस पुल्लिय सुबर। कहिय गहन आयास चर॥
छं०॥ २०४५॥

पृथ्वीराज का पंग सेना के बीच में घिर जाना।

वर विपहर निसि पंग। क्रोध बिष बीर साम मब॥
जीभ लोह दिढ साव। जग्गिय साहस्स तत्त तब॥
चित वासंग गारुरी। अमी अंचल चित मंतं॥
दिष्ट अछित उच्छारि। हंकि कढ्ढिग विष [2]गत्तं॥
[3]अप्पइ जु पल्ल सार सु गरुर। [4]रुद्रसि वेंन सज्जै मिसह॥
जे चिच रेष चिचौ सु वर। सिष संजोग आसा सिगह॥छं०॥२०४६॥

आर्या॥ पन्नगो ग्रसित सामुद्रं। त्यों पंग सेन ग्रिसतो [5]रायं।
ग्रित सुग्रित आहट्टं। नवमी निसौ अद्ध उपायं॥ छं०॥ २०४७॥

सुरिल्ल॥ पिष्पि जुद्द [6]कंदल दिव धाया। लग्गे सद्द दसों दिसि आया॥
तङ्गिग रहि गनि साजत वीरं। भग्गिय जुद्द ग्रह पति धीरं॥
छं०॥ २०४८॥

रात्रि को सामंतों का सलाह करना कि प्रातः काल राजा को किसी तरह निकाल ले चलना चाहिए।

कवित्त॥ रेनि मत्त चिंतयौ। प्रात कढ्ढौं प्रथिराजं॥
प्रा रष्यौ चहुआन। जाय जुग्गिनिपुर माजं॥
जब लगि अरि तन वढ्ढै। कढ्ढै न्रप कूह प्रमानं॥
च्यार वीस पग पुट्टि। अज्यौं सामंत [7]जघानं॥

(१) ए. कृ. को.-गोमय। (२) ए. कृ. को. गत्रं।
(३) मो.-अप्प पल्लू सार सु गरुर। ए.-अप्पइ जु पल्लू [illegible] सार सु गरुर
(४) ए. कृ. को.-रुद्रसि। (५) मो. रायं। (६) ए.-[illegible] (७) मो.-पधानं।

जो चढ़ै सामि पहु पंग कर। तौ सब किति समप्पनौ॥
जब लग्गि न्रपति हम हथ्य है। तब लगि बल सामंत नौ॥
छं० ॥ २०४९ ॥

पृथ्वीराज का कहना कि तुम लोग अपने बल का गर्व करते हो। मैं मानूंगा नहीं चाहे जो हो।

सुनिय बयन प्रथिराज। रोस वचननि उच्चारिय॥
ततो होइ तिन वेर। मंत वह वह बक्कारिय॥
तुम सु ग्रब्ब सामंत। मंत जानौ न अमंतं॥
में भग्गा ग्रिह पंग। लियं ढिल्ली धर जंतं॥
सै सामि होइ सिरदार भल। तौ काइर बल राह जित॥
जौ हथ्थ जीय होइ अप्पनौ। सुरव सेन अरियन्न कित॥ छं०॥ २०५०॥

सामंतों का कहना कि अब भी न मानोगे तो अवश्य हारोगे।

दूहा॥ सुनि सामंत उचारि न्रिप। विय दिन जुद्ध उमाह॥
अब जीतै प्रभु हारिहै। जौ नहि चल्लै राह॥ छं० ॥ २०५१ ॥

पृथ्वीराज का कहना कि जो भाग्य में लिखा होगा सो होगा॥

तब जंगलवै बोल्लि इह। रे भावी समरथ्थ॥
जौ पैसै लष पंजरै। अंत चढ़ै जम हथ्थ॥ छं० ॥ २०५२ ॥

दिशाओं में उजेला होना और पंग सेना का पुनः आक्रमण करना।

चौपाई॥ सामंत सूर उच्चरि चहुआनं। अचल चित्त अति धीर सु ध्यानं॥
धनि नरिंद सोमेसुर जायौ। मंडी अंमर पंग बर धायौ॥
छं० ॥ २०५३ ॥
रहि घटि सर निसि बढि तत मानं। षिनदा चरम रही घन पानं॥

(१) ए. कृ. को.-वालि।

बजि दल दुंदुभि पंग निसानं । रत चित सूर देस रति मानं ॥
छं० ॥ २०५४ ॥

जैचन्द के हाथी की शोभा वर्णन ।

कवित्त ॥ दिसि पुब्बह पहुपंग । बीर ठट्टौ रचि सेनं ॥
सेत केत गज झंप । सेत दुरि चौर समेनं ॥
सेत धजा आसह्ही । सेत सिंदूक सु हल्ली ॥
सेत अस्व पष्षर प्रमान । नाग मुषी रहि घुल्ली ॥
उज्जल सनाह जस बरन बर । सेत धजा कमधज्ज सब ॥
ओपमा चंद सस्तन किरन । कै विगसी सु कलेसु रवि ॥
छं० ॥ २०५५ ॥

सामंतों का घोड़ों पर सवार हो कर हथियार पकड़ना ।

चौपाई ॥ मतौ मंडि सामंत सूर भर । जिहि उपाय संकत्त जतन नर ॥
न्त्रिप अन जग्गत सबै तुरंग चढ़ि । भान पयान न होत लोह कढ़ि॥
छं० ॥ २०५६ ॥

चहुआन के सरदारों के नाम और उनकी सज धज का वर्णन

कवित्त ॥ चावद्दिसि पहुपंग । बंधि बन बीर सु ठट्टै ॥
रत्त धजा मारूफ । बंधि वामं दिसि गट्टै ॥
पीत धजा दल स्याम । सोह रट्टौ वर कन्हं ॥
सेत धजा पहबंध । बीर उम्भौ पहु नन्हं ॥
चौविद्दि फौज चावद्दिसा । बीर बीर वर विट्टरै ॥
चिंतयौ भान पयान वर । लोह पयानत विस्तरै ॥ छं० ॥२०५७॥

प्रातःकाल पृथ्वीराज का जागना ।

दूहा ॥ सुप्प सयन प्रथिराज भौ । तम घटि तम चर वार ॥
घरी एक निसि मुदित हुअ । वज्जत घरी घरियार ॥ छं०॥२०५८॥

पंगराज का प्रतिज्ञा करना ।

कवित्त ॥ घरिन वज्जत घरियार । पंग परतंग सु वाहिय ॥

कै तन छंडि तर धरौं। जीति दुरजन दल साहिय ॥
उभै उभै दिसि फौज। साजि चतुरंग चलाइय ॥
चावद्दिसि चहुआन। चाव चतुरंग हलाइय ॥
पायान भान वरज्जित अरि। लोह पयानन मोह भनि ॥
दिसि रत्त उत्त धररत्त व्है। सिध समाधि ऊरद्ध पुलि॥छं०॥२०५९॥

प्रातः काल की चढ़ाई के समय पंग सेना की शोभा।

भुजंगी॥ लगी वज्र ताली वजे लोह पुल्ली। घरी एक सिद्धिं समाधिंस भुल्ली ॥
किधौं इन्द्र वेतासुरं जुद्ध वीयं। किधौं तारका जुद्ध सुर मस्सि कीयं
छं० ॥ २०६०॥

कहै देव देवाइयं जुद्ध देषी। इसो वीर अत्तीत भारथ्थ पेषी ॥
भयं कब्बि चंदं सवैं वीर सथ्थी। नचै रंग भैरू ततथ्थे ततथ्थी ॥
छं० ॥ २०६१ ॥

किलं कार कारं रुधं पत्त धारं। पियै जोगिनी जोग माया डकारं॥
झरै लोह लोहं सबै दिस्सि झारी। नचै सट्ठि चव जोगिनी देत तारी॥
छं० ॥ २०६२ ॥

घटं घंट घट्टं सु पिंडं बिचारी। फिरै आदि माया सु आद कुमारी॥
बहै बान षग्गं छुपिक्का विरंध्रं। परे बार पारं दुहूं अंग छिद्रं ॥
छं० ॥ २०६३॥

भये छिन्न छिन्नं सनाहं ति छिन्नं। रुधी जट्ठ रंकै तिनं माहि भिन्नं॥
कहै चंद कब्बी [1]उपम्माति रुष्षं। मनो उग्गतं भान जाली मउष्षं॥
छं० ॥ २०६४ ॥

भये अंग अंगं सु रंगे निनारं। भरं उत्तरे मुगति संसार पारं॥
भयौ जुद्ध कवरुद्ध कथ्थे कथायं। लही सूर सूरं सबं मुगति पायं॥
छं०॥ २०६५ ॥

परे पंग लष्षं उलष्षं सु सथ्थं। तुटै सस्च सूरं जुटै हथ्थ बथ्थं॥
छं० ॥ २०६६॥

---

(१) मो. उपमास।

पृथ्वीराज का व्यूहवद्ध होना और गौरंग देव अजमेरपति का मोरचा रोकना।

कवित्त ॥ उग्गि भान पायान। देव दरवार संष वजि ॥
सु वर सूर सामंत। [1]गज्जि निकरे सेन सजि ॥
[2]धर हरि वलि पांवार। अग्ग कीनं प्रथिराजं ॥
ता पच्छै न्रिप कन्ह। सीस मुक्की बढ़ि लाजं ॥
ता पच्छ बीर निढ़ुर निडर। ता पच्छै दंपति अयन ॥
गौरंग गरुअ अजमेरपति। रष्षि न्रपति पछैं सयन ॥छं०॥२०६७॥

पृथ्वीराज की ओर से जैतराव का बाग सम्हालना।

पच्छ भान पाथान। लोह पायान अग्गि कढ़ि ॥
धर हरि धर पांवार। कोट धारह सलष्य चढ़ि ॥
बज्जि घाइ आवत्त। सार झरि मारह झड्डौ ॥
नभ सु सार सामंत। जानि वीरं जगि अड्डौ॥
घन देत घत्त अवरत्त असि। उभै सेन वर वर जुटी ॥
घरी अद्ध अध [3]वजि विषम। भारथ्थह पारथ घटी ॥ छं०॥२०६८॥

पृथ्वीराज का घिर जाना और वीर पुरुषों का पराक्रम।

फिरि रुक्यौ प्रथिराज। परी पारस कमधज्जिय ॥
मुरि सु पंच पल भान। चढ़ी आयस सुर रज्जिय ॥
ठठुकि सेन पहु पंग। चंपि चहुआनन संके ॥
बर बिरंग बिड्डार। चली वंभन झुकि झुक्कै ॥
वा कुटिल दिट्ठ कनवज्ज पति। सस्त्र मंच करि झारयौ ॥
जगि पवित्त जोग मंडन्न वर। धार तिथ्थ [4]तन पारयौ ॥
छं० ॥ २०६९ ॥

युद्ध के समय श्रोणित प्रवाह की शोभा।

भुजंगी ॥ चढ्यौ भान घट्टी उभैता प्रमानं। कढै लोह राठौर अरु चाहुआनं॥

(१) ए. कृ. को. गज्ज।　　(२) मो. धर हरिचिर।
(३) मो. वत्ती।　　(४) मो नभ, ए. कृ. तन।

सुभ्रौ दीन एकं विवे पंति बीयें। करे एक मेकं तिनं लोह लीयें॥
छं० ॥ २०७० ॥

उठै रुद्धि छिंछं झरै सार सारं। किधों मेघ वुट्टं प्रवालीन धारं॥
ढरै रंग जावक्क हेमं पनीरं। गहै अंत गिद्धी उडंती प्रकारं॥
मनों नभ्भ इंद्रं धनुक्कं पसारी। * * * छं० ॥ २०७१ ॥
हटक्की वरच्छी ठनंकंत घट्टं। चिजे गज्ज षेंचे चल्यौ साथ तट्टं॥
छं० ॥ २०७२ ॥

कहै चंद कव्वी उपम्माति कल्लं। पचै इंद्र बड्डू कपी काम फल्लं
निकस्सौ सनेनं झरै रुद्धि धारं। ढरै रंग जावक्क हेमं पनारं॥
छं० ॥ २०७३ ॥

करै सीस हक्के धरं कंठ रज्जी। मना नट्ट काया पलट्टीति वज्जी॥
दुहुं दिस्सि रुंधे परें धाइ घट्टं। मनो रत्त डोरी चढ्यौ नट्ट पट्टं॥
छं० ॥ २०७४ ॥

नहीं सुष्प दुष्पं न माया न काया। तहां सेवकं सामि रंकं न राया॥
घटक्की षटक्कीज भूछिद्र कारी। फिरी फेरि चहुआन पारस्स पारी॥
छं० ॥ २०७५ ॥

घुड़सवारों के घोड़ों की तेजी और जवानों की हस्तलाघवता।

कवित्त॥ ठठुकि दिष्षि न्रप सेन। छच धारह जु छच तजि॥
तत्तो होइ तिहि बेर। तत्त माया सु मुदित तजि॥
तत्त गत्त सो हथ्थ। तेग तत्ती उभ्भारी॥
धात षंभ न्निघात। जानि झल्लरि झल्लारी॥
असवार सनाहत पष्परे। कटि पट्टन तुट्टै निबर॥
जाने कि सिषा तर गिर सिरह। विहर बार करवत्त भर॥
छं० ॥ २०७६ ॥

माझी बर मरदान। मान मरदा मिलि तोरन॥
चाहुआन कमधज्ज। दिष्टि अरुहि रन जोरन॥
दुनै बीर रस धीर। धाइ लग्गे आभुष्षं॥
लोह वज्जि अवरत्त। जानि छुट्टै मद मुष्षं॥

त्रिघाइ घाइ बज्जे घनं। घन निसान सद्दह दुरिय ॥
रुधि भग्ग घाइ आभंग अगि। घटि बिबंग जोगा जुरिय

छं० ॥ २०७७ ॥

लोह धार बज्जंत। बज्जि पुरतार भार परि ॥
सेस सीस दल धसी। फेरि मुक्की कुंडलि करि ॥
करि कुंडलि अध सत्त। परे पिट्ठं परिवारं ॥
'गौ भगि फुनि फुनि फुन्नि। फुन्नि किय चंद निनारं ॥
अहि सीस 'वीस सत कलमले। रास रत्त भेदन दलं ॥
चित्रकत्त चित्त विस्मम भुअ। तिहित वेर अहि कलवालं ॥

छं० ॥ २०७८ ॥

जैचन्द के भाई वीरम राय का वर्णन ।

बंधौ रा जैचंद। रा विजपाल सपुत्तह ॥
से रंभ्री उर जनम। नाम वीरम रावतह ॥
सहस तीस सिंधूत। ढाल नेजा सिंदूरिय ॥
सिंदुरीव सन्नाह। सेव वारुन संपूरिय ॥
दिन सहिय एक भुंजै भपनि। विजय द्रग्ग अग्गै त्रपह ॥
जीते जुवान हिंदू तुरक। वाम अंग टोडर पगह ॥ छं०॥२०७९ ॥

वीरमराय का चहुआन सेना के सम्मुख आकर सामंतों को प्रचारना ।

सुक्रवार अष्टमिय। निंद जाने न जुग्ग परि ॥
नौमि सनी टरि गइय। सामि संग्राम इंद्र जुरि ॥
हय दिष्षत षावास। पाइ गहि सत्त पछारिय ॥
रे समग्र मृदंग। जंग जुरि हौन जगारिय ॥
आयौ निसंक सामंत जहं। कर कमंत आनम असन ॥
तिहने हर साहि सु समर। जनु अगस्ति दरिया ग्रसन ॥

छं० ॥ २०८० ॥

(१) [illegible] (२) [illegible]

त्रिघाइ घाइ बज्जे घनं । घन निसान सद्दह दुरिय ॥
रुधि भग्ग घाइ आभंग अगि । घटि विवंग जोगां जुरिय

छं० ॥ २०७७ ॥

लोह धार बज्जंत । बज्जि घुरतार भार परि ॥
सेस सीस डुल धसी । फेरि मुक्की कुंडलि करि ॥
करि कुंडलि अध सत्त । परे पिट्टं परिवारं ॥
[1]गौ भगि फुनि फुनि फुनि । फुन्नि किय चंद निनारं ॥
अहि सीस [2]वीस सत कलमले । रास रत्त भेदन दलं ॥
चित्रकन चित्त विभ्रम्म भुअ । तिहित वेर अहि कलकलं ॥

छं० ॥ २०७८ ॥

जैचन्द के भाई वीरम राय का वर्णन ।

बंधौ रा जैचंद । रा विजपाल सपुत्तह ॥
से रंभ्री उर जनम । नाम बीरम रावतह ॥
सहस तीस सिंधूत । ढाल नेजा सिंदूरिय ॥
सिंदुरीव सन्नाह । सेव वारुन संपूरिय ॥
दिन महिष एक भुंजै भषनि । विजय द्रग्ग अग्गै न्रपह ॥
जीते जुवान हिंदू तुरक । वाम अंग टोडर पगह ॥ छं०॥२०७९ ॥

वीरमराय का चहुआन सेना के सम्मुख आकर सामंतों को प्रचारना ।

सुक्रवार अष्टमिय । निंद जाने न जुग्ग परि ॥
नौमि सनी टरि गइय । सामि संग्राम इंद्र जुरि ॥
हय दिष्षत षावास । पाइ गहि सत्त पछारिय ॥
रे समग्र मृढंग । जंग जुरि हौन जगारिय ॥
आयौ निसंक सामंत जहँ । कर कसंत आलस असन ॥
तित्तने सूर साहि सु समर । जनु अगस्ति दरिया ग्रसन ॥

छं० ॥ २०८० ॥

(१) मो.-गौभग्ग फनं फन फुन्न ।　　(२) मो.-चास ।

सुश्रो दीन एकं बिबे पंति वीयें। करे एक मेकं तिनं लोह लीयें॥
छं० ॥ २०७० ॥

उठै रुद्धि छिंछं झरै सार सारं। किधों मेघ बुट्टं प्रबालीन धारं॥
ढरै रंग जावक्क हेमं पनीरं। गहै अंत गिद्धी उडंती प्रकारं॥
मनों नभ्भ इंद्रं धनुक्कं पसारी। * * * छं० ॥ २०७१ ॥
छटक्की वरच्छी ठनंकंत घट्टं। पिजे गज्ज पेंचे चल्यौ साथ तट्टं॥
छं० ॥ २०७२ ॥

कहै चंद कव्वी उपम्माति कल्लं। पचै इंद्र वड्ढू कपी काम फल्लं॥
निकस्सौ सनेनं झरै रुद्धि धारं। ढरै रंग जावक्क हेमं पनारं॥
छं० ॥ २०७३ ॥

करै सीस हक्के धरं कंठ रज्जी। मना नट्ट काया पलट्टीति वज्जी॥
दुहुं दिस्सि रुंधे परें धाइ घट्टं। मनो रत्त डोरी चल्यौ नट्ट पट्टं॥
छं० ॥ २०७४ ॥

नहीं सुष्य दुष्यं न माया न काया। तहां सेवकं सामि रंकं न राया॥
घटक्की घटक्कीज भूछिद्र कारी। फिरी फेरि चहुआन पारस्स पारी॥
छं० ॥ २०७५ ॥

घुड़सवारों के घोड़ों की तेजी और जवानों की हस्तलाघवता।

कवित्त ॥ ठठुकि दिष्षि न्रप सेन। छच धारह जु छच तजि॥
तत्तो होइ तिहि बेर। तत्त माया सु मुदित तजि॥
तत्त गत्त सो हथ्थ। तेग तत्ती उभ्भारी॥
धात षंभ न्निघात। जानि झल्लरि झल्लारी॥
असवार सनाहत पष्परे। कटि पट्टन तुट्टै निबर॥
जाने कि सिषा तर गिर सिरह। बिहर बार करवत्त झर॥
छं० ॥ २०७६ ॥

माझी बर मरदान। मान मरदा मिलि तोरन॥
चाहुआन कमधज्ज। दिष्टि अरुहि रन जोरन॥
दुनै बीर रस धीर। धाइ लग्गे आभुष्यं॥
लोह वज्जि अवरत्त। जानि छुट्टै मद मुष्यं॥

सुत्री दीन एकं विवे पंति वीयें । करे एक मेकं तिनं लोह लीयें ॥
छं० ॥ २०७० ॥

उठै रुद्धि छिंछं झरै सार सारं । किधों मेघ वुट्टं प्रवालीन धारं ॥
ढरै रंग जावक्क हेमं पनीरं । गहै अंत गिद्धी उडंती प्रकारं ॥
मनों नम्भ इंद्रं धनुक्कं पसारी । * * * छं० ॥ २०७१ ॥
छटक्की वरच्छी ठनंकंत घट्टं । पिजे गज्ज षेंचे चल्यौ साथ तट्टं ॥
छं० ॥ २०७२ ॥

कहै चंद कव्वी उपस्माति कल्लं । पचै इंद्र वज्रू कपी काम फल्लं॥
निकस्सौ सनेनं झरै रुद्धि धारं । ढरै रंग जावक्क हेमं पनारं ॥
छं० ॥ २०७३ ॥

करै सीस हक्कं धरं कंठ रज्जी । मना नट्ट काया पलट्टीति वज्जी ॥
दुहुं दिस्सि रुंधे परें धाइ घट्टं । मनो रत्त डोरी चढ्यौ नट्ट पट्टं॥
छं० ॥ २०७४ ॥

नहीं सुष्प दुष्पं न माया न काया । तहां सेवकं सामि रंकं न राया॥
घटक्की षटक्कीज भूछिद्र कारी। फिरी फेरि चहुआन पारस्स पारी ॥
छं० ॥ २०७५ ॥

घुड़सवारों के घोड़ों की तेजी और जवानों की हस्तलाघवता ।

कवित्त ॥ ठठुकि दिष्षि न्रप सेन । छच धारह जु छच तजि ॥
तत्तो होइ तिहि वेर । तत्त माया सु मुदित तजि ॥
तत्त गत्त सो हथ्थ । तेग तत्ती उम्भारी ॥
धात षंभ न्रिघात । जानि झल्लरि झल्लारी ॥
असवार सनाहत पष्परे । कटि पट्टन तुट्टै निवर ॥
जाने कि सिषा तर गिर सिरह । विहर बार करवत्त भर ॥
छं० ॥ २०७६ ॥

माझी वर मरदान । मान मरदा मिलि तोरन ॥
चाहुआन कमधज्ज । दिट्ठि अरुहि रन जोरन ॥
दुनै वीर रस धीर । धाइ लग्गे आभुष्पं ॥
लोह वज्जि अवरत्त । जानि छुट्टै मद मुष्षं

त्रिघाइ घाइ बज्जे घनं। घन निसान सद्द दुरिय ॥
रुधि भग्ग घाइ आभंग अगि। घटि विवंग जोगां जुरिय
छं० ॥ २०७७ ॥

लोह धार बज्जंत। बज्जि षुरतार भार परि ॥
सेस सीस द्दल धसी। फेरि मुक्की कुंडलि करि ॥
करि कुंडलि अध सत्त। परे पिट्टं परिवारं ॥
[1]गौ मगि फुन्नि फुनि फुन्नि। फुन्नि किय चंद निनारं ॥
अहि सीस [2]वीस सत कलमले। रास रत्त मेदन दलं ॥
चिचकन चित्त विभ्रम्म भुअ। तिहित वेर अहि कलकालं ॥
छं० ॥ २०७८ ॥

जैचन्द के भाई वीरम राय का वर्णन।

बंधौ रा जैचंद। रा विजपाल सपुत्तह ॥
से रंभी उर जनम। नाम वीरम रावतह ॥
सहस तीस सिंधूत। ढाल नेजा सिंदूरिय ॥
सिंदुरीव सन्नाह। सेव वारुन संपूरिय ॥
दिन महिष एक भुंजै भषनि। विजय द्रग्ग अग्गै न्रपह ॥
जीते जुवान हिंदू तुरक। वाम अंग टोडर पगह ॥ छं०॥२०७९ ॥

वीरमराय का चहुआन सेना के सम्मुख आकर सामंतों को प्रचारना।

सुक्रवार अष्टमिय। निंद जाने न जुग्ग परि ॥
नौमि सनी टरि गइय। सामि संग्राम इंद्र जुरि ॥
हय दिष्षत षावास। षाइ गहि सत्त पछारिय ॥
रे समग्र मृढंग। जंग जुरि हौन अगारिय ॥
आयौ निसंक सामंत जहँ। कर कसंत आलस असन ॥
तित्तने हूर साहि सु समर। जनु अगस्ति दरिया ग्रसन ॥
छं० ॥ २०८० ॥

(१) मो.-गौभग्ग फनं फन फुन्न। (२) मो.-वास।

दूहा ॥ वसु कढ्ढिय कंषह धरिग। अब वसीठ परिहार ॥
उभय पान साहिग सनर। गय न्रप पंग सु सार ॥छं०॥२०८१॥
रा जैचंद नरिंद दल। दरसि भ्रत्त वल काज ॥
में भुज पंजर भिरि गहिग। इन में को प्रथिराज ॥ छं०॥२०८२॥
माया मागति देव जगि। हवि जिम हठिय प्रगट्टि ॥
तिन कट्टारिय कर धरिग। तिन घन सेन निघट्टि ॥ छं०॥२०८३॥

भ्रमरावली ॥ घन सैन निघट्टिय पंग दलं। रावत्त वंध्यौ तिहि वीर वलं॥
रुधि पान स वित्त कियौ समरं। घन देषि विमान फिरें अमरं॥
छं० ॥ २०८४ ॥
तिन पौरिस राज भये सवरं। दिसि च्यारि फवज्जति पंग करं॥
दसमी पह फट्टति एह जुरं। इन शुद्ध समावर जोग 'हरं ॥
कविचंद अनुक्रम वात धरं। छं० ॥ २०८५॥
* * * * । * छं०॥ २०८६ ॥

दसमी रविवार के प्रभात समय की सविस्तार कथा का आरंभ।

कवित्त ॥ कट्टिय वर विस्तऱ्यौ। धाइ लग्गौ धर राजन ॥
जहौं भीम जुवान। तीर तुंगह भै भाजन ॥
रा रन वीर पविच। सु पति रष्पिय परिहारह ॥
राज काज चहुआन। स्वामि संकेत अहारह ॥
जुध भिरत तिनहि हय गय विहत। गह गह कहैति संभरिय॥
निसि गइय एक सामंत परि। भयत पीत निस अंमरिय ॥
छं० ॥ २०८७ ॥

नवमी के रात्रि के युद्ध में दोनों दलों का थक जाना।

दूहा॥ निसि नौमिय वित्तिय विषम। उदित दिवस आदीत ॥
उठहि न कार पल्लव नयन। अस बड़ वित्त कवित्त ॥छं०॥२०८८॥
गहन आस गई पंग न्रप। जियन आस चहुआन ॥
सूर षंड मंडन 'रवन। उयौ सु रत्तौ भान॥ छं० ॥ २०८९ ॥

(१) ए. कृ. कौ.-जुरं। (२) ए. कृ. को.-बरन।

कनवज्ज भज्ज सयन । जे भर ढिल्लिय सार ॥
जे घर अंजुलि झल्लरित । उद्दित आदित वार ॥ छं० ॥ २०९० ॥

कनवज्जह झलकिय किरन । वर तजि न्नपति उरन्न ॥
जिहि गुन प्रगटित पिंड किय । तिहि उत्तरिग सुरन्न ॥छं०॥२०९१॥

राजत म्रित धर केलि सह । लाभ सु कित्तिय पूर ॥
जिहि गुन प्रगटित पिंड किय । तिहि [1]उत्तरि सुर मूर ॥छं॥२०९२॥

संयोगिता का पृथ्वीराज की ओर और पृथ्वीराज का संयोगिता की ओर देख कर सकुचित चित्त होना ।

देषि संजोगिय पिय सु वल । श्रम जल बूंद बदन्न ॥
रति पति अहित पवित्त मुष । जालि प्रजालि मरन्न ॥छं०॥२०९३॥

चंद्रायन ॥ घुरि निसान उगि भान कला कर मुद्दयौ ।
श्रम सामंत नरिंद छिनक धर धुक्कयौ ॥
सविष पंग दल दिष्ट सरोस निहारयौ ।
अंचल अंमृत सयोगि रेन मिस झारयौ ॥ छं०॥२०९४ ॥

भ्रमरावली ॥ फिरि देषिय राज रवन्न मुषं । अतिवंत दुषी दुष मानि सुषं ।
भुव वंकम रंकम राज मनं । इष तंनि निहंति समोह घनं ॥
छं० ॥ २०९५ ॥

गुन कट्टनि कट्टति तात कुलं । किय म्रत्य महावर बीर बरं ॥
अभिराम विराम निमष्य करं । उलरंपि न पिट्ठन दिट्ठ हरं ॥
छं० ॥ २०९६ ॥

इहि श्रीय सु पीय सु कीय कुलं । मुष जंपिन कंपिन काम कुलं ॥
* * * * । * छं० ॥ २०९७ ॥

चारों ओर घोर शोर होने पर भी पृथ्वीराज का आलस त्याग कर न उठना ।

दूहा ॥ सुधर विलंबन घरिय [1]पर । रहि टठ्ठिय घटि तीन ॥

(१) ए. कृ. को.-उतरिग ।　　(१) ए. कृ. को.-घर ।

उठहि न अलसित कर सु वर। कछु मन मोह प्रवीन ॥
छं० ॥ २०९८ ॥

उत रुप चंपिय रठ्ठ वर। इत सुप संभरि वार ॥
चलत राइ फिरि फिरि परिय। उद्दित आदित वार ॥छं०॥२०९९

सब सामंतों का राजा की रक्षा के लिये सलाह करके कन्ह से कहना।

करि विचार सामंत सह। न्त्रिप तिहि रप्पत काज ॥
कहै अचल सुन सूर रहौ। करहु चलन कौ साज ॥ छं० ॥२१००॥
तब सामँत अचलेस सौ। बार बीय हम कथ्य ॥
अब तुम कन्ह कविंद मिलि। कहौ चलैं न्त्रप सथ्य ॥छं०॥२१०१
कहै अचल उरगंत रवि। बीच सुभर अप्पान ॥
चलै राज जीवंत ग्रिह। कहिय अचल सम कान्ह ॥ छं ॥ २१०२

कन्ह का कवि को समझाना कि अब भी दिल्ली चलने में कुशल है।

कवित्त ॥ कहै कन्ह चहुआन। अहो बरदाइ चंद वर ॥
जुरत जुद्ध दिन बीय। भये अनभुत्त उभै भर ॥
एक ऊन पंचास। परे सामंत सूर धर ॥
पंग राव घन सेन। तुट्टि सक मीर धीर थर ॥
थक्के सु हाथ सुब्भर नयन। उठ्ठे न करह विस्रम विरम ॥
पहु चलिग मग्ग रष्षै सुभर। कियौ राज अदभुत्त क्रम ॥
छं० ॥ २१०३ ॥

हमौ जानि कविचंद। कहै प्रथिराज राज मुनि ॥
आदि क्रम्म तें करें। तास को सकै गुनिक गुनि ॥
सेस जीह संग्रहै। पार गुन तोहि न पावै ॥
तें जु करिय पहुपंग। मिलिय आरनि थर सावै ॥
नन कियौ न को करिहै न को। जै जै जै लछी तरुनि ॥
ग्रिह जाइ अप्प आनंद करि। बढ़ै कित्ति सब लोग पुनि ॥
छं० ॥ २१०४ ॥

कविचन्द का पृथ्वीराज के घोड़े की बाग पकड़ कर दिल्ली की राह लेना ।

दूहा ॥ इह कहि सु कवि समीप गय । गहिय वग्ग हैराज ॥
चल्यौ पंचि ढिल्ली सु रह । सुभर सु मन्यौ काज ॥छं०॥२१०५ ॥
प्रलय जलह जल हर चलिय । वलि वंधन वलि वार ॥
रथ चक्कां हरि करि करिय । परि प्रब्बत पथ्थार ॥ छं० ॥२१०६ ॥
उदय तरुनि नट्ठिग तिमिर । सजि सामंत समूह ॥
न्रिप अग्गै वद्दै सु इम । चलहु स्वामि करि क्रूह ॥ छं०॥२१०७॥

पृथ्वीराज प्रति कविचन्द का वचन ।

कवित्त *॥ वंस प्रलंब अरोपि । हंन घन अंदर कट्टिय ॥
वरत पुरातन बंधि । धरनि द्रिढ लग्गि न षुंटिय ॥
करि साहस चढि नट्ट । द्रुनी देषत कोतूहल ॥
घंटा रव गल करत । महिष उभौ जम संतल ॥
उत्तरन कुसल करतार कर । श्रिया लाभ सो अलग रहि ॥
ढिल्लीव नाथ ढीलन करौ । लगौ मग्ग कविचंद कहि ॥
छं० ॥ २१०८॥

राजा पृथ्वीराज का चलने पर सम्मत होना ।

दूहा ॥ चलन मानि चहुआन न्रप । बज्जे पंग निसान ॥
निमि जु इंद दुहुं दल भयौ । विद्य सहित बिन भान ॥छं०२१०९॥
हय गय करि अग्गों न्रपति । षिष्फि चंपे प्रथिराज ॥
मो अग्गैं आजुहि रहैं । टरिग दीह बिय साज ॥छं०॥२११० ॥

सामंतों का व्यूह बांधना धाराधिपति का रास्ता करना और तिरछे रूख पर चौहान का आगे बढ़ना ।

कवित्त ॥ वर द्वादस भारथ्थ । राज परि भीर वाम दिसि ॥
सह दच्छिन न्रप सथ्थ । वीर वर बद्दी बीर आंस ॥

---

* यह छन्द मो.-प्रति में नहीं है ।

बर जोगिनि पुर उट्टै। सीस धर हर बर [1]जुट्टै ॥
मनों जैत प्रभ तत्त। मेघ धारा जल बुट्टै ॥
तिरछौ तरि उप्परि न्रपति। दइ दुवाह धारह धनी ॥
जाने कि अग्गि जज्जुर बनह। बंस जाल फट्टै घनी ॥ छं० ॥ २१११ ॥

शौचादि से निश्चित हो कर दो घड़ी दिन चढ़े जैचन्द का पसर करना।

दूहा ॥ [2]घटी उभै रवि चढ़िय बर। स्नान दान गुर धार ॥
पंग फेरि घेरिय सु घन। भर बिंटे सिर भार ॥ छं० ॥ २११२ ॥

वीर योद्धाओं का उत्साह।

रसावला ॥ सांमि बिंटे रनं, सूर छोहं घनं। वथ्थ मल्लं जनं, धार कुट्टै मनं ॥
छं० ॥ २११३ ॥
सूर चट्टै मनं, लोह तत्ती तनं। सीत बित्तं जनं, बिट्टु रेनं मनं ॥
छं० ॥ २११४ ॥
चित्त जोतिप्पनं, सो मनं जित्तनं। तेग बंकी झनं, बज्जि असी तनं ॥
छं० ॥ २११५ ॥
सूर कीनी रनं, भारथं नंसनं। ध्रंम सासिप्पनं, जीव तुच्छे गिनं ॥
छं० ॥ २११६ ॥
काल भूभं ननं, जम्म छुट्टे मनं। रज्ज कोटं भटं, रुद्धि घुम्मै [3]घटं ॥
छं० ॥ २११७ ॥
सूरं चित्तं करं, दिष्षियं तुंमरं। स्वामि चल्लै घरं, जुद्ध झल्लं भरं ॥
छं० ॥ २११८ ॥

[4]सामंतों की स्वामि भक्तिमय विषम वीरता।

दूहा ॥ परिग पंच पंचे सु भर। भ्रितनि परिग अत पंच ॥
कूह जूह लै लै करिय। न्रपति न लग्गी अंच ॥ छं० ॥ २११९ ॥
समर स पुट्ठौ समर परि। सामि सुमति चल तेन ॥
सामंतन रुक्यौ सु दल। लीज [4]मुष्ष मुह जेन ॥ छं० ॥ २१२० ॥

(१) मो.-झट्टे। (२) मो.-घरी। (३) मो.-मल्ले। (४) ए. कृ. को.-मुठ।

परिग सूर सोरह सु भर । आदित जुद्द [1]सरीस ॥
वीर पंग फेरिय गहन । करि प्रतंग दिव ईस ॥ छं० ॥ २१२१ ॥

पंगराज का अपनी सेना को पृथ्वीराज को पकड़ लेने की आज्ञा देना ।

कहै पंगुरौ सु भर भर । आज सु दिन तुम काम ॥
गहौ चंपि चहुआन कौं । ज्यों जग रष्षै नाम ॥ छं० ॥ २१२२ ॥
दूहा गाहा सरसतिय । न्रप प्रसाद धन सघ्घ ॥
दुरजन ग्रह एते तुरत । ग्रहै न पच्छै हथ्थ ॥ छं० ॥ २१२३ ॥

पंगराज की प्रतिज्ञा सुन कर सैनिकों का कुपित होना ।

इह प्रतंग पहु पंग सुनि । भ्रित कोपिय भ्रम काज ॥
परे चंपि चहुआन पर । जानि कुलिग्गन बाज ॥ छं० ॥ २१२४ ॥
जब देषे सामंत हय । तब लग्यौ घन ताप ॥
जानै विष ज्वाला तपति । कै प्रलै काल मनि आप ॥छं०॥२१२५॥
जितै भ्रंम लच्छी लहै । मरन लहै सुर लोक ॥
दोऊ सु परि भ्रत सुझरै । [2]परे धाइ धर तोक ॥ छं० ॥ २१२६ ॥

पंग सेना का धावा करना तुमुल युद्ध होना और वीरसिंह राय का मारा जाना ।

भुजंगी ॥ पुरे धाय वीरं रसं पुच्च दझ्झै । क्रमं पंच धक्के चहुव्वान भज्जे ॥
पर्‍यौ पंग पच्छै जुटेढ़ी पठाढौ । दिसं पुब्ब मारूफ बर बंक काढ़ी॥
छं० ॥ २१२७ ॥
चहूआन सूरं असी बंक भारी । मनों पारधी बिंट वाराह पारी॥
महं माह सूरं प्रचारे मबाहं । [3]तबै बीर बीरं उपम्माति चाहं ॥
छं० ॥ २१२८ ॥
षिन्नै लाज मुक्कै चियं पीय होरी । मुरे लज्ज बंधं दोऊ सेन जोरी
वहै पग्ग मग्गं सु वग्गं निनारे । तिरै जोध माथा सरे सार पारे ॥
छं० ॥ २१२९ ॥

(१) ए. कृ. को.-सरीर । (२) मो.-परत । (३) ए. कृ. को.-तकै ।

बहै पग्ग तुट्टै उड़ै टूक नारे। मनो टुट्टही राति आकास तारे।
सहै हथ्थ ऽबानं फरी टोप सथ्थं। किधौं सूरिजं भूलियं राह हथ्थं।
छं० ॥ २१३० ॥

डरै काइरं चिंति मुष्पं दुरायं। मनो प्रात दीपं बिधं कान्नि गायं॥
तुछं फुट्टि संगं सनाहं न कूरं। मनौं जार कट्टै मुषंमीनं सूरं॥
छं० ॥ २१३१ ॥

मचै घाइ अघ्घाइ छुट्टै हवाई। मनौं [2]टीम ज्यौं डंमरू पंति लाई॥
घरी अद्ध आवत्त बज्जे बिषम्मं। पऱ्यौ राव वरसिंघ कित्तीव जम्मं
छं० ॥ २१३२ ॥

पंगदल की सर्प से और पृथ्वीराज की गरुड़ से उपमा वर्णन।

कवित्त ॥ पुंग धार पहु पंग। राग सिंधू बज्जाइय ॥
सार मंच संधयौ। बीर आलाप विघाइय ॥
सेस सुनिव सामंत। कंन मंडत तिहि रग्गा ॥
फन मिसि असिवर धुनिय। जीह कड्ढी पग लग्गा ॥
गारुरी बीर कमधजक सर। जंच मंच हौनं गनिय ॥
मनि मध्य मेर डस्यो विषम। सिंगि स्याल गज्जर मनिय ॥
छं० ॥ २१३३ ॥

दूहा ॥ सांमि ध्रंम रत्ते सु भर। चढे क्रोध विष [3]झाल ॥
दभ्भै कायर दूर टरि। मिले गरूर मुछाल ॥ छं० ॥ २१३४ ॥

पंग सेना के बीच में से पृथ्वीराज के निकल जाने की प्रसंशा॥

कुंडलिया * ॥ बार पारि पहु पंग दल। इम निकसिय चहुआन ॥
छाया राषिसनी ग्रसत। पिट्ठ फोरि हनुमान ॥
पिट्ठ फोरि हनुमान। गौन सै साठि कोस मुह ॥
उदधि मद्धि बिस्तारि। [4]गिलन अंतरिष वहंतह ॥
ररंकार सबद उच्चार करि। ब्रहमंड कि भिंदि मुनि गयौ ॥
कह्हि चंद ध्यान धारत उअर। सागर पारंगत भयौ ॥ छं० ॥ २१३५ ॥

(१) मो.-मैन। (२) ए. कृ. को. ईम। (३) ए. कृ. को.-ज्वाल।
(४) ए.-मिलन। * यह कुंडलिया मो. प्रति में नहीं है।

पुट्ठि वुट्ठि झाला हलह । चलि न सकै चहुआन ॥
सामंतनि करि कोट[1] अउ । यों निकसे राजान ॥ छं० ॥ २१३६ ॥

दूहा ॥ जे छची अट्ठे अरे । ते झुक्झै असियान ॥
मानों वुंद समुंद में । परै तत्त पाषान ॥ छं० ॥ २१३७ ॥

पंग सेना का पृथ्वीराज को रोकना और सामंतों का निकल चलने की चेष्टा करना ।

सुभर पंग पिष्षे परत । परत करिय द्रिग रत्त ॥
रवि उद्दित चढि सत्त घटि । तपित तेज आदित्त ॥ छं०॥ २१३८ ॥

त्रिभंगी ॥ हग रत्ते सूरं, पंग करूरं, वजि रन तूरं, फिरि पंती ॥
रुष्पे चहुआनं, पंग रिसानं, द्रोन समानं, गुर कंती ॥
उप वज्जिय कंती, धर रंग रत्ती, बीर समत्ती, अलि बीरं ॥
वर वेन करूरं, हुअ नहि सूरं, रोस डरूरं, छुटि तीरं॥छं०॥२१३९॥

असि कट्ठी नीवं, ज्यों ससि बीवं, भै [2]क्षति भीवं, अनसंकं ।
सब ओडन नष्पे, रज रन रष्पे, अरि घर भष्पे, भरि अंकं ॥
वर वर धर मीनं, तन फल छीनं, ज्यौं जल हीनं, फिरि मीनं ॥
हूलरो है हल्लैं, करि किन डुल्लैं, बीर सलल्लैं, तन छीनं ।।छं०॥२१४०॥

अंती वर कंती, पें उर झंती, में मत पंती, विच्छूरं ।
उप्पम कवि पूरं, जलंगं भूरं, [3]गज्ज हिलूरं, जल घूरं ॥
झुझझे सिर तुट्टं, षग आहुट्टं, उप्पम घट्टं, कविआनं ।
तुट्टे जिम तारं, षह भग झारं, हूत[4] सबीरं, सम जानं ॥
छं० ॥ २१४१ ॥

भै वीर विरुद्धं, जटि आरुद्धं, मंति सु लद्धं, मपि सेनं ॥
[5]लुथि लुथि आहुट्टिय, बंधन कुट्टिय, कित्ति स लुट्टिय, कबि तेनं॥
छं० ॥ २१४२ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-अर ।　　(२) ए. भित्त, को. कृ.-भति ।
(३) ए. कृ. को.-गज्जहि तूरं ।　　(४) ए. कृ. को.-हू तसवीरं ।
(५) मो -लुथि लोथि ।

एक पहर दिन चढ़ आने पर इधर से बलिभद्र के भाई उधर से मीरां मर्द का युद्ध करना।

कवित्त ॥ बजिग पहर इक अहर। हथ्थ थक्क कमान वहि ॥
हैगै नरभर डररि। अमिज थक्कए पग्ग सह ॥
बीय अरी चित लरत। कोउ मानै नन थक्कै ॥
जोगि नींद उग्यौ प्रमान। कूह चतुरंग जटक्कै ॥
है नंपि बंध बलिभद्र कों। पज्जूनी अग्गै मयन ॥
उत निक्करे मीर मीरां मरद। ढुंढारी सम्हौ बयन ॥
छं० ॥ २१४३ ॥

बलिभद्र के भाई का मारा जाना।

दुनें मिले मरदान। कथ्थ पै दीह न मुक्कै ॥
लज्ज मंस बिहु बीच। बिंब केसर बर बक्कै ॥
कट्टारी बर कढ्ढि। मेछ बाहिय पहु लग्गिय ॥
फुट्टि सीस बरकरी। बांम भग्गा सह अग्गिय ॥
बर मुच्छि घाइ काच ग्रह करे। कट्टारिय गहि दंत कढि ॥
तन फेरि अंग झंझर कियौ। को दिव बंध कबंध चढ़ि ॥
छं० ॥ २१४४ ॥

दो पहर तक युद्ध करके बलिभद्र का मारा जाना।

करि उप्परं बर बीर। बली बलभद्र सु धाइय ॥
दल दल मुष मुष पंग। भई द्रप्पन मुष झाइय ॥
है [1]अंठुन दल पंग। बीर अवरत्त हलाइय ॥
समर अमर कोतिग्ग। ईस नारद्द रिझाइय ॥
झक झोरि झोरि दल मोरि अरि। बिरह चीर उट्टाय करि ॥
सामंत पंच पंचह मिलिग। टरि न टरै भर बिप्प हर ॥
छं० ॥ २१४५ ॥

(१) ए. कृ. को.-अंठुलि।

हरसिंह का हथियार करना और पंग सेना का छिन्न भिन्न होना ।

भुजंगी॥ चँपै चाइ चौहान हरसिंघ नायौ। जिसे सेंन में सिंघ गज जूथ पायौ॥
करै कूह गज जूह सनमुष्ष धायौ। तबै पंग दल समटि चिहुं कोद छायौ॥
छं० ॥ २१४६ ॥

पंगराज का दो मीर सरदारों को पांच हजार सेना के साथ धावा करने की आज्ञा देना ।

कवित्त ॥ वली अली द्वै मीर । उभै बंधव वर बीरह ॥
छत्तिय हथ्थ दुसल्ल । मल्ल विद्या साधक सह ॥
षग्ग मग्ग बिन रेह । जुद्ध जानें निरगम गम ॥
डंडा युद्ध छत्तीस । बट्ट पोइक पाइक सम ॥
भुज लहै कोरि उभभै अभय । स्वामि ध्रंम रत्तं सु रह ॥
अनहित्त पंग लज्जी अदब । दल पगार बिर दैत गह ॥
छं० ॥ २१४७ ॥
करिय क्रपा पहुपंग । सहस पंचह दिय मीरह ॥
कुल विषत्त जुध जुत्त । लहै बर लाज अभीरह ॥
स्याम चमर पष्षर सु । स्याम गज गाह सुनित्तह ॥
झंडे स्याम सु माम । पछय पय पुलै न षित्तह ॥
अग्या सु मंगि पहु पंग पहि । आए मीर पठान पुर ॥
आदित्त जुद्ध हरि उग्ग मनि । आए आतुर सज्जि अरि ॥
छं० ॥ २१४८ ॥

मीरों का आज्ञा शिरोधार्य्य करके धावा करना ।

दूहा ॥ मंग्यौ आयस नंमि सिर । कहै पंग करि पान ॥
जीय सु षंडो षत्त पहु । गहो वहो चहुआन ॥ छं० ॥ २१४९ ॥

मीर मंडली से हरसिंह का युद्ध। पहाड़राय और हरिसिंह का मारा जाना ।

भुजंगी ॥ तबै उप्परी फौज सा राज मीरं । सहस्सं च पंचं बरं बंधि नीरं॥

किलक्के किलक्की हके आसुरानं। चवै दीन महमूंद महमूंद मानं॥
छं० ॥ २१५०॥

¹वली मीर अल्ली दिसा अप्प भष्षे। तनं अज्ज मांई निजं कज्ज रष्षै॥
करौं पिंड पंड²निजं स्वामि काजै। गहै चाहुआनं भरं झूझ भाजै॥
छं० ॥ २१५१॥

हके मीर अप्पान लै अप्प नासं। तिनं साप भष्षै ³कहीकंक कामं॥
लही फौज आवंतसा चाहुआनं। हरं सिंघ सिंघं गज्यौ जुद्ध जानं॥
छं० ॥ २१५२॥

नयौ सीस प्रथिराज रजि वीर रसं। फिर्‌यौ संमरे इष्ट अप्पं उकसं॥
चले वीर किलकार साथे सु गाजै। करं अप्प आवद्ध मावद्ध साजै॥
छं० ॥ २१५३॥

मिल्यौ जुद्ध मंझी समं आइ मीरं। झरं आवधं वज्जियं धार धीरं॥
मिले मुष्प एकं अनेकं सु धायं। करक्कै सु सीसं परै पूर घायं॥
छं० ॥ २१५४॥

परैं मीर एकं अनेकं सु षंडं। कलं कूह वज्जी रूरं मुंड रुंडं॥
कलं भूचरं षेचरं सा करूरं। नचै जंध हीनं कमद्धं दु सूरं॥
छं० ॥ २१५५॥

रमे तेक चहुआन रस रास तारं। फिरै मंडली जेम षल न्रत्य कारं॥
उभै मीर बल्ली अली संघ लष्षै। क्रमे आतपं तप्पि जल जाम ⁴भष्षै॥
छं० ॥ २१५५६॥

वली आय॰ प्राहार कीनौ जु जामं। उरं मग्गि तिष्षी निकस्सी परामं॥
त्रलै सेन सम्मं हयौ षग्ग झारे। हयौ रोह मां तूं भिरें मच्छ कारे॥
छं० ॥ २१५७॥

बली सीस तुट्यौ षगं षंभ थोरं। मनों देवलं इंदु तुट्टौ सु तारं॥
अली आय ⁵बामं हयौ षग्ग धारं। तुट्यौ सीस उड्यौ षगं भूमि पारं॥
छं० ॥ २१५८॥

---

(१) मो.-चली। (२) ए. कृ. को.-तनं (३) ए. कृ. को-कहा।
(४) ए. कृ. को.-धष्षे। (५) ए. कृ. को. बाहं।

गह्यौ तांम[१] अल्ली उरं अप्प चंप्यौ। गयौ अंस उड्डी तिनं तांम[२] लिप्यौ॥
भग्यौ सेन मीरं भरक्कै धु धामं। सयं सत्त ताई परे पंति तामं॥
छं० ॥ २१५९॥
घनं घाइ अघ्घाय पऱ्यौ सु पानं।पऱ्यौ सिंघ हरसिंघ करि जीति पानं॥
छं० ॥ २१६० ॥

नरसिंह का अकेले पंग सेना को रोकना और पृथ्वीराज का चार कोस निकल जाना।

कवित्त ॥ करि जुहार[३]नरसिंघ। नयौ चहुआन पहिल्लौ ॥
बरी अनी सावरी। लष्प सों भिल्यौ इकल्लौ ॥
आगम काय हुअ फिरै। धरनि षुर सों षुर षुंदहि ॥
एक लष्प सों भिरै। एक लष्पह रन रुंधहि ॥
असि घाइ झाइ बज्जै[४]विषम। जै जै जै आयास भौ ॥
इम जंपै चंद बरद्दिया। च्यारि कोस चहुआन गौ ॥छं०॥२१६१॥

नरसिंह के मरते ही पंग सेना का पुनःचौहान को आघेरना।

दूहा ॥ परत धरनि नरसिंघ कहुं। रुकि गयंद दल अब्ब ॥
मनहु जुद्ध जोगिन पुरह। तिन मुक्कयौ सब[५]अब्ब ॥छं०॥२१६२॥
फुनि प्रथिराज सु पच्छ दल। बर रट्ठौर नरेस ॥
[६]सिर सरोज चहुआन कै। भवर सस्त्र सम भेष ॥ छं० ॥२१६३॥

इस तरफ से कनक राय बड़ गुज्जर का मोरचा रोकना।

कवित्त ॥ भौ आयस प्रथिराज। कनक नायौ बड़ गुज्जर ॥
हम तुम दुस्सह मिलन। स्वामि दुज्जै सु अप्प घर ॥
हों रवि मंडल भेदि। जीव लगि सत्त न[७]षंडो ॥
षंड षंड करि रुंड। मुंड हर हार सु मंडो ॥

---

(१) ए. कृ. को.-अली।　(२) ए. कृ. को.-लेयौ।
(३) ए. कृ. को.-हरसिंह, परंतु हरसिंह के युद्ध का वर्णन पूर्व छंद में हो चुका है।
(४) ए. कृ को.-सकल। (५) ए. कृ. को.-ग्रव्व। (६) मो.-सिर सराज।
(७) ए. कृ. को. छंडों।

इन वंस भग्गि जानै न को। हों पति 'कंप अलुभभयो ॥
इम जंपै चंद वरद्दिया। कोस पट्ट चहुआन गो ॥ छं० ॥ २१६४॥

वीरमराय का बल पराक्रम वर्णन।

सुअन धाय जैचंद। नाम वीरम वीरम वर ॥
गरुअ लाज गुन भार। जुद्ध जुति जान ग्यान गुर ॥
वंधव सम जैचंद। प्रीति लिप्पवै प्रेम गुन ॥
अगि आदर न्रप करै। गान उत्तंग अंग मन ॥
सह सत्त सत्त सेना सु तस। वरन रत्त वाना धरै ॥
जहं जहं सु राज काजह समथ। तहं तहं परि अग्गें लरै ॥
छं० ॥ २१६५ ॥

दूहा ॥ ऐरावत वीरम पर्यौ। औ वीरम सुअ धाइ ॥
सम प्राक्रम पंगुर परपि। दियै सु अग्या ताइ ॥ छं० ॥ २१६६ ॥

उक्त मीर वंदों को मरा हुआ देख कर जैचन्द का वीरम राय को आज्ञा देना।

परे मीर देषे उभै। दिय अग्या तमि पंग ॥
गहौ जाइ चहुआन कौं। हनौ सुभर सब जंग ॥ छं० ॥ २१६७

वीरम राय का धावा करना वीरमराय और बड़ गुज्जर दोनों का मारा जाना।

भुजंगी ॥ सुने आयसं बीर पंगं नरिंदं। चल्यौ नाइ सीसं मनों जुद्ध इंदं॥
सिरं सज्जि गेनं रची फौज तीरं। कजं जुद्ध ईसं रज्यौ रस्स बीरं॥
छं० ॥ २१६८ ॥

(१)बजी भेरि भंकार धुंके निसानं। धरा बोम गज्जे सजे देव दानं॥
बड़ं गुज्जरं देषि आवंत फौजं। सनंमुष्प क्रम्यौ दलं संक नौजं ॥
छं० ॥ २१६९ ॥

जपे इष्ट सा उच्चरे बीर मंचं। गरै बंधियं सून सम्मीर जंचं॥
किलक्के सु बीरं गहक्के सु धीरं। कलं कंपियं कातरं भीत भीरं॥
छं०॥२१७०॥

(१) ए. कृ. को.-पंक।

परिग सूर सोरह सु भर। आदित जुद्ध [1]सरीस॥
वीर पंग फेरिय गहन। करि प्रतंग दिव ईस॥ छं० ॥ २१२१ ॥

पंगराज का अपनी सेना को पृथ्वीराज को पकड़ लेने की आज्ञा देना।

कहै पंगुरौ सु भर भर। आज सु दिन तुम काम॥
गहौ चंपि चहुआन कौं। ज्यों जग रष्षै नाम॥ छं० ॥ २१२२ ॥
दूहा गाहा सरसतिय। न्नप प्रसाद धन सथ्थ॥
दुरजन ग्रह एते तुरत। ग्रहै न पच्छै हथ्थ॥ छं० ॥ २१२३ ॥

पंगराज की प्रतिज्ञा सुन कर सैनिकों का कुपित होना।

इह प्रतंग पहु पंग सुनि। भ्रित कोपिय भ्रम काज॥
परे चंपि चहुआन पर। जानि कुलिग्गन बाज॥ छं०॥ २१२४ ॥
जब देषे सामंत हथ। तब लग्यौ घन ताप॥
जानै विष ज्वाला तपति। कै प्रलै काल मनि आप॥छं०॥२१२५॥
जितै ध्रंम लच्छी लहै। मरन लहै सुर लोक॥
दोऊ सु परि भ्रत सुब्बरै। [2]परे धाइ धर तोक॥ छं० ॥ २१२६ ॥

पंग सेना का धावा करना तुमुल युद्ध होना और वीरसिंह राय का मारा जाना।

भुजंगी॥ पुरे धाय बीरं रसं पुच्च दभ्भै। क्रमं पंच धक्के चहुव्वान भज्जे॥
पर्‍यौ पंग पच्छै जुटेढ़ी पठाढी। दिसं पुब्ब मारूफ बर बंक काढ़ी॥
छं० ॥ २१२७ ॥
चहूआन स्रूरं असी बंक भारी। मनों पारधी बिंट वाराह पारी॥
महं माह स्रूरं प्रचारे सबाहं। [3]तबै बीर बीरं उपम्भाति चाहं॥
छं० ॥ २१२८ ॥
षिन्नै लाज मुक्कै चियं पीय होरी। मुरे लज्ज बंधं दोऊ सेन जोरी
वहै पग्ग मग्गं सु वग्गं निनारे। तिरै जोध्र माया सरे सार पारे॥
छं० ॥ २१२९ ॥

(१) ए. कृ. को.-सरीर। (२) मो.-परत। (३) ए. कृ. को.-तकै।

बहै पग्ग तुट्टै उड़ै टूक नारे। मनो टुट्टही राति आकास तारे॥
सहै हथ्थ ज्वानं फुरी टोप सथ्थं। किधों सूरिजं भूलियं राह हथ्थं॥
छं० ॥ २१३० ॥

डरै काइरं चिंति सुष्पं दुरायं। मनो प्रात दीपं विधं कव्वि गायं॥
तुछं फुट्टि संगं सनाहं न क्रूरं। मनों जार कट्टै सुपंमीनं[1] सूरं॥
छं० ॥ २१३१ ॥

सचै घाइ अघ्घाइ छुट्टै हवाई। मनों [2]टीम ज्यों डंभरू पंति लाई॥
घरी अद्ध आवत्त वज्जं विषम्मं। पऱ्यौ राव वरसिंघ कित्तीव जम्मं॥
छं० ॥ २१३२ ॥

पंगदल की सर्प से और पृथ्वीराज की गरुड़ से उपमा वर्णन।

कवित्त ॥ पुंग धार पहु पंग। राग सिंधू वज्जाइय॥
सार मंच संधयौ। वीर आलाप विघाइय॥
सेस सुनिव सामंत। कंन मंडत तिहि रग्गा॥
फन मिसि असिवर धुनिय। जीह कढ्ढी पग लग्गा॥
गारुरी बीर कमधजक सर। जंच मंत्र हीनं गनिय॥
मनि मध्य मेर डस्यो विषम। सिंगि स्याल गज्जर मनिय॥
छं० ॥ २१३३ ॥

दूहा ॥ सांमि भ्रंम रत्ते सु भर। चढे क्रोध विष [3]झाल॥
दभ्भक्कै कायर दूर टरि। मिले गरूर मुंछाल॥ छं० ॥ २१३४ ॥

पंग सेना के बीच में से पृथ्वीराज के निकल जाने की प्रसंशा॥

कुंडलिया * ॥ बार पारि पहु पंग दल। इम निकसिय चहुआन॥
छाया राषिसनी ग्रसत। पिट्ठ फोरि हनुमान॥
पिट्ठ फोरि हनुमान। गौन सै साठि कोस मुह॥
उदधि मद्धि बिस्तारि। [4]गिलन अंतरिष वहंतह॥
ररंकार सबद उच्चार करि। ब्रहमंड कि भिदि मुनि गयौ॥
कहि चंद ध्यान भारत उअर। सागर पारंगत भयौ॥ छं० ॥ २१३५ ॥

---

(१) मो.-मैंन॥ (२) ए. कृ. को. ईम। (३) ए. कृ. को.-ज्वाल।
(४) ए.-मिलन। * यह कुंडलिया मो. प्राति मे नहीं है।

पुट्टि वुट्टि झाला हलह । चलि न सकै चहुआन ॥
सामंतनि करि कोट[1] अउ । यों निकसे राजान ॥ छं० ॥ २१३६ ॥

दूहा ॥ जे छत्री अट्टे अरे । ते झुझझै असिथान ॥
मानों बुंद समुंद में । परै तत्त पाषान ॥ छं० ॥ २१३७ ॥

पंग सेना का पृथ्वीराज को रोकना और सामंतों का निकल चलने की चेष्टा करना ।

सुभर पंग पिष्षे परत । परत करिय द्रिग रत्त ॥
रवि उद्दित चढि सत्त घटि । तपित तेज आदित्त ॥ छं०॥ २१३८ ॥

त्रिभंगी ॥ द्रग रत्ते सूरं, पंग करूरं, बजि रन तूरं, फिरि पंती ॥
रुष्पे चहुआनं, पंग रिसानं, द्रोन समानं, गुर कंती ॥
उप बज्जिय कंती, धर रंग रत्ती, बीर समत्ती, अलि बीरं ॥
वर बेन करूरं, हुअ नहि सूरं, रोस डरूरं, छुटि तीरं॥छं०॥२१३९।

असि कट्टी नीवं, ज्यों ससि बीवं, भै [2]भति भीवं, अनसंकं ।
सब ओडन नष्षे, रज रन रष्षे, अरि घर भष्षे, भरि अंकं ॥
वर वर धर मीनं, तन फल छीनं, ज्यौं जल हीनं, फिरि मीनं ॥
हुलरो है हल्लैं, करि किन डुल्लैं, बीर सलल्लैं, तन छीनं ॥छं०॥२१४०॥

अंती बर कंती, पें उर झंती, में मत पंती, विच्छूरं ।
उप्पम कवि पूरं, जलंगं भूरं, [3]गज्ज हिलूरं, जल घूरं ॥
झुझझे सिर तुट्टं, षग आहुट्टं, उप्पम घट्टं, कविआनं ।
तुट्टे जिम तारं, षह भग झारं, हूत[4] सबीरं, सम जानं ॥
छं० ॥ २१४१ ॥

भै बीर विरुद्धं, जटि आरुद्धं, मंति सु लद्धं, मपि सेनं ॥
[5]लुथि लुथि आहुट्टिय, बंधन कुट्टिय, किति स लुट्टिय, कवि तेनं॥
छं० ॥ २१४२ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-अर ।　　(२) ए. भित्त, को. कृ.-भति ।
(३) ए. कृ. को.-गज्जहि तूरं ।　　(४) ए. कृ. को.-हू तसबीरं ।
(५) मो -लुथि लोथि ।

एक पहर दिन चढ़ आने पर इधर से बलिभद्र के भाई उधर से मीरां मर्द का युद्ध करना।

कवित्त ॥ बजिग पहर इक अहर। हथ्थ थक्क कमान वहि ॥
हैगै नरभर डररि। अमिज थक्कए पग्ग सह ॥
वीय अरी चित लरत। कोउ मानै नन थक्कै ॥
जोगि नींद उग्यौ प्रमान। कूह चतुरंग जटक्कै ॥
है नंपि बंध बलिभद्र कों। पज्जूनी अग्गै सयन ॥
उत निक्करे मीर मीरां मरद। ढुंढारी सम्हौ वयन ॥
छं० ॥ २१४३ ॥

बलिभद्र के भाई का मारा जाना।

दुनें मिले मरदान। कध्थ पै दीह न मुक्कै ॥
लज्ज मंस बिहु बीच। बिंब केमर वर वक्कै ॥
कट्टारी बर कढ्ढि। मेछ बाहिय पहु लग्गिय ॥
फुट्टि सीस बरकरी। बांम भग्गा सह अग्गिय ॥
बर मुच्छि घाइ कच ग्रह करे। कट्टारिय गहि दंत कढि ॥
तन फेरि अंग झंझर कियौ। को दिव बंध कबंध चढ़ि ॥
छं० ॥ २१४४ ॥

दो पहर तक युद्ध करके बलिभद्र का मारा जाना।

करि उप्पर बर बीर। बली बलभद्र सु धाइय ॥
दल हल मुष मुष पंग। भई द्रप्पन मुष झाइय ॥
है [1]अंठुन दल पंग। वीर अवरत्त हलाइय ॥
समर अमर कोतिग्ग। ईस नारद रिझाइय ॥
झक झोरि झोरि दल मोरि अरि। बिरह चीर उट्ठाय करि ॥
सामंत पंच पंचह मिलिग। टरि न टरै भर बिप्प हर ॥
छं० ॥ २१४५ ॥

(१) ए. कृ. को.-अंठुलि।

हरसिंह का हथियार करना और पंग सेना का छिन्न भिन्न होना।

भुजंगी॥ चंपै चाइ चौहान हरसिंघ नायौ। जिसे सेंन में सिंघ गज जूथ पायौ॥
करै कूह गज जूह सनमुष्ष धायौ। तवै पंग दल समटि चिहुं कोद छायौ॥
छं० ॥ २१४६ ॥

पंगराज का दो मीर सरदारों को पांच हजार सेना के साथ धावा करने की आज्ञा देना।

कवित्त ॥ वली अली द्वै मीर। उभै बंधव बर बीरह ॥
छत्तिय हथ्थ दुसल्ल। मल्लविद्या साधक सह ॥
षग्ग मग्ग बिन रेह। जुद्ध जानें निरगम गम ॥
डंडा युद्ध छत्तीस। बट्ट पाइक पाइक सम ॥
भुज लहै कोरि उभ्भै अभय। स्वामि ध्रंम रत्तं सु रह ॥
अनहित्त पंग लज्जी अदव। दल पगार बिर दैत गह ॥
छं० ॥ २१४७ ॥

करिय कृपा पहुपंग। सहस पंचह दिय मीरह ॥
कुल विषत्त जुध जुत्त। लहै बर लाज अभीरह ॥
स्याम चमर पष्षर सु। स्याम गज गाह सुनित्तह ॥
झंडे स्याम सु माम। पछ्य पय पुलै न षित्तह ॥
अग्या सु मंगि पहु पंग पहि। आए मीर पठान पुर ॥
आदित्त जुद्ध हरि उग्ग मनि। आए आतुर सज्जि अरि ॥
छं० ॥ २१४८ ॥

मीरों का आज्ञा शिरोधार्य्य करके धावा करना।

दूहा ॥ मंग्यौ आयस नंमि सिर। कहै पंग करि पान ॥
जीय सु षंडो षत्त पहु। गहो वहो चहुआन ॥ छं० ॥ २१४९ ॥

मीर मंडली से हरसिंह का युद्ध। पहाड़राय और हरिसिंह का मारा जाना।

भुजंगी ॥ तवै उप्परी फौज सा राज मीरं। सहस्सं च पंचं बरं बंधि नीरं॥

किलक्कि किलक्की हके आसुरानं। चवे दीन महमूंद महमूंद मानं॥
छं० ॥ २१५०॥

'वल्ली मीर अल्ली दिसा अप्प भष्पै। तनं अज्ज सांई निजं कज्ज रष्पै॥
करों पिंड पंड 'निजं स्वामि काजै। गहै चाहुआनं भरं भ्रूम भाजै॥
छं० ॥ २१५१॥

हके मीर अप्पान लै अप्प नामं। तिनं साप भष्पै 'कही कंक कामं॥
लही फौज आवंतसा चाहुआनं। हरं सिंघ सिंघं गज्यौ जुद्ध जानं॥
छं० ॥ २१५२॥

नयौ सीस प्रथिराज रजि वीर रस्सं। फिन्यौ संमरे इष्ट अप्पं उकस्सं
चले वीर किलकार साथे सु गाजै। करं अप्प आवद्ध मावद्ध साजै॥
छं० ॥ २१५३॥

मिल्यौ जुद्ध मंझी समं आइ मीरं। भरं आवधं वज्जियं धार धीरं
मिले मुष्प एकं अनेकं सु धायं। करक्कै सु सीसं परै पूर घायं॥
छं० ॥ २१५४॥

परैं मीर एकं अनेकं सु पंडं। कलं कूह वज्जी ररं मुंड रुंडं॥
कलं भूचरं षेचरं सा करूरं। नचै जंध हीनं कमद्धं दु हूरं॥
छं० ॥ २१५५॥

रमे तेक चहुआन रस रास तारं। फिरै मंडली जेम षल न्रत्य कारं॥
उभै मीर बल्ली अली संघ लष्पै। क्रमे आतपं तप्पि जल जाम भष्पं॥
छं० ॥ २१५५६॥

बली आय प्रहार कीनौ जु जामं। उरं मग्गि तिष्षी निकस्सी परामं
चलै सेन सम्मं हयौ षग्ग झारे। हयौ रोह मांतं भिरें मच्छ कारे
छं० ॥ २१५७॥

बली सीस तुथ्यौ षगं षंभ थारं। मनों देवलं इंदु तुट्टौ सु तारं
अली आय 'बामं हयौ षग्ग धारं। तुथ्यौ सीस उथ्यौ षगं भूमि पारं
छं० ॥ २१५८॥

(१) मो.-चली। (२) ए. कृ. को. तनं (३) ए. कृ. को.-कहा।
(४) ए. कृ. को.-भष्पे। (५) ए. कृ. को. बाहं।

गह्यौ तांस[1]अल्ली उरं अप्प चंप्यौ। गयौ अंस उड्डी तिनं तांम[2]लिप्यौ॥
भग्यौ सेन मीरं भरक्कै धु धामं। सयं सत्त ताई परे पंति तामं॥
छं० ॥ २१५९॥
घनं घाइ अघघाय पृऱ्यौ सु पानं।पऱ्यौ सिंघ हरसिंघ करि जीति पानं॥
छं० ॥ २१६० ॥

नरसिंह का अकेले पंग सेना को रोकना और पृथ्वीराज का चार कोस निकल जाना।

कवित्त ॥ करि जुहार[3]नरसिंघ। नयौ चहुआन पहिल्लौ ॥
वरी अनी सावरी। लष्य सों भिर्‌यौ इकल्लौ ॥
आगम काय हुअ फिरै। धरनि षुर सों षुर षुंदहि ॥
एक लष्य सों भिरै। एक लष्यह रन रुंधहि ॥
असि घाइ झाइ बज्जै [4]विषम। जै जै जै आयास भौ ॥
इम जंपै चंद बरद्दिया। च्यारि कोस चहुआन गौ ॥छं०॥२१६१॥

नरसिंह के मरते ही पंग सेना का पुनःचौहान को आघेरना।

दूहा ॥ परत धरनि नरसिंघ कहुं। रुकि गयंद दल अब्ब ॥
मर्नंहु जुद्ध जोगिन पुरह। तिन मुक्कयौ सब [5]अब्ब ॥छं०॥२१६२॥
फुनि प्रथिराज सु पच्छ दल। बर रट्ठौर नरेस ॥
[6]सिर सरोज चहुआन कै। भवर सस्त्र सम भेष ॥ छं० ॥२१६३॥

इस तरफ से कनक राय बड़ गुज्जर का मोरचा रोकना।

कवित्त ॥ भौ आयस प्रथिराज। कनक नायौ बड़ गुज्जर ॥
हम तुम दुस्सह मिलन। स्वामि दुज्जै सु अप्प घर ॥
हों रवि मंडल भेदि। जीव लगि सत्त न [7]षंडो ॥
षंड षंड करि रुंड। मुंड हर हार सु मंडो ॥

---

(१) ए. कृ. को.-अली ।   (२) ए. कृ. को.-लेयौ ।
(३) ए. कृ. को.-हरसिंह, परंतु हरसिंह के युद्ध का वर्णन पूर्व छंद में हो चुका है ।
(४) ए. कृ को.-सकल ।   (५) ए. कृ. को.-अव्व ।   (६) मो.-सिर सराज ।
(७) ए. कृ. को. छंडों ।

इन वंस भग्गि जानै न को। छों पति कंप अलुभभयो ॥
इम जंपै चंद वरद्दिया। कोस पट्ट चहुआन गौ ॥ छं० ॥ २१६४॥

वीरमराय का बल पराक्रम वर्णन।

सुअन धाय जैचंद। नाम वीरम वीरम वर ॥
गरुअ लाज गुन भार। जुद्ध जुति जान ग्यान गुर ॥
बंधव सम जैचंद। प्रीति लिष्षवै प्रेम गुन ॥
अग्गि आदर न्त्रप करै। गान उत्तंग अंग सन ॥
सह सत्त सत्त सेना सु तस। बरन रत्त बाना धरै ॥
जहं जहं सु राज काजह समथ। तहं तह परि अग्गें लरै ॥
छं० ॥ २१६५ ॥

दूहा ॥ ऐरावत वीरम पऱ्यौ। औ वीरम मुअ धाइ ॥
सम प्राक्रम पंगुर परषि। दियै सु अग्या ताइ ॥ छं० ॥ २१६६ ॥

उक्त मीर बंदों को मरा हुआ देख कर जैचन्द का वीरम राय को आज्ञा देना।

परे मीर देषे उभै। दिय अग्या तमि पंग ॥
गहौ जाइ चहुआन कौं। हनौ सुभर सब जंग ॥ छं० ॥ २१६७ ॥

वीरम राय का धावा करना वीरमराय और बड़ गुज्जर दोनों का मारा जाना।

भुजंगी ॥ सुने आयसं बीर पंगं नरिंदं। चल्यौ नाइ सीसं मनों जुद्ध इंदं ॥
सिरं सज्जि गेनं रची फौज तीरं। कजं जुद्ध ईसं रज्यौ रस्स बीरं ॥
छं० ॥ २१६८ ॥

बजी भेरि भुंकार धुंके निसानं। धरा बोम गज्जे सजे देव दानं ॥
बड़ं गुज्जरं देषि आवंत फौजं। सनंमुष्ष भ्रम्यौ दलं संक नौजं ॥
छं० ॥ २१६९ ॥

जपे इष्ट सा उच्चरे बीर मंचं। गरै बंधियं स्रून सम्मीर जंचं ॥
किलक्के सु बीरं गहक्के सु धीरं। कलं कंपियं कातरं भीत भीरं ॥
छं० ॥ २१७० ॥

---

(१) ए. कृ. को.-पंक।

दूहा ॥ ऐ ऐ कन्ह निव्रत्त कर । धर धर तुट्टिय धार ॥
पहर एक पर हथ्थरे । सिर सिर बुट्टिय सार ॥ छं० ॥ २२३१ ॥

पट्टी छूटते ही कन्ह का अद्वितीय पराक्रम वर्णन ।

कवित्त ॥ पट्टै पल छुट्टंत । कन्ह धाराहर बज्ज्यौ ॥
जलुकि मेघ मंडलिय । बीर बिज्जुलि गहि गज्यौ ॥
हय गय नर तुट्टंत । बिरह तुट्टिय तारायन ॥
तुट्टिय षोहनि पंग । राय छोनिय भारायन ॥
हल हलिय नाग नागिनि पुरत । नागिन सिर बुढ्यौ रुहिर ॥
आवहि न संग सिंगार मन । मननि सीस मुक्कौ सु धर ॥
छं० ॥ २२३२ ॥

कन्ह का युद्ध करना । राजा का दस कोस निकल जाना ।

भुजंगी ॥ जितं सार धारं जु सारंग तुट्टौ । मनों आवनं मेछ्छसं सीस उट्ठौ ॥
फटी फौज आवाज सा पंग राई । भगी जानि सद्दै धरै बघ्घ धाई ॥
छं० ॥ २२३३ ॥

वजी हक्क हंकार भंकार भेरी । भरी रोससेना फिरी लज्ज घेरी ॥
धजा वीर वैरप्प साबं बरैसा । लगै सीस सामंत सा अंमरेसा ॥
छं० ॥ २२३४ ॥

उड़ै गिद्ध आवद्ध तुट्टै उतंगा । किनक्कै सु ताजी चिक्कै हस्ति चंगा ॥
भभक्कै सु धायं सु रायं हवाई । मनो मारुतं मत्त सामंत थाई ॥
छं० ॥ २२३५ ॥

फिरी चक्क चहुआन की हक्क बज्जी । मनों प्रौढ़ भर्ता न ऊढ़ा सु लज्जी ॥
इसी कन्ह चहुआन करि [1]केलि रत्ती । फिरै जोगिनी जोग उच्चार[2] मत्ती ॥
छं० ॥ २२३६ ॥

दहं कोहसा स्वामि आराम छुट्टौ । पछै पंग रासेन आव्रन उट्ठौ ॥
* * * । * * छं० ॥ २२३७ ॥

कवित्त ॥ दिष्षि सेन पहुपंग । आस ढिल्ली ढिल्ली तन ॥
चिंति कन्ह चहुआन । पट्ट छुट्यौ सुभयौ बन ॥

(१) ए. कृ. को.-रत्तकलं । (२) ए. कृ. को.-उच्चार भेली ।

निपथ्य कृष्ण है जनिय। पंग जंपै जीवन गहु ॥
सु पृथ्य सूर सामंत। जीह जीयत सु वंन सहु ॥
आलत्त जात धंधो तिनं। सो धंधौ जुरि भंजयौ ॥
वज्जियन जीव रुंध्यौ न्त्रिपति। सुकति सथ्य है बज्जयौ ॥
छं० ॥ २२३८ ॥

कन्ह का कोप ।

हरी ॥ कलहंत कन्ह कुप्पौ कराल। फारकंत मुंछ चप चढ़ि कपाल॥
चिंती सु चिंत देवी प्रचंड। क्रह कहति कंक कर मूल मंड ॥
छं० ॥ २२३९ ॥

गुररंत सिंघ आसन अरोह। वामंग वाह पप्पर सु सोह ॥
इहि भंति प्रसन सजि देवि दंद। तहं पढ़त छंद अनेक चंद॥
छं० ॥ २२४० ॥

रन रंग रहसि ठठ्ठो पयंत। वरदाइ वदत विरदन अनंत ॥
पहु प्रगट विरद जिन नरनि नाह। हंतन हनंत आजानबाह॥
छं० ॥ २२४१ ॥

षोलंत नयन जिहि समर रंग। भारथ्य कथ्य भीषम प्रसंग ॥
भज्जनह राय संकर पयान। धूनी न षग्ग षडल पयान ॥
छं० ॥ २२४२ ॥

देषंत सेन न्त्रप पंग रुक्कि। उद्यान म्रग्ग जनु सिंघ हुक्कि ॥
गहि संग नंग न्त्रिम्मलिय हथ्थ। सोहंत बज्ज जनु तात पथ्थ ॥
छं० ॥ २२४३ ॥

हलभलिय सेन न्त्रप पंग राइ। उद्यान तपत जनु लग्गि लाइ ॥
धर परत धरनि है हिनत सून। बाहंत गुरज सिर करत चून ॥
छं० ॥ २२४४ ॥

तरफरत तड़ित सम तेज तेग। सम सिलह सहित तुट्टत अछेग ॥
बरि अंग अंग तुटि तुच्छ तुच्छ। जन सुकत नीर सर तरफि मच्छ॥
छं० ॥ २२४५ ॥

घन घाय घुम्मि इक रहत थक्कि। बासंत षेलि मतवार जक्कि ॥

हुै कटे च्यारि चहुआन जंग। पंचमह साजि है समर रंग ॥
छं० ॥ २२४६ ॥

चार घोड़े मारे जाने पर कन्ह का पांचवे पट्टन नामक घोड़े पर सवार होना। पट्टन की वीरता। कन्ह का पंचत्व को प्राप्त होना।

कवित्त ॥ तब सु कन्ह चहुआन। तुरिय पट्टन पल्लान्यौ ॥
हिंसि किनकि बर उठ्यौ। मरन अप्पन पहिचान्यौ ॥
उहि कर असिवर लह्यौ। गहिब गज कुंभ उपट्टै ॥
मारै लतानि वह घाव। षुंदि अरि दंतन कट्टै ॥
वह नर निसंक है वर सु धर। पिष्पहु बित्त कवित्तयौ ॥
बर मुंड माल हर संट्ठयो। वह रवि [1]स्थलै जुत्तयौ॥छं०॥२२४७॥

दूहा ॥ पट्टन पवंग पालानि पति। चढ्यौ कन्ह चहुआन ॥
कहर कूह कीयौ रनह। रह्यौ षंचि रथ भान ॥ छं०॥२२४८ ॥

मोतीदाम ॥ कुप्यौ कर कन्ह सु कंक कराल। बजै षग हथ्थ दुअं असराल॥
मनों रस बीर बली बिकराल। कुटै अरि गड्डुरि कूटत पाल ॥
छं० ॥ २२४९ ॥
फटै सिर सारनि मार विषंड। मनो जगनाथ सु बंटिय हंड ॥
तुटै सिर जाय रहै उत सेन। अजा सुत हंति सिवा बल दैन ॥
छं० ॥ २२५० ॥
परें सब सूर धरप्पर सिंभ। मनों कटि रिम्म महा गुर गिंभ ॥
* * * * । * छं० ॥ २२५१ ॥

कन्ह के रुंड का तीस हजार सैनिकों को संहारना।

दूहा ॥ निकस्यौ न्रप प्रथिराज पहु। रह्यौ कन्ह दल रोकि ॥
हय हय हय म्रतलोक महि। जय जय चवि सुरलोक॥छं०॥२२५२॥
लरत सीस तुट्यौ सु हर। धर उठ्यौ करि मार ॥
घरी तीन लों सीस बिन। कट्टे तीस हजार ॥ छं० ॥ २२५३ ॥

(१) मो. वह रवि रथ लै जुत्तयौ।

कन्ह का तलवार से युद्ध करना।

तोटक ॥ बिन सीस इसौ तरवारि बहै। निघटै जन सावन घास महै॥
धर सीस निरास हुअंत इसे। सुभ राजनु राह रुकंत जिसे॥
छं० ॥ २२५४ ॥

धर नौचत उट्ठि कमंध धरैं। भगलं जनुं आपस ष्याल करैं॥
बिव षंड बिहंड सु तुंड तुटै। दुअ फार करारनि सीस फटै॥
छं० ॥ २२५५ ॥

हरदास कमद्धज आय अर्यौ। तिन को तन घावन सों जकर्यौ॥
बल वाम इसो न रहै एकर्यौ। मनों नाहर षेटक में निकर्यौ॥
छं० ॥ २२५६ ॥

कि मनो गजराज छुट्यौ जकर्यौ। कविचंद कहै परलो जु कर्यौ॥
असि दोरि दई सु जनेउ उतारि। परयौ हरदास प्रिथी पुर पारि॥
छं० ॥ २२५७ ॥

बिफुर्यौ रन में कर कन्ह सजें। बिन मावत छुट्टि कि मत्त गजें॥
हहरें हलकै किलकै किलकी। भहरें भरि पत्र उमा भिलकी॥
छं० ॥ २२५८ ॥

तिन मैं रुधि धारि चलै झिलकी। तिन उप्परि पंति फिरै अलिकी॥
सु उभ्झावत हथ्थ चुरी षलकी। सु पियें रुधि धार चलै ललकी॥
छं० ॥ २२५९ ॥

गहरें गवरांपति माल गठैं। बहरें बर बावन बीर बढैं॥
षहरें धर घायल घुम्मि इसे। जहरें जनु षाइ ढरंत जिसे॥
छं० ॥ २२६० ॥

कहरें नर कन्ह सु केलि करी। पहरें तरवार सु तुट्टि परी॥
बह नागिनि सो सुध व्है निबरी। दल पंग भयाम लगी अकरी॥
छं० ॥ २२६१ ॥

तलवार टूटने पर कटार से युद्ध करना।

दूहा ॥ जब तुट्टी तरवार कर। तब कड्ढी जम दड्ढ ॥
इक्क कटारी दुहुन उर। पंच सहस भर बड्ढ ॥ छं० ॥ २२६२ ॥

कटार के विषम युद्ध का वर्णन जिससे पंग सेना के पांच सहस्त्र सिपाही मारे गए।

त्रिभंगी ॥ कर कढ्ढि कटारी जम दढ्ढारी काल करारी जिय भारी ॥
चंपै चर नारी बारों पारी निकसि निनारी उर भारी ॥
रस सोभत सारी छेढ करारी लंब लंबारी लंबारी ॥
उपजै सुर आरी बजि घरियारी अति अनियारी आहारी ॥
छं० ॥ २२६३ ॥

लग्गे इक आरी होइ [1]दुआरी जानि जियारी जिम्भारी ॥
लपकै हियलारी बारह बारी भूषी भारी भाहारी ॥
जनु नागिनि कारी कोप करारी अति आकारी सा कारी ॥
भभकै रुधि भारी भभक भरारी भर भर बारी तन ढारी ॥
छं० ॥ २२६४ ॥

गिरि तें झरकारी झिरना झारी झिरै झरारी झर कारी ॥
बबकै बबकारी बीर बरारी नारद तारी दै चारी ॥
मचि कूह करारी अति उभ्भारी अगिनित पारी धर [2]ढारी ॥
* * * * ॥ छं० ॥ २२६५ ॥

दूहा ॥ काल कूट कीनौ विषम। पंच सहस भर बढ्ढ ॥
कहर कन्ह किन्नौ सु कर। तब तुट्टिय जमदढ्ढ ॥ छं० ॥ २२६६ ॥

कटार के टूट जाने पर मल्ल युद्ध करना।

पद्धरी ॥ तुट्टी सु हथ्थ जमदढ्ढ जोर। बढ्यौ जु अप्प बल अंग और ॥
गहि पाइ भुम्मि पटकै जु फेरि। धोबी कि बस्त्र सिल छिट्ट सेर॥
छं० ॥ २२६७ ॥

दुअ हथ्थ दोन नर ग्रहै मुंड। होइ मथ्थ चूर जनु तुंब कुंड ॥
गहि हथ्थ हथ्थ मुर रे सु तोरि। गज सुंड साष तोरे मरोरि ॥
छं० ॥ २२६८ ॥

भरि रोस हथ्थ पटकंत मुंड। भिरडंत जानि श्रीफल सु षंड ॥

(१) ए. कृ. को.-दुपारी, दुपारी।   (२) ए. कृ. को.-भारी।

गहि पाइ दोइ डारंत चीर। कढ्ढी सु जानि फारंत भीर॥
छं० ॥ २२६९ ॥

गहि सीस मौर भंजै सु ग्रीव। फल मोरि मालि तोरै सु तीव॥
हाकंत मत्त दैलत्त घाइ। डारंत तेव करि हाइ हाइ॥छं०॥२२७०॥

इहि विधि सु कन्ह रिनकेलि किन्न। परि अंग अंग होइ छिन्न भिन्न॥
छं० ॥ २२७१ ॥

चाहुआन का दस कोस निकल जाना।

कवित्त॥ चाहुआन सुज्जानं। भूमि भर सेज्या मृतौ॥
देषि बिअच्छरि वर। समूह बरनह सानृतो॥
जनु परि त्रिय परहंस। हंस आलिंगन मुक्कयौ॥
भर भारी कन्हह। हनंत अवसान न चुक्कयौ॥
धर गिरत धरनि फुनि फुनि उठत। भारथ सम [1]जिन वर कियौ॥
इम जंपै चंद वरद्दिया। कोस दसह भूपति गयौ॥ छं० ॥२२७२॥

कन्ह राय की वीरता का प्रभुत्व। कन्ह का अक्षय मोक्ष पाना।

जिम जिम तन जरजर्‌यौ। विहसि वर धायौ तिम तिम॥
जिम जिम अंत रुलंत। लष्प दल तिन गनि तिम तिम॥
जिम जिम करिवर परत। उठत जिम सीस सहित वर॥
जिम जिम रुधिर झरंत। सघन घन वरषत सद्दर॥
जिम जिम सु षग्ग बज्ज्यौ उरह। तिम तिम सुर नर मुनि [2]मन्यौ॥
जिम जिम सु चाव धरनी पर्‌यौ। तिम तिम संकर सिर धुन्यौ॥
छं० ॥ २२७३ ॥

गह गह गह उच्चार। देव देवासुर भज्जिय॥
रह रह रह उच्चार। नाग नागिनि मन लज्जिय॥
वह वह वह उच्चार। सु रह असुरन धुनि सज्जिय॥
चह चह चहतासंत। तुट्टि पायन पर तज्जिय॥
मुह मुहह मुच्छ कर कन्ह तुअ। चमर छत्र पह, पंग लिय॥

(१) ए. कृ. को.-जिहि। (२) ए. कृ. को -गन्यौ।

सिर वंध कंध असिवर ढरिग । पहर एक पट्ट न दिय ॥
छं० ॥ २२७४ ॥

पहर एक पर प्रहर । टोप असि बर बर बज्जिय ॥
बषर पषर जिन सार । पार बट्टन तुटि तज्जिय ॥
रोस रोम वर विद्ध । सिद्ध किन्नर लिन्निय वर॥
अस्त वस्त बज्जी । कपाट दद्धीच हीर हर॥
रुधि मंस हंस हरिवंस नर । दिव दिवंग मिटि अम्मिलित ॥
किन्नर कबंध घटि तंति तिन । सुवर पंग दिष्षिय [1]षिलत ॥
छं० ॥ २२७५ ॥

कन्ह के अतुल पराक्रम की सुकीर्ति ।

भुजंगी ॥ परे धाय चहुआन कन्हा करूरं । भयं पारथं बीर भारथ्थ भूरं॥
वढे सार बज्जे न भज्जै न बग्गं । नहीं नीर तीरं हरं भार लग्गं॥
छं० ॥ २२७६ ॥

हुते लज्ज भारे सु भारथ्थ नीरं । बड़े सूर अब्बं न दीसै सरीरं ॥
तिनं सम्मं भारं सम्मै नाहि हथ्थं । झरै सब्ब सस्त्रं परं बीर बथ्थं॥
छं० ॥ २२७७ ॥

झमक्कंत झारे प्रहारंत सारं । मनों कोपियं इंद्र बुट्ठे अंगारं ॥
जिती भोमि [2]चष्षे षिजै पंग इंदं । लरे लोह दीनं सरेहं गुविंदं॥
छं० ॥ २२७८ ॥

लगै लोह लोहं पलट्टै ति तत्ती । रमं सामि अप्पे न भौ सार छत्ती॥
तुटे अस्त वस्तं भयं छीन भंती । असव्वार अस्वं न ढुंढै निरत्ती॥
छं० ॥ २२७९ ॥

परे संघरे सूर मारंग पाजं । नरी रंग बज्जै कलं प्रान बाजं ॥
इसी कन्ह चहुआन करि केलि रत्ती ।फिरै जोगिनी जोग उच्चार मत्ती॥
छं० ॥ २२८० ॥

टरै विष्प हूरं दसं दीन बारं । भयं अस्वमेधं सहं ध्रम्मसारं ॥
छं० ॥ २२८१ ॥

(१) ए. छ. को.-लिपत ।　　　　(२) मो. वष्पे ।

कन्ह द्वारा नष्ट पंग सेना के सिपाहियों की संख्या।

दूहा ॥ * एक लष्ष सित्तर सहस । कट्टि किये अरि नन्ह ॥
दोय दीन भष्षे सु इस । धनि धनि न्रप्प सु कन्ह ॥
छं० ॥२२८२ ॥

धरनि कन्ह परतह प्रगट । उठ्यौ पंग न्रप हक्कि ॥
मनों अकाल संकरह ह सि । गहिय तुट्टि निधि रंक ॥छं०॥२२८३

अल्हन कुमार का पंग सेना के साम्हने होना।

तब झुकि अल्हन पग्ग गहि । भयौ अप्प बल कोट ॥
सिर अप्पौ कर स्वामि कों । हनो गयंदन जोट ॥ छं० ॥ २२८४ ॥

अल्हन कुमार का अपना सिर को काट कर पृथ्वीराज के हाथ पर रख कर धड़ का युद्ध करना।

कवित्त ॥ करिय पैज अल्हन । कुमार रुट्टौ पग पुल्लै ॥
झरतु धार तन चार । भार असिवर नन डुल्लै ॥
रोहन रन मुंडयौ । वीर वर कारन उट्टौ ॥
ज्यों अषाढ घन घोर । सार धारह निर वुट्टौ ॥
पंगुरा सेन उप्पर उझरि । उभै भयन गज मुष्प दिय ॥
उच्चरे देवि सिव जोगिनिय। इह अचिज्ज सें राज किय॥छं०॥२२८५॥

अल्हन कुमार का अतुल पराक्रममय युद्ध वर्णन। वीरया राय का मारा जाना उसके भाई का अल्हन के धड़ को शान्त करना।

पद्धरी ॥ मह माइ चित चिंतीस आल । जंप्यौ सु मंच देवी कराल ॥
आश्रम्म देवि किय निज्ज धाम । कट्टयो सीस निज हथ्थ ताम ॥
छं० ॥ २२८६ ॥

मुक्कयो सीस निज अग्ग राज । हुंकार देवि किय निज्ज गाज ॥
धायौ सु धरह बिन सीस धार । संग्रह्यौ बांह बामै कटार ॥
छं० ॥ २२८७ ॥

* यह दोहा मो. प्रति में नहीं है।

उच्छ्यौ षग्ग वर दच्छ पानि। संकुह्यौ वीर धायौ परानि ॥
कौतिग्ग सब्ब देषंत सूर। दिष्यौ न दिट्ठ कारन करूर ॥
छं० ॥ २२८८॥

मारूयौ पयट्ठ सा सेन पंग। बज्जे करूर बज्जंत जंग ॥
कौतिग्ग सूर देषंत देव। नारद रुद्र रस हंस एव ॥ छं० ॥ २२८९॥
षेचर रुहंस चर भूअ चार। थक्के सु देषि प्राक्रम करार ॥
महमाइ सुधर उप्पर बयट्ठ। अरि भार सार मंडिय पयट्ठ ॥
छं० ॥ २२९० ॥

धर परै धार तुट्टै सु यार। हल्लहले पंग सेना सु भार ॥
दष्पनिय राय बीरया नाथ। गज चल्यौ जुद्ध सब्बह समाथ ॥
छं० ॥ २२९१ ॥

सूरमा धारह ढहन्न बीर। चंपयौ गज्ज सम्हौ सुधीर ॥
मुष लग्गि आय सम अल्ह जाम। असि झाक हयौ मुष इम्भ तास॥
छं० ॥ २२९२ ॥

सम अंषि जार तुट्टौ सुदंत। कटि मूल पर्यौ पादप सुमंत ॥
उट्ठयौ हक्कि बीरया नाथ। आयेव अल्ह सम लग्गि बाथ ॥
छं० ॥ २२९३ ॥

चंपयौ उअर अल्हन तास। नष्पयौ धरनि गय उड्डि उसास ॥
बीरया नाथ लघु बंध धाइ। गज चल्यौ पंग लग्गी सु दाय ॥
छं० ॥ २२९४ ॥

बिंटयौ अव्व सेना सु धीर। आबद्ध मुक्कि सब सेन बीर ॥
चंपयौ आय गुरु गज्ज जाम। संग्रह्यौ दंत दंती सु ताम ॥
छं० ॥ २२९५ ॥

गय हयौ सीस कट्टार सार। महमाइ हँसिय दीनौ हुंकार॥
भग्गौ सु गज्ज कीनौ चिकार। ढाहयौ सबै मिलि सूर सार ॥
छं० ॥ २२९६ ॥

अल्हन कुमार के रुंड का शान्त होना और उसका मोक्ष पाना।

कवित्त ॥ सिर तुट्टै रुंध्यौ गयंद। कढ्यौ कट्टारौ ॥
तहां सुमरिय महमाइ। देवि दीनौ हुंकारौ ॥

अमिय सद्द आयास। लयौ अच्छरिय उछंगह॥
तहां सु भद्द परतष्पि। अरित अरि कहत कहंगह॥
अल्हन कुमार विश्रम सुष्यौ। रन कि विमानह मनु मन्यौ॥
तिहि दरसि तिलोचन गंग धर। तिम संकर सिर धर धुन्यौ॥
छं०॥ २२९७॥

दूहा॥ सघन घाय विह्वयो सु तन। धरनि ढर्यौ परिहार॥
परे बहुत्तनि सुभर रन। सद्द अल्हन सार॥ छं०॥ २२९८॥

अल्हन कुमार के मारे जाने पर अचलेस चौहान का हथियार धरना।

धुनित ईस सिर अल्हनह। धनि धनि कहि प्रथिराज॥
मुनि कुप्यौ अचलेस भर। मुहि बल देषिव राज॥ छं०॥ २२९९॥
इह चरित्त नद्दिय सु चिर। करिय राज परिहार॥
अद्भुत क्रम देषह नृपति। करों षेत सर सार॥ छं०॥२३००॥
पर्यौ अल्ह सामंत धर। गही पंग दल ग्रब्ब॥
सुभर रज्जि कमधज्ज दल। सुमन राज गुर ग्रब्ब॥ छं०॥२३०१॥

पृथ्वीराज का अचलेस को आज्ञा देना।

कवित्त॥ तब जंपै प्रथिराज। सुनौ अचलेस संभरिय॥
इह सु सूर आचरन। नही सामंत संभरिय॥
मेंन सूर धरि कंध। राह रुंधेत गयौ धन॥
इह अचंभ आचरन। देव दानव दैतानन॥
सुनि दानव परहरि पर। अपर जुद्ध संधि पंगुर दलह॥
संकही सामि संकट परै। सकल कित्ति कित्ती चलह॥ २३०२॥

अचलेस का अग्रसर होना।

सुनत बेंन प्रथिराज। अचल नायौ मरंन सिर॥
है नष्यौ सु तुरंग। बीर कंपे तुरंगधर॥
जुद्ध सलित्तह परै। लोह लहरी धर तुट्टै॥
जल्ल विथ्थरि कमधज्ज। घाय लग्गे आहुट्टै॥

अचलेस अग्गि जग्गंत भर। प्रलै अग्गि चैनेच जिम॥
चहुआन अग्ग उभ्भौ भयौ। राम अग्ग हनमंत जिम॥छं॥२३०३॥

अचलेस का बड़ी वीरता से युद्ध करके मारा जाना।

भुजंगी॥ तवै हक्कियं सेन पंगं नरिंदं। दियौ आयसं जानि कज्ज गज्जि इंदं॥
उठी फौज पंगं करै कूह सब्बं। बगे वग्ग कढ्ढी गजे बीर गब्बं॥
छं०॥२३०४॥

करी अचलेसं जु स्वामित्त पज्जं। करौं षंड षंडं पलं तुभ्भ कज्जं॥
नयौ सीस चहुआन अचलेस तामं। मिल्यौ आय सैना रती कंक कामं॥
छं०॥२३०५॥

जपे मंच द्रुग्गा करे ध्यान अंबी। सुने आय आसीस सा देवि लुंबी॥
वलं अचलं रूप अदभुत्त पिष्यौ। भयौ मोह सब्बै घटी रुद्र दिष्यौ॥
छं०॥२३०६॥

विरम्मे षुरम्मे षु बज्जे निसानं। मिले रीठि मत्ती सिरं चाहुआनं॥
दिसं भेष लग्गी रयं रत्त भुम्मी। पयं पात जानं मयं गत्त उम्मी॥
छं०॥२३०७॥

उछंगं उछारंत अच्छी निरष्षै। दलं दंग पंगं कुरंगं परष्षै॥
कुला केलि सामंत तत्तं पतंगं। परे जुद्ध मत्ते सरित्ता सु गंगं॥
छं०॥२३०८॥

रहं भान थानं रह्यौ थक्कि रथ्यं। टगं लग्गियं भूच षेचं सु रथ्यं॥
गही पंग सेना भरं षग्ग पानं। मनो हक्कि गोपाल गोधन्न थानं॥
छं०॥२३०९॥

भरक्के धरक्के भरक्के ढरक्के। परे गज्ज बाजं सु कंधं करक्के॥
करे नाम सब्बं परे षग्ग धीरं। करी जूह मझ्झे गजैकं कठीरं॥
छं०॥२३१०॥

पयंसं सरक्कै धरक्कै धरन्नी। परे विह्वि पंडं सवं सुष्य रन्नी॥
किलक्कारियं देवि सथ्थें सु नंचै। परै षग्ग पानं करै पंज संचै॥
छं०॥२३११॥

कवित्त ॥ करि विपैज अचलेस । सु छल चहुआन पग्गगहि[1] ॥
अरि दल बल संहन्यौ । पूनि धर भरित रुधिर दहि[2] ॥
मच्छति हैवर तिरहि । कच्छ गज कुंभ विराजहि ॥
उअर हंस उड़ि चलहि । हंस सुप कामन्नति राजहि ॥
चदसहि लट जै जै करहि । छत्रपत्ति परि संचरिय ॥
वोहिथ्थ बीर बाहर तने । दिल्लीपति चढ़ि उत्तरिय॥छं०॥२३१२॥

दूहा ॥ सुनत घाव विन्हयो सघन । ढ्यौ अचल चहुआन ॥
भयौ मोह कमधज्ज दल । परें पंच में थान ॥ छं० ॥ २३१३ ॥

विझराज का अग्रसर होना ।

अचल अचेत सु चेत हुअ । परिग पंग चहुराय ॥
पट्टन छर अरु पट्ट छर । उठे विंझ विरुझाय ॥ छं० ॥ २३१४ ॥
पर्‍यौ अचल पिष्यौ अरिय । करिय कोप पहुपंग ॥
अप्प वग्ग कढ्ढिय विरचि । [3]हनू हनौ चवि जंग ॥ २३१५ ॥

पंग सेना का विषम आतंक वर्णन ।

लघुनराज ॥ कढ्ढी सु बग्ग पंगयं । तमक्कि तोन संगयं ॥
वजे निसान नद्दयं । ठनंकि घंट मद्दयं ॥ छं० ॥ २३१६ ॥
रनक्कि भेरि भेरियं । नदे भरन्न फेरियं ॥
षरक्कि तोन [4]पष्परं । गहक्कि भार सुब्भरं ॥ छं० ॥ २३१७ ॥
धरक्कि धाम सुद्दरं । किनक्कि सीस से सुरं ॥
भरं सु राज पग्गयं । लहंति जुत्ति जंगयं ॥ छं० ॥ २३१८ ॥
कुलं अरेह सव्वसं । अरप्पि सांइ अप्पसं ॥
अमग्ग बट्ट भंगयं । जुरे अनेक जंगयं ॥ छं० ॥ २३१९ ॥
रते सु ध्रम्म सामयं । करन्न उंच कामयं ॥
पंती सु नेह न्रिम्मलं । चले सु स्वामि अच्चलं ॥ छं०॥२३२०॥
मरन्न तिन्न मातयं । गरूअ गुन्न गातयं ॥
तपे सु आय आइयं । नयौ सु सीस साइयं ॥ छं०॥२३२१॥

---

(१) मो. कहि। (२) ए.-राहि
(३) ए. कृ. को. हनो। (४) मो.-षप्परं।

दियौ सु पंग आयसं। गहन्न सब्ब रायसं॥
गहौ बहौ सबैं मिली। सकै न जाइ ज्यों दिली॥ छं०॥ २३२२॥
सुने सु बच्च पंगयं। कढे सु षग्ग गज्जयं॥
* * * * * * छं०॥२३२३॥

पृथ्वीराज का बिझराज सोलंकी को आज्ञा देना।

कवित्त॥ दल आवत पहु पंग। दिष्षि चहुआन सब्ब सज्जि॥
बींझराज चालुक्क। दियौ आयेस अप्प गजि॥
अहो धीर चालुक्क। सहि अनभंग षग्ग धरि॥
सनमुष सजि षल जूह। तास भर सु भर अंत करि॥
उच्चर्यो ब्रह्म चालुक्क तहं। अहो राज प्रथिराज सुनि॥
पष्य धरंनि घन सूर भर। करौं पंग दल [1]दंति रिन॥
छं०॥ २३२४॥

बिझराज पर पंगसेना के छः सरदारों का धावा करना। बिझराज का सब को मार कर मारा जाना।

भुजंगी॥ तब नम्मि सीसं न्रपं बिंझ राजं। चल्यौ रिम्म सम्हं घनं जेम गाजं॥
जपे मंच अंबीय सा इष्ट सारं। मन बच्च क्रम्मं धरे ध्यान धारं॥
छं०॥ २३२५॥
दियौ आय अप्पं दरस्सं सु अंबी। चढी जानि सिंघं सु आवद्ध लुंबी॥
सथै सब्ब देवी षगं षप्प रत्ती। मतं झूझ मत्ती झलक्कंत कत्ती॥
छं०॥ २३२६॥
सबै भूचरं षेचरं षग्ग हक्कै। नचै काल ईसं सु डक्कं तु हक्कै॥
अगें भूत प्रेतं फिरै भूह कारं। करं जोगिनी पच जंपै जै कारं॥
छं०॥ २३२७॥
चलै अग्ग गिद्धी समं सिद्धि साजं। सिरं मूर कौतिग्ग देषै विराजं॥
रजे देव जानं अधं आय लिष्षै। नचै बीर कौतिग्ग नारद दिष्षै॥
छं०॥ २३२८॥

(१) ए. कृ. को-पंति।

कवित्त ॥ करि विपैज अचलेस । सु छल चहुआन षग्गगहि[1] ॥
अरि दल बल संहस्यौ । पूरि धर भरित रुधिर दहि[2] ॥
मच्छति हैवर तिरहि । कच्छ गज कुंभ विराजहि ॥
उअर हंस उड़ि चलहि । हंस मुष कमलति राजहि ॥
चवसट्ठि सद्द जै जै करहि । छत्रपत्ति परि संचरिय ॥
बोल्लिय्य बीर बाहर तनै । दिल्लीपति चढ़ि उत्तरिय॥छं०॥२३१२॥

दूहा ॥ सुनत घाव विद्धयौ सघन । ढ्यौ अचल चहुआन ॥
भयौ मोह कमधज्ज दल । परें पंच सें थान ॥ छं० ॥ २३१३ ॥

विझराज का अग्रसर होना ।

अचल अचेत सु चेत हुअ । परिग पंग वहुराय ॥
पट्टन छर अरु पट्ट छर । उठे विंझ विरझाय ॥ छं० ॥ २३१४ ॥
पर्‌यौ अचल पिष्यौ अरिय । करिय कोप पहुपंग ॥
अप्प बग्ग कढ्ढिय विरचि । [3]हनू हनौ चवि जंग ॥ २३१५ ॥

पंग सेना का विषम आतंक वर्णन ।

लघुनराज ॥ कढ्ढी सु बग्ग पंगयं । तमक्कि तोन संगयं ॥
बजे निसान नद्दयं । ठनंकि घंट मद्दयं ॥ छं० ॥ २३१६ ॥
रनक्कि भेरि भेरियं । नदे भरन्न फेरियं ॥
षरक्कि तोन [4]पष्षरं । गहक्कि भार सुब्भरं ॥ छं० ॥ २३१७ ॥
धरक्कि धाम सुद्दरं । किनक्कि सीस से सुरं ॥
भरं सु राज पग्गयं । लहंति जुत्ति जंगयं ॥ छं० ॥ २३१८ ॥
[5]कुलं अरेह सब्बसं । अरप्पि सांइ अप्पसं ॥
अमग्ग वट्ट भंगयं । जुरे अनेक जंगयं ॥ छं० ॥ २३१९ ॥
रते सु भ्रंम्म सामयं । करन्न उंच कामयं ॥
पंती सु नेह न्त्रिम्मलं । चले सु स्वामि अच्चलं ॥ छं०॥२३२०॥
मरन्न तिन्न मातयं । गरूअ गुन्न गातयं ॥
तपे सु आय आइयं । नयौ सु सीस साइयं ॥ छं०॥२३२१॥

(१) मो. कहि । (२) ए.-रहि
(३) ए. कृ. को. हनो । (४) मो.-पप्पर ।

दियौ सु पंग आयसं। गहन्न सब्ब रायसं॥
गहौ बहौ सबैं मिलौ। सकै न जाइ ज्यौं दिलौ॥ छं०॥ २३२२॥
सुने सु बत्त पंगयं। कढे सु षग्ग गज्जयं॥
* * * * * * छं०॥२३२३॥

पृथ्वीराज का विझराज सोलंकी को आज्ञा देना।

वेत्त॥ दल आवत पहु पंग। दिष्षि चहुआन सब्ब सजि॥
बींझराज चालुक्क। दियौ आयेस अप्प गजि॥
अहो धीर चालुक्क। सहि अनभंग षग्ग धरि॥
सनमुष सजि षल जूह। तास भर सु भर अंत करि॥
उच्चर्यौ ब्रह्म चालुक्क तहं। अहो राज प्रथिराज सुनि॥
पथ्थ धरंनि घन सूर भर। करों पंग दल [1]दंति रिन॥
छं० ॥ २३२४॥

विझराज पर पंगसेना के छः सरदारों का धावा करना। विझराज का सब को मार कर मारा जाना।

जंगी॥ तब नम्मि सीसं न्रपं बिंझ राजं। चल्यौ रिम्म सम्हं घनं जेम गाजं॥
जपे मंत्र अंबीय सा इष्ट सारं। मन बच्च क्रम्मं धरे ध्यान धारं॥
छं० ॥ २३२५॥
दियौ आय अप्पं दरस्सं सु अंबी। चढी जानि सिंघं सु आवद्ध लुंबी॥
सथै सब्ब देवी षगं षप्प रत्ती। मतं झूझ मत्ती झलक्कंत कत्ती॥
छं० ॥ २३२६॥
सवै भूचरं षेचरं षग्ग हक्कै। नचै काल ईसं सु डक्कं तु हक्कै॥
अगें भूत प्रेतं फिरै भूह कारं। करं जोगिनी पच जंपै जै कारं॥
छं० ॥ २३२७॥
चलै अग्ग गिद्धी समं सिद्धि साजं। सिरं सूर कौतिग्ग देषै विराजं॥
रजे देव जानं अधं आय लिष्पै। नचै बीर [1]कौतिग्ग नारद्द दिष्पै॥
छं० ॥ २३२८॥

(१) ए. कृ. को -पंति।

लष्यौ पंग सेना सु विंझं करारं। भयं भीत भीरं सजे सूर सारं॥
मिल्यौ घाव चालुक्क सा सेन मझ्झं।बनं अंबुजं इभ्भ ज्यौं जानि लुझं
छं० ॥ २३२९ ॥

परे पुंडीरकं घनं सेन मारं। किनक्कै सुता जीभ जै दंत भारं॥
धरं मुंड पूरं चलै श्रोन पूरं। पलं कीच मच्च्यौ सवं कूक हूरं॥
छं० ॥ २३३० ॥

समं सीस कट्टै तिनं सीस तुट्टै। मिलै रिन्न वट्ट तिनं आव घट्टै॥
तवै यप्परी पीठ अप्पै अंवाई। अरी हंकि ढाहैं धरं घाइ घाई॥
छं० ॥ २३३१ ॥

सिरं इष्ट आवद्ध नष्यै अपारं। भरक्कंत सेना भगी पंग भारं॥
दिष्यौ पंग दिष्टी मधी सेना पंती।क्रम्यौ सिंघ जेमं मदं देषि दंतं॥
छं० ॥ २३३२ ॥

दिष्यौ सेन दिष्टी करी हंतिकारं। क्रमे षट्ट राजा करे षग्ग धारं॥
क्रम्यौ तोमरं देषि सो क्रिस्नरायं। क्रम्यौ रुद्रसिंघं सु कंठेरि तायं॥
छं० ॥ २३३३ ॥

जयंसिंघ देवं सु जादव्व वंसी। न्रिपं भीम देवं अयौ बंभ अंसी॥
क्रम्यौ सांषुलाराय सो देविदासं। न्रिपं बीरभद्रं सु बघ्घेल तासं॥
छं० ॥ २३३४ ॥

बजे आय अड्डे रसं राज बीरं। मिल्यौ पंग सम्मीप सो विंझ धीरं॥
हयौ झाक सिंगीक बाहू कमंधं। पर्‍यौ अस्व फुट्टी परे सिंगि उद्दं॥
छं० ॥ २३३५ ॥

न्रिपं चंद्रसेनं स मूरिज्ज वंसी। नरंसिंघ रायं सुनै पद्म अंसी॥
दुऔ आय पंच्यौ भरं पंगतामं।मिले आय अड्डौ घटं न्रिप्प ठामं॥
छं० ॥ २३३६ ॥

हयौ किसन राजं हयं विंझ राजं।पर्‍ययौ भोमि उच्च्यौ सु चालुक्क गाजं॥
तिने जुद्ध मंतौ महंतं करारं। महा झाक वज्जी समं मार मारं॥
छं० ॥ २३३७ ॥

तिनं तार आवद्ध वज्जै चिघाई। हयौ किसनराजं जिनं अस्व टाई।

असी रुद्रसिंघं हयौ बिंझ रायं। सिरं तास तुट्यो पज्यौ भूमि भायं॥
छं० ॥ २३३८ ॥

बिना सीस सों संग्रह्यौ रुद्रसिंघं। फिरक्यौ सु फेज्यौ पछाज्यौ परिंघं॥
गयौ आसु उड्डी तनं तम्मि नंष्यौ। बिना सीस धायौ चिषा जुद्ध भुष्यौ॥
छं० ॥ २३३९ ॥

जयं जंपियं देवि सो पुरुष नष्यै। टगं टग्ग लग्गी सबं सेन अष्यै॥
घटी दून सारद्ध बिन सीस भ्भु भ्भयौ। घनं घाय अग्घाय अंतं अलुभ्भयौ॥
छं० ॥ २३४० ॥

पज्यौ विंझराजं रच्यौ रूप जानं। बज्यौ मांड़ चालुक्क सो बंभ थानं॥
इनं देषि पंगं दलं हाय मानी। अहो बीर चालुक्क कित्ती बषानी॥
छं० ॥ २३४१ ॥

सबै छच छची न की हद्द रष्पी। भषी चंद कित्ती तहां स्हर सष्पी॥
*　*　*　*　॥　*　छं० ॥ २३४२ ॥

विंझराज द्वारा पंग सेना के सहस्र सिपाहियों का मारा जाना।

दूहा ॥ सहस एक परि पंग दल। धन धन जंपै धीर॥
जै जै सुर बद्दै सयन। धनि धनि बिंझा बीर॥ छं०॥२३४३॥

विंझराज की वीरता और सुकीर्ति।

कवित्त ॥ परत अचल चहुआन। पच्छ गुज्जर रषि लाजं॥
भित्त भाग सामंत। सार न्रप जल तन भाजं॥
रूप रूप रष्यनह। दैन टट्टी बच्छारं॥
अरि रुक्की वसि सार। कीव तन भंग प्रहारं॥
तन तुट्टि सिरह पलचर ग्रस्यौ। बलि बिंटीह बिराधि जिम॥
इम विटि पंति अच्छरि परी। ससि पारस रति सरद जिम॥
छं० ॥ २३४४ ॥

कलिन कल्यौ असियन मिल्यौ। भरहरि नहि भग्गौ॥
अजसुन लयौ जस वनि भयौ। अमग्ग न लग्गौ॥
पहुन लयौ [1]जियन गयौ। अपजस नह सुनयौ॥

(१) को. कृ.-जियतन।

और न ज्यौं द्वरि न गयो। गाहंत न गह्यौ॥
गयौ न चलि मंदिर दिसह। मरन जानि झुभयौ अनिय॥
बिंझ दिय दाग तिलकह सिसह। वह वह्न वह भग्गल धनिय॥
छं० ॥ २३४५॥

दूहा॥ परत देषि चालुक्क धर। करिग पंग दल कूह॥
जिम सु देव इंद्रह परसि। रहे बीटि अनजूह॥छं०॥२३४६॥

विंझराज के मरने पर पंग सेना में से सारंगदेव जाट का अग्रसर होना।

कवित्त॥ परत बींझ चालुक्क। गहकि रा पंग सेन दल॥
जट्टराव सारंगदेव। आयौ तपितं वल॥
सहस तीन असवार। धार धारा रस मघ्यं॥
न्त्रिमल नेह स्वामित्त। सिंघ रन वहै सु हथ्यं॥
नाइयौ सीस नंमि पंग कह। दईय सीष पहुउंच कर॥
उप्पारि बग्ग निज सेन सम। भला प्रसंसिय अप्प भर॥
छं० ॥ २३४७॥

फिरिय चंपि चहुआन। पंग आयस धाय सु गसि॥
गहौ गहौ उच्चारि। पंग संकर संकर रस॥
देव सोन पद्धरी। लुथ्थि लुथ्थिय आहुट्टिय॥
मरन जानि पावार। सलष संकर रस जुट्टिय॥
बाला सु वृद्ध जोवन पनह। देवल पन जिहि न्त्रिब्भयौ॥
भयौ ओट मंडि ढिल्लिय न्त्रिपति। सुबर बीर अड्डौ भयौ॥
छं० २३४८॥

पृथ्वीराज की तरफ से सलष प्रमार का शास्त्र उठाना।

दूहा॥ भयौ सलष पंम्मार जब। वज्जि दुहूं दल लाग॥
हसहि सूर सामंत मुष। मुरि कायर अभ्भाग॥ छं०॥२३४९॥

पंग सेना में से जैसिंह का सलख से भिड़ना और मारा जाना।

चोटक॥ गहि वग्ग फिऱ्यौ पति धार भरं। हय राज धरक्कत पाय भरं।

समरे निज इष्ट सु वीर बलं । धरि संगि उरंगिनि काल पलं ॥
छं० ॥ २३५० ॥

हहकारिय सीस असीस सजं । रस आवरि अप्प सु बीर गजं ॥
जपि संब्ह संझि पलझ्झिलियं । मिलि देव अयास किलक्कि लियं ॥
छं० ॥ २३५१ ॥

दिषि रूप सलष्य सुपंच सयं । हहकारि सुराग्गिय जट्ट रयं ॥
बजि आवध झाक सु हाक सुरं । कटि सीस धरहर ढारि धरं ॥
छं० ॥ २३५२ ॥

नचि बीर सुदेवि किलक्क लियं । हकि सेनह जट्ट हला बलियं ॥
जयसिंघ सु आय सनंमुषयं । सम आय सलष्य मिल्यौ रुपयं ॥
छं० ॥ २३५३ ॥

बजि आवध झाक करूर सुरं । हय तुट्टि उभै भर छोनि ढरं ॥
दुअ हक्कि उठे भर बीर बरं । मिलि आवध सावध बंछि भरं ॥
छं० ॥ २३५४ ॥

असि झारि सलष्य सु षग्ग झरं । जयसिंघ बिषंडस हूअ परं ॥
जय सिंघ परयौ सब सेन लषं । गहि आवध ताहि सलष्प धषं ॥
छं० ॥ २३५५ ॥

मिलि रीठ करार सुधार घरं । मुष लग्गिय भग्गिय सौर भरं ॥
हहकारिय धीर दुहथ्थ कियं । पति धार धस्यौ लषि जंपिलियं ॥
छं० ॥ २३५६ ॥

हल हल्लिय सेन जटं भजियं । सय तीन परे बिन हंस लियं ॥
भर क्षग्गिय देषि सु पंग न्रपं । हहकारिय हक्किय सेन अपं ॥
छं० ॥ २३५७ ॥

सब सेन हलक्किय पंग भरं । ग्रह कोपिय जांनि करूर नरं ॥
* * * । * * छं० ॥ २३५८ ॥

सारंगराय जाट और सलख का युद्ध और सारंगराय का मारा जाना।

कवित्त ॥ तब सु जट्ट सारंग । सुमन समसेर समाहिय ॥
बिरचि पांन करि सीस । सीस सघ्थां पर बाहिय ॥

टोप कट्टि बिय टूक। फुट्टि तिम बिचि सिर फट्यो॥
सुमन षांन कम्मांन। बांन लग्गत सिर थट्यो॥
रिंझयौ सूर सुर असुर दै। वर वर कहि करिवर धस्यो॥
दुअ हथ्थ मध्थ दई जट्टकै। धर बिन सिर धरनी ढस्यो॥
छं०॥ २३५९॥

सलख का सिर कटना।

गाथा॥ असि वर सिर बिरहीयं। बांनं संधांन मट्टीयं तीरं॥
प्राहार भल्लि ढरीयं। सूरा सलहंत वाह वाह धानुष्यं॥
छं०॥ २३६०॥

कवित्त॥ सिर ढरंत धर धुक्कि। झुक्कि कढ्ढी कट्टारिय॥
बिना कंध आकंध। सुद्ध होइ किद्ध प्रहारिय।
लग्गि सु धर फुटि पार। सुरिम सलंष करि बाह्यौ॥
षग्ग आह्यौ षिक्कि षेत। घाव अड्डें अध बाह्यौ॥
वाहंत घाव धर धर मिल्यौ। पराक्रम्म पम्मार किय॥
धनि उभय सेन अस्तुति करय। प्रथीराज सों[1] जाबु दिय॥
छं०॥ २३६१॥

राह रूप कमधज्ज। गज्जि लग्गयौ आकासह॥
धार तिथ्थ उर जांनि। न्हान पम्मार फिर्‌यौ तह॥
रुधिर मद्दु जब करिय। जीव तनु तिलनि षंड अस॥
जुरित सीस असि गहिय। पांनि सोभियहि केस कुम॥
करि न्रपति सार न्रप पंग दल। अब्बुअ पति जप सब्ब किय॥
उग्रह्यौ ग्रहनु प्रथिराज रवि। सलष अलष भुज दांन दिय॥
छं०॥ २३६२॥

दूहा॥ दियौ दान पम्मार वलि। अरि सारंग [2]समषेल॥
मरन जानि मन मझ्झ रत। लरि लष्पन बघ्घेल॥ छं०॥ २३६३

पंग सेना में से प्रतापसिंह का पसर करना।

कवित्त॥ बंधव पति कनवज्ज। सिंघ परताप समथ्थह॥
सुत मातुल जैचंद। ब्रह्म चालुक्क सु दत्तह॥

(१) ए. सों जावादिय। (२) ए.-मन।

तन उतंग गरु अत्त। गात दीरघ हथ्थ भर ॥
सहस घट्ट सेना सुभट्ट। कुल वट्ट जुद्ध जुर ॥
कट्टिय सु वग्ग न्रिप नाइ सिर। जनु वद्दल बद्धी अनिय ॥
जंप्पी सु अप्प सेना सरस। गहौ राज सुम्भर हनिय॥छं०॥२३६४॥

पृथ्वीराज की तरफ से लषन बघेल का लोहा लेना। प्रतापसिंह का मारा जाना।

छन्द नाराच ॥ दिषेव सांमि रिम्म सों बघेल सीस नम्मयं।
करे सु वाज सुद्ध भ्राज नम्म पाय सम्मयं ॥
बचे सु लोल फुल्लि अंग अप्प ईस गज्जियं।
करों सु षंड अप्प रिम्म सांइ षेत रज्जियं ॥ छं० ॥ २३६५ ॥
करे क्रपांन अस्समांन धाय संप रद्दलं।
चिते सु कांम स्वांमि तांम गज्ज औ करंकलं ॥
हनूअ मंच जंपि जंच धारि धीर षग्गयं।
सुचिंति इष्ट आइ तिष्ट हक्क हक्क जग्गयं ॥छं० ॥ २३६६ ॥
मिल्यौ सु धाइ षेत ताइ धारयं करारयं।
करंत हक्क धक्क डक्क भार धार धारयं ॥
परंत षंड सुंड तुंड वाजि दंत बिज्जलं।
उड़ंत सीस षग्ग दीस दिष्षि राज दुद्दलं ॥ छं० ॥ २३६७ ॥
नचै कमंध वीर बंध देवियं किलक्किलं।
करंत घाय एक तेक बिब्बि षंड विद्दलं ॥
रुलंत गिद्ध नच्चि सिद्ध पंषि संप हक्कियं ॥
षेलंति षेच भूचरीर गोमयं गहक्कियं ॥ छं० ॥ २३६८॥
वरंति विंद अच्छरी भरं सुचित्त चिंतयं।
करै अचिज्ज कौतिगं सुरं सु जुद्ध मंतियं ॥
धरंत षग्ग धाप यों प्रतप्प लष्षि लप्पनं।
हयौ बघेल षग्गधार तुट्टि षग्ग तप्पनं ॥ छं०॥ २३६९ ॥
ग्रहौ सु हक्किसं बघेलतं हन्यो कटारियं ॥
करे सु छिन्न भिन्नयं प्रताप भूमि पारियं ॥

करंत हक्क धार षग्ग षग्ग धारि नट्टरे ॥
हने सु राय पंग सेन छोनियं परं परे ॥ छं० ॥ २३७० ॥
करी अरूह मज्ज सिंघ लष्पनं गहक्कियं ।
ढरंत धार पंग भार भज्जि हक्क हक्कियं ॥
सघक्क घाय बिड्डि ताय मुच्छि लष्पनं ढरं ।
पर्यौ प्रताप पंग भाय पंच सी परप्परं ॥ छं० ॥ २३७१ ॥

लष्षन बघेल का वीरता के साथ खेत रहना।

कवित्त ॥ जीति समर लष्पन बघेल । अरि हनिग षग्ग भर ॥
तिधर तुट्टि धरनह्नि धुकंत । निवरंत अद्ध धर ॥
तहँ गिद्धारव हरिग । अंत गहि अंतह लग्गिग ॥
तरनि तेज रस बसह । पवन पवनां घन बज्जिग ॥
तिहि नाद ईस मथ्थौ धुन्यौ । अमिय बुंद ससि उलस्यौ ॥
बिढस्यौ धवल संकिय गवरि । टरिय गंग संकर हस्यौ ॥
छं० ॥ २३७२ ॥

दूहा ॥ सात कमल ससि उप्परह । कान्ह चंद गोयंद ॥
निडुर सलष बरसिंह नर । साष भरै सुर इंद ॥ छं० ॥२३७३॥
चौपाई ॥ [1]पारस फिरि सेनं प्रथिराजं । द्वै गै दल चतुरंगी साजं ॥
सो ओपम कविराजह ओपी । ज्यों इंद्र पुरी बलि धूरत कोपी
छं० ॥ २३७४ ॥

लष्षन बघेल की वीरता।

कवित्त ॥ दल सु पंग न्टप चंपि । राज बिंध्यौ चतुरंगी ॥
तह लष्पन बघ्घेल । षेत संभरि अनभंगी ॥
राज कमाननि षंचि । षग्ग षोलिय षिजि जुट्टिय ॥
कै बड़वानल लपट । बीच सप्पर तें छुट्टिय ॥
करि भंग अग्गि अरि जुग्गि जुरि । मोरि मुहम मूरत्त मन ॥
हय सत्त अंत तिन एक किय । परिन समझि ढूढंत घन ॥
छं० ॥ २३७५ ॥

(१) ए. कृ. को.-परि पारस सेनं प्रथिराजं ।

पहार राय तोमर का अग्रसर होना ।

दूहा परत वघेल सु मेल किय । रन रट्टौर सु सार ॥
कनवज ढिल्लिय कंकरह । तोंवर तिष्ट पहार ॥ छं० ॥ २३७६ ॥
कवित्त ॥ द्वादस दिन पच्छलौ । घटी पल वीह समग्गल ॥
सविता वासर सेत । दससि दह पंच विजय पल ॥
सिल्लिय चंद निज नारि । रारि सज्ज्यौ सु रुद्र रस ॥
रा असोक साहनी । सहस सेना सु अट्ठ तस ॥
स्वामित्त ध्रम्म रत्तौ सु रह । करै प्रीति रा पंग तस ॥
लष्ष्यो सु जाइ चहुआन दिग । क्रम्यौ फौज बंधिय उक्कसि ॥
छं० ॥ २३७७ ॥

जैचन्द का असोक राय को सहायक देकर सहदेव को धावा करने की आज्ञा देना ।

पंग देषि साहनी । जात जंगल पहु उप्पर ॥
मनहु सिंघ पर सिंघ । बीर आवरिय स्वामि छर ॥
तव राधा सहदेव । देषि दिसि वाम समग्गल ॥
चषरत्ता हवि जान । अप्प उड्डर जादव कुल ॥
सिर नाइ आइ अघघा सरकि । दिय अग्यां पहु पंग तमि ॥
संग्रहौ जाइ चहुआन कौं । रा असोक साहाय क्रमि॥छं०॥२३७८॥
दूहा ॥ नाइ सीस मिलि निज सयन । दिय अग्यां बर पंग ॥
बंधि अनिय द्वादस सहस । बाजे बज्जे जंग ॥ छं० ॥ २३७९ ॥

सहदेव और असोक राय का पसर करना ।

सजिय अप्प सहदेव दल । अनिय सु राय असोक ॥
मिल्लौ जाइ मध्ये सु भर । अप्प चिंति उधलोक ॥ छं०॥२३८०॥
रा असोक सहदेव रा । मिलि उभ्भय दल येक ॥
सहस वीस दल भर जुरिग । चले सु तत्ते तेक ॥ छं०॥२३८१॥
प्रथीराज वांई दिसा । [1]आवत पल दल देषि ॥
गहिय वग्ग पाहार सम । तपि दिय आयस तेष ॥छं०॥२३८२ ॥

(१) मो -आवत देख दिलेस ।

पृथ्वीराज को तोमर प्रहार को आज्ञा देना।

कवित्त ॥ दल सु पंग रठ्ठिवर। जाम चंपिय द्दिल्लिय भर॥
तब जंपिय प्रथिराज। पंड वंसह पाहर नर॥
हरि हथ्थां हरि गहिहि। बांस रप्पै इहि वीरह॥
सेस सीस कंपियै। डट्ठ डुल्लिय भुवि मीरह॥
कविचंद एह आंपुब्ब सुनु। वीर मंच उब्बर भऱ्यौ॥
ठठुक्यौ सेन जयचंद दल। जए तोंअर टट्टर धऱ्यौ॥छं०॥२३८३॥

नाइ सीस प्रथिराज। अप्प कस्स्यौ हय हंसह॥
तारापति सम तेज। षिचि वाहन हरि वंसह॥
[1]हंस हंस आपेष। इष्ट मंचं उच्चारिय॥
चल्यौ जंपि सुष राम। स्वामि अम्मह संभारिय॥
[2]जोगनी जूह दुअ हुअ। वीर जूह अग्गै सु नचि॥
निरषंत अमर नारद निगह। अच्छरि रथ सीसह सु रचि॥
छं० ॥ २३८४॥

पहारराय तोमर का युद्ध करना। असोक राय का मारा जाना।

पद्धरी ॥ उप्पारि बग्ग तोमर पहार। गज्जयौ सूर सज्जे सु सार॥
उद्भंत रूप अरि बीस दिट्ठ। सौ एक रूप अभिलयंत जिठ्ठ॥
छं० ॥ २३८५॥

साहस्स तेग वाहंत ताम। दिष्पे सु षेत षल स्वामि काम॥
धारा सुधार वाहंत बीर। गज्जयौ मभ्भ मनु करि कंठीर॥
॥ छं० २३८६॥

तुट्टंत सीस उड्डंत रिष्ट। अब संक बुद्धि मनु उपल वृष्टि॥
तुट्टंति वाह [2]उड़ि सघन घाय। उड्डंत चिल्लह मनु पंप पाइ॥
छं० ॥२३८७॥

धर धर धरब्बर परै भार। कट कट्ट षग्ग बज्जै करार॥

---

(१) ए.-हंस हेस आयप्प हअ। (२) मो. मनुं।

तुट्टै विषग्ग उड्डै अकास । चमकंत तड़ित मनु मेघभास ॥
छं० ॥ २३८८ ॥

परसंत पूर ओनं प्रवाह । गहरंत कंठ सट्टी सुवाह ॥
आइयौ राय अस्सोक गज्जि । दो हथ्थ करारी संग मज्जि ॥
छं० ॥ २३८९ ॥

वेहथ्थ हयौ तोमर पहार । भिट्टयौ न अंग तुट्टौ सु सार ॥
संग्रह्यौ कंठ तोमर पहार । पच्चारि सीस उप्पर उभ्भारि ॥
छं० ॥ २३९० ॥

करि षंड षंड नंष्यौ धराउ । बिन अंस उड़्यो [1]जरनी निहाउ ॥
रिन मभ्भ्झ पर्‌यौ अस्सोक जानि । ओहर्‌यौ पेंड पंचह परांनि ॥
छं० ॥ २३९१ ॥

कवित्त ॥ धरिय भार पाहार । पग दल बल्ल ढंढोस्यौ ॥
[2]हय गय नर नर पतिय ताम । बंबर झंझोस्यौ ॥
छच पच मारुत महंत । अरि बांन उड़ाइय ॥
मार सार संभार चंद । जिस [3]मुष मुष सांइय ॥
आनंद केलि कलहंत किय । इय हिलोल दल दुम्भरिय ॥
तों अर चिवालमारह सुभर । सिरसुबर अझ्झर झरिय ॥
छं० ॥ २३९२ ॥

पहार राय तोमर और सहदेव का युद्ध । दोनों का मारा जाना ।

भुजंगी । तवै राइ सहदेव देवंग वीरं । धरे धाइयौ संग से हथ्थ धीरं ॥
हयौ राइ पहार सों कंठ मन्नी । परे फुट्टि उड्डी उकस्सी सु अन्नी ॥
छं० ॥ २३९३ ॥

ग्रह्यौ सेल मंगै मह देवि तामं । [4]चल्यौ बथ्थ हथ्थे उड्यौ हंस धामं ॥
ढरे दून कल्ले बरकू अचेतं । दुनै सूर जुझ्झै उभै स्वामि हेतं ॥
छं० ॥ २३९४ ॥

(१) ए. कृ. को.-धरनी । (२) ए. कृ. को.-हय गय नर पतिय पताप ।
(३) ए. कृ. को.-सुप । (४) ए. कृ. को.-चप्यौ ।

परंतं पहारं उठी श्रोन धारं। उठे वीर मत्ते सु रत्ते करार॥
सहस्सं सु एकं सयं दून वीरं। करै अस्सि उतंग मा गात धीरं॥
छं० ॥ २३६५॥

पंग नेत बंधे किलक्कार उट्ठे। नचै जाम वीरंत रत्ते सु रूट्ठे॥
धरक्के सु गोमं धरक्के धरन्नी। भरक्कंत सेना सु भग्गै परन्नी॥
छं० ॥ २३६६॥

ग्रहै गज्ज दंतं फिरक्कंत उड्डै। पियै श्रोन धारं गजं पात गुड्डै॥
भयो पंग सेनं सनेहंति कारं। फिरै जोगिनी सद्द मद्दी फिकारं॥
छं० ॥ २३६७॥

भगौ सेन रायं भरक्कै सु पंग। धरी एक वित्ती भरं वित्ति जंगं॥
उड़ै वीर अस्सं सु आकास मंगै। पहुं राउ पाहार गौ मुत्ति मग्गं॥
छं० ॥ २३६८॥

दूहा॥ गरजै दल्ल जैचंद गुर। धुर भग्गौ ढिल्लीस॥
वासर जीजै वेढि थिय। चंद चंद रवि रीस॥ छं०॥ २३६९॥

जंघार भीम का आड़े आना।

तब जंघारो भीम भर। स्वामि सु अग्गे आइ॥
गहि असिवर उब्भभ्भन उससि। कमध कमद्दा धाइ॥ छं० ॥२४००॥

कवित्त॥ रा कमधज्ज नरिंद। अड्ड षोहनिय तुरंगयि॥
तिन महि अड्डमि जक्क। जीन नग भुत्ति सुरंगिय॥
तिन छुट्टत हल्ल बलत। साहि सामंत राज चढ़ि॥
ते थल थक्कवि रहित। चहूआन सु राजन रढ़ि॥
सिथि सिथिल गंग थल बल्ल अबल। परसि प्रांन[1]मुक्किन रहिय॥
जुरि जोग मग्ग सोरों समर। चवत जुद्ध चंदह कहिय॥
छं० ॥ २४०१॥

पंग सेना में से पंचाइन का अग्रसर होना।

कुंडलिया॥ सिलहदार पंचाइनौ। करि जुहार पग धार॥
पंग ससुद मभ्भझहि परिय। वजि धुंम्मरि ग्रह पार॥

(१) ए.कृ. को.-मुक्किय।

वजि धुम्सिरि गहृ पार । सार जुथ परिय उदक मथ्यि ॥
ज्यों बड़वानल [1]लपट । मथ्यि उ[2]ट्ठंत नरं नथ्यि ॥
सार झार तन झरिग । सीस तुथ्थौ धरनी लहि ॥
जोगिनि पुर आवास। मिलन हंहं हय मीलहि ॥ छं० ॥ २४०० ॥

जंधार भीम और पंचाइन का युद्ध ।

कवित्त ॥ दहन पंथ सो इष्ट । देव दाहिन देवं फिरि ॥
घात वज्र निग्घत्ति । हक्कि चहुआन मझ्झि परि ॥
सुवर बंध कमधज्ज । धाक वज्जे इक्केरव ॥
तृष जुद्दं हर हरी । जुद्ध वज्जी जुक्क्ष्म रव ॥
मिलि सार धार विषमह विमल । कमल सीस नच्चै कि जल ॥
सिव लोक सेत नत मीन धन । सुर सुर कंदल बत्त फल ॥
चं० ॥ २४०१ ॥

पृथ्वीराज का सोरों तक पहुंचना ।

दूहा ॥ पुर सोरों गंगह उदक । जोग मग्ग तिथ वित्त ॥
अदभुत रस असिवर भयौ । बंजन बरन कवित्त ॥
छं० ॥२४०२ ॥

किस सामंत के युद्ध में पृथ्वीराज कितने कोस गए ।

कवित्त ॥ वेद कोस हरसिंघ । उभै चियत्त बड़ गुज्जर ॥
काम वान हर नयन । निडर निड्डुर भुमि [3]सुभ्भझर ॥
छग्गन पट्ट पलानि । कन्ह पंचिय द्रग पालह ॥
अलह बाल द्वादसह । अचल विग्घा गनि कालह ॥
शृंगार विंझ मलषह सुकथ । लषन पहारति पंचचय[4] ॥
इत्तने सूर मय झुभ्भझ तह । सोरों पुर प्रथिराज अय ॥
छं० ॥ २४०३ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-पलट । (२) ए. कृ. को. हंत ।
(३) ए. कृ. को.-सुद्धर । (४) मो.-सय ।

अपनी सीमा निकल जाने पर पंग का आगे न बढना और महादेव का दस हजार सेना लेकर आक्रमण करना।

पय्यौ पेषि पाह्नार। राज कामधज्ज कोप किय॥
पहु सोरों प्रथिराज। निकट दिष्यो सुचिंति हिय॥
गयौ राज जंगलिय। नाथ कनवज्ज मन्नि मन॥
जग्य जोंग बिग्गार। लहिय जै पुनि हरिय तिनु॥
आइयौ राइ महदेव तब। नाय सीस बोल्यौ वयन॥
संग्रहों राज प्रथिराज को। सह्वों पहु जंगल सयन॥
छं० ॥ २४०४ ॥

इम कसि सुत सामंत। देव सजि चल्लौ सेन वर॥
लील नाम पम्मार। प्रिथक परसंसि अप्प भर॥
जपि वाया जगनाथ। थान उच्चारिय धीरह॥
अनी बंधि दस सहस। अप्प सल्लै पर पीरह॥
ठननंकि घंट भेरिय सबद। पूरि निसान दिमान सुर॥
महदेव चल्यौ प्रथिराज पर। मिलिय जुद्ध मनु देव दुर॥
छं० ॥ २४०५ ॥

महादेवराव और कचराराय का द्वंद युद्ध। दोनों का मारा जाना।

पद्धरी ॥ आवंत देषि महदेव सेन। उप्पारि सीस भर सज्जि गेन॥
मातुलह सयन संयोगि बंध। बर लहन धीर भर जुद्ध नंध॥
छं० ॥ २४०६ ॥

कच्चराराय चालुक धीर। आवंत देषि दल गज्जि वीर॥
सिरनाइ राज प्रथिराज ताम। बल कलिय वदन उरकंक काम॥
छं० ॥ २४०७ ॥

इक वार पहिल लग्गो सु घाय। जित्तए सुभर तिन पंगराइ॥
संजोगि नेग दिय कंठ माल। पहिराइ कंठ वज्जी भुआल॥
छं० ॥ २४०८ ॥

गज्जियो भीम जिम सुअन भीम । पेषेव जूह मनुहरि करीस ॥
कस्सियो तंग वज्जी सु नेत । संकलपि सीस प्रथिराज हेत ॥
छं० ॥ २४०९ ॥

आयौ ससुप्प रिम्मह समथ्थ । चिभाग संग किय सीघ्र हथ्थ ॥
उच्चरिय मंच भैरव कराल । उड्डरिय ध्यान चिपुराइ बाल ॥
छं० ॥ २४१० ॥

किल किलिय किइ भैरवह जाम । हुंकार देवि दीनो सु ताम ॥
परदल पयठ्ठ उप्पारि वग्ग । घुल्लिय कपाट भर स्वर्ग मग्ग ॥
छं० ॥ २४११ ॥

वाहंत षग्ग भर सीघ्र हथ्थ । कुर सेन मद्धि मनु रिल्लिय पथ्थ ॥
वाहंत षग्ग आयुध अपार । धर धार धरनि मधि भरनि भार ॥
छं० ॥ २४१२ ॥

किलकार बीर चालुक्क सथ्थ । नाचंत भूत भैरव सु तथ्थ ॥
सुष मुष्प लग्गि चालुक्क [1]षाय । बिबि षंड धरै धर तुट्टि धाय ॥
छं० ॥ २४१३ ॥

कोतिग्ग रास देषंत देव । नारद बिनोद नंचीय एव ॥
बर बरै इक्क अच्छरिय ताम । पलचर पल पूरै रुहिर काम ॥
छं० ॥ २४१४ ॥

रस रुद्र भयौ भर जुद्ध बीर । पूजंत सब्ब चालुक्क धीर ॥
चालुक्क तेक रस रमै [2] रास । चमकंत षग्ग कर बिज्जु भास ॥
छं० ॥ २४१५ ॥

महदेव सेन हल हलत देपि । ग्रह राह जेम दल ग्रसत [3]पेषि ॥
घन पूरि घाव चालुक्क अंग । बर तत्त सुमत्तन वधिय रंग ॥
छं० ॥ २४१६ ॥

धाइयौ ताम महदेव तस्स । चालुक्क हयौ संगी उरस्स ॥
दुअ लग्गि वीर मिल्लि विषम घाव । आवद्ध तुट्टि दुअ बीर ताव॥
छं० ॥ २४१७ ॥

---

(१) मो.-थाइ । (२) मो.-राहु । (३) मो - देपि ।

लग्गे सु बथ्थ समवय सरूप। दुअ अट्ठ बरष दुअ ध्रम्म भूप॥
लग्गे सु कंठ असि उट्ठि ताम। दुअ झुज्झि भूप दुअ सामि काम॥
छं०॥२४१८॥

दुअ चले सुत्ति मारग्ग सग्ग। बिम्मान जानि बिचि बिचित्र लग्ग॥
अच्छरिय उंच रुंधें सु नेव। जय जय चवंत नंषि कुसुम देव॥
छं०॥२४१९॥

भेदे सु उरध मंडलह दून। बर मुत्ति गत्ति प्रम्मे सु ऊन॥
[1]दुअ ढरे गंग मह जल प्रवाह। उप्रमे ताम गुन बंध थाह॥
छं०॥२४२०॥

लीलराय प्रमार और उदय सिंह का परस्पर घोर युद्ध करना और दोनों का मारा जाना।

कबित्त॥ लीलराइ पम्मार। राइ महदेव सु सेवं॥
सहस तीन थट सुभट। आय उप्पर वर केवं॥
मार मार उच्चार। सार गज्जे मुष मारह॥
तेन मुष्प जगदेव। धार बज्जिय पति धारह॥
धरि क्रोस सीस सजि सामि ध्रम। झर उज्झार दुझ्झरति झर॥
मानों कि बघघ गड्डुर बिचह। झपट लपट लेयंत झर॥
छं०॥२४२१॥

बेली भुजंग॥ धुरं झार झट्टं बजे घट्ट घट्टं। लगे पंग भट्टं अगी झल्ल पट्टं
भगे थट्ट जानं दहं बट्ट मानं। परे गज्ज बानं भरं थान थानं॥
छं०॥२४२२॥

तबै नील देवं अयौ देव सुष्पं। दुअै बीर बाहं दुअै सामि रुप्पं॥
उदै दीन पुत्तं उदैसिंघ देवं। इतै राव बंभं उत देव सेवं॥
छं०॥२४२३॥

दुअं गात उच्चं सिरं उंच धारे। मनो सेन कोटं मझ्झारं मुनारे॥
करं नंषि [2]चंमं पगं दोय हथ्थं। उझ्झारै सु मथ्थं दुअं टोप [3]कथ्थं॥
छं०॥२४२४॥

(१) ए. कृ. को-दुअठेर गंमा मझी। (२) मो.-चमं, को.-चर्म। (३) [illegible]

फटै उत्तमंगं टहंनं सुरंगं । गिरं जानि चल्लं रतं धार गंगं॥
घरी एक धारं अपारंति बग्गै । षगं सार तुट्टै जमंदड्ढ लग्गै ॥
छं० ॥ २४२५ ॥

हये ऊर ऊरं उनंके उनाही । ढरे दोइ कल्लेवरं गंग माहीं ॥
सिरं सुम्मनं देव ब्रष्या विराजै । पछै सूर धारं वरं रंभ [1]छाजै ॥
छं० ॥ २४२६ ॥

तिनं सीस देवी दियौ सामि काजै । वरं तास कित्ती जगम्मै विराजै॥
जमं ठौर ठेलै गयौ ब्रह्म थानं । जिनै जित्तयौ लोक परलोक मानं ॥
छं० ॥ २४२७ ॥

कचराराय के मारे जाने पर पंग दल का कोप करके धावा करना ।

कवित्त ॥ गरजे दल जै चंद । सीस पहु देन नरेसर ॥
समर सूर सामंत । सु पुनि भ्रुज्झे नर सुद्धर ॥
पऱ्यौ भार पम्मार । अंग एकै आचग्गर ॥
वासुर तीजै वेढि । कलह वेथक्कि बाहि करि ॥
जगि देवन दानव देव जगि । पार सार उरवार पनि ॥
थंभयौ कटक षोहनि विकट । [2]देव सु एवं बद्दियनि ॥छं०॥२४२८॥

दूहा ॥ कीन सहस मे तीन सय । सूर धीर संग्राम ॥
वधि पम्मारह वीर बर । दम गै अस्सव ताम ॥ छं० ॥ २४२९ ॥

कवित्त ॥ दुहु पष्षां गंभीर । दुहुं पष्षां छत्र पत्ते ॥
दुहु पष्षै राजान । दुहुं पष्षै रावत्ते ॥
दुहु वाहाँ दुज्जरह । मात मातुल मुष लष्षै ॥
कंठमाल सुभ कंठ । नाग [3]माजों गह रष्षै ॥
संकटह स्वामि वंकट विकट । चिघट रुक्कि कमधज्ज दल ॥
अदित वार दसमिय दिवस । गरुअ गंग ध्रंमुंग जल ॥
छं० ॥ २४३० ॥

---

(१) मो.-साजै । (२) ए. कृ. को.- दैव सुए षग वद्दिय ।
(३) ए. कृ. को. नाग सौ जोग सुरष्षै

कचराराय का स्वर्गवास ।

संगराय भानेंज । राय कचरा अरि कच्चर ॥
गरुअ ध्रंम स्वामित्त । सार संमुह रन अच्चर ॥
पट्टन सिर अरु पट्ट । गंग घट्टह [1]घन नष्प्यौ ॥
जै जै जै जपि सद्द । नद्द त्रिभुअनपति भष्ष्यौ ॥
पष्परत पलिय बज्जिय बिहर । उग्रराय रट्ठौर धर ॥
चालुक चलंत सुभ स्वरगमन । ब्रह्म अरघ दीनौ सु धर ॥
छं० ॥ २४३१ ॥

कचराराय का पराक्रम ।

दूहा ॥ परें पंच सें पंग भर । परि चालुक्क सु तथ्थ ॥
बिलष बदन प्रथिराज भय । बंछिय मरन सु अप्प ॥छं०॥२४३२॥
निसि नौमिय वित्तिय लरत । दसमिय पहु रिति च्यार ॥
पंगपहुमि प्रथिराज भिरि । अथ्यिग आदित वार ॥ छं०॥२४३३॥

सब सामंतों के मरने पर पृथ्वीराज का स्वयं कमान खींचना ।

कवित्त ॥ घरिय सत्त आदित्त । देव दसमिय दिन रोहिनि ॥
रुक्यौ तथ्थ प्रथिराज । पंग सथ्थह अध षोहनि ॥
पंच अग्ग च्यालीस । सत्त सामंत सु रत्तिय ॥
पंच अग्ग पंचास । मझ्झि सथ्थह सेवक तिय ॥
वामंग तुरंगम राज तजि । तोन सज्जि सिंगिनि सु कर ॥
बंदेव चंद संदेह नह । जीवराज अचरिज्ज नर ॥छं०॥२४३४॥

जैचंद का बराबर बढ़ते आना और जंघार भीम का मोरचा रोकना ।

दूहा ॥ [2]गंग पुट्ठि अग्गै विहर । ब्रत बंकौ जल किंदु ॥
उद्यौ छत्र न्रप पंग पर । मनु हेमं दंड पर इंदु ॥छं०॥२४३५॥
गरजे दल जैचंद गुर । धुर भग्गे दिसि स ॥

(१) ए. कृ. को.-घट । (२) मो-संग ।

वासुर तीजै वैठितं। चंद चंद रवि रेस ॥ छं० ॥ २४३६ ॥
तब जंघारो भीम भर। स्वामि सु अग्गै आय ॥
गहि असिवर ओड़न उकसि। [1]कमध कमद्धा धाय॥छं०॥२४३७॥

कवित्त ॥ जंघारौ रा भीम। स्वामि अग्गै भयौ ओड़न ॥
दुहुं बाहां सामंत। दुहूं द्वादस दस को दन ॥
पच्छ सथ्थ संजोगि। कलह कंतिय कौतूहल ॥
सहन रंभ मोहनिय। सुरां अम्रत तदूलह ॥
दुहुं राय जुद्ध दुंदज भयौ। चाहुआन रट्ठौर भर ॥
धरि च्यारि श्रोन असिवर झस्यौ। मनहु धुम्म अग्गा सु झर ॥
छं० ॥ २४३८ ॥

जंघारे भीम का तलवार और कटार लेकर युद्ध करना।

भुजंगी ॥ झरं झार झारंति झारंति झारं। ढरं ढार ढारंति ढारंति ढारं॥
तुटै कंध कामंध संधं उसंधं। बहै संगि षग्गं रतं रंध्र रंध्रं ॥
छं० ॥ २४३९ ॥

चवं सूर सेलं सरं सार सारं। लगै कोन अंगं विभंगं विहारं॥
चलै श्रोन सारं [2]विरंतं सुधारं। मनों वारि रुद्धं अनंतं प्रनारं॥
छं० ॥ २४४० ॥

वजै घट्ट घट्टं सवद्दं सवद्दं। नको हारि मन्नै नको मेटि हद्दं ॥
तुटै षग्ग लग्गै गहे हथ्थ वथ्थं। मनों मल्ल जूझंत वेजानि वथ्थं॥
छं० ॥ २४४१ ॥

वढी श्रोन धारा रनं पूर पूरं। चढ़ी सक्ति ऊभी कमद्धंति सूरं ॥
जयंतं जयंतं चवंसठ्ठि सद्दं। असी तार झारं नचे नेम नद्दं ॥
छं०॥ २४४२ ॥

वजै जंगलीसं विडारं विडारं। करं धारि झारं सकत्ती करारं ॥
करी फुट्टि सन्नाह प्रगटंत अच्छी। मुषं झीमरा कंध काढंत मच्छी॥
छं० ॥ २४४३ ॥

---

(१) मो.-कमवज कमवा धाय। (२) ए. कृ. को.-चिरत।

धरे बारड सिंह आघाय घायं । [1]वरं वार सुष्पं अगंमन्न धायं ॥
जिते सेन बिग्घा कटे पग्ग हक्कं । परे कातरं मं भयानंक टक्कं ॥
छं० ॥ २४४४ ॥

लघं चंपियं सीस चहुआन धायं । गनो सिंघ क्रम्यौ मदं दंति पायं ॥
लघं लाघ बंकौ न बाहंत बंकं। मनों चक्र भेदंत मीमं निमंकं ॥
छं० ॥ २४४५ ॥

कटे टट्टरं टूव सन्नाह वट्टं । वहै पग्ग भट्टं मनो बीज छट्टं ॥
मधे ओन फेफं सु डिंभं फरक्कं । मनो मभ्भ नाराज छुट्टंत भक्कं ॥
छं० ॥ २४४६ ॥

न्रिपं पोषि धारा धरै धाय धायं । उठै दंग वग्गं मनों लष्पगायं ॥
चवै पंग आनं गहन्नं गहन्नं । जगन्माल क्रम्यौ सुन्यौ मीम धुन्नं ॥
छं० ॥ २४४७ ॥

[2]करन्नाटिया राय रुद्दंतिरायं । रवै वाम दच्छिन्न राजंग सायं ॥
बहै बिंभ्भ मालं करीवार सथ्थं । दुअं लग्गि भ्भाकं मनो कोपि गथ्थं ॥
छं० ॥ २४४८ ॥

कलेवार गट्ठं परे छेदि बंभं । मनों भ्रंग पंछी सु उड्डंत संभं ॥
[3]नरं हक्क बज्जी सु रज्जी सकत्ती । रची पुष्प विष्टं पहं देवि पत्ती ॥
छं० ॥ २४४९ ॥

असी भ्भाक बज्जंत रज्जंत मूरं । भयं चक्क जुद्धं भयं देव दूरं ॥
दलं टून धारों ढरै षंड षंडं । बरं संग्रहै ईस सीसंति रुंडं ॥
छं० ॥ २४५० ॥

थनं थोर ह्र राग ह्ररं वरंती । रचे माल कंठं कुसम्मं हरंती ॥
सजै सेंन [4]आव्रन्न व्रन्नं विमानं । वरं रोहि तथ्थं क्रमं अप्पयानं ॥
छं० ॥ २४५१ ॥

जयं सद्द बद्दं पलं ओन चारं । थक्यौ ह्रर नारद्द नच्यौ विहारं ॥
घनं घाइ अघघाइ सामंत ह्ररं । धरे मंडलं सब्ब सामुच्छि भ्रूरं ॥
छं० ॥ २४५२ ॥

---

(२) ए. कृ. को.-मार । (१) मो.-करै लाटिया (२) ए. कृ. को. मं, भ्रं ।
(४) ए. कृ. को.-कावन्न ।

दह पंच पंग परे सूर सारं। भर राज सामंत हथ्थे हजारं॥
भयं अद्भूतं रसं बीर बीरं। घटी दून जुद्धं विहानं बिहारं॥
छं० ॥ २४५२॥

तब जंघारौ जोगी जुगिंद। कत्ती कट्टारौ॥
असि विभूति घसि अंग। पवन अरि भूषन हारौ॥
सेन पंग मन मथन। [1]चम्म षग गयँद प्रहानं॥
[2]पलति मुंड उरहार। सिंगि सद बदन त्रिषानं॥
आसन सु दिठ्ठ पग दिठ्ठ बर। सिरह चंद अंमृत अमर॥
मंडली राम रावन भिरत। नभौ बीर इत्तौ समर॥छं०॥२४५३॥

जंघारे भीम का मारा जाना।

घरिय च्यार रवि रत्त। पंग दल बल आहुट्यौ॥
तब जंघारौ भीम। ध्रंम स्वामित तन तुट्यौ॥
सगर गौर सिर मौर। रेह रष्षिय अजमेरिय॥
उड़त हंस आकास। दिठ्ठ घन अच्छरि घेरिय॥
जंघार सूर अवधूत मन। असि विभूति अंगह घसिय॥
पुच्छयौ सु जान त्रिभुवन सकल। को सु लोक लोकैं बसिय॥
छं० ॥ २४५४॥

पंगदल की समुद्र से उपमा वर्णन।

भय समुंद जैचंद। उतरि जै जै क्यौं पारह॥
अद्भुत दल असमान। अन्न बुड्डहि करिवारह॥
तहां बोहिथ हर ब्रह्म। भार सब सिर पर पधर्‌यौ॥
उद्धरि उद्ध कुमार। धनि जु जननी जिहि जनयौ॥
नन करहि अवर करिहै नको। गौर बंस अस बुझ्झयौ॥
सो साहिब सेन निवाहि करि। तब अप्पन फिरि झुज्झयौ॥
छं० ॥ २४५५॥

वर छंड्यौ दुहु राय। वरुन छंड्यौ वर वारर॥
सिर थक्यौ सहि सार। वरुन थक्यौ गहि सारर॥

(१) मो.-ब्रह्म। (२) ए. कृ को. लपत। (३) ए.-मिरमार।

रव थक्यौ रव रवन। रवन थक्यौ मुष मारह॥
धर थक्यौ धर परत। मनुन थक्यौ उच्चारह॥
पायौ न पार पौरुष पिसुन। स्वामिनि सह अच्छरि जप्यो॥
जिम जिम सु सिंह सम्मीर सिव। तिम तिम सिव सिव सिव तयं
छं०॥ २४५६॥

पृथ्वीराज का शर संधान कर जैचन्द का छत्र उड़ा देना।

एक अंग तिय सकल। [1]विकल उच्चरिय राज मुष॥
भ्रकुटि अंक बंकुरिय। अंसु तिहि लिपिय मद्धि रुष॥
भिय विमान उप्पारि। देव डुल्लिय मिलि चल्लिय॥
भ्रम भ्रमंकि आयास। पत्ति अच्छरि [2]अलि मिल्लिय॥
एक चवै कवि कमल असि। मुकति अंक करि करिय न्रप॥
तन राज काज जाजह भिरिग। सु मति सोह भइ देव वपि॥
छं०॥ २४५७॥

चार घड़ी दिन रहे दोनों तरफ शान्ति होना।

घरिय च्यारि दिन रह्यौ। घरिय दुअ वित्तक वित्तौ॥
नको जीय भय मुर्यौ। नको हार्यौ न को जित्तौ॥
पंच सहस सें पंच। लुथ्थि पर लुथ्थि अहुट्टिय॥
[3]लिषे अंक बिन कंक। न को भुज्झयो बिन [4]षुट्टिय॥
दो घरिय मोह मारुत बज्यौ। करन अंभ बरष्यो निमिष॥
[5]तिरिगत्त राज तामस बुझ्यौ। दिषिय पंग संजोगि मुष॥
छं०॥ २४५८॥

जैचन्द का मंत्रियों का मत मान कर शान्त हो जाना।

[6]मुरझानौ जैचंद चरन। चंप्यो हम वर तर।
उतरि सेन सब पर्यौ। राव कह्यौ हरवं कर॥
लेहु लेहु न्रप करय। चवन चहुआन बुलायौ॥

(१) ए.-चिकल। (२) मो.-अरि मोलेय।
(३) ए. कृ. को.-पिले। (४) मो.-कुट्टिय। ए.-नको जियौ न विपुट्टिय।
(५) ए. कृ. को-तिहि लगता। (६) ए. कृ. को.-मुरगानौं।

सूर वीर मंत्री प्रधान। मिलि कै समुझायौ ॥
उत परे सध्य इत को गनै। असुगुन भय राजन गिय्यौ ॥
घर हुंत पलान्यौ अमत करि। सीस धुनत नर वै फिय्यौ ॥
छं० ॥ २४५९ ॥

दूहा ॥ नयन नंषि करि [1]कनक नह। प्रेम समुद्दह बाल ॥
प्रथम सु पिय ओड़न उरह। मनु भुलवति मुद्ध मराल ॥
छं० ॥ २४६० ॥

जैचन्द का पश्चात्ताप करते हुए कन्नौज को लौट जाना।

कुंडलिया ॥ दिष्षि पंग संजोगि मुष। दुष किन्नौ दल सोग ॥
जग्य जय्यौ राजन सघन। अवरन हुति संजोग ॥
अवरन अहुति संजोगि। किंत्ति अग्गी जल लग्गी ॥
ज्यों षल षट आदय्यौ। लोय पुच्चिय छल मग्गी ॥
मुष जीवन अरु लाज। मनहि संकलपि सिलष्षी ॥
[2]निबल एस संकलै। आस लग्गी मय दिष्षी ॥ छं० ॥ २४६१ ॥

दूहा ॥ इह कहि परदच्छिन फिरिग। नमसकार सब कीन ॥
दान प्रतिष्टा तू अबर। मै दिल्ली पुर दीन ॥ २४६२ ॥
चढि चहुआन दिल्ली रुषह। उड़ी दुहुं दल षेह ॥
छंडि आस चहुआन पहु। गयौ पंग फिरि ग्रेह ॥ छं० ॥ २४६३ ॥

जैचन्द का शोक और दुःख से व्याकुल होना और मंत्रियों को उसे समझाना।

कवित्त ॥ चौ अग्गानी सट्ठि। भुक्कि प्रापीय मुगति रस ॥
छिति छत्री षिति छित्ति। व्रत्त आवर्रति सूर वस ॥
चौ अग्गानी पंच। राज पावास परिग्गह।
अनी पंच मिलि वीर। पंग जंपियत गहग्गह ॥

(१) मो.-कनवज्ज रह। (२) ए. कृ. को.-विबल।

संमूह जुद्ध भारथ्थ मिलि। पंचतत्त मंचह [1]सरिस ॥
तन छोह छेह एकादसी। चंद वत्त बर [2]तच्चरिसु ॥
छं० ॥ २४६४ ॥

फिर्यौ राज कमधज्ज। मुक्कि जीवत चहुआनह ॥
जानि सँजोगि समंध। मग्ग कनवज्ज सु प्रानह ॥
फिरे संग राजान। मानि मत्तौ बर बीरह ॥
मनों पल छंडे सिंह। कोप उर केर सु धीरह ॥
निज चल्लत मग्ग जैचंद पहु। परे सुभर रिन अप्प पर ॥
किय प्रथुक बन्ह कारन न्रिपति। दीय दाघ जल गंग थर ॥
छं० ॥ २४६५ ॥

समझायौ तिन राइ। पाय लगि बात कहिय जब ॥
जिके सूर सामंत। करौ गोनह न कोइ अब ॥
फिऱ्यौ न्रपति पहुपंग। सयन हुअ तह घर आयौ ॥
रथ ढिल्ली सुरतान। जान आवतह न पायौ ॥
आयौ सु सयन चहुआन कौ। ग्राम ग्राम मंडप छयौ ॥
आयौ नरिंद प्रथिराज जिति। भुअन तीन आनंद भयौ ॥
छं० ॥ २४६६ ॥

पृथ्वीराज का दिल्ली में आना और प्रजा वर्ग का बधाई देना।

दूहा ॥ चली षबर दिल्ली नयर। एकादसि दिन छेह ॥
के रवि मंडल संचरिग। के मिलि मंगल ग्रेह ॥ छं० ॥ २४६७॥

कुंडलिया ॥ बद्धाइय दिल्लिय नयर। अवर सेन जुध मग्ग ॥
घाय घुमत झोरिन घले। श्रवन सुनंतह अग्गि ॥
श्रवन सुनंतह अग्गि। उठी कंचन गिरि अच्छी ॥
कै वड़वानल लपट। निकरि लालन धत गच्छी ॥
कै नाग लोक सुंदरी। सुनि न भारथ कथ्थाई ॥
कै मिलन पीय अंतरह। मिलन आवंग बधाई ॥ छं० ॥२४६८॥

(१) ए. कृ. को.-सारिग। (२) ए. कृ. को उच्चरिय।

जैचन्द का पृथ्वीराज के घायलों को उठवा कर तैंतीस डोलियों में दिल्ली पहुँचाना ।

पद्धरी ॥ परि सकल सूर अघघाइ घाइ । उच्चाइ चंद न्रपराइ थाइ ॥
धरि लियौ बीर चालुक्क भीम । बग्गरी देव अरि चंपि सीम ॥
छं० ॥ २४६९ ॥

पम्मार जैत षीची प्रसंग । भारथ्थ राव भारा अभंग ॥
जामानि राव पाहार पुंज । लोहान पान आजान हुंज ॥
छं० ॥ २४७० ॥

गुज्जरह राव रंघरिय राव । परिहार महन नाहर सु जाव ॥
जंगलह राव दहिया दुबाह । बंकटह सु पह बधनौर थाह ॥
छं० ॥ २४७१ ॥

जद्दवह जाज रावत्त राज ।बर बलिय भद्र भर स्वामि काज ॥
देवरह देव कन्हरहराव । ढंढरिय टाक चाटा दुभाव ॥
छं० ॥ २४७२ ॥

औहठी स पहुपह कर प्रहास । कमधज्ज राज आरज्ज तास ॥
देवतिय हरिय बलिदेव सथ्थ । परिहार पीय संग्राम पथ्थ ॥
छं० ॥ २४७३ ॥

अघघाय घाय वर सिंह बीर । हाहुलिय राव हंसह हमीर ॥
चहुआन जाम पंचान मार । लष्षन उचाय पहु पत्ति धार ॥
छं० ॥ २४७४ ॥

भट्टी चलेस गोहिल्ल चाच । सम विजय राज वघ्घेल साच ॥
गुज्जरह चंद्र सेन्गह सु बीर । ते जल्ल डोड पामार धीर ॥
छं० ॥ २४७५॥

सोढह सलष्य उच्च सच साल । संग्राम सिंह कढ्ढिय दुजार ॥
परिहार दत्त तारन्त तरन्न । कमधज्ज कोल रय सिंघ कन्न ॥
छं० २४७६ ॥

सेंगरह साइ भोलन्न तास । साइरहदेव मुष मल्ह नास ॥

अच्घाय घाय धर धरह ढाइ। लष्षीन मीच जिय कंक साइ॥
छं० ॥ २४७७॥

डोलिय सु मद्धि संजोग सार। पट कुटिय मद्धि मनु बसिय मार॥
उप्पारि सेव वरदाइ ईस। डोलिय सु सज्जि बर नेर तीस॥
छं० ॥ २४७८॥

संक्रम्यौ सेन दिल्ली सु मग्ग। बंधाय धाय चिय पुरनि अग्ग॥
छं० ॥ २४७९॥

दूहा ॥ सघन घाय सामंत रिन। उप्पारिग कवि ईस॥
मध्य अमोलिक सुंदरिय। डोला तेरह तीस॥ छं० ॥२४८०॥
[1]हमकि हसम हय गय घरिग। बाहिर जुग्गिनि नैर॥
हलकि जमुन जल उत्तरिग। बाल वृद्ध जु अवेर॥ छं०॥२४८१॥
इक घर सिंधु असंचरिग। इक घर [2]षन्नर मार॥
तेरसि अंबक बज्जि बहु। राज घरह गुर वार ॥छं०॥२४८२॥

जैचन्द का बहुत सा दहेज देकर अपने पुरोहित को दिल्ली भेजना।

पुर कनवज्ज कमंध गय। अरि उर गंट्टिय अथ्थ॥
कहै चंद प्रोहित्त प्रति। तुम दिल्लिय पुर जथ्थ ॥२४८३॥
विधि बिचित्र संजोगि कौ। करहु देव विधि व्याह॥
हसम हयग्गय सब्ब विधि। जाय समप्यौ ताह ॥२४८४॥
नग अनेक विधि विधि विचित्र। और गनै कोइ गेउ॥
विजै करत विजपाल [3]निज। लिय सु वस्तु दिव देउ॥
छं० ॥ २४८५॥

पंगराज के पुरोहित का दिल्ली आना, और पृथ्वीराज की ओर से उसे सादर डेरा दिया जाना।

मुरिल्ल ॥ पुर ढिल्ली आयौ प्रोहित्तह। मंन्यौ मंन चहु आन सुहित्तह॥
दिय थानक आसन उत्तिम ग्रह। वर प्रजंक भोजन भल भष्षह॥
छं० २४८६॥

(१) मो.-हलकि। (२) ए. कृ. को.-बंदन। (३) ए. कृ. को.-नृप।

दिल्लिय पति दिल्लिय संपत्तौ । फिरि पहु पंग राइ ग्रह जत्तौ ॥
जिम राजन संजोगि सु रत्तौ । सुह दुह करन चंद महि मत्तौ॥
छं० ॥ २४८७ ॥

दिल्ली में संयोगिता के व्याह की तैयारियां।

कवित्त ॥ कनक कलस सिर धरहि । चवहिं मंगल अनेक चिय ॥
पाटंबर बहु द्रव्य । सज्जि सब सगुन राज लिय ॥
ढरहि चौर गज गाह । इक्क आरती उतारहि ॥
इक्क छोरि करि केस । रेन चरनन की झारहि ॥
इम जंपहि चंद बरद्दिया । मुकताहल पुज्जंत भुअ ॥
घर आइ जित्ति दिल्लिय न्नपति । सकल लोक आनंद हुअ ॥
छं० ॥ २४८८ ॥

दोनों ओर के प्रोहितों का शाकोच्चार करना।

एक अग्ग तिय सकल । विकल उच्चरिन राजमुष ॥
त्रिगुटि अग्र वंकुरि प्रमान । तहां लषित मझ्झ रुष ॥
बीय विवान उच्चरिय । देवि डुल्लिय मिलि चल्लिय ॥
अश्रम स्रम किय आइ । सपत अच्छरी सु मिल्लिय ॥
संजोग जोग रचि व्याह मन । गुरु जन सुत अरु निगम घन ॥
प्रोहित्त पंग अरु ब्रह्म रिषि । ग्रसत सुष्य बर दुष्य सन ॥
छं ॥ २४८९ ॥

विवाह समय के तिथि नक्षत्रादि का वर्णन ।

महा नछित्र रोहिनी । मेष भुग्गवै अरक बर ॥
भद्र यह परवासु । तिथ्य तेरसि सु दीह गुर ॥
इंद्र नाम वर जोग । राज अष्टमि रवि सिज्जौ ॥
चंद चंद सातमो । वुद्ध सत्तम गुर तिज्जौ ॥
गुर राह सन्नि सुरकेत नव । न्नप बर बर मंगल जनम ॥
तद्दिनह मुक्कि चहुआन कों । [1]छुट्टि पंग पारस घनम॥छं० ॥२४९०॥

(१) ए. कृ. को. छुट्टि ।

पंग और पृथ्वीराज दोनों की सुकीर्ति।

पंग राह उग्रह्यौ। दान है गै भर नर लिय ॥
धाराहर वर तिथ्थ। जपह चहुआन बीर किय ॥
एक गुनै तिहि बेर। दिये पाइल लप गुन्निय ॥
चौसट्टां कै सट्ट। लच्छि संजोगि सु दिन्निय ॥
ज्यौं भयौ जोइ भारथ्थ गति। सोइ वित्यौ वित्तक्क जुरि ॥
द्वादसवि पंच सूरहति मुक्कि। आरन्निय पहु पंग फिरि ॥
छं० ॥ २४९१ ॥

दूहा ॥ दिव मंडन तारक सकल। सर मंडन कमलान ॥
रन मंडन नर भर सु भर। महि मंडन महिलान ॥ छं०॥२४९
महिलन मंडन न्रिपति ग्रह। कनक कंति ललनानि ॥
ता उप्पर संजोगि नग। धरि राजन बलवान ॥ छं० ॥ २४९३।
राजन तन सइ प्रिय बदन। काम गनंतिन भोग
सरै न पल लेतें पलनि। न्रपति नयन संजोग ॥ छं० ॥ २४९४

पृथ्वीराज का मृत सामंत पुत्रों को अभिषेक करना और जागीरें देना।

पद्धरी ॥ वैसाष मास पंचमिय सूर। उपरात पष्य पुष्यह समूर ॥
संतिय सु छित्ति प्रथिराज राज। किन्नौ सनान महुरत्त आज।
छं० ॥ २४९५ ॥

मंगल अनेक किन्नौ अचार। बाजे बिचित्र बज्जत अपार ॥
विधि सु विप्र पुज्जे सु मंत। दिय दान भूरि अनेक जंत ॥
छं० ॥ २४९६ ॥

गुन गंठि कव्वि आये सु चंड। दिय अनंत द्रव्य बीजीउ थंड।
वद्धाय कीय सव नयर मंत। स्रृंगारि सहर वाने अनंत ॥
छं० ॥ २४९७ ॥

वद्धाम आय सव देस थान। सनमान सीम पति आय जान ॥
वर महल ताम प्रथिराज दीन। सामंत सब्ब तं न्हान कीन ॥
छं० ॥ २४९८ ॥

सामंत सब्ब बोले सु आय। आदरह सब्ब दीनौ सु राय॥
कमधज्ज बीर चंद्रह सुबोलि। निड्डुरह सुतन सुभ तेज तोलि॥
छं० ॥ २४९९ ॥

दीनौ सु तिलक प्रथिराज हथ्थ। बड्डारि ग्राम दिय बीस तथ्थ॥
हय पांच गज्ज दीनौ सु एक। थप्पौ सु ठाम समपित्त तेक॥
छं० ॥ २५०० ॥

ईसरह दास कन्हह स पुत्त। चहुआन क्रम्म वड़ करन जुत्त॥
दह पंच ग्राम दीने बधाय। हय अठ्ठ गज्ज इक दीन ताय॥
छं० ॥ २५०१ ॥

बोलाय धीर पुंडीर ताम। सनमानि पित्त दीने सु ग्राम॥
जिन जिन सु पित्त रिन परे षेत। तेय तेय थप्पि सामंत हेत॥
छं० ॥ २५०२ ॥

सामंत सिंह गहिलौत बोलि। गोयंद राज सुअ गरुअ तोलि॥
द्वादस्स ग्राम दीने बधाय। हय पंच दीन पितु ठाम ठाय॥
छं० ॥ २५०३ ॥

सामंत अवर उच्चरे जेह। दिय दून दून ग्रामह सु तेह॥
सनमानि सब्ब सामंत सूर। दिय अनत दान द्रब्यान पूर॥
छं० ॥ २५०४ ॥

आदरह राज गौ उठ्ठि ताम। संजोगि प्रीति कारन्न काम॥
* * * ॥ * छं०॥२५०५॥

ब्याह होकर दंपति का अंदर महल में जाना और पृथाकुमारी का अपने नेग करना॥

दूहा॥ गौ अंदर प्रथिराज जब। मंडि महूरत ब्याह॥
आय प्रिया कहि बंध सम। करहु सु मंगल राह॥ छं०॥२५०६॥

भुजंगी॥ रच्यौ मंगलं मास वैसाष राजं। तिथी पंचमी सूर सा पुष्प साजं॥
असित्तं सपुष्पं सुभ्भयौ जोग इंदं। कला पूरनं जोग सा छच विंदं॥
छं० ॥ २५०७ ॥

लगन्नं सु गोधन्न सा व्रष्प केयं। पन्यौ सत्त मै पंच थानं रवेयं॥
पस्यौ नग्ग थानं कला धिष्ट चंदं। तनं ताम सज्ज्यौ निजं उच्च मंदं
छं० ॥ २५०८ ॥

तबै आय प्रोहित्त श्रीकंठ त्तामं। दई आन सो वस्तु अन्नेक नाम
रच्यो तोरनं रंन मै उच्च थानं। लहै मोल अन्नेक नालभ्यमानं॥
छं० ॥ २५०९ ॥

गजं गज्ज अट्ठोतरं सौ सिंगारे। तिनं गात उत्तंग ऐराव तारे॥
सहस्सं स पंच हयं तुंगगातं। तिनं नग्ग सा कत्ति साहेम जातं॥
छं० ॥ २५१० ॥

घटं जात रूपं जरे नग्ग उच्चे। गनै कौन मानं तिनं जानि रच्चे
जरे जंबु नद्दं बरं भाज नेयं। गनै कौन प्रामन्न सा संष तेयं॥
छं० ॥ २५११ ॥

जरे पट्ट पट्टं अनेकं प्रकारं। अग्भूत अन्नेक सा वस्तु भारं॥
ग्रिहं तिथ्य अन्नेक जे पंग राजं। सबै पट्टई सोइ संजोग साजं॥
छं० ॥ २५१२ ॥

करे साजि संजोगि निड्डुरं सु ग्रेहं। मुषं जोति इंदं कला पूरि तेहं
* * * ॥ * छं० ॥ २५१३ ॥

विवाह के समय संयोगिता का शृंगार और उसकी शोभा वर्णन।

लघुनराज ॥ प्रथम्म केलि मज्जनं। बने निरत्त रंजनं ॥
सु स्निग्ध केस पायसं। सु बंधि बेन बासयं ॥ छं० ॥ २५१४ ॥
कुसम्म गुंथि आदियं। सु सीस फूल सादियं ॥
तिलक्क द्रप्पनं करी। श्रवन्न मंडनं धरी ॥ छं० ॥ २५१५ ॥
सु रेष कज्जलं दुनं। धनुष्य सा गुनं मनं ॥
सु नासिका न मुत्तियं। तमोर मुष्प दुत्तियं ॥ छं० ॥ २५१६ ॥
सुढार कंठ मालयं। नगोदरं विसालयं ॥
अनग्घ हेम पासयं। सु पानि मध्य भासयं ॥ छं० ॥ २५१७ ॥
कलस्स पानि कंकनं। मनो कि काम अंकनं ॥

बलै सु गाढ़ मुद्रिका । कटींव छुद्र घंटिका ॥ छं० ॥ २५१८ ॥
सु कट्टि मेषला भरं । सरीर नूपुरं जुरं ॥
तले न रत्त जावकं । सतत्त हंस सावकं ॥ छं० ॥ २५१९ ॥
सु बीर चारु सो रसं । सिंगार मंडि षोड़सं ॥
सुगंध व्रन्न हृन्नयौ । अभूषनंति भिन्नयौ ॥ छं० ॥ २५२० ॥
सु चारु कज्जि भुल्लयौ । नषं सिषंत डुल्लयौ ॥ छं० ॥ २५२१ ॥

साटक ॥ लज्जमान कटाच्छ लोकन कला, अलपस्तनो जल्पनं ॥
रत्ती रित्त, भया सु प्रेम सरसा, गै हंस बुभक्काइनं ॥
धीरज्जं च छिमाय चित्त हरनं, गुह्य स्थलं सोभनं ।
सीलं नील सनात नीत तनया, षट दून आभूषनं ॥ छं० ॥२५२२॥

पृथ्वीराज का शृंगार होना ।

दूहा ॥ करि सिंगार प्रथिराज पहु । बंधि मुकट सुभ सीस ॥
मनों रतन कर उप्परै । उयौ बाल हरि दीस ॥ छं० ॥ २५२३ ॥

विवाह समय के सुख सारे ।

पद्धरी ॥ सिंगार सकल किय राज जाम । उच्चार वेद किय विप्र ताम ॥
वाजिच वज्जि मंगल अनेव । माननि उचारि सागुन्न गेव ॥
छं० ॥ २५२४ ॥
जय जया सद्द सद्दै समूह । सामंत सूर सब मिल्लिय जूह ॥
[1]वद्धाय आव चवरुअ सुहाग । आनंत स्वजन गति उड्ड भाग ॥
छं० ॥ २५२५ ॥
गुरु राम वेद मंचह उचार । अन्नेक विप्र पढि वेद सार ॥
हय रोहि हंस जंगल नरेस । जय जया सद्द जंप्यौ सु देस ॥
छं० ॥ २५२६ ॥
उछरंत द्रव्य अन्नेक मग्ग । गुन तवन एक अन्नेक लग्ग ॥
निट्ठुरह ग्रेह तोरनह जाम । यट्टौ नरेस सम इंद्र तम ॥
छं० ॥ २५२७ ॥

(१) ए. वद्दाय ।

प्रोहित्त पंग रषि ब्रह्म रूप। बड्डाय आय नग मुत्ति भूप॥
सिर फिरै विवह पट कूल राज। दिन्ने सु दत्त वाजित्र वाजि॥
छं० ॥ २५२८ ॥

रोकियौ राज बर नेक काम। मत्तौ सु हाम रस रास ताम॥
सुन षानि कूर लीला सरूप। प्रोषनह काज किय ताम भूप॥
छं० ॥ २५२९ ॥

नग जटित हेम मंडह अनूप। चौरीस ताम सज्जी सजूप॥
हिम षचित पट्ट मानिक्क रोह। वासनह छादि मम विषम सोह॥
छं० ॥ २५३० ॥

दंपत्ति रोहि आसनह ताम। किय विप्र सब्ब सुर मुष्य काम॥
गावंत चक्क माननि सुभेव। आवरिय भोम भ्रामरिय तेव॥
छं० ॥ २५३१ ॥

कमधज्ज बीर चंद्रह सु आय। तिहि तव्यौ विवह प्रथिराज राय॥
नैवेद [1]ताम धन गय तुषार। सम प्रान मुत्ति माला दुसार॥
छं० ॥ २५३२ ॥

कंसार जास आहरै राज। वानी [2]अयास सुरताम साज॥
चब बरस अवर सुर मास जोग। सम सचहु साज्व संजोग भोग॥
छं० २५३३ ॥

संभरिय बानि आयास भूप। मन्यौ सु काल बल मनिय कूप॥
बीवाह सेष सब करिय काज। निसि बास धाम पत्तौ सु राज॥
छं० ॥ २५३४ ॥

सुहाग रात्रि वर्णन।

कवित्त ॥ निसावाम चहुआन। धाम बर राज संपत्तौ॥
सुप सेज्या निसि मध्य। रहसि क्रीड़ा रस रत्तौ॥
मिलिय सपिय सब नेह। बीस दस अगविय अप्पनि॥
तिन प्रीति संजोगि। आनि मम राज ततष्पिन॥
संग्रहिय पानि संजोगि न्रप। अरोहिय निज तलप बर॥

(१) ए. कृ. को.-थाम। (२) मो.-अकाम।

संजोगि लषि सुच्छम सुतन। नेहन क्रीड़ँ काम पर॥छं०॥२५३५॥
निरषत द्रग संजोगि। गयौ प्रथिराज मोह मन॥
उदय सूर उठि राज। काज किन्नौ सु व्याह पन॥
आप पंग प्रोहित्त। दीन सब बस्त संभारिय॥
जे पठई जैचंद। व्याह संजोगि सु सारिय॥
परवेस बिंद कारन न्रपति। आए बज्जन बज्ज घर॥
पुंषे सु प्रथ्थ शृंगार करि। दीनौ बिधि बिधि दान भर॥
छं०॥२५३६॥

व्याह हो जाने पर पृथ्वीराज का प्रोहित को एक मास पीछे बिदा करना।

दूहा॥ हेम हयग्गय अंबरह। दासि सहस सत दीन॥
प्रोहित पंग सु ब्रह्म रिषि। व्याहु बिद्धि बहु कीन॥छं०॥२५३७॥
कवित्त॥ करिय सु कारन व्याह। दीय दानह विप्रां कवि॥
प्रोहित पंग नरिंद। तास आदर किन्नौ तबि॥
ता पछै दुअ पष्प। राषि प्रोहित प्रथिराजह॥
सत सारद हय सु बर। पंचगज दीन सु राजह॥
कोटेक द्रब्य दीनौ न्रपति। जुगल जुगल हय सथ्थ दिय॥
चहुआन चिंति रा पंग सम। बढ़ी प्रीति आनंद जिय॥
छं०॥२५३८॥
दूहा॥ दयौ द्रव्य संजोगि घन। चलि प्रोहित पुर पंग॥
प्रथम राज सुअ इंद सम। विविध विविध बढि रंग॥छं०॥२५३९॥
सुभह रम्य मंडिग न्रपति। दिपति दीप दिव लोक॥
मुकुर मउष अंम्रत झरहि। करहिति मनह असोक॥छं०॥२५४०॥
वय वसंत छिति संकिय। भ्रम सामंत सु जीव॥
ग्रीषम गठि सु पिम्म पह। अम्रत सुधारस पीव॥छं०॥२५४१॥

सुख सौनारे की ऋतु से उपमा वर्णन।

चंद्रायना॥ अगर धुम्म मुष गौषह उनयो मेघ जनु॥
तहय मोर मल्हार निरत्तहि मत्त घन॥

सारंग सारंग रंग पहुक्कहि पंषि रस ॥
विज्जुलि कोकल सानि, झमक्कहि जासु मिसि ॥ छं० ॥ २५४२ ॥
दादुर[1]सादुर सोर [2]नवप्पुर नारि घन ॥
मिलि सुर मधि मधु वृत्त माधुर मझिझ मन ॥
सालक पंच पचीस प्रजंकति द्रुन दस ॥
तहं अथ्थि परवीन सु बीनति दासि दस ॥ छं० ॥ २५४३ ॥
के जुग्र जुथ्थ जवादि प्रमादहि मंद गति ॥
केबल अंचल बाय निरूपहि मरद रति ॥
केबर भाष पराक्रत संक्रित देव सुर ॥
केबर बीन बिराजित राजहि बार बर ॥ छं० ॥ २५४४ ॥
इन विधि विलसि बिलास असार सु सार किय ॥
दै सुष जोग संजोगि प्रिथी प्रथिराज प्रिय ॥
ज्यों रति संगम मारन जानैं रयन दिन ।
केतकि कुसुम लुभाय रह्यौ मनुं भ्रमर मन ॥ छं० ॥ २५४५ ॥

सखिपरिहास और दंपतिविलास ।

गाथा ॥ अंबा अंबोह पत्ती । कंतौ कंताय दिठ्ठ मा दिठ्ठौ ॥
महिला मरम सु मिठ्ठौ । पतौ कंताइ [3]इच्छि मिछांइ ॥
छं० ॥ २५४६ ॥

दूहा ॥ भजै न राज संजोगि सम । अति सुच्छम तन जानि ॥
तब सु सषी पंगानि बर । रची बुद्धि अप्पान ॥ छं० ॥ २५४७ ॥
मधि अंगन नव दल सु तरु । पच मौर घन उट्टि ॥
इक मंजर पर भ्रमर भ्रमि । बास आस रस बिट्ट ॥ छं० ॥ २५४८ ॥
भार भ्रमर मंजरिन मिग । तुटत जानि उटि पंषि ॥
कछु अंतर राजन सुनहि । बोलि बयन दिषि अंषि ॥ छं० ॥ २५४९ ॥
रस घुट्टत लुट्टत मयन । नन डुल्लि मंजरि याह ॥
भार भगत कथ्थह सुनी । अलियल मंजरि याह ॥ छं० ॥ २५५० ॥

(१) ए. कृ. को.-माठुर । (२) ए. कृ. को.-नवथ्थुर ।
(३) ए. कृ. को मिंच्छ, मिछि ।

गाथा ॥ अप्पह आरुहि भंग । मम डरई मह्र देषि भीनंगं ॥
　　पत्तली षग्ग धारा । हय गय कुंभस्थलं हनई ॥ छं० ॥ २५५१ ॥
　　जं केहरि नन भीनं । तं गज मत्त जूथयं दलए ॥
　　नव रमनी रमि राजं । एक पलं जम्म सुष्यांइ ॥ छं० ॥ २५५२ ॥
दूहा । अलिय अलिय एकत मिलिय । रस सरवर संजोगि ॥
　　सो कविचंद चय बरस रस । पुह प्रगटित रति भोग ॥छं०॥२५५३॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराजरासके कनवज्ज संयोगिता प्रातिष्ठा पूरन राजा जैचंद दल चूरन सामंत जुद्ध दिल्ली आगनन नाम एकसठवों प्रस्ताव संपूर्णम्॥६१॥

धरे बारड सिंह आघाय घायं। [१]बरं बार सुष्षं अगंमन्न धायं॥
जिते सेन बिग्घा कटे षग्ग हक्कं। परे कातरं सं भयानंक टक्कं॥
छं० ॥ २४४४ ॥

लषं चंपियं सीस चहुआन धायं। गनो सिंघ झम्यौ मदं दंति पायं॥
लघं लाघ बंकौन बाहंत बंकं। मनों चक्र भेदंत सीसं निमंकं॥
छं० ॥ २४४५ ॥

कटे टट्टरं टूव सन्नाह वट्टं। बहै षग्ग झट्टं मनो बीज छट्टं॥
सधे श्रोन फेफं सु डिंभं फरक्कं। मनो मझ्झ नाराज छुट्टंत झक्कं॥
छं० ॥ २४४६ ॥

न्रिपं पोषि धारा धरै धाय धायं। उठै दंग बग्गं मनों लष्षगायं॥
चवै पंग आनं गहन्नं गहन्नं। जगन्माल झम्यौ सुन्यौ सीस धुन्न॥
छं० ॥ २४४७॥

[२]करन्नाटिया राय रुद्दंतिरायं। रवै वाम दच्छिन्न राजंग मायं॥
बहै बिंझ मालं करीवार सथ्थं। दुअं लग्गि झाकं मनो कोपि पथ्थं॥
छं० ॥ २४४८ ॥

कलेवार गट्टं परे छेदि बंभं। मनों अंग पंछी सु उड्डंत संभं॥
[३]नरं हक्क वज्जी सु रज्जी सकत्ती। रची पुष्प विष्टं षहं देवि पत्ती॥
छं० ॥ २४४९ ॥

असी झाक बज्जंत रज्जंत सूरं। भयं चक्क जुद्धं भयं देव दूरं॥
दलं दून धारों ढरै षंड षंडं। बरं संग्रहै ईस सीसंति रुंडं॥
छं० ॥ २४५० ॥

थनं थोर सू राग सूरं वरंती। रचे माल कंठं कुसम्मं हरंती॥
सजै सेंन [४]आव्रन्न व्रन्नं विमानं। वरं रोहि तथ्थं क्रमं अप्पयानं॥
छं० ॥ २४५१ ॥

जयं सद्द वद्दं पलं श्रोन चारं। थक्यौ सूर नारद्द नच्चौ विहारं॥
घनं घाइ अघघाइ सामंत सूरं। धरे मंडलं सब्ब सामुन्ति सूरं॥
छं० ॥ २४५२ ॥

(२) ए. कृ. को.-मार। (१) मो.-कौर छाटिया (३) ए. कृ. को. ना, पां।
(४) ए. कृ. को.-आवन्न।

दह पंच पंग परे सूर सारं । भर राज सामंत हथ्थे हजारं ॥
भयं अद्दभूतं रसं बीर बीरं । घटी दून जुद्धं विहानं विहारं ॥
छं० ॥ २४५२ ॥

तब जंघारौ जोगी जुगिंद । कत्ती कट्टारौ ॥
असि विभूति घसि अंग । पवन अरि भूषन हारौ ॥
सेन पंग मन मथन । [1]व्रम्म षग गयंद प्रहानं ॥
[2]पलति मुंड उरहार । सिंगि सद वदन त्रिषानं ॥
आसन सु दिठ्ठ पग दिठ्ठ बर । सिरह चंद अंमृत अमर ॥
मंडली राम रावन भिरत । नभौ बीर इत्तौ समर ॥छं०॥२४५३॥

जंघारे भीम का मारा जाना ।

घरिय च्यार रवि रत्त । पंग दल बल आहुथ्यौ ॥
तब जंघारौ भीम । अंम स्वामित तन तुथ्यौ ॥
सगर गौर सिर मौर । रेह रष्षिय अजमेरिय ॥
उड़त हंस आकास । दिठ्ठ घन अच्छरि घेरिय ॥
जंघार सूर अवधूत मन । असि विभूति अंगह घसिय ॥
पुच्छयो सु जान त्रिभुवन सकल । को सु लोक लोकैं वसिय ॥
छं० ॥ २४५४ ॥

पंगदल की समुद्र से उपमा वर्णन ।

भय समुंद जैचंद । उतरि जै जै क्यों पारह ॥
अदभुत दल अममान । अब्ब बुड्डहि करिवारह ॥
तहां वोहिथ हर ब्रह्म । भार सब सिर पर पधर्‌यौ ॥
उद्धरि उद्ध कुमार । धनि जु जननी जिहि जनयौ ॥
नन करहि अवर करिहै नको । गौर बंस अस बुझ्झयौ ॥
सो साहिब सेन निबाहि करि । तब अप्पन फिरि झुज्झयौ ॥
छं० ॥ २४५५ ॥

वर छंड्यौ दुहु राय । वरुन छंड्यौ बर बारर ॥
सिर यक्यौ[3]सहि सार । वरुन यक्यौ गहि सारर ॥

(१) मो-व्रह्म । (२) ए. कृ को. लपत । (३) ए.-सिरमार ।

रव थक्यौ रव रवन। रवन थक्यौ मुष मारह॥
धर थक्यौ धर परत। मनुन थक्यौ उच्चारह॥
पायौ न पार पौरुष पिसुन। स्वामिनि सह अच्छरि जप्यो॥
जिल जिम सु सिंह सम्मीर सिव। तिम तिम सिव सिव सिव तप्यो
छं०॥ २४५६॥

पृथ्वीराज का शर संधान कर जैचन्द का छत्र उड़ा देना।

एक अंग तिय सकल। [1]विकल उच्चरिय राज मुष॥
भ्रकुटि अंक बंकुरिय। अंसु तिहि लिषिय मद्धि रुष॥
लिय विमान उप्पारि। देव डुल्लिय मिलि चल्लिय॥
भ्रम भ्रमंकि आयास। पत्ति अच्छरि [2]अलि मिल्लिय॥
एक चवै कवि कमल असि। मुकति ध्रंक करि करिय न्रप॥
तन राज काज जाजह भिरिग। सु मति सोह भइ देव वपि॥
छं०॥ २४५७॥

चार घड़ी दिन रहे दोनों तरफ शान्ति होना।

घरिय च्यारि दिन रह्यौ। घरिय दुअ वित्तक वित्तौ॥
नको जीय भय मुक्यौ। नको हार्यौ न को जित्तौ॥
पंच सहस सें पंच। लुथ्थि पर लुथ्थि अहुट्टिय॥
[3]लिषे अंक बिन कंक। न को भुज्झयो बिन [4]षुट्टिय॥
दो घरिय मोह मारुत वज्यौ। करन अंभ बरष्यो निमिष॥
[5]तिरिगत्त राज तामस वुझ्यौ। दिषिय पंग संजोगि मुष॥
छं०॥ २४५८॥

जैचन्द का मंत्रियों का मत मान कर शान्त हो जाना।

[6]मुरझानौ जैचंद चरन। चंप्यो हम वर तर।
उतरि सेन सब पर्यौ। राव कह्यौ हरवें कर॥
लेहु लेहु न्रप करय। चवन चहुआन वुलायौ॥

---

(१) ए.-चिकल। (२) मो.-अरि मोल्लिय।
(३) ए कृ को.-पिषे। (४) मो.-कुट्टिय। ए.-नको जित्यो न रिपुट्टिय।
(५) ए. कृ को.-तिहि लगना। (६) ए. कृ. को.-मुरझानौं।

सूर वीर मंत्री प्रधान। मिलि कै समुझायौ ॥
उत परे सथ्थ दूत को गनै। असुगुन भय राजन गिरयौ ॥
घर हुंत पलान्यौ अमत करि। सीस धुनत नर वै फिर्‍यौ ॥
छं० ॥ २४५९ ॥

दूहा ॥ नयन नंषि करि [1]कनक नह। प्रेम समुद्दह बाल ॥
प्रथम सु पिय ओड़न उरह। मनु भुलवति मुद्ध मराल ॥
छं० ॥ २४६० ॥

जैचन्द का पश्चात्ताप करते हुए कन्नौज को लौट जाना।

कुंडलिया ॥ दिष्षि पंग संजोगि मुष। दुष किन्नौ दल सोग ॥
जग्य जर्‍यौ राजन सघन। अवरन हुति संजोग ॥
अवरन अहुति संजोगि। कित्ति अग्गी जल लग्गी ॥
ज्यों पल षट आदर्‍यौ। लीय पुचिय छल मग्गी ॥
मुष जीवन अरु लाज। मनहि संकलपि सिलष्षी ॥
[2]निवल एस संकलै। आस लग्गी भय दिष्षी ॥ छं० ॥ २४६१ ॥

दूहा ॥ इह कहि परदच्छिन फिरिग। नमसकार सब कीन ॥
दान प्रतिष्टा तू अवर। मै दिल्ली पुर दीन ॥ २४६२ ॥
चढि चहुआन दिल्ली रुषह। उड़ी दुहुं दल षेह ॥
छंडि आस चहुआन पहु। गयौ पंग फिरि ग्रेह ॥ छं० ॥ २४६३ ॥

जैचन्द का शोक और दुःख से व्याकुल होना और मंत्रियों को उसे समझाना।

कवित्त ॥ चौ अग्गानी सट्ठि। झुक्कि प्रापीय मुगति रस ॥
छिति छची पिति छित्ति। व्रत्त आवरति सूर वस ॥
चौ अग्गानी पंच। राज पावास परिग्गह।
अनी पंच मिलि वीर। पंग जंपियत गहग्गह ॥

(१) मो.-कनवज्ज रह। (२) ए. कृ. को.-विवल।